दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला-९

कृष्णयमारितन्त्रम्

रत्नावलीपञ्जिकया सहितम्

གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད།

དེའི་དཀའ་འགྲེལ་རིན་པོ་ཆེའི་ཕྲེང་བ་དང་བཅས་པ།

भोट विद्या संस्थानम्

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान

सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द २५३६ ख्रीस्ताब्द १९९२

RARE BUDDHIST TEXTS SERIES–9

KṚṢṆAYAMĀRITANTRAM

With

RATNĀVALĪ PAÑJIKĀ

of

KUMĀRACANDRA

Editors

PROF. SAMDHONG RINPOCHE
Project Director

PROF. VRAJVALLABH DWIVEDI
Deputy Director

RARE BUDDHIST TEXTS RESEARCH PROJECT
Central Institute of Higher Tibetan Studies
SARNATH, VARANASI

B. E. 2536 **C. E. 1992**

Co-Editors

Pt. Janardan Pandey
Dr. Banarsi Lal
Dr. Tashi Samphel
Dr. Thakur Sain Negi
Dr. Wangchug Dorjee Negi
Thinlay Ram Shashni

First Edition : 550 Copies

Price : HB. Rs. 150.00
PB. Rs. 100.00

Published by :
Central Institute of Higher Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007

Printed by :
Shivam Printers
C. 27/273, Indian Press Colony
Maldahiya, Varanasi-2

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला–९

कृष्णयमारितन्त्रम्

कुमारचन्द्रप्रणीतया

रत्नावलीपञ्जिकया सहितम्

གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད།

གཞོན་ནུ་ཟླ་བས་མཛད་པའི་དཀའ་འགྲེལ་རིན་པོ་ཆེའི་ཕྲེང་བ་དང་བཅས་པ།

सम्पादकौ

प्रो० सम्दोङ् रिनपोछे
योजनानिदेशकः

प्रो० व्रजवल्लभ द्विवेदी
उपनिदेशकः

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान

सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द–२५३६ ख्रीस्ताब्द–१९९२

सहायक मण्डल

पं० जनार्दन पाण्डेय
डॉ० बनारसी लाल
डॉ० टशी सम्फेल

डॉ० ठाकुरसेन नेगी
डॉ० वङ्छुग दोर्जे नेगी
श्री ठिनलेराम शाशनी

प्रथम संस्करण : ५५० प्रतियां

मूल्य : सजिल्द : रु० १५०.००
अजिल्द : रु० १००.००

प्रकाशक :
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी-२२१००७

मुद्रक :
शिवम् प्रिन्टर्स
सी० २७/२७३, इण्डियन प्रेस कालोनी
मलदहिया, वाराणसी-२

प्रस्तावना

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला के नवम पुष्प के रूप में कुमारचन्द्र रचित रत्नावली-पंजिका नामक टीका के साथ १८ पटलात्मक कृष्णयमारितन्त्र को बौद्ध तन्त्रों के अनुरागी विद्वान् पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए आज हमें अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस तन्त्र का महत्त्व इसी से आँका जा सकता है कि ईशानशिवगुरुदेवपद्धति जैसे शैव तन्त्र में इसके आधार पर सामग्री का संकलन किया गया है। टीकाकार का तथा टीका का भी नाम संस्कृत हस्तलेखों में अंकित नहीं है, किन्तु इसके भोट अनुवाद से हमें टीका के साथ टीकाकार का भी नाम ज्ञात होता है। तदनुसार ही यहाँ उन्हें अंकित किया गया है।

टीकाकार ने मण्डललेखनविधि का (पृ० १३–१६), होमविधि का (पृ० ५९–६२), मण्डल-प्रसाधन का विवरण प्रस्तुत करते हुए शिष्याधिवासन, पुष्पपातन, मण्डल प्रवेश के साथ पूरी अभिषेक विधि का (पृ० ९०–१०४) तथा योग, अनुयोग, अतियोग और महायोग नामक चतुर्विध योग का (पृ० १२३–१२९) विस्तार से निरूपण किया है। तन्त्र की विशेष प्रक्रियाओं के जिज्ञासुओं के लिये ये प्रकरण विशेष सहायक हैं।

'घ' मातृका में अठारहवें पटल की विस्तृत व्याख्या अलग प्रकार की है। इसको यहाँ परिशिष्ट में दिया गया है। इसी तरह भोट अनुवाद में १७वें पटल के अन्तिम भाग की व्याख्या संस्कृत की अपेक्षा कुछ विस्तार से मिलती है। इससे यह सूचित होता है कि भोट अनुवादकों के पास उपलब्ध हस्तलेख में वैसा ही पाठ रहा होगा।

कृष्णयमारितन्त्र और उसकी टीका में कुछ अपभ्रंश भाषा के वचन भी विद्यमान हैं। अपभ्रंश भाषा के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ० एच० सी० भायाणी से इनका संशोधन कराकर संस्कृत छाया के साथ आवश्यक टिप्पणियों और उनके सुझावों को भी यहाँ प्रथम परिशिष्ट में स्थान दिया गया है। हमारी इस सहायता के लिये हम उनके आभारी हैं।

प्रस्तुत संस्करण को तैयार करने में मूल संस्कृत और उनके भोट अनुवादों की जिन पाण्डुलिपियों और संस्करणों से सहायता ली गई है, उनका परिचय इस प्रकार है—

कृष्णयमारितन्त्र

(क) राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डू.
लगत सं० ४/४,
पत्र सं० १६, लिपि—देवनागरी, पूर्ण.

(ख) एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता.
सं० ९९६४/९१,
पत्र सं० २६, लिपि–नेवारी, पूर्ण.

(ग) इंस्टिटयूट ऑफ एडवांस स्टडीज़ ऑफ वर्ल्ड रिलिजन्स, न्यूयॉर्क.
एम० बी० बी० १–२,
पत्र सं० ६६, लिपि–नेवारी पूर्ण.

(घ) राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डू.
लगत सं० ३/७२२,
पत्र सं० २१, लिपि–देवनागरी, पूर्ण.

(ङ) राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डू.
लगत सं० ४/७०,
पत्र सं० २०, लिपि–नेवारी, (मध्य खण्डित).

(च) राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डू.
लगत सं० ५/५.
पत्र सं० ३५, लिपि–नेवारी, पूर्ण.

(भो.) भोट पाठ, देगे संस्करण, तोहोकू, सूची सं० ४६७.

कृष्णयमारितन्त्रटीका

(क) नेशनेल बिब्लियोथेक, पेरिस.
सं० २९, पत्र सं० २१७, पूर्ण.

(ख) राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डू.
लगत सं० १/२,
पत्र सं० २९, लिपि–नेवारी (भुजिमोल),
सप्तमपटलान्त पूर्ण.

(ग) राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डू.
लगत सं० ४/१२२,
पत्र सं० ४०, लिपि–नेवारी (भुजिमोल),
अन्त खण्डित.

(घ) ओरिएन्टल इंस्टिटयूट, एम्. एस्. युनिवर्सिटी, बड़ौदा.
पाण्डुलिपि सं० १३२९८/२०,
पत्र सं० ५०, अपूर्ण.

(भो.) भोट पाठ, देगे संस्करण, तोहोकू, सूची सं० १९२१.

ऊपर दिये गये हस्तलेखों को सुलभ कराने में जिन व्यक्तियों और संस्थाओं ने हमारी सहायता की है, जिनका नाम-निर्देश ऊपर किया जा चुका है, उन सबका हम आभार मानते हैं। दुर्लभ ग्रन्थ शोध योजना में कार्यरत विद्वानों को भी हम धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने बड़ी लगन के साथ पाठसंकलन, पाठसंशोधन, उद्धरण स्थल-निर्देश और आवश्यक परिशिष्टों का संयोजन कर इस संस्करण को अधिक से अधिक उपयोगी बनाने का भरसक प्रयास किया है। अन्त में हम इस ग्रन्थ के मुद्रक शिवम् प्रिन्टर्स के प्रबन्धक श्री हरिप्रसाद निगम को भी धन्यवाद देते हैं। इनको दिये गये ग्रन्थों के प्रकाशन में कभी अतिकाल नहीं हुआ, यह इनकी विशेषता है।

एस० रिनपोछे
निदेशक

PREFACE

We feel immense pleasure to present to the scholars the present edition of the *Kṛṣṇayamāri Tantra* with Kumāracandra's commentary *Ratnāvalīpañjikā*, being published as no. 9 in the Rare Buddhist Texts Series of this Institute. The importance of this work can be judged from the fact that a Śaivite Tantra called *Īśānaśivagurudevapaddhati* has borrowed some of its materials from the *Kṛṣṇayamāri Tantra*.

The MSs of this work mention neither the title of the commentary nor the name of the commentator. However, the Tibetan translation of this work provides this information; the same has been incorporated in the present edition.

The commentator has discussed in detail various rites, such as, the rite of drawing the *maṇḍala* (pp. 13-16), Offerings (pp. 59-62), the entire ritual of initiation including the rite of accomplishing the *maṇḍala*, consecration of the disciple, throwing the flower and entering the *maṇḍala* (pp. 90-104), the four-fold *yoga*, namely, *yoga*, *anuyoga*, *atiyoga* and *mahāyoga* (pp. 123-129) etc. These topics are useful especially for those who are curious to know the peculiar Tantric practices.

The text of the commentary to the *paṭala* 18 in MS- Gha is elaborate and somewhat different from that available in other manuscripts. It is therefore given separately as an appendix. Similarly, the last portion of the commentary to the *paṭala* 17 in the Tibetan translation is more extensive as compared to what is available in the Sanskrit original. This fact may indicate that the MSs available to the Tibetan translator had the same reading which forms the basis of his translation.

The *Kṛṣṇayamāri Tantra* and its commentary contain a few citations in the Apabhraṁśa. We have published as Appendix-1 those citations critically edited and supplemented with their Sanskrit version and critical notes by Dr. H. C. Bhayani, a well-known scholar of Apabhraṁśa. We are grateful to Dr. Bhayani for his kind co-operation.

The following manuscripts of the Sanskrit text and its Tibetan translation have been used for the present edition :

KṚṢṆAYAMĀRITANTRA

Ka. National Archives, Kathmandu. Catalogue No. 4/4,
Folios— 16, Script— Devanāgarī, Complete.

Kha. Asiatic Society of Bengal, Calcutta. MS No. 9964/91, Folios- 26, Script- Newārī, Complete.

Ga. Institute for Advanced Studies of World Religions, New York. Microfische Pl. No. MBB-I-2, Folios— 66, Script— Newārī, Complete.

Gha. National Archives. Kathmandu, Catalogue No. 3/722, Folios— 21, Script— Devanāgarī, Complete.

Ṅa. National Archives, Kathm ndu. Catalogue No. 4/70, Folios— 20, Script— Newārī, Incomplet, some portion the middle is lost.

Ca. National Archives, Kathmandu. Catalogue No. 5/5, Folios— 35, Script— Newārī, Complete.

Bho. sDe dGe edition of the Tibetan Buddhist Canons, Tohoku, No, 467.

KṚṢṆAYAMĀRITANTRAṬĪKĀ

Ka. Nationale Bibliotheque, Paris. MS. No. 29, Folios—217, Complete.

Kha. National Archives, Kathmandu. Catalogue No. 1/2, Folios— 29, Script— Newārī (Bhujimola), Upto Paṭala VII.

Ga. National Archives, Kathmandu. Catalogue No. 4/122, Folios— 40, Script-Newārī (Bhujimola), Incomplete, some portion at the end is lost.

Gha. Oriental Institute, M. S. University, Baroda. MS. No. 13298/20. Folios— 50, Incomplete.

Bho. sDe dGe edition of the Tibetan Buddhist Canons, Tohoku, No. 1921.

We are thankful to the persons and institutions who have extended their help to us in procuring copies of the manuscripts mentioned above. Thanks are also due to the members of the staff of the Rare Buddhist Texts Research Project, who zealously carried out the meticulous work of preparing the the present critical edition. Finally, we thank Shri Hari Prasad Nigam of Shivam Printers and his colleagues for the printing of this work with their usual precision and efficiency.

S. Rinpoche
Director

སྔོན་བརྗོད།

ནང་པའི་ཆོས་དཀོན་པའི་གསུང་རབ་བོད་ཕྲེང་དགུ་པའི་ཚུལ་དུ་ལེའུ་བཅོ་བརྒྱད་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོ་འི་རྒྱུད་འདི་ཉིད……གཞོན་ནུ་ཟླ་བས་མཛད་པའི་དཀའ་འགྲེལ་རིན་པོ་ཆེའི་ཕྲེང་བ་ཞེས་བྱ་བའི……འགྲེལ་པ་དང་བཅས་ནང་པའི་རྒྱུད་གཞུང་ལ་ཐུགས་སེམས་དང་ལྷགས་སློག……གནང་མི་མཁས་དབང་རྣམས་ཀྱི་སྤྱན་ལམ་དུ་དཔར་འགྲེམས་ཞུས་ཐུབ་པར……དགའ་སྤྲོ་ཆེན་པོ་སྐྱེས། གཙོ་བོ་དབང་ཕྱུག་ཟླ་ལྷའི་ལུགས་ (ཤྲཱི་ཕན་ཤིཀྲ གུཎྜཏེལྦཔདྨཏི) ལྭ་བའི་དབང་ཕྱུག་རྒྱུད་(ཤིལྦཧནྡྲ)གཞུང་དུའང……འདི་ཉིད་གཞིར་བྱས་ཆ་རྐྱེན་ཕྱོགས་བསྡུས་མཛད་འདུག་པ་དེ་ཡིས་རྒྱུད་གཞུང་འདི་གལ་གནད་ཆེན་པོ་ཡིན་པར་དཔོག་ནུས། ལེགས་སྦྱར་གྱི་ལག་བྲིས་མ་རྣམས་སུ་གཞུང་འདིའི་འགྲེལ་བ་དང་འགྲེལ་བ་མཛད་པ་པོའི་མཚན་མི་གསལ་ཡང་འདིའི་བོད་འགྱུར་དུ་འགྲེལ་བ་དང་འགྲེལ་བ་མཛད་པ་པོའི་མཚན་གསལ་འདུག་པ་དེ་བཞིན་འདིར་ཡང་འཀོད་ཡོད།

འགྲེལ་བ་མཛད་པ་པོས་དཀྱིལ་འཁོར་འབྲི་ཚུལ་ (ལྡེབ་༡༣–༡༦) དང་། སྦྱིན་སྲེག་གི་ཆོ་ག་ (ལྡེབ་༤༧–༦༡) དེ་བཞིན་དཀྱིལ་འཁོར་རབ་ཏུ་བསྒྲུབ་པའི་རྣམ་བཤད་དང་འབྲེལ་སློབ་མ་ལྷག་པར་གནས་པ་དང་། མེ་ཏོག་ཏོར་བ། དཀྱིལ་འཁོར་དུ་གཞུག་པ་བཅས་དབང་གི་ཆོ་ག་ཡོངས་རྫོགས་(ལྡེབ་

༩༠–༡༠༨) དང་། རྣལ་འབྱོར། རྗེས་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར། ཤིན་ཏུ་རྣལ་འབྱོར། རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོ་ཞེས་རྣལ་འབྱོར་རྣམ་བཞི་ཡི་ (ལྡེབ ༡༢༣–༡༢༩) ངེས་སྨོན་རྒྱས་པར་མཛད་འདུག རྒྱུད་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཅན་གྱི་ལས་བྱང་མཁྱེན་འདོད་ཅན་རྣམས་ཀྱི་ཆེད་ལེའུ་འདི་དག་དམིགས་བསལ་གྱི་ཕན་ཐོགས་ཅན་ཡིན། མ་དཔེ་ 'སྒྲ'' པའི་ནང་ལེའུ་བཅོ་བརྒྱད་པའི་རྣམ་བཤད་རྒྱས་པ་མི་འདྲ་བ་ཞིག་འདུག་པ་འདིར་ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་ནང་བཀོད་ཡོད། དེ་བཞིན་བོད་འགྱུར་དུ་ལེའུ་བཅུ་བདུན་པའི་སྐད་ཆའི་རྣམ་བཤད་ལེགས་སྦྱར་ལ་ལྟོས་དེ་ཙང་རྒྱས···པར་འདུག་པ་ལྟར་ན་བོད་འགྱུར་མཛད་པ་པོ་རྣམས་ལ་ཕྱུག་སོན་བྱུང་བའི······ལག་བྲིས་མ་དཔེར་དེ་འདྲ་རང་ཡོད་པར་མངོན།

གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་གི་རྒྱུད་དང་དེའི་འགྲེལ་པར་ཟུར་ཆག་གི་སྐད་རི་ཟུང་བཞུགས་ཡོད་པ་དག་སྐད་ཡིག་དེར་ཡོངས་སུ་གྲགས་པའི་མཁས······དབང་ཧོགྲཧར་ ཨེཆ. སི. བླཡ་ཧྲཱི་མཆོག་ལ་ཞུས་དག་གནང་ཚུག་སྟེ······ལེགས་སྦྱར་ཡིག་གཟུགས་སུ་ཕབ་པ་དང་མཉམ་གལ་ཆེའི་མཆན་བུ་དང་ཁོང་གི་དགོངས་འཆར་རྣམས་ཀྱང་འདིར་ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་དང་པོ་འི་ནང་ཚུད་པར···བྱས་ཡོད་པས་འདི་དག་ཐད་མཐུན་འགྱུར་རོགས་ཕན་གནང་བར་ཁོང་ལ······བཀྲིན་སྐྱིང་བཅངས་ཞུ།

པར་ཐེངས་འདིའི་པར་རྩ་གྲྭ་སྒྲིག་ཞུ་རྒྱུར་རོགས་ཕན་བླང་བའི······ལེགས་སྦྱར་གྱི་རྩ་གཞུང་ཁག་དང་དེ་དག་གི་བོད་འགྱུར་གྱི་མ་དཔེ་དང་དཔར་གཞི་རྣམས་ཀྱི་ངོ་སྤྲོད་གཤམ་གསལ།

གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད།

ཀ— བལ་ཡུལ་རྒྱལ་ཁབ་ཀྱི་ཡིག་ཆ་ཁང་། ཀཱཋྨཎྜུ། (རཱཥྚྲིཡ ཨབྷི ལེཁཱལཡ ཀཱཋྨཎྜུ)

ལག་བྲིས་མ་ཨང་—(ལགད་སཾ) ༥/༥ ཡིག་གཟུགས—དེཝནཱགརཱི།

ལྡེབ་གྲངས— ༡༦ ཆ་ཚང་།

ཁ— ཨེཤིཡཱཊིཀ སོསཱཡཊི ཨཕ བེངྒལ། ཀལཀཏྟཱ།

ཨང་— ༩༩༦༥/༩༡ ཡིག་གཟུགས— ནེཝཱརཱི། ཆ་ཚང་།

ལྡེབ་གྲངས— ༣༦

ག— ནུ ཡཱརྐ འཛམ་གླིང་ཆོས་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་སློབ་ཁང་། (ཨིན་སཊིཊྱཱུཊ ཨཕ ཨེཌྭཱཾས སཊཊིས ཨཕ ཝརྩྪཊ རི་ལི་ཇན། ནུ ཡཱརྐ)

ཨང་— ཨེམ༠ བི༠ བི༠ ༡—༣ ཡིག་གཟུགས— ནེཝཱརཱི།

ལྡེབ་གྲངས— ༦༦

ང— བལ་ཡུལ་རྒྱལ་ཁབ་ཀྱི་ཡིག་ཆ་ཁང་། ཀཱཋྨཎྜུ།

ལག་བྲིས་མ་ཨང་—༢/༧༣༣ ཡིག་གཟུགས— དེཝནཱགརཱི། ཆ་ཚང་།

ལྡེབ་གྲངས— ༣༡

ང— བལ་ཡུལ་རྒྱལ་ཁབ་ཀྱི་ཡིག་ཆ་ཁང་། ཀཱཋྨཎྜུ།

ལག་བྲིས་མ་ཨང་—༥/༧༠ ཡིག་གཟུགས— ནེཝཱརཱི། (དཀྱིལ་ན་ཆད)

ལྡེབ་གྲངས— ༣༠

ཅ— བལ་ཡུལ་རྒྱལ་ཁབ་ཀྱི་ཡིག་ཆ་ཁང་། ཀཱཊམཱཏྲྀ ཊཱུ།

ལག་བྲིས་མ་ཨང་—༤/༤ ཡིག་གཟུགས— ནེཝཱ་རཱི། ཆ་ཚང་།

ལྡེབ་གྲངས— ༢༤

བོད་འགྱུར— སྡེ་དགེ་བཀའ་འགྱུར།

རྒྱུད— ཛ། ཤོག ༡༣༨—༡༤༡

ཆོས་ཚན་ཨང—༨༩༧

གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་རྒྱུད་ཀྱི་འགྲེལ་པ།

ཀ— ནེཤནལབིབློཡོཐེཀ པེ་རིས། ཕྲཱནས།

ཨང་— ༢༥ ཆ་ཚང་། ལྡེབ་གྲངས—༢༡༧

ཁ— བལ་ཡུལ་རྒྱལ་སྤྱིའི་ཡིག་ཆ་ཁང་། ཀཱཊམཱཏྲྀ ཊཱུ།

ལག་བྲིས་མ་ཨང་—༡/༢ ཡིག་གཟུགས—ནེཝཱ་རཱི། (བྷུཛིམོལ)

ལྡེབ་གྲངས— ༢༥ (ལེའུ་བདུན་པ་བར་ཆ་ཚང་)

ག— བལ་ཡུལ་རྒྱལ་སྤྱིའི་ཡིག་ཆ་ཁང་། ཀཱཊམཱཏྲྀ ཊཱུ།

ལག་བྲིས་མ་ཨང་—༨/༡༢༣ ཡིག་གཟུགས—ནེཝཱ་རཱི། (བྷུཛིམོལ)

ལྡེབ་གྲངས— ༨༠(མཇུག་མ་ཚང་བ)

ང— ཨོ་རིཡནཊལ ཨིནསཊིཊྱུཊ། བརྡོཊཱ།

ལག་བྲིས་མ་ཨང་— ༡༣༢༥༦/༢༠

ལྡེབ་གྲངས—༤༠(མ་ཚང་བ)

བོད་འགྱུར— སྡེ་དགེ་བསྟན་འགྱུར། རྒྱུད— བི།

ལྡེབ་གྲངས ༢༤༦—༣༡༢ ཆོས་ཚན་ཨང་—༡༥༢༡

གོང་གསལ་ལག་བྲིས་མ་རྣམས་རྙེད་ཐབས་སུ་སྦྱི་སྐྱེར་མང་པོ་ཞིག··
ནས་རྩོགས་ཕན་གནང་ཡོད་པ་དག་གི་མཚན་གོང་འཁོད་རྣམས་ལའང་བཀའ་
དྲིན་སྐྱོང་བཅངས་ཞུ། ཞུས་ཆེན་དང་། དག་ཞུས། དེ་བཞིན་དཔེ་ཁྲངས་
ངེས་སྟོན་བྱས་པའི་གལ་ཆེའི་ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་ཀྱིས་ལེགས་པར་བརྒྱན་ཏེ······
དཔར་ཐེངས་འདི་ཕན་ཐོགས་གང་མང་ཡོང་ཐབས་ལ་འབད་རྩོལ་ཅི་ཆེར་བྱས··
པར་ནང་པའི་ཆོས་དཀོན་པའི་གསུང་རབ་ཉམས་ཞིབ་འཆར་གཞིའི་ལས་བྱེད··
མཁས་དབང་རྣམས་ལའང་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུས་མཐར་གཞུང་འདིའི་དཔར་སྐྲུན····
བྱེད་པོ་ཤིལླམ྄་པར་ཁང་གི་འགན་འཛིན་ཧརིཔྲསད྄་ནིགམ་ལགས་སྤུའང་དུས··
ཐོག་དཔར་བསྐྲུན་གནང་བར་ལེགས་སོ་ཡོད། ཅེས་ལྷ྄ཀྵ་དབུས་བོད་ཀྱི་ཆེས་
མཐོའི་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་ངེས་སྟོན་པ་ཟམ་གདོང་བློ་བཟང་བསྟན་འཛིན་
གྱིས་བྲིས།

उपोद्घात

लामा तारनाथ ने अपने "भारत में बौद्ध धर्म का इतिहास" नामक ग्रन्थ में लिखा है—"अधिकतर अनुत्तर योगतन्त्र तो सिद्धाचार्यों के द्वारा क्रमशः लाये गये। उदाहरण के रूप में श्री सरह (७६९-८०९ ई०) के द्वारा बुद्धकपाल लाया गया, लुईपा (७६९-८०९ ई०) द्वारा योगिनीसंचर्या आदि लायी गयी, कम्बल और सरोरुहवज्र द्वारा हेवज्र लाया गया, कृष्णचारिन् (कृष्णाचार्य) द्वारा सम्पुटतिलक लाया गया, ललितवज्र द्वारा कृष्णयमारि लाया गया, गंभीरवज्र द्वारा वज्रामृत लाया गया, कुकुरिपा(द) द्वारा महामाया लायी गयी और पिटोपा द्वारा कालचक्र लाया गया"[1] (पृ० १४५-१४६)। यहाँ कृष्णयमारितन्त्र के लिये लिखा गया है कि यह ललितवज्र द्वारा लाया गया। अनुत्तर योगतन्त्र के उपाय(= पितृ)तन्त्र में इसका समावेश माना जाता है।

साधनमाला के उपोद्घात (पृ० १०१) में डॉ० विनयतोष भट्टाचार्य ने ललितवज्र को पद्मवज्र (६९३ ई०) का समकालीन माना है। इस तन्त्र के भोट भाषा के प्रथम अनुवादक दीपंकर श्रीज्ञान हैं। इनका समय निश्चित है। बोधिपथप्रदीप[2] के उपोद्घात (पृ० २१) में इनका जन्मसमय ९८२ ई० दिया गया है और "अतीशविरचिता एकादशग्रन्थाः"[3] की भूमिका (पृ० १०७) में मृत्युसमय १०५४ ई० अंकित है। भारत से भोट देश में गये विद्वानों में इनकी अतिविशिष्ट स्थिति मानी गयी है। इस ग्रन्थ की प्रस्तावना में यह बताया जा चुका है कि ईशानशिवगुरुदेवपद्धति में इसी तन्त्र के प्रमाण से कृष्णयमारिसाधन को संगृहीत किया गया है। इस ग्रन्थ के कर्ता ईशानशिव अपने ग्रन्थ में सोमशम्भु को स्मरण करते हैं। कर्मकाण्डक्रमावली नामक इनके ग्रन्थ के तीन संस्करण हो चुके हैं[4]। विक्रम संवत् ११३० में इस ग्रन्थ

---

१. भारत में बौद्ध धर्म का इतिहास—काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, पटना, सन् १९७१.

२. बोधिपथप्रदीप, आचार्य दीपंकर श्रीज्ञान, भोट-भारतीय ग्रन्थमाला—७, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी, सन् १९८४.

३. अतीशविरचिता एकादशग्रन्थाः, भोट-भारतीय ग्रन्थमाला—२४, पूर्ववत्, सन् १९९२.

४. सोमशम्भुपद्धति अथवा कर्मकाण्डक्रमावली का पहला संस्करण सन् १९३१ में दक्षिण भारत स्थित 'देवकोटै' से हुआ था। दूसरा संस्करण सन् १९४७ में कश्मीर संस्कृत सिरीज, श्रीनगर से हुआ। इसका तीसरा समालोचनात्मक संस्करण पांडिचेरी के फ्रेंच शोध संस्थान से हो रहा है। प्रथम भाग (नित्यकर्मविधि पर्यन्त) सन् १९६३, द्वितीय भाग (प्रायश्चित्तविधि पर्यन्त) सन् १९६९ और तृतीय भाग (श्राद्धविधि पर्यन्त) सन् १९७७ में प्रकाशित हुआ है। इन तीन भागों में ग्रन्थ अभी पूरा प्रकाशित नहीं हुआ है।

की समाप्ति हुई थी। तदनुसार १०७३ ई० में रचित इस ग्रन्थ को उद्धृत करने वाले ईशानशिव इनके बाद ही हुए माने जायंगे। उस समय कृष्णयमारितन्त्र शैव आचार्यों के बीच भी प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुका था, यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाता है। इन्हीं प्रमाणों के आधार पर अभी हम इस ग्रन्थ की रचना की पूर्व और उत्तर सीमा को स्थिर कर सकते हैं। यों अभी कृष्णयमारि तन्त्र पर ही नहीं, पूरे तान्त्रिक साहित्य के क्रमिक विकास को दिखाने के लिये पर्याप्त अध्ययन अपेक्षित है।

यह कृष्णयमारितन्त्र यहाँ संस्कृत टीका और भोट अनुवाद के साथ अब प्रकाशित किया जा रहा है। टीका और टीकाकार के विषय में संस्कृत टीका से तो नहीं, किन्तु उसके भोट अनुवाद से हमें यह ज्ञात होता है कि इसका नाम कृष्णयमारिपंजिका रत्नावली और इसके रचयिता का नाम कुमारचन्द्र (अवधूतीपा) है।

भारतीय साहित्य का भोट भाषा में जो अनुवाद हुआ, उसके विषय में इतना ज्ञातव्य है कि यह सारा कार्य भारतीय और भोट विद्वानों ने मिलकर किया। प्रत्येक ग्रन्थ के अनुवाद में एक भारतीय और दूसरा भोट विद्वान् संलग्न रहा है और इनके नाम भी वहाँ सुरक्षित कर दिये गये हैं। तदनुसार कृष्णयमारितन्त्र के अनुवादक भारतीय विद्वान्, जैसा कि पहले सूचित किया गया, दीपंकर श्रीज्ञान हैं और इनके सहायक भोट विद्वान् का नाम छुलठिम ज्ञलवा है। इसी तरह से टीका के भारतीय अनुवादक का नाम शीलवज्र और भोट विद्वान् का नाम सोनम ज्ञलछन है। थोड़ा परिश्रम करने पर इनके समय का ज्ञान भी हमें हो जाता है कि किस ग्रन्थ का अनुवाद कब किया गया।

साधनमाला में कृष्णयमारि, रक्तयमारि, यमारि अथवा यमान्तक के नाम से कुछ साधन छपे हैं। इनके अतिरिक्त भी इनसे संबद्ध भारतीय साहित्य का परिचय हमें तोहोकु सूची से मिलता है। इसमें मूलतन्त्र और व्याख्या-ग्रन्थों के अतिरिक्त साधन, मण्डल आदि से सम्बद्ध साहित्य भी उपलब्ध है। निष्पन्नयोगावली में यमारि-मण्डल का स्वरूप निर्दिष्ट है। यहाँ प्रथमतः उक्त दो ग्रन्थों में प्रकाशित साहित्य का परिचय देने के बाद तोहोकु सूची में दी गई संख्या के साथ भोट भाषा में अनूदित साहित्य की नामावली दी जा रही है, जिससे कि यमारि से संबद्ध उपलब्ध साहित्य का पाठकों को अनायास परिचय प्राप्त हो सके।

उपलब्ध यमारि-साहित्य

साधनमाला में प्रकाशित

कृष्णयमारितन्त्रोद्धृतं वज्रसरस्वतीसाधनम्—(सा० मा०–२, पृ० ३३८)
कृष्णयमारिसाधनम्—(सा० मा०–२, पृ० ५४६)
कृष्णयमारिसाधनम्—(सा० मा०–२, पृ० ५४७)

कृष्णयमारिसाधनम्—(सा० मा०–२, पृ० ५४८)
कृष्णयमारिसाधनम्—(सा० मा०–२, पृ० ५५०)
कृष्णयमारिसाधनम्—(सा० मा०–२, पृ० ५५४)

कृष्णयमारितन्त्र (मूल)

तो. ४६७ सर्वतथागतकायवाक्चित्तकृष्णयमारिनामतन्त्र
तो. ४६९ श्रीकृष्णयमारितन्त्रराजत्रिकल्पनाम
तो. ४७३ यमारिकृष्ण(?कृष्णयमारि)कर्मसर्वचक्रसिद्धिकरनाम तन्त्रराज

कृष्णयमारितन्त्र (व्याख्या)

तो. १९१८ श्रीयमारितन्त्रपंजिका सहजालोकनाम– श्रीधर (द्र० 'धीः' १४, पृ० ७)
तो. १९१९ श्रीकृष्णयमारिमहातन्त्रराजपञ्जिका रत्नप्रदीपनाम– रत्नाकरशान्ति
तो. १९२० कृष्णयमारितन्त्रराज प्रेक्षणपथप्रदीपनाम टीका– महाकृष्णपा
तो. १९२१ कृष्णयमारितन्त्रपञ्जिका रत्नावली–अवधूतिपा, *कुमारचन्द्र
तो. १९२२ कृष्णयमारितन्त्रपंजिका– पदपाणि

साधन, मण्डल आदि

तो. १९२३ कृष्णयमारिसाधननाम–*श्रीधर
तो. १९२४ कृष्णयमारिमण्डलसाधन–*श्रीधर
तो. १९२९ कृष्णयमारिनामसाधन–*दिवाकरकीर्ति
तो. १९३० कृष्णयमारिसाधन–घोषवज्र
तो. १९३१ श्रीकृष्णयमारिसाधनसचक्रार्थविस्तरव्याख्या–*अक्षोभ्यवज्र
तो. १९३२ कृष्णयमारिसाधन-कमलरक्षित
तो. १९३५ कृष्णयमारिसाधनप्रोत्फुल्लकुमुदनाम–*रत्नाकरशान्ति
तो. १९३६ कृष्णयमारिसाधननाम–श्रीपण्डित
तो. १९४६ कृष्णयमारिबुद्धसाधननाम–*कृष्ण
तो. १९४७ कृष्णयमारिसाधननाम–कमलरक्षित
तो. १९५२ कृष्णयमारिसाधनमण्डलविधिनाम–कमलरक्षित
तो. १९५४ श्मशानविधिकृष्णयमारिनाम–*कृष्ण
तो. १९५६ कृष्णयमारिशान्तिहोमविधिनाम–*कृष्ण
तो. १९५८ कृष्णयमार्यभिसमयक्रम–*वज्रमति
तो. १९५९ *कृष्णयमारिचक्रलेखनविधि
तो. १९६० कृष्णयमारिसाधननाम–*समन्तभद्र
तो. १९६४ *कृष्णयमारिचक्रोपदेश–नागबोधि
तो. १९६८ कृष्णयमारिमण्डलस्तुतिनाम–कीर्ति

---

* चिह्नित स्थलों पर भोट नामों का संस्कृत रूप दिया गया है ।

तो. २०१५ कृष्णयमारिमुखषट्चक्रसाधननाम–दे(?दि)वाकरचन्द्र
तो. २०२८ कृष्णयमारिरक्तयमारिपूजनविधि–*श्रीधर
तो. ३२८२ कृष्णयमारिसाधनम्
तो. ३२८३ कृष्णयमारिसाधनम्
तो. ३२८४ कृष्णयमारिसाधनम्
तो. ३३२५ कृष्णयमारिसाधनम्
तो. ३३२६ कृष्णयमारिसाधनम्
तो. ३३२७ कृष्णयमारिसाधनम्
तो. ३६२८ कृष्णममारिसाधनम्
तो. ३६२९ कृष्णयमारिसाधनम्
तो. ३६३० कृष्णयमारिसाधनम्

रक्तयमारि साहित्य

साधनमाला में प्रकाशित

रक्तयमारिसाधनम्—(सा० मा०–२, पृ० ५२८)
रक्तयमारिसाधन—(सा० मा०–२, पृ० ५३०)
रक्तयमारिसाधन—(सा० मा०–२, पृ० ५३१)
स्वाधिष्ठानरक्तयमारिसाधन–वैरोचनरक्षित–(सा० मा०–२, पृ० ५३४)
रक्तयमारिसाधन—गुणाकरगुप्त (सा० मा०–२, पृ० ५३६)

रक्तयमारितन्त्र (मूल)

तो. ४७४ श्रीमद्रक्तयमारितन्त्रराजनाम

साधन, मण्डल आदि

तो. २०१८ रक्तयमारिसाधन–श्रीविरूप
तो. २०२१ श्रीरक्तयमारिसाधनविधि
तो. २०२३ श्रीरक्तयमारिसाधन—*श्रीधर
तो. २०२४ श्रीयमारिरक्तमण्डलविधि—*श्रीधर
तो. २०२६ रक्तयमारिसाधननाम—*श्रीधर
तो. २०२७ रक्तयमारिमण्डलपूजाविधि—*श्रीधर
तो. २०२९ रक्तयमारिसमाधिविधि—*श्रीधर
तो. २०३० रक्तयमारिबलिविधि—*श्रीधर
तो. २०३१ रक्तयमारिसाधन—*वैरोचनरक्षित
तो. २०३४ रक्तयमारियन्त्रतत्त्वनिर्देशक--*बोधिगर्भ
तो. २०३५ रक्तयमारिसाधननाम—*सुमतिगर्भ
तो. २०३७ श्रीरक्तयमारिजीवतत्त्वोपदेशनाम—दर्पणाचार्य

तो. २०३८ रक्तयमार्यधिष्ठानदेशना—*श्रीधर
तो. २०४६ रक्तयमारिमन्त्रसंग्रहनाम—*श्रीधर
तो. २०४७ रक्तयमारिकर्मावलोसाधनचिन्तामणिनाम—*प्रज्ञारक्षित
तो. ३३७५ आर्यरक्तयमारिसाधन
तो. ३६२७ आर्यरक्तयमारिसाधन

यमारि एवं यमान्तक

साधनमाला में प्रकाशित

यमारिसाधन–मंगलसेन (सा० मा०-२, पृ० ५४२)

निष्पन्नयोगावली में प्रकाशित

यमारिमण्डल (नि० यो०, पृ० ३६–३७)

साधन, मण्डल आदि

तो. १९२६ यमारिमण्डलविधियमान्तकोदयनाम–ललितवज्र
तो. १९३७ वैरोचनयमार्यभिसमयनाम– *दीपंकरज्ञान
तो. १९३८ रत्नसंभवयमारिसाधननाम–*दीपंकरज्ञान
तो. १९३९ अमिताभहृदयरागयमारिसाधननाम–*दीपंकरज्ञान
तो. १९४० वज्रतीक्ष्णयमारिसाधननाम–*दीपंकरज्ञान
तो. १९४५ भट्टारकमञ्जुश्रीयमारिपूजाक्रमविधिनाम–कृष्ण पण्डित
तो. १९४८ मुद्गरक्रोधयमारिसाधननाम–दीपंकर
तो. १९४९ दण्डधृग्विदारयमारिसाधननाम–दोपंकर
तो. १९५० चण्डखड्गयमारिसाधनाम–दीपंकर
तो. १९५१ प्रज्ञासुखपद्मयमारिसाधननाम–दीपंकर
तो. १९६१ यमारिसाधन
तो. १९६९ यमारिस्तुतितन्त्रवज्रधृक्
तो. २०१४ श्रीयमान्तकवज्रप्रभेदनाममूलमन्त्रार्थ–*ललितवज्र
तो. २०१६ यमारिसिद्धचक्रसाधन–*नागबोधि
तो. २०१७ रक्तयमान्तकसाधन–विरूप
तो. २०२२ यमारियन्त्रावलि–विरूप
तो. २०३२ स्वाधिष्ठानक्रमोपदेशरक्तयमान्तकाभिसमय
तो. २०३३ रक्तयमान्तकयन्त्रोद्योतक–*बोधिगर्भ
तो. २०३६ रक्तयमान्तकनिष्पन्नयोग–*अभयाकरगुप्त
तो. ३२८५ यमान्तकसाधन
तो. ३२८६ यमान्तकसाधन

तो. ३६३१ यमान्तकसाधन
तो. ३६३२ यमान्तकसाधन
तो. ३६५५ आर्ययमान्तकसाधन

ग्रन्थ, टीकाकार तथा यमारि से संबद्ध साहित्य के इस विवरण के बाद सर्वप्रथम हम यहाँ कृष्णयमारितन्त्र में प्रतिपादित तथा टीकाकार द्वारा उपबृंहित विषयों का संक्षेप में परिचय देना उपयुक्त समझते हैं, जिससे कि उक्त ग्रन्थों के प्रतिपाद्य विषयों की हमें सरलता से जानकारी मिल सके।

ग्रन्थ संक्षेप

यह ग्रन्थ अन्य अनेक तन्त्रों के समान गद्यपद्यात्मक है। वसन्ततिलकानाम साधनोपायिका के प्रथम गद्यवाक्य में जैसे सारे ग्रन्थ के प्रतिपाद्य का साररूप में उल्लेख किया गया है, उसी तरह से कृष्णयमारितन्त्र के आद्यवाक्य में भी सारे ग्रन्थ का सार उपलब्ध है। यहाँ गुह्यसमाज, हेवज्र आदि की पद्धति से आदिवाक्य के उल्लेख के बाद मोहवज्र, पिशुनवज्र, रागवज्र, ईर्ष्यावज्र और द्वेषवज्र नामक पाँच मुख्य यमारियों के साथ मुद्गर, दण्ड, पद्म और खड्ग यमारि नामक चार द्वारपाल देवताओं का एवं वज्रचर्चिका, वज्रवाराही, वज्रसरस्वती और वज्रगौरी नामक कोणदेवियों का उल्लेख किया गया है। यमारिमण्डल में इन तेरह देवताओं की पूजा का ही विधान है। आगे के पूरे ग्रन्थ में इसी का विस्तार बताया गया है।

द्वितीय गद्यवाक्य में प्रथम पाँच यमारियों की पंचतथागतस्वभावता और पंचाकाराभिसंबोधिस्वभावता वर्णित है और तृतीय श्लोक में इन पाँचों यमघ्नों की भावना की पद्धति बताई गई है। यहाँ के विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि उक्त पाँच यमघ्नों में द्वेषयमारि मुख्य हैं और यमारिमण्डल के मध्य में इन्हीं की आराधना की जाती है। साधक अपनी रक्षा के लिये पंचरश्मि[1] विश्ववज्र, भूमि, वाट, प्राकार और पंजर की रचना करता है। चतुर्थ श्लोक में इस विषय का वर्णन करने के बाद पाँचवें गद्यवाक्य में उक्त सभी माण्डलेय देवताओं के बीजाक्षरों की निष्पत्ति की प्रक्रिया को बताते हुए छठे श्लोक में सभी बीजाक्षरों का उल्लेख कर दसवें श्लोक तक किस देवता का कौन सा बीजाक्षर है, इसका स्पष्ट निर्देश कर दिया गया है। अगले तीन श्लोकों में मण्डल में देवताओं के विन्यास का क्रम बताते हुए कहा गया है कि द्वेषयमारि का मध्य में, मोहवज्र का पूर्व दिशा में, पिशुनवज्र का दक्षिण में, रागवज्र का पश्चिम में और ईर्ष्यावज्र का उत्तर दिशा में विन्यास किया जाता है। इसी तरह से चतुःशूल वज्र के चार कोणों (विदिशाओं) में वज्रचर्चिका आदि चार देवियों का क्रमशः आग्नेय, नैर्ऋत्य, वायव्य और ऐशान कोणों में

---

१. पंचरश्मि विश्ववज्र आदि शब्दों के अर्थ टीका में पृ० ६ पर तथा अन्यत्र भी देखे जा सकते हैं।

तथा मण्डल के पूर्व आदि चार द्वारों पर द्वारपाल के रूप में मुद्गरयमारि आदि चार देवताओं का क्रमशः विन्यास विहित है। इसी तरह से विश्ववज्र के चार कोणों में अमृतपूरित चार नृकपालों का विन्यास किया जाता है। आगे के १४ से २६ संख्या तक के वाक्यों में इन सभी देवताओं के मन्त्रों का स्वरूप प्रदर्शित है। इसी तरह से १७वें वाक्य में काय, वाक् और चित्त के अधिष्ठान मन्त्रों का स्वरूप बताकर अन्त में पंच-यमारियों के ध्यानों का वर्णन किया गया है और इस प्रकार इस तन्त्र के प्रथम **अभिसमय पटल** की समाप्ति होती है।

द्वितीय पटल के प्रथम वाक्य में महावज्रसत्त्व की स्तुति का निर्देश करते हुए आगे के पांच श्लोकों में पांच मुख्य यमारियों की स्तुति की गई है। सातवें गद्यवाक्य में चक्षु आदि चार तथा वाक् आदि तीन अधिष्ठान समयों का निर्देश कर बाद में पूरे पटल (श्लो० ८–१५) में यमारि-मण्डल के निर्माण की विधि को बताकर अन्तिम श्लोक में मण्डल की पूजा करने का निर्देश किया गया है। यहाँ (पृ० १३–१६) टीकाकार ने विस्तार से मण्डल के निर्माण का प्रकार दिखला कर और मण्डल के विभिन्न स्थानों की पारिभाषिक संज्ञाओं को देते हुए इनकी स्थिति को समझाने का श्लाघ्य प्रयत्न किया है। इसके साथ ही द्वितीय **महामण्डल पटल** समाप्त होता है।

तृतीय पटल में निष्पन्न मण्डल की स्तुति के बाद अमृतास्वादसमय के मन्त्र का तथा आकर्षण आदि चतुर्विध कर्मों के चार मन्त्रों का स्वरूप बता कर पंचयमारियों की भावना का प्रकार दिखाया गया है। शान्ति, पुष्टि आदि कर्मों की विधि को बताने के बाद यहाँ [1]अंजन, पादलेप, गुलिका और खड्ग नामक सिद्धियों के प्रयोग भी वर्णित हैं। इस **कर्मयोग पटल** में कुल १३ श्लोक हैं।

चतुर्थ पटल में अन्य पटलों की अपेक्षा अधिक श्लोक हैं। इस पटल की कुल श्लोक संख्या ६७ है। यहाँ वशीकरण आदि उग्र प्रयोगों के साथ शान्तिक, पौष्टिक आदि शुभ कर्मों के लिये भी विभिन्न मन्त्रों के निर्माण की विधि और उनमें स्थापनीय मन्त्रों का स्वरूप [2]विस्तारित (तन्त्र) है। इसीलिये इस पटल का नाम **यन्त्रमन्त्रतन्त्रमारणादिसमय** है। ये सब प्रयोग यहाँ शान्तिकसमय, पौष्टिकसमय, महावश्यसमय, आकर्षणसमय, महास्तंभनसमय, महावाक्स्तंभनसमय जैसे नामों से वर्णित हैं। यहाँ यह भी स्पष्ट किया गया है कि कृष्णयमारि तन्त्र में प्रोक्त प्रयोगों का अनुष्ठान अत्यन्त गुप्त रीति से करना चाहिये। यन्त्र लिखने की स्याही, लेखनी आदि के निर्माण की विधि को बताने के बाद यन्त्रों को किस प्रकार लिखना चाहिये, इसकी पद्धति भी यहाँ

---

१. अंजन, पादलेप आदि सिद्धियों का वर्णन तन्त्रशास्त्र की प्रायः सभी शाखाओं में मिलता है। डॉ० विनयतोष भट्टाचार्य ने साधनमाला के उपोद्घात (पृ० ८५) में अंजन, पादलेप आदि आठ सिद्धियों का बौद्ध सिद्धियों के रूप में वर्णन किया है। वह उचित नहीं है।

२. 'तनु विस्तारे' (१४६४ तनादि) धातु से तन्त्र शब्द बनता है।

दिखाई गयी है कि यन्त्र में देवता, साध्यनाम और मन्त्र का विन्यास किस प्रकार किया जाय। इन सबकी भावना का प्रकार भी यहाँ दिखाया गया है। प्रसंगवश यहाँ इस बात का भी निर्देश किया गया है कि मारण जैसे क्रूर कर्मों के अनुष्ठान में भी करुणा की ही प्रधानता रहनी चाहिये। इसी चेतावनी के साथ यहाँ मारण मन्त्र भी उपदिष्ट है। इस पटल की विशेषता यह है कि यन्त्र, मन्त्र और तन्त्र इन तीनों शब्दों का स्वरूप यहाँ स्पष्ट हो जाता है, अर्थात् मारण आदि प्रयोगों से संबद्ध यन्त्रों और मन्त्रों के विन्यास की विधि का विस्तार से निरूपण करने का ही नाम तन्त्र है।

पंचम पटल के प्रारंभ में महाविद्वेष यन्त्र के निर्माण का प्रकार बता कर उसके मन्त्र का उपदेश किया गया है। इसी प्रकार महोच्चाटन यन्त्र और मन्त्र के उपदेश के बाद मारण आदि कर्मों के लिये निर्मित किये जाने वाले यन्त्रों के श्मशानचेलक, भूर्जपत्र आदि आधारों का वर्णन किया गया है और यन्त्रों के लेखन की विधि प्रदर्शित है। वश्य आदि विविध कर्मों की सिद्धि के लिये [1]पूर्वसेवा, अर्थात् मन्त्रों के पुरश्चरण का भी उल्लेख यहाँ मिलता है। महारौद्र गृहकलह उत्पादक यन्त्र और वशीकरण मन्त्रों के उपदेश के साथ यह पटल समाप्त होता है। इस पटल का नाम **चक्रानुपूर्वीलिखन** है, अर्थात् पूर्व अध्याय के समान यहाँ भी चक्र (यन्त्र) के निर्माण की आनुपूर्वी चली आ रही है।

छठे पटल के अध्येषणा-वाक्य के बाद बताया गया है कि कृष्णयमारि मण्डल के सभी माण्डलेय देवताओं के शीर्ष स्थान में यमघ्न की भावना करनी चाहिये। मण्डलनिर्माण, हवन, समयसाधन और संवरग्रहण के बाद चार प्रकार के सेकों[2] का यहाँ उपदेश दिया गया है। टीकाकार ने यहाँ स्पष्ट किया है कि मुकुट, वज्र, घण्टा और नामाभिषेक के साथ त्रिकुलसमय, वज्राचार्य, [3]वज्रव्रत, आश्वासदान, व्याकरण और अनुज्ञा का स्वरूप बताने के बाद प्रज्ञाभिषेक के ग्रहण करने तक की विधि से शिष्य को अभिषिक्त करना चाहिये। यहाँ बताया गया है कि ये चार महासेक साक्षात् कृष्णयमारि के मुख से निर्गत हैं। इन चार अभिषेकों के बाद दीयमान मन्त्र भी यहाँ उपदिष्ट हैं। आगे त्रिकोण-मण्डलिका में देवताओं के प्रसादार्थ उनका आवाहन तथा

---

१ पुरश्चरण के अर्थ में पूर्वसेवा शब्द का प्रयोग उत्तरषट्क (२।२८) जैसे त्रिपुरा सम्प्रदाय के प्राचीन ग्रन्थ में भी मिलता है।

२. कृष्णयमारितन्त्र में निर्दिष्ट इन सेकों का तथा इस पटल में वर्णित अभिषेक-सम्बन्धी समस्त विषयों का परिचय 'धीः' के १४वें अंक में (पृ० ५३–६२) प्रकाशित 'कृष्णयमारितन्त्र में निर्दिष्ट अभिषेक विधि' शीर्षक डा० बनारसी लाल के निबन्ध से प्राप्त किया जा सकता है। अद्वयवज्रसंग्रह (पृ० ३९) में चतुर्थाभिषेक के कई अर्थ दिये गये हैं।

३. इन शब्दों के अर्थ के लिये अद्वयवज्रसंग्रह (पृ० ३८) तथा सेकोद्देशटीका (पृ० २१) को भी देखना चाहिये। बौद्ध तन्त्र कोश, भाग १ में इनको संगृहीत कर दिया गया है।

मण्डलिका-निर्माण का प्रकार निर्दिष्ट है। यहाँ मन्त्र-वर्णों के विन्यास की विधि को बताते हुए साध्य के नाम के साथ वाक्स्तंभन, उच्चाटन आदि कर्मों के विन्यास की पद्धति वर्णित है। पटल के अन्त में बताया गया है कि कृष्णयमारि मन्त्र के आदि और अन्त में प्रणव, नमः, वषट्, वौषट् आदि का विन्यास कर साधक विभिन्न अभिलाषाओं को पूरी कर सकता है। 'यमराजा' इत्यादि कृष्णयमारि का प्रसिद्ध मन्त्र इसी पटल में १३वें श्लोक[1] के रूप में उपदिष्ट है। इस पटल को **चक्रावलोकन** नाम से विभूषित किया गया है।

सातवें पटल में प्रधानतः चर्चिका, वाराही, सरस्वती और गौरी नामक चार वज्रांगनाओं के ध्यान से क्रमशः रक्ताकृष्टि, मद्याकृष्टि, प्रज्ञावृद्धि और शुक्राकृष्टि का विधान और मन्त्र प्रदर्शित हैं। परमाभिषेक समय के अन्तर्गत यहाँ पूर्वोक्त चार अभिषेकों का तथा बोधिचित्त के भक्षण का मन्त्र भी उपदिष्ट है। इसी लिये इस पटल को **आकर्षणादिप्रयोग** नाम से अभिहित किया गया है।

आठवें पटल में प्रधानतः होमविधि का वर्णन है। रक्षाचक्र (मण्डल) के निर्माण के लिये भूपरिग्रह आदि का विधान बता कर मण्डलप्रवेश की विधि, आचार्य से अभिषेक दान की प्रार्थना, धर्म-संभोग-निर्माणकायिक आचार्यरूपी बुद्ध के द्वारा वज्रसत्त्वाभिषेक का दान, भावनीय मन्त्र का उपदेश, शान्तिक आदि कर्मों के लिये होम का विधान, तदनुरूप कुण्ड का निर्माण, कुण्ड का प्रमाण और [2]शान्तिक आदि कर्मों के अनुरूप उनके आकार आदि का स्वरूप यहाँ दिखाया गया है। टीकाकार ने इन विषयों को यहाँ (पृ० ५९-६२) विस्तार से समझाया है। मण्डल के प्रसंग में वर्णभेद, दिग्भेद और कालभेद का विशेष रूप से वर्णन करके होमार्थ द्रव्यों का; द्रव्य-शोधन की मुद्राओं का; आवाहन, अर्घपाद्यादि दान, समयदान, आहुतिदान आदि

---

१. यह श्लोक कालचक्रतन्त्र की टीका विमलप्रभा (४।१८८) और ईशानशिवगुरुदेवपद्धति (भा० २, मन्त्रपाद ४७ पटल) में भी उद्धृत है। वहाँ का पाठ क्रमशः इस प्रकार है—

य म रा जा स दो मे य य मे दो रु ण यो द य।
य द यो नि र य क्षे य य क्षे य च्च नि रा म य॥ (वि० प्र०)
य म रा ज स दो मे य य मो यो रु ण यो द य।
द य यो नि र य क्षे य य से श श्च नि रा म यः॥ (ई० गु०)

२. शान्तिक आदि सौम्य कर्मों का पांचरात्र (वैष्णव) संहिताओं में विशेष रूप से वर्णन मिलता है तथा आभिचारिक कर्मों का शैव-शाक्त तन्त्रों में ही नहीं, अथर्ववेद से सम्बद्ध साहित्य में भी निरूपण हुआ है। यहाँ इस तरह के उभयविध कर्मों का वर्णन मिलता है। इस बात को भी यहाँ स्पष्ट कर दिया गया है कि मारण आदि क्रूर कर्मों का प्रयोग भी जीव के प्रति करुणा के कारण ही किया जाता है, उसकी कल्याणकामना ही इनका प्रेरक तत्त्व है, उसके प्रति द्वेषभाव नहीं।

के मन्त्रों का निरूपण कर टीकाकार ने बताया है कि [1]होम के समय अग्नि की किस प्रकार की ज्वालाएँ प्रशंसनीय होती हैं। वह्निविसर्जन, निर्वापण एवं भस्मप्रवाह का विधान यहाँ दर्शनीय है। इसकी अन्य शास्त्रों में वर्णित विधि से तुलना की जा सकती है। इस पटल को **होमविधि** नाम दिया गया है।

नवम पटल में वर्षापण, समुद्रोर्मिस्तंभन, अभोष्टसिद्धि, निर्विषीकरण, शिरःशूलविनाशन, दुष्टनिग्रह, शत्रुनिग्रह और महावेतालसाधन के विभिन्न प्रयोगों को मन्त्रों के साथ दिखाया गया है। यमारि मन्त्र के द्वारा संपादनीय इन कर्मों का निरूपण होने के कारण ही इस पटल को **यमारिभीम** नाम दिया गया है।

दसवें पटल में प्रथमतः नवें पटल में संक्षेप में निर्दिष्ट वेतालसाधन की विधि को विस्तार से दिखाया गया है। तब यमारिनाथ की प्रतिमा का निर्माण करने के लिये मृत्तिका का संस्कार किस प्रकार किया जाय, इसका विधान बताया गया है। इसी प्रसंग में वश्य प्रयोग का पुनः संक्षिप्त प्रकार बता कर चार द्वारपालों के रूप में मुद्गर, दण्ड, पद्म[2] और खड्ग यमारि की भावना की विधि और मण्डलेश की भावना का प्रकार भी निर्दिष्ट है। रोमकूपों के अग्र भाग में कुलमेघों के स्फुरण के साथ सूर्य और चन्द्रमण्डल में चार क्रोधों और चार देवियों की भावना के प्रकार के विधान के साथ यह पटल समाप्त होता है। इस पटल का नाम **वेताल-साधनानुस्मृति-भावना** है।

११वें पटल के प्रारंभ में बताया गया है कि भगवान् ने पंचयमारि का स्वरूप क्यों धारण किया? चर्चिका, वाराही, सरस्वती और गौरी की क्रमशः मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा स्वभावता को दिखा कर बताया गया है कि साधक को चाहिये कि वह मण्डलस्थ देवताओं को अपने हृदय में निष्पन्न हुआ समझे, यह भावना करे कि मुझमें और इनमें कोई भेद नहीं है। प्रथम सात श्लोकों में इतना बता देने के बाद आगे ८वें श्लोक से यमारि-चर्या का लक्षण बताया गया है कि साधक वीर को महाटवी में महिष पर चढ़ कर, सर्प आदि के आभूषण धारण कर, हाथ में लौह दण्ड लेकर यमारि मन्त्र का जप करते हुए घूमना चाहिये, नृत्य-गान[3] आदि में मगन रहना

---

१. होम और अग्नि संबन्धी यह सारी प्रक्रिया वैदिक और तान्त्रिक उभयविध साहित्य में इसी रूप में मिलती है।

२. यहाँ पद्म को भी आयुध के रूप में और द्वारपाल के रूप में गिनती की गयी है। पद्मकुल देवताओं का आयुध पद्म ही माना गया है और अवलोकितेश्वर का आयुध भी पद्म ही है।

३. "नृत्यं च सुभगं कार्यं षाडवादिप्रगायनम्" (११।१२) तथा "चर्चिकाद्यादिगीतेन गायन्ते षाडवादिभिः" (१६।२) इन दोनों ही स्थलों पर नृत्य और गीत के प्रसंग में 'षाडव'

चाहिये, खीर खाकर महामुद्रा की साधना करनी चाहिये और सर्वत्र निःशंक होकर सिंह[१] के समान विचरण करना चाहिये। इसी प्रसंग में यहाँ **शतबाहु** और **कोटिबाहु** की साधनाविधि और उनके मन्त्र भी निर्दिष्ट हैं। समयसाधन की विधि भी यहाँ विस्तार से बताई गयी है। वशीकरण और उद्वर्तन के प्रयोगों को दिखाते हुए यहाँ पटल के अन्त में बोधिचित्त, स्वयंभूकुसुम आदि के पान की विधि भी वर्णित है। चर्या और समयसाधन का वर्णन होने से ही इस पटल का नाम **चर्यासमयसाधन** रखा गया है।

१२वें पटल में चर्चिका आदि चार देवियों के द्वारा गायी जाने वाली चार वज्रगीतियों को देकर आगे मन्त्रजप की और जपमाला बनाने की भी विधि प्रदर्शित है। विभिन्न कार्यों की सिद्धि के लिये जपसंख्या का निर्देश किया गया है और बताया गया है कि पूर्वसेवा (मन्त्र का पुरश्चरण) के बिना मन्त्र सिद्ध नहीं होते। पूर्वसेवा के अंग के रूप में प्रतिदिन, प्रतिमास अथवा प्रतिसंवत्सर दी जाने वाली ६४ बलियों का विधान भी यहाँ बताया गया है। टीकाकार ने यहाँ नस्य का भी विधान प्रदर्शित किया है। आगे दिखाया गया है कि योगी जो कुछ भी खाता-पीता है, उसको पहले यमारि के लिये निवेदित करे। टीकाकार ने इसी प्रसंग में वायु, अग्नि, माहेन्द्र और वारुण मण्डल में समाधिभावना का प्रकार दिखाया है। इसको यहाँ यमारियोग नाम दिया गया है। इसी पटल के अन्तिम चार श्लोकों में गुरु की सन्तुष्टि के लिये दी जाने वाली दक्षिणा का विधान है। इस पटल को यहाँ **सर्वोपायिकविशेषक** नाम दिया गया है। टीकाकार ने इसकी व्याख्या की है कि साधक की विशेष रुचि को पूर्ण करने वाले उपायों का यहाँ वर्णन है।

शब्द का उल्लेख हुआ है। संगीतशास्त्र में ओडव, षाडव और सम्पूर्ण नाम की राग की तीन जातियाँ मानी गई हैं। पाँच स्वर वाली राग ओडव, छः स्वर वाली षाडव और सातों स्वरों वाली सम्पूर्ण कहलाती है। "स्वरैः षड्भिस्तु षाडवः" यह अधूरा वचन कोश-ग्रन्थों में उद्धृत मिलता है। टीकाकार ने "आदिशब्देन कफलादिरालादिभिः" (पृ० १२१) यहाँ आदि पद की व्याख्या की है, किन्तु उसका अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाता। भोट अनुवाद में इसका अर्थ "अनेकस्वरयुक्तैः (पृ० १२१) किया गया है। सात मुख्य स्वरों के साथ पाँच चल स्वरों को मिलाने पर स्वरों की संख्या बारह हो जाती है। शुद्ध, छाया और संकीर्ण के रूप में इनके अनेक भेद हो जाते हैं। इस प्रकार के अनेक स्वरों से युक्त राग-रागिनियों का यहाँ आदि पद से ग्रहण होगा।

१. "सिंहवद् विचरेत् वीरः (११-१४)" इस अभिप्राय का श्लोक प्रायः सभी अनुत्तर तन्त्रों में उपलब्ध होता है। वीर शब्द का प्रयोग न केवल बौद्ध तन्त्रों में, अपि तु शैव-शाक्त तन्त्रों में भी उपलब्ध है। देखिये—"ग्रन्थ-चतुष्टयी विमर्श" नामक निबन्ध, 'धीः' अं० १५, पृ० २८५ स्थित ५०-५१ संख्या की टिप्पणियाँ।

१३वें पटल में प्रथमतः कर्त्री और कोश पदों की व्युत्पत्ति दी गई है और तब **वज्रडाकिनी** के **साधन** की पद्धति विशेष रूप से वर्णित है। सूर्यमण्डल की भावना और उसमें बुद्ध आदि चार डाकों का, खड्गिनी आदि आयुधदेवताओं का, लास्या आदि देवियों का तथा मुद्गर आदि चार द्वारपालों का विन्यास बता कर इन सबके मन्त्र यहाँ निर्दिष्ट हैं और अन्त में वज्रडाकिनी का मन्त्र भी वर्णित है। यहाँ बताया गया है कि वज्रयोगिनी के साधन से दूरश्रवण आदि सिद्धियां प्राप्त होती हैं। **वज्रडाकिनीसाधन** को बताने के बाद **वज्रपातालसाधन** की पद्धति वर्णित है। यहाँ शुंभवज्र, मुसल, लोचना आदि चार देवियों, पुष्पा आदि चार देवियों और द्वारों पर मुद्गर आदि के विन्यास का प्रकार निर्दिष्ट है। इस साधन से साधक को पातालबिल की सिद्धि प्राप्त होती है। इसके बाद **सप्तिराज** का **साधन** यहाँ निर्दिष्ट है। सप्तिराज के मन्त्र का उल्लेख करते हुए यहाँ इसके मण्डल में भावनीय वडवा आदि चार देवियों; बंश, बाण, मुकुन्द, मुरज नामक वाद्यों; गोकर्ण आदि मुद्राओं और मुसल आदि आयुधों का विन्यास दिखाया गया है। अन्त में इस परमाश्व के साधन से साधक को अव्याहत गति की प्राप्ति की बात कही गई है। इस प्रकार यहाँ विभिन्न सिद्धियों की प्राप्ति के लिये चार साधनों का वर्णन होने से इसे **सिद्धिनिर्णय पटल** कहा गया है।

१४वें पटल के प्रारंभ में सूत्रपात, मण्डलप्रवेश आदि का वर्णन इनके मन्त्रों का उल्लेख करते हुए किया गया है। [1]मण्डल-निर्माण के लिये सूत्र का किस प्रकार परिष्कार किया जाय, इसको बताने के साथ महावज्र-प्रार्थना, भूपरिग्रह आदि का उल्लेख कर संक्षेप में मण्डलनिर्माण की पद्धति दिखाई गई है। रजोमण्डल के निर्माण में द्वार आदि के प्रमाण को दिखा कर रजोमण्डल के समान ही ज्ञानमण्डल में प्रवेश को विधि भी यहाँ वर्णित है। यहाँ टीकाकार ने दीक्षा के समय मण्डल में दस कलशों के विन्यास का प्रकार बता कर अर्घदान की पद्धति भी दिखाई है। पंचोपचारपूजन, त्रिशरणगाथा का पाठ, शिष्याधिवास, समयोदकदान, पुष्पपातन, मण्डलप्रवेश, आदर्श आदि पंचज्ञानस्वरूप उदक आदि पाँच अभिषेकों की विधि बता कर कहा गया है कि इन पाँच अभिषेकों को विद्याभिषेक कहा जाता है। अभिषेकदान के बाद [2]अनुज्ञा, वज्रव्रत, व्याकरण और आश्वासदान की विधि का निरूपण करने के बाद टीकाकार ने बताया है कि आचार्याभिषेक ही अवैवर्तिकाभिषेक कहलाता है। पूर्वोक्त पाँच अभिषेक और आचार्याभिषेक कलशाभिषेक के नाम से प्रसिद्ध हैं, क्योंकि इनमें कलश का उपयोग होता है। ये छः अभिषेक सभी तन्त्रों में स्वीकृत हैं। आचार्याभिषेक

---

१. कृष्णयमारितन्त्र के द्वितीय तथा चतुर्दश पटल के श्लोकों के तथा वहाँ की टीका के आधार पर मण्डल-निर्माण, कलश-स्थापन आदि की विधियों को विस्तार से समझा जा सकता है।

२. ऊपर पृ० १८ पर संख्या ३ की टिप्पणी देखिये।

से कायवज्र का विशोधन होता है और गुह्याभिषेक से वाग्वज्र का विशोधन किया जाता है। यहीं विद्याव्रतदान की विधि प्रदर्शित कर इसको प्रज्ञाज्ञानाभिषेक का अंग माना गया है। इस अभिषेक से चित्तवज्र का विशोधन होता है। चतुर्थाभिषेक के प्रसंग में यहाँ चार प्रकार के आनन्दों का तथा क्षणों का स्वरूप प्रदर्शित है। इसी को सहजसंबोधि कहा जाता है। अभिषिक्त शिष्य गुरु को त्रिपट आदि का दान करता है। इसी प्रसंग में टीकाकार ने वज्र के आठ प्रकारों का और घण्टा का भी शास्त्रोक्त लक्षण प्रदर्शित किया है। जैसा कि ऊपर बताया गया है, टीकाकार ने इन सब विषयों का निरूपण प्रस्तुत पटल के दसवें श्लोक की व्याख्या करते समय किया है।

११वें श्लोक में रजोभूमि में श्वेत, पीत आदि वर्णों के विन्यास का प्रकार दिखाया गया है। साथ ही मुद्रान्यास, स्रुक्, स्रुवा आदि का प्रमाण बता कर कहा गया है कि यमारितन्त्र में निष्णात व्यक्ति के लिये मण्डलप्रवेश[1] आदि की कोई आवश्यकता नहीं है। यमारितन्त्र के माहात्म्य को दिखा कर आगे यहाँ वज्रावेश-समय, चतुश्चक्रप्रसाधन, कायावेश, वागावेश, लेपचित्र[2] का स्वरूप दिखा कर **एकजटाप्रसाधन, पुक्कसीसाधन** आदि का भी तत्तत् मन्त्रों के साथ निरूपण कर पटल के अन्त में **मञ्जुवज्र-मण्डल** की साधन-प्रक्रिया को दिखलाते हुए माण्डलेय देवताओं का स्वरूप और विन्यासप्रकार वर्णित है। इस पटल के अन्त में मञ्जुवज्र-मण्डल का विशेष रूप से वर्णन है, अतः उसी को इंगित करते हुए यहाँ पूरे पटल का नाम **मञ्जुवज्रसाधन** रख दिया गया है।

१५वें पटल में प्रथमतः **आर्यजांगुली** की साधन-प्रक्रिया और मन्त्र प्रदर्शित है। इसको सिद्ध कर लेने पर व्यक्ति स्थल के समान जल पर भी चलने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है। आगे नागों के आकर्षण के लिये **कुरुकुल्ला** का साधन तथा मन्त्र उपदिष्ट है। अन्त में **अप्सराओं** के **आकर्षण** करने में समर्थ **वज्रानंग** का प्रयोग तथा उसका मन्त्र वर्णित है। इस पटल का भी नाम अन्तिम साधन को इंगित कर **वज्रानंगसाधन** रखा गया है।

१६वें पटल में केवल **महाहेरुकसाधन** वर्णित है। महाहेरुकमण्डल में देवताओं के विन्यास का प्रकार बताने के साथ यहाँ कहा गया है कि इस साधन से योगी संसार के सर्वविध बन्धनों से मुक्त हो जाता है। पटल का नाम **हेरुकसाधन** है।

१७वें पटल में पंचाकाराभिसंबोधि और बुद्धबिम्ब की भावना से मण्डला-धिपति के स्फरण का प्रकार निर्दिष्ट है। यहाँ बताया गया है कि चर्चिका आदि चार

१. रुद्रयामल की अंशभूत परात्रिंशिका में भी ऐसा ही वचन मिलता है—"अदृष्टमण्डलोऽप्येवं यः कश्चिद्वेत्ति तत्त्वतः। स सिद्धिभाग् भवेन्नित्यं स योगी स च दीक्षितः॥" (श्लो० १८)

२. लेपचित्र का स्वरूप यहाँ (१४।२८–३८) वर्णित है। अन्य तन्त्रों की सहायता से अभी इस विषय पर अधिक प्रकाश अपेक्षित है। उड़ीसा में यह कला अभी भी जीवित है।

योगिनियों के द्वारा गाई गई वज्रगीतियों से इसे जगाया जाता है। ऐसा करने से साधक बोधिचित्त में समाविष्ट हो जाता है। इसके लिये योग, अनुयोग, अतियोग और महायोग की साधना करनी पड़ती है। कृष्णयमारितन्त्र (१७.८-११) में इन चारों योगों का संक्षिप्त लक्षण बताया गया है और टीकाकार ने इनकी विशद व्याख्या प्रस्तुत की है (पृ० १२३-१२९)। टीकाकार ने इस प्रसंग के अन्त में षडंगयोग की भी संक्षिप्त चर्चा की है, जो कि गुह्यसमाज की अपेक्षा किसी अन्य तन्त्र से सम्पृक्त है। आगे के आठ श्लोकों में समयों का उपदेश किया गया है। प्रज्ञास्वरूप स्त्रियों के ऊपर आरोप लगाने का स्पष्ट निषेध किया गया है और गुरु-शिष्य के लक्षणों का निर्देश है। आगे उदान-वाक्य के साथ २१वें श्लोक में सभी मन्त्रों में यमारि मन्त्र को, व्रतों में कपाल व्रत को और तन्त्रों में समाज को श्रेष्ठ बताया गया है। अन्त में अनुत्तर तन्त्र को दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत कर चर्चिका आदि चार देवियों के अपभ्रंश भाषामय चार उदान-वाक्यों के उल्लेख के साथ प्रस्तुत पटल समाप्त होता है। इस पटल का नाम **बोधिचित्तनिगदन** है।

१८वें पटल में संक्षेप में प्रस्तुत तन्त्र की उत्पत्ति की कथा दी गयी है। यहाँ बताया गया है कि मार के पराजय के लिये भगवान् ने अपने काय-वाक्-चित्त से क्रोधरूप महायमारि की सृष्टि कर उनको सभी प्रकार के दुष्ट सत्त्वों से साधक की रक्षा करने के लिये नियोजित किया। उसी समय भगवान् ने प्रस्तुत तन्त्र का उपदेश किया। इस पटल के अन्तिम तीसरे वाक्य में गुह्यकाधिपति (कुबेर) का और [1]नलकूबर का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि यह महातन्त्र ओडियान पीठ से विनिर्गत है और सपादलक्ष (सवा लाख) श्लोक प्रमाण के मूल तन्त्र से इसका उद्धार किया गया है। इस कथा का वर्णन होने से ही इसको **कथापटल** नाम दिया गया है।

इस ग्रन्थ की केवल 'घ' मातृका में १८वें पटल की व्याख्या के रूप में कुछ सामग्री दी गयी है। उसका प्रस्तुत पटल से कोई संबन्ध प्रतीत नहीं होता। यहाँ वज्रप्राकार का चिन्तन, पंचभूतस्वभाव मण्डलपंचक और कूटागार की भावना, पंचाकाराभिसंबोधिक्रम, आभोग समाधि, स्वाभाविक काय, पद्माधिष्ठान काय, वज्राधिष्ठान काय, ज्ञानमण्डल जैसे विषयों का निरूपण मिलता है।

सटीक कृष्णयमारि तन्त्र का प्रतिपाद्य इतना ही है।

---

१. अमरकोश (१।१।७०) में कुबेर के पुत्र का नाम नलकूबर दिया गया है। टीकाकार भानुजी दीक्षित ने 'पुत्रो तु नलकूबरो' पाठ की संगति बिठाई है और श्रीमद्भागवतपुराण (१०।९।२३) के प्रमाण से कुबेर के दो पुत्रों के नाम नलकूबर और मणिग्रीव बताये हैं।

ग्रन्थ के इस संक्षेप को देखने से हमें पता चलता है कि इस तन्त्र के दस पटलों में यमारि-मण्डल में स्थित माण्डलेय देवताओं के स्वरूप, बीजाक्षर, मन्त्र, यन्त्र आदि का, शान्तिक-पौष्टिक आदि सौम्य तथा वश्य, आकर्षण, मारण आदि क्रूर प्रयोगों का, उनकी साधना से प्राप्त होने वाली सिद्धियों का, मण्डल निर्माण, यन्त्र निर्माण आदि की विधियों का, होम, समय, संवर और अभिषेकों का विशेष रूप से वर्णन है। भूमि-कर्षण, मण्डलनिर्माण की विधि और पूजाहोम की विधि का टीकाकार ने विशेष रूप से विवरण दिया है। कृष्णयमारि तन्त्र का दशम पटल तक का यह अंश क्रियाप्रधान है। एक दो स्थलों पर अमृतास्वाद जैसे अनुत्तर तन्त्रों के शब्दों का उल्लेख अवश्य मिल जाता है, किन्तु वहाँ हम "प्राधान्येन व्यपदेशा भवन्ति" न्याय का सहारा ले सकते हैं। यों इस तन्त्र की गणना अनुत्तरतन्त्र के अन्तर्गत उपाय (पितृ) विभाग में की जाती है। इसका उल्लेख पहले ही कर दिया गया है।

११वें पटल के ८वें श्लोक में कहा गया है कि अब मैं चर्या का लक्षण बताता हूँ। इतना कहने के बाद यहाँ बताया गया है कि कृष्णयमारितन्त्र के साधक की चर्या कैसी होनी चाहिये। यह चर्या अनुत्तरतन्त्र प्रधान है। ११वें और १२वें पटल का भी यही प्रधान विषय है। **शतबाहु प्रसाधन,**[1] **कोटिबाहु प्रसाधन** जैसे प्रयोग भी यहाँ वर्णित हैं। आगे के १३वें पटल में भी **वज्रडाकिनी साधन, वज्रपाताल** (शुम्भवज्र), **परमाश्व** (सप्तिराज) **साधन** के प्रयोगों का स्वरूप प्रदर्शित है। १४वें पटल में प्रधानतः अभिषेक-विधि विस्तार से वर्णित है। तथा अन्त में **एकजटा, पुक्कसी** और **मंजुवज्र** की साधन-विधि भी दी गयी है। १५वें और सोलहवें पटल में भी **आर्यजांगुली, कुरु-कुल्ला, वज्रानंग** और **महाहेरुक** की साधनाओं का विवरण मिलता है। इन विषयों का हम यथायोग क्रिया और चर्या विभाग में समावेश कर सकते हैं।

१७वें पटल में योग, अनुयोग, अतियोग और महायोग नामक चतुर्विध योग का लक्षण बताया गया है और टीकाकार ने इसको विस्तार से समझाने का प्रयत्न किया है। यद्यपि यहाँ 'समाजान्तानि तन्त्राणि' (१७।२१) कहकर (गुह्य)समाज तन्त्र को वरीयता दी गयी है, किन्तु गुह्यसमाज में वर्णित षडंगयोग की यहाँ (मूल या टीका में) कोई चर्चा नहीं है।

शिष्य का अभिषेक कर देने के बाद गुरु उसको नियमों का उपदेश करता है। तन्त्रशास्त्र में इन नियमों की 'समय' यह पारिभाषिक संज्ञा है। यहाँ १७वें पटल के १२-१९ श्लोकों में इसी प्रकार के समयों का उपदेश किया गया है।

प्रत्येक तन्त्र में अपनी दार्शनिक दृष्टिभंगिमा का भी निवेश रहता है। इस तन्त्र की यह दृष्टि इसी पटल के २२-३२ संख्या के श्लोकों और गाथाओं में अभिव्यक्त

---

१. यहाँ निर्दिष्ट साधनों में से कुछ को छोड़कर प्रायः सभी का स्वरूप साधनमाला और गुह्य-समयसाधनसंग्रह में देखा जा सकता है।

हुई है। शैव, शाक्त आदि तन्त्रों में इस दार्शनिक दृष्टिकोण को अभिव्यक्ति देने वाले अंश को विद्यापाद कहा जाता है। इस प्रकार इस तन्त्र में भी शैव, शाक्त आदि आगमों में विदित चार पादों की सामग्री उपलब्ध होती है। बिना पादविभाग के इस तरह की पूरी सामग्री वैष्णव और शाक्त तन्त्रों में भी मिल जाती है।

शैव, शाक्त अथवा वैष्णव तन्त्रों में अनुत्तर विभाग नहीं मिलता। वहाँ विद्या, क्रिया, योग और चर्या नाम के चार विभाग मिलते हैं। इन चारों पादों की सामग्री ऊपर निर्दिष्ट क्रम से यहाँ आ गयी है। इतना सब होते हुए भी इस तन्त्र की गणना अनुत्तर तन्त्रों में की जाती है। जैसा कि हम जानते हैं अनुत्तर तन्त्र तीन भागों में विभक्त है—पितृ (=उपाय), मातृ (=प्रज्ञा) और अद्वय। शैव-शाक्त तन्त्रों में कौल सम्प्रदाय को सिद्ध कौल और योगिनी कौल विभागों में बाँटा गया है। यहाँ हम सिद्ध कौल की पितृतन्त्र से और योगिनी कौल की मातृतन्त्र से तुलना कर सकते हैं। कालचक्रतन्त्र का अन्तर्भाव अद्वय तन्त्रों मे किया जाता है। इस तन्त्र की हम तन्त्रालोक के छठे और सातवें आह्निक में वर्णित काल तत्त्व की प्राणचार प्रक्रिया से और मन्त्रोदय एवं चक्रोदय की प्रक्रिया से तुलना कर सकते हैं। स्पष्ट है कि काश्मीर के प्रत्यभिज्ञा दर्शन के आधारभूत आगमों की तुलना इन अद्वयतन्त्रों से को जा सकती हैं।

●

विषय सूची

प्रस्तावना—हिन्दी, अंग्रेजी एवं भोट भाषा १-१०
उपोद्घात ११-२६

अभिसमयपटलः प्रथमः

सर्वप्रवचनानामादिवाक्यम् १
मोहवज्रयमार्यादिदेवताचक्रोपदर्शनम् १
देवताचक्रबीजनिष्पत्त्यर्थं पञ्चाकाराभिसंबोध्याख्यानम् ४
चन्द्रवज्रादिभावनम् ५
विश्ववज्रभावनम् ६
मोहवज्रयमार्यादिबीजानि ६
अक्षोभ्यादयः पञ्च यमघ्नाः ७
मुद्गरादिर्चर्चिकादिबीजानि ७
भविष्यत्कूटागारमध्ये यमार्यादीनां चक्रदेवतानामवस्थानम् ७
देवतानां जपमन्त्राख्यानम् ८
कायवाक्चित्ताधिष्ठानमन्त्राः १०
अभ्यन्तरपुटगतपञ्चयमारिभावनाप्रकारः १०

महामण्डलपटलो द्वितीयः

महावज्रसत्त्वस्तुतिः १२
भावनानिष्पादितदेवताचक्रस्य चक्षुराद्यधिष्ठानम् १३
मण्डललेखनविधिनिर्देशः (टीकायां विस्तरः) १३
शान्तिकादिप्रमाणेन मण्डललिखनम् १६
अभ्यन्तरपुटे, कोणचतुष्टये, बाह्यपुटचतुर्द्वारे च चिह्नलिखनम् १६
मण्डलपूजाविधानम् १७

कर्मयोगपटलस्तृतीयः

मण्डललिखनाय स्तुतिरध्येषणा च १८
अमृतास्वादसमयोऽधिष्ठानमन्त्रश्च १८
रजोमण्डले भावनामण्डले वा निष्पन्नदेवताचक्रयोजनम् १८
कर्षणादिचतुर्विधकर्मणां चत्वारो मन्त्राः १९
मण्डलस्थयमारिपञ्चकभावनम् १९
शान्तिकादिकर्मनिष्पादनम् २०

अञ्जनादिसिद्धिप्रकारः २०
पादलेप-गुलिका-खड्गसिद्धिप्रकारः २१

यन्त्रमन्त्रतन्त्रमारणादिसमयश्चतुर्थः

यन्त्रलिखनपरिपाटीज्ञानाय स्तुतिरध्येषणा पूजा च २२
वश्यादियन्त्ररचनाप्रकारः २३
शान्तिकयन्त्रलेखनप्रकारस्तस्य मन्त्रा मस्याख्यानं च (शान्तिकसमयः) २४
पौष्टिकयन्त्रलेखनप्रकारो मन्त्रोपदेशश्च (पौष्टिकसमयः) २५
वश्ययन्त्रलेखनप्रकारो मन्त्रोपदेशश्च (महावश्यसमयः) २६
आकृष्टियन्त्रलेखनप्रकारो मन्त्रोपदेशश्च (आकर्षणसमयः) २७
स्तम्भनयन्त्रलेखनप्रकारो मन्त्रोपदेशश्च (महास्तम्भनसमयः) २९
वाक्स्तम्भनयन्त्रलेखनप्रकारो मन्त्रोपदेशश्च (महावाक्स्तम्भनसमयः) ३०
कृष्णयमारितन्त्रोक्ताः प्रयोगाः सुगुप्तं कार्याः ३१
यन्त्रोपयोगिमसीनिर्माणप्रकारः ३१
यन्त्रोपयोगिलेखिनीनिर्माणप्रकारः ३२
विस्तरेण यन्त्रलिखनप्रकारनिर्देशः ३२
मन्त्रस्थदेवतायाः साध्यस्य च न्यासविधिर्भावनाप्रकारश्च ३३
मारणसमयेऽपि करुणाया एव प्रयोजकत्वम् ३५
मारणमन्त्रोपदेशः ३६

चक्रानुपूर्वलिखनं नाम पञ्चमः पटलः

विद्वेषयन्त्रलिखनप्रकारो मन्त्रोपदेशश्च (महाविद्वेषसमयः) ३७
उच्चाटनयन्त्रलिखनप्रकारो मन्त्रोपदेशश्च (महोच्चाटनसमयः) ३८
विविधकर्मनिष्पादकयन्त्राणि ३९
वश्यकर्मणि भूर्जपत्रे रोचनादिना यन्त्रं लेख्यम् ३९
मारणविद्वेषणोच्चाटनादिषु यन्त्रलेखनविधिः ४०
शान्त्यादिकर्मसु वर्णप्रोञ्छनप्रकारः ४०
पूर्वसेवाविधानम् (पुरश्चरणम्) ४०
महारौद्रकलहोत्पादकयन्त्रम् ४१
वश्यमन्त्रोपदेशः (महावश्यसमयः) ४२

चक्रावलोकनो नाम षष्ठः पटलः

न्यस्तमुद्रणविधिबोधनार्थं स्तुतिरध्येषणा च ४३
सर्वेषां माण्डलेयानां यमघ्नं शिरसि भावयेत् ४३
मण्डल–होम–समय–संवरनिर्देशः ४४

चत्वारो महाभिषेकाः ४४
बलिमन्त्रोपदेशः ४४
मण्डलिकानिर्माणप्रकारस्तत्र मन्त्राक्षरन्यासविधिश्च ४५
प्रणवादिनमोन्ता मन्त्रा बीजाश्च शान्तिपुष्ट्यादिकराः ४८

आकर्षणादिप्रयोगपटलः सप्तमः

रक्ताकृष्टिमद्याकृष्ट्यादिप्रयोगार्थं चर्चिकादियोगिनीचतुष्टयमुखाद्याख्यानम् ५०
वज्रचर्चिकादिमन्त्रोपदेशः ५१
मेधावर्धनाय वज्रसरस्वतीमन्त्रोपदेशः ५२
शुक्राकर्षणार्थं वज्रगौरीमन्त्रोपदेशः ५३
परमाभिषेकसमयोपदेश (उदक-मुकुट-वज्र-वज्रघण्टाभिषेकाः) ५४
बोधिचित्तभक्षणमन्त्रः ५५

होमविधिपटलोऽष्टमः

अध्येषणानन्तरं रक्षाचक्र(मण्डल)लिखनाय भूपरिग्रहादिप्रस्तावना ५६
मण्डलप्रवेशसमयकृत्यम् ५६
मण्डलाचार्यायाभिषेकदानप्रार्थनम् ५७
धर्मसंभोगनिर्माणकायिकैर्बुद्धैर्वज्रसत्त्वाभिषेकदानम् ५७
शून्यतासाधनार्थं शून्यमन्त्रोपदेशः ५७
शान्तिकादिकर्मार्थं होमविधानम् ५८
शान्तिकादिकर्मानुरूपं कुण्डाख्यानम् ५८
शान्तिकादिकर्मानुरूपाः कुण्डप्रकाराः ५८
शान्तिकादिहोमविधानार्थं तिथ्याद्याख्यानम् ५९
टीकायामस्यैव विषयस्य विस्तरः ५९
वर्णादीनां भेदः, दिग्भेदः, कालभेदश्च ६०
होतव्यद्रव्याणि ६०
सर्वशोधनमुद्राः ६०
आवाहनगाथा ६१
अर्घ्यपाद्यादिमन्त्राः ६१
समयदानगाथा ६१
आहुतिमन्त्राः ६१
कीदृशो वह्निः प्रशस्यते ६१
वह्निविसर्जनम् ६२
वह्निनिर्वापणद्रव्याणि ६२
भस्मप्रवाहणमन्त्रः ६२

यमारिभोमो नाम नवमः पटलः

वर्षापणविधानम्	६३
समुद्रोर्मिस्तम्भनम्	६४
अभीष्टसिद्धिप्रयोगः	६४
निर्विषीकरणप्रयोगः	६५
शिरःशूलविनाशनप्रयोगः	६५
दुष्टनिग्रहप्रयोगः	६५
शत्रुनिग्रहप्रयोगः	६५
महावेतालसाधनम्	६६

वेतालसाधनानुस्मृतिभावनापटलो दशमः

वेतालसाधनप्रयोगः	६८
यमारिनाथप्रतिमार्थं मृत्तिकासंस्कारः	६८
वश्यप्रयोगः	६९
मुद्गर-दण्ड-पद्म-खड्गाख्यचतुर्द्वारपालभावनाप्रकारः	६९
मण्डलेशविभावनम्	७०
रोमकूपाग्रेषु कुलमेघस्फारणम्	७०
चतुःक्रोध-चतुर्देवीविभावनम्	७१

चर्यासमयसाधनपटल एकादशः

द्वेष-मोह-पिशुन-राग-ईर्ष्यायमारिस्वरूपधारणप्रयोजनम्	७२
चर्चिका-वाराही-सरस्वती-गौरीणां मैत्री-करुणा-मुदिता-उपेक्षास्वरूपता	७२
भगवतो नानारूपत्वेऽपि न भेदबुद्धिः कर्तव्या	७२
चर्यालक्षणोपदेशः	७३
क्षीरस्य महामुद्रायाश्च प्रसाधनममृतास्वादनार्थम्	७४
वीरः सिंहवद् विचरेत्	७४
शतबाहुप्रसाधनम्	७४
दण्डयमारिसाधनम्	७५
कोटिबाहुप्रसाधनम्	७५
समयसाधनम्	७५
उद्वर्तनाख्यानम्	७६
महामूत्र-महावज्रामृत-स्वयम्भुकुसुमपानम्	७६

सर्वोपाधिकविशेषको नाम द्वादशः पटलः

मण्डलचक्रपूजागीताख्यानम् ७८
जापलक्षणम् ७९
जापमालाप्रसाधनम् ७९
जापप्रकारसंख्यानिर्देशः ८०
पूर्वसेवां विना न मन्त्रसिद्धिः ८०
प्रतिदिनं प्रतिमासं प्रतिसंवत्सरं वा चतुष्षष्टिबलिं दद्यात् ८१
टीकायां नस्यविधानम् ८१
खाद्यपेयादीनां प्रथमतो यमारये निवेदनम् ८२
टीकायां वाय्वग्निमाहेन्द्रवारुणाख्याश्चत्वारो यमारियोगाः ८२
गुरवे दक्षिणादानम् ८२

सिद्धिनिर्णयपटलस्त्रयोदशः

आयुधविशुद्ध्यर्थं कर्त्रीकोशयोर्लक्षणम् ८३
वज्रडाकिनीसाधनम् ८३
स्वप्नमायोपमस्य जगतो महाकाशे शून्यताभावना ८३
सूर्यमण्डले बुद्धडाक्यादीनां लास्यादीनां मुद्गरादीनां च भावनम् ८३
सर्वेषामेषां मन्त्रपदानि ८४
दूरश्रवणसिद्ध्यर्थं वज्रडाकिनीं भावयेत् ८५
वज्रडाकिनीमन्त्रः ८५
वज्रपातालसाधनार्थं शुम्भवज्रं भावयेत् ८५
गर्भमण्डलमध्ये लोचनादीनां पुष्पादीनां मुद्गरादीनां च न्यासप्रकारः ८५
सप्तिराजमण्डले परमाश्वं प्रसाधयेत् ८६
परमाश्वमन्त्रः, वडवादीनां वंशादीनां गोकर्णादीनां मुसलादीनां च विन्यासक्रमः ८६
परमाश्वभावनायोगफलम् ८७

मञ्जुवज्रसाधनं नाम चतुर्दशः पटलः

सूत्रपातार्थं परमसमयोपदेशः ८८
महामण्डलप्रवेशसमयोपदेशः ८८
सूत्रप्रमाणम् ८८
महावज्रप्रार्थनासमयः ८९
महाभूपरिग्रहसमयः ८९
रजोमण्डलनिर्माणे द्वारादीनां माननिर्देशः ८९
रजोमण्डलवज्ज्ञानमण्डलप्रसाधनप्रकारः ९०
टीकायां मण्डले दशकलशविन्यासक्रमः ९१

अर्घपात्रादीनां विन्यासक्रम: ९१
पाद्य-पुष्प-दीपदान-गन्धदानादिना पञ्चोपचारपूजा ९२
त्रिशरणगाथापाठादिना शिष्याधिवासनम् ९४
समयोदकदानम् ९५
पुष्पपातनविधि: ९६
मण्डलप्रवेशविधि: ९७
आदर्शादिपञ्चज्ञानात्मका उदक-मुकुट-वज्र-घण्टा-नामाभिषेका: ९७
पञ्चाभिषेका इमे विद्याभिषेकपदेनोच्यन्ते ९८
अभिषेकप्रकारोपदेश: ९८
अनुज्ञादानम् ९९
वज्रव्रतदानम् ९९
व्याकरणम् १००
आश्वासदानम् १००
अनुज्ञादीनां चतुर्णामभिषेकाणां पञ्चाभिषेकानन्तरमाचार्याभिषेका(अवैवर्तिका-भिषेका)नन्तरं च दानम् १००
आचार्याभिषेकेण कायवज्रविशोधनम् १००
गुह्याभिषेकेण वाग्वज्रविशोधनम् १०१
विद्याव्रतदाने कमलाधिष्ठानं वज्राधिष्ठानं च १०१
प्रज्ञाज्ञानाभिषेकेण चित्तवज्रविशोधनम् १०२
चतुर्थाभिषेकदानम्, तत्र चत्वार आनन्दा क्षणाश्च १०२
गुरवे दक्षिणादानं होमबल्यादिविधानं च १०३
अष्टविधवज्रलक्षणम् १०३
घण्टालक्षणम् १०४
रजोमण्डले श्वेतपीतादिवर्णविन्यासक्रम: १०४
मुद्रान्यासप्रकार: १०५
स्रुक्स्रुवादीनां मानम् १०५
अमण्डलप्रविष्टोऽपि यमारितन्त्रपरायण: सिद्ध्यति १०६
चतुश्चक्रसाधनप्रकार: १०७
कायावेशवागावेशप्रकारोपदेश: १०७
लेपचित्रलक्षणम् १०८
एकजटाप्रसाधनप्रसारस्तस्या मन्त्रश्च १०९
पुक्कस्या: साधनप्रकारो मन्त्रश्च १११
मञ्जुवज्रमण्डलोपदेश: १११
माण्डलेयदेवतास्वरूपम् ११३

वज्रानङ्गसाधनः पञ्चदशः पटलः

जलचङ्क्रमणार्थमार्यजाङ्गुलिसाधनं तन्मन्त्रश्च ११४
नागाकर्षणार्थं कुरुकुल्लाप्रसाधनं तन्मन्त्रश्च ११५
अप्सराकर्षणार्थं वज्रानङ्गप्रयोगस्तन्मन्त्रश्च ११६

हेरुकसाधनपटलः षोडशः

महाहेरुक(मण्डल)साधनाद् योगी संसारबन्धनाद् विमुच्यते ११८
मण्डलदेवताविन्यासोपदेशः ११८

बोधिचित्तनिगदनपटलः सप्तदशः

पञ्चाकारबुद्धबिम्बविभावनम् १२१
चतुर्गीतिप्रयोगेण चक्रिण उत्पादः १२१
बोधिचित्तसमावेशः १२२
चत्वारो योगास्तेषां लक्षणानि च १२३
टीकायां योगस्वरूपविवरणम् १२३
अनुयोगस्वरूपविवरणम् १२५
अतियोगस्वरूपविवरणम् १२६
महायोगस्वरूपविवरणम् १२७
प्रकारान्तरेण महायोगनिरूपणम् १२९
षडङ्गयोगविभावनम् १२९
समयोपदेशः १३०
गुरुद्रोहवर्जनम् १३०
गुरुशिष्यगुणोपदेशः १३१
सर्वतथागतानामुदानवाक्यम् १३२
भगवतीनां महार्चिकादीनामुदानवाक्यम् १३५

कायवाक्चित्तकथापटलोऽष्टादशः

कृष्णयमारितन्त्रोत्पत्तिकथोपदेशः १३७
भगवान् महामुनिर्वज्रपाणिमाज्ञापयति १३७
तन्त्रस्य ओडियानविनिर्गतत्वम् १३८

अष्टादशपटलव्याख्यानम्

वज्रप्राकारादिचिन्तनम् १३९
पञ्चमहाभूतस्वभावं मण्डपपञ्चकं कूटागारं च भावयेत् १३९
पञ्चाकाराभिसम्बोधिक्रमः १४०

आभोगो नाम समाधिः स्वाभाविकश्च कायः १४२
पद्माधिष्ठानवज्राधिष्ठानकायनिरूपणम् १४२
निष्पन्नमण्डलज्ञानमण्डलविभावनम् १४३
'घ' मातृकापुष्पिका १४४

परिशिष्टानि

अपभ्रंशपद्यसंशोधनविषया टिप्पणी १४७
श्लोकार्धानुक्रमणी १५३
गद्यानुक्रमणी १६४
टीकोद्धृतवचनानुक्रमणी १६६
टीकोद्धृतग्रन्थ-ग्रन्थकार-मत-मतान्तरानुक्रमणी १७०
विशिष्टशब्दानुक्रमणी १७१

भोटखण्डः १-२८८ पृष्ठात्मकः

कृष्णयमारितन्त्रम्

रत्नावलीपञ्जिकया सहितम्

सटीके कृष्णयमारितन्त्रे

प्रथमः पटलः

ॐ नमो रत्नत्रयाय[1] । नमः श्रीकृष्णयमारये[2] ।

नमः श्रीवज्रसत्त्वाय[3] ।

एवं मया श्रुतम् । एकस्मिन् समये भगवान् सर्वतथागतकायवाक्चित्तसर्ववज्रयोषिद्भगेषु विजहार, मोहवज्रयमारिणा च पिशुनवज्रयमारिणा च रागवज्रयमारिणा च ईर्ष्यावज्रयमारिणा च द्वेषवज्रयमारिणा च; मुद्गर[4]यमारिणा च दण्डयमारिणा च पद्मयमारिणा च खड्गयमारिणा च; वज्रचर्चिकया[5] च वज्रवाराह्या[6] च वज्रसरस्वत्या[7] च वज्रगौर्या[8] च कोणे[9] । एवंप्रमुखैर्महा[10]यमारिसंघैः ॥ १ ॥

---

[11]ॐ नमः श्रीकृष्णयमारये

श्रीमद्यमद्विषमशेषगुणप्रसूतिं
संवर्तकालनवनीरदनीलकान्तिम् ।
वक्त्रत्रयान्[12](त्रयं) कुलिशखड्गधरं सकर्तिं
चक्राब्जकर्परभृत्(भृतं) मनसा[13] नमामि ॥

एवं मयेत्यादि । सर्वप्रवचनानामादिवाक्ये[14] संगीतिकर्तुरनुवादः[15] । भगवता हि परिनिर्वाणावस्थायामुक्तम(म्,) साक्षात्कृतम्, यथाभूतदर्शनत्वात्, युष्माकं देशनाया अनधिकारात् । एवं मया श्रुत(तं) मम धर्म[ः] संज्ञा(गा)तव्यः । तत्र [16]एवमिति यद् यावद्वक्ष्यामि सर्वतन्त्रेषु,[17] तदेवमेव नान्यथा । मयेति मयैव साक्षात् श्रुतमिति ।

---

१. नास्ति–ग. च. । २. नास्ति–ख. ङ. । ३. नास्ति–ग. च. । ४. द्गरवज्र–ङ. । ५. चिका–ख. घ. ङ. । ६. राही–ख. घ. ङ. । ७. स्वती–ख. घ. ङ. । ८. गौरी–ख. घ. ङ. । ९. नास्ति–क. ग. च., कोला–ख., कोणो–ङ. । १०. महावज्र–ङ. । ११. ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वाय–ख. । १२. त्रयोत्कु–ग. । १३. शिरसा–भो. । १४. वाक्यसं–ख. । १५. वादम्–घ. । १६. एक–घ. । १७. तन्त्रेण–ख. ग., तन्त्रैः–घ. ।

देशिवान्(शितं) भगवता, न तु श्रुतिपरम्परया मय्यागतम्। कदा श्रुतमित्याह—एकस्मिन्नित्यादि। समये काले। सदा(यदा) भगवता(तो) महामुनेर्बोधिं विघातयितुं मारा समुद्धु रा भूताः, तदेत्यर्थः। एतच्चात्रैवाष्टादशे कथापटले भविष्यति। किं किं तत्र सकलतन्त्रवाच्यं श्रुतमित्याह—भगवानित्यादि। भगवानिति—

भञ्जनं भगमाख्यातं चतुर्माराभिञ्जनात्।
प्रज्ञाबध्याश्च ते क्लेशास्तस्मात् प्रज्ञा भगोच्यते॥

इति वचनान्निराभासप्रकाशमहासुखस्वभावज्ञानं भगः[१], तद्वान् धर्मकायः। तन्निष्पाद्य तदे(द्दे)वता चक्रेन्द्रो[२] यस्याः सा। वज्रसत्त्वमूर्तिभिरित्यर्थः[३]। विजहारेति परेण सम्बन्धः। कुत्र बिजहारेत्याह—सर्वतथागतेत्यादि। सर्वशब्दस्तथागतादिभिः प्रत्येकमभिसं[ब]ध्यते। तथागता अक्षोभ्यादयो[४] नानामण्डले(ल)नानाबीजाक्षरः(र)स्वभावाः। वज्रा अभेद्यत्वात्। माण्डलेयाः पुरुषदेवताः, योषितो माण्डलेय्यः[५] स्त्रीदेवताः, तथागताश्च[६] वज्राश्च योषितश्चेति द्वन्द्वः। अभ्यर्हितत्वात् तथागतशब्द[स्य] पूर्वनिपातः। अथवा वज्राश्च योषितश्चेति कृत्वा तथागतशब्देन सह द्वन्द्वः। पश्चात् सर्वशब्देन सह विशेषणसमासः। ततो भगशब्देन सह षष्ठीतत्पुरुषः। तत्र भगे[७]ष्वित्युत्पत्तिस्थानत्वात्। [८]तन्निष्पाद्यदेवता-[९]चक्रापेक्षया तत्तद्वज्रधरालिङ्गितस्वाभा[१०]कमलेषु विजहारेति [११]साधर्म्या[त्] स्थूर(ल)-कुलिशप्रयोगेण क्रीडितवान्। यत्र तु[१२] स्वाभा नास्ति, तत्र भगेष्विति[१३], उत्पत्तिस्थानत्वात् तत्तद्वीजेषु विजहारेति [१४]स्थितवान्।

तत्र स्वाभा[१५]कमलस्थकुलिशेन वज्रसत्त्वं निष्पाद्य देवताचक्रोपदर्शनायाह—मोहवज्रयमारिणा चेत्यादि। मोहयमार्यादिबीजैः[१६] सहेत्यर्थः। अनन्यकार्यतोपदर्शनार्थं कारणे बीजे कार्येण मोहयमार्यादीनां व्यपदेशः। तत्र अभेद्यो मोहो मोहवज्रम्, तदेव

---

१. 'भगः' इति नास्ति–क. ख. ग. घ. ङ. च. गृहीतपाठस्तु भोटानुसारी। २. चक्रापेक्षया या यस्याः–क. ख. ग. घ. ङ.। ३. इतः परम्–"वज्रसत्त्वशून्यतेति वज्रसत्त्वशून्यतायाः। सर्वतथागतकाय सर्वतथागतवाग् सर्वतथागतचित्त, तथागतमितीत्यर्थः।" सार्वत्रिकः पाठोऽयं भो. नास्ति। ४. इतः पूर्वं 'निरबिम्बं निराकारं' इत्यधिकः पाठः–ख.। ५. लेयाः–क.। ६. तथागता योषितश्चे–क. ग. घ.। ७. गे स्थित्यु–क. ख.। ८. तत्र नि–क. ख.। ९. चक्राद्यपेक्ष–क.। १०. स्वाभाव–घ.। ११. साधर्म्यस्तु कुलि–क., सो यस्मात् स्थूरकु–ख., यो यस्मात् स्थूर–घ.। १२. तत्–घ.। १३. भगे स्थिति–क.। १४. स्थिति–क. ख. ग.। १५. स्वाभाव–घ.। १६. बीजेनेत्यर्थः–घ.।

महानर्थहेतुत्वाद् यम इव यमः, तस्यारिस्तस्योन्मूलकः। ग्राह्यग्राहकविचार[1]-सारतया स्वपरजस(स्व)रूपस्य प्रति मुहु[2]रलीकत्वेन दर्शनात्, मोहस्य संक्षयात्। चकारोऽन्योन्या[3]पेक्षया समुच्चये। एवं पिशुनवज्रयमारिणा चेत्यादावपि वाक्यचतुष्टयेऽभेद्यादिकं सर्वं बोद्धव्यम्। तत्र अनात्मन्यात्मग्रहो मोहः। पर[4]प्रभेदकं वचनं पिशुनम्[5]। सर्वधर्मासक्ती रागः। परसम्पत्त्यसहिष्णुता ईर्ष्या। [6]अन्योन्यमप्रीतिर्द्वेषः।

मुद्गरयमारिणा चेति। आसंसारमशेषसत्त्वगतमहाकठिनसत्कायदृष्टिनो-(दृष्टेरु)पभेदकत्वाद् मुद्गर इव मुद्गरः। स चासौ तस्या एव सत्कायदृष्टे[7]र्नाशहेतुत्वेन यमात्मिकाया[8] अरिश्चेति मुद्गरयमारिः। एवमुत्तरत्रापि पदत्रयेऽयमेव कर्मधारयः। **दण्डयमारिणा** चेति। आसंसारमशेषसत्त्वगतान्त[9]र्ग्राहदृष्टिदोषस्यो[10]पस्प-(स्फ)रणाद् दण्ड इव दण्डः। तस्या एव दृष्टेर्नाश[11]हेतुत्वाद् यमात्मिकाया अरित्वाद् दण्डयमारिः। **पद्मयमारिणा** चेति। पद्म इव पद्मः, मिथ्यादृष्टिजना[12]नुपलेपि[13]त्वान्मिथ्यादृष्टे[14]र्यमात्मिकाया अरित्वात् पद्मयमारिः। **खड्गयमारिणा** चेति। दृष्टिपरामर्शशत्रूच्छेदकत्वात् खड्ग इव खड्गः, दृष्टिपरामर्शस्यैव यमात्मकस्यारित्वात् खड्गयमारिः।

वज्रचर्चिका चेति वज्रचर्चिकया च। तृतीयार्थे प्रथमा। एवमुत्तरत्रापि। तत्र वज्रमिव वज्रम् अनर्थजनकत्वात् क्लेशावरणम्, तस्य चर्चिका एकानेकवियोगेन विचारिका, तस्य [15]नाशयित्रीति यावत्। **वज्रवाराही** चेति। वज्रमिव वज्रम् अनर्थहेतुत्वात् कर्मावरणम्, तस्य वारणं वारः, तम् आसमन्ताद् हिनोति बोधयतीति ह(ड)-प्रकरणे-"अन्यत्रापि दृश्यते" इति हः(डः)। पिप्पल्यादित्वात् ङीप्। **वज्रसरस्वती** चेति। वज्रमभेद्यज्ञानम्, तदेव [16]सरः, ज्ञेयावरणसां(सं)तापा[17]पनयात्। **वज्रगौरी** चेति। वज्राऽभेद्यत्वाच्छून्यता[18]दृष्टिर्गौः, जन्मावरणप्रतिपक्षत्वात्, तां राति आदत्त इति वज्रगौरा, वज्रगौरे(रै)व वज्रगौरी, स्वार्थे इण्[19]।

---

१. विचारा-क. ख. ग. । २. रनीक-क. । ३. रोन्यापेक्ष-ख. । ४. पुंभे-क. । ५. शुनः-क. ख. । ६ नास्ति-भो. । ७ दृष्टिर्ना-क. ख. । ८. या यो अरि-क. । ९. गतानुग्रा-ग. । १०. दोषस्य पस्पर-क. ग., परस्परणा-घ. । ११. नाशे-क. ख. ग । १२. जला-ख. घ. । १३. नुपनेय-ख. । १४. दृष्टिस्थयमा-क., दृष्टिस्थैर्यमा-ग. घ. । १५. नाथयित्री-भो. । १६. स्वरः-भो. । १७. सांत्रापापनुयात्-क. ख, अतः परं 'ऊर्ध्वे तु' इत्यधिकः पाठः-क. ख., सन्तत्यपनयात् तद्वती युक्ता-भो. । १८. दृष्टिमान् गो-घ. । १९. अण्-ग. घ. ।

अथ खलु भगवान्[१] वज्रपाणि[२]र्वज्रसत्त्वं सर्वतथागताधिपतिमामन्त्रयामास[३]। अथ खलु भगवान् [४]सर्वतथागताधिपतिः खवज्रेभ्यः[५] सर्वमारनिकृन्तनवज्रं नाम समाधिं स्वकायवाक्चित्त[६]वज्रेभ्यो निश्चारयामास ॥ २ ॥

कोण इत्यभ्यन्तरपुटस्याग्नेयनैर्ऋत्यादिकोणेषु। कोणस्योपलक्षणत्वाद् मोहयमार्यादयोऽभ्यन्तरपुटस्य पूर्वदक्षिणादिदिक्षु। द्वेषयमारिः सर्वमध्ये। मुद्गरादयो बाह्यपुटस्य पूर्वदक्षिणादिद्वारेषु। तथा बाह्यपुटकोणेषु कपालचतुष्टयं पश्चात् प्रतिपाद्यम्।

एवं प्रमुखैरिति एतत्प्रधानैः। संघैः समूहैः। प्रत्येकमनन्तैः स्वस्वबीजेभ्यः [७]स्फुरत्संहरद्भि[८]रित्यर्थः। विजहारेति पूर्वेण सहावृत्त्या सम्बन्धः। अर्थस्तु—सुखसम्पत्त्या तैः सह स्थितवान्। एतच्च एतदेकमण्डलापेक्षया, अन्यदन्यापेक्षतया तु भिन्नान्येव मण्डलेस्व(श्व)रमाण्डलेयानि बोद्धव्यानि। तद्भेदाद् वज्रसत्त्वभेदश्च ॥१॥

यथोक्तदेवताचक्र[९]बीजनिष्पत्तये पञ्चाकाराभिसम्बोध्याख्यानायाह—अथेत्यादि। अथ खल्विति वाक्योपन्यासे[१०] भगवान् वज्रपाणिरामन्त्रयामासेत्यनेन सम्बध्यते। आमन्त्रयामासेति [११]पृष्टवान्। तच्चामन्त्रणमुत्तरानुरूपेणोन्नेयम्, [१२]अन्यथाऽन्यपृष्टस्यान्य[१३]कथनेऽप्रस्तुताभिधानं स्यात्। कमामन्त्रयामासेत्याह—वज्रसत्त्वमित्यादि। सर्वे च ते तथागताश्च अक्षोभ्यादयः, [१४]तेषामधिपतिरिति, [१५]तत्संहारत्वात्, तदुद्भवत्वाद्वा[१६] तथागतानाम्।

उत्तरार्थमाह—अथ खल्वित्यादि। सर्वमारनिकृन्तनेति। सर्वान् मारयति मीनाति हिनस्तीति कर्तर्यण्। सर्वपापेति पाठे सर्वपापः क्लेशो रागादिः, तस्य

---

१. नास्ति–घ. भो.। २. पाणि–ख. घ. ङ., वज्रसत्त्वः–ख. ङ., खलु वज्रपाणिर्भगवन्तं वज्रसावं–भो.। ३. न्त्रयते स्म–ग.। ४. नास्ति–क. ख. ग. घ. च.। ५. नास्ति–ङ. भो., भ्यो देवसदनं–ख., देरणहरं–घ. अधिकः पाठः। ६. चित्तेभ्यो–ङ.। ७ स्फरत्–घ.। ८. संहरणादिभिः–क., संहरणद्भि–ग.। ९. चक्रं–क.। १०. न्यासः–क. घ.। ११. सेति पूर्ववचनाच्चामन्त्रणेन मूर्तवान् रूपेणोन्नेयः–क.। १२. अथवा–ख.। १३. करणेऽयुक्तस्तु नानाभिधानं स्यात्–क.। १४. तेषामप्रियेति चित्तसंहारकत्वात्–क., तेषामधिपतिरिति सम्यगाह–भो.। १५ नास्ति–भो.। १६. 'वा' नास्ति–भो.।

चन्द्रवज्रप्रयोगेन(ण) भावयेद् यमघातकम् ।
माराणां शमनार्थाय द्विषो[1]पनुदे सर्वतः ॥ ३ ॥

---

[2]निकृन्तनो विशोधकः, अभेद्यत्वात् स एव वज्रः । **नाम प्रसिद्धो । समाधिमिति** हेतुवज्रधरयमारिमूर्तिम् । **स्वकायवाक्चित्तवज्रेभ्य** इत्यादर्शादि[3]पञ्चाकारस्वभावेभ्यः । **निश्चारयामास** स्फुरितवान् ॥२॥

चन्द्रवज्रप्रयोगेणेति । यद्यपि हृद्‌बीजारोपण-सप्तविधानुत्तरपूजा-चतुर्ब्रह्म-विहारभावना- शून्यताबोधि - वज्रप्राकारादि - तदन्तर्गताकाश[4]महाभूतविश्ववज्रस्थ-चतुर्महाभूतसंहारजकूटा[5]गार-मध्यस्थसूर्यानन्तरं चन्द्रवज्रादिभावनम्, तथापि यदग्रे व्यस्तक्रमेण कथनम्, तत्कदाचिदकृतगुरुक एव प्रज्ञामानी कश्चित् पाठमात्रेण प्रवर्तते । तथा च सति [6]समयभ्रंशः स्यात् । [7]तत्राकारादिषोडशभिः स्वरैर्द्विगुणितै[8]र्भावितचन्द्रे आदर्शज्ञानम् । **वज्रेति** । [9]वज्रं मार्तण्डः । ककारादिभिर्व्यञ्जनैरधिक[10]षडक्षरे(रैः) चत्वारि[11]शत्संख्यैर्द्विगुणितैर्भावितः सूर्यो वज्रं समताज्ञानम् । तयोश्चन्द्रसूर्ययोः प्रकृष्टो [12]योगः प्रयोगः, ततः सूर्यस्योपरि हूँकारे[13]णाधिष्ठि [तं] वज्रगर्भ[14]हूँकारेणाधिष्ठितं प्रत्यवेक्षणाज्ञानात्मकम् । ततो देवताचक्रस्फ[15]रणं संहरणं[16] च कृत्यानुष्ठानज्ञानात्मकम् । [17]तत्र सर्वपरिणामेन द्रवत्वं सुविशुद्धधर्मधातुज्ञानात्मकं बोद्धव्यम् । **यमघातकमिति** चन्द्रसूर्यवज्रबीजपरिणामजद्रवोत्थं[18] हेतुवज्रधरयमारिं प्रत्यालीढपदं शुक्लवर्णं[19] शुक्लमूलमुखं नीलारुणदक्षिणवामाननं दक्षिणकरैर्वज्रखड्गकर्तीधरं वामकरैश्चक्र-पद्मकपालधरं स्वाभासमालिङ्गितम्, "भगे लिङ्गं प्रतिष्ठाप्य मण्डलेशं विभावयेत्" (१०।१२) इति दशमपटलवचनात् । **माराणामिति** क्लेशस्कन्धदेवमृत्यूनां चतुर्णाम्, **शमनार्थायेति** तादर्थ्ये चतुर्थी । **द्विषामपनुदे सर्वत** इति सर्वद्विषां शत्रूणामपनुदेऽपनो-दार्थमित्यर्थः ॥ ३ ॥

---

१. द्विषपरः सर्वद्वेषतः-ङ., द्वेषोप-भो. । २. निकृन्तया अरित्वात् पद्मयमारिः-ख. । ३. पञ्चकस्वभा-क. । ४. आकाशे-क. ख. ग. । ५. कूटां-क. । ६. स मे यत्र सः स्यात्-क., य एतत् समये उत्सः स्यात्-ख. ग. । ७. तत-घ. । ८. णिते भा-ख. ग. ङ. । ९. वज्रमा-क., वज्रं मारजेता-भो. । १०. यदक्ष-क., थतक्ष-ख. । ११. रिंश-क. घ. । १२. द्योगः-ख. । १३ रेण वज्रगर्भहूँ-ख. । १४. गर्भे-घ. । १५. रणः-क. घ. । १६. रणः-क. घ. । १७. तत्-घ. । १८. द्रवोत्यहे-क. ख. । १९. वर्ण-क. ख. ग. ।

रक्षार्थं भावयेद् वज्रं पञ्चरश्मिसमाकुलम्।
वज्रेण भूमिं वाटं[1] च प्राकारं[2] पञ्जरं तथा ॥ ४ ॥

अथ खलु[3] भगवान् सर्वतथागतजनकः [4]सर्वमारविध्वंसनवज्रं नाम समाधिं समापद्येदं सर्वं[4] मोहवज्रयमार्यादिबीजं स्वकायवाक्चित्तवज्रेभ्यो निश्चारयामास ॥ ५ ॥

यमध्ये[5] क्षे स मं द यं[6] च[7] नि राजा स दो रुण[8] यो नि रः।
रेफ[9]स्यादिर्यमघ्नः स्यात् [10]क्षेकारे मोह उच्यते ॥ ६ ॥

शून्यताबोध्यनन्तरं यत् कर्तव्यं तद्वक्तुमाह—**रक्षार्थमित्यादि**। **वज्रमिति** विश्ववज्रम्। अत एवाह—**पञ्चरश्मिसमाकुलमिति**। तच्च रेफपरिणतसूर्यस्योपरि हूँकारनिष्पन्नम्। **वज्रेण भूमिमिति**। तद्वज्रनिर्गतानेकरश्मिभिरा रसातलाद्वज्रमयीं भूमिम्। [11]**वाटमिति** प्राकारचतुष्टयाद् बही रश्मिभि[12]र्वज्रमालाम्। **प्राकारमिति** वज्रभूमेरुपरि [13]दिक्चतुष्टयनिर्गतरश्मिना प्राचीरचतुष्टयम्। **पञ्जरमित्या**काशदेशव्यापिरश्मिभिर्वज्रबाणम् ॥ ४ ॥

वज्रसत्त्वनिष्पत्त्यनन्तरं [किं] कर्तव्यमित्याह—**अथेत्यादि**। **सर्वतथागतजनको** वज्रसत्त्वो यमारिर्हेतुवज्रधरः। **मारविध्वंसनवज्रं नाम समाधिं समापद्येति** स्वहृज्ज्ञानरश्मिना तथागतानानीय मुखेन प्रवेश्य हृदये द्रवीकृत्य वज्रमार्गेणोत्सृज्य स्वाभाञ्ज[14]चन्द्रद्रवरूपेण माण्डलेयबीजाक्षराणि निष्पाद्य। मारविध्वंसनदेवताचक्रहेतुत्वात् कारणे कार्योपचारत्वादयमेव मारविध्वंसनः समाधिः। **स्वकायवाक्**[15]**चित्तेभ्य इति**। स्वाभागतकायवाक्चित्तात्मकत्रितथागतविशुद्धधर्मोदयादित्यर्थः। **निश्चारयामासेति** संस्फार्य यथा स्थानं निवेशितवान्, [16]मोहयमार्यादिबीजस्फरण[17]प्रस्तावात् ॥५॥

यमध्य[18] इति। प्रधानयमारिबीजमप्युक्तं[19] बोद्धव्यम्। यदा वज्रसत्त्वो द्रवीभूय यमारिर्भविष्यति, तदेदं बीजाक्षरं कर्तव्यम्। सम्प्रति तु [20]क्षमेदाबीन्येव संस्फार्याणि

---

१. वातं–क ख. ग. घ.। २. रपञ्ज–ङ.। ३. नास्ति–ङ.। ४. 'सर्वं' नास्ति–ङ. भो.। ५. ध्यक्ष–क. ङ. च.। ६. दद्या–ग. च., दया–क. ख., देयं–ङ.। ७. च्छनि–भो.। ८. रुणा–ग. च., णया–घ. ङ.। ९. रहस्या–घ.। १०. क्ष–ग.। ११. वाड–घ.। १२. वप्र–ख.। १३. दिक्षु–क.। १४. ब्जे–घ.। १५. चित्तेभ्यः काश्चिदागत–क., भ्यष्टातिस्वाभा–ख., चित्तेच्छातिगत–ग.। १६. इतः पूर्वं 'मानं कर्तव्यं सम्प्रदानम्' इत्यधिकः पाठः–ख.। १७. स्फरणं प्रसृतवान्–क.। १८. ध्यक्ष–क. ग.। १९. ध्यक्षं–क.। २०. समे–क., क्षेमे–ग., क्षम–घ., यक्षेममेदा–भो.।

[1]सकारे पिशुनमेवोक्तं [2]मंकारे रागमेव[3] च ।
दकारेऽपि च ईर्ष्या स्याद् यमघ्नाः पञ्च कीर्तिताः ॥ ७ ॥

यकारे मुद्गरः स्यात[4]श्चकारे दण्डनायकः ।
निकारे पद्मपाणिश्च राकारे[5] खड्गवानपि ॥ ८ ॥

जाकारे चर्चिका प्रोक्ता वाराही च सकारके ।
सरस्वती च दोकारे रू(रु)कारे गौरिका स्मृता ॥ ९ ॥

[6]णयोनिर चतुष्कोणे चत्वारः कारका[7] मताः ।
खवज्रमध्यगतं चिन्तेद् विश्ववज्रं भयानकम् ॥ १० ॥

यथास्थानम् । 'क्षमदेये[8]त्यभ्यन्तरपुटादिष्विति शेषः । [10]यच्चनिरा बाह्यपुटद्वार-चतुष्टये । जासदोरु[11] अभ्यन्परपुटविदिक्चतुष्टये । [ण]योनिर बाह्यपुटकोणचतुष्टये । देवताभेदेन बीजाक्षरविभागायाह रेफादिरित्यादि । यमघ्न इत्यक्षोध्यः । मोह इति वैरोचनः। पिशुनो रत्नसंभवः । राग इत्यमिताभः ईर्ष्या अमोघसिद्धिः । यमघ्नाः पञ्च कीर्तिता इति । एत एवाक्षोभ्यादयः पञ्च यमघ्ना अभिधीयन्ते । ततो मुद्रा-प्रस्तावे[12]-"सर्वेषां माण्डलेयानां यमघ्नं शिरसि भावयेत्" इति तथागतानेव यथायोगं भावयेदिति ॥ ६-९½ ॥

इदानीं वज्रप्राकारवज्रपञ्जरमध्यगतावकाशात्मकाकाशे भविष्यत्[13]कूटागार-मध्ये यमार्यवस्थानार्थमाह—खवज्रेत्यादि । तत्र खवज्रम् आकाशं महाभूतं वज्र-प्राकारवज्रपञ्जरात्तर्गतावकाश[14]स्वभावम्, तस्य मध्यगतम्[15], तद्व्यापीत्यर्थः । विश्ववज्रमिति हूँकारनिष्पादितम् । पूर्वविश्ववज्रमेव चिन्तेदिति स्मरेत्, पञ्च तथागतात्मकत्वाद् मध्ये कृष्णं पूर्वे शुक्लं दक्षिणे पीतं पश्चिमे रक्तम् उत्तरे श्यामम् ॥१०॥

---

१. म—ङ. भो. । २. म—ख. ग. च., मे—भो. । ३. एव—ङ. । ४. ठकारे—ङ, छ—भो. । ५. ग—ङ. । ६. न.—ग. च. । ७. कपालाः—भो. । ८. समे—क. ख. ग., क्षेममेदे—भो. । ९. देयेत्यत्र च—क. । १०. यच्छ—भो. । ११. रुच पुट—क., च अभ्य—ख. । १२. प्रस्तार—क. । १३. ष्यन् कूटां—क. । १४. वकाशभावं—ख. ग. । १५. गतः—घ. ।

यमान्तक[1]स्य मध्यस्थं[2] भावयेत् कालदारुणम् ।
[3]पूर्वद्वारे मोहवज्रं दक्षिणे पिशुनमेव च[4] ॥ ११ ॥

पश्चिमे रागवज्रं तु ईर्ष्याख्यमुत्तरे तथा ।
कोणे वज्रचतुःशूले चर्चिकाद्या विभावयेत् ॥ १२ ॥

द्वारवज्रचतुःशूले मुद्गराद्या विभावयेत् ।
विश्ववज्रचतुष्कोणे चत्वारो [5]नृकमस्तकाः ॥ १३ ॥

अथ खलु भगवान् सर्वतथागताधिपतिर्यमारिवज्रं नाम समाधिं समापद्येदं महाद्वेषकुलमन्त्रमुदाजहार—

ॐ ह्रीः ष्ट्रीः[6] विकृतानन[7] हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा ॥ १४ ॥

यमारिं तस्य मध्यस्थमिति तद्विश्ववज्रवेदिकावस्थितकूटा[8]गाराभ्यन्तरपुटमध्यस्थम् । परं द्रवीभूते वज्रसत्त्वे वज्रगीत्या संचोद्योपस्थापितमिति बोद्धव्यम् । **पूर्वार** इति पूर्वदिग्भागे[9] । एवं दक्षिणपश्चिमोत्तरदिग्भागे चेति बोद्धव्यम् । **कोण** इति अभ्यन्तरपुटकोणेषु । **वज्रचतुःशूल** इति । वज्रमोह[10]यमार्यादयश्चत्वारः, तेषां शूले धर्मसंकेतेन विदिक्षु । **चर्चिकाद्या** इति । चर्चिका, वाराही, सरस्वती, गौरी ॥११-१२॥

द्वार[वज्र]चतुःशूल इति । बाह्यपुटद्वारे यद्विश्ववज्रस्य चतुःशूलं पञ्चशूकचतुष्टयम्, तत्र तत्समीपद्वार एवेत्यर्थः । **विश्ववज्रचतुःकोण** इति । विश्ववज्रस्थितकूटा[11]गारस्य कोणचतुष्टये । **नृकमस्तका** नरकपालान्यसृक्पूर्णानि विश्वदलकमलोपविष्टानि ॥१३॥

देवतानां जप[12]मन्त्राख्यानायाह—**अथ खल्वित्यादि** । **यमारिवज्रं नाम समाधिं समापद्येति** । फलयमारीभूय भविष्यद्यमार्यवस्थां प्राप्येत्यर्थः । **मन्त्रं** जप्तव्यमिति शेषः । **उदाजहारेति** । अधुना [13]देशितवान् ॥१४॥

---

१. रिं तस्य–टी. । २. ध्यमं–घ. । ३. पूर्वा–क., पूर्द्वा–ख., पूर्वारे–टी. । ४. तु–क. । ५. नरमस्त–भो. । ६. ह्रीं: ष्ट्रीं:–च., स्त्रीः–ख. घ. । ७. नने–ख. घ. । ८. कूटां–क. ख. घ. । ९. दिग्भवो–ख. । १०. वज्रपुटद्वारे यमा–क. । ११. कूटां–क. ग. । १२. जपतन्त्रयन्त्रमन्त्रा–ख. । १३. दर्शित–क. ख. ग. ।

अथ खलु भगवान् सर्वतथागताधिपतिर्मोह[1] वज्रमन्त्रमुदाजहार—ॐ जिनजिक्[2] ॥ १५ ॥

अथ खलु भगवान् सर्वतथागताधिपतिः पिशुनवज्रमन्त्रमुदाजहार—ॐ रत्नधृक् ॥ १६ ॥

अथ खलु भगवान् सर्वतथागताधिपती[3] रागवज्रमन्त्रमुदाजहार—ॐ [4]आरोलिक् ॥ १७ ॥

अथ खलु भगवान् सर्वतथागताधिपतिरीर्ष्यावज्रमन्त्रमुदाजहार—ॐ प्रज्ञाधृक् ॥ १८ ॥

अथ खलु भगवान् सर्वतथागताधिपतिर्मुद्गरवज्रमन्त्रमुदाजहार—ॐ [5]मुद्गरधृक् ॥ १९ ॥

अथ खलु भगवान् सर्वतथागताधिपतिर्दण्डवज्रमन्त्रमुदाजहार—ॐ दण्डधृक् ॥ २० ॥

अथ खलु भगवान् सर्वतथागताधिपतिः पद्मवज्रमन्त्रमुदाजहार—ॐ पद्मधृक् ॥ २१ ॥

अथ खलु भगवान् सर्वतथागताधिपतिः खड्गवज्रमन्त्रमुदाजहार—ॐ खड्गधृक् ॥ २२ ॥

अथ खलु भगवान् सर्वतथागताधिपतिर्वज्रचर्चिकामन्त्रमुदाजहार—ॐ [6]मोहरति ॥ २३ ॥

अथ खलु भगवान् सर्वतथागताधिपतिर्वज्रवाराही[7] मन्त्रमुदाजहार—ॐ [8]द्वेषरति ॥ २४ ॥

अथ खलु भगवान् सर्वतथागताधिपतिर्वज्रसरस्वतीमन्त्रमुदाजहार—ॐ रागरति ॥ २५ ॥

अथ खलु भगवान् सर्वतथागताधिपतिर्वज्रगौरीमन्त्रमुदाजहार—ॐ वज्ररति ॥ २६ ॥

म[ा]ण्डलेयानां जप्तव्यं[9] मन्त्रं वक्तुमथ खल्वित्यादिना द्वादशवाक्यानि ॥१५-२६॥

---

१ मोहमहावज्र–भो. । २. जिकः–क. । ३. पति–क. ग. । ४. आलो–ङ. । ५. वज्रमुद्गर–ग. । ६. द्वेष–ङ. । ७. वाराह्या–ग. । ८. मोह–ङ. । ९. सव्यमन्त्रं–क. ग. घ. ।

अथ खलु भगवान्[1] सर्वतथागताधिपतिः कायवाक्चित्ताधिष्ठान-मन्त्रमुदाजहार—

ॐ सर्वतथागतकायवज्रस्वभावात्मकोऽहम् ।
ॐ सर्वतथागतवाग्वज्रस्वभावात्मकोऽहम् ।
ॐ सर्वतथागतचित्तवज्रस्वभावात्मकोऽहम् ॥ २७ ॥

अथ खलु भगवान् सर्वतथागताधिपतिर्महाद्वेषतनुमुद्योतयामास ॥ २८ ॥

त्रिमुखं षड्भुजं क्रुद्धमिन्द्रनीलसमप्रभम् ।
पाणौ वज्रं[2] प्रभावित्वा[3] यमारिं भावयेद् बुधः ॥ २९ ॥

त्रिमुखं षड्भुजं शान्तं स्वच्छबिम्बसमप्रभम् ।
पाणौ चक्रं[4] विभावित्वा मोहवज्रं विभावयेत् ॥ ३० ॥

त्रिमुखं षड्भुजं पुष्टं[5] तप्तचामीकरप्रभम् ।
पाणौ रत्नं विभावित्वा पिशुनवज्रं विभावयेत् ॥ ३१ ॥

कायवाक्चित्ताधिष्ठानमन्त्रमिति । मण्डलेश्वरस्य माण्डलेयानां च ॥२७॥

महाद्वेषतनुमिति द्वेषयमारिकायम् ॥२८॥

त्रिमुखमिति । मूलकृष्णं दक्षिणशुक्लं वामरक्तम् । **पाणाविति** दक्षिणपाणौ । वज्रस्योपलक्षणत्वाद् अपरभुजद्वये खड्गकर्तिधारिणम् । तथा वामभुजद्व(त्र)ये चक्ररक्तपद्मकपालधरम् ॥२९॥

त्रिमुखमिति । मूलं शुक्लम्, वामं[6] रक्तम्, दक्षिणं कृष्णम् । **शान्तं** शान्त(न्ति)-कर्महितम् । **स्वच्छबिम्बश्चन्द्रः**, तत्समप्रभं शुक्लप्रभम् । **पाणाविति** दक्षिणे, चक्रस्योपलक्षणत्वाद् अपरभुजद्वये खड्गकर्तिधारिणम् । तथा वामभुजत्रये रत्नपद्मकपालानि ॥ ३० ॥

त्रिमुखमिति । मूलं पीतम्, दक्षिणं सितम्, वामं कृष्णम् । **पुष्टं**[7] पौष्टिककर्महितम् । **तप्तचामीकरमिति** तप्तसुवर्णं तत्प्रभम् । **पाणाविति** दक्षिणे । रत्नस्योपलक्षणत्वाद् अपरभुजद्वये खड्गकर्त्री च । वामभुजत्रये चक्रपद्मकपालानि ॥ ३१ ॥

---

१. 'भगवान्' नास्ति—भो. । २. वज्र—ङ. । ३. प्रभाबिम्बा—ग. । ४. प्रभा—ग. । ५. पुस्तं—क. ख. घ. च. । ६. वामे—क. ख. । ७. पूर्णं—क., पूर्वे—घ. ।

त्रिमुखं षड्भुजं वश्यं[1] पद्मरागसमप्रभम् ।
पाणौ पद्मं विभावित्वा रागवज्रं विभावयेत् ॥ ३२ ॥

त्रिमुखं षड्भुजं [2]सर्वं मरकतोपल[3]सन्निभम् ।
पाणौ कोषं[4] विभावित्वा ईर्ष्यावज्रं विभावयेत् ॥ ३३ ॥

इति[5] सर्वतथागतकायवाक्चित्त[6]कृष्णयमारि[7]तन्त्रेऽ-
भिसमय[8]पटलः प्रथमः ॥

●

त्रिमुखमिति । मूलं रक्तम्, दक्षिणं सितम्, वामं नीलम् । वश्यं वश्यकर्मणि हितम् । पद्मरागमिति लोहितं रत्नम्[9] । पाणौ दक्षिणहस्ते । पद्मस्योपलक्षणत्वाद् अपरभुजद्वये खड्गकर्त्री । वामे चक्ररत्नकपालानि ॥ ३२ ॥

त्रिमुखमिति । मूलं हरितम्, दक्षिणं कृष्णम्, वामं पीतम् । सर्वं सार्वकर्मिकम् । मरक्तं(कतं) हरितरत्नम् । पाणौ दक्षिणहस्ते कोशाख्य[10] खड्गस्योपलक्षणत्वाद् अपरभुजद्वये वज्रकर्तिके । वामे चक्रपद्मकपालानि ॥ ३३ ॥

एवमभ्यन्तरपुटगतपञ्चयमारीनाख्याय पटलं समर्प(माप)[11]यन्नाह—सर्वतथागतेत्यादि । सर्वतथागतानां यत्कायवाक्चित्तं वज्रसत्त्वाख्यं तत्परिणामो यः कृष्णयमारिः, स[12] सर्वतथागतकायवाक्चित्तयमारिः, स [13]तन्त्र्यते व्युत्पाद्यते येन तत्तन्त्रम्, तस्मिन्निति तदेकदेशे । अभीति अभितः सर्वतः सर्वभावेन समीयते साक्षाद्रूपतया प्राप्यते येनासावभि(स्था ?)समयः, सर्वाज्ञानप्रच्छादक[14]त्वेन पट[15]इव पटः, तं लाति[16]गृह्णातीति पटलः, [17]अभिसमयश्चासौ पटलश्चेत्यभिसमयपटलः ॥

[18]इति प्रथमपटलव्याख्या ॥

---

१. विश्वं–ग. । २. खवं– । ३. तोपद्म–ग च. । ४. कोष्ठं–घ. भो. । ५. 'इति' नास्ति–घ. ङ. । ६. 'सर्व……चित्त' नास्ति–ग. च. । ७. यमारिमहा–ग. च., रिरक्षा–ख. । ८. समयक्रमः–भो. । ९. रक्तं- घ. । १०. कोशाख्ये–क. ख ग. । ११. समर्थय–क. ग. घ । १२. 'स' नास्ति–क. ग. घ. । १३. तन्यते–क. ख. ग. । १४. सर्वाङ्गानि प्रच्छा–क., सर्वाङ्गानि ज्ञानच्छा–ख., सर्वाङ्गुलच्छा–ग. सर्वाङ्गानि ज्ञानप्रच्छः–घ. ङ. च., गृहीतपाठस्तु भोटानुसारी । १५. पटवत्–क. ख., पटकं च-ग. । १६. लातीति–घ. । १७. 'अभि…………………… पटलः'–नास्ति–ख. । १८. इति श्रीकृष्णयमारितन्त्रे यागहोमेऽभिसमयपटलः प्रथमः–ख. ।

द्वितीयः पटलः

अथ खलु[1] भगवन्तः[2] सर्वतथागता[3] भगवन्तं महावज्रसत्त्वं स्तुवन्ति[4] स्म ॥ १ ॥

मोहवज्रस्वभावस्त्वं यमारिरति[5] भीषणः ।
सर्वबुद्धमयः[6] शान्तः[7] कायवज्र[8] नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥
पिशुनवज्रस्वभावस्त्वं यमारिरतिभीषणः ।
[9] चित्तवज्रप्रतीकाशः[10] रत्नवज्र[11] नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥
रागवज्रस्वभावस्त्वं [12] यमारिरतिभीषणः ।
सर्वघोषवराग्राग्र्य [13] वाग्वज्र नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥
ईर्ष्यावज्रस्वभावस्त्वं यमारिः [14] सार्वकर्मिकः ।
[15] कायवज्रप्रतीकाश खड्गपाणि[16] नमोऽस्तु ते ॥ ५ ॥
सर्वबुद्धस्वभावस्त्वं सर्वबुद्धैकसंग्रहः[17] ।
सर्वबुद्धवराग्राग्र्य[18] [19] मण्डलेश नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥

---

[20] शिष्यादिकरण[21] निमित्तं मण्डललिखनाद्यर्थमाचार्यस्तुतिं वक्तुमाह—अथ भगवन्त इत्यादि । महावज्रसत्त्वमिति । सर्वसंग्राहकत्वात् महान्, बोधिचित्तरूपत्वाद् वज्रम्, तदुक्तम्—"यद् बोधि[22] स्तद् वज्रम्" (इति), तत्र सत्त्वं विद्यमानत्वं तत्स्वभावत्वं यस्य तम् ॥ १ ॥

कया स्तुत्येत्याह—मोहवज्रेत्यादि ॥ २–६ ॥

---

१. 'खलु' नास्ति–ङ. भो. । २. भगवान्–ग. च. । ३. गतं–ग. च. । ४. वन्तः–ङ । ५. रिमभिभी–ङ. । ६. द्धसमः–ङ. भो. । ७. शास्ता–भो. । ८. वज्रं–ख. ग. च. । ९. वाग्व–ग. । १०. काशं–ग. घ. च. । ११. वज्रं–ख. ग. घ. । १२. रागधर्माकरः प्रभुः–ख. घ. ङ, धर्मो–क., धर्मकरः–ग. च. । १३. चित्तव–ख. ग., घ., वज्र–ख., वाक्यवज्रं–घ. । १४. सर्व–ग. घ. ङ. च, कामि–घ । १५. रागवज्र–भो. । १६. पाणि–ख. घ., वज्रं–ग. च. । १७. ग्रह–क घ. ङ., ग्रहं–ग च. । १८. ग्राग्रे–ग. च. । १९. माण्ड–ग. च., लेशं–ख. ग. च. । २०. तत्र शिष्या–ख. । २१. करणं–क. । २२. बोधित्वं तद्–ग., बोधिचित्तं तद्–घ. ।

वज्रचक्षुः, वज्रश्रोत्रः, वज्रघ्राणः, वज्रजिह्वा, वज्रकायः, वज्रवाक्, वज्रचित्त इत्याह भगवान् चक्षुराद्यधिष्ठानसमयः ॥ ७ ॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि यमारे[1]र्घोरमण्डलम् ।
[2]यममारिप्रतीकाशं सर्वकामार्थसाधकम् ॥८॥

नवेन सुनियुक्तेन [3]सुमानेन च चारुणा ।
सूत्रेण सूत्रयेत् प्राज्ञो यमघ्नस्य हि मण्डलम् ॥९॥

भावनानिष्पादितदेवता[4]वज्रानन्तरं चक्षुराद्यधिष्ठानमाह—वज्रचक्षुरि[5]त्यादि । मो(आ)हेत्युक्तवान् । चक्षुरादीनामधिष्ठानं यत् तस्य समयं सङ्केतम्, चक्षुराद्यधिष्ठानमन्त्रमित्यर्थः । क्वचित् प्रथमान्तः पाठः । तदानीमयमर्थः—चक्षुराद्यधिष्ठाने समयो यस्य भगवत इति, विगृह्य गमकत्वात्, यदि करणे बहुव्रीहिः कर्तव्यः । एवमुत्तरत्रापि एवंजातीयपाठे बोद्धव्यम् ॥ ७ ॥

उक्तस्तुतिप्रयोजनमण्डललिखनायाह—अथात इत्यादि । घोरमिति प्रचण्डाधिष्ठानत्वात् । मण्डलमिति बोधिचित्तरूपत्वात् । तदुक्तं श्रीसमाजे—"बोधिचित्तं च मण्डलम्" [इति] । यमस्यारिर्यमारिः, तत्प्रतीकाशं तत्तुल्यम्, तत्कार्यकारित्वात् । सर्वकामार्थसाधकमिति । यो यावान् कामार्थः[6] शान्तिकादिस्तस्य साधकम् ॥ ८ ॥

परं मध्यस्थाने वर्णचिह्नभेदे सति मण्डलसूत्रणाय सूत्रं[7] वक्तुमाह—नवेनेत्यादि । सुनियुक्तेनेति । पञ्चतथागतविशुद्ध्या पञ्च-पञ्च सूत्राणि पञ्च वर्णानि कृत्वा पञ्चविंशत्यात्मकेन । सुप्रमाणेनेति मण्डलद्विगुणदीर्घेण । चारुणेति प्रशस्तेन, मण्डलद्वारस्य विंशतितमस्थूलभागेनेत्यर्थः । सूत्रेणेति मन्त्राधिष्ठानात् कृतज्ञानसूत्रेण [8]सूत्रयेदिति ।

अयमत्रोपदेशः—हस्तैकमण्डलापेक्षया त्रिहस्तभूभागे चतुरस्रे सुपरि[9]कर्मिते मध्यभागे सूत्रं वामह[10]स्ताङ्गुलिभ्यां यन्त्रयित्वा दक्षिणहस्तेन यन्त्रितसकठिनीक[11]-सूत्रेण वर्तुलरेखामेकां[12] सर्वं (सर्वत्र) भ्रामयेत् । ततः प्राक्पश्चिमोत्तरदक्षिणमुखो[13]

---

१. रिघोर-ग. घ. च. । २. श्रीयमारि-ग. च. । ३. सुमोचतेन-घ. । ४. देवताचक्र-भो० । ५. चक्षित्या-ख. ग. घ. । ६. काम्यार्थः-ग. घ. । ७. सूत्रं च क्रमेणाह-क. । ८. सूत्रयतीति-क. । ९. कर्तिते-क. ख. । १०. हस्ताङ्गुष्ठाङ्गुलि-क. ग. घ. । ११. ठिनीसूत्रे-क. । १२. रेखात्मकां-क. । १३. दक्षिणमुखान् करिष्ये-क. ।

गुरुशिष्यावक्षोभ्य[1]वैरोचनात्मक[ौ] कृतदेवतायागो[2] यथाक्रमं ब्रह्मसूत्रद्वयं मध्यभागे पातयतः,[3] [4]वामा[ग्र]ग्नीशाननैर्ऋतस्थौ कोणसूत्रद्वयं समपरिमाणान्तरावकाशम्। ततो मध्यतः प्राक्पादोनदशाङ्गुलतः प्रभृति वर्तुलरेखां सर्वतो भ्रामयेत्। ततोऽप्यर्वाक् पादोनाङ्गुष्ठवर्तुलरेखामेकां वज्रावलीनिमित्तम्, ततोऽर्वाक् पञ्चाङ्गुल[5]रेखामृजुमेकां[6] चतसृषु दिक्षु, ततः पादोनाङ्गुष्ठे च रेखाम्। एवं नवकोष्ठकान्तर्गता[7]धिकरेखाः प्रोञ्छ्य यथाशोभं कोष्ठकस्त[म्भं][8]सूत्रयेत्। ततः पूर्वब्रह्म[9]सूत्रमभितो वज्रावलीबहीरेखातः सार्धाङ्गुले रजोभूम्यर्थ[10]माग्नेयेशानकोण[11]सूत्रव्यापि[12] सूत्रमेकं पातयेत्। ततो मुखपञ्जरेखार्थमपरं पादोनाङ्गुष्ठभूभागे, तद्बहिर्ब्रह्मसूत्रैकैकपार्श्वे सार्धमङ्गुलं त्यक्त्वाऽङ्गुलत्रयदीर्घपादोनाङ्गुष्ठ[13]गर्भसूत्रद्वयद्वयं निर्यूहाख्यं पञ्जरेखार्थम्, ततस्तिर्यक् सार्धाङ्गुलमानं पादोनाङ्गुष्ठगर्भं कपोलाख्यपञ्जरेखार्थं सूत्रद्वयं द्वयम्, ततः पक्षकाख्यपञ्जरेखार्थमृजुमार्धाङ्गुलमानं पादोनाङ्गुष्ठगर्भसूत्रद्वयं द्वयम्, ततः पार्श्वद्वयव्यापिस्कन्धाख्यपञ्जरेखार्थं पादोनाङ्गुष्ठगर्भं सूत्रद्वयं पातयेत्। तदन्व[14]स्मान्निर्यूहाच्च परतोऽङ्गुष्ठपादमानेन रत्नपट्टिकार्थं तिर्यक्सूत्रमेकं पार्श्वद्वये च, ततो रत्नपट्टिकातो बहिः पक्षकात् पादोनाङ्गुष्ठं परित्यज्य पादोनाङ्गुष्ठान्तरालं सूत्रद्वयं पार्श्वद्वये च स्तम्भार्थं[15] स्कन्धात्परवर्तिपादोनाङ्गुष्ठ[16]शिरस्कं पातयेत्। ततः स्तम्भबाह्यपार्श्वद्वये रत्नपट्टिकातो बहिः सार्धाङ्गुलं सूत्रमेकं धारिणीपट्टिकार्थं तिर्यक् पातयेत्। ततो रत्नपट्टिकार्थं पूर्ववत् सूत्रमेकम्, ततो रत्नपट्टिकातो बहिः सार्धाङ्गुष्ठ[17]सूत्रमेकं हारार्धहारपट्टिकार्थम्, ततः पूर्ववद् रत्नपट्टिकासूत्रम्, ततः[18] स्तम्भमस्तकोपरि स्कन्धात् पादोनाङ्गुष्ठं[19] त्यक्त्वा एकादशवज्राङ्कितं पादोनाङ्गुष्ठमात्रं वज्रवितानम्, स्तम्भ[20]शीर्षाल्लम्बमानाञ्चलद्वयं यथाशोभम्। ततो हारार्धहारपट्टिकावकाशेऽष्टमकरमुखानि रत्नपट्टिका[21]बद्धानि, तल्लग्नोभयपार्श्वान्मुक्तहाराः, सर्वेषामभ्यन्तरे हाराणां पद्मासनस्थार्धेन्दुरविस्थितरत्नोपर्य[22]र्धवज्राणि प्रलम्बमानानि [23]मकरमुखानि रत्नपट्टीनि-

---

१. क्षोभ्यः-क. ग.। २. यागो-क.। ३. पातयेत्-क.। ४. ईशानं नैर्ऋते तथैव कोण-क. ग., तथा वायव्य ईशाननैर्ऋतस्थौ च कोण-ख.। ५. ङ्गुले-ख. ग. घ.। ६. रेखामुत्तामे-क। ७. गताश्चैक-क. ख., गताप्येक-ग., रेखा-घ.। ८. भावयेत्-घ.। ९. पूर्वमुक्तं-क। १०. भूत्यर्थं-क., अतः परं '....निर्यूहाच्च परतः' इति यावत् पाठो नास्ति-ख.। ११. कोणे-क. ग., कोणपञ्च-भो.। १२. सूत्रद्वया धिक-क.। १३. ङ्गुष्ठे-क. ग.। १४. न्वग्रान्नि-क. ग.। १५. म्भार्थस्क-ख.। १६. ङ्गुष्ठे-क. ख. ग.। १७. ङ्गुष्ठे-क. ख. ग. १८. तत्र-क.। १९. ङ्गुष्ठे-क. ख. ग.। २०. स्तम्भशिष्टां-क., स्तम्भशीर्षा-ख. घ.। २१. पट्टीनिब-ग. घ.। २२. पर्यध्व-क. ख.। २३. मकरमुखमध्यलम्बमाना-क. ग. घ.।

बद्धानि। मध्ये लम्बमानाः स्थूलामलमणिबन्धनसुन्दरशिखरा। [1]मनागूनोभयपार्श्वे हारास्त्रिहाराः। ततो द्वारोभयपार्श्वे [2]रजोभूमौ पद्मासनोपविष्टकलशद्वयं च यथाशोभं लेख्यम्, धारण्याख्यवेदिकायां चाप्सरसः। ततश्चतुर्षु कोणेषु वज्राङ्कितमणिदण्ड-निबद्धाश्चलच्चामरकिङ्किणीमुखराः पताकावलीः प्रान्तव्यापिन्यः, यथाशोभं छत्राणि च। तत्र स्तम्भ[3]रत्नपट्टिका मध्यतश्च भद्रघटस्थितकल्पद्रुमो लिखनीयः। निर्यूह[4]-स्तम्भा[5]न्तरावकाशे वज्ररत्नं लिखनीयम्। वज्रवितानादुपरि वकू(कु)लीहारपट्टिका अङ्गुष्ठापादद्वयविस्तारा पार्श्वद्वये पादद्वयात्मिका[6] चतुरस्रा[7]। तदनु माणिक्याः (क्या) पादत्रयविस्तारा दैर्घ्येण वकुली[8]समा, तदनु पार्श्वद्वये पादपादहीना खुरापट्टी[9] पादद्वयविस्तारा तुरग[10]खुरसन्निभा नानावर्णखुरमध्या[11]। ततः स्वन्तपट्टी स्वर्णा[12] पादत्रयविस्तारा पीतवर्णा पार्श्वद्वये[13] पादद्वयद्वयहीना। ततोऽन्व[14](नु) काञ्चनवर्णा पदी(ट्टी) ततोऽन्धकारिकाऽङ्गुष्ठद्वयविस्तारा पार्श्वद्वयाङ्गुष्ठयद्वयद्वयहीनाः (ना)। ततः स्वर्णाः [15]पूर्वस्वर्णतुल्याः। ततः खुरपट्टि(ट्टी) पादद्वय[16]विस्तारा स्वर्णतः पार्श्वद्वये पादपादाधिका। ततो माणिक्या[17] पादत्रयविस्तारा पार्श्वद्वये पादपादाधिका। ततः खुरपट्टी पूर्वखुरपट्टीवत्। ततः स्वर्णा[18] पूर्वस्वर्ण[19]वत्। ततः क्रमशीर्षिका सार्धा-ङ्गुष्ठविस्तारा पार्श्वद्वये पादोनपादोनाङ्गुष्ठहीना। ततः पादमान[20]पद्मासनोपरि सपादाङ्गुलमानो हरिण(णो) मध्यकायस्तद्ग्रीवा सार्धाङ्गुलमाना[21]। तदुपरि अर्धाङ्गुलं त्यक्त्वा रेखामेकां भ्रामयेत्। तदुपरि पद्मावली अङ्गुष्ठत्रयमाना। तदुपरि अङ्गुलत्रयमाना वज्रावली[22]। यथाशोभं पञ्चवर्णरश्मयः। एवमेकैकपार्श्वे हस्तै-कमग्रात्[23] परतः। तेनैकहस्ते मण्डलं त्रिहस्ते[24] तद्बहिर्हरिणद्वयस्य मध्ये पादोना-ङ्गुष्ठ[25] पद्मासनोपरि पादोनाङ्गुष्ठपीठांस्त्यक्त्वा द्वादशारं चक्रं सार्धाङ्गुलमानमध्यशूकैः, अपरं[26] शूकचतुष्टयं पार्श्वद्वये लिखनीयम्। हरिणद्वयाग्रतो लम्बमानहरिणलाङ्गूल-पर्यन्तं पताकाद्वयं[27] हरिणपश्चाद्देशे क्रमशीर्षोपरि विमुखं प्राक्पश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु

---

१. ततोऽग्रतोभयपार्श्वं-क.। २. पार्श्वरजो-घ.। ३. 'स्तम्भ' नास्ति, गृहीतपाठस्तु भोटानुसारी। ४. निर्य्यूह-क.। ५. स्तम्भोत्तरा-क. ख. ग.। ६. द्वयोऽधिका-ख. ग। ७. चतस्रो-क.। ८. लिसमा-घ.। ९. खरा-ख. घ.। १०. तुरंग-क.। ११. मुखरमध्या-क.। १२. वर्णा-क, 'स्वन्तपट्टो' नास्ति-घ.। १३. द्वय-क.। १४. न्वेकास्वन्धणपदी-ख.। १५. स्वर्णापूर्णा-ख.। १६. द्वयद्वयहीना-ख.। १७ माणिक्य-ग.। १८. स्वर्ण-क. ख.। १९. स्वर्णो-ग. घ.। २०. माने-घ.। २१. अतः परम्—'शिरोऽर्द्धाङ्गुलमानं' इत्यधिकः पाठः-क. ग.। २२. बज्रिणी-क.। २३. स्तैकमभ्यन्तरतः-क., स्तैकमस्रात्-घ। २४. त्रिहस्तो भवति-क. २५.। ङ्गुष्ठे-क. ख. ग.। २६. अपरै-क.घ.। २७. द्वये ख., द्वय-घ.।

सर्वलक्षणसंपूर्णं [1]सर्वविघ्नविनाशनम्[2] ।
शान्तिकादि[3]प्रमाणेन मण्डलं मण्डलाकृति ॥१०॥

कर्मवज्रं लिखेत् तत्र पञ्चशूलं समन्ततः ।
तस्य मध्ये लिखेद् वज्रं वज्रज्वालासमाकुलम् ॥११॥

पूर्वशूले[4] लिखेच्चक्रं चक्ररश्मिसमाकुलम् ।
दक्षिणेनालिखेद् रत्नं रश्मिमालासमाकुलम् ॥१२॥

पश्चिमेनालिखेत् पद्मं पद्मराग[5]समप्रभम् ।
उत्तरेणालिखेत् खड्गं विश्वज्वालासमाकुलम् ॥१३॥

यथाक्रमं सिंहगजहंसमयूरमकरद्वयद्वयं लिखेत् । एवमेकहस्तमारभ्य यावद् हस्तसहस्रकं मण्डलं लिखनीयम् ।

प्राज्ञः सूत्रपातने विज्ञः ॥ ९ ॥

शान्तिकादिप्रणेतारमिति शान्तिकपौष्टिकवश्याभिचारादिकर्मकारकम् । परं मध्यस्थानवर्णचिह्नभेदात् ॥ १० ॥

कर्मवज्रं विश्ववज्रम् । पञ्चशूलं पञ्चशूकम् । समन्तत इति चतसृष्वपि दिक्षु । तस्य मध्य इति तस्य वेदिकावस्थितकूटा[6]गाराभ्यन्तरपुट[स्य] मध्ये । वज्रमिति कृष्णपञ्चशूकवज्रम् । वज्रज्वालेति वज्राकाररश्मिः ॥ ११ ॥

पूर्वशूल[7] इति । अभ्यन्तरपुट एव पूर्वेण । चक्रमिति शुक्लाष्टारचक्रम् । रश्मीति वज्राकाररश्मिरेव । रत्नमिति [8]लम्बाङ्गं पीतवर्णम् ॥ १२ ॥

पद्मरागसमप्रभमिति लोहितरश्मिम् । खड्गं श्याममिति शेषः । विश्वज्वालेति पञ्चरश्मिः ॥ १३ ॥

---

१. सर्वविघ्न–ख. घ. । २. शकम्–ख. घ. च. । ३. प्रवेशेन–भो., प्रणेतारम्–टी. । ४. भोट-मातृकायां उत्तरेण॰ पूर्वशूले॰ दक्षिणेन॰ पश्चिमेन॰ इत्ययं क्रमः । ५. रागद्युति–क. ख. घ. ङ. । ६. कूटांगारा–क. ख. । ७. शूला–ख. । ८. पुटपञ्च–क. ख. ग., नवभागं–भो. ।

पूर्वकोणे लिखेच्चक्रं दक्षिणे कुलिशं लिखेत् ।
पश्चिमे पद्मपुष्पं तु सकन्दं विकचाननम् ॥
उत्तरेणोत्पलं पीतं पञ्चरश्मिसमप्रभम् ॥१४॥

मुद्गरं पूर्वतो द्वारे दण्डं दक्षिण[1]तस्तथा ।
पङ्कजं पश्चिमे द्वारे उत्तरे खड्गवज्रिणम् ॥१५॥

निष्पन्नं मण्डलं ज्ञात्वा पूजां कुर्याद् विशेषतः ।
पञ्चकामगुणैर्बुद्धान् पूजये[2]दभि(वि)शङ्कितः ॥१६॥

इति [3]सर्वतथागतकायवाक्चित्तकृष्णयमारि[4]तन्त्रे
[5]महामण्डलपटलो द्वितीयः ॥

एवमभ्यन्तरपुटे[6] पञ्चतथागतचिह्नान्यालिख्य तत्रैव कोणचतुष्टये चिह्नाख्यानायाह—**पूर्वकोण** इत्यादि। पूर्वकोण इत्याग्नेये, **दक्षिण** इति नैर्ऋत्याम्, **पश्चिम** इति वायव्ये, **उत्तरेणे**ति ऐशान्याम् ॥ १४ ॥

बाह्यपुटचतुर्द्वारे चिह्नलिखनायाह—**मुद्गरमि**त्यादि। तत्र मुद्गरं कृष्णं त्रिशूकवज्राङ्कितम्, **दण्डं** शुक्लं कृष्णत्रिशूकवज्राङ्कितम्, **पद्मं** लोहितपद्मम्, **खड्गवज्रिणं** खड्गं श्यामम्। अनुक्तमपि बहिःपुटकोणचतुष्टये कपालचतुष्टयं बोद्धव्यम्। "सर्वलक्षणसंपूर्णम्" (२।१०) इत्युक्तम्, अन्यथा हीनताप्रसङ्गः। चिह्नासनानि तु देवतासम(न)क्रमेण बोद्धव्यानि। **निष्पन्नमि**ति। [7]एतज्ज्ञानमण्डल[8]प्रवेशद्वारेणा[9]परकर्तव्यानपेक्षम्। **बुद्धानि**ति चिह्नद्वारेणावस्थितान्। **अविशङ्कित** इति। [10]सत्यग्राह्यग्राहकाभिनिवेशविरहात् ॥ १५-१६ ॥

सर्वतथागतेत्यादि पूर्ववत्। **महामण्डलेति**। महच्च तन्मण्डलं चेति महामण्डलम्, तत्प्रतिपादको ग्रन्थसमूहः पटलः।

[11]इति द्वितीयपटलव्याख्या ॥

---

१. क्षिणयोः-च. । २. दक्षि-क, ङ. । ३. 'सर्व .... चित्त' नास्ति-ग. च. । ४. महातन्त्रे-ग. च., रक्षातन्त्रे-ख. । ५. 'महा' नास्ति-ग. च., महामण्डलक्रमभेदपटलो-भो० । ६. पुटपञ्च-क. ख. ग., नवभागं-भो. । ७. ज्ञानमण्डलेषु चेषद्-क. ग. । ८. ण्डले-ख. घ । ९. वारणा-क. ग. । १०. सव्य-क. । ११. इति श्रीकृष्णयमारितन्त्रे ग्रन्थसमूहः पटलो द्वितीयः-ख. ।

तृतीयः पटलः

अथ भगवन्तः[1] सर्वतथागता[2] अनेन[3] स्तोत्रराजेनाध्येषयामासुः[4] ॥१॥

मण्डलं लिख्यतां नाथ सर्वपापविनाशनम्[5] ।
यमघ्न[6] मण्डलं घोरं सर्वमण्डलनायकम् ॥२॥

अथ खलु भगवान् महावज्रधरोऽमृतास्वादनसमयं स्वकायवाक्चित्तवज्रेभ्यो निश्चारयामास—ॐ आः हूँ ॥३॥

---

[7]मण्डललिखनाय स्तुतिं कृत्वाऽध्येषणा कर्तव्येति तामाह—**अथ भगवन्त** इत्यादि । अधिपतिमिति वज्रसत्त्वम् । **अनेन स्तोत्रराजेनेति** मण्डलमित्यादि वक्ष्यमाणगाथया । **अध्येषयामासुरि**त्यभ्यर्चितवन्तः ॥ १ ॥

सर्वपापेति । कृतकारितानुमोदितप्राणातिपातादिकम् । **घोरमिति** पूर्ववत्[8] । **सर्वमण्डलनायकमिति** । [9]इहावाच्यवज्रडाकिन्यादिमण्डलेभ्यः प्रधानम् ॥ २ ॥

रजोमण्डले भावनामण्डले वा निष्पन्नदेवताचक्रदेवताभोजनायाह—**अथ खल्वित्यादि**[10] । अधस्ताद् यंकारपरिणतं कोटिद्वये चलत्पताकाद्वयाङ्कितं धन्वाकारं वायुमण्डलम् । तस्योपरि रंकारनिष्पन्नाग्नौ आःकारपरिणतकपालमध्ये गोकुदहनरूपेण [11]भक्ष्यादिकं दृष्ट्वा वायूद्दीपिताग्नितापितकपाले द्रवतां गतम् ॐकाराधिष्ठितं तद्बिन्दुनिर्गतरश्मिना सकलतथागत[12]हृदयानीतज्ञानामृतेन मिश्रीकृतं पञ्चामृतम्, तस्यास्वाद उपभोगः, तस्य समयसंकेतं तदधिष्ठान[13]मन्त्रं **निश्चारयामास** प्रकाशितवान् । कोऽसावधिष्ठानमन्त्र इत्याह—**ॐ इत्यादि** [14]अक्षरत्रयाधिष्ठितमित्यर्थः ॥ ३ ॥

---

१. वन्तं-ख. ग. घ. । २. गतं-ग. । ३. 'अनेन' नास्ति-भो. । ४. मास-ग. । ५. नाशकम्-क. ख. घ. ङ. च. । ६. मघ्नं-ख. घ. । ७. इतः पूर्वं 'ततो मण्डलपटलं व्याख्यास्यामः' इत्यधिकः पाठः-ख. । ८. पूर्वात्-क. ग. । ९. इह-ख. घ. । १०. अतः परं 'अमृत इति तु' इत्यधिकः पाठ -भो. । ११. भक्तादि-घ. । १२. गतानां-ख. घ. । १३. धिष्ठित-घ. । १४. 'अक्षराधिष्ठित' इति सर्वत्र, गृहीतपाठस्तु भोटानुसारी ।

जिह्वावज्रप्रयोगेन(ण) तोषणं सर्ववज्रिणाम् ।
प्रवेश्य सर्वसंबुद्धान्[1] ज्ञानाकारान्[2] स्वरूपतः ॥४॥

[3]कर्षणं [4]वेशनं चैव बन्धनं च वशं तथा ।
मुद्गरादिचतुर्मन्त्रैः[5] समाधिस्थं विभावयेत् ॥५॥

महिषवज्रं विभावित्वा मण्डलेशं विभावयेत् ।
[6]स्वच्छमण्डलमध्यस्थं [7]मोहवज्रं विभावयेत् ॥६॥

जिह्वावज्रप्रयोगेणेति। हूँकारेण एकशूकवज्राकारां जिह्वां कृत्वा तन्निर्गतरश्मिनलिकया । किमस्य प्रयोजनमित्याह—**तोषणं** तुष्टिः, **सर्ववज्रिणामिति** मण्डलेश्वरमाण्डलेयानाम्[8] । कदैतदमृतास्वादनं कारयितव्यमित्याह—**प्रवेश्येत्यादि** । **सर्वसंबुद्धानिति** । समयमण्डल[9]सदृशानाकाशदेशस्थान्[10] हृद्बीजविनिर्गतरश्मिनाऽऽनीतान् । **ज्ञानाकारस्वरूपत** इति स्वप्नमायास्वभावेन ॥ ४ ॥

कर्षणमित्यानीतदेवताचक्रस्यार्घादिकं दत्त्वाऽतिसन्निहितीकरणम् । **वेशनं** समयमण्डलज्ञानमण्डलयोरेकीकरणम् । **बन्धनमिति** प्रविष्टस्य गमननिषेधः । **वशमिति** सिद्धस्य बन्धनम् । **तोषणं**[11] दुःखत्यागेन सुखित्वम् । **मुद्गरादि चतुर्मन्त्रैरिति** । ॐ मुद्गर जः, ॐ दण्ड हूँ, ॐ पद्म वँ, ॐ खड्ग होः– इत्येभिर्यथाक्रमम्. जः हूँ वँ होः इत्यनेन वा ॥ ५ ॥

कुत्रारूढः को यमारिर्भावयितव्य इत्याह—**महिषवज्रमित्यादि** । महिषो महामहिषः, तस्योपरि [12]**वज्रं** वज्रमार्तण्डमण्डलम्, **विभावित्वा**, आसन[13]त्वेनेति शेषः । [14]**मण्डलेसं(शं)** प्रधानयमारिम् । **स्वच्छ**[15]**मण्डलेति** चन्द्रमण्डलम् । **मोहवज्रं** मोहयमारिम् ॥ ६ ॥

---

१. बुद्धा–ग. । २. कारा–ग. । ३. र्षणा–क. ख. । ४. वेषणं–घ. । ५. मंन्त्री–ग. । ६. चन्द्रमण्डल–भो. । ७. भावयेन्मोहवज्रिणम्–ग. । ८. नां च– क. ख. । ९. मण्डलं दृश्य-क., सदृश्य-घ. । १०. स्थानं–क. । ११. भाषणं–क. ख. । १२. वज्रं हो-भो. । १३. अंगेनत्वे–क. । १४. मण्डले संप्रदान-क. । १५. शूलेति-क., चन्द्रमण्डलेति गुह्यमण्डलम्–भो. ।

सप्तसप्तिकमध्यस्थं पिशुनाख्यं विचिन्तयेत्[1] ।
[2]रक्तमण्डलमध्यस्थं भावयेद् रागवज्रिणम् ।
कर्ममण्डलमध्यस्थं भावयेत् कर्मवज्रिणम् ॥७॥

शान्तिके मोहवज्रं तु पौष्टिके पिशुनं तथा ।
[3]वश्ये वै रागवज्रेण कर्मवज्रेण सर्वतः ॥८॥

नृतैलं नृकपालस्थं नृकेशैर्वर्तिका तथा ।
श्मशाने[4] कज्जलं पात्य (त्यं) कर्मवज्रप्रयोगतः ॥९॥

अञ्जने भावयेत् कर्म अञ्जनायां[5] तथैव च ।
अनेनाञ्जनसिद्धिः स्यात् कर्मजापप्रयोगतः ॥१०॥

सप्तसप्तयोऽश्वा यस्यासौ सप्तसप्तिक[:] सूर्यः । [6]रक्तमण्डलेति सूर्यः कर्ममण्डलेति सूर्य । कर्मवज्रिणमीर्ष्यायमारिम् । रजोमण्डलपक्षे तु विश्वदलकमलस्योपरि यथायोगं सूर्यचन्द्रस्थं स्व-स्वचिह्नमात्रं लेख्यम् ॥ ७ ॥

भावितात्मना जप्तविद्येन यद्देवतायोगेन यत्कर्म कर्तव्यं तदुक्तं [7]शान्तिक इत्यादि । कर्मवज्रेणेति ईर्ष्यायमारियोगेन । सर्वत इति सर्वं यद्या[8]वन्न वाच्यमित्यर्थः ॥ ८ ॥

नृतैलमिति मारितनरमांसास्थिस्नेहः । नृकेशैरिति मारितनरकेशैरर्कतूल[9]-सहितैः, श्मशाने कृष्णचतुर्दश्यामष्टम्यां चेति शेष । पात्यमिति, नरकपाल इति शेषः । कर्मवज्रप्रयोगत इति ईर्ष्यायमारिरूपमाधाय ॥ ९ ॥

अञ्जन इति निष्पन्नकज्जले । भावयेत् कर्मेति ईर्ष्यायमारिरूपं तद् द्रष्टव्यम् । अञ्जनायामिति तत्कज्जल[10]म्रक्षिततर्जन्याम् । अञ्जनसिद्धिरिति त्रिधा—यदि ज्वलितकज्जलेनाञ्जनं करोति, तदा त्रैलोक्यचारी न कैश्चिदपि दृश्यते, धूमायित-कज्जलाञ्जने भूचरसिद्धिः, उ(ऊ)ष्मायितकज्जलाञ्जने सर्वजनप्रियः । कथं कृत्वा ज्वलनादि भवतीत्याह—कर्मजापप्रयोगतः । अयमर्थः—ईर्ष्यायमारियोगेन दक्षिणहस्तेनावष्टभ्य कज्जलं तावज्जप्तव्यं यावन्न ज्वलति, धूमायते, ऊष्मायते वा ॥ १० ॥

---

१. विभावयेत्—घ. । २. सद् मण्ड—भो. । ३. वश्यं—क. घ. च. । ४. शानकज्ज—क. ग. च. । ५. नाया—क. । ६. चन्द्रम—क. । ७. शौण्डिक—क. । ८. यदद्य वाच्यमित्यर्थ.—भो. । ९. मूल—ख. । १०. मुक्षित घ. ।

कुङ्कुमं गृह्य रक्तेन पादलेपं तु साधयेत् ।
कर्मवज्रप्रयोगेन(ण) पादलेपेन सिद्ध्यति ॥११॥

पञ्चामृतं समादाय पञ्चमांससमन्वितम् ।
त्रिलोहवेष्टितं[1] कृत्वा कर्मयोगेन सिद्ध्यति ॥१२॥

कान्तलोहमयं खड्गं कर्मयोगेन साधयेत् ।
कर्मवज्रप्रयोगेन(ण) कर्मखड्गं(ड्गः)प्रसिद्ध्यति ॥१३॥

[2]इति [3]सर्वतथागतकायवाक्चित्तकृष्णयमारि[4]तन्त्रे
कर्मयोग[5]पटलस्तृतीयः

कुङ्कुममिति स्त्रीकुसुमम् । **रक्तेनेति** मारितनरमांसेन । एतच्चोपदेशात् । **कर्मवज्रप्रयोगेने(णे)ति** ईर्ष्यायमारियोगमाधाय । एतद्द्वयं समभागमेकीकृत्य कपालेऽवस्थाप्य हस्तेनावष्टभ्य श्मशानभावे जप्तव्यम्, यावत् त्रिधा सिद्धिर्न भवति पूर्ववत् ॥ ११ ॥

पञ्चामृतमिति [6]मूविरशु[7]मासंज्ञम् । **पञ्चमांसं** गोकुदहनम् । एतद्दशकं समभागं गुडिकाया अवकाशे [8]पूरणमात्रं ग्राह्यम् । **त्रिलोहवेष्टितमिति** सुवर्णरूप्यताम्रपत्रै[9]र्यथाक्रमं गुटिकी[10]कृतम् । तत्रैषां यथाक्रमं त्रिचतुरवेदप्रमाणा माषकाः सप्तत्रयपञ्चरतिकाभ्यधिका गुडिका वदरास्थिप्रमाणाः । **कर्मयोगेनेत्यादि** सर्वं पूर्ववत् ॥१२॥

कान्तलोहमयं खड्गमिति षण्मुखकान्तबीजाकृष्टलोहघटितखड्गम् । **कर्मयोगेनेति** हस्तेन गृहीत्वा ईर्ष्यायमारियोगं कृत्वा तावज्जप्तव्यं यावत् त्रिधा सिद्धिर्न भवति पूर्ववत् । **कर्मखड्ग इति** । ईर्ष्यायमारेरिव खड्गः । यथोक्तशान्तिकादिपरिहारेणान्यत्रत्त(रेण तत्तत्)कर्माभिचारादिकं प्रधानयमारियोगेन साध्यपरिशेष्यात् [11]स्फुटमेवेति भगवता नोक्तमिति बोद्धव्यम् ॥ १३ ॥

कर्मयोगपटल इति । कर्म नानाकर्मा[न]न्तरोक्तम्, योगस्तत्सिद्ध्युपायः, तद्द्योतको ग्रन्थसमूहः पटलः[12] ।

[13]इति तृतीयपटलव्याख्या ॥

---

१ व्यवस्थितं–ग., ससतं–ङ. । २. 'इति' नास्ति–घ. ङ. । ३. 'सर्व······ ···· चित्त' नास्ति–ग. च. । ४. महातन्त्रे –ग. । ५. कर्मयोगक्रमभेदः–भो. । ६. सु–घ. । ७. गु–क. ख. ग. । ८. घूरण–घ. । ९. यन्त्रै –ख. ग. । १०. टिका–घ. । ११. स्फोट–क. । १२. अतः परं 'कर्मयोगपटलः' इत्यधिकः पाठः–ग. घ. । १३. इति श्रीकृष्णयमारितन्त्रे बाह्यग्रन्थसमूहः पटलस्तृतीयः–ख., इति कर्मयोगक्रमभेदस्तृतीयः–भो. ।

चतुर्थः पटलः

अथ भगवन्तः[1] सर्वतथागता[2] भगवन्तं[3] महावज्रधरमनेन[4] स्तोत्रराजेनाध्येषितवन्तः ॥१॥

कथं सत्त्वाः प्रवर्तन्ते कर्मभेद[5]प्रभेदतः ।
कथयस्व महावज्र शृण्वन्तु ज्ञानसागराः ॥२॥

अथ वज्रधरो राजा सर्व[6]कर्मप्रसाधकः ।
सर्वदोषचिकित्सात्मा इदं वचनमब्रवीत् ॥३॥

---

[7]उक्तं शान्तिकादिकर्म । यन्त्र[8]लिखनपरिपाटीं वक्तुं "अथ खलु" (४।४) इत्यादि । [9]अनेनेति "मोहवज्रस्वभावस्त्वम्" (२।२) इत्यादिना पूर्वोक्तेन स्तोत्रराजेन, स्तुत्वेति शेषः । अध्येषितवन्तः पूर्ववत्[10] ॥ १ ॥

कर्मभेदप्रभेदत[11] इति । कर्मभेद[:] शान्तिकादि, प्रभेदत इति शान्तिकादौ यः प्रकृष्टो भेदो विशेषः, ततो देवतामूर्तिसाध्यभावनादिसाधितः । **महावज्रेति** वज्रसत्त्वः । **ज्ञानेन सागरा** बोधिसत्त्वाः ॥ २ ॥

[12]**सर्वदोषचिकित्सात्मेति** सर्वथा सर्वदोषात् सर्वपरित्राता । न चात्र क्रूरकर्मणा व्यभिचारः, तत्तत्प्रकारेण [13]परस्य निरयगमनाभ्युद्धरणात्, व्याधिते वैद्यस्य [14]दाहादिकर्मवत् । **इदं वचनमिति** "यमार्यन्तानि" (४।५) इत्यादिकं **वक्ष्यमाणम्** ॥ ३ ॥

---

१. वन्तं–ग. । २. गतं–ग. । ३. नास्ति ग. । ४. 'अनेन' नास्ति–भो. । ५. भद्रप्रभे–घ. । ६. सर्वधर्म–घ. । ७. इतः पूर्वं 'तथा शान्तिकादिकथां व्याख्यास्यामि' इत्यधिकः पाठः—ख. । ८. यन्त्रकर्मक्रमं–भो. । ९. नास्ति–ख. भो. । १०. पृष्टवन्तः–ग. घ. । ११. 'प्रभेद' इति नास्ति–ख. । १२. 'सर्व' नास्ति–ख. । १३. परेभ्यः निरयगामिना क. । १४. चाहादि–क., माराद्वादि कर्म–ख. घ. ।

अथ खलु भगवन्तः सर्वतथा[1]गताश्चित्तवज्रप्रभावितां पूजां कृत्वा प्रणिपत्य भगवन्तं त्रि[2][:]प्रदक्षिणीकृत्य भूयो भूयः प्रणम्य भगवतो वचनं शृणुयामासुः[3] ॥४॥

अथ वज्रधरो राजा वश्ययन्त्रं [4]प्रभाषत ।
यमार्यन्तानि [5]यन्त्राणि न भूतो न भविष्यति ॥५॥

स्त्रीणां वश्याय कर्तव्यं रक्षार्थाय तथैव च ।
शान्तिके[6] रोचनां गृह्य भूर्जे [7]वंशत्वचे तथा ॥६॥

चक्रद्वयमभिलिख्य [8]नमो नाम विदर्भयेत्[9] ।
काल[10]मूलादिरहिते शरावद्वयसंपुटे ॥७॥

घृतमधुमध्ये प्रक्षिप्य शुक्लसूत्रेण वेष्टयेत् ।
त्रिसन्ध्यं शुक्लपुष्पैस्तु अर्चयेत् पूर्वतोमुखः[11] ॥८॥

---

[12]सततमादरतो गुरुवचनग्रहणार्थमाह—अथ खल्वित्यादि ॥ ४ ॥

वश्यार्थं यन्त्रं वश्ययन्त्रम्। किमुक्त्वेत्याह—यमार्यन्तानीति। इदं च यन्त्रविषया[13]दरोत्पादनार्थम् ॥ ५ ॥

रक्षार्थायेति शान्त्यर्थम्। वश्यशान्त्यभिप्राये[14] शान्तिके रोचनां[15] गृह्येत्यभिधा[16]नेनोभयत्रापि रोचनयैव च लिखनम्। कुत्र पत्रं(यन्त्रं) लिखितव्यमित्याह—भूर्जं इत्यादि। वंशत्वच इति। [17]वंशपर्वाभ्यन्तरावकाश[18]स्थितयन्त्र(पत्र)सदृशि त्वचि। चक्रलिखनं च षष्ठे पटले वक्तव्यम्- 'कृत्वा मण्डलिकास्तिस्र.'' (६।९) इत्यादि ॥६॥

नमो नाम विदर्भयेदिति। नमःशब्देन नामविदर्भणं शान्तिके। अस्योपलक्षणत्वाद् यदा यत्कर्म क्रियते, तदा [19]तदुक्तमन्त्राक्षरेण विदर्भणम्। लिखितचक्रावस्थापन[20]-

---

१. गतकायवाक्चित्तवज्र–घ. । २. 'त्रि' नास्ति–क. । ३ मास–क. । ४. प्रभावयेत्–क., प्रकाशयेत्–ङ. । ५ मन्त्राणि–क., चक्राणि–भो. । ६. न्तिकं–घ. । ७. च वल्कले–ङ. च. । ८. नमो नमो–भो. । ९. दर्भितम्–ग. च. । १०. शूलादि–क च., शूलाविनमिते–ग. । ११. मुखान्–ग च. । १२. स तत्र सादरतो–क., कर्मक्रमानुसारं–भो. । १३. दरेत्यादिनार्थः–क., दरेत्यर्थनार्थम्–ख. । १४. भिधाय–घ. । १५. गृहे–क. । १६. धाने उभ–क. ख. । १७. बाह्य–क. ख. ग. । १८. काशे–क. । १९. उक्त–क, । २०. फलमाह–क. ।

यमान्तकं चन्द्रकान्ता[1]भं ध्यात्वा[2]त्मानं पुरो[3] न्यसेत् ।
चन्द्रमण्डल[4]मारूढं साध्यं दृष्ट्वाऽभिषिञ्च[5]येत् ॥९॥
[6]सितकलशैस्तु चन्द्राभैः पञ्चामृता[7]भिपूरितैः ।
[8]सिच्यतेऽनेकसम्बुद्धैस्तद्(स्तं) दृष्ट्वा जपमारभेत् ॥१०॥

ॐ[9] ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन [10]हूं हूं फट् फट् स्वाहा । ॐ नमो देवदत्ताय[11] शान्तिं कुरु नमः स्वाहा [इति] शान्तिक[स्य] समयमुदानयामास ॥११॥

पुंसां तु[12] शान्तिके[13]लेख्यं[14] कुङ्कुमैः पौष्टिके[15] तथा ।
चक्रद्वयं तु काश्मीरैः स्वाहानामविदर्भंन(ण)म्[16] ॥१२॥

माह–कालेति कृष्णता । मूलेति मध्यभागे । बाह्ये अभ्यन्तरे चोन्नतत्वम् । आदिशब्देन भग्नचक्रादि । यमारिमात्मानं ध्यात्वेति सम्बन्धः ॥ ७-८ ॥

किं भूतं ? चन्द्रकान्ताभम् । मोहयमारिं पुरो न्यसेत् । साध्यमिति परेण सम्बन्धः । चन्द्रमण्डलमारूढमिति यन्त्रमेव चन्द्रमण्डलीकृत्य तन्मध्यगं साध्यमिति, यस्य शान्तिः कर्तव्या ॥ ९ ॥

संबुद्धैरिति हृद्बीजविस्फारितानेकमोहयमारिभिः । तमिति साध्यं दृष्ट्वा[17] तम् एवंविधं भावयन्, मन्त्राख्यानायाह— ॐ ह्रीरित्यादि । सर्वत्रैव मन्त्रः ॐकारादिहूंकारपर्यन्त[ा] नवाक्षरः[18] । ततः परं विदर्भेण मन्त्रद्वयान्तर्गतं साध्यलिखितं शान्तिकसमयं शान्तिकमन्त्रम्, उदानयामास उक्तवान् । वज्रधर इति पूर्वेणैव सम्बन्धः ॥ १०-११ ॥

पुंसां शान्तौ कया मस्या लेख्यमित्याह–पुंसां त्वित्यादि । देवतादिकं तु स्त्रीशान्तिकविधानवदेव । पौष्टिके तथेति । पुंसां पौष्टिकविषयेऽपि कुङ्कुमेन । स्त्रीणां

---

१. मान्त्यानं–ङ । २. ध्याया–ख. घ. । ३. पुरं–च. । ४. समारू–ङ । ५. षित्वयेत्–ग च. । ६. इति–ग, शीतकरणे–च. । ७. मृतविपू–ख. घ. ङ । ८. सिञ्चेदनेक–ग. । ९. ॐ नमः–भो. । १०. हूं फट् स्वा–ग. च., 'स्वाहा ॐ नमो' नास्ति–ङ. भो. । ११. तायाः–क. ख. । १२. पुरुषाणां–क. ख. ग. घ. ङ च. गृहीतपाठस्तु भोटानुसारी । १३ न्तिक–ङ. च. । १४. लिख्यं–क. ख. ग. घ. च. । १५. ऽथवा–क. ख. घ. ङ. । १६. दर्भितम्–क. ग. च. । १७. दृष्ट्यन्तं–क., दृष्ट्वेतं–ख. । १८. पर्यन्ते नवाक्षरे–ख. ।

साध्यस्य नाम [1]चादाय आज्यक्षौद्रेषु निःक्षिपेत् ।
शरावसम्पुटे स्थाप्य पीतसूत्रेण वेष्टयेत् ॥१३॥
त्रिसन्ध्यं पीतपुष्पैस्तु[2] अर्चयेदुत्तरामुखः ।
पीतवर्णं यमघ्नं वै आत्मानमवलम्बयेत् ॥१४॥
साध्यं [3]सुपीतचन्द्रस्थं पीतकुम्भैस्तु सिञ्चयेत् ।
अभिषेकं भावयित्वा[4] पुष्टिं कर्तुं (पुष्टिकं तु) स्फुरन्[5] जपेत् ॥१५॥

ॐ ह्रीः[6] ष्ट्रीः विकृतानन[7] हूं हूं फट् फट्[8] स्वाहा [9]ॐ लं देवदत्तस्य [10]पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा, वौषट्[11] वा। ॐ ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन[12] हूं हूं फट् फट् [13]स्वाहा ॐ वौषट् [वा] देवदत्तस्य [14]पुष्टिं कुरु वौषट् हुं फट्[15] स्वाहा, इत्याह भगवान् पौष्टिकसमयः ॥१६॥

पौष्टिके केन लेख्यमित्याह—चक्रद्वयं त्वित्यादि। स्त्रीविषयेऽपि पौष्टिके कुङ्कुमैरेवेत्यर्थः। स्वाहानामेति स्वाहाशब्दः। तेन विदर्भणम् आदावन्ते च स्वाहाशब्दो देयः ॥ १२ ॥

कस्य विदर्भणमित्याह—साध्यस्येति। किं कृत्वेत्यादि? नाम चादायेति। साध्यस्य नाम विदर्भणीयमित्यर्थः। निक्षिपेत्, लिखितयन्त्रमिति शेषः ॥ १३ ॥

पीतवर्णं यमघ्नमिति पिशुनयमारिम्। सुपीतचन्द्रस्थमिति। यन्त्रमेव[16] पीतचन्द्रं विभाव्य तत्रस्थं भावयेत्। पीतकुम्भैरिति हृद्बीजनिर्गतानेकपिशुनयमारिकरधृतैः ॥ १४-१५ ॥

वौषड् वेति। वौषट्शब्देन वा नामविदर्भणम्। पौष्टिकसमयं पौष्टिकविधानम् ॥ १६ ॥

---

१. मादाय—क. ख. घ. ङ.। २. ष्पैश्च—ग.। ३. 'सु' नास्ति—क ख. घ. ङ. च.। ४. त्वा तु—घ.। ५. स्फुलं—ख. ग. घ.। ६. ह्रीं: ष्ट्रीं:—ग. घ. च.। ७. नने—ख.। ८. 'फट्' नास्ति—ख. ग.। ९. 'ॐ लं''''स्वाहा' नास्ति—क. ख. ग. घ. ङ.। १०. पुष्टिं कुरु स्वाहा—भो.। ११. नास्ति—ग. च.। १२. नने—ख.। १३. नास्ति—क. ख. घ. ङ. भो.। १४. पौष्टि—ग.। १५. 'हुं फट् स्वाहा' नास्ति—क. ख. घ. ङ, 'हुं फट्' नास्ति—भो.। १६. मेवं—क. ख.।

[1]भूर्जे वा कर्पटे वापि अलक्तकरसेन वा ।
रक्तचन्दनकेनापि अनामिकारुधिरेण तु ॥१७॥
चक्रद्वयं समालिख्य ह्रोकारेण विदर्भयेत् ।
कालादिरहिते यन्त्रे शरावद्वयसम्पुटे ॥१८॥
आज्यमाक्षिकसम्पूर्णं(र्णे) रक्तसूत्रेण वेष्टयेत् ।
अर्चयेद् रक्तपुष्पेण पश्चिमाभिमुखः स्थितः ॥१९॥
रक्तवर्णं महाज्वाला(ल)मात्मानं यमघाट(त)कम् ।
रक्तचन्द्रसमारूढं साध्यं चैव विचिन्तयेत् ॥२०॥
स्वकायनिर्गतैर्भाभी[2] रक्तै [3]रक्तसमाकृतेः ।
साध्यमाकर्षयन् दृष्ट्वा अयुतमात्रफलं जपेत् ॥२१॥
तं साध्यं विह्वला(लं) नूनं [4]पङ्गुं [च] पतितं तथा ।
विवस्त्रं मुक्तकेशं च चिन्तयन् जपमाचरेत् ॥२२॥

वश्यविधानायाह—भूर्जे वेत्यादि । कर्पटे रजस्वलाकर्पटे । अनामिकारुधिरेणेति । यो वशं कर्तुं कारयितुं वा समुद्यतस्तस्य वामकरानामिकारुधिरेण। एतच्चावश्यं प्रक्षेप्तव्यम्, अलक्तकादौ पृथग्भूते(तं) लिखिते(तं) वा ॥ १७ ॥

[5]ह्रोकारेणेत्युपलक्षणम्, वषट्शब्देनापि विदर्भणं दर्शयिष्यति, [6]कालादिरहित इत्यादि पूर्ववत् (४।७-८) ॥ १८-१९ ॥

रक्तवर्णं लोहितम्[7] । आत्मानं यमघातकमिति आत्मानं रागयमारिं कृत्वा। रक्तचन्द्रसमारूढमिति । यन्त्रमेव रक्तचन्द्रं भावयित्वा तद्गतम् ॥ २० ॥

स्वकायनिर्गतैर्भाभिरिति देवतारूपस्वकायावस्थितबीजान्निःसृतै रश्मिभिः । अयुतमात्रं दशसहस्रम् । अत्रास्योपलक्षणत्वात् सर्वत्रैव कर्मणि दशसहस्रो मन्त्रजापः ॥ २१-२२ ॥

---

१. 'भूर्जे वा' इति १७ श्लोकतः 'महावश्यसमयः' इति २४ वाक्यं यावत् पाठो नास्ति—क. ख. ग. घ. च., टीकाकृता तु गृहीतोऽयं पाठः । २. तैर्मयूखै—ङ. । ३. रश्मिसमा—भो. । ४. पङ्गु—भो. । ५. ह्राङ्का—क. ख. ग. । ६. कारादि—क. । ७. लोहितात्मकं—भो. ।

वश्या(श्यं) यदि नागच्छति तं यन्त्रं तापयेद् व्रती ।
घृतादिरहितं कृत्वा निर्धूमखदिरानले ॥२३॥

ॐ ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन हुं हुं फट् फट् ह्रोः देवदत्तस्य [1]यज्ञदत्तं वशीकुरु ह्रोः । ॐ ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन हूं हूं फट् फट् स्वाहा[2] वौषट् देवदत्तस्य [3]यज्ञदत्तं वशमानय वौषट् । इत्याह भगवान् महावश्यसमयः ॥२४॥

श्मशान[4]चेलके वापि[5] स्वयम्भूलिप्त[6]कर्पटे ।
[7]चक्रद्वयं समालिख्य[8] [9]लाक्षया रक्तमिश्रया ॥२५॥

[10]जःकारे[ण] [11]ह्लीःकारेण नाम चैव विदर्भयेत्[12] ।
[13]योषित[:] पद्मभाण्डे वा[14] सम्पुटे स्थाप्य पूजयेत् ॥२६॥

कृतेऽप्ययुतमात्रे मन्त्रजापे कार्यासिद्धौ क्रियाविशेषाख्यानाह—**वश्यं यदीत्यादि** । **यन्त्रं तापयेत्**[15] । मन्त्रं पूर्ववत् जपेत् । घृतादिरहितमिति घृतमधुपूरितशरावसंपुटादुद्धृत्य ॥ २३-२४ ॥

आकृष्ट्याख्यानायाह—**श्मशानेत्यादि** । **चेलके** वस्त्रे । वापीतिशब्दो वार्थे वक्तव्यकर्मणोऽपेक्षया[16] पक्षान्तरार्थः । ततः **स्वयंभूकुसुमकर्पटे श्मशानचेलके** वेत्यर्थः । **लाक्षारक्तार्द्रमिश्रयेति** । लाक्षा(क्ष)या वामहस्तानामारुधिरमिश्रया ॥ २५ ॥

जःकारेण [17]**ह्लीःकारेणेति** । आदावन्ते जःह्लीरित्यक्षरद्वयं द्वयं देयम् । **योषित[:] पद्मभाण्ड** इति स्त्रीकपाले । **संपुट** इति तद्द्वये अधरोत्तरस्थिते ॥ २६ ॥

---

१. ३. 'यज्ञदत्तं' नास्ति–भो. । २. नास्ति–ङ. । ४. कर्पटे–ङ., चेतले–ग. । ५. वाथ–घ. । ६. लिप्ते–ग., लिप्तचेलके–ङ. । ७. चन्द्रद्व–क. ख. ग. च. । ८. लेख्य–ङ. । ९. लाक्षारक्तकमि–क. ख. घ. । १०. जंकार–क. ख. घ. च., जकार–ग. । ११. ह्लीका–क. ख. च. । १२. दर्भितम्–ग. च. । १३. योषितां–ख. घ. । १४. तु–ङ. । १५. तापयन्–घ. । इतः परम्–'तदस्फुरणे तु' इत्यधिकः पाठः–भो. । १६. णोपेयापेक्षा–ख. । १७. ह्लीः–क. ।

रक्तसूत्रेण चावृत्य रक्तपुष्पेन(ण) [1]पूजयेत् ।
[2]सन्ध्यार्कसन्निभं रक्तमात्मानं यमघातकम्[3] ॥२७॥

रक्तवर्णाङ्कुशाकृष्टं साध्यं चैव विभावयेत् ।
हृदये अङ्कुशैर्विद्धं गले पाशेन बन्धितम्[4] ॥२८॥

रक्तसिंहस[5]मारूढं वातमण्डलियोगतः ।
सिञ्चितं पञ्चद्रव्येण आगच्छन्तं विचिन्तयेत् ॥२९॥

यदा नागच्छति[6] [7]साध्यस्तद्यन्त्रं तापयेद् व्रती ।
खदिरकाष्ठानले दीप्ते [8]जापं तत्र समारभेत् ॥३०॥

ॐ ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन हूं हूं फट् फट् स्वाहा [9]ॐ ह्रीः अमुकीमाकर्षय ह्रीं ह्रीं फट् फट् स्वाहा ह्रीः, इत्याह भगवानाकर्षणसमयः ॥३१॥

रक्तमिति रागयमारिम् । रक्तवर्णाङ्कुशाकृष्टमिति स्वहृद्बीजरक्तरश्मिना अङ्कुशाकारेणानीतम् । पाशेन बन्धितमिति दक्षिणकरस्थितचिह्नलोहितपद्मनालपाशेन बद्धम् ॥ २७-२८ ॥

वातमण्डलियोगत[10] इति । रक्तवर्णयङ्कारपरिणतधनुराकारवायुमण्डलरक्तसिंहस्याऽधस्ताद् द्रष्टव्यं [11]बाह्यमण्डलम् । पञ्चद्रव्येणेति मूविरशु[12]मेन, वश्यप्रभेदत्वादाकृष्टैः(ष्टेः) अनुक्तमपि सर्वं पूर्वोक्तं बोद्धव्यम् ॥ २९ ॥

अभिमतासिद्धौ कर्मविशेषार्थमाह—यदा नागच्छतीत्यादि । यन्त्रं तापयेदिति, कपालसंपुटादुद्धृत्य । जपमन्त्रं समारभेदिति । तापयन् मन्त्रं पूर्ववज्जपेत् ॥ ३०-३१ ॥

---

१. पूजितम्—ङ. । २. साध्यार्क—ङ. । ३. घाटकं—ङ. । ४. इतः परम्—'नग्नं च रक्तवर्णं च' इत्यधिकः पाठः—भो. । ५. सिंहमारु-च. भो. । ६. च्छते—क. । ७. साध्यं—क. ख. घ. च., तत्तन्मन्त्रे-घ. । ८. जापमन्त्रसमा—ग. । ९. ह्रीः अमुकीमाकर्षय ह्रीः—क. ख., ॐ ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन हूं हूं फट् फट् जः देवदत्तमाकर्षय जः—घ. ङ. भो. । १०. योग इति—ख. ग. घ. । ११. नास्ति—घ. भो. । १२. मेल—ख. ।

श्मशानचेलके धीमान् हरिद्रारसकेन तु ।
चक्रद्वयं समालिख्य लंकारेण विदर्भयेत् ।। ३२।।

साध्यस्य नाम [1]चादाय शरावसम्पुटान्तरे ।
पीतस(श)रावोपरि स्थाप्य [2]रेखां तत्र लिखेद् बुधः ।।३३।।

सप्त चत्वारि रेखा[3] वा समालिख्य समाहितः ।
अष्टश्रृङ्गसुमेरुं वा तस्योपरि समालिखेत् ।। ३४।।

[4]हूंकारं च वंकारं च तेन मेरुं विदर्भयेत्[5] ।
तस्योपरि लंकारेण माहेन्द्रमण्डलं [6]लिखेत् ।।३५।।

विश्ववज्रेण चाक्रान्तं पीतसूत्रेण वेष्टयेत् ।
पीतवर्णं[7] यमघ्नं तु [8]आत्मानं च[9] विचिन्तयेत् ।।३६।।

स्तम्भनाख्यानायाह—हरिद्रारसकेनेति । हरिद्रा प्रसिद्धा, रसको हरितालः, ताभ्यां समालिख्य शरावसंपुटान्तरे संस्थाप्य पीतशरावोपरि लेख्यं लिखेदिति सम्बन्धः ।। ३२-३३ ।।

तस्योपरि समालिखेदिति रेखाचतुष्टयस्य रेखासप्तकस्य वा उपरि भावयेत्, रेखया समुद्रात्मिकया वेष्टितं मेरुं भावयेदित्यर्थः ।। ३४ ।।

तेन मेरुं विदर्भयेदिति । मेरोरादौ हूंकारो द्रष्टव्यः । भावकशरीरापेक्षया वामभागे । परभागे तु वंकारः । भावकशरीरापेक्षया दक्षिणभागे । तस्योपरीति मेरोरधस्तात् । माहेन्द्रमण्डलमिति । पृथ्वीमण्डल(लं) चतुरस्रं पीतवर्णं कोणेषु त्रिशूकवज्राङ्कम् ।। ३५ ।।

विश्ववज्रेण चाक्रान्तमिति । आक्रान्तविश्ववज्रम्, भूमेरधस्ताद् विश्ववज्रमित्यर्थः ।। ३६ ।।

---

१. मादाय–क. ख. घ. ङ. । २. रेखा–क. ग. च. । ३. लेखा–च. । ४. हूंकारं.... .... विदर्भयेत्' नास्ति–क. ग. च । ५. दर्भितम्–ङ । ६. न्यसेत्–क. ख. घ. ङ. च. । ७. वर्णयम–क. । ८. 'आत्मानं''' मुखो योगी' नास्ति–भो. । ९. तु–क. ग. च. ।

दक्षिणाभिमुखो योगी माहेन्द्रमण्डलाश्रितः ।
पीतं साध्यं विचिन्त्याशु आक्रान्तं पर्वते[1](तैः) न्यसेत् ॥३७॥

विश्ववज्रसमाक्रान्तं माहेन्द्रमण्डलादधः[2] ।
[3]मन्दरादिनगैर्घोरैः [4]प्रालेयाचलसन्निभैः ।
आक्रान्तं भावयेत् साध्यं [5]जपं तत्रैव कारयेत् ॥३८॥

ॐ [6]ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन [7]हूं हूं फट् फट् लं देवदत्तस्य[8] स्थानं[9] स्तम्भय[10] लं, इत्याह भगवान् महास्तम्भनसमयः ॥३९॥

वाक्स्तम्भनकामेन[11] चक्रं लिख्य[12] द्वयं तथा ।
विदर्भ्यं साध्यनामानि ततो मन्त्रं स्फुलं[13](टं) जपेत् ॥४०॥

माहेन्द्रमण्डला[14]श्रित इति । स्वयमपि माहेन्द्रमण्डलारूढेन भाव्यम् । विचिन्त्य, विश्ववज्रस्याधस्तादिति शेष । पर्वतैरिति सुमेरुणैव । अष्टशृङ्गत्वात् सुमेरोर्बहुभिरिवाक्रान्तत्वाद् बहुवचनम् ॥ ३७ ॥

कुत्र न्यसेदित्याह—विश्ववज्रसमाक्रान्तं माहेन्द्रमण्डलादधः । अयमर्थः—यन्त्रं पीतचन्द्रः, तदुपरि वी(पी)तः साध्यः, तदुपरि विश्ववज्रम्, तदुपरि पृथ्वी, तदुपरि सुमेरुर्भावनीयः । नगैः पर्वतैः । प्रालेयो हिमम्, तत्संभवैरपि पर्वतैः । आक्रान्तमिति पार्श्वेषु, ऊर्ध्वं सुमेरुणैवाक्रान्तत्वात् ॥ ३८-३९ ॥

[15]वाक्स्तम्भनायाह—वाक्स्तम्भनेत्यादि । तथेति यथापूर्वम् । ततो देवता-[16]मूर्तिरपि सैव । अयं तु विशेषः—साध्यस्य जिह्वायां पीतविश्ववज्रोपरि माहेन्द्र-

---

१. र्वतं–ग. च. । २. लाधरः–ग. च. । ३. मन्दारा-क., मण्डलादि–ग. च. । ४. प्रलयानल–क. ग. च. । ५. वश्यं–क. ख. ग. च., यन्त्रं–घ. । ६. ह्रीः स्त्रीः–घ. । ७. हूं फट् ॐ लं–ग. च., हूं हूं फट्–घ. । ८. दत्तस्वरूपस्य–घ. । ९. स्थाने–ङ. भो. । १०. म्भय हूं फट् –ग. च., य कुरु लं–भो. । ११. कार्येण–ख. घ. । १२. लेख्य–क., ख्यं–ख. घ. ङ. । १३. स्फुरं–ग. च., स्फरं–ङ., भो. । १४. मण्डलस्थितः–क. । १५. अथ वाक्–ख. । १६. मूर्ते क. ख. ग. ।

ॐ [1]ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन हूं हूं फट् फट् लं देवदत्तस्य यथाप्रारब्ध[2]कार्यंकृते तन्निवारयतो विरूपकं [3]वदतो यज्ञदत्तस्य वाक्स्तम्भनं कुरु लं हुं फट्[4], इत्याह भगवान् महावाक्स्तम्भनसमयः ॥४१॥

अत्यन्तं तत्[5] सुगुप्तेन इदं कार्यं यथोदितम् ।
दिनमेकेन सिद्धिः स्यात् कृष्णयमारियोगतः ॥४२॥

[6]श्मशानकर्पटे चक्रद्वयं चैव[7] लिखेद् व्रती ।
राजिकालवणेनापि विषेण निम्बकेन च ॥४३॥

त्रिकटुकं कटुतैलं च श्मशानाङ्गारमेव च ।
[8]धुत्तूरपत्रनिर्यासैश्चण्डबीजैस्तथैव च ॥४४॥

[9]तर्जनीरक्तमादाय चित्रकस्य रसेन वा ।
[10]ऊषरमृत्तिकां गृह्य चण्डालहण्डिकाञ्जनम् ॥४५॥

मण्डलम्, तस्योपरि पीतयमारिर्ध्यातव्यः ॥ ४०-४१ ॥

यथोदितमिति शान्त्यादिकम् । कृष्णयमारियोगत इति । कृष्णयमारितन्त्रोक्तप्रयोगेण ॥४२ ॥

बुद्धधर्म[11]संघा[12]पकारिनरनरकगमनपरित्राणार्थं मारण[13]नामधारिमहोपकाराख्यानायाह—श्मशानकर्पट इत्यादि । व्रती यमारियोगी । श्मस्याख्यानायाह—राजिकेत्यादि । निर्यासैः रसैः । चण्डबीजैरिति धुत्तूरबीजैः ॥ ४३-४४ ॥

तर्जनी स्वतर्जनी । चित्रकस्य रसेन वेति । वाशब्दः समुच्चये ॥ ४५ ॥

---

१. 'ॐ ह्रीः ''''फट्' नास्ति—क. ख. ग. घ. च. । २. कराकृते—क. ख. घ. च., कार्यंकृतेनातिवीर्यया—भो. । ३. देवदत्तो—भो. । ४. 'हुं फट्' नास्ति—क. ख. घ. ङ. भो. । ५. 'तत्' नास्ति—क. ख. घ. ङ । ६. इतः पूर्वं 'पूर्ववत्' इत्यधिकम्—भो. । ७. नास्ति—क. ख. घ. ङ. । ८. धर्तूर—क. घ. । ९. 'तर्जनी'''' '''' रसेन वा' नास्ति—भो. । १०. ऊषरस्य—क. ख. घ. ङ. । ११. संघात—ख. । १२. 'संघा' इतः परं 'बुद्धं शरणं गच्छामि धर्मं शरणं गच्छामि संघं शरणं गच्छामि' इत्यधिकः पाठः—ख. । १३. मारणाम—घ. ।

बुभुक्षितपक्ष[1]लेखिन्या चतुर्दश्यां लिखेद् व्रती ।
मध्याह्ने क्रूरचित्तेन दुष्टानां बद्धहेतुना ॥४६॥

नाम सत्त्व[2]विघातस्य हुँकारेण विदर्भयेत् ।
दक्षिणाभिमुखो योगी आत्मानं यमघातकम् ॥४७॥

क्रोधरूपं महाचण्डं [3]खण्डमुण्डविभूषितम् ।
महिषस्थं ललज्जिह्वं बृहदुदरं भयानकम् ॥४८॥

कडारोर्ध्वज्वल[4]त्केशं बभ्रुश्मश्रुभ्रुवं तथा ।
दक्षिणेन महावज्रं खड्गं चैव द्वितीयके[5] ॥४९॥

तृतीये कर्तिकाहस्तं[6] इदानीं [7]वामतो लिखेत् ।
चक्रं चैव महापद्मं कपालं[8] चैव वामतः ॥५०॥

मूलमुखं[9] महाभृङ्गं[10] दक्षिणं[11] चन्द्रसुप्रभम् ।
[12]वामं रक्तनिभं प्रोक्तं वज्राभरणभूषितम् ॥५१॥

बुभुक्षितपक्षलेखिन्येति वृद्धकाकपक्षलेखिन्या । नाम सत्त्वविघात[13]स्येति मार्यस्य सत्त्वस्य नाम । देवताकारार्थमाह-आत्मानमित्यादि ॥ ४६-४८ ॥

बभ्रुश्मश्रुभ्रुवं तथेति । श्मश्रुभ्रुवोरपि केशः कपिलः । लिखेदिति भावयेत् । चक्रमिति शुक्लचक्रम् । महापद्मं[14] रक्तम् । कपालं शुक्लम् । चन्द्रसुप्रभं शुक्लम् । वज्राभरणभूषितमिति तथागतात्मकपञ्चमुद्राधरम् ॥ ४९-५१ ॥

---

१. पत्र-क. ग. च. । २. सर्व-ङ. । ३. अस्थिमु भो., प्रविभू-क. । ४. रोर्ध्वजूटके-क. ख. घ., युतके-च. । ५. यकं-क. । ६. हस्तं च-ख. घ. ङ. । ७. वामदक्षिणतो-ङ. । ८. पालं वामकं मतः-ग. च. । ९. मुखे-क. घ. । १०. महाभृङ्गं-क. ग. च., महाकालं-भो. । ११. क्षिणे-ङ. । १२. वामे-ग. । १३. विघात्यस्य-ग. घ । १४. महापद्म-ख. ।

[1]रोमकूपमहाविवरात्[2] स्फारयेत् स्वकुलाधिपम् ।
प्रत्यालीढपदे[3] संस्थं सूर्यमण्डल [4]ऊर्ध्वतः ॥५२॥

विकृतदंष्ट्राकरालास्यं कल्पज्वालाग्निसन्निभम् ।
एवमात्मानं सन्नह्य[5] साध्यं वै पुरतो न्यसेत् ॥५३॥

मलिनं जर्जरं रोगैर्दुष्टगात्रैश्च पातितम् ।
विवस्त्रं वेपमानं[6] तु खिन्नं [7]कायव्रणान्वितम् ॥५४॥

[8]गण्डमालावृता[9]सञ्च(ङ्गं च) शस्त्रेण जर्जरीकृतम् ।
उपद्रुतं शीतवातेन वह्निमध्यसमाश्रितम्[10] ॥५५॥

महिषेण च व्याघ्रेण कुक्कुरैर्दीर्घतुण्डकैः ।
खाद्यमानं महादुष्टं बुद्धसैन्येन[11] त्रासितम् ॥५६॥

रोमकूपमहाविवरादिति स्वहृदि स्थितचिह्नस्थबीजनिर्गतरश्मिना सर्वरोमकूपैः । **स्वकुलाधिप**मिति स्वमूर्त्तिधरयमारिसमूहम् । अस्योपलक्षणत्वाद् [12]अपरेष्वपि यमारिष्वेवं बोद्धव्यम् । **प्रत्यालीढे**ति । वाम[13]प्रसारितदक्षिणाङ्गं चेति । **सूर्यमण्डल ऊर्ध्वत** इति महिषपृष्ठस्योपरि स्थितार्कमण्डलस्योपरिष्टात् ॥ ५२॥

कल्पज्वालाग्नीति प्रलयकालाग्निज्वाला[14] । **संनह्ये**ति सम्यग् विभाव्य । **मलिनं** कृष्णम् । **जर्जरं** श्लथम् । कैरित्याह—**रोगैः** । **दुष्टगात्रै**रिति हीनविकृताङ्गैः । **वेपमानं** कम्पमानम् । [15]**कासरुतान्वितं** कासन्तम् ॥ ५३-५४ ॥

शस्त्रेणेति कुन्तशरादिना । **जर्जरीकृत**मिति सर्वशरीरे बहुविद्धम् । **दीर्घतुण्डैः**

---

१. 'रोमकूपमहा' नास्ति–ङ । २. स्फोर–घ., स्फर–ङ । ३. पदसं–क. ख. घ. । ४ ण्डलमूर्ध्व–क ख. ग. घ. । ५. संत्यज्य–ग. च. । ६. वेशमानं–ङ. । ७. खिन्नकायं–ग, काय–ङ. च, व्रतान्वि–ङ, कामार्तध्वनिपूरितम्–भो. । ८ गडमाला–घ. । ९ वृतां स च ग. च., लाञ्छिताङ्गं च–ङ । १०. श्रित–क. ख. ग. घ. च. । ११ सैन्यविनाशनम्–क ख. ग. घ. ङ च., गृहीतः पाठस्तु भोटानुसारी । १२ स्वात्मनो यमान्तकत्वं बोद्धव्यम्–भो. । १३. वामे–क. ख. । १४. ज्वालां–ख. । १५. काम–क. ख. ।

अन्तकोद[1]रमध्यस्थं [2]कण्टकैर्गात्रपूरितम् ।
[3]हडिनिगडपदाक्रान्तं खण्डखण्डकृतं तथा ॥५७॥
निराश्रमी(यी)कृतं ध्यायाद् राजिकालवणलेपितम् ।
[4]शीत्कारमुच्चरन् ध्यायात् तस्य देहस्य[5] रक्षणे[6] ॥५८॥
कवचं [7]स्फोटयेत्तस्य भावयेत् शून्यदेह[8]वत् ।
आत्मदेहोद्भवैः क्रोधैर्यममायात्मिमूर्तिभिः ॥५९॥
घात्यन्तं भावयेत् तत्र पिबन्तं मेदमज्जकम् ।
तस्याग्रे तु यमं [9]ध्यायाद् दण्डहस्तं महाबलम् ॥६०॥
घातितं तेन दुष्टेन [10]दुष्टं तत्र विचिन्तयेत्[11] ।
तस्यान्त्रनालमादाय[12] गृध्रा गच्छन्ति खेतलम्[13] ॥६१॥

काकैः । **कण्टकैः गात्रपूरितमिति** कण्टकपूरितगात्रम् । **हडिनिगडपदाक्रान्तमिति** हडिनिगडैर्बद्धम् ॥ ५५–५७ ॥

तस्य देहस्य रक्षाविमिति कायवाक्चित्तचक्षुरादिं च कृत्वेति । स्वहृद्बीज-रश्मिना आकृष्य । **आत्मपर**[14] इति स्वदेवतामूर्त्तौ । **न्यसेदिति** यथास्थाने प्रवेशयेत् । सर्वप्रथमत एव कर्तव्यं साध्यभावनाकाले, [15]तत्पश्चाद् मलिनमित्यादि द्रष्टव्यम् ॥ ५८ ॥

कवचं चेति । यां देवतां भावयेत्, साप्यनुवृत्त्याकृष्य स्वाभाब्जे निक्षिप्य वज्रेणाऽवष्टब्धा द्रष्टव्या । **शून्यदेहवदिति** मृतवत् ॥ ५९ ॥

घात्यन्तं मार्यमाणम् । **पिबन्तमिति** पिबद्भिः, तैरेव क्रोधैः । **मेदमज्जकमिति,** साध्यस्येति शेषः ॥ ६०-६१ ॥

---

१ को दक्षिणस्थं-भो. । २. कण्डुकै-क. घ. । ३. हिडि-घ., काष्ठ-भो. । ४. हुंकार-भो. । ५ देहादि-भो. । ६. रक्षादि-ङ. भो. टी. । ७. फोट-क । ८. न्यते हरेत्-ङ. । ९. ध्यात्वा-घ. । १० पादोऽयं नास्ति-भो. । ११. विभावयेत्-ख. घ. ङ. । १२. मागृह्य-क. ग. च. । १३. खेज्ञकम्-क. ग. । १४. परमिति-घ. । १५. 'तत्' नास्ति-ख ग. घ. ।

पाताले कृष्यते नागैरश्मर्यादिनिपीडितम्[1] ।
एवं विचिन्त्य साध्यं वा करुणाविष्ट[2]चेतसा ॥६२॥
[3]व्यपरोपयति संसाराद् बुद्धक्षेत्रेषु जायते ।
अथ खलु भगवन्तः[4] सर्वतथागताः प्रहृष्टमनस इदं वाक्यमुदाहरन्तः ॥६३॥

अहो हि मारणं[5]नाम मारणं न च मारणम् ।
पापेभ्यो मुच्यते यस्माद्[6] मारितो नैव[7] मारितः ॥६४॥
[8]कृत्वा पापसहस्राणि [9]अवीच्यादिषु संवसेत् ।
अहो बुद्धस्य माहात्म्यं मारितो[10] बोधिमाप्नुयात् ॥६५॥
भूयसी(सीं) करुणा(णां) कृत्वा सत्त्वघातिं तु घातयेत् ।
अहो कृपाबलं दिव्यं [11]कृपाहीनो न सिद्धयति ॥६६॥

अश्मर्यादि[नि]पीडितमिति । अश्मरी मूत्रनिरोधो रोगः । मेदमेवंविधं स्वक्लेशमात्रेण कर्तव्यमिति निषेधार्थमाह—**करुणाविष्टेन चेतसा** । तस्यैव नरकादिगमनं विमृश्य ॥ ६२ ॥

ननु दुःखाद् दुःखहेतोर्वा समुद्धरणकामना करुणा, इदं तु सर्वमेव तस्यापकार[क]मित्याह—**व्यपरोपयतीत्यादि** । तद्गतदुःखान्मोचयति । कै [कः] परोऽतः परमोपकारो भविष्यतीत्यर्थः । **इदं वाक्य**[12]**मिति** । इदं वचनमुदाहरन्त इति उक्तवन्तः । कतमत्[13] तद्वचनमित्याह—**अहो हीत्यादि** ॥ ६३-६५ ॥

---

१. रसुर्यादि–भो. । २. द्यष्ट–क., पृष्ट–ग. च. । ३. व्यतिरोपयति–क. ग., नास्ति–ङ. । ४. वन्तं–ख. घ. ङ., वान्–ग. । ५. मारणे नास्य–ख., मारणरास्यं–घ., मारणं गुह्यं–भो. । ६. यावत्–ख. घ. ङ. । ७. न च–ग. च. । ८. ये कृत्वा–क. ख. घ. । ९. अविद्या–ग. । १०. रिता–घ. । ११. कृत्वाहं नाल–ङ. । १२. बाह्यस्थं–भो., बाह्यार्थं–घ. । १३. कथमेतत्–क. ख. ग. ।

ॐ [1]ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन हूं हूं फट् फट् देवदत्तं मारय मारय हुं हुं फट् फट्[2]। इत्याह भगवान् महाविकल्पो [घात]वज्र[3]यन्त्रमन्त्रतन्त्रमारणादिसमयः ॥६७॥

[4]इति [5]सर्वतथागतकायवाक्चित्तकृष्णयमारि[6]यन्त्रमन्त्रतन्त्रमारणादिसमयश्चतुर्थः पटलः ॥

सत्त्वघातिमिति। गुरुबुद्धाद्यपकारकम्[7]। महाविकल्पेति। महांश्चासौ विकल्पश्च दुःख[8]दुर्गत्यादिरूपः, तस्य यन्मारणं स्फोटनम्, तदर्थं वज्र इव वज्रः, महाविकल्पमारणवज्रः। कतमोऽसौ भगवानेवम्? इत्याह—यन्त्रेत्यादि। अयमर्थः—यन्त्रादिषु समयोऽवश्यंभाव्यधिष्ठानविशेषो यस्यासौ [9]यन्त्रादिसमयो भगवान् वज्रसत्त्व इत्यर्थः ॥ ६६-६७ ॥

[10]इति चतुर्थपटलव्याख्या ॥

---

१ ह्रीं: ष्ट्रीं:-ग. च., स्त्रीं:-घ.। २. अतः परमयमेव मन्त्रः पुनर्लिखितः, तत्र-विकृतानन देवदत्तं मारय हुं फट्-ङपाठः, मारय फट्-भो.। ३. नास्ति-क. ग.। ४. नास्ति-ख. घ.। ५. 'सर्व ...... चित्त' नास्ति-ग. च.। ६ महातन्त्रे कायवाक्चित्तस्तम्भनपटलश्चतुर्थः-ग. च., इति सर्वतथागतकायवाक्चित्तकृष्णयमारितन्त्रे विकल्पघातवज्रयन्त्रचक्रमन्त्रौषधादिविधिक्रमश्चतुर्थपटलः-भो. दे.। ७ वारकाः-ग. घ.। ८. दुर्ग्रहेत्यादि-क. ख. ग.। ९. यन्त्रादिषु-क.। १०. इति श्रीकृष्णयमारितन्त्रे योगमाहात्म्ये वाक्स्तम्भनपटलश्चतुर्थः-ख.।

पञ्चमः पटलः

[1]तथा चक्रद्वयं [2]लिख्य फट्कारेण विदर्भयेत् ।
साध्यस्य नाममादाय कपालं(ल)सम्पुटे[3] न्यसेत् ॥१॥
नीलसूत्रेण [4]वेष्टयित्वा [5]मध्याह्नवेलायां श्मशानेषु निखानयेत् ॥२॥
[6]श्रीयमारिं समालम्ब्य साध्यं वै पुरतो न्यसेत् ।
अश्वमहिष[7]मारूढो(ढौ) द्वौ[8] साध्यौ शस्त्रपाणिनौ ॥३॥
निमित्तैः[9] क्रोधसंघातै[10]र्द्वयपक्षं विचिन्तयेत् ।
[11]उभौ तु युध्यमानौ तु क्रोधाविष्टेन[12] चेतसा ॥
भावितव्यौ बलौ क्रुद्धौ भावयन् जपमारभेत् ॥४॥
ॐ ह्रीः [13]ष्ट्रीः विकृतानन हूँ हूँ फट् फट् देवदत्तं[14] यज्ञदत्तेन सह विद्वेषय [15]हुं फट् स्वाहा[16] । इत्याह भगवान् महाविद्वेषसमयः ॥५॥

अन्योन्य[17]विद्वेषार्थमाह—**तथेत्यादि**। तथेति [18]ममी(सी)देवतादिकं पूर्ववदेव। **कपालसम्पुट** इति हण्डिकादिखोलकद्वये[19]। मारणचक्रावस्थापने [20]चेदं बोद्धव्यम् ॥१-२॥

यमान्तकमिति मारणोक्तम् । **अश्वमहिषसमारूढाविति** । एकोऽश्वारूढः, अपरो महिषारूढः। [21]**निमित्तैः क्रोधसंघातैरिति**। एतदुभयोरपि क्रोधसमूहः संस्फार्य दातव्यः। **बलौ** बलवन्तौ। **क्रोधौ** संघक्रोधौ ॥ ३-५ ॥

---

१. चक्रद्वयं ख., अथ चक्र–ग. च.। २. समालिख्य- क. घ.। ३. पुटं–ग.। ४. वेष्टित्वा –ग. च.। ५. 'मध्याह्नवेलायां' नास्ति–ग. च.। ६. यममारिं क. ख. घ., 'श्री'नास्ति–ङ. भो.। ७. महिषसमारूढ–क. ख. घ. ङ., मारुह्य–ग.। ८. 'द्वौ' नास्ति–घ.। ९. निर्मितैः–भो.। १० संहातै -क. ख ग. घ. ङ. च., गृहीतः पाठस्तु भोटानुसारी, तैर्द्वयोः- ग. च.। ११. उभावुभौ–ङ.। १२. क्रोधचित्तेन–ग.। १३. ह्रीः ष्ट्रीः–ख. घ. च.। १४. देवदत्तयज्ञदत्ताभ्यां विद्वेषय–ङ.। १५. नास्ति–ग. च। १६. नास्ति- ग. च. भो.। १७. विशेषा–क. ख.। १८. समा–ग., मसा–घ.। १९. द्वयो–क. घ.। २०. वेदं–क. ख.। २१. इतः पूर्वं 'निर्माणचक्रसमूहैः' इत्यधिकः पाठः–भो.।

आलिख्य[1] द्वयचक्राख्यं विधिना तेनैव पूर्ववत्[2] ।
हुंफट्कारविदर्भेन(ण) कपालसम्पुटे न्यसेत् ॥६॥

कृष्णसूत्रेण संवेष्टय[3] पितृवने निखानयेत् ।
यमारियोगमादाय पुरतः साध्यं विभावयेत् ॥७॥

यंभवे धनुराकारे कृष्णमारुतमण्डले ।
नीलवर्णं(र्णं) महदुष्ट्रं[4] तस्योपरि विभावयेत् ॥८॥

तमारूढं महादुष्टं नीयन्तं दक्षिणां दिशम् ।
ताडयन्तं क्रोधसंघातै[5]र्बुद्धस्यापि न[6] सिद्धयति ॥९॥

ॐ [7]ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन हूं हूं फट् फट्[8] देवदत्तमुच्चाटय हूं फट् । इत्याह भगवान् [9]महोच्चाटनसमयः ॥१०॥

क्रुद्धो याम्याननो योगी स्वरक्त[10]चितिभस्मना ।
विष[11]लवणराजिकातैलेन उन्मत्तकदलवारिणा ॥११॥

उच्चाटनाख्यानायाह—**आलिख्य द्वये**त्यादि । विधिना तेनैवेति मारणविधिकथितमस्यादिना । **हूँफट्कारविदर्भे**णेति । साध्यनाम हूँफट्कारान्तं विदर्भणीयम् । **कपालसम्पुटे** हण्डिकादिखोलकद्वये । **पितृवने** श्मशाने । **यमारीति** द्वेषयमारिः ॥ ६-७ ॥

यंभव इति यँकारपरिणते । **क्रोधसंघातैः** स्फुरितैर्यमारिभिः । **न सिद्धयति,** प्रत्यानयनमिति शेषः ॥ ८-१० ॥

विधिना तेनैवेत्युक्तेऽपि कदाचिच्छिष्यस्य भ्रमो भवेदिति तान् देवतामूर्तिमसोकर्पटानाह—**क्रुद्ध** इति । **याम्याननो** दक्षिणाभिमुखः । **स्वरक्ते**ति स्ववामहस्ततर्जनीरक्तम् । [12]**भस्मने**त्यगारः(ङ्गारेण) । **उन्मत्तकदलवारिणेति** धुत्तूरकपत्ररसेन ॥ ११ ॥

---

१. लेख्य–क. ग. च , लिखेत्-घ । २. पूर्वतः–क. । ३. संवेष्टं–च. । ४. कुष्टं–ङ., महादुष्टं–क. ख. ग. घ., गृहीतः पाठस्तु भोटानुसारी । ५. संघातं–च. । ६. च–क. ख. ग. घ. । ७. ह्रीं: ष्ट्रीं:–घ. च. । ८. 'हूं फट्' इत्यधिकः पाठः–ख. भो. । ९. 'महा' नास्ति–भो. । १०. अजरक्त-भो. । ११. 'लवण' नास्ति–ग. च. । १२. भस्मेने–ख. ग. ।

श्मशानचेलके [1]चक्रद्वयमेतल्लिखेत् क्रमात् ।
मारणे यमदेहस्थं विद्वेषे महिषाश्वयोः ॥१२॥
प्रेरणे चोष्ट्रदेहस्थं शान्तिके चन्द्रसंस्थितम् ।
पौष्टिके पीत[2]चन्द्रस्थं योषितां हृदि वश्यके ॥१३॥
छागलस्थं प्रशस्तं वै स्तम्भनं मेरुमध्यतः ।
[3]कृष्टं शरभ[4]सिंहस्थमेवमन्येषु लक्षयेत् ॥१४॥
रोचनालक्तकं चैव काश्मीरं च विशेषतः ।
भूर्जपत्रे लिखेद् वश्यं सिद्ध्यते नात्र संशयः ॥१५॥

चक्राणां विशेषाधारलिख[ना]याह—**मारण** इति। मारणविधिकथितमस्यादिना। चक्रद्वयेऽपि यमो लेख्यः। तद् **देहस्थं** तदुदरस्थचक्रम्। **महिषाश्वयो**रिति। एकं चक्रं महिषपृष्ठे, अपरमश्वपृष्ठे ॥ १२ ॥

प्रेरण इत्युच्चाटने । **उष्ट्रदेह[स्थ]मिति**। लीनो[5]ष्ट्रपृष्ठे चक्रद्वयमपि। **चन्द्रमण्डल** इति। चक्रं संवेश्य चन्द्रमण्डलं दातव्यम्। **योषितां हृदी**ति भगे ॥ १३ ॥

छागलस्थं चेति मेषारूढम्। **मेरुमध्यत** इति समन्तात् पर्वतमाला(ल)या[6] वेष्टितम्। स(श)रभसिंहोऽष्टपदसिंहः। **अन्येष्विति** उन्मत्तीकरणादौ वानरमदनमत्तपुरुषादिषु लिखनीयम्। द्विबद्धः[7] सुबद्धो भवतीति ॥ १४ ॥

पुनरनुक्तमस्याद्याख्यानायाह—**रोचनेति**। गोरोचना। स्त्रीशान्तिके स्त्रीनिमित्तम्। स्त्रीपुरुषवशीकर्तु च। अलक्तं वश्यस्त्रीपुंसयोरपि परं पुरुषनिमित्तम्। **काश्मीर चेति** पुंसां शान्तिके, स्त्रीपुंसयोः पौष्टिके च। **लिखेद् वश्य**मित्युपलक्षणम्, शान्तिकपुष्ट्योरपि ॥ १५ ॥

शुभचेतसा, यत्कार्यमिति शेषः। अयमर्थः—शान्तिकपौष्टिकवश्येषु शरावसम्पुटे स्थापनीयम्। क्रूरकर्माभिप्रायेण—**काकपक्षेत्यादि**। काको वृद्धकाकः। **लेखन्या,**

---

१. द्वयमेव–क. ख. घ. च., मेवं क्रमाल्लिखेत्–ङ. । २. चन्द्रपीत–ग. च. । ३. कृष्टां–ङ. । ४. शरम्भ–क. । ५. नानोष्ट्र–घ., नीलोष्ट्र–भो. । ६. मालायां–ख. । ७. विबद्धः–ख. घ. ।

[1]शरावसम्पुटे स्थाप्य संग्रा[2]ह्य शुभचेतसा।
ध्वाङ्क्षपक्षस्य लेखन्या मध्याह्ने अवरो[3]पयेत् ॥१६॥

चितौ सम्पुटपद्मेषु यमार्यात्म[4]प्रयोगतः।
ॐ ह्रीः ष्ट्रीः इत्यादिमावर्त्य निग्राह्यो दक्षिणे स्थितः[5] ॥१७॥

शान्तावन्त्यय[6]कारस्य [7]लोपो निर्दयस्य च।
पश्चान्मध्ये यकारस्य शेषा वर्णा यथासुखम्[8] ॥१८॥

पूर्वसेवायुतं जप्त्वा इदं कर्मप्रसाधनम्[9]।
कर्तव्यं ज्ञानवज्रेण [10]यममारिप्रयोगतः ॥१९॥

मारणविद्वेषणोच्चाटनादिषु लिखितव्यमिति शेषः। मध्ये अवरोपणम् [11]**मध्याह्ने** श्मशानेऽ**वरोपयेत्**। **चिता**[12]**विति** चितिमध्ये लिखनीयम्। **सम्पुटपद्मे**ष्विति सम्पुटेषु पद्मेषु च। ततो मारणोच्चाटनविद्वेषणविषये हण्डिकादिखोलकसम्पुटेषु, आकृष्टौ पद्मेषु स्त्रीकपालेषु। **यमार्यात्मप्रयोगत** इति। तत् तद्यथोक्तयमारिमूर्तितः। **आवर्त्येति** जप्त्वा। **दक्षिणस्थित** इति क्रूरकर्माभिप्रायेण दक्षिणमुखेन। अस्योपलक्ष(ण)त्वाद् अन्योन्यकर्मापेक्षयाऽन्योन्यदिङ्मुखो बोद्धव्यः॥ १६-१७ ॥

निष्पन्नकार्ये चक्रावस्थापन[13]स्यानुपयोगात् प्रोञ्छना[14]वक्रमार्थमाह—**शान्ता**विति कार्यनिष्पत्त्या व्यापारोपशान्तौ सत्याम्, यदा वा विद्यागतं कृत्वेदं चक्रं धारणीयम्, तदेतदक्षरचतुष्टयं प्रोञ्छ्य[15] धारणीयमित्युपदेशः। **शेषा** इति लुप्ताक्षरचतुष्टयादन्ये। **यथासुख**मिति यथेष्टं प्रोञ्च(ञ्छ)नीयाः स्थापनीया वा ॥ १८ ॥

अयुतमिति दशसहस्रम्। **ज्ञानवज्रेणेति** ग्राह्यग्राहकभावरहितचित्तेन छायामायोपमाकारेण। **यममारिप्रयोगत** इति। एवंविधयमारिरूपेण ॥ १९ ॥

---

१. ख. घ. ङ. भो. मातृकासु १५ श्लोकानन्तरं 'भूर्जे वा·······महावश्यसमयः' इत्यस्य स्थानेऽयं पाठः। टीकाकृतापि स्वीकृतोऽयमेव पाठः। २. संग–ख.घ.। ३. रोपणा–ङ.।४. यर्मार्यस्य–ङ., र्यस्य योगात्मकः–भो.। ५. स्थितैः–ङ.। ६. पकारं–घ., पकारस्य–ङ.। ७. लापानिद्वयस्य च–ख., लोपानिद्व–घ. भो.। ८. सुखाः–ख., मुखाः–घ.। ९. धकम्–ख. घ. भो.। १०. यो यमारि–ङ.। ११. पाठोऽयं भोटानुसारी। १२. चित्ता–ख., चित्तादिति–ग. घ.। १३. स्थापने यस्या–क.। १४. नानुक्रमा–घ.। १५. प्रोंच्य–क. ग. घ.।

इदं चक्रं महारौद्रं लिखितं यत्र तिष्ठति ।
गृहेऽपि कलहो नित्यं भवेदक्षरलेखनात् ॥२०॥

[[1]भूर्जे वा कर्पटे वापि अलक्तकरसेन वा ।
रक्तचन्दनकेनापि अनामारुधिरेण तु ॥

चक्रद्वयं समालिख्य[2] होःकारेण[3] विदर्भयेत् ।
कालादिरहिते यन्त्रे शरावद्वयसम्पुटे ॥

आज्यमाक्षिकसम्पूर्णे रक्तसूत्रेण वेष्टयेत् ।
अर्चयेद् रक्तपुष्पेण पश्चिमाभिमुखः स्थितः ॥

रक्तवर्णमहो[4]ज्वालमात्मानं यमघातकम् ।
रक्तचन्द्रसमारूढं साध्यं चैव विचिन्तयेत् ॥

स्वकायनिर्गते रक्ते मयूखैरङ्कुशाकृतैः[5] ।
साध्यमाकर्षयन् दृष्ट्वाऽयुतमात्रं स्फुटं जपेत् ॥

पूर्वसेवायुतं जप्त्वा इदं कर्मप्रसाधकम् ।
तं साध्यं विह्वलीभूतं पादयोः पतितं तथा ॥

विवस्त्रं मुक्तकेशं च चिन्तयन् जपमारभेत् ।
वश्यं यदि नागच्छति तन्मन्त्रं तापयेद् व्रती ॥
घृतादिरहितं कृत्वा निर्धूमखदिरानले ॥

किमित्थं [6]चतुरक्षरप्रोञ्छनं विहितमित्याह—इदं चक्रमिति । अक्षरलेखनादिति [7]सकलाक्षरस्थापनात् ॥ २० ॥

१. क. ग. च. मातृकासु 'शरावसम्पुटे''''दक्षरलेखनात्' (१६-२०) इत्यस्य स्थानेऽयं कोष्ठकस्थः पाठः। २. लेख्य-ग. । ३. होकारेण-ग. च. । ४. महाज्वाला-क. । ५. कृतम्-ग. च. । ६. रक्तप्रोञ्छनमिति सार्वत्रिकः पाठः, गृहीतस्तु पाठो भोटानुसारी, प्रोञ्चनं-ग. घ. । ७. सतमाक्ष-क. ख. ।

ॐ [1]ह्लीः ष्ट्रीः विकृतानन हूँ हूँ फट् फट् होः देवदत्तस्य यज्ञदत्तं वशीकुरु होः[2]। ॐ[3] ह्लीः ष्ट्रीः विकृतानन हूँ हूँ फट् फट् वौषट्[4] देवदत्तस्य यज्ञदत्तं वशमानय वौषट्[5]। इत्याह भगवान् महावश्यसमयः ॥]

[6]इति [7]सर्वतथागतकायवाक्चित्तरहस्य[8]कृष्णयमारितन्त्रे[9]
[10]चक्रानुपूर्वलिखनं नाम पञ्चमः[11] पटलः ॥

चक्रानुपूर्वेति। चक्राणां लिखनानुपूर्वमनुक्रमश्चक्रानुपूर्वक्रमः[12]। पृषोदरादित्वाल्लिखनशब्दस्य लोपः। लिख्यते येन रोचनादिना तल्लिखनम्[13], चक्रा[14]नुपूर्वा(वं) यल्लिखनं रोचनादिकं यत्र स तथोक्तः। अभिमतार्थपरिच्छेदको वाक्यसमूहः पटलः।

[15]इति पञ्चमपटलव्याख्या ॥

---

१. ह्लीं: ष्ट्रीं:–च.। २. हो–च.। ३. ह्लीं: ष्ट्रीं:–च.। ४-५. वषट्–क.। ६. 'इति' नास्ति–ख. घ. ङ.। ७. 'सर्व''''रहस्य' नास्ति–ग.। ८. 'रहस्य' नास्ति–ख. घ. ङ.भो.। ९. महातन्त्रे-ग.। १०. यन्त्रक्रमलिखनं–भो.। ११. पटलः पञ्चमः–ग. च.। १२. 'क्रमः' नास्ति– क. ख. ग. घ.। १३. लिखना–घ.। १४. 'चक्रा''''ल्लिखनं' नास्ति–क.ख.ग.। १५. इति श्रीकृष्णयमारितन्त्रे महायोगमाहात्म्येऽभिमतार्थपरिच्छेदे पञ्चमः पटलः–ख.।

षष्ठः पटलः

[1]अथ खलु भगवन्तः सर्वतथागता भगवन्तं सर्वतथागताधिपतिं महावज्रधरमनेन स्तोत्रराजेनाध्येषयामासुः ॥ १ ॥

[2]देश मुद्राप्रयोगं तु येन तुष्यन्ति वज्रिणः ।
मुद्रिता वज्रमुद्रेण सिद्धिं कुर्वन्ति भूयसीम् ॥२॥

अथ वज्रधरो राजा इदं वचनमब्रवीत् ।
सर्वेषां माण्डलेयानां यमघ्नं शिरसि भावयेत् ॥३॥

---

[3]व्यस्तमुद्रणभावनया "न सिद्धिर्नापि साधकः" इति[4] स्तुतिपूर्वकाध्येषणया मुद्रणप्रश्नमाह—**अथ भगवन्त** इत्यादि। **अनेनेति** पूर्वोक्तेन "मोहवज्रस्वभावस्त्वम्" (२।२-६) इत्यादिना ॥ १ ॥

देशेति देशय प्रकाशय। स्व-स्वमुद्रेणेति स्वस्वतथागतेन ॥ २ ॥

माण्डलेयानामित्यनेनैव मण्डलेश्वरपरि[5]हारेण सकलमण्डलदेवतापरिप्राप्तेः **सर्वेषा-मिति** ग्रन्थाधिक्यान्मण्डलेश्वरस्यापि ग्रहणम्। **यमघ्न**मपि(मिति) प्रथमपटलव्याख्यानेनाक्षोभ्यादिपञ्चकम्। ततो [6]द्वेष-मोह-पिशुन-राग-ईर्ष्यायमारिषु यथाक्रमम् अक्षोभ्य-वैरोचन-रत्नसंभवामिताभामोघसिद्धयः **शिरसि** भावनीयाः। चर्चिकावाराहीसरस्वतीगौरीणां शिरसि वैरोचनाक्षोभ्यामिताभामोघसिद्धयो यथाक्रमम्। [7]मुद्गर-दण्ड-पद्म-खड्ग-यमारीणां तु अक्षोभ्यवैरोचनामिताभामोघसिद्धयः ॥ ३ ॥

---

१. 'अथ खलु' इत्यारभ्य 'जिनोरसाः' इति षष्ठश्लोकपर्यन्तोंऽशो न विद्यते क. ग. च. मातृकासु, ख. घ. ङ. भो. मातृकासु तु विद्यते, टीकाकृतापि स्वीकृतः। २. सर्वमातृकासु भोटानुवादे च 'द्वेषमुद्रा' इति पाठः, गृहीतः पाठस्तु टीकानुसारी, द्वेषस्वभा—ङ.। ३. इतः पूर्वम् —'ततो व्यस्तमुद्रणभावनकथा व्याख्यास्यामः' इत्यधिकः पाठः—ख.। ४. इत्यादि—क.। ५. परिग्रहणेन—भो.। ६. द्वेषयमारिमोहयमार्यादि—ख.। ७. मुद्गरयमारिदण्डयमार्यादि—ख.।

मण्डलं वर्तयेन्नित्यं नित्यं होमेन पूज(र)येत् ।
समयान् साधयेन्नित्यं संवरं संप्रगृह्यताम् ॥४॥
प्रथमं मौलिसेकेन[1] द्वितीयं खड्ग[2]मोदनात् ।
तृतीयं वज्रघण्टां च चतुर्थं चन्द्रभक्षणम् ॥५॥
चत्वार्येते महासेकाः कृष्णस्य मुखनिर्गताः ।
[3]एतत्सेकप्रभावेन(ण) बोधिसत्त्वा जिनोरसाः ॥६॥
अथ मन्त्रं प्रवक्ष्यामि सर्वभूतबलिक्रियाम्[4] ।
[5]उच्चारिते महामन्त्रे[6] सर्वभूतप्रकम्पनम् ॥७॥

नित्यं मण्डलं देवताचक्रं **वर्तयेद्** भावयेत् । **होमेने**त्याध्यात्मिकेन । उक्तामृतास्वादविधानन्यायेन **पूरयेदि**ति देवतामूर्त्या आत्मानं तर्पयेत् । **समयानि**ति गोकुदहनादीनि । **साधयेदि**ति यथोक्तामृतास्वादविधानेन भक्षयेत् । **संवरमि**ति अवश्यकर्तव्यं तन्मण्डलं वर्तयेदित्यादिकमेव ॥ ४ ॥

प्रथमं मौलिसेकेनेति । मण्डलं प्रवेश्योदकाभिषेकानन्तरं मुकुटाभिषेकेण । **खड्ग**मिति वज्राभिषेकम् । **वज्रघण्टा चे**ति घण्टाभिषेकेण । **चतुर्थं चन्द्रभक्षण**मिति नामाभिषेकत्रिकुलसमयवज्राचार्यवज्रव्रताऽऽ[7]स्वा(श्वा)सव्याकरणा[8]नुज्ञाऽनन्तर(रं) प्रज्ञोपायाभिषेकं गृह्णीयात् ॥ ५ ॥

कृष्णस्य वज्रसत्त्वस्य, कृष्णयमारिहेतुत्वाद् वज्रसत्त्व एव कृष्ण इति कृत्वा सेकप्रयोजनाख्यानायाह—[9]**एवमात्मके**[10] **(एतत्सेके)त्यादि** । लब्धाः प्राप्ताः, **जिनोरसा बोधिसत्त्वाः** ॥ ६ ॥

बलिदानपूर्वकसर्वक्रियाकरणाद् बलिविधानायाह[11]—**अथ मन्त्र**मित्यादि । **सर्वभूते**ति । [12]सर्वभूतानीन्द्रादीनि[13] स्वदेवता[14]योगदृष्टिपातभस्मशरीराणि स्वहृद्बीज-

---

१. संकेत—घ. । २. मादरात्—घ., नोदनात्—भो. । ३. ततः सेक—ङ., सेकविशेषेण—भो. । ४. क्रिया—क. ख. ग. घ. च. । ५. इतः परं ङमातृकायां पत्रत्रयं (२५-२७) नास्ति । ६. तन्त्रे—ग. घ. । ७. व्रती स्वाध्याय—क., व्रतीन्—ग. । ८. व्याकरणज्ञानचतुर—क. । ९. एतात्म—घ. । १०. कैरित्या—क. घ. । ११. इतः परम्—'ॐ अकारो मुखं सर्वधर्माणामाद्यनुत्पन्नत्वात् ॐ आः हूँ फट् स्वाहा' इत्यधिकः पाठः—ख. । १२. सर्वभूतेत्यादीनि स्वदे—क. । १३. दीति—ख. । १४. ता यावता योग—क. ग. ।

[1]ॐ इन्द्राय ह्लीः[2], यमाय ष्ट्रीः[3], वरुणाय विः[4], कुबेराय कृः[5], ईशानाय तः[6], अग्नये आ[7], नैर्ऋतये[8] न[9], वायवे न[10], चन्द्राय हूँ, अर्काय हूँ, ब्रह्मणे फट्, वसुधाराये[11] फट्, वेमचित्रिणे[12] स्वा,[13] सर्वभूतेभ्यो हा। हा हा ही ही हूँ हूँ फें फें[14] स्वाहा ॥८॥

कृत्वा मण्डलिकां त्र्यस्रां[15] विण्मूत्रतोयमिश्रितैः।
देवता[:] प्रीणयेद् योगी हाहाकारं पुनः स्मरेत् ॥९॥

[16]अथ भगवान् सर्वतथागताधिपतिः कर्मप्रसरचक्रमुदाजहार ॥१०॥

स्फारितरश्म्यमृतसंस्पर्शनिष्पन्नात्मसमान[17]देवताकाराणि, झटितियोगात्। तेषां बलेः [18]पूजाया[:] क्रियाकारकं मन्त्रपठनम्। यथोक्तामृतस्वादक्रमेण पञ्चामृतं निष्पाद्य जिह्वां च देवतानां तद्रश्मिनलिकया तदमृतमुपभोज्य[19] तत्तदभिमतकार्यसिद्ध्यनन्तरम्। तमेव मन्त्रमाह—**ॐ इन्द्राये**[20]त्यादि, तदेव च देवतायाः। दक्षिण(णेन) धूपं चारयन्[21] घण्टामेतेषु स्थानेषु वामहस्तेन वादयेत्। तद्यथा नाभौ हृदि उरोगतवामदक्षिण-स्थाने कण्ठे मुखे दक्षिणनासावामकर्णेषु चक्षुर्द्वये शिरसि सर्वत्र वारत्रयं[22] वादनीयम्। पुनर्नाभिदेशे यथासुखम् ॥ ७-८ ॥

मदनपानकाले स्वेष्टदेवतातर्पणायाह—**कृत्वे**त्यादि। **त्र्यस्रां** त्रिकोणाम्। वाम-हस्तानामिकया वामावर्तेनेत्युपदेशः। किंभूतामित्याह—**विडि**त्यादि। विण्मूत्रादिभिः कृतामित्यर्थः। **तोयं** मद्यं बोधिचित्तं वा। विडाद्यभावे मदनमात्रेण कृतामित्युपदेशः।

---

१. 'ॐ' नास्ति, गृहीतः पाठस्तु भोटानुसारी। २. ह्लीं:–घ. च.। ३. ष्ट्रीं:–घ. च.। ४. वि–ख. ग. घ. च.। ५. कृ–ख. ग. च.। ६. त–ख. घ., नास्ति–ग. च.। ७. त–ग. च। ८. त्यै–ख. ग.। ९. आ–ग. च.। १०. अतः परम्–'ईशानाय न' इति पाठः–ग. च.। ११. रिण्यै–भो.। १२. चित्रणे–ग., त्रिणं–भो.। १३. ॐ सर्व–क. च.। १४. हूं फट् फट्–घ., ह ह हि हि हूं हूं फें फें फट् फट्–भो.। १५. अस्त्रा–क., अष्ट्रा–ग. च.। १६. 'अथ····दाजहार' नास्ति–भो.। १७. 'देशता'इति सार्वत्रिकः पाठः, गृहीतः पाठस्तु भोटानुसारी। १८. उपपूजायाः–भो.। १९. मुपभुज्युच्चारस्तदभि–क.। २०. इन्द्राय यमाय वरुणाय कुबेराय अग्नये नैर्ऋत्याय वायु-ईशान-ऊर्ध्वं ब्रह्मणेऽधः पृथिवीत्यादि–ख.। २१. चारयेत्–क. ख. ग.। २२. त्रयं त्रयं क. ख. ग.।

कृत्वा मण्डलिकास्तिस्रो अष्टौ द्वादश षोडशान् ।
संलिख्य[1] विधिना[2] प्राज्ञो न्यसेन्मन्त्राणि सर्वतः ॥११॥

न्यसेन्मन्त्राणि सिद्धानि कोष्ठके द्वादशे व्रती ।
[3]सिद्ध्यत्यशेषनिःशेषे त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥१२॥

प्रीणयेदिति । तस्यां मण्डलिकायां वामकरानामिकया समद्यया तर्पयेत् । [4]ॐ [5]विद्वेषय मारय[6] स्वाहेत्यादिना क्रमेण । **पुनरि**ति समस्तदेवताचक्रतर्पणानन्तरम् । **स्मरे**दुच्चारयेत् ॥ ९-१० ॥

चतुर्थे पञ्चमे च पटले [7]चक्रलिखनस्य संख्या[8]नमात्रं कृतम्, यथा तल्लिखनीयं तद्वक्तुमाह—**कृत्वे**त्यादि । कृत्वेति लिखित्वा गोरोचनादिना[9] । **मण्डलिकास्तिस्र** इति प्रथममण्डलिका द्वितीयमण्डलिकया वेष्टनीया, द्वितीया तृतीया(यया) । **अष्टौ द्वादश षोडशा**निति सर्वाभ्यन्तरमण्डलिकायामष्टौ कोष्ठकान्, द्वितीयमण्डलिकायां द्वादश, तृतीयमण्डलिकायां षोडश कोष्ठकान् । तत्र च मण्डलिकात्रयव्यापि किञ्चित् मध्येभ्यो[10] नान्तद्वये[11] पूर्वतः प्रभृति पश्चिमेन रेखाद्वयं नेयम्, तथैवोत्तरतः प्रभृति रेखाद्वयं तथा दक्षिणे नेयम्[12] । तेन सर्वाभ्यन्तरमण्डल्यां[13] मध्यकोष्ठकं परित्यज्य अष्टौ कोष्ठका भवन्ति । द्वितीयमण्डलिकाविदिग्भागेषु एकैका रेखा दातव्या । तेन द्वितीयायां द्वादश कोष्ठका भवन्ति । द्वितीयमण्डलिकाविदिक्स्थितरेखाशिरसः प्रभृति[14] तिर्यग्रेखाद्वयं नेयं तृतीयकुण्डलिकायाम्[15] । तेन षोडश कोष्ठका भवन्ति ॥ ११ ॥

न्यसेदिति[16] सर्वाभ्यन्तरकुण्डलिकायाम् । **मन्त्राणी**ति पञ्चतथागतबीजाक्षराणि यमध्य इत्यादिनाऽनन्तरवाच्यानि । विदिक्कोष्ठके चतुष्टयं त्यक्त्वाऽवशिष्टपञ्चकोष्ठकाः ।[17] **कोष्ठके द्वादश** इति द्वितीयमण्डलिकायाः । तत्र द्वारपालादीनां द्वादशाक्षराणि । [18]मन्त्रन्यासप्रयोजनमाह—**सिद्ध्यती**त्यादि । **अशेषनिःशेष**मिति लौकिकलोकोत्तरापेक्षया । **सचराचरं** [19]सजङ्गमस्थावरम् ॥ १२ ॥

---

१. संलिखेत्—ग० । २. चक्रं—भो० । ३. न्यसेदशेषमन्त्रं—भो., सिद्ध्यते—च. । ४. नास्ति—क. । ५. 'वि' नास्ति—ग. । ६. मारये—ग. । ७. लिखित्वा—क. । ८. सौख्यातमात्रं—ख., खडिमात्रं—ग., सोंखोंभ्यां शाखामात्रं—घ. । ९. चनादि कुङ्कुमकस्तूरिकर्पूरकेण लिखति ख. । १०. मध्यात्—ख., मध्ये—ग. । ११. पारोनाह—ख., त्यारोनान्त—ग. । १२. नयेत्—क. ख. ग. । १३. मण्डं मेल्य—क. ग. । १४. प्रभृतिभिः—ख. । १५. तीयं—क. ग. । १६. न्यस्ये—ख. ग. । १७. ष्ठको—क. ख. ग. । १८. तत्र—क. । १९. गमं—घ ।

[1]य म रा जा [2]स दो मे य [3]य मे [4]दो रु ण यो द य[5]।
य द यो नि र [6]य क्षे य [7]य क्ष य च्च नि रा म य ॥१३॥
यमध्यक्ष[8](ध्ये क्षे) न्यसेत् पूर्वं दक्षिणे मञ्जुवज्रकम् ।
मेकारं पश्चिमे लेख्य[म्] उत्तरे [9]दन्तधावनम् ॥१४॥
साध्यस्य नाम [10]चादाय शून्ये विदिशि धारयेत् ।
[11]हूंभ्यां विदर्भितं कृत्वा सर्वकार्याणि साधयेत् ॥१५॥
यच्चनिराजा[12] सदोरुण योनिर इत्यादि बाह्यतः ।
वाममारभ्य संलिख्य सर्वार्थाय प्रसाधने ॥१६॥

प्रथमद्वितीयकुण्डल्योर्लिखितबीजैः [13]श्लोकोत्थानमाह—**य म रा जा** इत्यादि ॥१३॥

केन पुनर्विन्यासेन श्लोक इत्याह—**यमध्य** इति। यंकार[14] प्रथमकुण्डल्योः सर्वाभ्यन्तरे। **क्ष**(क्षे) इति क्ष(क्षे)कारम्, **मञ्जुवज्रं** मकारम्। [15]मे इति मेकारः, **दन्तधावनं** दकारम् ॥ १४ ॥

शून्ये विदिशीति। अभ्यन्तरमण्डलिकाया एव त्यक्तुं विदिक्कोष्ठकचतुष्टये। तत्र किं केवलमेव साध्यस्य नाम [16]लिखनीयमित्याह—**हूँभ्या**मित्यादि। आदावन्ते च हूँकारं दत्वेत्यर्थः। एतच्च क्रूरकर्मापेक्षयोक्तम्। शान्त्यादौ नमस्कारादि[17] **विदर्भितं** बोद्धव्यम् ॥ १५ ॥

द्वितीयमण्डलिकाया लिखनाय—**यच्चे**त्यादि। **बाह्यत** इति प्रथमकुण्डलिकाया बहिः, द्वितीयकुण्डल्यामित्यर्थः। **वाममारभ्येति**। [18]वामं शोभनं यथा भवति। अयमर्थः—यथा श्लोकोत्थानं भवति तथा आरभ्य लिखेत्। ततः क्ष(क्षे)कारात् पूर्वतः प्रभृति दक्षिणावर्तेनेत्यर्थः ॥ १६ ॥

---

१. 'य म रा ज स दो ने य य मा य रु ण यो द य। द य यो नि र य क्षे य य क्षे श श्च नि रा म यः ॥' (ईशानशिवगुरुदेवपद्धतौ, पूर्वार्धे ४७.११, पृ. ३४५)। २. सं–घ.। ३. 'य' नास्ति–च.। ४. दा–घ., दाय–च.। ५. या-घ.। ६. क्षच्छे–च.। ७. 'य य' नास्ति-ख. ग. घ., 'य' नास्ति–च. भो.। ८. ध्ये क्षे-क., ध्येकं-घ., ध्यक्षे–च.। ९. दण्ड–क. ख. ग.। १०. मादाय–क. ख. ग. घ. च.। ११. हं–क.। १२. य च्च स मा स दा रु ण–ग. च., नि रा जो स दा रु ण–घ.। १३. श्लोके स्थान–घ.। १४. ण्डल्याः–घ.। १५. क्वचिदपि मातृकासु नास्ति, गृहीतः पाठो भोटानुसारी। १६. लेख–क. ख. ग.। १७. रादिना–क. ग., नम आदि–भो.। १८. वामे–ग.।

तृतीयकोष्ठके[1] पुरत एकान्तरितकोष्ठके[2] ।
लिखेत् पूर्वंवदा(त आ)रभ्य[3] ॐ[4] ह्लीः ष्ट्रीः इत्यादिमन्त्रकैः ॥
तदन्तरान्तरितेष्वपि अष्टकोष्ठकेषु संलिखेत् ॥१७॥

[5]मूकं कुरु, मारय[6], उच्चाटय, वशीकुरु, विद्वेषय, शान्ति कुरु, पुष्टि कुरु, [7]इत्येवमादि कर्मानुरूपतः ॥१८॥

प्रणवादि[ः] नमोन्ता(न्ते) च अन्ते [8]वषट् वौषट् ।
[9]हूंफट्कारयुता[10] बीजा[ः][11] शान्तिपुष्टिवशादिकृत्[12] ॥१९॥

तृतीयकोष्ठक इति । तृतीयकुण्डलिकायाः **पुरत** इति । द्वितीयकुण्डलिका पूर्वा-(र्व)[13]दिग्वर्तियकारात् परत इत्यर्थः । **पूर्वंत** इति पूर्वदिग्वर्तिकोष्ठकमारभ्य, दक्षिणावर्तेनेति शेषः । [14]ॐ [15]ह्लीः ष्ट्रीः विकृतानन हूँ **इत्यादिमन्त्रकैरिति** । ॐ ह्लीः ष्ट्रीः विकृतानन हूँ इत्यर्थः ॥ १७ ॥

[16]तदन(**तदन्तरा**)न्तरे(**न्तरिते**)ष्वपीति लिखितमन्त्रकोष्ठकमध्यवर्तिषु । किं लिखेदित्याह—**मूकमित्यादि** ॥१८ ॥

प्रणवादि[ः] नमोऽन्ते चेति । प्रणवादेरन्ते[17] नम इति बोद्धव्यम् । प्रणव ॐकार आदिर्यस्याऽसौ प्रणवादिः, ॐ ह्लीः ष्ट्रीः विकृतानन हूँ इत्यर्थः । अत्र[18] मन्त्रस्यान्ते[19]

---

१. तृतीयपद को—क. ख. घ. । २. एकान्तकोष्टके—ग. च. । ३. पूर्वादारभ्य-भो. । ४. ह्लीं ष्ट्रीं ग. घ. च. । ५. अमुकं—भो. । ६. नास्ति—भो. । ७. इति वामारभ्य—भो. । ८. वौषट्—ग. च., नास्ति—भो. । ९. हूं हूं—ग. च. । १०. युत—च. । ११. बीजानि—ग. च. । १२. शान्ति पुष्टि वशाकृति—ग. च., कृन्ति—घ. । १३. दिग्वर्तिभ्यो यकाराभ्यन्तरत—क. । १४. नास्ति—क. ग. घ. भो. । १५. ह्लीं ष्ट्रीः—घ. । १६. तद्मन्त्रचोत्तरेष्य—क. । १७. णवादन्तर—ख. । १८. अस्य—क. । १९. स्यार्थेऽन्ते—क. ग. ।

[1]इति [2]सर्वतथागतकायवाक्चित्तकृष्णयमारितन्त्रे[3] [4]चक्रावलोकनो नाम षष्ठ[5] पटलः ॥

नम[:]शब्दो [6]लेख्यः। **अन्त** इति साध्यस्य, पुनश्चान्ते नमः। एतच्च [7]शान्तौ। ततोऽयमर्थः—ॐ ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन हूँ नमोऽमुकस्य शान्तिं कुरु नम इति। [8]**वषडिति** वश्ये। **वौषड्** इति पुष्टौ। **हूँ इति** मारणे। **फडिति** प्रेरणे। परं हूँकारं द्विधा कृत्वा हूँ फडिति बोद्धव्यम्, उपलक्षणत्वादेषाम्[9]। अन्ये च हो[10] इत्येवमादयोऽपि यथायोगं पठितव्याः। **बीजा** इति। बीजमिव बीजा ॐ ह्रीः[11] इत्यादि मन्त्राक्षराणि[12]। **अन्त** इति। अन्तमवसानं मारणम्। [13]**हृदिति** हरणं पलायनम्। [14]शान्त्यादिकरा इत्यर्थः ॥ १९ ॥

[15]**रक्षाचक्रावलोकन** इति। रक्षा शान्तिः, उपलक्षणं चैतत्, तदर्थं चक्रं यन्त्रद्वयम्, तदवलोक्यते सम्यक् क्रमेण निश्चीयते[16] यत्रासौ तत् तथा।

इति [17]षष्ठपटलव्याख्या[18] ॥

---

१. 'इति' नास्ति–क. ख. घ.। २. 'सर्व....चित्त' नास्ति–ग. च.। ३. महातन्त्रे–ग.। ४. चक्रलेखनो नाम क्रमभेदः–भो.। ५. षष्ठपटलः–क., पटलः षष्ठमः–ग. च.। ६. कर्तव्यः–क.। ७. शान्त्यै–क. ख.। ८. वशेदिति–क. ख.। ९. त्वादेव–ख.। १०. हों–क. ग.। ११. ह्रीं:–घ.। १२. मन्त्राक्षरेण–क.। १३. हृदीति–क. ख. ग., ह्रीः इति आकर्षणम्–भो.। १४. शान्त्युच्चाटनादि–भो.। १५. तदाकारो लिख्यते–भो.। १६. यतेऽसौ–क.। १७. षष्ठम–क.। १८. इति श्रीकृष्णयमारितन्त्रे योगमाहात्म्यसम्यक्क्रामणनिश्चायने षष्ठपटलः–ख.।

सप्तमः पटलः

त्रिमुखां षड्भुजां शुक्लां[1] चक्रहस्तां शशिप्रभाम् ।
चर्चिकां भावयेत् प्राज्ञो [2]रक्ताकृष्टिप्रयोगतः ॥१॥

त्रिमुखां षड्भुजां घोणां[3] वज्रहस्तां सुनीलिकाम् ।
वाराहीं भावयेत् प्राज्ञो मद्याकृष्टि[4]प्रयोगतः ॥२॥

त्रिमुखां षड्भुजां रक्तां सरस्वतीं भावयेद् व्रती ।
[5]पद्महस्तधरां सौम्यां प्रज्ञावर्धनहेतवे ॥३॥

त्रिमुखां षड्भुजां [6]खर्वां मरकतोत्पलसन्निभाम् ।
गौरीं [7]विभावयेत् प्राज्ञो [8]शुकाकृष्टिप्रयोगतः ॥४॥

अनुक्तमाण्डलेययोगिनीचतुष्ट[9]यमुखाद्याख्यानायाह—**त्रिमुखा**मित्यादि । **वज्र-(चक्र)हस्ता**मित्यनेन मोहयमारिप्रधानचिह्नधारिणीत्वात् । अपरचिह्नमुखादि चास्या मोहयमारिवत् । प्रयोजनाख्यानाय—**रक्ताकृष्टी**त्यादि । प्रयोगतः प्रयोगविशेषतः ॥ १ ॥

वज्रवाराहीमुखाद्याख्यानाय—**त्रिमुखा**मित्यादि । **घोणा**मिति शूकरमुखीम् । **वज्रहस्ता**मित्यनेन यथोक्तक्रमेण । एषाऽपि द्वेषयमारिवत् । प्रयोजनाख्यानाय—**मद्याकृष्टी**त्यादि ॥ २ ॥

वज्रसरस्वतीमुखाद्याख्यानाय—**त्रिमुखा**मित्यादि । **रक्तपद्मधरा**मित्यनेन यथोक्त-क्रमेण । एषापि रागयमारिवत् । प्रयोजनाख्यानायाह—**प्रज्ञावर्धने**त्यादि ॥ ३ ॥

वज्रगौरीमुखाद्याख्यानायाह—**त्रिमुखा**मित्यादि । अनेन च ईर्ष्यायमारिप्रधान[10]-मुखवर्णाख्यानादेषाऽपीर्ष्यायमारिवत् । प्रयोजनाख्यानायाह—**शुक्राकृष्टी**त्यादि ॥ ४ ॥

---

१. शुक्रां–ख. । २. रक्षा–ख. ग. घ., रक्ताकृष्टि–च. । ३. घोरां–च. । ४. कृन्ति–क. ख. ग. । ५. रक्तपद्मधरां–टी. । ६. खड्गां–भो. । ७. तु भाव–घ. । ८. शुक्ला–ग. च. । ९. चतुर्मुखा–क. । १०. प्रधानप्रमाणमुख–क. ।

अथ खलु भगवान् [1]महायममथनवज्रा[2](ज्रो) [3]रक्ताकर्षणवज्रं नाम समाधिं समापद्येमं वज्रचर्चिकामन्त्रमुदाजहार ॥५॥

ॐ [4]वज्रचर्चिके [5]सिद्धेन्द्रनीलहारिणि रत्नत्रयापकारिणो[6] रुधिरमाकर्षय [7]आकर्षय जः ॥६॥

वक्त्रं प्रसारितं[8] कृत्वा इमं मन्त्रमनुस्मरेत् ।
त्रैधातुकमहारत्न(क्तं) कृष्यते नात्र संशयः[9] ॥७॥

अथ खलु भगवान् महायमारिवज्रो मद्याकर्षणवज्रं[10] नाम समाधिं समापद्येमं [11]वज्रवाराही[12]मन्त्रमुदाजहार ॥८॥

ॐ [13]वज्रघोणे [14]सुघोणे वज्रमामकि भर २ सम्भर २ त्रैधातुक[15]- महामद्यमाकर्षय जः ॥९॥

---

[16]चर्चिकोद्दिष्टप्रयोजननिर्देशायाह—**अथ खल्वित्यादि**। **रक्ताकर्षणेति**। रक्तमाकृष्यते येन तत् तथा, अभेद्यत्वात् तदेव **वज्रम्**, तच्च **वज्रचर्चिका**मूर्तिः, तदेकाग्रत्वाच्चेतसः। सैव **समाधिः** ॥ ५-६ ॥

वक्त्रं प्रसारितं कृत्वेति। जिह्वायां लोहितं जःकारं दृष्ट्वा तद्रश्मिभिर्जलौकाकाराभिर्बद्ध्वा[17] साध्यहृदि विद्ध्वा तद्रक्तान्ता(क्ता)भिर्जलौकाकाराभिराकृष्यमाणं स्वमुखे [18]प्रविशन्तं दृढाह[19]ङ्कारेण द्रष्टव्यं मन्त्रमुच्चार्यमाणेन **त्रैधातुकं** [20]तत्त्रैलोक्यम्। **महारक्तं** रक्तसमूहम् ॥ ७ ॥

[21]**मद्याकर्षण**[22]**वज्रमिति**। पूर्ववद् वज्रवाराहीमूर्तिः। **उदाजहारेति** उदीरितवान् ॥ ८-९ ॥

---

१. वज्रयमारिमाराकर्षणं नाम–भो.। २. प्रजा–घ.। ३. रक्षा–ख.घ.। ४. 'वज्र' नास्ति–क. ख. भो.। ५. सिद्धान्तनाल–क. ख. ग. च., गृहीतः पाठस्तु भोटानुसारी। ६. कारिणां–घ.। ७. नास्ति–ग. भो.। ८. प्रसादितं–ग. घ. ङ.। ९. एतावत्पर्यन्तं ङमातृकायास्त्रुटितः पाठः (२५-२७ पत्राणि)। १०-११. 'वज्र' नास्ति–ङ. भो.। १२. मद्याकर्षणमन्त्र–भो.। १३. 'वज्र' नास्ति–ङ.। १४. 'सु' नास्ति–ङ.। १५. धातुकार्यमाक–भो.। १६. चर्चिकादिषु–क. ख. ग.। १७. भिनंत्वा–क. ख, गंत्वा–घ। १८. प्रविशेत्–क. ख. ग.। १९. हूंका–घ.। २०. 'तत्' नास्ति-घ.। २१. सव्याकर्षण–क., सद्योकर्षण–घ.। २२. वज्रेति–क. ख.।

हस्तमानां[१] (मृदा) कुलालस्य घटिकां कृत्वा तु संवृताम् ।
आधारे[२] चौरकेशाख्ये स्थाप्य मन्त्रं मुदा स्मरेत् ॥१०॥

अस्य मन्त्रस्य माहात्म्यं दर्शितं चैत्यपत्तने[३] ।
धैर्यमा[४]लम्ब्य यत्नेन मदिराकृष्टिः [५]प्रसिद्ध्यति ॥११॥

अथ खलु भगवान् [६]महासमययमघ्नवज्रः[७] प्रज्ञापारमितावज्रं[८] नाम समाधिं समापद्येमं वज्रसरस्वतीमन्त्रमुदाजहार ॥१२॥

मद्यस्थापनभाण्डं वक्तुम्—**हस्तमृदा कुलालस्येति**। भाण्डं समारभ्य हस्तं [९]प्रोञ्छयित्वा यां मृत्तिकां कुम्भकारस्त्यजति[१०], तया। **संवृतामिति**। दैर्घ्येण हस्तप्रमाणां वितस्तिमुखां बृहदुदरां [११]सुदग्धां मद्यो[१२]स्थापनायापरस्वल्पभाण्डयुतां सपिधानाम्। **चौरकेशाख्य** इति उद्बद्धस्य केशेन कृतबिन्दुके। **मन्त्रमनुस्मरेदिति**। मद्यं क्रीत्वा आनीय भाण्डे संस्थाप्य तन्मध्ये रक्त[१३]जःकारनिर्गतरश्मिनलिकया प्रणाल्येव मद्यमागल्य[१४] स्थापितभाण्डे [१५]प्रविशदिव विचार्य मन्त्रमुच्चार्यम् ॥ १० ॥

दर्शितं चैत्यपत्तन इति। [१६]उत्तरदेशेऽस्ति चैत्यपत्तनं[१७] नाम स्थानम्। तत्र वीरवीरेश्वरीमण्डले भगवताऽमुनैव विधानेन त्रैलोक्यमद्यमाकृष्टम्। अद्यापि च तत्र[१८] वज्रवाराहीगृहे मद्यं न क्षीयते। **धैर्यमालम्ब्य यत्नेनेति**। [१९]परागोचरेण [२०]अवाच्या ॥ १३ ॥

प्रज्ञापारमितावज्रमिति। [२१]प्रविभक्तग्राह्यग्राहकभावेन ज्ञानं प्रज्ञा, तस्याः पारं सकलधर्मनैरात्म्यमद्वयविज्ञप्ति[२२]लक्षणं गता धीः प्रज्ञापारमिता, सैवाभेद्यत्वाद्वज्रं वज्रसरस्वतीमूर्तिः, **समाधिमिति** पूर्ववत्। धारणी चेयमारम्भात् प्रभृति प्रत्यहमहोरात्र-

---

१. मात्रां-ख. घ., मृदंतु-ङ.। २. धारचौ-घ.। ३. पत्तनम्-ग. च., मुत्तमे-ङ.। ४. मवल-क. ख.। ५. 'प्र' नास्ति-ग. च.। ६. नास्ति, गृहीतः पाठस्तु भोटानुसारी। ७. यमघ्नजः-क. ख. ग. घ. च.। ८. 'वज्रं' नास्ति-भो.। ९. प्रच्छयित्वा-क. ग.। १०. कारं भजति-क. ख.। ११. स्वदग्धां-क. ख. ग.। १२. मद्यान् स्थाप-क. ग.। १३. रक्तं-क. ख.। १४. मागत्य-क. ख. ग.। १५. पुणदेयम् एवं-ख., प्रविशद्धैर्यमेव -क. ग. घ.। १६. उत्पदे तु द्रुतैशाने-क., तत्र-ग.। १७. पतनमिति नाम-क. ग. घ.। १८. तत्र वाराही-क. घ.। १९. परागे च रेणुकरसल्या क. ख., परागोवरणकतुल्या-ग.। २०. करुजंल्या-घ., गृहीतःपाठो भोटानुसारी। २१. प्रविभज्य-घ.। २२. विज्ञप्त्यै-क. घ.।

ॐ पिचु २ प्रज्ञावर्धनि ज्वल २ मेधावर्धनि धिरि २ बुद्धिवर्धनि स्वाहा ॥१३॥

गृहीत्वा प्रतिपदं[1] यावत् पूर्णमासी समन्ततः[2] ।
संस्कृतं वक्तु[3]मारम्भेत् यावच्चन्द्रानुसारतः ॥१४॥

भवेद् योगीश्वरीसिद्धिः शतश्लोकं करोत्यसौ ।
सिद्धयत्यशेषनिःशेषं त्रैधातुकमशेषतः ॥१५॥

अथ खलु भगवान् महायममथनवज्रः[4] शुक्राकर्षणवज्रं नाम समाधिसमापद्येमं[5] शुक्राकर्षणं [6]वज्रगौर्या मन्त्रमुदाजहार॥१६॥

ॐ कट्टनि[7] [8]कर्षणि गौरि जः जः जः ह्रीः[9] दुष्टदुष्टयोः[10] शुक्रमाकर्षय जः जः जः हूं[11] स्वाहा ॥१७॥

मावर्तनीया। ॐ रागरति इति मन्त्रस्य च पूर्वं[12]सेवाऽक्षरलक्षं जप्तव्यम्। वज्रसरस्वतीमूर्त्यैव च सर्वमिदं कर्तव्यमित्युपदेशः ॥ १२-१३ ॥

गृहीत्वा प्रतिपदमिति। शुक्लप्रतिपद(त्) प्रभृति। कियत्काल[13]मित्याह—**यावदित्**यादि। **समन्ततः संस्कृतेनैव** यत्किञ्चिद् वाच्यं तत्संस्कृतेनैव। तत्किं पक्षैकमहोरात्रमेव संस्कृतेन वाच्यमित्याह—**यावच्चन्द्रानुसारत** इति। यावच्चन्द्रोदयस्तत्संमुखम्। असामर्थ्य[14] (र्थ्ये) तोयं(य)पूर्णपात्रे[15] चन्द्रप्रेक्षणमित्युपदेशः ॥ १४ ॥

अशेषनिःशेषं लौकिक(कं) लोकोत्तरं वा [16]उभयम्। **त्रैधातुकमशेषत** इति। त्रैलोक्यं च सकलं वशीभवतीत्यर्थः ॥ १५ ॥

शुक्राकर्षणेत्यादि पूर्ववत्। वज्रगौरीमूर्तिमित्यर्थः ॥ १६-१७ ॥

---

१. प्रतिपद्येदं—क. ख. ग. घ. च.। २. नास्ति—ग. च.। ३. कर्तु—सार्वत्रिकः पाठः, गृहीतस्तु भोटानुसारी। ४. वान् यमघ्नवज्रः—भो.। ५. द्येदं शुक्राकर्षणाङ्कुशा—ङ, नास्ति—क. ख. ग. घ. च.। ६. 'वज्र' नास्ति—ग. च. भो.। ७. कट्ट कट्टनि—ग.। ८. आकर्षणि-आकर्षणि—भो.। ९. ह्लीः—घ., 'जः····ह्ली' नास्ति—भो.। १०. दुष्टाय दुष्टाय —भो.। ११. हूं हूं हूं —भो.। १२. पूर्वसर्वा—क. ख.। १३. यद् ज्ञानमि—घ.। १४. असमर्थ—क. ख.। १५. पात्रे च—क. ख. ग.। १६. वाङ्मयं—घ., नास्ति—भो।

[1]खगमुखाद् वज्रमार्गाच्च [2]वातघण्टाङ्कुशयोगतः ।
कर्षयेच्छुक्रसंघातं[3] जपभावप्र(ना)योगतः ॥१८॥
विजनेषु वने [4]वापि इदं कर्मप्रचोदनम् ।
सप्तरात्रप्रयोगेण सिद्ध्यते नात्र संशयः ॥१९॥

अथ खलु भगवान् महायमारिवज्रः [5]कालनिकृन्तनवज्रं नाम समाधिं समापद्येमं परमाभिषेकसमयं स्वकायवाक्चित्तवज्रेभ्यो निश्चारयामास ॥२०॥

ओदुम्बरं [6]मान्दारकं पारिजातं तमालकम् ।
कर्णिकारस्य मालां च वत्स गृह्ण प्रतिष्ठितः ॥२१॥
त्रैधातुकमहाखड्ग[7] सर्वं[8] बुद्धनमस्कृत ।
[9]माराणां जयतो गृह्य(ह्ण) कर्मखड्गमिवापरम् ॥२२॥

---

[10]**वातघण्टाङ्कुशयोगत** इति । ॐ [11]कट्टनोत्यादि मन्त्रोच्चारणे यदा जःकारत्रयोच्चारणं क्रियते, तदा जिह्वायां रक्तजःकाररश्मिसहितोच्छ्वासवातेनाङ्कुशाकारेणाभ्यन्तरे नलिकाकारेण शुक्रमागत्य मुखे प्रविशद् द्रष्टव्यम् । कुतस्तदानेयमिति पश्चाद् योजनीयम् । **खगमुखादि**ति भगमार्गात् । **वज्रमार्गादि**ति पुरुषेन्द्रियरन्ध्रात् । अयमर्थः—तेन मार्गेण प्रविश्यासौ वातघण्टाङ्कु[12]शयोगे (गतो) मस्तकस्थितहूं[13]काराच्छुक्रसमूहमाकृष्यानयेत् । **जपभावे(व)ने**ति । मन्त्रजपदेवताभावनाप्रयोगतः ॥ १८-१९ ॥

कालनिकृन्तनेति । क्लेशनिकृन्तनं द्वेषयमारिमूर्तिम् । **परमाभिषेके**ति । सर्वाग्रत्वेनोपादेयत्वात् परमम्, अभिषेकहेतुत्वादभिषेकम्, तस्य **समयं** मन्त्रं परमाभिषेकसमयम्, मण्डलप्रवेशार्थं पुष्पदानमन्त्रम् । अयमर्थः—[14]बद्धान्धपटानां शिष्याणां मण्डलगृहाद् बहिर्दत्तदक्षिणानामेतदौदुम्बरादिमन्त्रपाठेन हस्ते पुष्पं देयम् ॥ २०-२१ ॥

---

१. पद्ममु–भो. । २. वज्र–क. ख. ग., वाट–घ. । ३. संघाटं–च. । ४. चापि–ग. । ५. वज्रकृष्णनाशनं–भो. । ६. मादारकं–क., मादारवं–घ. । ७. खड्गं–ख. घ. ङ. । ८. बुद्धैर्नम–ग. च., स्कृतं–ख. घ. ङ, स्कृतः–ग. च. । ९. इतः पूर्वम् 'सर्वभूत आकर्षाय' इत्यधिकः पाठः–भो. । १०. वाड–ख. घ., वाद–ग. । ११. कत्तनी–भो. । १२. घण्टाङ्कुलिशयोगो–ग. घ. । १३. हंकारा–भो. । १४. बुद्धान्ध–क. ख. ।

प्रज्ञोपायस्वभावं तु वज्रघण्टां[1] च सिद्धये[2] ।
[3]गृहाण वत्स वज्रस्त्वं[4] कुरु[5] शिष्यस्य संग्रहम् ॥२३॥

इदं ते पानरत्नं वै[6] देहवज्रप्रसाधकम् ।
पीयतां [7]मानसं वारि ज्ञातस्त्वं[8] वत्स सर्वदा ॥२४॥

मु(सु)खेन[9] पिबते शिष्यो [10]यममारिप्रसिद्धये ।
सौष्ठवं कुरुते चित्तं वज्रशिष्यो महात्मनः ॥२५॥

[11]इति [12]सर्वतथागतकायवाक्चित्तकृष्णयमारितन्त्रे[13]
[14]आकर्षणादिप्रयोगपटलः सप्तमः ॥

पुष्पपातानन्तरमुदकमुकुटाभिषेकं दत्त्वा यदा [15]वज्राभिषेको देयस्तदा **त्रैधातुकमहे**त्यादिमन्त्रेणाभिमन्त्र्य देयम् ॥ २२ ॥

वज्रघण्टाभिषेकमन्त्रमाह—**प्रज्ञोपायै**रि(ये)त्यादि । **वज्रस्त्वमि**ति पञ्चतथागतस्वभावस्त्वमित्याश्वासदानम् । **कुरु शिष्यस्य संग्रह**मित्यनुज्ञादानम् ॥ २३ ॥

[16]तद्बोधिचित्तभक्षण[17]मन्त्रमाह—**इदं ते** [18]**पानरत्नं वै देहवज्र**[19]**प्रसाधक**मिति । पानप्रस्तावान्मण्डलप्रवेशसमयोदकपानार्थमाह—**पीयता**मित्यादि । [20]महार्थहेतुत्वादशुचिनाशार्थमाह—**सौष्ठव**मित्यादि । **महात्मनो** महात्मेत्यर्थः ॥ २४–२५ ॥

इति[21] सप्तमपटल[22]व्याख्या ॥

---

१. घण्टा—क. । २. सिद्धयेत्—ग. च. । ३. उत्तिष्ठ—भो. । ४. सद्भूवत्या—क. ग. घ. । ५. गुरु—ग. च. । ६. तु—ग. च. । ७. ज्ञानसंभूत-भो. । ८. ज्ञानस्त्वं—क. ख. घ. ङ. भो. । ९. सत्सुखेनैव भो शिष्य—ग. च., । १०. यमारिविधिपूर्वतः—ङ. । ११. नास्ति—क. ख. घ. ङ. । १२. 'सर्व……… चित्त' नास्ति—ग. च. । १३. महातन्त्रे—ग. । १४. आकर्षणप्रयो—ग. च., प्रयोगक्रमभेदः—भो. । १५. प्रज्ञाभि—क. । १६. प्रज्ञोपायभूतबोधि—भो. । १७. भक्षक—ख. । १८. नररत्नं—ख । १९. प्रमापकमि—ख । २०. 'महानर्थहेतुत्वाद्धेयस्वभावैस्तन्निषेधार्थमाह' इति पाठः सार्वत्रिकः । २१. इति श्रीकृष्णयमारितन्त्रे म(मा)हात्म्येऽभिचारपटलः सप्तमः—ख. । २२. पटले—क. ।

अष्टमः पटलः

अथ वज्रधरो राजा रक्षाचक्रप्रयोगतः[1] ।
विघ्नान् विनायकान् दुष्टान् निकृन्तनाय[2] चाब्रवीत् ॥१॥
अहं खड्गधरो राजा[3] रक्षाचक्रप्रयोगतः[4] ।
खड्गेनादीप्तवपुषा[5] स्फालयामि त्रिकायजान्[6] ॥२॥
त्वं देवि साक्षिभूतासि सर्वबुद्धानुतायिनाम् ।
यमघ्नो मण्डलाचार्यो मण्डलं लेखयाम्यहम् ॥३॥
[7]कौशिकेन मुखं बद्ध्वा मण्डलागारद्वारतः ।
कस्त्वं भो [8]भो इति ब्रूयात् सुभगोऽहमिति चाब्रवीत्[9] ॥४॥

---

[10]पूर्वोक्ताध्येषणानन्तरं मण्डललिखनाय भूपरिग्रहप्रस्तावनायाह—**अथ वज्रधर** इत्यादि। कायवाक्चित्तभेदात्—**विघ्नान् विनायकान् दुष्टानिति**। **निकृन्तनाय** निवारणाय। **अब्रवीत्**, मन्त्रमिति शेषः॥ १ ॥

खड्गधर इत्युपलक्षणम्, [11]चक्ररत्नपद्मवज्राणि दत्त्वा पञ्चधा मन्त्रोऽयमावर्तनीयः। एवं **खड्गे**नेत्युपलक्षणम्। [12]**स्फालयामि** पाटयामि। [13]**त्रिकायजान्** कायवाक् चित्तसम्भूतान् ॥ २ ॥

पृथिव्यावाहनार्थं **त्वं देवी**त्यादि। **सर्वबुद्धा**निति षष्ठ्यर्थे द्वितीया। **तायिनामि**ति। [14]स्वदृष्टमार्गोक्तिः [ताया], साऽस्यास्तीति तायी ॥ ३ ॥

मण्डलप्रवेशसमयकृत्यमाह—**कौशिके**नेति [15]कर्पटेन। **द्वारतः** पूर्वद्वारे [16]**ब्रूयात्**, शिष्यमिति शेषः। **अब्रवीत्** शिष्य इति शेषः ॥ ४ ॥

---

१. प्रयोजकः—क. ख. ग. घ. च.। २. नार्थं—ङ.। ३. नास्ति—ङ, इतः परं 'श्रीमान्' इत्यधिकः पाठः—ख. घ. ङ. भो.। ४. योजकः—क. ख. घ. ङ.। ५. इतः परम्—'त्रिनयेन च संपूज्य रक्षयामि सर्वसत्त्वान्। चर्याविशेषं भूमिं च प्रज्ञापारमितां तथा॥' इत्यधिकः पाठः—भो.। ६. 'स्फाल''''जान्' नास्ति भो., कान्—घ.। ७. काशि—क. ख. ग. घ. च.। ८. नास्ति—ख. ग. घ. ङ. च.। ९. वदेत्—ग.। १०. तत्र पूर्वो—ख.। ११. चतुरत्नं—घ.। १२. स्फार-ख.। १३. त्रिकुलजान्—भो.। १४. सुदृष्ट—भो.। १५. रक्तकर्पटेन—भो.। १६. क्रायात्—क., कुर्यात्—ख., क्रीयात्—ग.।

यमनिकास्वन्तरं दत्त्वा प्रार्थयेद् गुरवे सुधीः ।
अभिषेकार्थं महाभक्त्या त्रिरुच्चार्यानुनाथयेत्[1] ॥५॥

यथा बुद्धैर्महाधर्मैर्वज्रसत्त्वाभिषेकतः ।
ममापि [2]त्राणनार्थाय वरं वा मे प्रयच्छतु ॥६॥

गीतं वाद्यं तथा पूजामर्घं पाद्यं तथैव च ।
ढौकयेद् गौरवाद् शिष्यः स्तुतिं वा तत्र कारयेत् ॥७॥

अथ वज्रधरो राजा शून्यमन्त्रमुदाहरेत्—
ॐ शून्यताज्ञानवज्रस्वभावात्मकोऽहम् ।
ॐ [3]सर्वतथागतपूजावज्रस्वभावात्मकोऽहम् ।
ॐ धर्मधातुवज्रस्वभावात्मकोऽहम् ॥८॥

प्रार्थयेदिति शिष्यः । कौशिकबद्धमुखगृहीतपुष्पानन्तरं **त्री**ति(**त्रिरि**ति) त्रीन् वारान्, **अनुनाथयेद्** याचयेत् ॥ ५ ॥

बुद्धैरिति सकलपुद्गलधर्मनैरात्म्यबोधाद् धर्मकायस्वभावैः । **महाधर्मैरि**ति संभोगनिर्माणकायैः । तद्द्वारे[4](रं) मोक्षेगे(क्षस्ये)त्यर्थः । **वज्रसत्त्व** इति । वज्र[म्] अनुत्तरा[5] बोधिः, तस्यां सत्त्वमाशयो यस्यासौ तथा, बोधिसत्त्व[6] इत्यर्थः । **ममापि त्राणनार्थायेति** मामपि त्रातुम् । **बलि**[7]मभिलषितमभिषेकमित्यर्थः । मे मम ॥ ६ ॥

तदनन्तरं शिष्यकर्तव्यमाह—**गीतं वाद्यमि**त्यादि । **स्तुतिमि**ति "मोहवज्रस्वभावस्त्वम्" (२।१) इत्यादिका[म्] ॥ ७ ॥

शून्यताभावनानन्तरं पाठमाह—**ॐ शून्ये(न्यते)**त्यादि । किमस्यार्थविवरणेन, उच्चारणादेव फलमाह ॥ ८ ॥

---

१. प्रार्थयेत्–ग. च. । २. नाथ संसिञ्च–क. ख. घ. ङ. । ३. 'सर्वतथागत' नास्ति–ङ. भो. । ४. तद्द्वारमौने–ख., द्वारे मौने ग., द्वारेमौल्यर्थः–घ., तद्द्वारमित्यर्थः–भो. । ५. त्तरो–क. ख. ग. । ६. वज्रसत्त्व–भो. । ७. बलिरिति संभोगनिर्माणकायैः–ख., अत्र मूले तु 'वरं' इति पाठः, परमभिल–घ. ।

अथ होमं प्रवक्ष्यामि शान्तिकादिप्रभेदतः।
येन होमेन सिद्धिः स्यात् सर्वकर्मप्रसाधिका[1] ॥९॥
शान्तिके शान्तचित्तेन पौष्टिके पुष्टचेतसा।
वश्ये चोत्कण्ठचित्तेन उद्विग्नेन तु मारणे ॥१०॥
शान्तिके मण्डलाकारं वाप्याकारं तु पौष्टिके[2]।
वश्यके चार्धचन्द्राख्यं खधातुरिव[3] मारणे ॥११॥
हस्तायामं भवेच्छान्तौ द्विहस्तं पौष्टिके[4] तथा।
यथा पुष्टौ तथा वश्ये मारणे विंशदङ्गुलम् ॥१२॥
हस्तार्धं वेधयेत् शान्तौ हस्तमात्रं तु पौष्टिके।
द्विपञ्च मारणेऽङ्गुष्ठं यथा पुष्टौ तथा वशे ॥१३॥

प्रतिष्ठा[याः] शिष्यक्रिया[याः] वा हीनादिदोषमोषाय होमा[5](मं) वक्तुम्—**अथ होमम्**इत्यादि ॥ ९ ॥

पुष्टचेतसेति भुक्तगुडक्षीरेण। **उत्कण्ठा** रागः। **उद्विग्नेन** [6]सक्रोधेन ॥ १० ॥

मण्डलाकारं वर्तुलं कुण्डम्। **वाप्याकारं** चतुरस्रम्। **खधातुरि**नि त्रिकोणम् ॥११॥

विस्ताराख्यानायाह—**हस्तायामम्**इत्यादि। **यथा पुष्टौ तथा वश्य** इति। अत्रापि द्विहस्तमेव। **विंशदङ्गुलं** विंशत्यङ्गुलमानम् ॥ १२ ॥

[7]कुण्डानाख्यातुमाह—**हस्तार्धम्**इत्यादि। **द्विपञ्चे**त्यादि। [8]दशाङ्गुलमित्यर्थः। यथा वश्ये तथाकृष्टाविति। आकृष्टावपि वश्यसमानं च[9] कुण्डम्। अनुक्तमपि देवतायोगसाम्यात् स्तम्भने पौष्टिक[10]तुल्यं कुण्डम्। उच्चाटनविद्वेषयोर्मारणसमं कुण्डं बोद्धव्यम् ॥ १३ ॥

---

१. प्रभावका—क. ख. च., प्रसाधनी—ग., साधका—घ.। २. ष्टिकं—ङ.। ३. मिव—क. ख. ग. घ. च.। ४. केऽथवा—क. ख. घ. च.। ५. होमो—ख. ग.। ६. सत्कायेनेति सार्वत्रिकः पाठः, गृहीतःपाठो भोटानुसारी। ७. कुण्डखातानाह—भो. ८. पञ्चपञ्चेति सार्वत्रिकः पाठः, गृहीतः पाठो भोटानुसारी। ९. न देवता कुण्डं—ग. घ.। १०. ष्टिकं—क. ख.।

प्रतिपत्सु शान्तिकं होमं [1]पौर्णमास्यां तु पौष्टिकम् ।
अभिचारं चतुर्दश्याम् अष्टम्यां वश्यकर्मणि ॥१४॥

[2]इति [3]सर्वतथागतकायवाक्चित्तकृष्णयमारितन्त्रे[4]
होमविधि[5]पटलोऽष्टमः ॥

दिवसनियमार्थमाह—**प्रतिपत्स्वित्**यादि । अभिचारविद्वषणोच्चाटनमारणं चतुर्दश्यां कृष्णायामष्टम्यां शुक्लायाम् । अयं चात्र विशेषः[6]—

अस्मरणादसामर्थ्याद्विधिहीनो भवेद् यदि ।
होममापूरणं कुर्यात् प्रतिष्ठादेरनन्तरम् ॥

साध्यानां बहुभेदेन होमो बहुविधो भवेत् ।
पुनर्विस्तरभीत्या तु दिङ्मात्रमत्र दर्श्यते ॥

मन्त्रेण मुद्रया सार्धं [7]सावयेद् भुवमग्रतः ।
सव्यहस्तं प्रसार्याथ वज्रभावेन स्फालनम् ॥

ॐ हन हन क्रोध हुं फट् ।
हस्तमानं खनेत् कुण्डं खनिरर्धकरो[8] भवेत् ।
ततोऽधर[9]स्ततो वेदी ततो वज्रावलिर्बहिः ॥
सकेशरोऽधरः कार्यो वेदी [10]फुल्लसरोरुहा ।
तिर्यगूर्ध्वसमं सर्वं प्रत्येकं चतुरङ्गुलम् ॥

पौष्टिकेऽष्टाङ्गुलार्धं[11] त्यक्त्वाऽष्टाङ्गुलोच्छ्रया अष्टाङ्गुलचतुरस्रा वज्राङ्किता वेदी । वश्याकृष्टौ पौष्टिकवत् । वेदिका परमर्द्धचन्द्राकृतिः[12] । क्रूरकर्मकुण्डं तु [13]अधरवेदिकाहीनमेव ।

चक्ररत्नाब्जखड्गवज्रं तु [14]कुण्डस्य मध्यतः ।
[15]तिर्यगेकाङ्गुलं मध्ये[16] दैर्घ्यादष्टाङ्गुलं लिखेत् ॥
शान्तौ श्वेतरजस्तत्र पुष्टौ पीतरजः सृजेत् ।
रक्तं वश्ये तदन्यत्र कृष्णं कर्मप्रभेदतः ॥

---

१. पूर्ण—घ. ङ. । २. नास्ति—घ. ङ. । ३. 'सर्व···· चित्त' नास्ति—ग. च. । ४. महातंत्रे—ग. । ५. 'विधि' नास्ति—ग. च., क्रमविभेदोऽष्टमः—भो. । ६. उपदेशः—भो. । ७. सोध—घ. । ८. करा—घ. । ९. पर—क. ख. घ. । १०. कूल—क. । ११. ङ्गुलोऽर्धं—क. ख. ग. । १२. कृष्टिः—घ. । १३. ऽपर—क. ख., आधार—भो. । १४. कुंडं तस्य—क. ख. । १५. गेवाङ्गु—क. । १६. र्घ्यं—घ. ।

दिग्भेदः कालभेदश्च कथितः[1] परमार्थतः।
यथा दिशि तथा काले तत्तत्[2] कर्म चरेद् बुधः॥
पूर्वाशाभिमुखो मन्त्री शान्तिकर्म समारभेत्।
पौष्टिकमौत्तरे ज्ञेयमभिचारं तु दक्षिणे॥
पश्चिमे वश(श्य)माख्यातं आकृष्टिश्च तथैव हि।
पूर्वाह्णे शान्तिकं कुर्यादपराह्णे तु पौष्टिकम्॥
मध्याह्ने क्रूरकर्माणि अर्द्धरात्रे तु वश्यया:(काः)।
अखण्डशिखराग्रास्तु[3] पर्णद्वयवहाः शुभाः॥
शाखा यज्ञेय[4]वृक्षाणां कर्मभेदेन संहरेत्।
चतुर्दशाङ्गुलाः पुष्टौ शान्तये द्वादशाङ्गुलाः॥
वश्ये दशाङ्गुला द्वषोच्चाटनेऽष्टाङ्गुलाः पुनः।

तथा शान्तौ शर्करा सिताऽखण्डतण्डुलाः। तथा वश्याकृष्ट्योर्घृतमधुशर्करामिश्रं रक्तकुसुममुत्पलं वा। तथा पौष्टिकस्तम्भनयोः पीतकुसुमानि घृताक्तानि। तथा मारणे कण्टकधुत्तूरविष[5]राजिकालवणशुष्करूक्ष[6]वस्त्राणि कटुतैलाक्तानि होतव्यानि। तथोच्चाटने [7]वृद्धकाकपक्षो होतव्यः। एवमपरापरमन्वेषणीयम्[8]।

व्रीहीन् वा समिधश्चैव प्रोक्ष्य[9] दक्षिणपार्श्वतः।
स्थापयित्वा यथा मन्त्रं तत् सर्वम[10]भिमन्त्रयेत्॥
हस्तौ सम्पुटपुष्टानि[11] मध्यमादौ प्रसारयेत्।

सर्वशोधनमुद्रा। ॐ श्रि[12] स्वाहा घृतशोधनमन्त्रः। ॐ स्वः स्वाहा द्रव्यक्षालनमन्त्रः। ॐ[13] जं स्वाहा व्रीहिशोधनमन्त्रः। ॐ [14]क्षर २ स्वाहा इतरद्रव्यशोधनमन्त्रः। ॐ अः स्वाहा समिधशोधनमन्त्रः।

कुण्डादूनं भवेत् कुण्डकाष्ठं होमाङ्गसंभवम्।
नातिदीर्घानखण्डाग्रान् पूर्वादिदिङ्मुखान् कुशान्॥
प्रकीर्य पुनरेकाग्रान् वेदिकायां निवेशयेत्।
चन्दनागुरुवृक्षेण अन्यैर्वा गन्धपादपैः॥

---

१. कल्पितः-ख. ग. घ.। २. तत्र तत्र-क.। ३. ग्रास्त्र-घ.। ४. शाखाङ्गयज्ञेय-क.। ५. अत्र ख. मातृका पर्यवसिता। ६. रक्त-क. ग.। ७. वृक्ष-क.। ८. मपराधर भावनीयं-क.। ९. प्रोक्ते-क. ग.। १०. सर्वमपि हि-क.। ११. ष्टान्-घ.। १२. त्रि-क., श्री-भो.। १३. उं-क. ग. त्रि-भो.। १४. रक्ष रक्ष-भो. (पे०, न०), कुरु कुरु -भो. (दे०)।

अग्निं प्रज्वाल्य होमाय[1] पश्चादावाहयेत् पुनः।
भावयेदग्निमध्ये तु पद्ममार्तण्डमण्डले ॥

अग्निदेवं त्रिनेत्रं च चतुर्वक्त्रं चतुर्भुजम्।
दक्षिणे वरदं मालां वामे दण्डकमण्डलुम्।

कर्मानुरूपतो [2]रूप(पं) रेफयोनेर्विभावयेत् ॥
ॐ एह्येहि महाभूत देवर्षिद्विजसत्तम।
गृहीत्वाऽऽ[3]हुतिमाहारमस्मिन् सन्निहितो भव ॥

[इति] आवाहनगाथा।

अर्घपाद्यं विधायास्य धूपशाखापरिग्रहः।

तत्रायमर्घमन्त्रः—ॐ जः हूँ वं होः खं रं। पाद्यमन्त्रः-ॐ नी री हूँ[4] खं। निवेद्यमन्त्रः—ॐ [5]ध्वं ध्वं।

इष्टार्थसिद्धिं बुद्ध्वैव समयसिद्धिमुदाहरेत् ॥

ॐ वज्रानल महाभूत ज्वालय [6]सर्वान् भस्मीकुरु सर्वदुष्टान् [7]हूं फट् दृश्य जः हूं वं होः समयस्त्वं समयोऽहम्। समयदानगाथा।

जान्वभ्यन्तरविन्यस्तसव्यपाणिगृहीतया।
सत्पात्रीश्रुवयाध्मातचिह्नान्तर्वज्रबीजया।।
अधिष्ठितत्रिकायाय रत्नसम्भवमौलये।
त्रिशूलवज्रजिह्वाय दिव्यं ददाति वह्नये ॥

ॐ अग्नये स्वाहा सर्पिषः। ॐ सर्वपापदहनवज्राय अमुकस्य पापं दह स्वाहा कृष्णतिलानाम्। ॐ [8]वज्रपुष्टये स्वाहा अखण्डशालितण्डुलानाम्। ॐ सर्वसम्पदे स्वाहा दध्यन्नपरमान्नयोः। ॐ [9]वज्रबीजाय स्वाहा [10]अतुषधान्यस्य। ॐ महावेगाय स्वाहा यवानाम्। ॐ महाबलाय स्वाहा माषाणाम्। ॐ वज्र घस्मरे[11] स्वाहा गोधूमस्य। सर्वत्र कर्मण्येष विधिः समानः। कर्मानुरूपेण विशेषसमिधो विशेषमन्त्रेण होतव्याः।

वर्णगन्धशिखावर्तरूपशब्दादिभिः शुभैः।
शुभं दानपतेरग्निर्बोधयेत्तद्गताहुतिः[12] ॥

---

१. होमाङ्गे—ग. घ.। २. ज्ञेय—ग.। ३. हवि—क.। ४. हं—घ.। ५. ध्वे ध्वं—क., ध्वैं ध्वैं—ग.। ६. सर्व-क. ग.। ७. हूं हूं फट्—क. ग.। ८. 'वज्र' नास्ति—भो.। ९. सर्व—भो.। १०. अष्ठक—सार्वत्रिकः, पाठः गृहीतपाठस्तु भोटानुसारी। ११. घस्मरि—भो.। १२. तद्गतान् हविः—क.।

शान्तिके सितवर्णाभः पौष्टिके पीतसन्निभः ।
वश्ये रक्तोऽभिचारे तु कृष्णो[१] वह्निः प्रशस्यते ॥

शक्रचापनिभः सम्यग् दक्षिणावर्तसन्निभः ।
मृदङ्गध्वनिगम्भीरः स्निग्ध एकशिखः शिखी ॥

प्रभूतधूमं च(मश्च) सविस्फुलिङ्गः क्रमात् समुत्तिष्ठति मन्दमन्दम् ।
विच्छिद्यमानार्चिरुपेततेजा रूप्यः[२] स [३]कृष्णोऽभ्रपलाशवर्णः ॥

शूलसूर्यनिभश्चैव तथा गोशीर्ष[४]सन्निभः ।
संसूचयेदकल्याणमेवमाद्युपलक्षणम् ॥

होमान्ते[५] संहृतज्वालमनलं गाथयानया ।
विसृष्टपुष्पधूपादिपूजाव्यूहं विसर्जयेत् ॥

स्वार्थं चैव परार्थं च साधितं गच्छ हव्यभुक् ।
आगच्छसि यथाकालं सर्वसिद्धिं कुरुष्व मे ॥

वह्नेर्निर्वापणं दुग्धैः शान्तौ पौष्टिकसाधने ।
पीताम्बुभिस्तु वश्यादाविहं[६](ह) रक्तासितं पयः ।

उँ[७]घिलि घिलि हूँ जः स्वाहेत्यनेन नद्यां सपुष्पधूप[८]वाद्यभस्मप्रवाहणम् ॥१४॥

इत्यष्टमपटलव्याख्या ॥

---

१. कृष्ण-क. ग. । २. कार्यः-ग. । ३. कृच्छ्रोत्र-क. ग. । ४. गोधार्ष-क., गोष्पार्ष-घ., गोभार्थ-ख. ग., गोवर्ण-भो. (न. पे.) । ५. होमान्त-क. ग. । ६. वृद्धं-ग. वृह्यं-घ. । ७. मिलि मिलि-भो. । ८. मृदङ्गं-भो. ।

नवमः पटलः

समुद्रमृत्तिकां गृह्य नागमेकं तु कारयेत् ।
[1]ॐ फू[2].कारं हृदि न्यस्य ह्ली.ष्ट्र्यादिमन्त्रमाजपेत् ॥१॥

वर्षा[3]पणविधानायाह—**समुद्रमृत्तिका**मित्यादि । अस्योपलक्षणत्वाद् अभावपक्षे नदनदीह्लदपुष्करिणीखातकूपानामुभयतटमृत्तिका ग्राह्या । **नागमेकं** वरुणं सप्तफणं मनुष्यमुखं द्विभुजम्, दक्षिणे खड्गधरं वामे पाश[4]युतम् । पङ्कार[5]निष्पन्नमृदष्टदलकर्णिकामध्ये पूर्वदले[6]ऽनन्तं नीलोत्पलश्यामम् । दक्षिणे वासुकिं सितम् । पश्चिमे तक्षकं रक्तम् । उत्तरे कर्कोटकं कृष्णम् । आग्नेये पद्मं सितम् । नैर्ऋत्ये[7] महापद्मं [8]पाण्डरम् । वायव्ये शङ्खपालं पीतम् । ऐशान्यां कुलिकं चित्रम् । एते च[9] नकारेण सप्तवारान् मृत्तिकामभिमन्त्र्य [10]लकारनिष्पन्ना हृदि न्यस्तसंपुटहस्तयुगा एकफणा द्रष्टव्याः । **ॐ फूः[11] हृदि न्यसे**दिति । ॐ ह्लीः ष्ट्रीः विकृतानन हूँ हूँ सप्तपातालगतान् नागान् आकर्षय तर्जय गर्जय[12] [13]फूःकारोऽष्टावर्त[14] फूँ[15] । एतद् भूर्जपत्रे लिखित्वा सर्वेषां हृदि गोपनीयम् । **ह्लीः ष्ट्र्यादिकमाज्जंये(माजपे)**दिति हृदि न्यस्तमन्त्रमावर्तयेत् । यमारियोगयुक्तः क्रूराध्मातचित्तः सकलनीलाभरणोऽष्टदिक्संस्थितनाग[16]पुच्छाष्टकं मध्ये वरुणेन सहाक्रम्य शिरसि च सर्वेषां यमारिमाक्रम्य स्थितं पश्येत् । ज्वलद्रूपं[17] च सकलनागभवनं मुहुर्मुहुः पश्येत् । स्फुरद्यमारिसंघैश्च नानायुधैः पीड(ड्य)मानमेव दशमहस्रमाजपेत् । अवश्यमेव वर्षति । अन्यतो दृष्टत्वेन तु ईदृशं च कार्यम्, यमारिमण्डलं [18]चावर्तनीयम् । ततो वायव्ये पुष्करिणी च कार्या लघ्वी । तन्मध्ये सरावसम्पुटे नागान् प्रक्षिप्य हस्तिमदेन शिरो लेपयेत् । नागदमनकरसेन नागान् म्रक्षयेत् । कृष्णगावीक्षीरेण सरावसम्पु[19]टाभ्यन्तरं[20] पूरयेत् । कृष्णसूत्रेण वेष्टयेत् । पूजावल्यादिसमयभक्षणं क्रूरकर्मविषयं सेवेत[21] ॥ १ ॥

---

१. ॐ नास्ति–ग., हूं–भो. । २. फुः–क., फूं–ग. च. । ३. वर्षण–क. ग. । ४. धरं–घ. । ५. पद्मारि-क., बंकार-भो. । ६. दलेषु नन्दं-क. । ७. ऋत्यां घ. । ८. शुक्लं-क., पाण्डुरं-घ. । ९. तेन चका-घ. । १०. नांकार–भो. । ११. फूंः–क. घ. । १२. 'गर्जय' नास्ति भो. । १३. फूंः-घ. । १४. ऽष्टवर्ण–क. । १५. हूँ-भो. । १६. यूथा-ग. । १७. ज्वलन्तं–ग. । १८. च वर्णनी–क. । १९. रावपुटा-क. ग. । २०. न्तरे-क. ग. । २१. सेवेत्–क. घ. ।

[1]अथाऽनावृष्टिसमये अयुतजापेन पातयेत् ।
कृष्णसर्पस्य [2]मांसानि निम्बपत्रेण मिश्रयेत् ॥२॥
[3]तेनैव वटिकां कृत्वा समुद्रे [4]प्रक्षिपेद् व्रती ।
अयुत[5]मात्रजप्तेन ऊर्मिस्तम्भनमुत्तमम् ॥३॥
चण्ड[6]बीजशतं गृह्य माषतण्डुलमिश्रितम्[7] ।
अष्टलक्षप्रजप्तेन होमाद् देव तु दृश्यताम् ॥४॥
[8]गञ्जनेन श्मशानस्य [9]पुत्तलिं कारयेद् व्रती ।
उन्मत्तरसलेपेन अयुतमात्रेण [10]कुष्ठते ॥५॥

समुद्रोर्मिस्तम्भनायाह—**कृष्णसर्पस्येत्यादि** । कृष्णसर्पस्यालगर्धस्य[11] । **निम्बपत्रेण,** समभागेनेति शेषः। **गुलिकामिति** चणकप्रमाणाम्। **अयुतमात्रजापेन** स्तम्भनविधिना दशसहस्रजापेन ऊर्मिस्तम्भनविधिः। यदोर्मिरायाति[12] तदैका प्रक्षेप्तव्या ॥२-३॥

चण्डबीजमिति धुत्तूरफलान्तर्गतबीजानां विंशतयः पञ्च, **माषफलानि** च तावन्ति। **तण्डुलेति**। अखण्डितशालितण्डुला अपि तावन्त एव। एवं मिलित्वा शतत्रयं भवति। **अष्टलक्षेति**। आकृष्ट(ष्टि)विधिनानेना[13]ष्टलक्षाभिमन्त्रितेन, शतत्रयेणेति शेषः। **होमादिति** आकृष्टिक्रमेण। चण्डबीजमाषशालीनामेकैकं गृहीत्वा मिलित्वा बीज[14]त्रय-होमेन सर्वहोमात्। **देव** इति भगवान् यमारिः[15]। उपलक्षणत्वादस्य यस्यैव नाम विदर्भ्य हूयते, तस्यैव दर्शनम्। दर्शनेन [16]चाभीष्टसिद्धिः ॥४॥

गञ्जनेनेति मृतस्य [17]देहानलादेकार्धदग्धकाष्ठाङ्गारेण। **उन्मत्तरस**[18]**पिष्टेनेति**

---

१. अनावृ—क. ख. ग. घ. ङ., वृष्टिक— क. च. । २. चात्मानं—ङ. । ३. वटिकां तेनैव—क. ख. घ. ङ. च., तेनैव वर्तिकां—ग. । ४. क्षेपयेद्—घ. ङ. । ५. मात्रप्रजप्तेन—ख. घ. ङ, जापमात्रेण—क. । ६. चन्दनफलं—भो. । ७. मिश्रयेत्—ख. घ. ङ । ८. मञ्जनेन—क. । ९. पुत्तलिकां—ग. घ. ङ. च. । १०. कष्टते—क, कुप्यते—ग., कुर्वतो—ङ , कुष्यते—च. । ११. 'अलगर्दो जलव्यालः' इत्यमरः, 'अलगर्ध' इति मुकुटः। १२. चायाति—क. ग. । १३. नाष्टदल—क. घ. । १४. त्रयम् । होमेन—क. ग. । १५. यमारिः कृष्ण—भो. । १६. वाभी—क. । दहनानला—क., दहनादे—घ. । १८. मूले तु—'रसलेपेन' इति पाठः ।

चत्वारि लक्षजापेन [1]सिद्धार्थबीजसंचयैः ।
सुप्तकोत्थापनं कार्यं जीविते[2] च न संशयः ॥६॥
[3]कन्दरस्य मृदं[4] गृह्य लक्षमन्त्रेण जापयेत् ।
शिरः [5]प्रमार्जनेनैव शिरःशूलं विनश्यति ॥७॥
सप्ताभिमन्त्रितं कृत्वा हस्तेन[6] मर्दयेत् शिरः ।
शिरःशूलं न भवति नश्यते नात्र संशयः ॥८॥
ब्राह्मणस्य तु मांसेन चितिभस्मेन तन्मृदा ।
यमारिप्रतिमां कुर्याद् द्विभुजमेकवक्त्रिणम् ॥९॥

सम्बन्धः । **अयुतेने**ति वश्यविधानेन दशसहस्रजप्तेन । एवमेकदा साधितेन यदोपयोगस्तदा दष्टकं [7]दृष्ट्वा यं पश्यति तं निर्विषं[8] करोति ॥५॥

चत्वारि लक्षजापेनेति मोहयमारिणा शान्तिकविधानेनेति । अनिर्दिष्टनामधेयं दष्टकं दृष्ट्वा जप्तव्यम् । एवं कृते यत्र कुत्रचित् सुप्तकं सप्ताभिमन्त्रितं सर्षपेण निर्विषं करोति ॥ ६ ॥

कन्दरस्य मृदं गृह्येति । क्वचित् कन्दरोदरे सित[9]भूभागे मण्डलकं स्वहस्तेनावष्टम्भेत, आरसा[न]ज्ञाद् दृष्टिपर्यन्तं शान्तिविधानेन शिरश्शूलं विदर्भ्य लक्षमन्त्रेणाभिमन्त्रयेत् । आगामिकालं यावदाकाशं बुद्धिस्थीकृत्य ततो यः कश्चित् शिरः शूली तया मृत्तिकया शिरो लेपयेत्, तस्य शूलं नश्यति ॥७॥

सप्ताभिमन्त्रितमिति शान्तिकविधानेन । **हस्तेने**ति हस्तभावितचन्द्रमण्डलेन वर्षत्-शिशिरधारेण । **न भवती**त्यागामि नोत्पद्यते । **नश्यत** इत्युत्पन्नं शाम्यति ॥८॥

निग्रहविशेषार्थमाह—**ब्राह्मणस्ये**त्यादि । **भस्मेने**त्यङ्गारेण । **तन्मृदेति** मृत्तिकया । **प्रतिमाम्** अभीष्ट[10]प्रमाणामिति शेषः ॥९॥

---

१. सिद्धयर्थं–ङ. । २. वितमेव–ग., विते न च–च. । ३. कण्डरस्य–ग. । ४. मृतं–क., मृदंगस्य–ग. । ५. प्रमातेन–घ., प्रलेपमात्रेण–ङ. । ६. हस्तेन लेखम–ङ, मर्चयेत्–घ. । ७. नास्ति–क. भो. । ८. निर्विषधी–क., विषं–च. ग. । ९. 'भू' नास्ति–क. । १०. मभितिष्ठ–क. घ. ।

दक्षिणेन महावज्रम[1]पसव्ये नृशिरस्तथा ।
शुक्लवर्णं महाभीमं तेन दुष्टान् निकृन्तयेत् ॥१०॥

प्रतिदिनं बलिं दद्यात् पञ्चमांसामृतेन तु[2] ।
नित्यं च[3] प्रार्थयेद् योगी मम शत्रून् निकृन्तय[4] ॥११॥

इत्युक्त्वा [5]सप्तरात्रेण प्रत्यूषे म्रियते रिपुः ।
अथवा रोगिणो भोन्ति अश्मर्यादिसमाकुलाः ॥१२॥

शत्रोर्वैरोचनां[6] गृह्य मानुषास्थि प्रपूरयेत् ।
प्रपूर्य लक्षजापेन वृक्षाग्रे भ्रमति प्रेतवत् ॥१३॥

[7]अथान्यत् संप्रवक्ष्यामि महावेताल[8]साधनम् ।
सर्वसिद्धिकरं दिव्यं नानाकार्यप्रसाधकम्[9] ॥१४॥

महावज्रं पञ्चशूकं वज्रम् । **अवसव्ये** वामे । **नृशिरो** मानुषमुण्डम् । **महाभीमं** भयानकम्, [10]**विकृत्वा** तन्मुखत्वादिना ॥ १० ॥

पञ्चमांसामृतेनेति पञ्चमांसपञ्चामृताभ्याम् । **प्रार्थयेदिति** तद्योगमालम्ब्य । शत्रुनाम विदर्भ्य ॐ ह्रीः ष्ट्र्यादिमन्त्रं मारणविधानेनावर्तयेत् ॥११॥

इत्युक्त्वेति । काललाघवार्थमिदम्, कतिपयदिवसेनेत्यर्थः ॥१२॥

अपरनिग्रहार्थमाह—**शत्रोरित्यादि** । **वैरोचनां गृह्य** । **मानुषास्थीति** उद्धद्ध[11]ज्ञ-ध्या(जङ्घा)नलकशुशि(षि)रम् । **लक्षजापेनेति** शत्रुनामविदर्भणपूर्वकमुच्चाटन-भावनया [12]यन्त्रं विनैव लक्षमेकं जप्त्वा । **वृक्षाग्र** इति शाखोटकवृक्षाग्रे, विभीतकवृक्षाग्रे

---

१. मव–ख. । २. च–ग. । ३. यत्–क. ग. च. । ४. न्तयेत्–घ. च. । ५. सुप्तो–भो. । ६. रोचनं–ख. घ. ङ. । ७. अयं श्लोको नास्ति–भो., अथातः–ग. । ८. वेताड–घ. ङ. । ९. साधनम्–च. । १०. विकृत्वेति–ग., टीकायां गृहीतोऽयं पाठो मूले न लभ्यते । ११. ऊर्ध्वोर्द्धजप्त्वा–क. ग. । १२. यत्नं–क. ग. ।

[१]इति [२]सर्वतथागतकायवाक्चित्तकृष्णयमारितन्त्रे [३]यमारिभीमो नाम नवमः[४] पटलः ॥

वा तुष्ट इति। यदाऽपनीय वैरोचनं [५]स्फोटयित्वा केवलनलकं [६]क्षीरेणापूर्य शान्तिकविधिना शत्रोः कृते दशसहस्र[७]जपं करोति, तदा तस्य सुखं भवति ॥१३-१४॥

यमारिभीम इति। यमारिभीमो[८] यस्मिन्नु[९]क्तोऽसौ तथा।

इति[१०] नवमपटलव्याख्या ॥

---

१. नास्ति–घ. ङ. च.। २. 'सर्व.... ....चित्त' नास्ति–ग.। ३. 'यमारि' नास्ति–ग.। ४. पटलो नवमः–ग. च., क्रमभेदो नवमः–भो.। ५. स्फुटयित्वा–क.। ६. घृतेन–भो.। ७. सहस्रं–घ.। ८.भीमा–क.। ९. न्नुक्ता–क.। १०. नास्ति–ग.।

दशमः पटलः

[[1]अतः सम्यक् प्रवक्ष्यामि दिव्यसाधकसाधनम् ।
वेतालसाधनोपायमभिलाषाण्यभीक्ष्णशः ॥]

[2]वृक्षावलम्बितं गृह्य [3]अक्षतं निर्व्रणं[4] शुभम् ।
अवतार्य स्नापयेत् तं (तु ?) मन्त्रं तत्र[5]जपेद् व्रती ॥१॥

अहो मन्त्रस्य सामर्थ्यं नादं मुञ्चति सुप्तकः ।
यमारियोग[6]युक्तेन न भेतव्यं मनागपि ॥२॥

यद्यन्मार्गयते[7] योगी [8]तत्तत् सर्वं प्रयच्छति ।
महिषस्य कुम्भीरस्य व्याघ्रस्यापि तथा [9]परम् ॥३॥

ऋक्षस्य मर्कटस्यापि श्वानस्यापि विशेषतः ।
विषराजिकालवणं त्रिकटु शोभाञ्जनं तथा ॥४॥

गतपटले सूत्रितवेताड(ल)साधनविधिं वक्तुमाह—**वृक्षेत्यादि**। **वृक्षावलम्बितमुद्बद्धम्**। **अक्षतमहीनाङ्गप्रत्यङ्गम्**। **निर्व्रणं** शस्त्रेण न [10]क्षतम्। **शुभमिति** [11]असठितम्। **स्नापयेत्**, सुगन्धिनेति शेषः। परं मृतहृदये स्वहृद्बीजाकृष्टं प्रेतं भयानकं कर्त्तोकरोटकहस्तं प्रवेश्य पुष्पधूपगन्धादिना पूजयित्वा तस्योत्तानीकृतस्योपरि **मन्त्रं** [12]**तत्र जपेदिति**। ॐ ह्लीः ष्ट्रीः विकृतानन हूँ हूँ[13] भोः प्रेत ममाभिप्रेतां सिद्धिं देहि हूँ। **व्रतीति** श्रीयमारियोगी ॥ १ ॥

सिद्धिनिमित्ताख्यानायाह—**अहो** इत्यादि। **नादं** विकृतरावम् ॥ २ ॥

अभीरोः किं भवेदित्याह—**यद् यदित्यादि**। **मार्गयत** इति चित्ते कुरुते

---

१. अयं श्लोकः केवलं भोटानुवादे वर्तते। २. रक्षा–घ.। ३. अद्भुतं–ग.। ४. निर्व्रतं–घ.। ५. तन्त्रं–सार्वत्रिकः पाठः, गृहीतः पाठस्तु टीकानुसारी। ६. प्रयुक्तेन–ङ.। ७. मार्गयेत्–ख. घ. ङ.। ८. एतत्–च.। ९. परे–ख.घ. ङ.। १०. हतम्–क. घ.। ११. सुस–क.। १२. तन्त्र–क., तन्त्रं–घ.। १३. हूँ हूँ–क.।

एतेन [1]संस्करेत् प्रतिमां यमारे[2]र्घोररूपिणः[3] ।
तं च संप्रार्थयेद् योगी जपेद् ह्रीःष्ट्र्यादिमन्त्रकम् ॥५॥
अमुकीं मे प्रयच्छेति[4] पिता तस्याः प्रयच्छति ।
यमारिणा घातितं स्वप्ने नीयन्तं दक्षिणां दिशम् ॥६॥
[5]पश्यते वै[6] पिता [7]तस्या यदि योगी प्रतारयेत् ।
त्रिमुखं षड्भुजं भीमं मुद्गरं भावयेद् व्रती ॥७॥
इन्द्रनील[8]प्रतीकाशं हस्ततो मुद्गरं न्यसेत् ।
त्रिमुखं षड्भुजं क्रुद्धं [9]दण्डहस्तं भयावहम् ॥८॥
[10]दण्डं पाणौ न्यसेत् प्राणी भयस्यापि भयङ्करम् ।
त्रिमुखं षड्भुजं रक्तं[11] महाभीमं भयानकम् ॥९॥
पद्माख्यं भावयेत् प्राज्ञो हस्ते रक्त[12]सरोरुहम् ।
त्रिमुखं षड्भुजं श्यामं खड्गाख्यं तु प्रभावयेत् ॥१०॥

खड्गाञ्जनपादलेपादिकम् । भगवतः श्रीयमारिनाथस्य प्रतिमार्थं मृत्तिकासंस्कारं वक्तुमाह—**महिषस्येति**। **प्रतिमामिति** प्रतिमार्थं[13] मृत्तिकाम् ॥ ३–५ ॥

अमुकीं मे प्रयच्छेति। तत्पितुस्तस्याश्च नाम प्रक्षिप्य [14]ततः ॐ ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन हूँ हूँ अमुकस्य अमुकीं मे प्रयच्छ हूँ। एवं दशसहस्रजपं कृत्वा सा मार्गणीया। **पिता**ऽस्या ददाति। अदाने सति [15]तत्क्लेशमाह—**यमारिणे**त्यादि ॥ ६ ॥

[16]पूर्वानुक्तमुद्गरादिचतुर्द्वारपालमुखादिमाह—**त्रिमुखमि**त्यादि। सर्वं द्वेषयमारि-रूपम्। केवलं वज्रस्थाने [17]मुद्गरः। एवं मोहयमारिसदृशः [18]दण्डयमारिः सर्वात्मना।

---

१. संक्षरेत्–ङ. । २. यमाय घो–घ. । ३. रूपिणीम्–ग. । ४. प्रयच्छन्ति–ग. च. । ५. साधकस्य–क. ग. च. । ६. नास्ति–च., 'तव', इत्यधिकः पाठ–क. ख. ग. च. । ७. नास्ति–क. ग. च. । ८. प्रभाकारं–ख. घ. ङ. । ९. शुक्लवर्णं–ङ., रक्तवर्णं–भो., महाभीमं भयानकम्–घ. । १०. अयं श्लोको नास्ति–घ. । ११. क्रूरं महारक्तं–ग. च. । १२. रक्तं–ङ. । १३. मार्थे–क. । १४. तत्र–क. । १५. तत्कृतेमोहयमा–क. । १६. पूर्वमुक्त–क. । १७. वज्र-मुद्गरः–क. ग. घ. । १८. नास्ति–क. ग. घ., गृहीतः पाठो भोटानुसारी ।

हस्ते खड्गं प्रभावित्वा सर्वकर्मकरो भवेत् ।
भगे लिङ्गं [1]प्रभावित्वा मण्डलेशं[2] विभावयेत् ॥११॥

[3]द्वेषानुस्मृतिमान् योगी [4]मोहानुस्मृतिभावना ।
[5]मोहानुस्मृतिमालम्ब्य पिशुनानुस्मृतिभावना ॥१२॥

पिशुनानुस्मृतिसंयोगाद् रागानुस्मृतिभावना ।
रागानुस्मृतियोगेन ईर्ष्याख्यं संस्मरेद् व्रती ॥१३॥

[6]संस्फारयेद् रोमकूपाग्रे[7] कुलमेघान् प्रति प्रति ।

केवलं [8]चक्रस्थाने वज्रदण्डः । एवं पद्मखड्गयमान्तरागेष्यर्यमारिसदृशाः सर्वात्मना ॥ ७–१० ॥

पञ्चाकाराभिसंबोध्यनन्तरं यथानुपूर्व्या देवताभावनामाह—**भगे लिङ्गं प्रभावित्वेति** । भगलिङ्गयोगेन प्रकृष्टबीजाक्षराणि भावित्वा निष्पाद्य । अयमर्थः—स्वाभासमापन्नवज्रसत्त्वयमारिमुखे हृद्बीजरश्मिना सर्वबुद्धानानीय प्रवेश्य द्रवीकृत्य देवीकमलोदरे[9] वज्रमार्गेण निपात्य यकारपरिहारेण क्षेमेत्यादिषोडशबीजानि संस्फार्य यथास्थानं संस्थाप्य **मण्डलेशं विभावयेदिति** । महारागानुरागेण द्रवीकृते स[10]प्रज्ञे यमाकारपरिनिष्पन्ने[11] तदनु योगिनीभिः [12]संचोदिते सति मण्डलेशं महाद्वेषयमारिं निष्पाद्य(द)येत् ॥ ११ ॥

द्वेषानुस्मृतिमानिति द्वेषयमारिनिष्पत्तिमान् । **मोहानुस्मृतिभावनेति** । क्षे[13]बीजाक्षरनिष्पन्नं मोहयमारिं भावयेत् । एवमुत्तरोत्तरमपि बोद्धव्यम् ॥ १२–१३ ॥

निष्पन्ने[14] देवताचक्रे[15] स्फरणं वक्तुम्—**संस्फारयेदित्यादि** । **कुलमेघानिति**

---

१. 'प्रतिष्ठाप्य' इति १.३ श्लोकस्य टीकायामुद्धृतोऽन्यत्यः पाठः । २. लेशान्–घ., शं प्रभा–च. । ३. कर्मानुस्मृति–क. ख. ग. घ. च. । ४.–५. महा–सर्वत्र, गृहीतः पाठस्तु भोटानुसारी । ६. स्फार–घ. । ७. पाग्रे–क. ग. च., पाग्रः–ख. घ. । ८. वज्र-सर्वत्र । ९. दरवज्र–क. ग. । १०. सप्रज्ञेपकारपरि–ग. घ., प्रज्ञपका–क. । ११. ष्पन्नत–क. ग. । १२. संवादिते-क. ग । १३ क्षबीजा-क. ग., स्वबीजा– घ । १४. ष्पन्न-क. ग । १५. चक्र-क. ग. ।

सूर्यमण्डलमध्यस्थं [1]चतुःक्रोधं विभावयेत् ।
स्वच्छमण्डलमध्यस्थं(स्थां) चतुर्देवी(वीं) विभावयेत् ॥१४॥

[2]इति [3]सर्वतथागतकायवाक्चित्तकृष्णयमारितन्त्रे[4]
वेतालसाधनानुस्मृति[5]भावनापटलो दशमः ॥

विश्व[6]सदृशदेवतासमूहान् । **प्रति प्रतीति** प्रत्येकम् । **चतुःक्रोधमिति** मुद्गरादिचतुष्टयम् । **स्वच्छमण्डलं** चन्द्रमण्डलम् ॥ १४ ॥

इति दशमपटलव्याख्या ॥

---

१. चण्ड क्रो–भो. । २. नास्ति–घ. ङ. । ३. 'सर्व……… चित्त'–नास्ति–ग. च. । ४. महातन्त्रे–ग. च. । ५. अनुस्मृतिक्रमभेदो दशमः–भो. । ६. 'विश्व' नास्ति–क, असदृश–ग., स्वसदृश–भो. ।

एकादशः पटलः

द्वेषाक्रान्तं जगद् दृष्ट्वा सर्वद्वेषक्षयङ्करम्[1] ।
[2]द्वेषयमारिसद्रूपं[3] भगवता[4] कृपया कृतम्[5] ॥१॥

मोहाक्रान्तं जगद् दृष्ट्वा सर्वमोहक्षयङ्करम्[6] ।
मोहयमारिसद्रूपं भगवता[7] कृपया कृतम्[8] ॥२॥

पिशुनाक्रान्तं जगद् दृष्ट्वा सर्वपिशुनक्षयङ्करम् ।
पिशुनयमारिसद्रूपं भगवता[9] कृपया कृतम् ॥३॥

रागाक्रान्तं जगद् दृष्ट्वा सर्वरागक्षयङ्करम् ।
रागयमारिसद्रूपं भगवता[10] कृपया कृतम् ॥४॥

ईर्ष्याक्रान्तं जगद् दृष्ट्वा [11]सर्वेर्ष्याप्रक्षयाय तु ।
ईर्ष्यायमारिसद्रूपं भगवता[12] कृपया कृतम् ॥५॥

मैत्री [13]तु चर्चिका प्रोक्ता[14] वाराही करुणा तथा ।
मुदिता सरस्वती चैव[15] उपेक्षा गौरिरूपिणी ॥६॥

आत्मना[16] सर्वभावेन निष्पत्तीभूय मण्डले[17] ।
हृद्बीजात् स्फारयेद् योगी सिद्ध्यते नात्र संशयः ॥७॥

द्वेषादिभेदप्रयोजनाख्यानायाह—**द्वेषाक्रान्तमि**त्यादि । **महायमारिः** द्वेषयमारिः । **सद्रूपं** [18]मायाच्छायोपमम् । एवं **मोहाक्रान्त**मित्यादावप्यू[19]ह्यम् ॥ १–६ ॥

नानारूपत्वेऽपि न भेदबुद्धिः कर्तव्येत्याह—**आत्मने**त्यादि । अहमेव मण्डलादिकं सर्वमित्यधिमोक्तव्यम् । [20]सर्वमात्मना न भिर्न(न्न)मित्यर्थः । **हृद्बीजात् स्फारयेद्**

---

१. करः-ख. घ. । २. महा-ङ. । ३. समुद्भूतं-ग. च. । ४. भवता-ङ., भगवतायमवशीकृतम्-भो. । ५. कृतः-ख., न्वितः-घ. । ६. करः-ख. घ. । ७. भवता-ङ. । ८. कृतः-ख. घ. । ९-१०. भवता-ङ. । ११. सर्व ईर्ष्याक्षयाय-ख. घ. ङ. । १२. भवता-ङ. । १३. च-घ. ङ. । १४. प्राप्ता-घ. । १५. प्रोक्ता-च. । १६. आत्माभा-क. ख. ग. घ. च. । १७. मण्डलं-ङ. । १८. मायाच्छाद्यमं-क. । १९. वम्यू-क । २०. सर्वमन्त्री-क. ग. ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि चर्यालक्षणमुत्तमम् ।
यमारेर्भीमरूपस्य कायवाक्चित्तसिद्धये[1] ॥८॥

महाटवीप्रदेशेषु आरुह्य महिषोत्तमम् ।
सर्पैराभरणं कृत्वा अयोवज्रं तु धारयेत् ॥९॥

केशं तु पिङ्गलं कार्यमूर्ध्वरूपं[2] विशेषतः ।
[3]शिरः कपालैः संवेष्ट्य श्मश्रो पिङ्गलमाचरेत् ॥१०॥

ह्रीः ष्ट्र्यादि मन्त्रमुच्चार्य अयोवज्रं [4]रमुद्वहेत् ।
सिंहनादं ततः कार्यं यमारिवज्रप्रयोगतः ॥११॥

किञ्चित्सामर्थ्यमाभुज्य[5] क्रीडया नगरं विशेत् ।
[6]नृत्यं च सुभगं कार्यं [7]षाडवादिप्रशा[8](गा)यनम् ॥१२॥

योगीति । "संस्फारयेद् रोमकूपाग्रे" (१०।१४) इत्यादिना यदुक्तम् । एवं सति किं स्यादित्याह—**सिद्धयत** इति । सिद्धिनिमित्तानि पश्यति ॥ ७ ॥

अथात इत्यादि । **चर्ये**ति [9]चरणं क्रियाविशेषः, तस्य लक्षणं स्वरूपम् । किमर्थमित्याह—**यमारे**रित्यादि । **कायवाक्चित्तसिद्धय** इति । यमारीभवितुमित्यर्थः ॥ ८ ॥

चर्यामेवाह—**महाटवी**त्यादि । यदेवंविधमसौ शक्नोति कर्तुं तदा यमारिसिद्धिमाप्नोति ॥ ९-११ ॥

कदैतत्कर्तुं शक्ते(क्त इ)त्याह—**किञ्चि**दित्यादि । [10]**आभुज्ये**ति साक्षात्कृत्य, न तु [11]श्रुत(त्वा) यथाकथञ्चित्, भावनामात्रेणेत्यर्थः । **षाडवा**दीति । [12]षाडवमिव षाडवमनेकरसम् । नानारागानुरागत इत्यर्थः ॥ १२ ॥

---

१. सिद्धयः-क. ग. च. । २. सिद्धरूपं-क. ग. च., सुद्धरूपं-ख. घ. । ३. 'शिरः…… प्रयोगतः' इति पाठो नास्ति-क. । ४. समुल्लसेत्-ङ. भो. । ५. माभूय-च. । ६. नादं-क. ख. ग. घ. च, नाट्यं-ङ., गृहीतः पाठस्तु भोटानुसारी । ७. नादवारि-क. ग., णादवादि-ख. घ., सादवालि-च. । ८. प्रणा-घ. । ९. चर्परणं-क. । १०. आभुक्तेति-घ. । ११ सूत्र-क । १२. सोत्तरमिव षाडवे-क. ग. ।

[1]ध्वजवीथीं ततो दृष्ट्वा क्षीरं तत्र प्रसाधयेत्[2] ।
क्षीराभ्यासैकचित्तेन महामुद्रां[3] प्रसाधयेत् ॥१३॥

वाराहीरूपमाधाय काम्यन्ते सर्वयोषितः ।
सिंहवद् विचरेद् वीरः सर्वकामार्थसाधकः ॥१४॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि [4]शतबाहोः प्रसाधनम्[5] ।
एकाक्षरमहा[6]मन्त्रजापं तस्य विनिर्दिशेत् ॥१५॥

[7]ह्रीः कारबीजसंभूतं महिषास्यं विभावयेत् ।
वज्रमण्डलमारूढं [8]महिषस्योपरि भावयेत् ॥१६॥

अपरमपि सामर्थ्यं वक्तुं **ध्वजेत्यादि** । **ध्वजं(ज)वीथीम्** उद्बद्धनरम् । **क्षीरमि**ति । तन्मांस[9]पात्रगतममृतास्वादभावनाक्रमेण साक्षाद् द्रवं प्रसाधयेत् । **क्षीराभ्यासे**ति तथाविधामृताभ्यासः ॥ १३ ॥

वाराहीरूपमाधायेति यथोक्तवाराहीरूपमधिमुच्य, स्वयं च [10]द्वेषयमारिरूपेण भवितव्यमित्यर्थः ॥ १४ ॥

अपरं महाफलं संक्षिप्य[11] यमार्यन्तरं वक्तुमाह—**अथात** इत्यादि । अत्र च पूजादि-वज्रपञ्जरान्तर्गताकाशस्थितविश्ववज्रपर्यन्तं सर्वं समानम् ॥ १५ ॥

किं बीजोद्भूतं[12] भावयेदित्याह—**ह्रीःकारे**त्यादि । अत्रायमर्थः—विश्व[13]वज्रस्योपरि रेफेण सूर्यः, तस्योपरि ष्ट्रीःकारेणोत्पन्नम् । किं भूतमित्याह—**स(?)वज्रमण्डले**त्यादि । अयमर्थः—महिषस्योपरिस्थित[14]सूर्यमण्डल[15]मारूढम् ॥ १६ ॥

---

१. ध्वजं वीथी-क. ख. ग. घ. ङ. । २. साधकम्-च. । ३. मुद्रा-क. ग. च. । ४. मुद्रोपायप्र-भो. । ५. साधकः-घ., धनः-च. । ६. मन्त्रं-ङ. भो. । ७. ष्ट्रीः-सार्वत्रिकः पाठः, गृहीतः पाठस्तु भोटानुसारी । ८. महिषस्थो विभा-क. ग., महिषाननभावना-च. । ९. तत्सामान्यपात्र-क. । १०. 'द्वेष' नास्ति-भो. । ११ संक्षिप्त-च. । १२. जोद्धृतं-क. ग. । १३. वज्रस्यान्त-भो. । १४. स्थितः-घ. । १५. समारू-ग. घ. ।

ये केचिद् भुवि [1]विद्यन्ते [2]शस्त्रास्त्राऽनेकरूपिणः ।
भुजानां [3]भावयेद् धीमान् [4]माहिषा(षे) मन्त्रसाधने ॥१७॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि दण्डयमारिसाधनम् ।
ह्लोःकारं महामन्त्रं महामहिषवाहनम्[5] ॥१८॥

भुज[6]द्विलक्षसम्पूर्णं भस्मोद्धूलितविग्रहम् ।
सुमेरुपर्वतोत्तुङ्गं[7] समाक्रान्तरसातलम् ॥१९॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि कोटिबाहोः प्रसाधनम् ।
विकृताननमहामन्त्रं हूंकारसंभवं विभुम् ॥२०॥

ॐ ह्लोः ष्ट्रीः विकृतानन हूं हूं फट् फट् हः हाः हिः हीः हुः हूः हेः हैः होः हौः हंः हः फट्[8] स्वाहा ॥२१॥

समयसाधनमतो वक्ष्ये सर्वकार्यप्रसिद्धये ।
मन्त्रखिन्नस्याहारं[9] निरवद्यमदुर्लभम् ॥२२॥

---

[10]शस्त्राख्यानायाह—**ये केचिदित्यादि** । **भुजानामिति** भुजेषु[11] ॥१७॥

दण्डयमारावपि सर्वं [12]शतबाहोरिव साधनम् । ह्लीःकारः परमस्य बीजम्, मुखं च मानुषम् ॥१८॥

सुमेरुपर्वतोत्तुङ्गमिति तदिवोच्चैस्तत्समम् ॥१९॥

विकृताननेऽपि दण्डयमारिवत् । हूँकारः पुनरस्य बीजम् । तेन सर्वं निष्पाद्यम् ॥२०–२१॥

मन्त्रखिन्नस्येति योगिनः । **अदुर्लभमिति** । सर्वहेयत्वेन संग्रहे[13] गृहीतत्वात् ॥ २२ ॥

---

१. भिद्यन्ते–भो. । २. शत्रवोऽनेक–क. ग., नानारू–ख., शत्रूणां नामरू–घ., शत्रूणां नानारू–ङ. । ३. धारयेत्–भो. । ४. माहिषो–ख., महिषो–क. ग. घ., महिषाननसा–ङ. । ५. महिषमासनम्–ङ. । ६. दशल–भो. । ७. तुङ्गस–क. ग. च. । ८. 'फट्' नास्ति–क. ख. ग. घ. ङ. च., गृहीतः पाठस्तु भोटानुसारी । ९. स्य हाकारं–च. । १०. आरूढा–क. ग. घ. । ११, भुजम्-क. । १२. गतबाहो–क. ग. घ. । १३. संग्रहणं–क. ।

महामांसं[1] हयं चैव गजं चापि विशेषतः ।
गोरूपं [2]कुक्कुरं चैव खरोष्ट्रं क्रोष्टमेव च ॥२३॥

महातैलेन चाभ्यज्य[3] नीलीमिश्रेण पाकयेत् ।
वशमानयेत् जगत् सर्वमस्याभ्यङ्गमात्रतः[4] ॥२४॥

[5]रोचना सिन्दुवारं च बिल्वपत्रं तथैव च ।
[6]इष्टचूर्णसमार्धेन कनकपत्ररसेन तु[7] ॥२५॥

अनेनोद्वर्तितं[8] गात्रं त्रैधातुवशमानयेत् ।
विषं लूतं तथा कुष्ठं नश्यत्युद्वर्तनेन तु ॥२६॥

महामूत्रं तु पातव्यं महावज्रामृतं तथा ।
एष[9] योगवरः श्रेष्ठः स्वयम्भुकुसुमपान[10]वत् ॥२७॥

खरो गर्दभः । **क्रोष्टुः** शृगालः ॥२३॥

महातैलेन नृतैलेन[11] । **नीली** नीलिका, **मिश्रेणे**ति समभागनीलीपत्रस्य रसेन ॥२४॥

उद्वर्तनाख्यानायाह—**रोचने**त्यादि । रोचनेति वैरोचनः, स चात्य(द्य)न्तपरिहारेण मध्यो ग्राह्यः । **इष्टचूर्णे**ति बहुतरकालस्थानीयस्थितेष्टकाचूर्णति[12][म्] । **समार्धेने**ति । रोचनादिभिः समभागैर्यावतो मात्रा तावतीष्ट[का]चूर्णस्यापि । **कनकं** धुत्तूरम्[13] । सर्वमेकीकृत्यानेन [14]योजनीयम् ॥२५-२६॥

महामूत्रं नृमूत्रम्, **पातव्यम्**, नासिकयेति शेषः । **महावज्रामृतं** बोधिचित्तम् । किमेकैकमेव तत् पातव्यमित्याह—**स्वयम्भुकुसुमपानवत्** । स्त्रीरजसा सह व्यति-

---

१. मात्स्यं—क. ख. ग. । २. कुर्कुरं—ख. च. । ३. भ्यङ्ग्य—क. ग. घ. ङ. च. । ४. भ्यङ्गपानतः—ख. घ. च., क. ग. मातृकयोस्तु पूर्वपङ्क्तिपाठो भ्रान्त्या पुनरावर्तितः । ५. लोचना—ख. घ. । ६. 'इष्ट' नास्ति—ङ, चूर्णसंमिश्रेण—भो. । ७. वा—ङ. । ८. नोद्वर्जितं—क. ग., अयं श्लोको नास्ति—घ. । ९. एवं—घ. । १०. पात—क. ग. च. । ११. नृतैलं—क. । १२. चूर्णे-क. ग. । १३. तूरः—क । १४. पेषणीयं—ग. घ. ।

[1]इति [2]सर्वतथागतकायवाक्चित्तकृष्णयमारितन्त्रे[3] चर्यासमयसाधनपटल[4] एकादशः[5] ॥

मिश्रम् । अस्योपलक्षणत्वादपरेऽपि तथागता बोद्धव्याः । अयं त्वर्थः स्फुटीकृतो(त्या)ऽनन्तरे पटले—"चतुःषष्टिबलिं दद्याद् दण्डे चतुःषष्टिके बुधः" (१२।१३) इत्यत्र वक्तव्यः ॥२७॥

इत्येकादशपटलव्याख्या ॥

१. नास्ति–घ. ङ. । २. 'सर्व''' चित्त' नास्ति–ग. च. । ३. महातन्त्रे–च. । ४. पटलः–घ. । ५. चर्यानिर्देशो नाम क्रियातन्त्रक्रमप्रभेदपटल एकादशः–भो. ।

द्वादशः पटलः

अथ भगवान् महापुरुषसमय[:] चर्चिकाकारां[1] समाधिं समापद्य, [2]वज्रवाराह्याकारां समाधिं समापद्य, सरस्वत्याकारां समाधिं समापद्य, गौर्याकारां समाधिं समापद्येदं पूजागीतमुदानयामास ॥१॥

अडेडे किट्टयमारि गुरु [3]रक्तलूव सहाव।
हडे तुअ [4]पेक्खिअ भोमि गुरु छड्डुहि कोह सहाव ॥२॥

पइणच्चंते कंवि अइ सग्गमच्चपाआलु।
किट्ट भिण्णाञ्जण कोहमणु णच्चहि तुहु वे आलु ॥३॥

मण्डलचक्रपूजागीताख्यानायाह—**अथेत्यादि**। **महापुरुषेति**। [5]संभोगात्मकोदारकायत्वेन महान्, "आधृ(धि)येत्(त) पुरं यस्मात् पुरुषस्तेनाभिधीयते"[6] इति पुरुषः, पुरं तु मण्डलचक्रम्, [7]तस्य समयं स्फरणं यस्मादसौ महापुरुष[8]समयः श्रीवज्रसत्त्वः। **चर्चिकाकारं समाधिं समापद्ये**ति वज्रचर्चिकामूर्तिं कृत्वा। [9]एवमपरत्रापि। **उदानयामासे**ति उक्तवान् ॥१॥

अडेडे[10]इति। **किट्टयमारी**ति कृष्णयमारे। **हडे** इति अहमेतत्प्रा(तदा)त्मिका चर्चिका। **तुअ** इति त्वाम्। **पेक्खिअ** प्रेक्षा(क्ष्य)। [11]**भोमि** बिभेमि। **गुरु** गुरुम्। **छड्डुहि** त्यज। **कोह सहाव** कोऽयं स्वभावं(वः) ॥२॥

सग्गमच्चपाआलु इति स्वर्गमर्त्यपातालानि। **किट्ट भिण्णाञ्जणे**ति भिन्नाञ्जनवत् कृष्ण। इति वाराहीवाक्यम् ॥३॥

---

१. नास्ति–घ., वज्रसत्त्वस्वरूपचर्चिकाकारां–भो.। २. 'वज्र' नास्ति–भो.। ३. रक्तसंहरुत्समोहाव–क., रक्तसरुत्सुसोहाव–ख., रक्तमरु सुसरा हाव–घ.। ४. रुत्सपेक्ख–ख., तुत्सपेत्का–च., तुत्सयेवरय–घ.। ५. निजसंभो–भो.। ६. धीयेत–क.। ७. तस्य समयस्तु यदुपस्फरणं तस्मा–भो.। ८. पुरुषः–क.। ९. परमप–क. ग.। १०. अरे–भो. ११. भामि–घ.।

कालाखव्व पमाणहा बहुविह णिम्मसि रूअ ।
वज्जसरास्सइ विण्णममि णच्चहि तुह महासुहरूअ ॥४॥

ह्लीः ष्ट्रीः मन्तेण फेडहि केहु तिहुअण भान्ति ।
करुणाकोह भराडउ तह कुरु जगु पेक्खन्ति ॥५॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि जापलक्षणमुत्तमम् ।
येन जापप्रयोगेन(ण) भूयसीं सिद्धिमाप्नुयात् ॥६॥

न द्रुतं न विलम्बितं न च [1]ह्रस्वं न [2]दीर्घकम् ।
न[3] किञ्चिच्छ्रूयते मन्त्रं जपमानो[4] नरोत्तमः ॥७॥

महिषं मानुषं द्विरदं गोरूपं वाजिमेव च ।
खरोष्ट्रं[5] धातुं संगृह्य [6]जापमालां प्रसाधयेत् ॥८॥

कालेति हे कृष्ण । **खव्व**[7]**पमाणे**ति खर्वप्रमाण । **बहुविहे**ति बहुविधम् । **णिम्मसी**ति[8] निर्मिमीषे । **रूअे**ति रूपम् । **वज्जसरास्सइ** इति वज्रसरस्वती । **विण्णममि**[9] विज्ञापयामि[10] । **णच्चहि तुह**[11] इति नृत्य त्वम् । **महासुहरूअ** इति हे महासुखरूप[12] ॥४॥

वज्रगौरी वाक्यमाह—**ह्लीः ष्ट्रीः** इत्यादि **फेडहि** स्फेटय । **तिहुवण भान्ति** त्रिभुवनस्य भ्रान्तिम्[13] । **करुणाकोह** हे [14]करुणाक्रोध । **भराडउ** भट्टारक । **तह कुरु** तथा कुरुष्व । **जगु** जगन्ति । **पेक्खन्ति** प्रेक्षन्ते ॥५॥

[15]**जापलक्षणं** [16]जापमन्त्रोच्चारणरूपम् ॥ ६ ॥

न दीर्घेति ह्रस्वस्य दीर्घोच्चारणम् । **न च ह्रस्वक**मिति । न दीर्घो ह्रस्वः कार्यः । **न किञ्चिच्छ्रूयते**[17] **मन्त्र** इति । यथा अन्येन न श्रूयते तथा जपेदित्यर्थः ॥७॥

[18]**यममारि** यमारे । **द्विरदे**ति हस्ती । **वाजिमि**ति अश्वम् । **धातुमि**ति अस्थि ॥८॥

---

१. दीर्घं–क. ख. ग. घ. च. । २. ह्रस्वकं–क. ख. ग. घ. च. । ३. 'न' नास्ति–ङ. भो. । ४. यमाचार्य–ङ. । ५. रोष्ट्र–क. ख. ग. घ. च. । ६. जप–क. । ७ खच्च–क. ग. । ८. णिर्मासानि–क. । ९ विण्णमसि–ग. घ. । १०. पयसि–घ । ११ तुहु घ. । १२. स्वरूप–भो. । १३. भुवनमात्रोक्ति–क. । १४. वज्रकोध-भो. । १५. जाप्य–क., जापो–ग. । १६ जाप्य-क , जापो–ग । १७. ज्ञायते-क. ग. घ । १८. 'यममारि यमारे' पाठोऽयं सर्वास्वेव टीकामातृकासूपलभ्यते, किन्तु मूले नास्ति क्वाप्यस्य प्रसङ्गः ।

मासि मासि चतुर्दश्यां पञ्चमांसेन लेपयेत् ।
पञ्चामृतसमायुक्तं जाप(प्यं) सिद्धिकरं परम् ॥९॥
प्रति प्रतिगुलिकां योगी यमारिं भावयेद् बुधः ।
अथवा मानुषं[1] मुण्डमसृगार्द्रं विभावयेत् ॥१०॥
अयुतमात्रेण भूतानां डाकिनीनां सहस्रके ।
मारयेत् प्रेतसंघातं यममारिप्रयोगतः ॥११॥
लक्षजापेन[2] योगात्मा सर्वकर्म करोत्यसौ ।
कोटिजापेन सिद्धिः स्यात् का कथा कोटिपञ्चके ॥१२॥

चतुर्दश्यां कृष्णायाम् । **पञ्चमांसेने**ति गोकुदहनमांसेन । **जाप्यमि**ति जाप्यमाला । **मानुषं मुण्डमसृगार्द्रमि**ति जाप्यमालम्, सद्यश्छिन्नस्रवद्रुधिरं[3] मानुषमुण्डम्, तेन मालयैव जपामीत्यधिमोक्तव्यम् ॥ ९-१० ॥

भूतानामितीन्द्रादीनां मानुषाविष्टकर्तॄणाम् । **डाकिनीनामि**ति द्वितीयार्थे षष्ठी । **सहस्रके** सहस्रेण **मारयेद्** निगृह्णाति । [4]**यममारिप्रयोगत** इति । तत्र यथावद्यमारियोग-भूतादि गृहीत्वा ज्ञात्वा, तस्मिन् पुरुषे तं भूतादिकं हृद्बीजरश्मिनाकृष्य प्रवेश्य बद्ध्वा, जः हूँ वँ इत्यक्षरत्रयेणाकर्षणादित्रयं कर्तव्यमनुक्रमात् । तदनु विश्व[5]वज्रयन्त्रितमस्तकं हूँकारजपञ्चशूकवज्रद्वयेन पीडितपार्श्वद्वयं [6]यंकारजवायुमण्डलाद्दीपिता[7]ऽग्निमण्डलेना-धस्ताद् दह्यमानमाकण्ठं साध्यं ध्यात्वा ज्वलद्हूँकारनिष्पन्नाशनिसंनिभैः सर्षपैरष्टोत्तर-शताभिमन्त्रितैर्निर्भिद्यमानवपुषं पश्यन् साटोपमन्त्रमावर्तयन् ताडयेत् । नियतं मुञ्चति । अथवा स्वकरद्वये हूँकारजज्वलद्वज्रद्वयं ध्यात्वा माध्यशरीराद् भूतादिकमाकृष्य [8]वज्रद्वय-मध्यगतं कृत्वा तद्रश्मिभिर्दह्यमानं स्वकरसंपुटेन शनैः शनैः [9]पीडयन् मर्दयेत्, मन्त्रं च आर्वतयेत् । एवमेव पादेन वा[10] मर्दयेत् ॥ ११ ॥

पूर्वसेवां विना न कार्यसिद्धिरिति तदर्थमाह—**लक्षजापेने**त्यादि । **योगात्मा** देवतायोगवान् । **सिद्धिरि**ति यमारिरूपतावाप्तिः । **का कथे**ति । नासौ मानुष्यवाग्-गोचरा[11], बुद्धगोचरत्वात् ॥ १२ ॥

---

१. नुषमु–ङ. । २. गोपन–घ. । ३. द्रुधिरं मुण्डं–क., द्रुधिरो मानु–ग. । ४. यमारि–ग. । ५. वज्रालङ्कृत–भो. । ६. पंकार–ग. । ७. द्दीपितो–क. । ८. चक्र–क, ग. । ९. पातयन्–क. । १०. चाम–क. घ. । ११. गोचरो–क, घ. ।

प्रतिदिनं प्रतिमासं वा प्रतिसंवत्सरं तथा।
चतुःषष्टिर्बलिं दद्याद् दण्डे चतुःषष्टिके बुधः[1] ॥१२॥

"महामूत्रं तु पातव्यम्" (११।२७) इत्यादिकमुक्तम्, तत् कदा पातव्यमित्याह—**प्रतिदिनं** प्रत्यहम्। प्रत्यहाप्राप्तौ किं कर्तव्यमित्याह—**प्रतिमासम्**। प्रतिमासाप्राप्तावाह—**प्रतिसंवत्सरम्**। बलिं दद्यादिति सम्बन्धः। **बलिमिति** तथागतादीनां[2] पूजाप्रकारम्, अ(ा)ध्यात्मिकहोमत्वादस्य नस्यस्य। चतुःषष्टीत्यस्य दण्ड इत्यनेन सम्बन्धः। अयमर्थः—चतुरधिका षष्टिर्दण्डा यस्मिन्नसौ चतुःषष्टि[3]दण्डोऽहोरात्रः, तस्याहोरात्रस्य दण्डे[4]। किंभूते[5]? चतुःषष्टिके[6] चतुःषष्टितमे, रात्रेः शेषदण्ड इत्यर्थः। नस्ये (स्यमि)-त्यत्रोपदेशात्। आदिवैरोचन-रत्नसम्भव-अमिताभ-अक्षोभ्या[7]मोघसिद्धिभिः[8] प्रत्येकं पञ्चरक्तिकमानैरधिकोऽक्षोभ्यः। [9]शेषः(षैः) विपारदाख्यवज्रस्य एकरक्तिकां संमूर्च्छितैर्देयम्[10]। रत्नसम्भवो गृह्यमाणः कृष्णाया कृष्णगौर्यश्च [11]कृष्णपक्षे ग्राह्यः। [12]शुक्लायाः गौर्यास्तु शुक्लपक्षः(क्षे)। परं यदि नाम शुक्लकृष्णपक्षौ सामान्यसिद्धौ, तथाप्यत्रावान्तरभेदात् शुक्लपक्षे [13]प्रतिपद्द्वितीयातृतीया[सु] शुक्लपक्ष[14]कार्यं कर्तव्यम्। चतुर्थीपञ्चमीषष्ठीषु तु कृष्णपक्षकार्यं कर्तव्यम्। एवं सप्तम्यादौ दिनत्रये शुक्लपक्षकार्यम्। दशम्यादौ दिनत्रये कृष्णपक्षकार्यम्। त्रयोदश्यादिदिनत्रये शुक्लपक्षकार्यम्। यथोक्तव्यतिक्रमेण कृष्णपक्षे प्रतिपदादिदिनत्रयं बोद्धव्यम्। तथा चाग(ग)मः—"शशिन्यपि च सूर्यः स्यात् सूर्येऽपि स्यान्निशाकरः" इति। शशीत्यत्र शुक्लपक्षः, सूर्यः कृष्णपक्षः। इदं चोक्तम्—यथोक्तशुक्लपक्षसम्बन्धिदिवसस्य रात्रिशेषेषु वामनासापुटेन नस्यं देयम्। [15]तथा कृष्णपक्षदिवसस्य रात्रिशेषेषु दक्षिणनासापुटेन नस्यम्। [16]तच्च नस्यं वारुणमाहेन्द्रयोगेन वामनासापुटेनातिश्रेष्ठम्। अग्निवायुयोगेन तु मध्यमम्। दक्षिणनासापुटेन त्वग्निवायुयोगेन सर्वथा न दातव्यम्। वारुणमाहेन्द्रयोगेन च परं देयम्। तथा चोक्तम्—

क्षितौ जले शुभं कर्म कृष्णं वायौ हुताशने।
चन्द्रे सम्यक् शुभं विन्द्यान्मध्यमं[17] तीक्ष्णतेजसि ॥

---

१. पुनः—क., नास्ति—ङ.। २. तादीन्—क.। ३. दण्डैरहो क.। ४. दण्डं—घ.। ५. किंभूतं—क. घ.। ६. षष्टिकं—क.। ७. क्षोभ्यसाक्ष्यात्मक—क., नवलोकात्मक—ग. घ.। ८. द्विरिति—क.। ९. नास्ति—क. ग. घ.। १०. द्वयम्—क. ग.। ११. शुक्ल—क. ग. घ.। १२. कृष्णगौर्या कृष्णगौरकृष्णयोः—क. ग. घ.। १३ पक्षप्रतिपदा—क.। १४. पक्षे—क.। १५. 'तथा ... सस्य' नास्ति—भो.। १६. नास्ति—क.। १७. मध्ये सन्ती—क. ग.।

यत्किञ्चित् खाद्यते[1] नित्यं यत्किञ्चित् पीयते तथा ।
अन्यद्वा भक्षणे सर्वमग्रं दद्याद् यमारिणं[2](णे) ॥१४॥
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि गुरवे दातुं प्रदक्षिणाम् ।
आत्मनः शान्तये चैव सिद्धये सर्वकर्मणः ॥१५॥
निर्यातयेदा(त आ)त्मानं हयं[3] गोरूपकुञ्जरम् ।
धान्यं चामीकरं वाथ पुत्रं वा स्वस्त्रियं तथा ॥१६॥
जननीं भगिनीं वापि भागिनेयीं तथैव च ।
वस्त्रं नानाविधं चैव छत्रं वा चारुचामरम् ॥१७॥
गृहं पीठं सुगन्धं च गेयं वाद्यं तथैव च ।
खड्गं चाभरणं चैव प्रदद्याद् गुरवे व्रती ॥१८॥
[4]इति [5]सर्वतथागतकायवाक्चित्तकृष्णयमारितन्त्रे[6]
[7]सर्वोपायिकविशेषको[8]नाम [9]द्वादशः पटलः ॥

वाय्वग्नी यदि [10]शून्ये वै नियतं[11] पञ्चतां दिशेत् ।
तदेव शशिसंभूत(तं) नात्यन्तं दुःखदायकम् ॥ इति ।

योगाश्चत्वारः—वाय्वग्निमाहेन्द्रवारुणाख्याः । यथाक्रमं पार्श्वोर्ध्वमध्याधोवायुवहनलक्षणे(णाः)। अन्यकार्यं तदेतेषु[12] शुभाशुभलक्षणेषु स्वयमभ्यूह्य वा कार्यम् । येन सततं यमारि[13]योगोऽभ्यस्तस्तस्य यद् यावत् कृत्यं तद् यममारेरेवेति तं प्रति किमपि नाभिधीयते । यस्य तु न स्यादभ्यासः, तेनेदृगधिमोक्तव्यम् ॥ १३ ॥

तदर्थमाह—**यत्किञ्चित्**'' **अन्ये(न्यद्) वा भक्षण** इति पुष्पतिला[14] दिकमग्रे **दद्यात्** प्रथमं निवेदयेत् ॥ १४ ॥

गुरौ तुष्टे सर्वसिद्धिरिति तद्दानार्थमाह—**अथात** इत्यादि । प्रकृष्टां दक्षिणां **प्रदक्षिणाम्** ॥ १५–१८ ॥

[15]**सर्वोपायिक** इति यत्र [16]यद् रुचितं तद्विशेषकस्तत्प्रतिपादक इति ।

इति[17] द्वादशपटलव्याख्या ॥

---

१. खाद्यन्ते-क. ग. च. । २. रिणः-क. ख. ग. घ. ङ. । ३. हयं-क. ख. ग. घ. च. । ४. नास्ति-घ. । ५. 'सर्व''''चित्त' नास्ति-ग. च. । ६. महातन्त्रे-ग. च. । ७. सर्वोपयोगिकर्मविशेषो नाम क्रमभेदो द्वादशः-भो. । ८. 'कोनाम' नास्ति-च. । ९. पटलो द्वादशः-ग. च. । १०. सूर्ये-क. घ. । ११. नित्यं-क. । १२. तदेषु-क. । १३. यागो-क. ग. । १४. तिलका-भो. । १५. सर्वापायि-क. ग. । १६. यदुचितं-क घ. । १७. नास्ति-ग. घ. ।

त्रयोदशः पटलः

[1]अथातः [2]सर्वसत्त्वस्य यावन्तः पापकर्मकाः ।
तान् वै कर्तयितुं [3]कर्त्री कोशः[4] क्लेशादिच्छेदनात् ॥१॥
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि[5] वज्रडाकिनिसाधनम् ।
खधातुमध्यगतं चिन्तेत्[6] सूर्यमण्डलमुत्तमम् ॥२॥
पञ्चशूलं[7] विभावित्वा [8]पदं तस्योपरि न्यसेत् ।
कृष्णवर्णां महाभीमां षड्भुजां चारुरूपिणीम् ॥३॥

भगवदायुधविशुद्धिं वक्तुमाह—**अथेत्यादि** । [9]**यावन्तः पापकर्मका** इति । पापकर्माणि दुःखानि । **कोशः**[10] खड्गः । **क्लेशो** रागादिः । उपलक्षणत्वाद्यथोक्तस्यापरा अपि विशुद्धयो बोद्धव्याः ॥१॥

खधातुमध्यगतं चिन्तेदिति । सप्तविधानुत्तरपूजाचतुर्ब्रह्मविहारभावनानन्तरं शून्यताभावनया स्वप्नमायोपमे[11] ग्राह्यग्राहकरूपजगदि(ति) कृतेऽवकाशात्मकाकाशमहाभूते आकाशदेशे भावयेत् । किमित्याह—**सूर्यमण्डलम्**, रेफसंभवमिति शेषः ॥२॥

पञ्चशूलमिति हूँकारेण विश्ववज्रम् । **पदमि**त्याश्रयं कूटा[12]गाराख्यम् । तदयमर्थः—वज्रप्राकारवज्रपञ्जरान्तर्गतं विश्ववज्र[13]वेदिकान्तःस्थं चतुर्महाभूतपरिणतकूटा[14]गारम् । एवमुत्तरत्रापि मण्डलचक्रान्तर्गतं बोद्धव्यम् । द्रीं[15]मिति बीजाक्षरोपन्यासः । पूर्ववदत्रापि पञ्चाकाराभिसंबोध्यादि । परं चन्द्रसूर्यवज्रबीजसंहारद्रवोत्थे[16] पुनर्वज्रस्थबीजमेवात्र[17] वज्रसत्त्वः । तत्परिणामत एव[18] भगवतीनिष्पत्तिः । तस्य हृदयबीजान्माण्डलेयदेवतास्फरणम् ॥३ ॥

---

१. अतः–ङ. भो. । २. संप्रवक्ष्यामि–क. ग. च. । ३. कर्ता–ख., कर्तिः–घ. ङ. । ४. काशकुशादि–ख. । ५. इतः परं 'दीर्घकालश्रुतिसाधनाय' इत्यधिकः पाठः-भो. । ६. चित्तं–क. । ७. मूलं–ङ. । ८. तस्य–क. ख. ग., नास्ति–घ., मध्ये–च. । ९. भो. पाठः । १०. कोश–घ. । ११. पमग्राह्य–क. ग. । १२. १४. कूटांगार-क. । १३. वज्रान्तवे–घ. । १५. दीमिति–क. ग., धीमिति–भो. । १६. द्रवोत्थपुन–क. ग., द्रवोत्थं–भो. । १७. 'अत्र' नास्ति–भो. । १८. एवं–क. ।

हस्ते वज्रं विभावित्वा शेषानन्यकरे न्यसेत् ।
पूर्वेण बुद्धडाकि[1] तु षड्भुजां[2] मोहसन्निभाम्[3] ॥४॥
चक्रहस्तां महाभीमां भावयेद् योगमण्डले ।
दक्षिणे रत्नडाकिं तु षड्भुजां पिशुनसन्निभाम् ॥५॥
रत्नहस्तां महादीप्तां भावयेत् सूर्यमण्डले ।
पश्चिमे पद्मडाकिं तु षड्भुजां पद्मधारिणीम्[4] ॥६॥
उत्तरे कर्मडाकिं तु [5]खड्गिनीं भगमण्डले ।
आग्नेयादिचतुष्कोणे [6]देवीनां भावयेद् व्रती ॥७॥
लास्या माला(ल्या) तथा नृत्या गेयां(या) चैव विशेषतः ।
द्वारपालान् ततो ध्यायाद् विधिदृष्टेन कर्मणा ।
मुद्गरं दण्डपद्मं च [7]कोशं चापि तथापरे ॥८॥
ॐ वज्रडाकिनि[8] । ॐ बुद्धडाकिनि ।
ॐ रत्नडाकिनि । ॐ पद्मडाकिनि ।
ॐ कर्मडाकिनि । ॐ[9] लां मां नां गां कोणे ।

हस्ते दक्षिणमूल[10]हस्ते । **शेषान्** पञ्चकानिति खड्गकर्त्रिचक्रपद्म[11]कपालानि । वज्रडाकिन्यादयः [12]पञ्चाप्येता द्वेषयमार्यादिवत् त्रिमुखाः षड्भुजाः । [13]लास्या शुक्ला नीला नृत्याभिनया । ज्ञे(गे)या श्यामा गीताभिनया । एता द्विभुजा एकाननाः । **तथापर** इति । [14]द्वारेषु [15]मुद्गराद्यास्तु पूर्ववत् । कोणेषु चानिर्दिष्टमपि कपालचतुष्टयम् ॥४-८॥

ॐ वज्रडाकिनीत्यादि [16]जपमन्त्र[ा]ः ॥९॥

---

१. डाकि–क. ग. । २. भुजा–क. ग. । ३. निभा–क. ग. । ४. रिणी–ङ. च. । ५. खड्गधारिणी मण्डलक्रमे–भो. । ६. 'देवीनां·······पद्मं च'–नास्ति–क. ग. च. । ७. शेको–क. ग., खड्ग–भो., नास्ति–च. । ८. 'डाकिनी' इति दीर्घः सर्वत्र–क. ग.ङ. च. । ९. 'ॐ' नास्ति भो., लां नां गां मां–भो. । १०. शूल–घ. । ११. मुद्गराणि–भो. । १२. 'पञ्चापि' नास्ति–भो. । १३. लास्या तु शुक्ला (श्यामा ?) लास्याभिनया, माला पीता माल्या[भिनया,] नृत्या रक्ता नृत्याभिनया, ज्ञे(गे,या श्यामा गीताभिनया–भो., अयमेव पाठः शोभनः । १४. द्वारस्थ-क. ग. । १५. मुद्गरयमार्याद्यास्तु-भो. । १६. जप्य–क. ग. ।

ॐ मुद्गर जः। ॐ दण्ड हूं।
ॐ पद्म वं। ॐ खड्ग हो[1] ॥९॥

इत्याह भगवान् [2]वज्री वज्रडाकिनिसाधनम्।
दूरा(र)श्रम(व)णसिद्धयर्थं भावयेद् वज्रडाकिनीम्[3] ॥१०॥

तत्रेमाणि[4](नि) मन्त्रपदानि भवन्ति—
ॐ आकाशचर[5] डाकिनीये[6] हूं हूं फट् फट् स्वाहा ॥११॥

अथान्यत्[7] सम्प्रवक्ष्यामि वज्रपातालसाधनम्।
पातालबिलसिद्धयर्थं भावयेत् शुम्भ[8]वज्रकम् ॥१२॥

षड्भुजं नीलवर्णाभं पाणौ तु मुसलं न्यसेत्।
[9]गर्भमण्डलमध्ये तु इदं न्यासं प्रचारयेत् ॥१३॥

पूर्वेण लोचनां स्थाप्य दक्षिणे मामकीं तथा।
पश्चिमे पाण्डरां[10] देवीं तारिणीमुत्तरे न्यसेत् ॥१४॥

मन्त्रभावनाप्रयोजनमाह—**दूरेत्यादि**[11]। दूरतः श्रवणं दूरश्रवणम् ॥१०-११॥

[12]**समारूढमिति**। प्रत्यालीढेण(न) स्थिता। **रत्नकिरीटिनं** रत्नमौलिनम्। **खड्गमिति** दक्षिणहस्ते। **तर्जनिकापाशमिति** वामहस्ते ॥१२-१३॥

लोचनामिति शुक्लाम्, दक्षिणे चक्रधराम्। **मामकीं** नीलाम्, दक्षिणे वज्रधराम्। **पाण्डरां** रक्ताम्, दक्षिणे पद्मधराम्[13]। **तारां** श्यामाम्, दक्षिणे खड्गधराम्। सर्वा देव्यः प्रत्यालीढपदाः, वामे तर्जनीपाशभृतः[14] ॥१४॥

---

१. होः—भो.। २. नास्ति—घ.। ३. किनी—क. ख. घ. ङ. च.। ४. तत्र मारिमन्त्र—क., तत्रैव—ग., तत्र गुह्यमन्त्रसिद्धि—भो.। ५. काशचारण—क. ग., चरण—ख. घ., चरवज्रडा—भो.। ६. 'ये''''फट्' नास्ति—क. ख. घ ङ. भो.। ७. अथातः—ग.। ८. सुभ—च.। ९. 'गर्भ''''न्यसेत्'—नास्ति—क. ग. च.। १०. पाण्डुरा—घ.। ११. फलेत्यादि-क. ग.। १२. इदमत्र विशेषेणावधेयम्—मूले स्थितयोर्द्वादश-त्रयोदशश्लोकयोष्टीका नास्ति, टीकायां चानयोर्यानि प्रतीकानि लभ्यन्ते तेषां मूलं नास्ति, भोटपाठेऽपीयमेव स्थितिः। १३. पद्मपत्राम्—क. ग.। १४. धृतः—ग.।

पुष्पां धूपां तथा दीपां गन्धामाग्नेयादिषु[१] न्यसेत् ।
द्वारेषु[२] मुद्गरादीनि सर्प[३]मण्डितमेखला[४] ॥१५॥
एवं तद् भावयेच्चक्रं विधिदृष्टेन कर्मणा ।
[५]स्वप्ने तु पश्यते मार्गं वज्रपातालयोगवान् ॥१६॥
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि सप्तिराजस्य मण्डलम् ।
[६]खेचरत्वप्रसिद्ध्यर्थं परमाश्वं प्रसाधयेत् ॥१७॥
द्विभुजमेकवक्त्रं तु श्यामवर्णं भयानकम् ।
सूर्योपरि समारूढमश्वमुखं सुभीकरम् ॥१८॥
दक्षिणे माषमुष्टिं तु वामे पाणौ कपालकम् ।
ॐ [७]फु फु फु ह्री ह्री ह्री जपेत्प्राज्ञः परमाश्वप्रसिद्धये ॥१९॥
पूर्वेण वडवा[८](वां) ध्यायेद् दक्षिणे च तुरङ्गमाम्[९] ।
पश्चिमे सप्तिराज्ञीं तु परमाश्वामुत्तरे न्यसेत् ॥२०॥

पुष्पां [१०]शुक्लां पुष्पमालाहस्ताम् । **धूपां** नीलां धूपकटच्छुधराम् । **दीपां** रक्तां दीपयष्टिधराम् । **गन्धा(न्धां)** श्यामां [११]गन्धशङ्खधराम् । एता आलीढस्था नृत्याभिनयाः । **मुद्गरादीनि** पूर्व[व]देवेति शेषः ॥१५॥

विधिदृष्टेन कर्मणेति । भगवन्निष्पत्तये तद्हृदयबीजादेव सर्वदेवताः स्फारयेत् ॥१६॥

सप्तिराजस्येति परमाश्वस्य, विभावयेदिति पूर्ववत् ॥१७-१८॥

दक्षिणे दक्षिणहस्ते । मन्त्रः—हूः [१२]त्रयं ह्लीःत्रयं च । मुद्रा[१३]मन्त्रा नोक्ता न वक्ष्यन्ते च । सर्व(र्वे)[१४] तथागतवर्णानुसारेण बोद्धव्या । देवीनां वर्णादिभेदः पूर्वचक्रवत् ॥१९-२०॥

---

१. मालादि–घ., मालाविलेपनं–च. । २. रे च–क. । ३. सर्व–क. । ४. खलान्–क., खलात्–ख. । ५. स्वप्नेन जयेद् विवरं–सार्वत्रिकः पाठः, गृहीतस्तु भोटानुसारी । ६. खचरत्व–क. ख. घ. ङ. च. । ७. फ फ फ–घ., फुं फुं फुं–भो., ॐ हूँ३ ह्री३ एतन्मन्त्रं–ङ. । ८. वडवी–क. ख. ग. घ । ९. ताम्–क. । १०. शुक्ल–सार्वत्रिकः पाठः । ११. 'गन्ध' नास्ति क. । १२. हः–क. ग., फूत्रयं ह्लीत्रयं च–भो., फुंत्रयं हीत्रयमिति पाठो मूलानुसारी । १३. 'मन्त्राः' नास्ति–भो. । १४. सा–क. ग. घ. च., गृहीतः पाठस्तु भोटानुसारी ।

अधिपतेर्वक्त्र[1] बाहुभ्यां सर्वासामेव भावयेत् ।
एतन्मन्त्रेण सर्वासामुत्सर्गं तु प्रकीर्तितम्[2] ॥२१॥

वांसं(शं) बाणं(द्यं) मुकुन्दं च मुरजं[3] चापि च कोणतः ।
[4]सपत्रादि हरिन्माषं [5]छागमांसं तु सर्वतः ॥२२॥

गोकर्णं हस्तिकर्णं च सुमुखं दुर्मुखं तथा ।
मुशलं[6] परशुं चैव[7] अङ्कुशं पाशमेव च ॥२३॥

चतुर्द्वारि [8]सदा ध्येया[9] [10]नृत्याभिनययोगत ।
[11]यवसं वामतो ध्यायात् स्वचिह्नं दक्षिणे तथा ॥२४॥

[12]तथा [13]परमाश्वमन्त्रं तु वज्रपातालकस्य[14] तु ।
परमाश्वभावनायोगात् खधातुकं[15] परिभ्रमेत् ॥२५॥

[16]इति [17]सर्वतथागतकायवाक्चित्तकृष्णयमारि [18]तन्त्रे
[19]सिद्धिनिर्णयपटलस्त्रयोदश.[20] ॥

अधिपतेर्वक्त्रबाहुभ्यामिति । प्रधाननायकवद् द्विभुजा अश्वैकमुखास्तच्चिह्नधराश्च । **एतन्मन्त्रेणेति** । परमाश्वहृदयरथही[21]कारेणैवोत्सर्गः स्फरणम्, ंशाद्यास्तु स्वनाम्नैव चिह्नभूताः । [22]**सुमुख** इति ॥२१-२५॥

[23]सिद्धयो बिलप्रवेशाद्या निर्णीयन्ते यस्मिन् स तथा ॥

इति त्रयोदशपटलव्याख्या ॥

---

१. चक्र–घ. । २. तितः–ख. ङ. । ३. मुकुटं–च. । ४. इयं पङ्क्तिर्नास्ति–ङ. भो. । ५. मुष्टिके गोत्रहस्ति–क., 'हस्ति' नास्ति–ख., मष्टिके गोकुलं तथा–घ. । ६. 'मुशलं⋯⋯तथा' नास्ति–घ. । ७. चापि–ख. ङ. । ८. 'समा' सार्वत्रिकः पाठः, गृहीतस्तु भोटानुसारी । ९. ध्यायात्–ख. ग. ङ., धेया–च. । १०. नृत्यः कोशक्लेशादिच्छेदनात्–ङ. । ११. क्रूरं संवा–ख. ङ. भो., एवं स वा–च. । १२. यथा–भो. । १३. परशुमन्त्रं–सर्वासु, गृहीतः पाठस्तु भोटानुसारी । १४. तालस्य–क. ख. ग. । १५. खत्रिधातु–भो. । १६. नास्ति–घ. ङ. । १७. 'सर्व⋯⋯चित्त' नास्ति–ग. च. । १८. महातन्त्रे–ग. च. । १९. सिद्धिनिश्चयनिर्देश-क्रमभेदस्त्रयो–भो. । २०. त्रयोदशमः–ख. ग. च. । २१. हंकारेण–भो. । २२. सुमुखो दुर्मुखश्चेति संकेतमात्रम्–भो. । २३. सिद्धिव्योमबिल–क. ग. ।

चतुर्दशः पटलः

तत्रेदं सूत्रपाते[1] परमसमयम्—

[2]ॐ अकारो[3] मुखं सर्वधर्माणामाद्यनुत्पन्नत्वात् [4]ॐ आः हूं फट् स्वाहा ॥१॥

शिष्यं [5]वैरोचनं ध्यात्वा श्रीयमान्तकरूपवान् ।
ज्ञानसूत्रवराग्राग्र्यं पातयेत् सुसमाहितः ॥२॥

तत्रेदं महामण्डल[6]प्रवेशनसमयः(यम्)—[7]ॐ आः हूँ ॥३॥

मण्डलद्विगुणतो दीर्घं द्वार[8]विंशतिभागिकम् ।
पञ्चगव्य[9]समालिप्तं [10]सूत्रं बुद्धैः प्रकल्पितम् ॥४॥

मण्डल[11]वर्णनाय सूत्रं वक्तुं **तत्रे**त्यादि। तत्रेति भूपरिग्रहशोधितभूमौ। **परमे**त्यभीष्टत्वात्, **समय**मनुल्ल[12]ङ्घनीयत्वात्। **अकारो मुख**मित्यादि। अनेन मन्त्रेण सूत्रमधिष्ठातव्यम् ॥१॥

वैरोचनो मोहयमारिः। **यमान्तको** द्वेषयमारिः। **ज्ञानसूत्रे**ति। ज्ञान(नं) यक्ष-[13]समेदेत्यक्षरपञ्चकम्, तेन निष्पादितं सूत्रं **ज्ञानसूत्रवरम्**, अत एवा**ग्राग्र्यम्**। **सुसमाहित** इति। पूर्वादिदिगनुक्रमेण ॥२॥

कतमत्तन्महामण्डलसमयमित्याह—**ॐ आः हूँ**। अनेनाक्षरत्रयेण मण्डलमधिष्ठातव्यम् ॥३॥

सूत्रप्रमाणाख्यानायाह—**मण्डलद्विगुणे**त्यादि। [14]स्थौल्याख्यानायाह-**द्वारे**त्यादि ॥४॥

---

१. सूत्रपातनसमयः—क. ग. च. भो.। २. नास्ति—क. ख. घ. ङ.। ३. कार—च.। ४. 'ॐ……स्वाहा' नास्ति—क. ख. घ. ङ.। ५. वैलो—क ख.। ६. रूपविग्रहसम—च., परमसमयः—भो.। ७. 'ॐ आः……भूपरिग्रहसमयः' नास्ति—ग. च.। ८. द्वारः—क., द्वारे—ख.। ९. पञ्चलिङ्ग—घ.। १०. भूतं—क.। ११. वर्तनाय—घ. भो.। १२. अनुत्तरीयत्वात्—क. ग.। १३. यक्षो समे—क., य क्षे स मे घ., यज्ञेममेद—भो.। १४. स्थूलसूक्ष्मनिदेशाख्यानायाह—भो.।

तत्रेदं[1] महावज्रप्रार्थनासमयम्[2]—

अहो बुद्ध महाचार्य अहो धर्मगणः प्रभुः ।
देहि मे समयं तत्त्वं बोधिचित्तं च देहि मे ॥५॥

तत्रेदं महाभूपरिग्रहसमयं[3] [4]वज्रभूमिदेवीमाकृष्य—
त्वं देवि[5] साक्षिभूतासि [6]सर्वबुद्धान्(नु)तायिनाम् ।
चर्यानयविशेषेषु भूमिपारमितासु च ॥६॥

मण्डलस्याष्टमं भागं द्वारं ज्ञेयं महात्मभिः[7] ।
वर्जं(तं)यित्वा महावेदीं मानोपेतां सुशोभनाम् ॥७॥

---

[8]**महावज्रप्रार्थनासमयमि**ति । वज्रो वज्राचार्यः, तस्मिन् [9]मण्डले प्रवेशार्था प्रार्थना याचना, तदर्थं समयः पाठः । तमेवाह—**अहो** इत्यादि ॥५॥

भूपरिग्रहसमयं भूपरिग्रहमन्त्रम् । किमस्य प्रयोजनमित्याह—**वज्रे**त्यादि । आवाहनमभिमुखीकरणम् । कतमोऽसौ मन्त्र इत्याह—**त्वं देवी**त्यादि ॥ ६ ॥

सूत्रस्य द्वारविंशतिभागि[10]कत्वेन [11]स्थौल्योक्तिर्न ज्ञायते द्वारमानमित्याह—[12]**मण्डलस्ये**त्यादि । **अष्टभाग** इति । हस्तैकमण्डला[पे]क्षयाऽङ्गुलत्रयम् । **वर्जं(तं)यित्वे**ति रजःपातेन संलिख्य । **महावेदीमि**ति । महती चासौ वेदी चेति महावेदी, महत्त्वं च प्रधानदेवतास्थानत्वात्, अभ्यन्तरपुटमित्यर्थः । **मानोपेतामि**ति । पञ्चरेखा[13]भूमिसम्बन्धि पादोनाङ्गुष्ठरजोभूमिसम्बन्धि च सार्द्धाङ्गुष्ठम्, वज्रावलीसम्बन्धि च पादोनाङ्गुष्ठम् । एवं चतुर्ष्वेव पार्श्वेष्वङ्गुष्ठत्रयं[14] त्यक्त्वा अष्टादशाङ्गुष्ठे च । **सुशोभनामि**ति । तामेव भूमिं कृतनवकोष्ठात्मिका(कां) पादोनाङ्गुष्ठविस्ताररचिता(तां) नानास्तम्भाम् ॥ ७ ॥

---

१. तत्रायं–क. । २. समयः-क. ख. घ. । ३. समयः–क. ख. घ. । ४. पाठोऽयं न कुत्रापि, गृहीतस्तु भोटानुसारी, टीकायामपि व्याख्यातः । ५. देहि–क. । ६. भूतानि–क. ग. च. । ७. महामतिः–ग. च. । ८. 'महा' नास्ति कुत्रापि, गृहीतस्तु भोटानुसारी । ९. मण्डलप्रवेशार्थं–घ. । १०. भापिक–घ. । ११. स्थूलसूक्ष्मो–भो. । १२. मण्डस्ये–ग. घ. । १३. 'भूमि' नास्ति कुत्रापि, गृहीतः पाठः–भो. । १४. त्रयं त्रयम्–भो. ।

निर्यु(र्यू)हा द्वारवज्ज्ञेया तद्वद् दैवतपट्टिका[1] ।
[2]वज्राप्सरःसमायुक्ता गीतवाद्यादिनाटकैः ॥८॥
[3]वेदी द्वारस्यार्धेन कपोलपक्ष इत्यपि ।
हारार्धहारमार्तण्डसोमस्रग्दामपट्टिकम्[4] ।
तदर्धेन रजोभूमि[:] मूलसूत्रं भुवो बहिः ॥९॥

तत्रेदं महाहृदयम्—

[5]खे न्यसेदात्मनश्चक्रं स्वमुद्रां सेवयेत् ततः ।
[6]समयाक्षरेणैव मण्डलस्य प्रसाधनम् ॥१०॥

निर्यूह इति द्वारपञ्चरेखा, **द्वारवदि**ति अङ्गुलत्रयदीर्घा, [7]**तद्वदि**ति द्वारवदङ्गुष्ठत्रयमाना । **दैवतपट्टिके**ति । क्वचित् रजोभूमावपि देवता लिख्यन्ते, इति तदर्थं वक्तुम् । अत्र तु कपालानि त्र्यङ्गुलमानानि कोणेषु, द्वारपार्श्वद्वितयसन्निधौ च कलशद्वयम्[8] । [9]नर्तनीदेवतापट्टिकाख्य[10] वेदिकाया लिखनायाह—**वज्राप्सर** इत्यादि ॥ ८ ॥

कियन्मानं वेद्या इत्याह—**वेदी**त्यादि । **अर्धेने**ति सार्द्धाङ्गुष्ठेन । **कपोल** इति निर्यूहोपरि पञ्चरेखास्तिर्यक् च कपोलः । तदुपरि पारजः पञ्चरेखासापेक्षः । **इत्यपी**ति तयोरपि द्वयोः सार्धसार्धाङ्गुष्ठमानत्वम् । देवतापट्टिकातो बहिरङ्गुष्ठ[11]त्रिपादमानां रत्नपट्टिकां परित्यज्य[12] हारार्धहारपट्टिका या, सापि सर्वाङ्गुष्ठमानेत्याख्यातम् । **हारार्धहारे**त्यादि । पट्टिकां तत्प्रमाणां बुध्येतेति शेषः । **तदर्धेने**ति द्वारार्धेन । [13]त्रिपादाङ्गुष्ठेन **मूलसूत्रेणे**ति । गर्भपुटवज्रावली**र्बहि हो**) रेखातो बहिः ॥ ९ ॥

रजोमण्डलज्ञानमण्डलस्य प्रवेशार्थमाह—**तत्रेदमि**त्यादि । **महाहृदयमि**ति । महत्त्वं तत्तथागत सम्बन्धित्वात्, हृदयं च [14]सारत्वाद् महाहृदयम् । [15]**खे न्यसे**दिति खे आकाशदेशे आनीय स्थापयेत् । **आत्मनश्चक्रमि**ति । रजोमण्डलसमानज्ञानमण्डलमित्यर्थः । **स्वमुद्रां**

---

१. देवतापट्टि-क. ख. ग. घ. च. । २. 'वज्राप्सरः"' "'नाटकैः' नास्ति-ख. घ. । ३. वेदादि-च. । ४. पट्टिका-क. ख. ग. घ. च. । ५. विन्य-भो. । ६. 'समयज्ञानप्रवेशेन' सार्वत्रिकः पाठः, गृहीतस्तु टीकानुसारी । ७. द्वारवदिति-क. । ८. इतः परम्—'सर्वं शुक्लवर्णम्' इत्यधिकम्-भो. । ९. 'नर्तनी' नास्ति-भो. । १०. काख्यं घ. । ११. 'त्रि' नास्ति-भो. । १२. त्यक्त्वा-क. ग. । १३. सार्धाङ्गु-भो. । १४. 'मारत्वादिति' सार्व०, गृहीतः पाठः-भो. । १५. विन्यसेदिति । आकाशदेशतः-भो. ।

स्वप्रज्ञायमारियोगवानिति शेषः । **शेष(सेव)येत्** द्वीन्द्रियममापत्ति कुर्यात् । **समयाक्षरेणे**ति उत्पादितबोधिचित्तेन । [1]**मण्डलस्ये**ति रजोमण्डलस्य । आनीतज्ञानमण्डलेन सहैकीकृत्य तस्य **प्रसाधनं** प्रोक्षणम् ।

यत्र मण्डलादिप्रतिष्ठायां[2] साक्षाद् बोधिचित्तमुत्पादयितुमशक्यम्, तत्र भावनापि कर्तव्यम्(व्या) । तथा दशकलशाः कार्या महोदरा लम्बोष्ठा उच्चग्रीवा कठिनीकृतशुक्लाः । मध्यकलशमुखे विश्वपद्मार्कस्थं[3] पञ्चशूकवज्रम् । पूर्वकलशपार्श्वेऽपि [4]विश्वपद्मचन्द्रस्थाष्टारचक्रम् । एवमपरदक्षिणा[5]दित्रये विश्वपद्मसूर्यस्थरत्नपद्मखड्गा लिखनीयाः । आग्नेये तु विश्वपद्मचन्द्रस्थलोचनद्वयम् । नैर्ऋत्यादित्रये तु विश्वकमलचन्द्रस्थवज्ररक्तपद्मकनकोत्पलानि चिह्नानि । सार्वकर्मिके तु विश्वकमलसूर्यस्थ[6]ममृतकुण्डलिचिह्नं पञ्चशूकं वज्रं लिखनीयम् । एते च कलशा जम्बूचूतवृक्षबीजपूरमधूकजयन्तीपल्लवा[7] नवाः, [8]वस्त्रग्रीवाः, स्वर्णरूप्यताम्रराजप[9]द्मा(वर्त)प्रवालपञ्चरत्नान्विताः, धान्यमाषयवगोधूमतिलगर्भाः, श्वेतापराजिता-बृहती-कण्टकारी-सहदेवा-विश्वदेवपञ्चौषधियुक्ताः । मध्यविजयकलशे(षु ?) पुष्पमालां दत्त्वाऽपराष्टकलशेषु तत्संलग्ना पुष्पमाला दातव्या । वज्रं विजयशिरसि दत्त्वा प्रतिष्ठेयदेवतायास्तत्कुलपतेर्वाऽष्टशतो जापः । पूर्वा(र्व)दिक्कलशे ॐ आः आदौ [10]दत्त्वा हूँकारं [11]चान्ते [12]वुँ आँ जीं[13] खँ मन्त्रचतुष्टयमष्टोत्तरशतं जाप्यम् । आग्नेयादिकलशे तु यथाक्रमं लाँ माँ पाँ[14] ताँ इति मन्त्रचतुष्टयं जप्तव्यं पूर्ववत् । अमृतकुण्डलिस्तु कलशे उत्तरेण स्थाप्यः । ॐ हूँ स्वाहेति मन्त्रोऽष्टोत्तरशतवारमावर्तनीयः । सर्वं चेदं दक्षिणावर्तेन कर्तव्यम् । विकालसमये तद्रात्रिशेषे [15]शुचिक्षणे वा प्रतिष्ठा[16] । रजोमण्डलानुरूपदेवतामानीय [17]वैश्वहृद्बीजरश्मिना[18]ऽर्घादिकं देयम् । अत्रायं क्रमः—

हेमरूप्यशिलाशङ्खशुक्तिमृत्ताम्रभाजनम् ।
अर्घपात्रमिदं[19] यत्र पुटमध्यन्तगः[20] सृजेत् ॥

[इति] अर्घपात्रोद्देशः ।

गन्धोदकं मधुक्षीरं शुद्धाम्बु कुसुमं सितम् ।
यथोक्तपात्रमध्यस्थं धूपं दत्त्वाऽभिमन्त्रयेत् ॥

इत्यर्घसाधनविधिः ।

---

१. मण्डस्येति–ग. । २. प्रतिष्ठायाः–क. ग. । ३. पद्माकारस्थं–क. ग. । ४. 'स्व' सार्व., गृहीतः पाठः–भो. । ५. दक्षिणत्रये–क. । ६. मृगनकुलिचिह्नं–क. । ७. पर्णं वा–क. घ. । ८. वज्र–भो. । ९. राजपदा–ग., राजपट्टा–घ. । १०. कृत्वा–क. । ११. अन्ते–क. । १२. वू–ग., भ्रु–भो. । १३. जाँ–क. घ., ज्रीं–भो. । १४. यां–क. घ., लं मां पं तां–भो. । १५. शुद्धिक्षणे–ग. घ. । १६. प्रतिष्ठो–क. । १७. स्व–भो. । १८. नाकृष्य क्रमशोऽर्घा–भो. । १९. अभावे काष्ठपत्रमयं सृजेत्–भो. । २०. तशः–घ. ।

सितपीतारुणश्यामं शान्तिपुष्ट्यादिसाधने ।
कर्मानुरूपतो गन्धसलिलादि तथा हरेत् ॥

[इति] अर्घविधिभेदः ।

पुष्पं धूपं तथा दीपं गन्धं शङ्खादिसव्यतः ।
[1]मन्त्री भाजनं वामेन पुरतः प्रभृति सृजेत् ॥

[इति] अर्घपात्रन्यासः ।

त्र्यक्षरैः पञ्चबुद्धैर्वा मन्त्रैस्तन्त्रैर्यथोदितैः ।
अर्घाभि[2]मन्त्रणं कार्यं यथातन्त्रानुसारतः ॥

शान्तिकं वष[3]डन्तेन वौषडन्तेन पौष्टिकम् ।
मारणं हूँफड[4]न्तेन जः ह्रीः आकृष्टि[5]वश्ययोः ॥

[इति] अर्घाभिमन्त्रणम् ।

आदौ गन्धोदकं देयं मधुक्षीरं द्वितीयकम् ।
शुद्धोदकं तृतीयं तु चतुर्थे पुष्पयोजितम् ।
शङ्खमुखेन गन्धाम्बुढौकनं पादमूलयोः ॥

ॐ[6] ली री हूँ खँ हूँ[7] पाद्यम् । भक्षणं क्षीरमधुभ्याम् । [8]कुशे(शैर्) विन्द्या[त्] प्रोक्षणं पुनः, अम्बुना केवलेनैव[9] । अर्घमन्त्रः[10]—ॐ सर्वसंशोधनी हूँ फट् । [11]भक्षणं प्रोक्षणं वृद्धाङ्गुष्ठतर्जनीगृहीतेन पुष्पेणेत्यादि । मोक्षणाद् अर्चयेत् पुष्पयोजितम् ।

पाद्यं[12]तनुग्रहे देयं लोह[13]मोचवनं तथा ।
अन्यत् तद्द्रव्यं यत्तीक्ष्णं भक्ष्यं हेमादिभाजने ॥

पश्चाद् रजोमण्डलानुरूपदेवताचक्रं जः हूँ वँ होः इत्येभिराकृष्य प्रवेश्य बद्ध्वा वशीकृत्य चक्षुराद्यधिष्ठानं त्र्यक्षराधिष्ठितं चाभिषेकं तथागतमुद्रणं च कृत्वा दर्पणे मण्डलच्छायामुत्पश्य प्रथमं पञ्चगव्येन [14]शाधनम्, ॐ सर्वतथागतकायविशोधनि[15] स्वा-[16]हेति मन्त्रेण । तथा [17]वूँ आँ [18]ज्री[ ] खँ हूँ इत्यनेन[19] सुगन्धतैलस्थापनम्[20] । अनेनैव

१. यन्त्री–सार्व., गृहीतः पाठः–भो. । २. र्घादि–क. भो. । ३. वशतन्त्रेन–क. । ४. फट् तन्त्रेण–क. । ५. आक्रुष–क. । ६ नीरी –भो. । ७. हूँ–घ भो. । ८ कुशं विन्द्यात्–ग. घ., कुशमुष्ट्या–भो. । ९. केवलमेव–क. । १०. मन्त्रं जपेत्–भो. । ११. पाद्यं च–भो. । १२: पतनु–घ. । १३. सोपवनं–क । १४. स्नापनम्–घ. । १५. धने–सार्व । १६. 'स्वाहा' नास्ति–भो. । १७. जीं–घ., भूं–भो. । १८. ज्रां–भो. । १९. इति मन्त्रेण–भो. । २०. लेपनम्–भो. ।

मन्त्रेण सुपिष्टपञ्चवल्केन शोधनम्[1]। तथा ॐ सर्वतथागताभिषेकवज्रस्वभावात्मकोऽहम् इत्यनेन सुगन्धिस्नापनम्[2]। तत[3](तः)—

इमे पुष्पाः शुभा दिव्याः शुचयः शुचियोनयः।
मया निवेदिता भक्त्या परिगृह्य प्रसीद मे ॥

[इति] पुष्पदानम्।

वनस्पतिरसो[4] हृद्यो गन्धाढ्यो धूप उत्तमः[5]।
मयेत्यादि पूर्ववत्।
रक्षोघ्नः परितोज्वालस्तमोविधमनः शुभः।
मयेत्यादि दीपदानम्।
सह[6] सांयोगिकः शुद्धो गन्धो यो घ्राणतर्पणः।
मयेत्यादि पूर्ववद् गन्धदानम्।

नैवेद्यं सर्वसंयुक्तं खाद्यभोज्यसमन्वितम्।
वर्णगन्धरसोपेतं ददामि परिगृह्यताम् ॥

एवं पञ्चोपचारपूजां कृत्वा

यथा हि सर्वसंबुद्धास्तुषितेषु प्रतिष्ठिताः।
मायादेव्याः स्थिताः कुक्षौ तद्वत्तिष्ठन्त्विहाकृतौ ॥
अत्रस्थः सततं नाथो[7]भूत्वा पुष्पादिकानिमान्।
गृहाणानुकम्पार्थाय बोधिचित्तप्रवृद्धये ॥

अनन्तरमुपसंहारकाले ॐ[8]घिलि २ हूँ जः स्वाहा इत्यनेन रजःसंहरणं [9]पवित्रपत्रे तेनैव मन्त्रेण नद्यां रजःप्रवाहनम्। अयमेव सकलः क्रमो देवतापटप्रतिष्ठायामपि विसर्जनं विना। शिष्यकरणे च कलशमण्डलादिसकलं क्रियते । [10]एतत्तन्त्रोक्तशिष्यविधानस्याव्यवहारात्[11] प्रादेशिकत्वात् संक्षिप्तसामान्यमभिधीयते।

तत्र पटमण्डले कलशमेकं पञ्चतथागतचतुर्योगिनीचिह्नसहितं पञ्चरत्नपञ्चौषधिपञ्चव्रीहिगर्भं गन्धोदकपरिपूर्णम्। ॐ आः विघ्नान्तकृत्[12] हूं फट् इति मन्त्रः। अष्टोत्तरशतजप्तं [13]पल्लवाननं वस्त्राच्छादितकन्धरं पुष्पधूपादिपूजितं पुरतः स्थितं कृत्वा

---

१. स्नापनम्-घ, लेपनम्-भो । २ शोधनम्-क. ग.। ३. तत्र-क. । ४ चलो-घ.। ५. मुत्तमः-क. । ६. सहस्सांयो-ग.। ७. नृत्यपुष्पा-क ग.। ८. गिलि गिलि-भो.। ९. पवित्रपत्तलेनैव—क. ग. । १०. एतत्प्रोक्त-क ग. । ११. व्यवहारः स्यात्-क., हारे स्यात्-ग., 'अव्यवहारात्' नास्ति भो.। १२. घ्नान्तक ते-क ग. । १३. सर्वंवाननं-सार्व., गृहीतः पाठः-भो. ।

शिष्यान् कृतमण्डलकान् गृहीतपुष्पमालान् पृथिव्यामारोपितदक्षिणजानुमण्डलान् मन्त्रनयभव्यान् प्रोत्साहनाय(यन्)—

मन्त्रसिद्धयर्थिनः केचित् प्रविशन्तीह मण्डले।
पुण्यकामास्ततोऽन्येऽपि परलोकार्थिनः परे॥

परलोकं समुद्दिश्य श्रद्धां कृत्वा तु भूयसीम्।
[1]प्रविशेन्मण्डलं धीमानैहिकं फलमीहयेत्॥

ऐहिकं काङ्क्ष्यमान(ण)स्य न तथा पारलौकिकम्।
परलोकार्थिनः पुंसः[2] पुष्कलं त्वैहिकं फलम्॥

इत्यनुश्राव्य ताञ्छिष्यानुपायी[3]कृतदेवतायो[4]गांश्च शरीरे प्रविश्य स्ववज्रनिर्गतान् स्वप्रतिभाषिविद्या[5]पद्मरथान् तथागतद्रवेरनिषि(भिषि)क्तान् संरफार्य[6] मण्डलपूर्वद्वारे उपवेश्य प्रवेशं याचयेत्।

त्वं मे शास्ता महावीर मामक्या सह संपुटे[7]।
इच्छाम्यहं महानाथ महाबोधिनयं दृढम्[8]॥

देहि मे समयं तत्त्वं बोधिचित्तं च देहि मे।
[9]बुद्धं धर्मं च संघं च त्रिशरणं च देहि मे॥

प्रवेशयस्व मां नाथ महामोक्षपुरं वरम्॥ इति।

शिष्यमेकं प्रधानं कृत्वा—

एहि वत्स महायानं मन्त्रचर्यानयं विधि[म्]।
देशयिष्यामि ते सम्यग् भाजनस्त्वं महानये॥

इत्युच्चार्य—

रत्नत्रयं मे शरणं सर्वं प्रतिदिशाम्यघम्।
अनुमोदे जगत्पुण्यं बुद्धबोधौ दधे मनः॥

इति त्रिशरणगाथां त्रिधा पाठयित्वा ताञ्छिष्यान् ॐ आः विघ्नान्तकृत् हूँ फट् इत्यमृतकुण्डलिमन्त्रेणारक्ष्य तेषां हृत्कण्ठशिरसि सूर्यस्थ[10]कृष्णवज्र(ज्रं) रक्तचन्द्रस्थ-

---

१. 'प्रविशेत्''''ताञ्छिष्यानुपा' नास्ति–घ.। २. पुंसोऽदुष्करं–भो.। ३. पायाकृत–क. घ। ४. योगं वै-क, योगः स्व-घ.। ५. 'विद्या' नास्ति–भो। ६. 'संस्फार्य' नास्ति–भो.। ७. संपुट–क घ। ८ दृशम्–क. भो.। ९. त्रिशरणमित्येव सार्वत्रिकः पाठः, गृहीतः पाठः–भो.। १०. नील-भो.।

रक्तपद्मं सितचन्द्रस्थित[1]सिताष्टारचक्रं[2] वरटके यथाक्रमं हूँ आः ॐ विचिन्तयेत्। वज्रं दक्षिणमुष्ट्या गृहीत्वा उत्थायाचार्यः शिष्याणां हृत्कण्ठशिरःसु[3] वज्रेण संस्पृश्य हूँ आः ॐ इत्युच्चार्य शिरसि पुष्पम्, अग्रतो धूपम्, दीपं गन्धं तथा हृदि दद्यात्।

इति शिष्याधिवासनम् ॥

ततो बलिं दत्त्वा स्वदेवतायोगपूर्वकं स्वयं शिष्यं प्रवेश्य विधिना मण्डलप्रवेशतः प्रभृति अनुज्ञाभिषेकपर्यन्तं भग[व]तो बुद्धया गृहीत्वा सत्यं प्रार्थयेत्।

प्रतिबिम्बसमा धर्मा अच्छाः शुद्धा ह्यनाविलाः।
अग्राह्या[4] अनभिलाप्याश्च हेतुकर्मसमुद्भवाः ॥

तथतातत्त्वनिर्याता इति सत्येन मण्डलम्।
प्रतिबिम्बं स्फुटं शिष्याः सर्वे पश्यन्त्वकलमषाः ॥

ततः काण्डपटाद्बहिर्दत्तदक्षिणं शिष्यमेकैकशो वैरोचनरूपेणालम्बितं [5]आ खं वीर हूँ इति मन्त्रेण सप्ताभिमन्त्रितपुष्पं दत्त्वा करे बद्धान्धपटं कलशजलाभ्युक्षितं[6] पृच्छेत्—कस्त्वं [7]भो रतिप्रिये(य इ)ति। स ब्रूयात्[8]—सुभगोऽहं महासुखे(ख इ)ति। ततस्तस्य हृदये[9] वज्रं संस्थाप्य[10] ॐ सर्वयोगचित्तमुत्पादयामि सुरतसमयस्त्वं होः [11]सिद्धवज्र यथासुखम्। ततो हूँ जः हूँ [12]इत्यनेनाकृष्य यम(व)निकान्तरं प्रवेश्य मण्डलद्वारे संस्थाप्य ब्रूयात्—न च त्वयेदमदृष्टमण्डलस्य पुरतो वक्तव्यम्। मा ते भयो व्यथेतेति। ततः शिरसि वज्रं दत्त्वा—"अयं ते समयो वज्रं मूर्धानं स्फालयेद् यदि। त्वमिमं कस्यचिद् ब्रूयाः" [इति]।

ततः सपुष्पं वज्रं हृदये संस्थाप्य ब्रूयात्—

ॐ वज्रसत्त्व[:] स्वयं तेऽद्य हृदये समवस्थितः।
निर्भिद्य तत्क्षणं यायाद् यदि ब्रूयादिमंन्व[13](मं न)यम् ॥

अनेन स(श)पथं कारयित्वा पञ्चामृतं पद्मभाण्डावस्थितम[14]ष्टाक्षराधिष्ठितम् "ॐ वज्रामृतोदक[15]ठ ठ" इत्यनेन सप्तजप्तम्—

इदं ते नारकं वारि समयादिक्रमाद् दहेत्।
समयसंरक्षणात् सिद्धिः पिब वज्रामृतोदकम् ॥

---

१. चन्द्रस्थ–घ.। २. चक्र–घ। ३. ण्ठोर्णासु–भो.। ४. अपोहा–क.। ५. अ–भो.। ६. जलास्कन्दितं–क.। ७. भो किं प्रिय इति–भो.। ८ कुर्यात्–क.। ९ हृदय–क.। १०. संस्फार्य क. ग.। ११. सिद्धि–भो.। १२. इति मन्त्रेण–भो.। १३. दिमन्धयं–क.। १४. तं त्र्यक्षरा–भो.। १५. दोदकं ठः–क., मृतोत्कट–भो.।

इति पठन् पाययेत्। तत इदं वक्तव्यम्—अद्य प्रभृति तवाहं वज्रपाणिर्यदहं ब्रवीमि तत् त्वया कर्तव्यम्। न च त्वयाऽहमवमन्तव्यः। मा ते [1]समयपरिहारेण कालक्रियां कृत्वा नरकपतनं [2]स्यात्। इति समयोदकदानम् ॥

ततः शिष्यमेवं वादयेत्—सर्वतथागताश्चाधिष्ठिता[3] वज्रसत्त्वा मे आविशन्ति। ततः शिष्यहृदये पीतलम्बत्रिशूक[4]वज्राङ्कितचतुःकोणमाहेन्द्रमण्डलस्थकृष्णहूँकारं [5]शिरसि वँकारज[6]घण्टाङ्कवर्तुलसितवरुणमण्डलस्थसितहँकारमधोमुखम्, कण्ठे[7] कृष्ण-पङ्कारजचलत्पताकं धन्वाभवायुमण्डलस्थमाकारं रक्तम्। चरणतले वायुमण्डलोद्दीपित-त्रिकोणस्फुरत्किरणाग्निमण्डलस्थ[8]मौकारं सरश्मिकं ध्यात्वा साटोपं घण्टां वाद[य]न् आवेशय[9] स्तम्भय रँ रँ रँ रँ[10] चालय चालय हूँ[11] फट् आः ऐः इत्युच्चार्य आवेशयेत्। आविष्टे सति जिह्वायां रक्तन् आःकारं ध्यात्वा[12]ऽमिताभरूपं विचिन्तयेत्। ततो ब्रूहि [13]वत्स शुभाशुभमिति ब्रूयात्। उक्तं ज्ञात्वा ॐ तिष्ठ वज्रेति दृढीकृत्य च कुपित[14][:] कीदृशो बभाष इति पृष्ट्वा तैरुक्तैः श्वेतपीतरक्तकृष्णावभासैः शान्तिपुष्टिवश्याभिचारक-सिद्धिर्भाष्यतां कथयित्वा समधिष्ठानं कुर्यात्।

इत्ययं मण्डले सम्यग् मया शिष्यः प्रवेशितः।
यथा[15]पुण्यं तथाऽस्यास्तु देवतानां कुलक्रमः ॥

यादृक्[16] सिद्धिर्भवेदस्य गोत्रे यस्मिंश्च भाजनम्।
यादृक् [17]पुण्यानुभावश्च तादृगस्यास्तु मण्डले ॥

ततः पुष्पमेकं मण्डले क्षिपेत् प्रतीच्छ वज्र होरित्यनेन। ततः पुष्पपातेन हीनोत्तमां सिद्धिं लक्षयेत्। ततो यदि बुद्धानां शिरसि ऊर्णायामुष्णीषे वा पतति, तदा महामुद्रा-सिद्धिः। यदि लोचने मुखे वा पतति, तदा मन्त्रसिद्धिः। उत्तमाङ्गे चोत्तमा। मध्यमाङ्गे च मध्यमा। अधोभागे चाधमा। बिम्बस्य दूरे अभिचारः। समापत्तौ प्रसिद्धिः। देवतानां स्वकीयं स्थानं[18] कोष्ठे विच्छेदतो ज्ञातव्यम्। यदि द्वयोर्देवतयोरन्तरे पतति, तदा

१. विषमा—सार्व., गृहीतः पाठः—भो.। २. न स्यात्—क.। ३. धितिष्ठता—क., धिष्ठित्य—ग। ४. 'त्रिशूक' नास्ति—भो.। ५. ऊर्णायां—भो.। ६ कलशाङ्क—भो.। ७. कण्ठे च पंका—क घ.। ८. स्थं झँङ्कारं—भो.। ९. न्तोमय—सार्व., गृहीतः पाठः—भो.। १०. 'रँ'-त्रयमेव—भो.। ११. हूं ह अ झैं इत्यु—भो.। १२. त्वा नासायाममि—भो.। १३. 'वत्स' नास्ति—भो.। १४. क्षुभित—ग. घ., तव चक्षुषि कीदृशो दृष्ट—भो.। १५. पश्यन् क. ग.। १६. यादृग्भिः—क. ग.। १७. क्षणानु—क. ग.। १८. स्थानकोष्ठये—क., स्थानकं वा विच्छे-ग.।

यस्यासने तत्पुष्पं तत्कुलं तस्य भवति। मण्डलबाह्यपाते क्षुद्रसिद्धिः। रेखासु[1] यदि पतति, तदा पुनः क्षिपेत्। त्रिः कृत्वा तत्रैव पतेत्, नास्ति सिद्धिः। बाह्यवज्रावलीबहिः-[2]पतनेऽपि नास्ति सिद्धिः। गर्भपाते कष्टतरा।

इति पुष्पपातनविधिः॥

ततः [3]तत्पुष्पं गृहीत्वा शिष्यशिरसि बन्धयेत्। प्रतिगृह्ण त्वमिमं वत्स महाबलेति पठेत्। ततो नेत्रद्वये ॐकारं ध्यात्वा—

ॐ वज्रसत्त्वः स्वयं तेऽद्य चक्षुरुद्घाटनतत्परः।
उद्घाटयति सर्वाक्षो वज्रचक्षुरनुत्तरम्॥

इति पठन्नन्धपटमपनयेत्। इति मण्डलप्रवेशविधिः॥

सम्प्रत्यभिषेक उच्यते—

बोधिवज्रेण बुद्धानां यथा दत्तो महामहः।
ममापि[4] त्राणनार्थाय खवज्राद्य ददाहि मे॥

इत्यध्येषितवन्तं शिष्यं वैरोचनरूपेणावलम्बितम्—

स्वविद्यापुरुषतोग्रेन समन्तात्[5] कलशाष्टकैः।
सेवयेद् [6]वज्रिणं ध्यात्वा वज्रचित्तप्रभावनैः॥

[इति] वज्रसम्मुष्ट्या कलशोदकमादाय—

अभिषेकं महावज्रं त्रैधातुकनमस्कृतम्।
ददामि सर्वबुद्धानां त्रिगुह्यालयसंभवम्॥

वज्राभिषिञ्चेति पठन् शिष्यं चक्रवर्तिनमिवाभिषिञ्चयेदिति। इत्युदकाभिषेकविधिः। आदर्शज्ञानम्॥

ततोऽनन्तरं कनकवस्त्रादिघटितं मुकुटं शिष्यशिरसि दद्यात्। रत्नसम्भवप्रयोगतो गगनतलगताः सर्वतथागताः कुलिशरूपेण मुकुटेऽवस्थिताश्चिन्तनीयाः। इति मुकुटाभिषेकः। समताज्ञानम्॥

ततः—

पञ्चशूकं महावज्रं हृदि संरोप्य पाणिना।
सेवयेद् वज्रसत्त्वाख्यं शिष्यममिताभाकृतिम्॥

---

१. रेखामुपरि पतति–क. ग.। २. 'पतने' नास्ति–क.। ३. तत्र-क.। ४. समाधि–क. ग.। ५. न मन्त्रान्–क., मन्त्रात्–ग.। ६. दक्षिणं–क. ग.।

अद्याभिषिक्तस्त्वमसि बुद्धैर्वज्राभिषेकतः[1]।
इदं तत् सर्वबुद्धत्वं गृह्ण वज्रं सुसिद्धये ॥

इति पठन् वज्रेण हृत्कण्ठशिरःसु[2] स्पृष्ट्वा वज्रं दक्षिणकरे दद्यात्। इति वज्राभिषेकविधिः। प्रत्यवेक्षणाज्ञानम् ॥

ततोऽमोघसिद्धिरूपेणालम्ब्य वामकरे घण्टां दत्त्वा वज्रघण्टायुक्ताभ्यामालिङ्गनाभिनयं कारयित्वा ॐ वज्राधिपतिं त्वामभिषिञ्चामि वज्रघण्टाभिषेकतः। इति घण्टाभिषेकविधिः। कृत्यानुष्ठानज्ञानम् ॥

ततोऽक्षोभ्यं ध्यात्वा नाम्ना त्वभिषेचयेत्। शिरसि वज्रघण्टां कृत्वा ॐ वज्रसत्त्व त्वामभिषिञ्चामि वज्रनामाभिषेकतः। हे श्रीमोहवज्र हे श्रीरागवज्र हे श्रीद्वेषवज्र इत्यादिकुलानुरूपतो नाम कुर्यात्। इति नामाभिषेकविधिः। सुविशुद्धधर्मधातुज्ञानम् ॥

एवं पञ्चाभिषेक एव विद्याभिषेक उच्यते, सर्वत्र लोचनादिविद्यानां व्यापारादिति। तदनन्तरम्—

वज्राचार्याभिषेकं भो मह्यं देहि कृपानिधे।
स्वपरार्थसमर्थः स्यां [3]येनाहं त्वत्प्रसादतः ॥

इत्यध्येषितवन्तं शिष्यं सिंहासनस्थं विचित्राष्टदलकमलोपरि वज्रसत्त्वरूपेणा[4]-लम्ब्य हूँकारजं वज्रं ध्यात्वा[5]—

अनादिनिधनः सत्त्वो वज्रसत्त्वो महारतः।
समन्तभद्रः सर्वात्मा वज्रगर्भो यतिः[6] पतिः ॥
परमाद्यपुरुषो भगवानिति तत्त्वेन[7] ग्राहयेत्।

तदनु आःकारजां घण्टाम्—

इयं [सा] सर्वबुद्धानां प्रज्ञाघोषानुगा स्मृता।
त्वयापि हि सदा धार्या बोधिरग्रा जिनैर्मता ॥

इत्यनेन वामहस्ते दद्यात्।

स्वभावशुद्धो हि भवः स्वभावैर्विभवीकृतः।
स्वभावशुद्धैः सत्सत्त्वैः क्रियते परमो भवः ॥

---

१. बुद्धो वज्रा—क. भो.। २. ऊर्णासु-भो.। ३. योऽहं—क.। ४. रूपेण मध्ये-क.। ५. दत्त्वा—भो। ६. पतिः पतिः—भो.। ७. बल्लेन—क.।

इति पठन् शिष्यमपि [1]वादयेत् । तदनु—

मुद्राभिसमयः प्रोक्तो मनोमूर्तिदृढत्वतः ।
सर्वमूर्तिर्दृढा येन तेन मुद्रा प्रकीर्तिता ॥

इत्यनेन स्वदेवतामूर्त्याऽऽध्यात्मिकमहामुद्रामधिष्ठा[2]यालिङ्गयेत् । तदाऽऽचार्य [:] स्वहृद्बीजनिर्गतदेवतावृन्दैराकाशस्थैरभि[3]षिच्यमानं विचिन्त्य—

अभिषेकं महावज्रं त्रैधातुकनमस्कृतम् ।
ददामि सर्वबुद्धानां त्रिगुह्यालयसंभवम् ॥

इत्यभिषेचयेत् । यथोक्तम्—

पाणिभ्यां तु समालिङ्ग्य प्रज्ञां वै षोडशाब्दिकाम् ।
वज्रघण्टासमायोगादाचार्यसेवनं मतम् ॥ इति ।

ततो वैरोचनादिरूपेणालम्बिताय शिष्यायानुज्ञां दद्यात्—

सर्वसत्त्वहितार्थाय सर्वलोकेषु सर्वतः ।
यथा विनयतो [4]विश्वं धर्मचक्रं प्रवर्तय ॥ इति ।

धर्मस्थाने [5]वज्ररत्नपद्मखड्गशब्दप्रक्षेपात् क्रमशः पञ्चभिः श्लोकैरनुज्ञादानम् । तदन्वक्षोभ्यरूपेणालम्ब्य [6]वज्रव्रतं दद्यात्—

इदं तत् सर्वबुद्धत्वं वज्रसत्त्वकरस्थितम् ।
त्वयापि हि सदा धार्यं वज्रपाणिदृढव्रतम् ॥

इत्यनेन हूंकारं वज्रं शिष्यस्य करे दद्यात् । ॐ सर्वतथा[7]गतसिद्धिवज्रसमये तिष्ठ एष त्वां धारयामि । [8]हो हि हि हि हि हूँ इत्युदीरयन्तं शिष्यं वज्रव्रतं ग्राहयेत् । इति वज्रव्रतदानम् ॥

तदनु बुद्धरूपेणात्मानं ध्यात्वा हृदि वाममुष्टिचीवरकर्णिकामादाय दक्षिणकरे वरदमुद्रां बद्ध्वा शिष्यं यत्कुलं तद्रूपेणालम्ब्य व्याकुर्यात्—

ॐ एषोऽहं व्याकरोमि त्वां वज्रसत्त्वस्तथागतः ।
भवदुर्गतितोद्धृत्य [9]अत्यन्तभवशुद्धये ॥

---

१. वाचयेत्–क. । २. धिष्ठाय निर्गमयेत्–क. । ३. षिच्य–क. घ. । ४. विश्वधर्म–क. घ. । ५. रत्नवज्र–भो. । ६. 'वज्रव्रतं दद्यात्' नास्ति–भो. । ७. गतसमयवज्र–भो. । ८. हा–घ., नास्ति–भो. । ९. उत्तमभवसिद्धये–भो. ।

एहि अमुकनाम तथागतसिद्धिसमर्थस्त्वं भूर्भुवः स्वरिति व्याकृत्य यस्या[1]नया धर्मोद्गतमुद्रया व्याकरणं क्रियते, स सर्वतथागतैः सबोधिसत्त्व[2]पर्षन्मण्डलै[3]रेककण्ठेनानुत्तरायां सम्यक्संबोधौ व्याक्रियते, अस्या एव धर्मोद्गतमुद्रायाः प्रभावतोऽस्य मन्त्रस्य बलेनेति श्रद्धातव्यमिति शिष्यं वदेत् । इति व्याकरणम् ॥

तदनु महासमय [4]हन हूँ फडिति पठन्नास्वाशं(श्वासं) दद्याद् दृष्ट्वा प्रविष्ट्वा परमं रहस्यात्ममण्डलम् ।

[5]सर्वपापैर्विमुक्ताः स्थ भवन्तोऽद्यैव सुस्थिताः ।
न भूयो मरणं वास्ति यानादस्मान्महासुखात् ॥
[6]निवृत्तं भवदुःखं वा अत्यन्तभवसिद्धये ।
बोधिचित्तं न वै त्याज्यं यद्वज्रमिति मुद्रया ॥
यस्योत्पादनमात्रेण बुद्ध एव न संशयः ।
[7]सद्धर्मो न प्रतिक्षेप्यो न च त्याज्यः कदाचन ॥
अज्ञानादथ मोहाद् वा न तं विवृणुयात् स तु ।
वज्रघण्टा च मुद्रा च नहि त्याज्या कदाचन ॥
आचार्यो नावमन्तव्यः सर्वबुद्धसमो ह्यसौ ।
स्वमात्मानं परित्यज्य तपोभिर्न च पीडयेत् ॥
यथासुखं सुखं धार्यं [8]सम्बुद्धोऽयमनागतः ।
अधुना मण्डलाचार्ये मन्त्रतन्त्रधरो भवान् ॥
बुद्धानां बोधिसत्त्वानां देवतानां च सम्मतः ।
सत्त्वानामनुकम्पार्थं विधिना मण्डलं त्वया ॥
लिखितव्यं प्रयत्नेन तन्त्रे योज्याश्च साधकाः ।

इत्याश्वासदानम् ॥

अमी चानुज्ञादयश्चत्वारः पञ्चाभिषेकानन्तरमाचार्याभिषेकानन्तरं वा दीयन्ते । आचार्याभिषेक एव[ा]वैवर्तिकाभिषेक इत्युच्यते । पञ्चाभिषेक आचार्याभिषेकश्च कलशाभिषेक उच्यते, सर्वत्र कलशानां व्यापारात् । एते षडभिषेकाः सर्वत्र तन्त्रेष्वविरुद्धाः । इत्याचार्याभिषेकेण कायवज्रविशोधनम् ॥

---

१. यस्य नयो-ग., यस्यानयोद्ग–क. ख. घ. । २. पर्वतमण्ड–क., सेचकमण्ड–ग. । ३. लैककण्ठे–क. ग. । ४. 'हन' नास्ति-भो. । ५. सर्ववाचि मुग्धा–क. । ६. निवृत्ते-क. । ७. स धर्मो–क. । ८. स बुद्धो–क ग. ।

तदनु काण्डपटादिभिर्विजनीकृते देशे शिष्यो भव्यां [1]गुह्याभिषेकार्थं गुरवे निर्यात्य[2] मुक्तावस्थामध्येषयेत्, [3]संभोगलहरीषु निवेशयेत्।

बोधिवज्रेण बुद्धानां यथा दत्तो महामहः।
ममापि त्राणनार्थाय खवज्राद्य ददाहि मे॥

गुरुरपि देवताया(यो)गमध्ये(धि)मुच्य स्वसंविदितं कृत्वा खधातु[4]विर(क)चितं प्रज्ञारविन्दादुद्धृत्य—

प्रज्ञाया मुखं बद्ध्वा उपायस्य मुखं तथा।
ज्येष्ठानामिकाभ्यां तु शिष्यवक्त्रे निपातयेत्॥

सोऽप्यहो सुखमिति संभोगलहरीषु निवेशयेत्। वैरोचनात्मकः संस्तथताप्युत्थाय एवमेव दद्यात्। इति गुह्याभिषेकेन(ण) वाग्वज्रविशोधनम्। तदनु शिष्यपाणौ—

मुद्रायाः पाणिं प्रतिष्ठाप्य साक्षीकृत्य तथागतान्।
मूर्ध्नि वज्रं समारोप्य उच्यते गुरुवज्रिणा॥

अ(इ)यं ते धारणी रम्या सेव्या बुद्धैः प्रकाशिता।
[5]चक्रभ्रमणयोगेन समास्वादय [6]सत्सुखम्॥

नान्योपायेन बुद्धत्वं[7] शुद्धं चेदं जगत्त्रयम्।
तस्माद् वियोगमनया मा कार्षीस्त्वं कदाचन॥

इदं तत्सर्वबुद्धानां विद्याव्रतमनुत्तरम्।
अतिक्रामति यो मूढः सिद्धिस्तस्य न चोत्तमा॥

इत्युक्त्वा शिष्याय तां दद्याद्। ततः स्वाधिदैवतयोगात्मा तां [8]शिरोहृन्नाभि-[9]गुह्योरुषु यथाक्रमं ॐ हूँ खा[10] आः हा इति [11]पञ्चकुलकलास्विमां कृत्वा तदनु हूँकारेण [12]अकारेण कमलकुलिशे आः ॐकाराभ्यां किञ्जल्कमणी[13]रन्ध्रे[14] च पीतफट्कारं विभाव्य।

---

१. गुर्वभि-क.। २. निर्यायेत्थं मुक्तावस्थया मध्ये नयेत्–क.। ३. 'संभोगलहरीषु निवेशयेत्' नास्ति-भो.। ४ प्रकाशितं–भो.। ५. चित्तक्रमेण-क.। ६. समुन्मुखम्–क, नास्ति–ग.। ७ बुद्धत्वे-क.। ८. ऊर्णा–भो.। ९. गुल्फोरु–क. ग.। १०. स्व अ ह–भो.। ११. विद्यामन्त्रसमूहं कृत्वा–भो.। १२. 'अकारेण' नास्ति कुत्रापि, गृहीतः पाठः–भो.। १३. मणीन्–ग.। १४. चन्द्रे– क., रन्ध्रद्वारे–भो.।

ॐ पद्मसुखा[1]धार महाराग सुखं दद।
चतुरानन्दभाग(ग्) विश्व[2] हूँ[3] हूँ कार्यं कुरुष्व मे॥

इति कमलाधिष्ठानम्।

ॐ वज्रमहाद्वेष चतुरानन्ददायक।
खगमुखैकरसो[4] नाथ हूँ हूँ कार्यं कुरुष्व मे॥

इति वज्राधिष्ठानम्॥

ततो वज्रधात्वीश्वरीं नाम नाडीं वामे भगे स्थितामङ्गुल्या चालयेत् किञ्चिद् ज्ञात्वाऽसौ गुरुवाक्यतः। तदनु ॐ सर्वतथागतानुरागेन (ण) वज्रस्वभावात्मकोऽहमिति रतिमारभेच्छिष्यः[5]।

खधातुवज्रसंयोगात् संस्पर्शाच्च महाद्भुतम्।
सुखमुत्पद्यते यत्तत् परमानन्दकारकम्॥

परमविरमयोर्मध्ये लक्ष्यं वीक्ष्य दृढीकुरु।

इति प्रज्ञाज्ञानाभिषेकेण चित्तवज्रं विशोधयेत्। ततः—

दत्त्वाभिषेकं विधिभिर्यथोक्तैः शिष्याधिमुक्तिं मनसा समीक्ष्य।
उदारगम्भीरनयाधिमुक्तेर्वाचैव दद्यादभिषेकरत्नम्॥

[6]आनन्देन सुखं किञ्चित् परमानन्दात् ततोऽधिकम्।
विरमानन्दे विरागः स्यात् सहजानन्दस्तु [7]शेषतः॥

प्रथमं स्पर्शाकाङ्क्षा(क्षया) द्वितीयं [8]मुखवार्तया।
तृतीयं रागनाशत्वाच्चतुर्थं तेन भाव्यते॥

विचित्रे प्रथमानन्दं परमानन्दं [9]विपाकके।
विरमानन्दो [10]विमर्दे च सहजानन्दो विलक्षणे॥

विचित्रं विविधं ख्यातमालिङ्गनचुम्बनादिकम्।
विपाकं तद्विपर्यासं सुखं ज्ञानस्य भुञ्जनम्॥

विमर्दमालोचनं प्रोक्तं सुखं भुक्तं मयेति च।
विलक्षणं त्रिभ्योऽन्यद् रागारागविवर्जितम्॥

---

१. मुखा–क। २. विश्वं–घ.। ३. हूँ हूँ हूँ-सार्वत्रिकः पाठः, गृहीतस्तु भोटानुसारी। ४. रसोनार्थं–क। ५. नास्ति–भो.। ६. एते श्लोका हेवज्रे (१।८।३२-३३, २।३।७-९) द्रष्टव्याः। ७. सैव तु–क.। ८. सुखकाङ्क्षया–भो.। ९. वियोगके–क.। १०. 'विचित्रे' इति सार्व. पाठोऽशुद्धः।

अत एवाह—

न रागो न विरागश्च मध्यमा नोपलभ्यते।
त्रयाणां वर्जनादेव सहजसंबोधिरुच्यते ॥

इति प्राप्ताभिषेकं(कः) कृत्य(त)कृत्य इदं ब्रवीत् (ब्रुवीत)—

अद्य मे सफलं जन्म सफलं जीवितं च मे।
अद्य बुद्धकुले जातो बुद्धपुत्रोऽस्मि साम्प्रतम् ॥

परमत्र तथागतोक्त[1]वचनेन मण्डलप्रवेशादिप्रत्यभिषेकं गुरवे त्रिपटदानं [2]दक्षणार्थम्। अभावपक्षे तु आदौ, मध्ये, अन्ते च। सर्वथाऽभावपक्षे तु सर्वोद्देशेन प्रथममेव त्रिपटम्, पर्यन्ते च दक्षिणा। यथाकथञ्चिदपि चन्द्रातप[3]दानम्, मृदून्च-[4]मवूलकं (मसूरकं) च। स्वर्णाङ्गुलीयकमवश्यं[5] गुरवे देयम्। एवं होमत्रयं[6] कार्यं प्रतिष्ठादावपीति। ततः—

होमं कृत्वा बलिं दत्त्वा कृत्वा [7]सज्जनमेलकम्।
संघ[8]भोज्यं ततः कृत्वा दीनानाथांश्च तर्पयेत् ॥ इति।

सर्वं चेदं वज्रवज्रघण्टासहितहस्तेन कार्यम्। तत्र—

वज्रमष्टाङ्गुलं प्रोक्तं यद्वा तद्[9] द्वाद[10]शाङ्गुलम्।
वज्रमष्टविधं कार्यं हेमताम्रादिसंभवम् ॥

त्रिशूकं पञ्चशूकं च नवशूकमिति त्रिधा।
द्विधा भूयोऽपि भिद्येत सौम्यासौम्यप्रभेदतः ॥

चतुर्थं विश्ववज्रं च [11]पञ्चशूकं चतुर्मुखम्।
मध्यमं ग्रहणस्थानं शूकं तन्मानमन्तयोः[12] ॥

मकरदन्तदंष्ट्रात्तं मकरान्त्रेण निर्गतम्।
स्थूलशूलकृशाग्राग्रं तीक्ष्ण[13]क्रमनमन्मुखम् ॥

अनतिक्रान्तदिग्भागं मध्यशूकं पृथूदरम्।
अन्तरं [14]चतुरस्रा(स्रा नां शूकरामध्यशूकतः ॥

---

१. गतोक्तं वचनमण्डल—क. ग। २. दक्षिणां च—क. ग। ३. तपिदा—क.। ४. मघ्यलकं—क. ग.। ५. 'मवश्यं' नास्ति—क. ख., 'गुरवे' नास्ति—ग. घ. भो.। ६. 'त्रयम्' नास्ति—भो.। ७. सर्जनमेकम्—क., मज्जनमेलकम्—ग.। ८. संघं भोक्तुं—क.। ९. तत्र—क.। १०. द्वाविंशा—भो.। ११. पञ्चकं चतुर्मुखं—क.। १२. मन्त्रयोः—सार्व., गृहीतः पाठः—भो.। १३. ग्रीग्रतीष्ठ—क., ग्राग्रतीर्णं—ग.। १४. चतुरं मारं मानां—घ.।

पूर्वेण तु महाश्वेतं दक्षिणे पीतसंयुतम्[1] ।
लोहितं पश्चिमं भागं मरकतोत्तरसन्निभम् ॥११॥

वज्रानुरूपतो ह्रासवृद्धी मानप्रमाङ्गुलौ ।
यस्य च समाः शून्याः(लाः) किञ्चिदूनास्तु मध्यमात् ॥

दष्ट्राग्रशूलमूलाशा विकचाम्बुजमेखलाः ।
ईषदस्याधिकः[2] कार्यो मेखला मध्यमांसकः[3] ॥

अन्योन्येन समौ शेषौ क्रमेण द्विगुणौ कृतौ ।
राजदष्टदलाम्भोजमुखमूलावली[4] द्वयोः ॥

इति वज्रलक्षणम् ।

षड्भागैरामुखं घण्टा तत्र भागचतुष्टयम् ।
शुद्धकात् समयं कार्यमन्यदन्येन निर्मितम् ॥

तत् [5]कम्पमध्यमाकाशं तिर्यगायामयोः समम् ।
[6]दिगुत्पलाष्टकभागे [7]कुम्भभागे परे सृजेत् ॥

ऊर्ध्वभागद्वयेनैव दिशि प्रज्ञामुखं[8] भवेत् ।
मुखोर्ध्वं पूर्ववज्रार्धमिव वज्रार्धमुल्लिखेत् ॥

तथाष्टाद्यङ्गुला घण्टा वज्रानुरूपवर्तिनी ।
ईषन्मीलिताम्भोजमुखी स्यात् [9]कापि गोमुखी ॥

इति घण्टालक्षणम् ॥१०॥

रजोभुवो वर्णभेदं वक्तुमाह—**पूर्वेण**त्यादि । सुगमम् ॥११॥

---

१. संयुतम्—ख. घ. ङ. भो. । २. दत्यधिकः—ग. घ. ङ. । ३. मासकः—क. ग. । ४. मूलावलीं—घ. । ५. कम्पमाकाशं—क., कस्यमधमा—घ, कम्पमथमा भो. । ६. विद्युत्पला—सार्व., गृहीतः पाठः—भो. । ७. कुम्भं—ग. घ. । ८. सुखं—घ. । ९. कपिशोमुखी—क. ग. ।

इन्द्रनील[1]प्रभाकारां मध्यभूमिं समालिखेत् ।
मुद्रान्यासं तथा कुर्याद् विधिदृष्टेन कर्मणा ॥१२॥
[2]मध्यतः संलिखेद्वज्रं[3] चक्रं पूर्वं समालिखेत् ।
द्रष्टव्या एवमाद्यास्तु मुखतुल्या[4]मुद्रिकान्(काः)सदा ॥१३॥

तत्रेदं पात्री[5]श्रुवात्मा(मा)नम्—

दण्डं कुर्यात् प्रमाणेन हस्तमात्रं[6] समन्ततः ।
तदूर्ध्वं [7]मुण्डवत् कार्यं चतुरङ्गुलमानकम् ॥१४॥
खनीयाद्य(द् द्वय)ङ्गुलं तत्र अङ्गुलार्धं [8]सनालिका ।
अङ्गुष्ठपर्वतो निम्नमधो [9]द्वयङ्गुलमानकम् ॥१५॥

---

[10]**विधिदृष्टेने**ति। यथायोगं सूर्य[11]चन्द्राद्यारूढवज्रं पञ्चशूकं चक्रमष्टारम्। **एवमाद्या** इति। नवा[12]ङ्गपीतरत्न[13]रक्तपद्मश्यामखड्गाः। अभ्यन्तरपुटे दिशि विदिशि चक्रवज्रपद्मोत्पलानि। बाह्यपुटे [14]पूर्वादिद्वारे कृष्णमुद्गरशुक्लदण्डरक्तपद्मश्यामखड्गाः। बहिःपुटे कोष्ठे कपालचतुष्टयं च **मुखतुल्या** [15]**मुद्रका** इति। स्वदेवताया प्रधानमुखवर्णाः ॥१२-१३॥

[16]**हस्तमात्रकमि**ति। अधस्तात्स्थितद्वयङ्गुलरत्नषडङ्गुल[17]रत्नवज्रं हित्वा हस्तमात्रो दण्डः। तदूर्ध्वं दण्डोपरिस्थितमेखलाबन्धचतुरङ्गुलादूर्ध्वं[18] [19]**मुण्डवदि**ति चतुरस्रम्। सर्वतस्तत्कियन्मानमित्याह—**चतुरङ्गुलमानकमि**ति ॥ १४ ॥

खनीयाद् द्वयङ्गुलमिति। चतुरङ्गुलके द्वयङ्गुलनिम्ना खनिः। चतुर्ष्वपि पार्श्वेषु [20]ना(सा)र्द्धाङ्गुलं परित्यज्य[21] खनिः। मध्ये द्वयङ्गुलं त्रिशूकवज्रमित्युपदेशः।

---

१. समाका—ग. च. । २. 'खसमे सदा मुद्रासंलि' अधिकः पाठः—भो. । ३. वज्रा—घ. । ४. आयुधा—भो. । ५. पात्रं—क. ख. ग. घ. च. । ६. मात्रसम—क. । ७. मण्डलवत्—भो. । ८. 'स' नास्ति—ङ. । ९. एकाङ्ग—भो. । १०. कर्मणा विधि—भो. । ११. चन्द्राघोरवज्रं—क ग. । १२. न चोक्त-क. । १३. 'रत्न' नास्ति—क. ग. । १४. 'पूर्वादि' नास्ति—भो. । १५. आयुधाः—भो. । १६. प्रथमं हस्त—भो. । १७. 'रत्न' नास्ति—भो. । १८. 'दूर्ध्वं' नास्ति—क । १९. मण्डलवत्—भो. । २०. सार्धा—भो । २१. त्यक्त्वा—क ।

[1]श्रुवा पद्मदलाकारा अस्मिन् तन्त्रे प्रशस्यते ।
अमण्डलप्रतिष्ठोऽपि पञ्चानन्तर्यंकान्य(र्यं)पि ॥१६॥

प्राणातिपातिनो ये च मत्स्यमांसादिभक्षकाः ।
[2]मदिराकामिनीसक्ता नास्तिकव्रतधारिणः ॥१७॥

अनभिषिक्ता नरा ये च [3]तद्वद्व्यसनकारिणः ।
[4]ग्रामजालरता ये च यमारितन्त्रपरायणाः ॥
सिद्धयन्ते नास्ति सन्देहः कृष्णस्य वचनं यथा ॥१८॥

अथ ते मैत्रेयप्रमुखाः सर्वबु[5]द्धबोधिसत्त्वा वज्रनिरुक्तिपदं श्रुत्वा[6] तूष्णींभावे[7] स्थिता अभूवन् । तत्रेदं वज्रावेशसमयम् ॥१९॥

अर्धाङ्गुलसनालिकेति । पात्री शिरःस्थितपद्मदलाकारेऽष्टाङ्गुलदीर्घद्व्यङ्गुलनिम्नमध्ये चतुरङ्गुलमध्यविस्तारे खनिस्थित[8]पञ्चशूकचतुरङ्गुलमात्रवज्रे[9] पात्रीतो घृतवहनार्थमर्धाङ्गुलमानं छिद्रं यत् तद्[10]द्व्यङ्गुलसनालिका। एवमियं द्विहस्तमात्रा पात्री॥ १५ ॥

श्रुवो(वा) पद्मदलाकारेति । श्रुवाऽर्धहस्तप्रमाणा । तत्राधस्तादङ्गुलपञ्चशूकवज्रम् । तदधोऽङ्गुलमानं रत्नम् । तदुपरि हस्तमात्रो दण्डः । उपरि त्र्यङ्गुलमेखलोपशोभिता । तदुपरि षडङ्गुलमानपद्मदलाकारा त्र्यङ्गुलत्रिशूकवज्रालिङ्गिता श्रुवा । [11]तत्र(न्त्र)माहात्म्यख्यापनाय—**अमण्डलेत्यादि** ॥ १६–१७ ॥

यमारितन्त्रपरायणाः, पूजाश्रद्धामात्रेणापीति शेषः । कथमेवमिति चेत्—**कृष्णस्ये**त्यादि । अतीन्द्रियां कार्यकारणगतिं वज्रसत्त्व एव वेत्तीत्यर्थः ॥ १८ ॥

वज्रनिरुक्तिमिति । वज्रसत्त्वस्य निरुक्तिं वस्तुस्वभावोक्तिममण्डलप्रविष्टोऽपीत्यादिकाम् । [12]अपरमप्यभिनवशिष्यस्य मण्डलप्रवेशसमये दर्शयितुं **तत्रेदमि**त्यादि ॥१९॥

---

१. श्वेता–च. । २. महिला–क. ख. ग. च. । ३. बुद्धव्य–च. । ४. ग्रामवृत्ति–भो. । ५. 'बुद्ध' नास्ति–क. ख. ग. घ. ङ., वज्रबोधि–भो. । ६. दृष्ट्वा–भो. । ७. तूष्णीं स्थिता–क. ख. घ. ङ. । ८ त्रिशूक–भो । ९. अतः परं क. मातृकायां ७६A पत्रेऽयमधिकः पाठः—"यमारिदुष्टोऽहमिति मन्त्रेण तां करिष्यसि किं यमदुष्टान् त्रासयेद् । यमारये नम इति मन्त्रेण यमं त्रासयेद् । यमवाहनोऽहमिति मन्त्रेण धूल्युत्क्षेपणेन महिषं त्रासयेत्" । १०. तदर्धाङ्गुल–घ. भो. । ११. तन्त्र–भो. । १२. 'अपरमपि' नास्ति–भो. ।

[1]चतुर्भूतमहाबीजे चतुश्चक्रं प्रसाधयेत् ।
चतु[:]स्थानप्रयोगेन(ण) आकाशमपि चालयेत् ॥२०॥

पादान्ते यं । नाभौ रं । हृदि लं । शिरसि वं ॥२१॥

धन्वाकारं महाकृष्णं [2]चण्डमारुतभी:करम् ।
[3]त्र्यस्रो दावाग्निवद् वह्नि(ह्नी) रक्तसूर्यसमप्रभः ॥२२॥

चतुरस्रां महापीतां वज्रधा[4]त्रीधरक्षमाम् ।
सुमेरुपर्वताक्रान्तां भावयेच्च वसुन्धराम् ॥२३॥

वृत्तं शुक्लं[5] महाशीतं[6] घनानामिव वर्षणम् ।
धारासहस्रसंपूर्णं[7] प्रालेयाचलशीतलम् ॥२४॥

चतु:स्थानप्रयोगेन(ण) भावयेच्छिष्यवज्रिणम्[8] ।
आवेशं कुरुते क्षिप्रं [9]वज्रामिताभयोगतः ॥२५॥

चतुर्महाभूतबीजमि(जैरि)ति । वाय्वग्निपृथिवीजलमहाभूतबीजैः यं रं लं वंकारैः । **चतुश्चक्र**मिति वायुमण्डलादीनि । **चतुःस्थाने**ति पादतलनाभिहृदय-[10]शिरांसि ॥२०॥

यथाक्रमस्थानबीजाक्षरं वक्तुम्-**पादे**त्यादि । चतुश्चक्राख्यानायाह—**धन्वा**[11][**का**]-**रम्** इत्यादि । अग्रद्वये चलत्पताकाद्वययुक्तम् । **त्र्यस्र**स्त्रिकोणः । **वह्नि**रित्यग्निमण्डलम् । **वज्र**[12]**धात्रीधरक्षम**मिति वज्रपर्वतधरणक्षमम् । तमेव वज्रपर्वतम् ॥२१-२२३॥

[13]**सुमेर्वि**त्यादि । **घनानां** मेघानाम् । महाशीतर्मिति यद्यु(दु)क्तं तदर्थमाह—**प्रालेये**त्यादि । **प्रालेयाचले**ति हिमालयः । **आवेशमि**ति कायावेशम् । वागावेशार्थमाह—**वज्रामिताभयोगत** इति । आविष्टशिष्यस्य जिह्वायां रक्त-[14]आकारपरिणतसूर्ये ह्लीःकारं रक्तं दृष्ट्वा तेनामिताभो द्रष्टव्यः ॥२३-२५॥

---

१. चतुर्महाभूतबीजैरिति टीकास्थः पाठः । २. चन्द्र—क. । ३. अश्रो—क. ख. ग. च. । ४. त्रीव रक्षसाम्-ङ. । ५. शुक्लमहा—क. । ६. गतिं—घ. ङ. । ७. संपूर्णा—ख. ग. घ. च. । ८. ज्रिणः—ङ. । ९. रक्ता—क. ख. ग. च., आकाशा—भो. । १०. योर्णाः—भो. । ११. पञ्चार—क. । १२. पात्री—क. ग. । १३. वज्रपर्वतदर्शनार्थमाह—सुमेर्वित्यादि-भो. । १४. अकार—भो. ।

तत्रेदं प्रश्नसमयम्–

वज्रधर्म महानाथ अमिताभ महासुख ।
ब्रूहि धर्ममहारागं [1]पृच्छेयं यत् शुभाशुभम् ॥२६॥

एकहस्तं [2]समारभ्य यावद् हस्तसहस्रकम् ।
उत्तिष्ठन्ति[3] महाशिष्या[4] इदमावेशविधानतः ॥२७॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि [5]लेपचित्रस्य लक्षणम् ।
मृत्तिकां स्निग्धां संगृह्य [6]जापनं कुरुते व्रती ॥२८॥

माषं दुग्धं तथा मांसं गुडं तिन्तिडिकादिभिः ।
तैलेन निम्बपत्रेण [7]नाडीकबीजकैस्तथा ॥२९॥

प्रथमं [8]चित्रयेच्छुक्लैरन्यवर्णं च लाञ्छयेत् ।
खटिकागैरिकाभ्यां वै[9] पयोऽलक्तकसन्निभम्[10] ॥३०॥

हरितालनीलिकाभ्यां तु श्यामवर्णं भवेत्तदा ।
नीलं नीलिकया चैव कृष्ण(ष्णं) कज्जलकैस्तथा ॥३१॥

कपिलं[11] तालकेनैव रक्त(क्तं) हिङ्गुलकैस्तथा ।
बिल्वलालां ततो दद्यान्न्यूनं नाभ्यधिकं तथा ॥३२॥

तत्रेति। तस्मिन्नमिताभे निष्पन्ने सति। **प्रश्नसमयं** प्रश्नप्रकारः। यथोक्तचतुर्महाभूतभावनयैव[12] स्वपुण्यापेक्षे(क्षो)यं कस्यचिच्चित्तावेश इति यल्लिङ्गं तद् वक्तुम्— **एकहस्तमित्यादि** ॥२६-२७॥

अथात इत्यादि **रत्नमुकुटं षडङ्गुलमित्यन्तेन**(त्यन्तं) सुगममिति [न]

---

१. पृच्छेदं–क. ख. ग. घ. च. भो.। २. समादाय–क. ख. ग. घ., स्तमुपादाय–घ.। ३. छतु–क. ख. ग. घ., छन्तु–च.। ४. महाराग–क. ख. ग. घ. च.। ५. लेख–क. ख. ग. घ. च, भीमकाय–भो.। ६. जामकं–क. ख. ग. घ च। ७. नाडीच–क. ख. ग. घ. च., तथैव च केसरः–भो.। ८. चित्रशुक्ले तु–क. ख. ग. घ. च.। ९. 'वै' नास्ति–क. ग. च.। १०. न्निभैः–ङ.। ११. पिला–क. ख. ग. घ. च.। १२. भावनयेव–क. ग.।

अभ्यधिके कृष्णतां याति हीनं धूसरतां व्रजेत् ।
क्रोधसौम्यद्विधाभावे लक्षणं चैव कथ्यते ॥३३॥

[1]सौम्यं तु ललितं प्रोक्तं क्रोध[ः] खर्वं इति स्मृतः ।
[2]चतुरङ्गुलनालेन[3] ललाटचिबुकेन[4] वा ॥३४॥

ग्रीवा [5]गले तथा मेढ्रे[6] चतुरङ्गुलमानकैः ।
चतुर्विंशति[7]हस्तं च विंशदङ्गुल ऊर्ध्वंतः[8] ॥३५॥

पाणिपादं तथास्यं तु अङ्गुष्ठं नेत्रमानकम् ।
कर्णं तु द्व्यङ्गुलं प्रोक्तमण्डकायं[9] चतुस्तथा ॥३६॥

ओष्ठाभ्यां द्व्यङ्गुलं प्रोक्तं नाभिरङ्गुलखात[10]कम् ।
[11]मुखं त्रिभागं [12]कायं तु ग्रीविकारहितं मतम् ॥३७॥

जटा[13]चास्यप्रमाणा स्याद् रत्नमुकुटा(टं)[14]षडङ्गुलम् ।
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि एकजटायाः प्रसाधनम् ॥३८॥

यक्षिणीसिद्धिकाले तु एकजटां विभावयेत् ।
द्विभुजामेकवक्त्रां तु कर्तिकपालधारिणीम् ॥३९॥

नीलवर्णां महाभीमां भावयेद् गर्भमण्डले ।
जम्भलां पूर्वतो [15]ध्यायेद् [16]वसुधारां तु दक्षिणे ॥४०॥

व्याख्यातम् ॥२८-३७॥

यक्षिणीसाधनार्थमाह—**अथात** इत्यादि । **यक्षिणीसिद्धिकाल** इति । यक्षिणीसिद्धि(द्धया)काङ्क्षाकाले, महानीलां[17] वेति शेषः । बीजा[18]नुक्तेरुपदेशात् [19]कृष्णहूँकार-

१. सौम्यलालित्यकं-ङ. । २. 'चतु·······मानकैः' नास्ति—ग. च. । ३. नासेन—घ. ङ. भो. । ४. चिबुकैस्तथा-ङ. भो. । ५. गल्ल—घ. । ६. मेढ्रश्च-ङ. । ७. विंशेन क. ख. घ. । ८. ऊर्ध्वकं—ङ. । ९. मण्डकोषं—भो. । १०. खाष्ट—ग. च. । ११. मुख-क. ख. ग. घ. च. । १२. कार्यं- क. ख. ग. घ. च. । १३. वास्य—क. ख. ग. ङ. च. । १४. मुक्ता—घ. । १५. ध्यायाद्—ख. घ. । १६. वसुन्धरा—ख. घ. । १७. नीलाश्चेति—क. ग. । १८ बीजानङ्कुरवशात्-क., नङ्कुरोपदेशात्—ग. । १९. 'कृष्ण' नास्ति-भो. ।

जलेन्द्रान् पश्चिमे न्यस्य उत्तरे [1]चिबिकुण्डलीम् ।
आग्नेयादिचतुष्कोणे चतुर्यक्षीं विभावयेत् ॥४१॥

कुन्तलां [2]देहिनीं गेहां [3]सुन्दरीं विधिवन्न्यसेत् ।
द्वारपालांस्ततो ध्यायान्मुद्गरादीन् समन्ततः ॥४२॥

[4]पूर्वंचक्रं यथा दृष्टं तथा वर्णं प्रयोजयेत् ।
अधिपतिचिह्नधराः पश्चान्मन्त्रं जपेद् बुधः ॥४३॥

निष्पन्ना। गृहादिनिष्पत्तिर्यमारिगृहवत् । एताः सर्वा द्विभुजाः। मुद्गरास्तु [5]षड्भुजा एव ॥३८-४२॥

पूर्वंचक्रमिति। रजोर्वर्तितमण्डलचक्रवत्। यमारिमण्डलवदित्यर्थः। **अधिपतिचिह्नधरा** इत्येकजटावत् कपालकर्तिधराः। अयमर्थः—एकजटायोगयुक्तेन मन्त्रमक्षरलक्षं मौनेन जप्त्वा यदा यक्षिणी साध्या, तदा कुमारीकर्तितसूत्रेणाऽच्छिन्नदशककर्पटकृतपटे यक्षिणीमभिलिख्य नानालङ्कारभूषितां नवयौवनसम्पन्नां श्रृङ्गाररसां सपुष्पफलवटाशोकाम्रवृक्षाणामन्यतम[6]शाखावलग्नवामहस्तां दक्षिणवरदाम्। तस्या अग्रतः पुष्पधूपनैवेद्यं दत्त्वा विजने एकजटायोगयुक्तो जपेन्मन्त्रम्। सप्ताहादागच्छति। आगतायाः सुगन्धितकुसुमोदकेनार्घो देयः। ततः [7]सिद्धा भवति। माताभगिनीभार्याणामन्यतमभाषानिर्णयेन तथैव सा पालनीया, अन्यथा मरणमिति। अथवा कृष्णचतुर्दश्यष्टम्योरन्यतमस्यां तिथौ फलके पूर्ववदभिलिख्य एकजटायोगेन हृद्बीजरश्मिनाकृष्य मुद्गरादिचतुर्मन्त्रैः सन्निधीकृत्य चित्र प्रवेश्य बद्ध्वा वशीकृत्य योनौ हस्तं दत्त्वा मन्त्रं जपेत्। परं मौनेन। [8]ततः सप्ताहादागच्छति। सागत्य हठेन साधकं कामयेत्(यते)। अनेकप्रियाख्यानं करोति। भयानकं च दर्शयति परं न भेतव्यम्, न च किञ्चिद् वक्तव्यम्। ततः सुरतावसाने सिद्धा भवति। यद्यदभिलषति योगी क्रीडया प्रयच्छति। अथ न सिध्यति, तदा यमान्तकयोगेन एकजटायोगेन वा वज्राङ्कुशं स्फारयित्वा स्वहृद्बीजाक्षराङ्कुशेन योनौ विद्ध्वा गलके पाशेन बद्ध्वा आत्मीयचित्रे प्रक्षिप्य तस्या एव शिरसि यमान्तकं कल्पदा-

---

१, चिति–ङ. । २. केहि–भो. । ३. वसुधरीं–भो. । ४ पूर्वे–क. ख. ग. घ. च. । ५. मुद्गरायास्तु–क. घ. । ६. गोखरावल–क. । ७. कर्मसिद्धा–भो. । ८. 'ततः……वक्तव्यम्' नास्ति–घ. ।

ॐ एकजटे [1]वसुसाधनि स्वाहा ॥४४॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि [2]पुक्कस्याश्चैव[3] साधनम् ।
येन भावितमात्रेण त्रैलोक्यं [4]पुक्कसेत् क्षणात् ॥४५॥

पिङ्गवर्णां चतुर्वक्त्रां चतुर्भुजां गर्दभारूढां भावयेत् । [5]पुक्कसकर्मणि पाशं मुद्गरं बाणं धनुषं भावयेद् व्रती । [6]ॐ पुक्कसी २ [7]युं ॐ फट् ॥४६॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि मञ्जुवज्रस्य मण्डलम् ।
मञ्जुवज्रे प्रसिद्धे तु अदृश्यो भवति क्षणात् ॥४७॥

हाग्निसमं ध्यायात् । अधोरेफेण वह्निकूटं च । ततः साटोपं प्रक्षिप्य यमारिमन्त्रमेकजटामन्त्रं वा आवर्तयेत्, नियतं सप्ताहात् सिध्यति ॥४३-४४॥

अथ पुक्कस्या अपि साधनमिति । ततः सिद्धिं **पुक्कसेदि**ति [8]पुक्कमाकर्षयेत् ॥४५॥

पिङ्गलवर्णामित्यादि सुबोधम् । पुक्कारबीजसम्भवामिति शेषः । **पुक्कसकर्मणी**ति [9]पुक्काकर्षणकर्मणि । अयमर्थः—एतद्देवतायोगेन जिह्वायां रक्तज:[10]कारनिर्गतरश्मिना साध्यस्य पुक्कस्थानं विद्ध्वा पुक्के शुक्लखंकारं ध्यायात् । ततस्तद्वुक्कमागत्य तेनैव रश्मिना स्ववुक्के प्रविश्यायं [11]पाशं वामतः, मुद्गरं दक्षिणतः, [12]बाणं दक्षिणतः, धनुर्वामतः । पाशेनासौ गले बन्धनीयः । [13]मुद्गरेण चाकोटनीयः । धनुरापूर्य वुक्कस्थाने हन्तव्यः । **ॐ पुक्क पुक्के**ति ॐ पुक्क अमुकस्य पुक्क [14]पुक्क इतीदं पूर्वसेव [15]याऽक्षरलक्षं जप्त्वा कर्तव्यम् ॥४६॥

अन्तर्धानाख्यानायाह—**अथात** इत्यादि । **मञ्जुवज्रे प्रसिद्धे तु** मञ्जुवज्रप्रसिद्धौ सत्याम् ॥ ४७ ॥

---

१. वन्धसा–ङ., वसुधारिणि–भो. । २. पुष्क–क. ङ. । ३. स्यायाः प्रसा–घ. ङ. । ४. पुष्क–क. ग. ङ. । ५. पुष्कसी–ङ., पुक्कसीकाय–भो. । ६. पूक्कं २–ङ. । ७. 'युं' 'फट्' नास्ति–क. ख. घ. ङ., ॐ पुक्कसी अं इति मन्त्रं वदेत्–भो. । ८.९. वुक्क–क. ग. । १०. जकार–भो. । ११. योगं–क. ग । १२. पाशं–क. । १३. अङ्कुशेन–भो. । १४. नास्ति–भो. । १५. पूर्वमेव योऽक्ष–क. ग. ।

[1]त्रिमुखं षड्भुजं पीतं तप्तचामीकरप्रभम् ।
बालरूपधरं नाथमदृश्यार्थं विभावयेत् ॥४८॥

पूर्वेण सुन्दरीं न्यस्य दक्षिणे केशिनीं तथा ।
पश्चिमे विह्वलां ध्यात्वा उत्तरे चोपकेशिनीम् ॥४९॥

सर्वेषां[2] च करे खड्गं चक्रादीनपरे न्यसेत् ।
त्रिमुखा:[3] षड्भुजा:[4] सर्वा नानाभरणभूषिता: ॥५०॥

[5]मंकारबीजसम्भूता गर्भमण्डलसंस्थिता[:] ।[6]
प्रत्यालीढपदा: सर्वा: शशिमण्डलसंस्थिता: ॥५१॥

मारीचीं[7] पर्णशबरीं[8] वसुधारां[9] च चुन्द्रिकाम्[10] ।
आग्नेयादिचतुष्कोणे न्यसेद् रत्नसमुच्चया:(यान्) ॥५२॥

अशोकपत्रं शाखां च धान्यमञ्जरि[11]दण्डकम् ।
पीतं श्यामं पुन: पीतं शुक्लं[12] देहान् तु भावयेत् ॥५३॥

पीतमिति । पीतं मूलमुखं दक्षिणवाममुखं तु नीलं शुक्लम् । उपदेशाद् दक्षिणे खड्गबाणकर्तिधर:, वामे नीलोत्पलचापकपालधर: ॥ ४८-४९ ॥

कर इति प्रथमदक्षिणकरं(करे) । **चक्रादीनपरे न्यसेदिति** । अपरशेषभुजेषु मोहयमार्यादिवत् चिह्नभूत: । **सारसमुच्चया:** सारभूता: ॥ ५०-५२ ॥

प्रधानचिह्नाख्यानायाह—**अशोकपत्रमिति** । सपत्रकुसुमाशोकपल्लवम् । **शाखा** इति अश्वत्थपल्लवम् । **दण्डकं** त्रिदण्डम् । सर्वा द्विभुजा:, अपरकरे तर्जनिका:[13] । वर्णाख्यानायाह—**पीतेत्यादि** । यथाक्रमं मुद्गरादय: पूर्ववत् । **भावयेदित्येवंविधं** भगवन्तम् ॥ ५३ ॥

---

१. 'त्रिमुखं·······विभावयेत्' नास्ति—ग. च. । २. षां तु—ङ. । ३. खान्—ङ. । ४. ज:—ङ. । ५. मकार—क. ख. ग. घ. च. । ६. इत: परं 'ॐ मञ्जुवज्र मं हुं फट्' इत्यधिक: पाठ:—च., रं हुं—ग. । ७. रीची—क. ग. च. । ८ बरी-क. ग. च. । ९. वसुधा चु—क. ग. च. । १०. चन्दिका—ख. घ. ङ., चण्डिका—ग. । ११. मञ्जलि च. । १२. शुक्रं—च., शुक्लदेहा—घ. । १३. तर्जनीका:—क. ।

त्रिमुखाः[1] षड्भुजाः[2] सर्वा माण्डलेयाश्च कीर्तिताः ।
मुद्गरादिचतुर्द्वारे भावयेन्न[3] च दृश्यते[4] ॥५४॥

[5] इति [6] सर्वतथागतकायवाक्चित्तकृष्णयमारितन्त्रे[7]
मञ्जुवज्रसाधनं[8] नाम चतुर्दशः पटलः ॥

न च दृश्यत इति । चकारात् करुणावशाद् दर्शयति चात्मानम् ॥ ५४ ॥
मञ्जुवज्रसाधनं यत्रोक्तमसौ[9] पटलस्तथा ॥

इति चतुर्दशपटलव्याख्या ॥

---

१. खान्–ङ. । २. भुजः–ङ. । ३. येत्तच्च–क. ख. ग. । ४. अतः परं 'ॐ मारीची पर्णशबरी मां हूं फट्' इत्यधिकः पाठः–ग. च. । ५. नास्ति–ख. घ. ङ. । ६. 'सर्व....चित्त' नास्ति–ग. च. । ७. महातन्त्रे–ग. च. । ८. साधनो–ख. ङ, साधनपटलश्चतुर्दशः–ग., दशमः–च, वज्रसाधनोपायनाम क्रमभेदश्चतुर्दशः–भो. । ९. यथाक्रममसौ–क. ।

पञ्चदशः पटलः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि [1]आर्यजाङ्गुलिसाधनम् ।
येन भावितमात्रेण जलस्योपरि चङ्क्रमेत् ॥१॥

त्रिमुखां षड्भुजां पीतां [2]फूःकारबीज[3]संभवाम् ।
सर्पहस्तां महारूपां मयूरवाहनप्रियाम् ॥२॥

पूर्वतो मायूरीं लिखेद् दक्षिणे भृकुटीं तथा ।
पश्चिमे पर्णशबरीमुत्तरे वज्रशृङ्खलाम् ॥३॥

पक्षं कमण्डलुं शाखां स्फोटां चापि विभावयेत् ।
पीतं रक्तं तथा श्यामं नीलं[4] वर्णप्रभेदतः ॥४॥

एता[5] विभावयेत् प्राज्ञो मन्त्रं चैव जपेत्ततः ।

फूःकारबीजसम्भूताम्इति । पूर्ववत् [6]कूटागारादि[7]निष्पत्त्यनन्तरम् आ(अ)कारादिभिरादर्शः,[8] ककारादिभिः समता, [9]फूःकारजसर्पेण प्रत्यवेक्षणा, सर्पक्रोडे[10] वा पुनः [11]फूःकारेण कृत्यानुष्ठानम्[12] । आदर्शमात्रैकलोलीभावः सुविशुद्धधर्मधातुः । तदुत्पन्न-[13]फूःकाराख्ये वज्रसत्त्वनिष्पन्नाम् । **सर्पहस्ताम्**इति दक्षिणहस्ते । अपरदक्षिणभुजयोः खड्गकर्तौ । वामभुजत्रये तु चक्रपद्मकपालानि । **मयूरवाहने**ति मयूरारूढाम् ॥१-२ ॥

मायूर्यादीनां यथाक्रमं दक्षिणहस्तचिह्नाख्यानायाह—**पक्षम्**इत्यादि । **पक्षं** मयूरपक्ष[14]कलापम् । **शाखां**[15] अश्वत्थस्य शाखाम्[16] । **स्फोटां** वज्रशृङ्खलाम्[17] । आसां यथाक्रमं वर्णभेदं वक्तुमाह—**पीतम्**इत्यादि । आसां च यथोक्तचिह्नपरिहारेणापरभुजेषु मोहयमार्यादिवत् चिह्नानि ॥ ३-५ ॥

---

१. आर्याङ्गुलिप्रसा–ख. घ., 'जाङ्गुलि.... फूःकार' इत्यंशो नास्ति–ग. । २. फुः–क. ख. ग. घ. च. । ३. परिसं-क. ग. च. । ४. नीलवर्णं–ख. ग. घ. ङ. च. । ५. एतां–ङ. । ६. कूटाङ्गारा–क. । ७. दिलिख्यन्ते । अनन्तरम्–क. ग । ८. आदर्शसदृशज्ञानम्–भो. । ९. फूंःकारसर्पेण–क., फूःकार–ग. । १०. सर्पके तु–ग., सर्पहृदये–भो. । ११. फूंः–क । १२. ष्ठानज्ञानम्–भो. । १३. फूंः–क. । १४. पक्षं–क. ग. । १५-१६ शाखा–क. । १७. 'स्फोटं वज्रशुद्धताम्' इति सार्व., गृहीतः पाठः–भो. ।

ॐ फूः[1] जः ॥५॥

मुद्गरादीन् न्यसेद् द्वारे पुष्पादीन्[2] कोणके न्यसेत् ।
[3]आयंजाङ्गुलियोगेन जलमाक्रम्यते सदा ॥६॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि कुरुकुल्ला[4]प्रसाधनम् ।
येन भावितमात्रेणाकर्षयेन्नाग[5]योषितम् ॥७॥

रक्तवर्णां चतुर्वक्त्रामष्टबाहुसमन्विताम् ।
[6]ह्रीःकारबीजसम्भूतां [7]नागाकर्षणकारिणीम् ॥८॥
[8]अष्टपाणौ न्यसेन्नागाननन्ताद्यान् कुलाष्टकान् ।
सर्वाभरणभूषिताङ्गान् सुरूपान् भावयेद् व्रती ॥९॥

पुष्पादीनिति पूर्ववद् द्विभुजा एव । भावनानिष्पत्तौ च जलमण्डलं लंकारपरिणतं माहेन्द्रमण्डलं पीतं भावनीयम् ॥ ६ ॥

कुरुकुल्लायामपि सर्वं पूर्ववद् वज्रप्राकारवज्रपञ्जरनिष्पत्ति[9]पर्यन्तम् । विशेषस्तु पञ्चाकाराभिसंबोधौ । बीजेनोत्पन्नं[10] प्रत्यवेक्षणा । तद्गर्भचन्द्रस्थबी[11]जस्फरणसंभरणं कृत्यानुष्ठानम् । सर्वसमरसीभावः सुविशुद्धधर्मधातु[ज्ञान]म् । तज्जह्रीःकारवज्रसत्त्वाद्[12] निष्पत्तिः[13] ॥ ७-८ ॥

अष्टपाणौ न्यसेन्नागानिति[14] । दक्षिणभुजचतुष्टयेऽनन्ततक्षककुलिकशङ्खपालान् यथाक्रमं नीलोत्पलश्यामरक्तनानावर्णपीतान्,[15] वामभुजचतुष्टये पद्मकर्कोटकवासुकिमहापद्मान् श्वेतकृष्णपीतपाण्डरवर्णान् यथाक्रमम् । नागाकर्षणकारिणीमित्युक्ते वृष्टौ च सामर्थ्यं भवत्येव[16] । तत्रायमुपदेशः—[17]नीलीरसेन अपक्वसरावं [18]अष्टारचक्रमध्येऽष्टदलपद्मं लिखित्वा वरटके कुरुकुल्लामन्त्रं [19]साध्यनाम [20]नागनामदर्भितं लिखेत् । ॐ कुरुकुल्ले ह्रीः अमुकनागमाकर्षय वर्षय तर्जय गर्जय हूँ[21] ह्री ँः स्वाहा । श्रावणादिमासत्रये यथाक्रमं कर्कोटकशङ्खपालवासुकयः परिवर्तन्ते । तत्र एवं नागनाम मासानुक्रमेण

---

१. फूः २ जः फुः–भो. । २. ष्पादि–ग. च । ३. आर्याङ्गुलि–ख. घ., ङ्गुलियुक्तेन–ग., ङ्गुलियोगेन–च. भो. । ४. ल्लायाः प्रसा–ङ. । ५. नागतोषि–ग., योषितान् ख. घ. ङ. । ६. ह्रीः–ङ. । ७. नाना–क. ख. ग. । ८. अत्र–क. ख., अथ–ग. च. । ९. निष्पन्नेन्द्रिय–क. । १०. नोत्पलं....क्षणाज्ञानम् तन्नाभि–भो. । ११. वीरेण संभवनं–क. । १२ सत्त्वः–भो. । १३. 'निष्पत्तिः' नास्ति–भो. । १४. नागमिति–क. । १५. पीतानां–क. ग. । १६. भवति–क. । १७. नानारसेन–घ । १८. अष्टखड्गार–क. घ., अष्टस्वङ्गार–ग. । १९. नागनाम–ग. घ. । २०. 'नाग' नास्ति कुत्रापि, गृहीतः पाठः–भो. । २१. हूः ह्रीः–ग. घ., फूः ह्री–भो. ।

मन्त्रः—ॐ कुरुकुल्ले [1]ह्रोः फुः स्वाहा ।

अथातो रहस्यं वक्ष्ये समासान्न तु विस्तरात् ।
येन [2]विज्ञातमात्रेण अप्सराकर्षणं भवेत् ॥१०॥

द्विभुजमेकवक्त्रं तु [3]शरकार्मुकपाणिनम् ।
पीतदेहं महारूपं वज्रानङ्गं विभावयेत् ॥११॥

पूर्वेण रतिं ध्यायाद् दक्षिणे मदनसुन्दरीम् ।
पश्चिमे कामदेवीं[4] तु उत्तरे मदनोत्सुकाम् ॥१२॥

सर्वासां कामदेवीनां कार्मुकं भावयेच्छरम् ।
पीतां रक्तां तथा श्यामां शुक्लवर्णां[5] च भावयेत् ॥१३॥

कोणे चैव न्यसेन्नित्यमनिरुद्धमुषापतिम् ।
वसन्तं [6]मकरकेतुं च[7] द्वारि(र)भागे प्रकथ्यते ॥१४॥

कन्दर्पदर्पकं चोक्तं स्मरं बाणायुधं तथा ।
सर्वेषां देवतानां तु यमघ्नं मूर्ध्नि भावयेत् ॥१५॥

विदर्भ्य अपरापक्वशरावेण संपुटीकृत्य [8]नीलसूत्रेण संवेष्ट्य तत्र कुरुकुल्लामावाह्य प्रवेश्य बद्ध्वा वशीकृत्य सम्पूज्याज्ञां[9] दत्वा नागाधिष्ठितह्रदादौ निक्षिपेत् ततो वर्षति॥९॥

[10]अप्सराकर्षणाय वज्रानङ्गं वक्तुम्—**अथात** इत्यादि। वश्यं वशे हितम्। **शरकार्मुकपाणिन**मिति दक्षिणवामपाणिभ्यां बाणधनुर्धरम् ॥ १०-१२ ॥

रत्यादीनामायुधाख्यानायाह—**कार्मुकमि**त्यादि। वर्णाख्यानायाह **पीत(ता)-मि**त्यादि। अनिरुद्धादयो वज्रवर्चिकादिवर्णाः। वसन्तादयो मुद्गरादिवर्णाः। [11]सर्व एते द्विभुजा इति शेषः। **यमघ्नमि**ति [12]पूर्वतथागतानाम् ॥ १३-१५ ॥

---

१. ह्रीःफट्–ङ। २. विज्ञान–घ.। ३. इषु–क. ख. ग. घ. च.। ४. देवं–च.। ५. क्लरक्तां–क. ख. ग. घ. च.। ६ कपिकेतुं–भो.। ७. नास्ति–ग. च.। ८. पीत–भो.। ९. सम्पृक्त्वा–क.। १०. विद्याधरा–भो.। ११. सर्वत्र ते–घ.। १२. पूर्ववत् तथा-गतानाम्–भो.।

स्त्रीणां [1]खगमुखान्तस्थं वज्रानङ्गं[2] विभावयेत् ।
[3]शीत्कारमन्त्रसम्भूतं विस्फुरन्तं समन्ततः ॥१६॥
[4]वाञ्छितां विह्वलां ध्यात्वा [5]वेपमानां [6]मदोत्सुकाम् ।
पादयोः पतितां चैव रक्तवस्त्रपरीवृताम् ॥१७॥
मन्त्रं चैव जपेत् तत्र ॐकारस्वरभेदितम् ।
स्वाहाकारं[7] ततो दत्त्वा [8]शीत्कारमन्त्रमुच्चरेत् ॥१८॥
अमुकी मे वशीभवतु भावयेत् सप्तवासरम्[9] ।
वाञ्छितां लभते योगी कृष्णस्य वचनं यथा ॥१९॥

[10]इति [11]सर्वतथागतकायवाक्चित्तकृष्णयमारितन्त्रे[12]
वज्रानङ्गसाधनः[13] पञ्चदशः[14] पटलः ॥

आकृष्टिविधानायाह—**स्त्रीणा**मित्यादि। **खगमुखान्तस्थ**मिति साध्यस्त्रीयोनिमध्यस्थम्। परवज्रानङ्गयोगवान् स्वयं भूत्वा। **वज्रानङ्ग**मिति तन्मन्त्रम्, [15]मन्त्रदेवयां[16]रभेदात्। कतमत्त[17]न्मन्त्रमित्याह—[18]**शीत्कारमन्त्रम्**। शीत्कारसंभूतमिति स्फुटनमम्। विस्फुरत्[19] तद् ज्वलद्रश्मिभिस्ततत् सकलगात्रव्यापकम् ॥१६॥

मदनो[20]**त्सुका** तत्सुरतकाङ्क्षिणी। **ॐकारस्वरभेदित**मिति। उपदेशाद् ॐ ह्रीः-कारादि। **स्वाहाकारं ततो दत्त्वे**ति। **शीत्कारं** मध्ये दत्त्वाऽन्ते स्वाहाशब्दो[21] देयः ॥१७-१८॥

[22]मन्त्रः—ॐ ह्रीः अमुकी मे वशीभवतु शीत् स्वाहा। **सप्तवासरं** सप्ताहम् ॥१९॥

[23]वज्रानङ्गसाधनं यत्रोक्तमसौ **वज्रानङ्गसाधनः** ॥

इति पञ्चदशपटलव्याख्या ॥

---

१. षण्मु–ग., पद्ममु–भो.। २. नन्तं भाज–ग. च.। ३. ह्रीःकार–भो.। ४. अर्वाक्स्थितां–ङ.। ५. वेधमानां–घ.। ६. सदोत्सु–ग. च., मनोत्सु–ङ.। ७. तन्त्रे–ग., अन्ते–क. ख. घ.। ८. शीकार–क. ख ग.। ९. वारकम्–ग. घ. च.। १०. नास्ति–ख. घ. ङ.। ११. सर्व...चित्त' नास्ति–ग. च.। १२. महातन्त्रे–ग. च.। १३. साधनपटलः पञ्चदशमः–ग. घ. च., अनङ्गवज्रसाधनक्रमभेदः पञ्चदशः-भो.। १४. दशमः–ख.। १५.'मन्त्र' नास्ति–घ.। १६. रभेदानामेकं तं हन्तुमित्याह–क.। १७. तन्त्रमन्त्र-सार्व, गृ० भो०। १८. नास्ति–क.। १९. विस्फुरद् ज्वल–क., स्फुरन्तं ज्वल–घ.। २०. नोन्मत्ता–क. ग.। २१. शब्दादयः–क.। २२. ततः–ग. घ. भो.। २३. 'वज्र' नास्ति कुत्रापि, गृहीतः पाठः–भो.।

षोडशः पटलः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि महाहेरुकसाधनम् ।
[1]यज्ज्ञात्वा मुच्यते क्षिप्रं योगी संसारबन्धनात् ॥१॥

द्विभुजमेकवक्त्रं तु नीलवर्णं सताण्डवम् ।
पाणौ [2]विभावयेद्वज्रं करोटं चापरे न्यसेत्[3] ॥२॥

त्रिनेत्रमूर्ध्वकेशं च पञ्चमुद्राविभूषितम्[4] ।
खट्वाङ्गं वामभागेषु हारनूपुरभूषितम् ॥३॥

हूंकारबीजसम्भूतं प्रेतस्थं [5]सस्मितं सदा ।
मूर्ध्नि पञ्चकपालानि पञ्चबुद्धप्रयोगतः ॥४॥

अक्षोभ्यं मुकुटे [6]ध्यात्वा हेरुकाख्यं विभावयेत् ।
धर्मचक्रं लिखेत् पूर्वे बुद्धबोधिं तु दक्षिणे ॥५॥

[7]सर्वकामलतां पश्चादुत्तरे हेरुकसन्निभाम्[8] ।
नानारूपविलासिन्यः सर्वाभरणभूषिताः[9] ॥६॥

ज्ञात्वेति साक्षात्कृत्य ॥१॥

[10]तत्स्वरूपाख्यानायाह—**द्विभुजमित्यादि** । **पाणाविति** दक्षिणहस्ते । **करोटं** कपालम् । **अपरे** वामे ॥२॥

पञ्चमुद्रेति चक्रि[11]कुण्डलकण्ठी[12]रुचकमेखलम् ॥३॥

हूंकारबीजसम्भूतमिति । सप्तविधानुत्तरपूजादिवज्रसत्त्वव्रतापत्तिपर्यन्तं कृत्वा । प्रेतस्थं मृतहृदयं सूर्यस्थम् । **प्रयोगत** इति विशुद्धितः । **नानारूपाः** शुक्लपीतरक्तश्याम-वर्णाः ॥४–६॥

---

१. यं ज्ञात्वा–ङ. । २. तु भाव–ङ. । ३. भावयेत्–भो. । ४. भूषिताः–च. । ५. संस्मि–क ग. घ. च., संमि–ङ । ६. मुकुटं–ङ. । ७. सर्वकर्म ग. च. । ८. न्निभम्–ङ. । ९. षिताम्–ख. ग. घ. । १०. तत्र–क. ग. । ११. चक्री–ग. घ. । १२. रोचक–क. ।

प्रेतस्थाश्चारुरूपाश्च सर्वमोहाद्य[1]हारिकाः ।
धर्मचक्रं [2]तथाऽश्वत्थं चिन्तामणिकल्पपादपम्[3] ॥७॥

[4]वज्रं च भावयेद् देव्याः पाणौ दक्षिणभागतः ।
नृकरङ्कं चापसव्ये वै [5]भावयेच्चक्रमण्डले ॥ ८ ॥

लोचनां मामकीं तारां पाण्डरां[6] च मनोहराम्[7] ।
आग्नेयादिचतुष्कोणे बाह्यचक्रे यमान्तकम्[8] ॥ ९ ॥

प्रज्ञान्तकं[9] हयग्रीवं[10] [11]सर्वकुण्डलि भावयेत् ।
द्वारपालाश्च[12] सर्वे[13] वै विधिदृष्टेन कर्मणा ॥१०॥

प्रेतस्था मृतकहृदयचन्द्रस्थाः । **धर्मचक्रम्** अष्टारचक्रम् । **अश्वत्थं** पिप्पलवृक्षम् । **चिन्तामणिकल्पपादपौ** च वृक्षौ । एषां [14]मध्ये तद् योगिन्यो लेख्याः ॥७॥

वज्रमिति पञ्चशूकम् । **देव्या इति** देवीनाम् । **पाणौ दक्षिणभागत** इति दक्षिणहस्ते **नृकरङ्कं** नृकपालम् । [15]**अवसव्ये** वामे ॥८॥

मनोहरामिति लोचनामित्यादिभिः प्रत्येकं सम्बद्ध्यते । [16]**द्वारभाग** इति । पूर्वदक्षिणादिद्वारे ॥९॥

[17]**सर्वकुण्डलिमिति** । अमृतकुण्डलिम् । **विधिदृष्टेनेति** । दिग्योगिनीषु वामे खट्वाङ्गम् । तत्र लोचनादयः शुक्ल[18]नीलरक्तश्यामाः । चक्रवज्ररक्तपद्मखड्गधरा दक्षिणे ।

---

१. मोहाय–ङ., कारकाः–क. ग. ङ., हारकाः–च । २. 'तथा स्वच्छं' सार्व०पाठः, गृहीतपाठस्तु टीकानुरोधात्, अश्वत्थदण्डं–भो. । ३. पादपाः–ङ., पादपं तथा–भो. । ४. 'तथा वज्र' सार्व०पाठः, गृहीतस्तु–भो. । ५. धर्मचक्रे–भो. । ६. पाण्डरां तारां–क. ख घ । ७. मनोरमां-ङ. । ८. न्तके घ. । ९. न्तक–घ. । १०. ग्रीव–क. ग. घ. च. । ११. अमृतकु-ङ., सहकु–भो. । १२. लांश्च–ख. । १३ चक्रे वै–भो. । १४. एषामधो–भो. । १५. अप–क. । १६. द्वारभाग इति मूले नोपलभ्यते, भोटभाषानुवादे एवमेव पाठः । १७. सह–भो. । १८. पीत–भो. ।

[1]इति [2]सर्वतथागतकायवाक्चित्तकृष्णयमारि[3]तन्त्रे
हेरुकसाधन[4]पटलः षोडशः[5] ॥

वामे तु कपालधराः। यमान्तकादयो मुद्गरपद्मखड्गधराः। वामे तर्जनिकापाशभृतः[6]। तथा ज्ञानमण्डलप्रवेशेऽनुक्तमुद्रणं च कार्यमिति। अत्र भगव[7]न्निष्पत्त्यैव माण्डलेयानामपि निष्पत्तिर्भगवद्हृदयबीजात् ॥१०॥

इति षोडशपटलव्याख्या ॥

---

१. नास्ति–ख. घ. ङ. भो.। २. 'सर्व····चित्त' नास्ति–ग. च.। ३. महातन्त्रे ग. च.। ४. साधनक्रमभेदः षोडशः–ग. च. भो.। ५. षोडशमः–च.। ६. पाशधृतः–क. ग.। ७. भगवान् निष्पत्त्यै–ग. घ. ङ.।

सप्तदशः पटलः

पञ्चाकारं विभावित्वा बुद्धबिम्बं विभावयेत् ।
बुद्धबिम्बं विभावित्वा चक्रिणं[1] भावयेद् बुधः ॥१॥

चतु[2]र्गीतिप्रयोगेन(ण) चक्रिणोत्पाद विद्यते ।
र्चचिकाद्यादि[3]गीतेन गायन्ते[4] षोडु[5](षाड)वादिभिः ॥२॥

सकलतन्त्रोक्तं व्यस्तभावनं यथा ऋजु[6](जू)कृत्य बोद्धव्यं तथा वक्तुमाह—**पञ्चाकारमि**त्यादि । तत्र अकारादिस्वरैः षोडशभिर्द्विगुणितैश्चन्द्र आदर्शज्ञानमेक आकारः । [7]ककारादिभिरधिक(कैः) त थ द ध य लसहितैश्चत्वारिंशता व्यञ्जनैर्द्विगुणितैरर्कः समताज्ञानं द्वितीय आकारः । बीजाक्षरेण चिह्ननिष्पत्तिः, चिह्ने च बीजमिति प्रत्यवेक्षणाज्ञानं तृतीय आकारः । ततो [8]देवताचक्रस्फरणसंह[र]णं कृत्यानुष्ठानं चतुर्थ आकारः । तत्र चन्द्रादेः सर्वद्रवीभूय समरसीभावः सुविशुद्धधर्मधातुज्ञानं पञ्चम आकारः । **बुद्धबिम्बमि**ति वज्रसत्त्वम् । **वज्रिणमि**ति चतुर्गीतिसंचोदनयाऽभिमतदेवतारूपं प्रधानम् । तदेवाह—**चतुर्गीति(तो)**त्यादि । **र्चचिकाद्या** इति । [9]पूर्वं या नै[10][रा]त्मा(त्म्या)दयो भावितास्ता एव बोद्धव्याः, माण्डलेयानामद्याप्यनिष्पत्तेः । यत्र तु वज्रधरस्य[11] निष्पत्तिर्नास्ति, तत्र [12]सर्वसंहारजचिह्नस्थबीजमेव व[ज्र]सत्त्वः । यतो वज्रं चिह्नमुच्यते, तत्र यत् सत्त्वं बीजं तद्वज्रसत्त्वम् । परं तत्र संचोदनागीर्ति[13] विनैव तत् सर्वपरिणामेनोत्पत्तिः । **षाडवादिभिरि**ति । सा(षा)डवः पूर्वविवृतः[14] । आदिशब्देन कफलादि[15]रालादिभिः ॥ २ ॥

---

१. चक्रिणां–क. ग. घ. ङ. च., वज्रिणं–टी. । २. 'नृत्यगीत' इति सार्वत्रिकः पाठः, गृहीतस्तु–टी. भो. । ३. दिस्वगी-क. ख., विश्वगी–च. । ४. गायते–च. । ५. ओडुवा–क. । ६. सूक्ष्म-क., अक्ष्य–ग., क्रमं–भो. । ७. ककारादि व र य सहितैः–भो. । ८. 'देवताचक्र' नास्ति–भो. । ९. पूर्वंयामेत्यादयो–ग. घ. । १०. मैत्र्यादयो-भो. । ११. सत्त्वस्य–भो. । १२. सर्वदुःखजचिह्नस्य–भो. । १३. गीतिमितिवत्–क. । १४. विभृत–सार्व., गृहीतः पाठः–भो. । १५. लाद्रिवाला–ग., लादिवाला–घ., अनेकस्वरयुक्तै–भो. ।

उट्ठ भराडउ[1] करुणाकोह। तिहुअण[2] सअलह [3]फेडहि मोह ॥३॥
ए [4]च उमार पराजिअ राउल। उट्ठ भराडो[5] चित्ते[6] आउल ॥४॥
लोअणि[7] मंति[8] अच्छसि[9] सुण्णे[10]। उट्ठ भराडो लोअह पूर्णे(पुण्णे) ॥५॥
काइ तु अच्छसि[11] सुन हो विंत्ति।[12] बोधिसहाव[13] लो[14] अणिमंति ॥६॥

यथा तारकसंक्रान्ति[र्] बोधिचित्तं तथा विशेत्।
करुणारागचित्तेन विलीनो वज्रधृक् स्वयम् ॥७॥

उठ्ठेति उत्तिष्ठ।[15] **भराडउ** भटा(ट्टा)रक। **करुणाकोहे**ति कृपया निर्मितक्रोधः। **तिहुअणे**ति त्रिभुवनं कामधातु-रूप[16]धातु-आ(अ)रूपधात्वाख्यम्। **फेडहीति**[17] स्फोटय। एतद्वज्रचर्चिकायाः ॥ ३ ॥

ए चउमारेति। एतत्क्लेशक(स्क)न्धदेव[18]मृत्युरूपं चतुर्मारम्। **पराजिता-(अ)** [इति] पराजित्य, अभिभूय। **राउलेति** राजकुले। **आउलेति** व्याकुल। वज्र-वाराह्याः ॥ ४ ॥

लोअणिमत्ति अ इति लोकानामन्त्यबुद्धत्वेन। **सुण्णे** शून्यतायां महासुखैक-रसनिष्ठायाम्। **लोअहपूर्णे(पुण्णे)** इति लोक[ा]नामेव पुण्येन[19]। एतद्वज्रसरस्वत्याः ॥५॥

[20]**काइ तु** कस्मात् त्वम्। **सूर्णे(सुण्णे) होवि**[21]**तो**ति शून्यतायामित्यर्थः। **लोअणि-मन्तीति**[22] लोकानामन्ते। एतद् वज्रगौर्याः ॥ ६ ॥

गीतप्रयोजनाख्यानायाह—**यथे**त्यादि। अयमर्थः—करुणारागचित्तेन विलीन-स्यानन्तरं संचोदना, तदनु [23]तारकसंक्रान्ति[24]र्बोधिचित्तं विशेदिति बोद्धव्यम्। **बोधि-चित्तमिति**। ॐ आः हूँ इत्यक्षरत्रयं ज्वल[25]द्रूपम् ॥ ७ ॥

---

१. भराउल—भो. । २. तिहुताण—क. ख. ग. घ. ङ. च. । ३. फजहि—ङ. । ४. एच्चउ भावय वा सइ राउल—ङ. । ५. उतथ भराउडा—ङ. । ६. चिन्ते—क., चिते—च. । ७. लोउणि—ङ । ८. मंती—ङ. । ९. अच्छसि—ख. । १०. सुर्णे—क., सूर्णे—ख., पूर्णे-घ., शून्ने-ङ, सुवर्ण—च. । ११. च्छमि सुमहो वितिः—क. ग., अन्तहा चिंतां—ङ. । १२. वोहि—ङ. । १३. वैले घ. । १४. प्रणि—ङ. । १५ राउलेति—भो. । १६. रुपपत्तिधातु—घ. । १७. फेडहि—क. । १८. न्धग्रवमृत्यु—क. ग. । १९. पुण्यानां—क. ग. । २०. कांइतु—ग. घ. । २१. होचित्तीति शून्यतां विचिन्त्याशून्यताया—ग. घ., शून्यताचित्त इति शून्यतां विचिन्त्य—भो. । २२. सत्तीति—क. । २३. ताचक्र—क. । २४. संक्रान्तिसदृशं—भो. । २५. क्रोधं—क. ।

प्रथमं भावयेद् योगमनु[1]योगं द्वितीयकम् ।
अतियोगं तृतीयं तु महायोगं चतुर्थकम् ॥८॥

वज्रसत्त्वस्य निष्पत्तिर्योग इत्यभिधीयते ।
तन्निष्यन्दोदयो[2] देव[3] अनुयोगः [4]प्रगीयते ॥९॥

निष्पत्ति(त्तिः) सर्वचक्रस्य अतियोगो विभावितः ।
दिव्यचक्ष्वाद्यधिष्ठानं कायवाक्चित्तमेव च ॥१०॥

ज्ञानचक्रप्रवेशश्च अमृत[ा]स्वादमे(द ए)व च ।
महापूजा स्तुतिश्चापि महायोग इति स्मृतः ॥११॥

एतत्तन्त्रे[5] सुखबोधार्थं[6] संकेतं वक्तु **प्रथममि**त्यादि ॥ ८ ॥

योगादेरेव निर्देशार्थं **वज्रसत्त्वस्ये**त्यादि । सप्तविधानुत्तरपूजातः प्रभृति यावद्वज्रसत्त्वनिष्पत्तिपर्यन्तं योग इत्यर्थः । **तन्निष्यन्दोदय** इति । तस्मिन् द्रुते[7] वज्रसत्त्वे संचोद्योत्थापितो देवः [8]कालयमारिः ॥ ९ ॥

सर्वचक्रस्येति माण्डलेयदेवतासमूहस्य[9] । **कायवाक्चित्तमेव त्वि**ति कायवाक्चित्ताधिष्ठानं च ।

अमुनैवार्थेन साधनं साधु कथ्यते—स्वहृदि रक्त[10]रंकारजरक्तसूर्यस्थ [11]कृष्णहूंकारनिर्गतरश्मिनाऽग्रतो द्विधाभूतेन पाशाङ्कुशाकारेण भावयितव्यं[12] यमारिमण्डलचक्र[13]सम्बरतलविद्धमुपरि बध्वाऽऽनीयाग्रतः संस्थाप्य रश्मिमुत्सृज्य तन्मुखेन नानाविधां पूजां कृत्वा प्रणम्य यन्मया कृतं कारितमनुमोदितं वा यावत् तत् सर्वं पापं[14] देशयामि । पुनर्मया जीवितस्यार्थेन न कर्तव्यमिति संवरं[15] कृत्वा येन यावत् पुण्यं कृतं तदनुमोदे । तत्र एतत्पूजादिना यन्मे पुण्यमुपचितं तत्सर्वस्य जगतोऽर्थायानुत्तरायां सम्यक्संबोधौ परिणामयामि । आबोधेर्बुद्धं शरणं गच्छामि । धर्मं शरणं गच्छामि । संघं शरणं गच्छामि । तदनु आत्मन[ा] यमारिरूपेण बुद्धो भूत्वा सर्वसत्त्वा मया श्रीयमारिरूपेण बुद्धाः कर्तव्याः । तदर्थं च मयेदमेव [16]मन्त्रमहायानमाश्रितमिति । एवं पूजा-पापदेशना-

---

१. मन्त्रयोग–ङ. । २. न्दा देहदेवा–भो. । ३. 'देवाः' मूलस्थः पाठः । ४. प्रमी–ख. ग. घ. च. । ५.एतत्तत्र–क. ग. । ६. बोधार्थः–घ., इतः परं 'संकेतं''''इत्यर्थः' नास्ति–घ. । ७. व्रते–क. ग. । ८ फल–भो. । ९. देवताचक्रसमूहस्य–भो. । १०. यंकारज–भो. । ११. 'कृष्ण' नास्ति–घ. । १२. तव्यः–घ. । १३. 'सम्बर' नास्ति–भो. । १४. सर्व देशयामि–क. ग. । १५. नास्ति कुत्रापि, गृहीतः पाठः–भो. । १६. महागुह्यमन्त्रमा–भो. ।

पुण्यानुमोदना-पुण्यपरिणामना - त्रिशरणगमन - बोधिचित्तोत्पाद - मार्गाश्रयणलक्षणमिति सप्तविधानुत्तरपूजां कृत्वा सर्वसत्त्वेषु एक[1]पुत्रप्रेमतालक्षणां मैत्रीं कृत्वा। दुःखा[द्] दुःखहेतोर्वा समुद्धरणकामता(ना)लक्षणां[2] करुणाम्, सर्वाकारसुखोपसंहार[3]वाञ्छात्मिकां मुदिताम्[4], तथैव च लोकोत्तरसुखसमन्वयवाञ्छाकारामुपेक्षाम्[5]। एवं चतुर्ब्रह्मविहारं विभाव्य स्वप्नमायोपमं जगद् विचिन्त्य, ॐ शून्यताज्ञानवज्रस्वभावात्मकोऽहमिति मन्त्रमुच्चार्य आकाशसमं चित्तं कृत्वा।

रेफेण सूर्यं पुरतो विभाव्य तस्मिन् रवौ हूँभवविश्ववज्रम्।
तेनैव वज्रेण विभावयेच्च प्राकारकं पञ्जरबन्धनं च॥

तेन भूमिवाडं[6] च तदभ्यन्तरावस्थितविश्ववज्रस्योपरि स्थितावकाशात्मकाकाशे[7] कृष्णयँकारजवायुमण्डलं धनुराकारं कृष्णं कोटिद्वये चलत्पताकाद्वयान्वितम्, तदुपरि रक्तरंकारेणाग्निमण्डलं त्रिकोणं रक्तं कोणेषु[8] च रेफाङ्कितम्, तदुपरि सितवंकारेण जलमण्डलं [9]घण्टाङ्कं सितमधोमुखम्, तदुपरि पीत[10]लंकारेण चतुरस्रं पृथ्वीमण्डलं पीतं कोणेषु त्रिशूकवज्राङ्कितं विभाव्य, [11]झटिति वायुमण्डलादिसर्वपरिणामेन [12]कूटागारं द्विपुटं विश्वदलकमलस्योपरि यथास्वं स्थितचन्द्रसूर्यासनं चतुरस्रं चतुर्द्वारम् अष्टस्तम्भोपशोभितं चतुस्तोरणभूषितं हारार्धहारघण्टापताकादिसहितं सर्वसम्पूर्णलक्षणं ध्यात्वा, [13]मध्यपुटमध्ये आ(अ)कारादिषोडशभिः स्वरैरावर्तविवर्तेन द्विगुणितैश्चन्द्रमण्डलमादर्शज्ञानविशुद्धम्, तदुपरि ककारादिभिर्व्यञ्जनैरपि क[14] ङ द ध य लकारैर्द्विगुणितैश्चावर्तविवर्तेन सूर्यमण्डलं समताज्ञानविशुद्धम्, तदुपरि [15]हूँकारं तेन पञ्चशूकवज्रम्, तद्गर्भे पुनः सूर्यस्थ[16]हूँकारं प्रत्यवेक्षणाज्ञानविशुद्धम्, ततो [17]हूँकाराद्यमारिचक्रं संस्फार्य सत्त्वार्थं कृत्वा पुनरानीय [18]पुनर्मन्त्ररूपेणाकृष्टं कृत्यानुष्ठानज्ञानम्, तत्सर्वं झटिति द्रवीभूतं शुक्लं सुविशुद्धधर्मधातुज्ञानात्मकं विभाव्य, एवं पञ्चाकाराभिसम्बोधिना वज्रसत्त्वं वक्ष्यमाणयमारिचिह्नधारिणं शुक्लवर्णं मूलशुक्लदक्षिणकृष्णवामरक्तमुखत्रयोपेतं चन्द्रमण्डलस्थं [19]वज्रवाराह्याकार[20]शुक्लस्वाभा[21]समापन्नं पश्येत्।

इति योगः[22]।

---

१. एकसूत्र–क. ग.। २. लक्षणा करुणा–क.। ३. वागात्मिका–क.। ४. मुदिता–क.। ५. मुपेक्षा–क.। ६. वादं–घ., बन्धं–भो.। ७. त्मकाकाशगैकेषु–क., गैक्येषु–ग.। ८. णेषु हाङ्कितं–क, च हाङ्कितं–ग.। ९. घटाङ्गं–भो.। १०. पीतवंका–घ.। ११. तदुपरि–भो.। १२. कूटाङ्गा–क.। १३. तथा पुट–क.। १४. द ध व य र ल–भो.। १५-१७. हंकारं–क.। १८. 'पुनर्मन्त्ररूपेणाकृष्टम्' इत्यस्य स्थाने 'सहृतम्' इति–सार्व., गृहीतः पाठः–भो.। १९. वज्रधाराकार–क.। २०. रक्त–भो.। २१. स्वाभामापन्नं–क. ग.। २२. शेषः–क.।

ततः स्वहृदयस्थहूँकाररश्मिना यमारिचक्रमाकृष्य मुखेन प्रवेश्य रागानुरागेण द्रवीकृत्य वज्रमार्गेण देवीकमले समुत्सृज्य तद्बोधिचित्तं निष्पन्नमाण्डलेयबीजाक्षराणि यथास्थानं संस्थापयेत्। तत्राभ्यन्तरपुटे पूर्वेण चन्द्रमण्डले क्षेकारं[1] सितम्, दक्षिणे सूर्यस्थमकारं पीतम्, पश्चिमे सूर्यस्थमेकारं रक्तम्, उत्तरे हरितं दकारं सूर्यस्थ(स्थम्)। आग्नेयादिचतुर्षु[2] कोणेषु चन्द्रमण्डलस्थं यथाक्रमं जा स दो रु इत्यक्षरचतुष्टयं सितकृष्णरक्तहरितवर्णम्, बाह्यपुटपूर्वदक्षिणादिद्वारेषु य च्च नि रा इत्यक्षरचतुष्टयं सूर्यस्थं कृष्णसितरक्तहरितवर्णम्, कोणचतुष्टये[3] सितवर्णचन्द्रमण्डलस्थं ण यो नि र इत्यक्षरचतुष्टयं पश्येत्। ततो रागानुरागेण स्वविद्यया सह विलीय [4]शुक्रद्रवरूपं वज्रसत्त्वं पश्येत्। ततः पूर्वप्रणिधान[5]वशान्मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाचर्चिकादियोगिनीचतुष्टयम् अभ्यन्तरपुटकोणेषु पश्येत्। तत्र वज्रचर्चिका एवं संचोदयति—

उठ्ठ भराडो करुणाकोह। तिहुअण सअलह फेडहि मोह॥

तथा वज्रवाराही—

ए चउमार पराजिअ राउल। उठ्ठ भराडो चित्ते आउल॥

तथा वज्रसरस्वती—

लोअणिमन्ति अच्छसि सुण्णे। उठ्ठ भराडो लोअह पूर्णे(पुण्णे)॥

तथा वज्रगौरी—

काइ तुं अच्छसि सूर्णे(सुण्णे) होन्ती[6]। बोहिसहाब लोअणिमन्ती॥ इति।

[7]गीतिसमनन्तरमेव ॐ आः हूँ इत्यक्षरत्रयं रक्तवर्णरक्तहोकार[8]द्वयविदर्भितं द्रवसंहती प्रविशत् पश्येत्। ततस्तेन द्रवेण रक्तसूर्यस्थ[9]कृष्णयंकारं तेन पञ्चशूकवज्रं तद्[10]गर्भे च रक्तसूर्यस्थकृष्णयकारं ततः [11]सबीजवज्रपरिणतमात्मानं द्वेषयमारिं कृष्णं क्रुद्धं रौद्रं लम्बमानमुण्डमालाधरं करालोर्ध्वज्वलत्केशभ्रुश्मश्रुभ्रुवम् ईषद्दंष्ट्राकरालास्यं लम्बोदरं प्रलयानलसन्निभम् अष्टनागाभरणं व्याघ्रचर्माम्बरं[12] मूलकृष्णदक्षिणसितवामरक्तमुखत्रयोपेतं षड्भुजं दक्षिणभुजत्रयेण वज्रखड्गकर्तिधारिणं वामभुजत्रयेण चक्रपद्म-

---

१. क्षेंकारं–ख. ग., लाकारं–घ.। २. 'चतुर्षु' नास्ति–भो.। ३. ष्टयं–क. ग.। ४. 'शुक्र' नास्ति–भो.। ५. धानावेदवशात्–घ.। ६. होविन्ती–क. ग.। ७. गौरिसम–क.। ८. हाकार–क. ग., 'रक्तहोकारद्वयविदर्भितं' नास्ति–भो.। ९. 'कृष्ण' इत्यस्य स्थाने सर्वत्र 'नील' इति–भो.। १०. तत्र–क.। ११. सुबीज–घ.। १२. चर्मधरं–क.।

कपालधारिणं महामहिषपुच्छधर(रं)[1] सूर्यमण्डले प्रत्यालीढपदं शिरःस्थितपञ्चबुद्ध-स्वभावकपञ्चकपालखण्डं पञ्चमुद्राधरं रोमकूपविवरात् [2]स्फरदात्मसमानयमारिसंघातं ॐ ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन[3] हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा इति मन्त्रमुच्चरन्[4] [5]ध्यायात्।

इत्यनुयोगः॥

तदन्वभ्यन्तरपुटपूर्वदिशि स्थितक्षेकारेण मोहयमारिशुक्लं मूलसितदक्षिणकृष्ण-[6]वामरक्तवदनं दक्षिणभुजैश्चक्रखड्गकर्तिधरं वामभुजै रत्नपद्मकपालधारिणम् ॐ जिनजिगिति मन्त्रमुच्चरन्तम्, ततो दक्षिणे मकारपरिणतं पिशुनयमारिं पीतवर्णं मूलपीत-दक्षिणसितवाम[7]कृष्णवदनं दक्षिणभुजै रत्नखड्गकर्तिधारिणं वामभुजैश्चक्रपद्मकपालधरम् ॐ रत्नधृगिति मन्त्रमुच्चरन्तम्, ततः पश्चिमे म[8](मे)कारेण रागयमारि(रिं) लोहितवर्णं मूल[9]रक्तदक्षिणकृष्णवामशुक्ल[10]वदनं दक्षिणकरै रक्तपद्मखड्गकर्तिधारिणं वामकरैश्चक्र-रत्नकपालधरम् ॐ आरोलिगिति मन्त्रमुच्चरन्तम्, तत उत्तरे व(द)कारपरिणतमीर्ष्या-यमारिं मरक्त(मरकत)वर्णं मूलहरितदक्षिण[कृष्ण]वामपीतवर्णं दक्षिणभुजैः खड्गवज्र-कर्तिधारिणं वामभुजैश्चक्रपद्मकपालधरम् ॐ प्रज्ञाधृगिति मन्त्रमुच्चरन्तम्। चत्वारोऽ-प्येते[11] प्रत्यालीढपदाः पिङ्गलोर्ध्वज्वलत्केशा रक्तवर्तुलत्रिनेत्राः प्रलयानलदुःसहाः। ततोऽभ्यन्तरपुटाग्नेयकोणस्थजाकारेण वज्रचर्चिकां मोहयमारिसदृशीं मैत्री[12]स्वभावाम् ॐ मोहरतीति मन्त्रमुच्चरन्तीं पश्येत्। ततो नैर्ऋत्यां[13] सकारेण वज्रवाराहीं द्वेषय-मारिसन्निभां मूलघोणवदनां करुणात्मिकाम् ॐ द्वेषरतीति मन्त्रमुच्चरन्तीं ध्यायात्। ततो वायव्ये [14]दोकारेण वज्रसरस्वतीं रक्तवर्णां रागयमारिसदृशीं मुदितात्मिकाम् ॐ रागरतीति मन्त्रमुच्चरन्तीं ध्यायात्। [15]तत ऐशाने[16] क(दु)कारेण वज्रगौरीम् ईर्ष्यायमारिसदृशीं [17]परं खड्गस्थाने पीतोत्पलधारिणीम् उपेक्षात्मिकाम् ॐ वज्ररतीति मन्त्रमुच्चरतीं पश्येत्। एतास्तु योगिन्य आलीढपद[18]स्थिताः।

ततो बाह्यपुटे पूर्वद्वारे [19]यकारेण मुद्गरयमारिं द्वेषयमारिसदृशीं(शं) परं वज्र-स्थाने धृतत्रिशूकवज्राङ्कितमुद्गरां(रं) ॐ मुद्गरधृगिति मन्त्रमुच्चरन्तम्, ततो दक्षिणद्वारे रु[20](छ)कारपरिणतं [21]मोहयमारिसदृशं दण्डयमारिं परं चक्रस्थाने धृतत्रिशूकवज्राङ्कित-दण्डम् ॐ दण्डधृगिति मन्त्रमुच्चरन्तम्, ततः पश्चिमे लि(नि)कारपरिणतं रागयमारि-

---

१. महिषपृष्ठोधरे–क, पृष्ठोधरवति–घ., दृष्ठसूर्ये–भो.। २ स्फुर–ग.। ३. नने–क. ग.। ४. रेत्-सार्व., गृहीतः पाठः–भो.। ५. तद् ध्यायात्–घ.। ६. नील–भो.। ७. रक्त–भो.। ८. 'मकारेण' नास्ति–क. ग.। ९. मूलं रक्तं–क. ग.। १०. शुक्लं–घ., रक्त–भो.। ११. प्यत्र–क. ग.। १२. महामैत्री–भो.। १३. नैरात्म्यसका–क. ग.। १४. दों–क। १५. तत्र–क. ग.। १६. ऐशानकोणे–क. ग.। १७. वरखड्ग–क.। १८. आलीढवदवस्थि–क.। १९. यंका–क. ग. भो.। २०. रकार–क. ग., चकार–भो.। २१. पिशुन–भो.।

सदृशं पद्मयमारिम् ॐ पद्मधृगिति मन्त्रमुच्चरन्तम्, तत उत्तरद्वारे राकारपरिणतं खड्गयमारिमीर्ष्यायमारिसदृशं ॐ[1] खड्गधृगिति मन्त्रमुच्चरन्तं ध्यायात्। सकलमाण्डलेयदेवता मण्डलेस्व(श्व)रवेशभृतः। ततो बाह्यपुटकोणचतुष्टयस्थितेन(तैर्न) योनि[2]र्(र)बीजैर्विश्वदल[3]कमलस्थस्वासनस्थानि चत्वारि कपालानि पञ्चामृतपरिपूर्णानि ध्यायात् ॥

इति सर्वचक्र[4]स्य निष्पत्तिर**रतियोगो** विभावितः ॥

तदनु मण्डलेश्वरमाण्डलेयानां चक्षुरादि ॐ वज्रचक्षुः वज्रश्रोत्र वज्रघ्राण वज्रजिह्वा वज्रकाय इति मन्त्रेणाधि[5]तिष्ठेत्। तथा शिरसि चन्द्रस्थं शुक्लमोङ्कारं[6] कण्ठे रक्तपद्मस्थ आःकाररक्तम्, हृदि रक्तसूर्यस्थं [7]कृष्णहूंकारं कायवाक्चित्तात्मकं पश्येत्। ततः स्वहृद्बीजरश्मिना आकाशदेशस्थितान् सर्वसम्बुद्धान् [8]सम्पूज्य अभिषिञ्चन्तु मां सर्वतथागता इति प्रार्थयेत्। ततस्तैर्यमारिरूपाप[9]रि(पन्न)पञ्चामृतभृतकलशैरभिषिच्यते। ततः सकलबाह्याभ्यन्तरमलापगमाद् [10]देदीप्यमानं बाह्याभ्यन्तरमात्मानं[11] दृष्ट्वा मण्डलेश्वरमाण्डलेयानां शिरसि स्व-स्व[12]कुले(लं) संपश्येत्। तद्यथा— मण्डलेश्वरस्य अक्षोभ्यम्, मोहयमारिवै(रेर्वै)रोचनम्, पिशुनयमारि(रे) रत्नसम्भवम्, रागयमारेरमिताभम्, ईर्ष्यायमारेरमोघसिद्धिम्, वज्रचर्चिकाया वैरोचनम्, वज्रवाराह्या अक्षोभ्यम्, वज्रसरस्वत्या अमिताभम्, वज्रगौर्या अमोघसिद्धिम्, मुद्गरयमारेरक्षोभ्यम्, दण्डयमारेर्वैरोचनम्, पद्मयमारेरमिताभम्, खड्गयमारेरमोघसिद्धिमिति।

तदनु स्व[13]हृद्बीजरश्मिना ज्ञान[14]मण्डलमानीय [15]सम्पूज्य ॐ मुद्गर जः। ॐ दण्ड हूँ। ॐ पद्म वँ। ॐ खड्ग होः। इति मन्त्रचतुष्टयेन आकृष्य प्रवेश्य बद्ध्वा वशीकृत्य समयमण्डलज्ञानमण्डल[यो]रेकलोलीभावं विचिन्तयेत्। ततो यँकारपरिणतयथोक्तवायुमण्डलोद्दीपितरँकारपरिणताग्निमण्डलतापितसित[16]आकारपरिणतं कपाले- र्विगतप्राणं गोकुदहनम् ॐकाराधिष्ठितं द्रवीभूतं पश्येत्। ॐकारबिन्दुविनिर्गतरश्मिना सर्वबुद्धानां हृदयामृतमानीय तत्र प्रवेश्य शीतीकृतं पञ्चामृतम् ॐ आः हूँ इत्यक्षर-

---

१. 'ॐ खड्ग''''रन्तं' नास्ति कुत्रापि, गृहीतः पाठः—भो.। २. योनिघोरै—क.। ३. 'दल' नास्ति—भो.। ४. 'चक्र' नास्ति—घ.। ५. णाधिष्ठितस्ति—क.। ६. वलमेकारं—क.। ७. नील—भो.। ८. सम्यक् च—क.। ९. रूपावेव—क.। १०. दीप्यमानं—क.। ११. मात्मानन्दस्था—क., राशेषमलविशुद्ध—भो.। १२. स्वकलशं—क. ग., स्वकुलाधिपतिं पश्येत्—भो.। १३. स्वबीज—क.। १४. सर्वत्र मण्डलस्थाने चक्रपदप्रयोगः—भो.। १५. स पूज्यः—क.। १६. रःकार—घ.।

त्रयाधिष्ठितं सर्वदेवानां हूँकारनिष्पन्न[1]विश्ववज्रैकशूकवज्ररश्मिनलिकया मुखे प्रविश्य ध्येयम् । तत्र स्फीतीभूतं चक्रं दृष्ट्वा वज्रचर्चिकामुखेन गीतपूजां कारयेत्—

[2]अडेडेडे किट्टयमारि गुरु रक्तलूब[3] सहाव ।
हडे तुअ[4] पेक्खि[5]अ भीमि[6] गुरु छड्डहि कोह सहाव ॥

ततो वज्रवाराहीमुखेन—

पइणच्च[7]ते [8]कंबि अइ सग्ग[9]मच्चपाआलु ।
किट्ट भिण्णाञ्जण कोहमणु णच्चहि[10] तुहु[11] वेआलु ॥

ततो वज्रसरस्वतीमुखेन—

काला खव्व पमा[12]णहा[13] बहुविह णिम्मसि रूअ ।
वज्जसरा[14]स्सइ विण्ण[15]ममि णच्चहि तुह महासुह[16]रूअ ॥

ततो गौरीमुखेन—

ह्रीः ष्ट्रीः मन्तेण[17] फेडहि केहु[18] तिहुअण भान्ति ।
करुणाकोह भराडउ तह[19] कुरु जगु पेक्खन्ति ॥

इति गीतिकया मण्डलं संपूज्य स्तुतिं तत्र कारयेत्—

मोहवज्रस्वभावस्त्वं यमारिरतिभीषणः ।
सर्वबुद्धमयः शास्ता कायवज्र नमोऽस्तु ते ॥

पिशुनवज्रस्वभावस्त्वं यमारिरतिभीषणः ।
चित्तवज्रप्रतीकाशं रत्नवज्र नमोऽस्तु ते ॥

---

१. 'निष्पन्न' नास्ति-क., 'विश्ववज्र' नास्ति-ग. घ. भो. । २. अ डँ डँ डँ-घ. । ३. सरूअ-टी. । ४. तुहु-टी. । ५. पेक्ष-टी. । ६. विभामि-टी. । ७. णच्चन्तं-टी. । ८. कम्पि-टी. । ९. मचं-टी. । १०. णच्चहु-टी. । ११. तुहुँ-टी. । १२. पवाण-टी. । १३. भावहु-घ. । १४. सरस्सइ-टी. । १५. विणमसि-घ. । १६. 'रूअ' नास्ति-टी. । १७. मन्तं-टी., 'णच्चहु' इत्यधिकः पाठः-टी. । १८. 'केहु' नास्ति-टी. । १९. तहु जगपेक्षणच्चन्तं-टी. ।

रागवज्रस्वभावस्त्वं रागधर्माकरः प्रभुः ।
सर्वघोषवराग्राग्र वाग्वज्र नमोऽस्तु ते ॥

ईर्ष्यावज्रस्वभावस्त्वं यमारिः सार्वकर्मिकः ।
कायवज्रप्रतीकाशः खड्गपाणि(णे) नमोऽस्तु ते ॥

सर्वबुद्धस्वभावस्त्वं सर्वबुद्धैकसंग्रहः ।
सर्वबुद्धवराग्राग्र माण्डलेश नमोऽस्तु ते ॥

इति महायोगः ॥

[1]दिव्यचक्ष्वाद्यधिष्ठानं कायवाक्चित्तमेव तु ।
ज्ञानचक्रप्रवेशश्च[2] अमृतास्वाद एव च ॥
महापूजा स्तुतिश्चापि महायोगस्तु कथ्यते । (१७।१०-११)

उपलक्षणत्वादस्य वक्ष्यमाणमपि महायोगत्वेन बोद्धव्यम्—

एवमात्मानं विभाव्य सर्वेषां हृदि स्वस्वासनवच्चन्द्रसूर्यस्थस्वस्वबीजाक्षराणि पश्यन् मन्त्रं जपेत् । तत्रायं मन्त्रः— ॐ यक्षेममेद यच्चनिरा जासदोरु णयोनिर[3] हूँ फट् फट् फट् स्वाहा । तथा सर्वदेवताकायेभ्यः स्वसदृशदेवताकायं सत्त्वार्थं [4]स्फारयेत् । तत्र द्वेषकुले पतितान् सत्त्वान् विनीय महामहमहाद्वेषे[5] प्रतिष्ठाप्यागत्य[6] मण्डलेशशरीरं प्रविश्य तद्द्वेषयमारिचक्रं[7] द्रष्टव्यम् । तथा मोहकुले पतितान् सत्त्वान् विनीय महामहमहामोहे प्रतिष्ठाप्यागत्य[8] मोहयमारिकायं संहरेत् । तथा पिशुनकुले पतितान् [सत्त्वान्] महामहमहापिशुने प्रतिष्ठाप्य पिशुनयमारिकाये देवताचक्रं संहरेत् । एवमीर्ष्यायमार्यादावपि बोद्धव्यम् ।

एवं पुनः पुनर्विभाव्य खेदे सति षडङ्गं[9] योगं विभावयेत् ।

कृष्णं पीतं तथा रक्तं श्यामं हरितं[10] सितं क्रमात् ।
सहजानन्दमात्रं तु चक्रं[11] ध्यायात् सनायकम् ॥

ततोऽप्युत्थितः पूर्ववद् देवताचक्रं भावयेत् । जपेन्मन्त्रं स्फरेत् संहरेच्चेत्यादि ॥ १०-११ ॥

---

१. वज्रचक्रा—क. ख., वज्ररक्षाधिष्ठान—ग. घ, चक्षुरित्याद्य—टी. पाठः । २. शश्रातोऽमृता—क. । ३. रा हूँ हूँ फट् फट्—भो. । ४. कार—सार्व. । ५. द्वेष—घ. । ६. ष्ठाप्य रश्मिना—भो. । ७. वक्त्रं—क. । ८. 'आगत्य' नास्ति—भो. । ९. डङ्गयो—घ. । १०. हरिसितं—क. घ. । ११. चैकं—क. ।

आचार्या नावमन्तव्याः सुगताज्ञा(ज्ञां) न लङ्घयेत्[1]।
भ्रातॄणां च तथा कोपान्न दोषं संप्रकाशयेत् ॥१२॥
मैत्रीचित्तं तु सर्वेषु न वै त्याज्यं कदाचन।
बोधिचित्तं न वर्ज्ये(र्जे)त[2] स्वपरधर्मं[3] न दूषयेत् ॥१३॥
अपरिपाचितसत्त्वेषु गुह्यं नैव प्रकाशयेत्।
आत्मस्कन्धं[4] न[5] वै निन्देद्[6] ग्राम्यान् धर्मान्न दूषयेत् ॥१४॥
दुष्टमैत्री सदा त्याज्याऽधर्मं[7] नैव प्रमाणयेत्।
[8]श्राद्धसत्त्वं न वै[9] वञ्चेत् समयान्[10] सेवयेत्[11] सदा ॥१५॥
स्त्रीणां प्रज्ञास्वभावानां दूषणाद् दोष एव च।
भिक्षां नैव भ्रमेद् योगी योगं नैव विवर्जयेत् ॥१६॥
जपेन्मन्त्रं सदा नित्यं समयादीन् सेवयेत् सदा।
गुरुद्रोहं त(हस्त)था समये प्रमादाद् यदि संभवेत् ॥
तदा [12]मण्डललेखेन सुगतेभ्यो दोषदेशना[13] ॥१७॥

एवं देवतायोगयुक्तो बलिमधितिष्ठेत्, शान्त्यादिकं च कर्मारभेदिति यथा कर्तव्याख्यानायाह—**आचार्या** इत्यादि। **सुगताज्ञामिति**। यस्यां स्थितौ यदुक्तं भगवता हेयमुपादेयं च। **भ्रातॄणामिति**। वज्रधरनिर्माणत्वेन भ्रातृत्वात् प्राणिनामेवं दोषं न प्रकाशयेदिति सम्बन्धः। तथा **कोपादिति** कोपाविष्टेन। **धर्मं** सुकृतम्। **नैवेति** परमार्थतः। [14]**भावान्(ग्राम्यान्) धर्मान्** पूतिविकृतादीनि[ति]। **धर्मं नैवेति**। उदारदेवताद्याः स्तोक[15]प्रयोजना इति कृत्वा। **सेवनं सदा,** कुर्यादिति शेषः ॥ १२-१५ ॥

प्रज्ञास्वभावानामिति प्रज्ञापारमितारूपाणाम्। **भिक्षामिति**। ग्राह्यग्राहकाभिनिवेशेन। **योगं नैवेति**। देवतादि [16]मूर्तिम्। **सदा** सर्वकाले। **नित्यं** समाहितासमाहित-

---

१. लङ्घने–क.। २. ज्येत्त–क.। ३. धर्म–ख. घ. ङ.। ४. आत्मसत्त्वं–ग.। ५. 'न वै....श्राद्धसत्त्वं' नास्ति–ग.। ६. विन्देद् भावान् वा–सार्व., गृहीतस्तु–भो.। ७. धर्मे–क.। ८. साद्ध–ङ.। ९. न वेदं तत्–ङ.। १०. समयोगी–ख., समयो नाङ्गी–घ., समयानां–क. ग. ङ.। ११. सेवनं–ङ. टी.। १२. मलवत्तेन–ग. घ. ङ., वत्ते तत्–क. ख.। १३. देशनं–क. ग.। १४. भगवान्–घ., नास्ति–भो.।१५. लोकेषु प्रयो–क.। १६. योगं–भो.।

श्राद्धं[1] गुरुं समयपालकमप्रतर्क्यं[2]
कृपान्वितं सकलदोषविहीनचित्तम् ।
[3]ध्यानान्वितं [4]स [5]गुरुजापपरायणं च
कुर्यात् सदा तं गुरुवद् गुरुत्वम् ॥१८॥

धीरं विनीतं करुणैकचित्तं
श्रद्धाश्रयं [6]क्षान्तिधरं प्रशस्यम् ।
यमारिभक्तं गुरुभक्तिभक्तं
शिष्यं प्रतीतं परिपाचनीयम् ॥१९॥

योगेन । पूर्वमपि समयसेवाभिधानात् पुनर्यद् वचनं तस्यायमर्थः—[7]रक्ष्यो भक्ष्यश्चैव तद् द्विधा समयः । पूर्वं [8]भक्ष्यसमयस्योक्तत्वात् रक्ष्य[9]समयाभिप्रायेणेदम् । **गुरुद्रोहमित्य**-पकारः । तथा **समयमिति** समयद्रोहः । **मण्डलमिति** रजोमण्डलम् । **सुगतेभ्यो** गुरुभ्यः, तत्र(ा)सन्निधौ च बुद्धेभ्य एव ॥ १६-१७ ॥

द्रोहप्रस्तावात् कीदृशोऽसौ गुरुः कर्तव्य इत्याह—[10]**श्राद्धमित्यादि** । **समय** इति गोकुदहनादिमेवन(सेवनम्) । **अप्रतर्क्यमिति** । यथा परैर्न लक्ष्यते समयसेवायाम् । **सकलदोषेति** । आगमोक्तदोषः । **ध्यानान्वितमिति** । देवतायोगयुक्तं[11] सत्त्वार्थपरम् । **तं गुरुवद् गुरुत्वमिति** । तत्र गुरौ गुरुत्वं कार्यम् ॥ १८ ॥

शिष्यगुणाख्यानायाह—**धीरमिति** श्रुतपठितशास्त्रम् । **विनीतं** सर्वपरायणम् । **श्रद्धाश्रयं** श्राद्धम् । **प्रशस्यम्** अहीनाङ्गं [12]प्रशस्ताङ्गम् । **परिपाचनीयं** धर्मदेशना-योग्यम् ॥ १९ ॥

---

१. सार्धं–च. । २. प्रतर्कं–क. ग. । ३. ध्यात्वा चित्तं–क. ग. । ४. 'स' नास्ति–ख. घ. ङ. भो. । ५. गुरुपूजा–ग. । ६. क्षान्तिशयं–क. ग. च. । ७. रक्तोक्त्याश्वेत-क. ग. । ८. भक्षे-क., रक्ते–ग. । ९. रक्त-क. ग. । १०. 'मोहमित्यादि । मोहमित्यादि' इति पाठः सार्व., भोटपाठस्तु मूले स्थापितः । ११. योगपरायणं–घ. । १२. नाङ्गं स्तुत्यं–क., प्रत्यङ्गम्–ग. ।

अथ भगवन्तः सर्वतथागता महापरमानन्दरूपिणो वज्रसत्त्वस्य[1] वचनमुपश्रुत्य[2] तूष्णींभावं गता इदमुदानमुदानयामासुः ॥२०॥

यमार्यन्तानि [3]यन्त्राणि कपालान्तं व्रतं महत् ।
समाजान्तानि [4]तन्त्राणि न भूतो न भविष्यति ॥२१॥

अहो धर्मं महाशान्तं महाक्रूरं भयानकम् ।
अहो परमनिर्वाण[5]महो संसारसंततिः[6] ॥२२॥

अहो सुविस्मयमिदं यद्दोष तद्गुणं भवेत् ।
न बोधिर्नाभिसमयो न भावो न च भावना ॥२३॥

महापरमानन्देति सहजानन्दः। **तूष्णीं[7] भावमिति**। 'यच्च[8]..........ता'। **उदानयामासुरु**क्तवन्तः ॥ २० ॥

किमुक्तवन्त इत्याह—**यमार्यन्तानीति**। श्रीयमारितन्त्रे यादृशानि लक्ष्यसिद्धान्यवश्यंभावीनि [9]यन्त्राणि च भासमानान्यस्मिन्। **कपालान्तं** कपालधारणान्तं हेरुकयोगान्तम्। अतः श्रावकादिव्रतं नात्यन्तिकमित्यर्थः ॥ २१ ॥

अहो धर्मं महाशान्तेति। स्वप्नमायोपमाद्वयभावनया [10]निःस्वभावत्वान्महाशान्तिदम्। [11]महाभीमम् **भयानकमिति** शान्तत्वेऽपि विनेयवशान्निर्मितात्मकाद्भुतभीममूर्तितया। एतद्देव[12]द्वयमाह—**अहो** इत्यादि। **परमनिर्वाणमिति** शान्तत्वात्। [13]**अये(हो) संसारसंततिरिति**। [14]अयं च संसारार्णव[15]वद् देवताकारेण वहनात् ॥ २२ ॥

तदेव पुनरनुबध्नाति—**अहो** इत्यादि। **यद् दोषमिति** गृहगृहिणाम् उत्पादनिरोधादिः सांसारिकाणां दोषः। अत्रापि [16]तादृगेव सर्वम्, परं **गुणं** भवेत्। अत्र च [17]यतः कूटा[18]गारस्थित्यादिर्न बन्धहेतुः, किन्तु मुक्तिमेव करोति। [19]कथं पुनर्दोषस्य

---

१ वज्रधरस्य-भो.। २. श्रुत्वा-क. ग.। ३. तन्त्राणि मन्त्राणि-ग. च.। ४. मन्त्राणि-ग. च.। ५. र्वाणं महा-क. घ. च.। ६. शान्तता-भो.। ७. 'तत्राभिरमन्तस्तुष्टिमापन्नाः' इत्यभिप्रायकं वाक्यमत्र दृश्यते-भो.। ८. 'यच्च.........ता' नास्ति-भो.। ९. चक्राणि-भो.। १०. निविभादत्वात्-सार्व., गृहीतः पाठः-भो.। ११. नास्ति-भो.। १२. एतदेवाद्वय-क. ख. ग.। १३ शान्तता-भो.। १४. अथ च-घ.। १५. बद्धवकारेण-क., तद्देवता-घ.। १६. नोक्तमेव-क., तादृशं च-घ.। १७. यः-क.। १८. कूटाङ्गा-क.। १९. कर्म पुनर्भावस्य-क.।

न धातुर्न च विज्ञानमाकाशसमतालयम् ।
आकाशमिव नैरात्म्यमेष[1] धर्ममहासुखम् ॥२४॥

न पृथिवी नाप्तेजो न वायुर्न हुताशनम् ।
वज्रसत्त्वप्रयोगेन(ण) उत्पादोऽयं प्रतिष्ठितः ॥२५॥

गुणता[2] स्यादिआह(दित्याह)—**न बोधिरिति** । नात्र बोधिसत्त्वो बोधिसाध्यत्वेन पृथग् अभिनिविशते । **नाभिसमय** इति । बोध्यर्थ च योऽभिसमयमार्गस्तत्राभिनिविष्टः पृथग्(ङ् न) । [न] **भावो न च भावनेति** । नात्मानं भावं भावकं भावनां[3] च पुनः पुनश्चेतसि विनिवि(वे)शात्मिका(कां) पृथगभिनिविशते ॥ २३ ॥

[4]कस्मात् पुनरभिनिवेशात्ति(द्धि) [न] पृथग्भावना [इत्याह]—**न धातुरित्यादि** । न बाह्यरूपो[5] ग्राह्य आश्रयः । ग्राह्याभावाद् ग्राहकमपि नास्तीत्याह—**न चेति** । न ग्राहकं विज्ञानमित्यर्थः । कीदृशं तर्ह्यंतः[6] प्रत्याभासः ? एतदेवाह—**आकाशसमतालयम्** । [7]आकाशं हि अवकाशरूपं प्रतिभासमात्रं नीलधवलाद्याकारहोनम्, अथ च तमस्तुहिनाद्यालयम् । [8]तत्समूहमाकाशमत्रैवमिति मूढमनसोऽभिनिविशन्ते । तदेतदनाकारं विज्ञानं[9] महासुखबोधैकरसम्, [10]अथवाकारचक्रालयम् । तत् स्वभावमेवेति मूढा अभिनिविशन्ते । तदेवाह—[11]**आकाशमिवेति** । **नैरात्म्यमेष धर्ममहासुखमिति** । महासुखस्वभावं यच्चित्तं तन्नैरात्म्य[12]धर्मप्रतिभासमानाकार[13]स्वभावाभावान्निस्वरा(भा)वमनाकारमित्यर्थः[14] ॥ २४ ॥

ग्राह्या(ह्य)ग्राह्यका(हक)चक्रं स्वरूपकारणपञ्चमहान्तता(भूता)भावेन दर्शयितुमाह—**न पृथिवीत्यादि** । पृथिव्यादेः परमाणु[15]संघातत्वमेवेष्टव्यम् । परमाणुस्तु निर्भागं(गा)वस्थोच्यते । अत्र च दिग्भागभेदा[16]धिगमो निरङ्गता, अतः परमाणुरसिद्धस्तत्कार्यं च पृथिव्यादिकं दत्तजलाञ्जलिकमेव । यदि सर्वमेवेदं ग्राह्यग्राहकचक्रं स्वरूपतो नास्ति, कथमुत्पादादिकमित्याह—**वज्रेत्यादि** । वज्रम[17]भेद्यज्ञानम्, तस्यास्तित्वं सत्त्वम्,

---

१. रात्म्य एष-ङ. । २. गुणस्य-ग. । ३. नाश्च-क. । ४. कर्मात्-ग. घ. । ५. रूपाद्याश्रयः-भो. । ६. तद्गतग्राह्यग्राहकान्-क. ग. । ७. आकाशे-क. ग. । ८. तत्सुगतमाकाशा हि अनागतेति-सार्व., गृहीतः पाठः-भो. । ९. विज्ञानमहा-क. ग. । १०. तथा-भो. । ११. अहो इत्यादि एवमेव-सार्व. । १२. रात्मा-ग. घ. । १३. स्वभावात्-क. । १४. अत्र ग. घ. मातृके अवसिते । १५. पञ्चकत्व-सार्व. । १६. भेदो परं भोक्तृतो निःशङ्गता कथं परमाणोरस्य यत्तत्-सार्व. । १७. समम-सार्व., धृतः पाठः-भो. ।

सर्वभावा न भावाख्या अभावास्ते न कीर्तिताः ।
योगयोगित्वसंबन्धान्नोच्छेदो नापि शाश्वतः ॥२६॥

न[1] बाहुनं मुखं वर्णं परमानन्दलक्षणम् ।
सर्वभावा न वै सत्त्वमादिमध्यान्तवर्जिताः ॥२७॥

तस्य **प्रयोगेण** मोहात् [इति] प्रतिभेद्ययोगेन [2]उत्पन्नस्तु, तेन प्रतीत्यसमुत्पाद[3] इदं दृश्यमहं द्रष्टेत्यादिकः ॥ २५ ॥

तत्किं ज्ञानाश्रयो ग्राह्यग्राहकभाव इत्याह—**सर्वे**त्यादि । **सर्वभावा** इति । [4]प्रतिभासाश्रयाश्च ग्राह्यग्राहकाकाराः, न भावाख्या न सत्त्वरूपाः । अयमर्थः—ज्ञानाश्रये ग्राह्यग्राहकभावे कल्प्यमाने न भावात् परं ज्ञानम्, ग्राह्यस्य च संविदोऽप्रत्यक्षत्वात् स्वसंविदाश्रयेणापि न ग्राह्यग्राहकत्वम्, अतीतानागतयोश्च[।]विद्यमानत्वेनैवाग्राहकत्वात् । वर्तमानायास्तु संविद एकस्याः कथं ग्राह्यग्राहकत्वम्, स्वात्मनि क्रियाविरोधात् । **अभावास्ते ने**त्यादि । येनैवं तेन कारणेन, अभावा ज्ञानाश्रयेनाप्यसन्तो ग्राह्यग्राहकाकाराः । नन्वेवमप्यसद्[5]ग्राह्यग्राहकाकारपरित्यागायावश्यमुपायोऽभ्यस्यः, [6]प्रतिपक्षसत्त्वे तस्य सत्यत्वात् । स एव च यो[गा]र्थः, स यस्यास्ति स योगी इत्यागतम् । प्रकारान्तरेण ग्राह्यग्राहकत्वमित्याह—**योगे**त्यादि । अयमर्थः—अस्यैव योगयोगित्वसम्बन्धः, परमसावपि प्रतिभासमात्र[7]मस्तीति नोच्छेद इति । यथोक्तविचारासहत्वान्न शाश्वतो न परमार्थसत्यः । तत्कुतः प्रकारान्तरेणापि ग्राह्यादिभावः ॥ २६ ॥

अधुना [8]परतोऽन्तरेऽप्येतमर्थं स्फुटयितु—**न बाहुरि**त्यादि । प्रतिभासमानत्वात् बाह्वादिकं नोच्छेदः, यथोक्तविचारासहत्वेन न शाश्वतः[9] । किन्तु हि (किन्तर्हि) परमार्थसत्यमित्याह—**परमानन्दलक्षणम्**, यदिति शेषः । ग्राह्यग्राहकाकार[10]परिहीणमहासुखैकरसं यज्ज्ञानं तद्[11] यमारीत्यर्थः । कुत इत्याह—**सर्वभावा** इत्यादि । सर्वभावा इति बाह्या आन्तराश्च इति । तदाश्रयाश्च ज्ञानाकाराः । सति धर्मिणि धर्माथां(णां) संभवात्, परमार्थतोऽभावत्वादेषामित्यभिप्रायेणाह—**आदी**त्यादि ॥ २७ ॥

---

१. तवाहु–क. । २. 'उत्पन्नस्तु, तेन' इत्यस्य स्थाने 'कृष्टेत्यादिः' इतिः पाठः–सार्व. । ३. पादः प्रथमः–भो. । ४. स्पष्टा-भो. । ५. मपि सद्–भो. । ६. 'प्रति''''त्वात्' इत्यस्य स्थाने 'सर्वप्रति त्वात्मभ्यः' इति पाठः–सार्व. । ७. 'मस्तीति''''इति' इत्यस्य स्थाने 'नास्तीति च्छद्मना भावः' इति–सार्व. । ८. 'परतो''''मर्थं' इत्यस्य स्थाने 'देवयोगमपि' इति पाठः–भो. । ९. शाम्यतः–सार्व. । १०. कारापरि–सार्व. । ११. तत् सत्यमित्यर्थः–भो. ।

अथ भगवत्यो महार्चिकाद्या इदमुदानमुदानयामासु ॥२८॥

णिम्मल शुद्धदेहो परमानंद । पुण्णस्सा[1] वेगो सम्बन्ध[2] ॥२९॥

करुणान्वित्तं अच्छइ[3] सव्व[4] । एकु महाधनि[5] तथता दव्व[6] ॥३०॥

परमानन्द सइ असहाव । महासुह भावें धम्म सहाव ॥३१॥

णेतहि[7] भअण[8] दु[9] पूर्णयाउ । [10]पलअउ[11] अत्तीणेव सभाउ ॥३२॥

यथोक्तं भगवता तदेव मतमस्माभिरि(कमि)ति प्रतिपादयितुमाह—**अथ भगवत्य** इत्यादि ॥ २८ ॥

किमुक्तवत्य इत्याह—**णिम्मलेत्यादि** । **णिम्मल** निर्मलः, बाह्यग्राह्यापेक्षया ग्राहकाकारापेक्षित्वात् । **शुद्धः** परिशुद्धः, ग्राह्यज्ञानरूपापेक्षया[12] ग्राहकत्वसम्भवात् । **हो** इति [13]हवे ॥ २९–३० ॥

कोऽसावित्याह—**परमेत्यादि** । [14]आकृतिसत्त्वेनोपादेयत्वात् । [15]परमतमहासुखता [16]वेत्यपरे—

आसङ्गो नास्ति मे कश्चिदिति संचिन्त्य योगवित् ।
सर्वसङ्गविनिर्मुक्तः पदं प्राप्नोत्यधीक्षकः ॥
एवं गुरूपदेशेन चित्तं भ्रूनासिकान्तरे ।

एषोऽहमादिबुद्धं शरणं गच्छामि द्विपदानामग्रम्, धर्मं शरणं गच्छामि समग्रं महायानम्, संघं शरणं गच्छामि अव(वै)वर्तिकबोधिसत्त्वगणम्, अहो बताहमनुत्तरायां सम्यक्संबोधिः(धौ) [बो]धिमभिसंबोध्य यः सर्वसत्त्वानामर्थाय हिताय यावदत्यन्तनिष्ठे निर्वाणधातौ बुद्धबोधौ प्रतिष्ठापनाय एषोऽहमनुत्तरं बोधिमार्गमाश्रयामि यदुत वज्रयानम् । ततः सर्वसत्त्वेषु दिव्यमु(सु)खोपसंहाराकारां महामैत्रीम्, सर्व-

---

१. पूर्णस्या–क. च. । २. सबन्धा–ख. । ३. अछई–क. ख. । ४. सच्च–ङ. । ५. महानिधि–ङ । ६. दच्च–ङ. । ७. णैतहि–क. ख. च., । ८ भेण–क. ख. च. । ९. पूर्णेण–क. ख. च. । १०. पर–ङ. च. । ११. अती–क. च., अन्तितणे संभावउ–ङ. । १२. क्षया च ग्राह्यग्राहकासंभूतत्वात्–भो. । १३. तुष्टः–भो. । १४. अकृत्रिमतयो–भो. । १५. आनन्द इति महा–भो. । १६. 'वेत्यपरे' इत्यत आरभ्य पटलसमाप्तिपर्यन्तो भागो नास्ति–भो., तत्स्थाने विद्यमानः पाठस्तत्रैव द्रष्टव्यः ।

[1]इति [2]सर्वतथागतकायवाक्चित्तकृष्णयमारि[3]तन्त्रे बोधिचित्तनिगदनपटलः [4]सप्तदशः ॥

दुःखापनयनां महाकरुणाम्, दिव्यसुखावियोगनियमाकारां महामुदिताम्, क्लेशप्रतिपक्षमारणोपसंहारां महोपेक्षां च भावयेत्। ततः सर्वधर्मान् आत्मना समालम्ब्य विचारयेत्। चित्तं वै तत्रैव तेनाकारेण गन्तुं प्रतिभाषते। यथा स्वप्ने नास्ति चित्ताद् बाह्यं चित्तग्राह्यम्, ग्राह्य(ा) भावाच्चित्तमपि ग्राहकं न भवति। तस्मात् चित्तशरीराः सर्वधर्माः। तेषां ग्राह्यग्राहकशून्यता परमार्थत इति ॥ ३१–३२ ॥

॥ इति सप्तदशव्याख्यानम् ॥

---

१. नास्ति–ख. ङ.। २. 'सर्व....चित्त' नास्ति–च.। ३. महातन्त्रे–च.। ४. सप्तदशमः–च., बोधिचित्तक्रमभेदः सप्तदशः–भो.।

अष्टादशः पटलः

अथ कथां प्रवक्ष्यामि—भगवत्यभिसम्बुद्धच[1]माने महान्ति[2] भयान्यनेकानि मारबल[3]सहितान्युद्धूलितानि भगवतो[4] महामुनेर्बोधिं [5]घातयितुम्। तस्मिन् समये [6]मारपराजयं नाम समाधिं समापद्य भगवान् महायमारिक्रोधं स्वकायवाक्चित्तवज्रेभ्यो निश्चारितवान् ॥१॥

निश्चार्य वज्रपाणिं भगवान्[7] महामुनिराज्ञापयति स्म[8]—त्वं वज्रपाणे! [9]इमं यमारिक्रोधरूपं [10]महावज्रभैरवकायं समाधाय मारान् नागान् असुरान् देवान् यक्षान् राक्षसान्[11] त्रासय भीषय मारयेत्युक्तम् (येति)। तस्यां वेलायां [12]यथा मया भगवतः सकाशाच्छ्रुतम्[13] [14]एकक्षणेन गृहीतमवधारितं संगीतितं सुष्ठु च [15]साधु च चित्तमुत्पादितम्[16] ॥२॥

तन्त्रोत्पत्तिभूतं प्रस्तुतार्थमाह—**अथ कथां प्रवक्ष्यामी**त्यादि। **उद्धूलितानी**त्यभिमुखानि। **महामारपराजयं नाम**। महामार इति क्लेशादिकस्य लक्षणम्। पराजयं जेतव्यपञ्चाकाराभिसम्बोधिसम्भूतवज्रधरयममारिरूपमित्यर्थः। स्वकायवाक्चित्तप्रधान इति यममारिक्रोधः। **निश्चारितवा**निति कायवाक्चित्तेभ्यः यममारिर्भविष्यतीत्यभिप्रायदर्शनार्थं निश्चारितवानित्यादि ॥ १ ॥

तेषामपि तेन समयेन स्थितं देवादीनां तथाभास इदमुच्यते—भगवान् ह आत्मना आत्मानं न आज्ञापयति। **एकक्षणेन**। एकक्षणमिति अल्पकालस्योपलक्षणम्। **सुष्ठु** सम्यक् मनसि कृतम्, मारणमिति शेषः। **साधु**दानयुक्तं किमिति? यः प्रकृष्टं सुकृतं करोतीत्यर्थः ॥ २ ॥

---

१. संबुद्ध–ङ., म्बुद्धे–ग. च., सम्बुद्धा–क. घ., संबोधिकाले–भो.। २. महति–च.। ३. संहि–क. ख. च.। ४. भगवता–क. ख. ग. घ। ५. विघात–ख. घ ङ.। ६. महामार–भो। ७. नास्ति–भो.। ८. 'स्म' नास्ति ख. घ. ङ.। ९. इदं–ङ.। १०. 'महा'' कायं' नास्ति–घ. ङ. भो.। ११. नास्ति–भो.। १२. 'यथा' नास्ति सर्वत्र, गृहीतस्तु–भो.। १३. चछ्रुतं भवति–ग.। १४. 'एक''''मुत्पादितम्' नास्ति–ग.। १५. 'साधु च' नास्ति–भो.। १६. दितं भवति–च.।

[1]इदमवोचन्महागुह्यकाधिपतिर्वज्रकुलप्रणेता[2] [3]नलकूबरस्य [पिता] संपन्नता[यै] । महातन्त्र[4]राज ओडियानविनिर्गतः सपाद[5]लक्षा-दुद्धृतः समाप्तः ॥३॥

[6]इति [7]सर्वतथागतकायवाक्चित्तकृष्णयमारि[8]तन्त्रे
[9]कायवाक्चित्तकथापटलोऽष्टादशमः[10] ॥

[11]श्रीकृष्णयमारितन्त्रराजः समाप्तः ॥

शुभम्[12] ॥

महागुह्यकाधिपतिरिति । महागुह्यका यक्षाः, तेषां पतिस्तु वज्रपाणिः । वज्र-कुलपतिरित्यक्षोभ्यकुलम् । अत्र तस्य श्रेष्ठकुलत्वेन तदनुसारं ज्ञानम् । किमिदं तन्त्रं प्रधानम्, अथवा हेवज्रतन्त्रवत् सम्भूतमित्याह—**नलकूबरस्य पितेत्यादि** । नलकूबर इति । तन्त्रं सपादलक्षादुद्भूतमित्यर्थः । अनुष्ठितमिति सम्यगनुष्ठितं तेन, विनयमत-युक्तानामित्यर्थः । **महातन्त्रराज** इत्यादि तु तन्त्रराजत इति । **ओडियानविनिर्गत** इत्योडियानात् सम्भूतम् ॥ ३ ॥

॥ अष्टादशपटलव्याख्या समाप्ता ॥

---

१. इदं महागुह्यकाधिपतिर्वज्रकुलप्रधानो नादकुबेरपिता इत्याह । ओडियानदेश-सम्यङ्निर्गतसर्वसिद्धयुत्पादकृतात् तन्त्रराजसप्तलक्षाद् निर्गतकृष्णयमारितन्त्रेऽष्टादशः पटलः—भो. । २. णेतारो–ङ. । ३. निरकूटबलस्य–क., नकटकू–ख. घ. । ४. मन्त्रामन्त्रराजं–ङ. । ५. सप्तलक्षा–भो. । ६. नास्ति–ख. घ. भो. । ७. 'सर्व''''चित्त' नास्ति–ग. च. । ८. महातन्त्रे–ग. च. । ९. 'कायवाक्चित्त' नास्ति–क. ख. घ. ङ. । १०. 'कथा''''अष्टादशमः' नास्ति–भो., मः समाप्तः–घ. । ११. नास्ति–ख. ग. घ. । १२. शुभमस्तु सर्वदा–घ. ।

[1]अष्टादशपटलव्याख्यानम्

एवमेकान्तेन निश्चित्य भ्रान्ति समारोपितम्। भ्रान्तिचिह्नी सर्वधर्माणामाकारं चित्ताय तेषां प्रकृतिमेककलामद्वयविज्ञप्तिलक्षणां सुध(शुद्ध)स्फटिकसंकाशं(शां) शरदमलमध्याह्नगगनोपमामनन्तां पश्येत्। इदमुच्यते प[ा]रमार्थिकं बोधिचित्तम्। लोकोत्तरं शून्यताज्ञानं निष्प्रपञ्चं निर्विकल्पकम्। ततस्तन्मन्त्रेणाऽधि[ति]ष्ठेत्। ॐ शून्यताज्ञानवज्रस्वभावात्मकोऽहम्। सैव भगवतां प्रज्ञापारमिता, सैव परमा रक्षा। ततस्तं निष्पन्दभूतमाकारवती रक्षा शुद्धलौकिकज्ञानत्वं भावयेत्।

रेफेन(ण) सूर्यं पुरतो विभाव्य तस्मिन् नवे(रवौ) हूँभवविश्ववज्रम्।
तेनैव वज्रेण विभावयेच्च प्राकारकं पञ्जरं बन्धनं च॥

विश्ववज्रविकिरणैः प्रलयानलदुःसहैः सर्वतः स्फुरित्वा घनीभूय रचिततिर्यक्चतुरसं(स्रं) ज्वलद्वज्रप्राकारं शून्यताज्ञानम्। उपरिष्टाद् वज्रपञ्जरमधस्ताद्वज्रमयीभूमिमा रसातलं विरचितं(तां) पश्येत्। ततो रविविश्ववज्राभ्यां रश्मीभूय दिशि विदिशि स्फरित्वा या(घ)नीभूय बहिर्दूरे सीमाबन्धः करणीय इति श्लोकार्थः।

ततस्तन्निष्पन्दतयैव विशुद्धानि पञ्चमहाभूतानि विचिन्तयेत्। तत्राकाशमहाभूतं धर्मोदयाख्यं महावज्रधरस्वभावं स(श)रच्छश(शि)धवलमधःसूक्ष्मसूध(मुप)रि विशालं त्रिकोणमन्तर्गतगगनस्वरूपमभ्यन्तरोद्गतविश्वदलकर्णिकावस्थितविपुलविश्ववज्रा(ज्र)-म्। तद्वेदिकायाश्चत्वारि महाभूतानि चतुर्मण्डलाकाराणि चतुर्देवीस्वरूपाणि उपर्युपरि पश्येत्। आदौ लंकारेण माहेन्द्रमण्डलं चतुरस्रं पीतकोणेषु त्रिशूचिकवज्राङ्कम्, ततो वँकारेण वारुणमण्डलं [वर्तुलं] घण्टाङ्कम्, ततो रंकारेणाग्नेयमण्डलं त्र्यस्रं रक्तं कोणेषु रेफाङ्कम्, ततो यँकारेण वायव्यं धन्वाहूँ(भं) कृष्णं कोटिद्वये चलत्पताकम्। भावकस्तु तदानीं तदेव लोकोत्तरं च ज्ञानं व्यापकत्वेन संस्थितम्, ततो विश्ववज्रवेदिकामध्ये चतुर्महाभूतपरिणामजं परिषुध(शुद्ध)बुद्धक्षेत्रं संक्रामतारूपं महामोक्षपुरं वैरोचनस्वभावं नानारत्नमयं कूटाङ्गारमष्टभिः श्मशानैः सर्वधर्मनैरात्म्यसूचकैः परिवृतं ध्यायात्।

---

१. केवलं 'घ'मातृकायां व्याख्यानमिदं दृश्यते। न चास्य कोऽपि संबन्धः परिदृश्यतेऽष्टादशेन पटलेन। अतः परिशिष्टतयाऽयमंशोऽत्र स्थाप्यते।

चतुरस्रं चतुर्द्वारमष्टस्तम्भोपशोभितम् ।
चतुर्देवीपरिक्षिप्तं चतुस्तोरणमण्डितम् ॥

हारार्धहारपट्टस्रग्वितानादर्शचामरैः ।
रचितं वज्रसूत्रैश्च स्फरद्बुद्धौघमंशुभिः ॥

चलच्चित्रपताकाग्रघण्टामुखरदिङ्मुखम् ।
परमैः पञ्चभिः कामैरुपहारैश्च दर्पणैः ॥

तस्य गर्भपुटं पद्ममष्टपत्रं सकेशरम् ।
चतुर्द्वारचतुष्कोणे कर्तिका स्वासनानि तु ॥

ब्रह्मेन्द्रोपेन्द्ररुद्रैश्च यमयक्षाधिपैस्तथा ।
नैर्ऋत्ये वैमचित्री च मघो(ध्ये) मारचतुष्टयम् ॥

उत्तरोत्तरमुत्तानं भीमं मारचतुष्टयम् ।
भानुनाक्रान्तहृदयं शशिना न्यस्यकातराः ॥

तत्र मध्यासनस्योपरि पञ्चदशभिः स्वरैश्चन्द्रमण्डलमादर्शज्ञानस्वभावम्, तदुपरि चतुस्त्रिंशद्व्यञ्जनैः सूर्यमण्डलं समन्ताज्ज्ञानस्वभावम्, तन्मध्ये अकारं हूँकारपरिणतौ कर्तिकपालसंयुक्तौ स्वबीजगर्भौ प्रत्यवेक्षणाज्ञानात्मकौ चिन्तयेत् । ततो बीजद्वयाद् योगिनीचक्राकारेण सर्वतथागतान् संस्फार्य तान् संहृत्य तैः सहैकीकृतं बीजं कृत्यानुष्ठानज्ञानम्, ततश्चन्द्रसूर्यचिह्नबीजपरिणामजं भगवतीवज्रसत्त्वं च वक्ष्यमाणवर्णाकृतिचिह्नादिना श्रीहेरुकरूपेणाविर्भूतम्, तथैव नैरात्म्य(ा)श्लिष्टकन्धरसुविशुद्धधर्मधातुज्ञानात्मकं पश्येत् ॥

इति कृष्णयमारिपञ्चाकाराभिसंबोधिक्रमः ॥

तस्यानन्तच्छिदिन(नन्तस्थितेन) आस्येन द्विहोँकारविदर्भितं ज्वलद्बीजद्वयं रागात् पद्मातुः(त्तु) प्रतिमुद्रयेत् । ततो वज्री महारागाद्विलीन[ः] सह विद्यया । स(श)रच्चन्द्रद्रवनिभान्ति(भस्ति)ष्ठेत् सधर्मस्वभावमण्डलतोऽग्रतः । अथोद्धारायतं देव्यः कोना(णा)वलेन्दुषु स्थिता मञ्चोदयेषु श्वेतशृतिश्वेतस्रा[व]वज्रयोगिनैः(न्यः) ।

उठ भराडो करुण मनु । पुक्कसि मुहु परिताहि ॥
महु सुहजा ए काम मण्डल । स्थ तर्हि सुवर्ण समाहि ॥
तोज्ज विहूर्ण्णु मनसि हउ । उठहि तुह हेवज्ज ॥

च्छतहि सुवर्ण सहावहा । शबरी हसिज्ज वकज ॥
लायनमत्ती सुरअ यहु । सूर्णे अछसि कीस ॥
हवू चण्डाली विर्णुमसी । तइ विश्व उहमि नदीस ॥
इन्द्रा आली उठ तुह । हवू जानमि तुहु चित्त ॥
अङ्ग डोम्बी च्छेय मणु । मा करु करुण चित्ति ॥

अथ गीतिकानुरोधाउव(दुप)संहारजाभ्यां तुंकारजरविमण्डलस्थिताभ्यामाकार-हूँकाराभ्यां च वतीतं चिह्नदेहादिकमाकाशोपमं मायोपमं च निश्चित्य तत्परिणामयोः कर्तिकपालयोः संयुक्तयोर्दृढसमाधिरूपया गर्भ(गर्भे) तदेव बीजद्वयं यथाभूतपरिज्ञान-स्वभावं पश्येत् । तत एव स्फरणयोगेन योगिनीचक्राकारात् तत्तथागतमयं चित्ताधीनं च विश्वनिरूपासंहरणयोगेन सर्वत्तात्(समन्ता)न्मायोपमं गगनोपमं च परिज्ञाय द्वितीयरविचिह्नबीजपरिणामजं भगवन्तं श्रीहेरुकमात्मानं पश्येत् ।

आस्फालयन्तं चरणान् तर्जयन्तं सुरासुरान् ।
क्रुधं(द्धं) वर्तुलरक्ताक्षं ललितं नवयौवनम् ॥

चतुश्चरणमष्टास्य(स्यं) द्विरष्टभुजभूषितम् ।
चतुर्मारममाक्रान्त(म्) अर्धपर्यङ्कताण्डवम् ॥

मुण्डमालामहा[हा]रंच(रम)विष्कम्भितभीषणम् ।
विश्ववज्रधरं मूर्ध्नि कृष्णसूर्यज्वलत्प्रभम् ॥

हूँकारस्फुरद्वदनं भस्मोद्धूलितविग्रहम् ।
मूलाननं महाकृष्णं दक्षिणं कुण्डसन्निभम् ॥

वामं रक्तं महाघोरमूर्ध्वास्यं विकरालिनम् ।
भृङ्गसन्निभमेषास्यं प्रतिवक्त्रत्रिलोचनम् ॥

शृङ्गारवीरबीभत्सरौद्रहास्यभयानकैः ।
करुणाद्भुतशान्ति(न्तै)श्च नवनी(नवीन)घनसद्युतं(तिम्) ॥

पिङ्गोर्ध्वकेशमूर्धानं पञ्चबुद्धैरलङ्कृतम् ।
चक्री कुण्डल कण्ठी च हस्ते रुचकमेखलम् ॥

हस्ते(स्ति)स्व(श्व)खरगावी(वो)ष्ट्र(ष्ट्रा)वपालके ।
नैरात्म्यया समापन्नः स्वाभया पञ्चमुद्रया ।
द्विभुजैकमुखी(खो) द्वयङ्घ्रिः शान्तकर्तिकपालभृत् ॥

अथ भगवद्धत् सूर्यस्थितकर्तृकमा(पा)लसूर्यहूँकारम्, भगवत्यास्तु हृच्चन्द्रस्थितकर्तिमुष्टिचन्द्र अँ:ारं चिन्तयेत्। ततोऽस्य स्रोतं(श्रोत्रे) नैरात्म्यम्, चक्षुषि वज्रीम्, घ्राणे गुह्यगौरीम्, जिह्वायां वीरयोगिनीम्, कायेन्द्रिये वज्रडाकिनीम्, मनसि नैरात्मामधिमुञ्चेत्। एत एवं देववज्राधिपञ्चकं यथाक्रमं रूपवेदनासंज्ञासंस्कारविज्ञानस्कन्धेषु तथा मोहमात्सर्यरागईर्ष्याद्विषं(ष)-रूपशब्दगन्धरसस्प्रष्टव्यधर्मायतनेषु । बाह्ये च चौरी वेताली घस्मरी भूचरी खेचरी। पृथ्वी आप तेज वायुधातु पुक्कसी शबरी चण्डाली डोम्बिनी, कायवाक्चित्तेषु भूचरीखेचरीनैरात्म्याः, मांसे पुक्कसी, रुधिरे शबरी, शुक्रे चण्डाली, मज्जमेदयोर्डोम्बी, चर्मणि सप्तबोध्यङ्गानि, अस्थिषु सत्यचतुष्टयम्। एवं देवताभिः सकलीकृत्य तदपराः सुद्धाव(शुद्धा अ)धिमुच्येत्।

कृपयालोनेरक्तं कृष्णाज्जमैत्राचित्ततः(?)।
पादाः संग्रहवस्तूनि भुजाः षोडशशून्यताः॥

सुखान्यष्टविमोक्षास्तु त्रिभिस्तवै(स्त्वै)स्त्रिलोचनः।
पञ्चमुद्रा जिनाः पञ्चक्रोधा दुष्टानुशासनाः॥

कण्ठे हृद्गुगजस्सु(मूर्धसु) चतुष्चक्रं [य]थाक्रमम्।
सम्भोगधर्मनिर्माणमहासुखमिति स्मृतम्॥

षोडशाऽष्टचतुःषष्ठिद्वात्रिंशद्दलमम्बुजम् ।
मध्ये मंतितमाँकारं हूँकृत्याकारहूँकृतम्॥

तदनु स्वहृद्बीजरश्मिस्फरणाङ्कुशैर्दशदिग्गतांस्तथागतान् आकृष्य नभसि संस्थाप्य तानष्टमातृभिः सम्पूज्य अभिषिञ्चन्तु मां सर्वतथागता इति प्रार्थयेत्। तैः श्रीहेरुकरूपापन्नैः पञ्चामृतपञ्चतथागतात्मकैः कलशैरभिषिञ्च्य तेषु अभिषिञ्चमानस्य भगवतः शिरसि भगवान् अक्षोभ्य उत्पद्यते, पुष्पवृति(ष्टिः) कुङ्कुमवृति(ष्टि)श्च भवति, दुन्दुभिशब्दश्च श्रूयते। रूपवज्रादिदेवीभिः सम्पूज्यतेऽवगत्या लोचनाभिर्देवीभिः संपूज्यते।

इत्या[भो]गो नाम समाधिः स्वाभाविकश्च कायः।

अथ पद्माधिष्ठानकायम्।

ॐ पद्मसुखाधारा महारागसुखं दद।
चतुरानन्दभाग् विश्व हूँ हूँ कारे(यँ) कुरुष्व मे॥

ततो वज्राधिष्ठानकायम्—

ॐ वज्रमहाद्वेष चतुरानन्ददायक ।
खगमुखैकरसो नाथ हूँ हूँ कायं कुरुष्व मे ॥

ततः ॐ श्री श्री श्री हृः स्वाहेति नुतिमारभेत् । ततः कमलोदरपतितचन्द्रद्रवबिन्दुपरिणामेन गँकारेण निष्पन्नां गौरीं कृष्णवर्णां द्विभुजैकमुखीं कर्तिधरां पूर्वारे चन्द्रमण्डले चिन्तयेत् । चँकारेण चौरीं माञ्जिष्ठवर्णां कृपीटसूकरधरां दक्षिणारे (रा)सनचन्द्रे, तथैव वँकारेण वेताली कनकवर्णा कूर्मकपालधरा पश्चिमारे(रा)सनचन्द्रे, तथा घँकारेण घस्मरी मरकतवर्णा भुजङ्गयोः पात्रधरामुत्तरा[रा]सनचन्द्रे, तथा पँकारेण पुक्कसीमिन्द्रनीलनिभां केशरिपर्शुधरामैशा[न]कोनां(णा)सनचन्द्रे चिन्तयेत् । तथा सं(शं)कारेण शबरीं चन्द्रकान्तिभां भिक्षुखिक्खिरिकाधराम[ा]ग्नेयकोणासनचन्द्र(द्रे), तथा लँकारेण चण्डाली नभस्या(श्या)मा चक्रलाङ्गलधरा नैर्ऋत्यकोणासनचन्द्रे, तथा डँकारेण डोम्बीं कर्पूरवर्णां वज्रतर्जनीधरां वायव्यकोणासनचन्द्र(न्द्रे) ध्यायात् । अर्धपर्यङ्कनाड्यस्थावृतरक्तत्रिलोचनाः पिङ्गलोर्ध्वकेशा द्विभुजाः पञ्चमुद्राधराः श्वेताः ।

अथ परिण(णाम)तो निष्पन्नमण्डलमवलोक्य हृद्बीजकिरणाङ्कुशैर्ज्ञानमण्डलमाकृष्य पूर्वारे शिशुमुखमन्तरीक्षेऽवस्थाप्य अस्थानेन हूँकारविघ्नानुत्सार्य अर्घपाद्यं च दत्त्वा जः हूँ वँ होः इत्येभिर्यथाक्रममाकर्षेण प्रवेशयेत् । ॐ वँ वज्रधरवन्दितनमस्कृताय स्वाहा । ॐ पँ पक्षधरवन्दिताय स्वाहा । ॐ आः सर्वग्रहवन्दिताय स्वाहा । ॐ सर्वाशापरिपूरकाय वन्दिताय स्वाहा । ॐ सर्वनक्षत्रगणवन्दिताय स्वाहा । ॐ द्वादशराशिवन्दिताय स्वाहा । ॐ सर्वोपद्रवनाशाय स्वाहा । ॐ बुद्ध हूँ । ॐ पद्म २ हूँ । ॐ सर २ हूँ । ! ॐ प्रसर २ हूँ । ॐ स्मर २ हूं । ॐ क्रीड २ हूँ । ॐ क्रीडय २ हूँ । ॐ मर्द २ हूँ । ॐ मारय २ हूँ । ॐ घ घ घातय २ हूँ । मम सर्वसत्त्वानां च सर्वविघ्नान् निवारय २ हूँ हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा । ॐ च्छिन्द २ भिन्द २ हूँ हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा । मम सर्वसत्त्वानां च सर्वदुष्टान् नाशय २ हूँ हूँ हूँ फट् फट् फट् स्वाहा । ॐ कर २ किरि २ कुरु २ गर २ गिरि २ गुरु २ चर २ चिरि २ चुरु २ वर २ विरि २ वुरु २ घर २ घिरि २ घुरु २ पर २ पिरि २ पुरु २ सर २ सिरि २ सुरु २ लर २ लिरि २ लुरु २ डर २ डिरि २ डुरु २ गँ २ चँ २ वँ २ घँ २ पँ २ सँ (शं)२ लँ २ डँ २ मम सर्वसत्त्वानां च रक्षां कुरु हूँ हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा । ॐ चन्द्रे २ चन्द्रिणि २ तुरु चण्डे २ सुरु २ मुरु २ हूँ २ ह्रीँ २ द्राँ २ हूं २ फट् २ स्वाहा । एवं प्रत्यहं यावत् सिद्धिनिमित्तानि सम्यक् पश्यति, तानि दृष्ट्वा यथातन्त्रमभिमतसिद्धेरुपायमनुतिष्ठेदिति ॥

इति कृष्णयमारितन्त्रेऽष्टादशव्याख्यानं समाप्तम् ।

ये धर्मा०इत्यादि। शुभम्। संवत् ९३९ मिति शुचिमासे शुक्लपूर्णदिने सम्पूर्णमिति॥

दानपति[:] यो यो यजमानो नेपार(ल)मण्डले कान्तिपुरमहानगरे राजकृत्तिथाने पश्चान्तकदेवतादक्षिणपार्श्वे गृहावस्थितशिखिलिकालधनवन्तप्रथमपुत्रप्रता[प]सिंह तस्यात्मज जितासिंह द्वितीयात्मज थार्कसिंह तस्य सुत बुधधर तृतीयसुत भान्नरसिंह चतुर्थात्मज लक्ष्मीनरसिंह एते पुरुषाः सपरिवारा स्वधर्मचित्तोत्पन्नेन एतत् कृष्णयमारितन्त्रलिखितं स्थापयामि॥

●

परिशिष्टानि

१. Suggestions for setting up the text of the Apabhraṁśa passages—Dr. H. C. Bhayani

२. श्लोकार्धानुक्रमणी

३. गद्यानुक्रमणी

४. टीकाधृतवचनानुक्रमणी

५. ग्रन्थ-ग्रन्थकार-मत-मतान्तरानुक्रमणी

६. विशिष्टशब्दानुक्रमणी

SUGGESTIONS FOR SETTING UP THE TEXT OF THE APABHRAṀŚA PASSAGES

1. Although all the MSS preserve a text more or less corrupt, the MS Ca and (possibly the older) MS from France (Commentary) preserves some old readings or provide clues to them.

2. The text of the passages may be set up by selecting those readings which are nearer to the restored text. Such a text would have inevitably many corrupt readings and several lines will fail to yield sense.

3. After struggling for two weeks, I achieved a measure of success, I think, in reconstructing a text in which most of the lines yield somewhat satisfactory sense. I could have got still better results if, I had got some familiarity with the traditional Tantric terminology and mode of expression.

4. As the restored text is tentative and more or less speculative it can be given only in an appendix.

THE APABHRAṀŚA PASSAGES OF THE KṚṢṆAYAMĀRI-TANTRA INTRODUCTORY NOTE

1. The orthography of the Apabhraṁśa passages in the various MSS is more or less 'modernized'. On the other hand any individual MS is likely to have preserved sporadically some old forms – original forms.

2. The Apabhraṁśa language of the passages came to be understood less and less over time. Moreover, some of the passages acquired the character of Mantra, for which

incantation was more important than the forms or meanings. Hence misreading, misinterpretation and confusion of letters of the MS which formed basis for subsequent copyings multiplied. So, no single MS among those that are preserved can be presumed to contain a text completely faithful to the original.

3. Under the circumstances, the text needs to be restored or reconstructed with the help of the clues provided by the older readings and the context. Inevitably the restored text will be tentative and in several places doubtful, uncertain or obscure. Such efforts involve much guess-work and luck also plays its role in hitting up a probable reading.

RESTORED TEXT

I. 12th Paṭala (v. v. 2–5)

1. अरेरेरे किट्ट यमारि-गुरु, रक्ख स–रूउ स–भाउ ।
हउँ तुह पेक्खवि भामि गुरु, छड्डहि कोहस भाउ ॥

2. पइं णच्चंतें कंपियइ, सग्ग-मच्च-पाआलु ।
किट्ट भिणंजण-कोह्-मणु, णच्चहि तुहुं वेआलु ॥

3. काला खव्व पवाण हा(?), बहु-विह णिम्मसि रूअ ।
वज्ज-सरासणि विण्णवमि, णच्चहि तुहुँ महा-सुह ॥

4. ह्रीं: ष्ट्रीं: मंतें णच्च तुहुँ, फेडहि तिहुअण-भंति ।
करुणा कोह भराड तुहुँ, जगु पेक्खउ णच्चंत (?) ॥

II. 17th Paṭala (v. v. 3–6)

5. उट्ठ भराडा करुणा-कोहा, तिहुअण सअलह फेडहि मोहा ।
एवड-मार-पराजिअ-राउल, उट्ठ भराडा चित्तें वाउल ॥

6. लोअणे मत्तें अच्छसि सुण्णे, उट्ठ भराडा लोअह पुण्णें ।
काइं तु अच्छसि सुण्णहो चित्ते, वोहि-सहाव लोअणे मत्तें ॥

III. 17th Paṭala (v. v. 29–32)

7. णिम्मलु सुद्धुहा (?) परमाणंदु, पुण्णें पावें णउ संबंधु।
करुणा-चित्तें अच्छइ सव्वु, एक्कु महाणिहि तथता-दव्वु ॥

8. परमाणंदु सइ असहावु, मह-सुह-भावें धम्म-सहावु।
णउ तह रुउण पुण्णु ण पणउ पर अडअत्तीणव(?) सभाउ ॥

IV. 18th Paṭala (Commentary)

9. उट्ठ भराडा करुण-मणु एकत्ति महु परिताहि।
मह-सुहे जाए कम्म-मलु, सुण्णहिं सुण्णु समाहि ॥

10. तुज्झ विहूणी मरमि हउँ, उट्ठहि तुहुँ हेवज्ज।
छड्डुहि सुण्ण-सहाउ हा, सवरिहि सिज्झउ कज्जु ॥

11. लोअणे मत्तें सुरए तुहुं, सुण्णें अच्छसि कोस।
हउँ चंडाली विण्णवमि, तइं विणु वहमि(?)ण दीस ॥

12. इंदाआली उट्ठ तुहुं, हउँ जाणमि तुह चित्तु।
अंक डोंबी च्छेय-मणु (?), मा करु करुणा-चित्त ॥

SANSKRIT CHĀYĀ

I. 12th Paṭala (v. v. 2–5)

1. अरेरेरे कृष्ण यमारि-गुरो, रक्ष स्वरूपं स्वभावम्।
अहं तव (=त्वां) प्रेक्ष्य बिभेमि गुरो त्यज क्रोधस्य भावम् ॥

2. त्वयि नृत्यति कम्पते, स्वर्ग-मर्त्य-पातालम्।
कृष्ण भिन्नाञ्जन-क्रोध-मनाः, नृत्यसि त्वं वैतालम् ॥

3. कालानि खर्वाणि प्रमाणं····(?), बहुविधानि निर्मिमीषे रूपाणि।
वज्र-शरासन विज्ञापयामि, नृत्य त्वं महा-शुभं (महासुखम्) ॥

4. ह्रीः-श्रीं-मन्त्रेण नृत्य त्वं, स्फेटय त्रिभुवन-भ्रान्तिम्।
करुणा-क्रोध भट्टारक त्वं, जगत् प्रेक्षतां नृत्यन्तम्(?) ॥

II. 17th Paṭala (v. v. 3–6)

5. उत्तिष्ठ भट्टारक करुणा-क्रोध, त्रिभुवनस्य सकलस्य स्फेटय मोहान् ।
एतावन्-मार-पराजित-राजकुल, उत्तिष्ठ भट्टारक चित्तेन व्याकुल ॥

6. लोचनाभ्यां मत्ताभ्यां आस्से शून्ये
उत्तिष्ठ भट्टारक लोकस्य पुण्येन ।
किं त्वम् (?) आस्से शून्यस्य चित्ते
बोधि-स्वभाव लोचनाभ्यां मत्ताभ्याम् ॥

III, 17th Paṭala (v. v. 29–32)

7. निर्मलः शुद्धः हा (?) परमानन्दः, पुण्येन पापेन न संबन्धः ।
करुणा-चित्तेन आस्ते सर्वम्, एको महानिधिः तथता-द्रव्यम् ॥

8. परमानन्दः सदा अ-स्वभावः, महासुख-भावेन धर्म-स्वभावः ।
न तस्य रूपं न पुण्यं न पापम्, पर.................स्वभावः ॥

IV. 18th Paṭala (Commentary)

9. उत्तिष्ठ भट्टारक करुणा-मनाः, एकवारं मां परित्राहि ।
महासुखे जाते कर्म-मलं, शून्ये शून्यं सम्मापय (?) (शून्यसमाधि) ॥

10. तव विहीना म्रिये अहं, उत्तिष्ठ त्वं हेवज्र ।
मुञ्च शून्य-स्वभावं हो, शबर्याः सिध्यतु कार्यम् ॥

11. लोचनाभ्यां मत्ताभ्यां सुरते त्वं, शून्ये आस्से कथम् ।
अहं चाण्डाली विज्ञापयामि, त्वया विना वहामि(?) न दिवसम् ॥

12. ऐन्द्रजालिक उत्तिष्ठ त्वम्, अहं जानामि तव चित्तम् ।
अङ्काद् डोम्बीं विच्छेत्तुं मनः, मा कुरु करुणा-चित्त ॥

NOTES

The metre of passages I and IV is Dohā : 13 mātrās (6+4+3) in the odd pādas, 11 Mātrās (6+4+1) in the even pādas.

The metre of the passage II is Pādākulaka : 16 Mātrās (4+4+4+4) in all the four pādas. The metre of the passage III is Pāraṇaka or what is known as Laghu-Caupāī in the later tradition : 15 Mātrās (4+4+4+3) in all the four lines.

I. 1. अरेरेरे : In later Apa. texts occur अरि, रि etc. Here रे is short in all the syllables.

किट्ट : Intervocalie-ष्ण्-changed in Apa. alternatively to-ट्ठ–we have विष्णु>विट्ठु, तृष्णा>तिट्ठा, वृष्णि>विट्ठि, etc. Accordingly कृष्ण changes to किट्ठ, which later on become किट्ट–in the Eastern region. Compare Bengali कृष्ण>क्रिस्टो, वैष्णव> बोष्टम etc.

यमारि : Apa. has initially always ज् for य्. All the Mss have य् here. It may be a Sanskritism.

तुह : Sometimes genetive is used for accusitive in connection with the verbs of seeing like पेक्ख्

कोहस : Normally कोहस्स is expected. But for the sake of metre we have single स् instead of the geminate.

2. भिणंजण : Metre cause for भिण्णंजण Sk.=भिन्नाञ्जन '(as black as) collyrium mixed with oil or pounded antimony' cf. भिन्नाञ्जनवर्ण in the *Śiśupālavadha* and भिन्नाञ्जन-संन्निभ in the *Ṛtusamhāra* (Monier-Williams).

3. खव्व : pigmy-size.

4,5. etc. भराड, भराडा. In Apa. we have भडारउ form Sk.भट्टारकः, Vocative singular is भडारा. Metathesis gives us भराडा.

8. The fourth pāda is obscure to me. The text is considerably corrupt.

12. The third pāda is obscure. Hence the meaning of the later half is uncertain.

The position regarding the word-final उ, इ and ए is not clear. In later-Apadbrṁśa final उ changed to अ, final ए became इ. As the instrumental and locative form in ऐ and ए was commonly exchanged in Apabhraṁśa, and because of metrical exigences short ए in the चरणान्त syllable was pronounced long ए, there prevails uncertianty about the orthography of such forms. So the forms in the reconstructed text have a good degree of uncertainty or speculativeness attached to them.

श्लोकार्धानुक्रमणी

अक्षोभ्यं मुकुटे ध्यात्वा १६.५
अङ्गुष्ठपर्वतो निम्नमधो १४.१५
अञ्जने भावयेत् कर्म ३.१०
अडेडे किट्टयमारि १२.२
अतः सम्यक् प्रवक्ष्यामि १०.१
अतियोगं तृतीयं तु १७.८
अत्यन्तं तत् सुगुप्तेन ४.४२
अथ मन्त्रं प्रवक्ष्यामि ६.७
अथ वज्रधरो राजा ४.३,५;६.३
अथवा मानुषं मुण्ड १२.१०
अथवा रोगिणो भोन्ति ९.१२
अथ होमं प्रवक्ष्यामि ८.९
अथातः सर्वसत्त्वस्य १३.१
अथातः संप्रवक्ष्यामि २.८,११.८,१५,१८, २०;१२.६,१५;१३.२,१७;१४.२८, ३८,४५,४७;१५.१,७;१६.१
अथातो रहस्यं वक्ष्ये १५.१०
अथाऽनावृष्टिसमये ९.२
अथान्यत् संप्रवक्ष्यामि ९.१४,१३.१२
अधिपतिचिह्नधराः १४.४३
अधिपतेर्वक्त्रबाहुभ्यां १३.२१
अनभिषिक्ता नरा ये च १४.१८
अनेनाञ्जनसिद्धिः स्यात् ३.१०
अनेनोद्वर्तितं गात्रं ११.२६
अन्तकोदरमध्यस्थं ४.५७
अन्यद्वा भक्षणे सर्वं १२.१४
अपरिपाचितसत्त्वेषु १७.१४
अभिचारं चतुर्दश्याम् ८.१४
अभिषेकं भावयित्वा ४.१५
अभिषेकार्थं महाभक्त्या ८.५
अभ्यधिके कृष्णतां याति १४.३३
अमण्डलप्रतिष्ठोऽपि १४ १६
अमुकी मे वशीभवतु १५.१९
अमुकीं मे प्रयच्छेति १०.६
अयुतमात्रजप्तेन ९.३
अयुतमात्रेण भूतानां १२.११
अर्चयेद् रक्तपुष्पेण ४.१९
अर्चयेद् रक्तपुष्पेण पृ० ४१
अवतार्य स्नापयेत् तं १०.२
अशोकपत्रं शाखां च १४.५३
अश्वमहिषमारूढो(ढौ) ५.३
अष्टपाणौ न्यसेन्नागान् १५.९
अष्टलक्षप्रजप्तेन ९.४
अष्टशृङ्गसुमेरुं वा ४.३४
अस्य मन्त्रस्य माहात्म्यं ७.११
अहं खड्गधरो राजा ८ २
अहो कृपाबलं दिव्यं ४ ६६
अहो धर्मं महाशान्तं १७.२२
अहो परमनिर्वाण १७.२२
अहो बुद्ध महाचार्य १४.५
अहो बुद्धस्य माहात्म्यं ४.६५
अहो मन्त्रस्य सामर्थ्यं १०.२
अहो सुविस्मयमिदं १७.२३
अहो हि मारणं नाम ४.६४
आकाशमिव नैरात्म्य १७.२४
आक्रान्तं भावयेत् साध्यं ४.३८
आग्नेयादिचतुष्कोणे १३ ७, १४.४१,५२;१६.९
आचार्या नावमन्तव्या १७.१२
आज्यमाक्षिककसम्पूर्णे ४.१९

आज्यमाक्षिकसम्पूर्णे पृ० ४१
आत्मदेहोद्भवैः क्रोधै ४.५९
आत्मनः शान्तये चैव १२ १५
आत्मना सर्वभावेन ११.७
आत्मस्कन्धं न वै निन्देद् १७.१४
आधारे चौरकेशाख्ये ७.१०
आर्यजाङ्गुलियोगेन १५.६
आलिख्यं द्वयचक्राख्यं ५.६
आवेशं कुरुते क्षिप्रं १४.२५
इत्याह भगवान् वज्री १३.१०
इत्युक्त्वा सप्तरात्रेण ९.१२
इदं चक्रं महारौद्रं ५.२०
इदं ते पानरत्नं वै ७.२४
इन्द्रनीलप्रतीकाशं १०.८
इन्द्रनीलप्रभाकारां १४ १२
इष्टचूर्णसमार्धेन ११.२५
ईर्ष्याक्रान्तं जगद् दृष्ट्वा ११.५
ईर्ष्यायमारिसद्रूपं ११.५
ईर्ष्यावज्रस्वभावस्त्वं २.५
उच्चारिते महातन्त्रे ६.७
उट्ठ भराडउ करुणा १७.३
उट्ठ भराडो चित्ते १७.४
उट्ठ भराडो लोअह १७ ५
उत्तरे कर्मडाकि तु १३.७
उत्तरेणालिखेत् खड्गं २.१३
उत्तरेणोत्पलं पीतं २.१४
उत्तिष्ठन्ति महाशिष्या १४.२७
उन्मत्तरसलेपेन ९.५
उपद्रुतं शीतवातेन ४.५५
उभौ तु युध्यमानौ तु ५ ४
ऊषरमृत्तिकां गृह्य ४ ४५
ऋक्षस्य मर्कटस्यापि १०.४
एकु महाधनि तथता १७.३०
एकहस्तं समारभ्य १४.२७
एकाक्षरमहामन्त्र ११.१५
ए चउमार पराजिअ १७.४
एतत्सेकप्रभावेण ६.६
एतन्मन्त्रेण सर्वासा १३.२१
एता विभावयेत् प्राज्ञो १५ ५
एतेन संस्करेत् प्रतिमां १०.५
एवमात्मानं सन्नह्य ४ ५३
एवं तद्भावयेच्चक्रं १३ १६
एवं विचिन्त्य साध्यं वा ४.६२
एष योगवरः श्रेष्ठः ११.२७
ओष्ठाभ्यां द्वयङ्गुलं प्रोक्तं १४.३७
ॐ फु फु फु ह्री ह्री ह्री जपेत् १३.१९
ॐ फूःकारं हृदि न्यस्य ९.१
औदुम्बरं मान्दारकं ७.२१
कडारोर्ध्वज्वलत्केशं ४.४९
कथयस्व महावज्र ४.२
कथं सत्त्वाः प्रवर्तन्ते ४.२
कन्दरस्य मृदं गृह्य ९ ७
कन्दर्पदर्पकं चोक्तं १५.१५
कपिलं तालकेनैव १४.३२
करुणाकोह भराडउ १२.५
करुणाचित्तं अच्छइ १७.३०
करुणारागचित्तेन १७.७
कर्णं तु द्वयङ्गुलं प्रोक्त १४ ३६
कर्णिकारस्य मालां च ७.२१
कर्तव्यं ज्ञानवज्रेण ५.१९
कर्ममण्डलमध्यस्थं ३.७
कर्मवज्रप्रयोगेण ३.११
कर्मवज्रप्रयोगेण ३.१३
कर्मवज्रं लिखेत् तत्र २.११
कर्षणं वेशनं चैव ३.५
कर्षयेच्छुक्रसंघातं ७.१८
कवचं स्फोटयेत्तस्य ४.५९
कस्त्वं भो भो इति ब्रूयात् ८.४

काइ तु अच्छसि सुन	१७.६	खनीयाद् द्वयङ्गुलं	१४.१५
कान्तलोहमयं खड्गं	३.१३	खमध्यवज्रगतं चिन्तेद्	१.१०
कायवज्रप्रतीकाश	२.५	खरोष्ट्रं घातु संगृह्य	१२.८
कालमूलादिरहिते	४.७	खाद्यमानं महादुष्टं	४.५६
कालाखव्व पमाणहा	१२ ४	खेचरत्वप्रसिद्धयर्थं	१३.१७
कालादिरहिते यन्त्रे	४.१८	खे न्यसेदात्मनश्चक्रं	१४.१०
कालादिरहिते यन्त्रे	पृ० ४१	गञ्जनेन श्मशानस्य	९ ५
किञ्चित्सामर्थ्यमाभुज्य	११.१२	गण्डमालावृताङ्गं च	४.५५
किट्टभिण्णाञ्जण कोह	१२.३	गर्भमण्डलमध्ये	१३.१३
कुङ्कुमं गुह्यरक्तेन	३.११	गीतं वाद्यं तथा पूजा	८.७
कुन्तलां देहिनीं गेहां	१४.४२	गुरुद्रोहस्तथा समये	१७.१७
कृत्वा पापसहस्राणि	४ ६५	गृहं पीठं सुगन्धं च	१२.१८
कृत्वा मण्डिलकास्तिस्रो	६.११	गृहाण वत्स वज्रस्त्वं	७.२३
कृत्वा मण्डिलकां त्र्यस्रां	६.९	गृहीत्वा प्रतिपदं यावत्	७.१४
कृष्टं शरभसिंहस्य	५.१४	गृहेऽपि कलहो नित्यं	५.२०
कृष्णवर्णां महाभीमां	१३.३	गोकर्णं हस्तिकर्णं च	१३.२३
कृष्णसर्पस्य मांसानि	९.२	गोरूपं कुक्कुरं चैव	११.२३
कृष्णसूत्रेण संवेष्टय	५.७	गौरीं विभावयेत् प्राज्ञो	७.४
केशं तु पिङ्गलं कार्यं	११.१०	ग्रामजालरता ये च	१४.१८
कोटिजापेन सिद्धिः स्यात्	१२.१२	ग्रीवा गले तथा मेढ्रे	१४.३५
कोणे चैव न्यसेन्नित्य	१५.१४	घातितं तेन दुष्टेन	४.६१
कोणे वज्रचतुःशूले	१.१२	घात्यन्तं भावयेत् तत्र	४.६०
कौशिकेन मुखं बद्ध्वा	८.४	घृतमधुमध्ये प्रक्षिप्य	४.८
क्रुद्धो याम्याननो योगी	५.११	घृतादिरहितं कृत्वा	४.२३
क्रोधरूपं महारूपं	४.४८	घृतादिरहितं कृत्वा	पृ० ४१
क्रोधसौम्यद्विधाभावे	१४.३३	चक्रद्वयमभिलिख्य	४.७
क्षीराभ्यासैकचित्तेन	११.१३	चक्रद्वयं तु काश्मीरैः	४.१२
खगमुखाद् वज्रमार्गाच्च	७.१८	चक्रद्वयं समालिख्य	४.१८,२५,३२
खटिकागैरिकाभ्यां वै	१४.३०	चक्रद्वयं समालिख्य	पृ० ४१
खट्वाङ्गं वामभागेषु	१६.३	चक्रहस्तां महाभीमां	१३.५
खड्गं चाभरणं चैव	१२.१८	चक्रं चैव महापद्मं	४.५०
खड्गेनादीप्तवपुषा	८.२	चण्डबीजशतं गृह्य	९.४
खदिरकाष्ठानले दीप्ते	४.३०	चतुरङ्गुलनालेन	१४.३४
खधातुमध्यगतं चिन्तेत्	१३.२	चतुरस्रां महापीतां	१४.२३

चतुर्गीतिप्रयोगेण	१७.२
चतुर्द्वारि सदा ध्येया	१३.२४
चतुर्भूतमहाबीजे	१४.२०
चतुर्विंशतिहस्तं च	१४.३५
चतुःषष्टिबलिं दद्याद्	१२.१३
चतुःस्थानप्रयोगेण	१४.२०,२५
चत्वारि लक्षजापेन	९.६
चत्वार्येते महासेकाः	६.६
चन्द्रमण्डलमारूढं	४.९
चन्द्रवज्रप्रयोगेण	१.३
चर्चिकाद्यादिगीतेन	१७.२
चर्चिकां भावयेत् प्राज्ञो	७.१
चर्यानयविशेषेषु	१४.६
चितौ सम्पुटपद्मेषु	५.१७
चित्तवज्रप्रतीकाशः	२.३
छागलस्थं प्रशस्तं वै	५.१४
जटा चास्यप्रमाणा स्याद्	१४ ३८
जननीं भगिनीं वापि	१२.१७
जपेन्मन्त्रं सदा नित्यं	१७.१७
जम्भलां पूर्वतो ध्यायेद्	१४ ४०
जलेन्द्रान् पश्चिमे न्यस्य	१४.४१
जःका[रेण] ह्लीं:कारेण	४.२६
जाकारे चर्चिका प्रोक्ता	१.९
जिह्वावज्रप्रयोगेण	३.४
ज्ञानचक्रप्रवेशश्च	१७.११
ज्ञानसूत्रवराग्राग्र्यं	१४.२
ढौकयेद् गौरवाद् शिष्यः	८.७
णयोनिर चतुष्कोणे	१.१०
णिम्मल शुद्धदेहो	१७.२९
णैतहि भअण दु पूर्ण	१७ ३२
तथा चक्रद्वयं लिख्य	५.१
तथा परमाश्वमन्त्रं तु	१३.२५
तदन्तरान्तरितेष्वपि	६.१७
तदर्धेन रजोभूमिः	१४.९
तदा मण्डललेखेन	१७.१७
तदूर्ध्वं मुण्डवत् कार्यं	१४.१४
तन्निष्यन्दोदयो देव	१७.९
तमारूढं महादुष्टं	५.९
तर्जनीरक्तमादाय	४.४५
तस्य मध्ये लिखेद् वज्रं	२.११
तस्याग्रे तु यमं ध्यायाद्	४.६०
तस्यान्त्रनालमादाय	४.६१
तस्योपरि लंकारेण	४.३५
तं च संप्रार्थयेद् योगी	१०.५
तं साध्यं विह्वलं नूनं	४.२२
तं साध्यं विह्वलीभूतं	पृ० ४१
ताड्यन्तं क्रोधसंघातै	५.९
तान् वै कर्तयितुं कर्त्री	१३.१
तिहुअण सअलह	१७ ३
तृतीयकोष्ठके पुरत	६.१७
तृतीयं वज्रघण्टां च	६.५
तृतीये कर्तिकाहस्तं	४.५०
तेनैव वटिकां कृत्वा	९.३
तैलेन निम्बपत्रेण	१४.२९
त्रिकटुकं कटुतैलं च	४.४४
त्रिनेत्रमूर्ध्वकेशं च	१६.३
त्रिमुखं षड्भुजं क्रुद्ध	१.२९, १०.८
त्रिमुखं षड्भुजं पीतं	१४.४८
त्रिमुखं षड्भुजं पुष्टं	१.३१
त्रिमुखं षड्भुजं भीमं	१०.७
त्रिमुखं षड्भुजं रक्तं	१०.९
त्रिमुखं षड्भुजं वश्यं	१.३२
त्रिमुखं षड्भुजं शान्तं	१.३०
त्रिमुखं षड्भुजं श्यामं	१०.१०
त्रिमुखं षड्भुजं सर्वं	१.३३
त्रिमुखां षड्भुजां खर्वां	७.४
त्रिमुखां षड्भुजां घोणां	७.२

त्रिमुखां षड्भुजां पीतां १५.२
त्रिमुखां षड्भुजां रक्तां ७.३
त्रिमुखां षड्भुजां शुक्लां ५.१
त्रिमुखाः षड्भुजाः सर्वा १४.५०,५४
त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा ३.१२
त्रिसन्ध्यं पीतपुष्पैस्तु ४.१४
त्रिसन्ध्यं शुक्लपुष्पैस्तु ४.८
त्रैधातुकमहाखड्ग ७.२२
त्रैधातुकमहारत्नं ७.७
त्र्यस्रो दावाग्निवद् वह्नी १४.२२
त्वं देवि साक्षिभूतासि ८.३,१४.६
दकारेऽपि च ईर्ष्या स्याद् १.७
दक्षिणाभिमुखो योगी ४.३७,४७
दक्षिणेन महावज्र ९.१०
दक्षिणेन महावज्रं ४.४९
दक्षिणेनालिखेद् रत्नं २.१२
दक्षिणे माषमुष्टिं तु १३.१९
दक्षिणे रत्नडाकिं तु १३.५
दण्डं कुर्यात् प्रमाणेन १४.१४
दण्डं पाणौ न्यसेत् प्राणी १० ९
दिनमेकेन सिद्धिः स्यात् ४.४२
दिव्यचक्ष्वाद्यधिष्ठानं १७.१०
दुष्टमैत्री सदा त्याज्या १७ १५
दूरश्रवणसिद्ध्यर्थं १३ १०
देवताः प्रीणयेद् योगी ६.९
देशमुद्राप्रयोगं तु ६.२
देहि मे समयं तत्त्वं १४.५
द्रष्टव्या एवमाद्यास्तु १४ १३
द्वारपालान् ततो ध्यायाद् १३.८
द्वारपालाश्च सर्वे वै १६.१०
द्वारपालांस्ततो ध्यायान् १४.४२
द्वारवज्रचतुःशूले १.१३
द्वारेषु मुद्गरादीनि १३.१५
द्विपञ्च मारणेऽङ्गुष्ठं ८.१३
द्विभुजमेकवक्त्रं तु १३.१८, १५.११,१६,२
द्विभुजामेकवक्त्रां तु १४.३९
द्वेषयमारिसद्रूपं ११.१
द्वेषाक्रान्तं जगद् दृष्ट्वा ११.१
द्वेषानुस्मृतिमान् योगी १०.१२
धन्वाकारं महाकृष्णं १४.२२
धर्मचक्रं तथाऽश्वत्थं १६.७
धर्मचक्रं लिखेत् पूर्वे १६.५
धान्यं चामीकरं वाथ १२.१६
धारासहस्रसंपूर्णं १४.२४
धीरं विनीतं करुणैक १७.१९
धुत्तूरपत्रनिर्यासै ४.४४
धैर्यमालम्ब्य यत्नेन ७.११
ध्यानान्वितं स गुरुजाप १७.१८
ध्वजवीथीं ततो दृष्ट्वा ११.१३
ध्वाङ्क्षपक्षस्य लेखन्या ५.१६
न किञ्चिच्छ्रूयते मन्त्रं १२.७
न द्रुतं न विलम्बितं १२.७
न धातुर्न च विज्ञान १७.२४
न पृथिवी नाप्तेजो १७.२५
न बाहुर्न मुखं वर्णं १७.२७
न बोधिर्नाभिसमयो १७.२३
नवेन सुनियुक्तेन २.९
नानारूपविलासिन्यः १६.६
नाम सत्त्वविघातस्य ४.४७
निकारे पद्मपाणिश्च १.८
नित्यं च प्रार्थयेद् योगी ९.११
निमित्तैः क्रोधसंघातैः ५.४
निराश्रयी कृतं ध्यायाद् ४.५८
निर्यातयेत आत्मानं १२.१७
निर्यूहा द्वारवज्राङ्गया १४.८

निष्पत्तिः सर्वचक्रस्य	१७.१०	पश्यते वै पिता तस्याः	१०.७
निष्पन्नं मण्डलं ज्ञात्वा	२.१६	पाणिपादं तथास्यं तु	१४.३६
नीलवर्णं महादुष्टं	५.८	पाणौ कोषं विभावित्वा	१.३३
नीलवर्णां महाभीमां	१४.४०	पाणौ चक्रं विभावित्वा	१.३०
नीलं नीलिकया चैव	१४.३१	पाणौ पद्मं विभावित्वा	१.३२
नृकरङ्कं चापसव्ये वै	१६.८	पाणौ रत्नं विभावित्वा	१.३१
नृतैलं नृकपालस्थं	३.९	पाणौ वज्रं प्रभावित्वा	१.२९
नृत्यं च सुभगं कार्यं	११.१२	पाणौ विभावयेद्वज्रं	१६.२
न्यसेन्मन्त्राणि सिद्धानि	६ १२	पातालबिलसिद्धयर्थं	१३.१२
पइणच्चंते कंवि अइ	१२ ३	पाताले कृष्यते नागै	४.६२
पक्षं कमण्डलुं शाखां	१५.४	पादयोः पतितां चैव	१५.१७
पङ्कजं पश्चिमे द्वारे	२.१५	पापेभ्यो मुच्यते यस्माद्	४.६४
पञ्चकामगुणैर्बुद्धान्	२.१६	पिशुनयमारिसद्रूपं	११.३
पञ्चगव्यसमालिप्तं	१४.४	पिशुनाक्रान्तं जगद् दृष्ट्वा	११.३
पञ्चशूलं विभावित्वा	१३.३	पिशुनानुस्मृतिसंयोगाद्	१० १३
पञ्चाकारं विभावित्वा	१७.१	पीतदेहं महारूपं	१५.११
पञ्चामृतसमायुक्तं	१२.९	पीतवर्णं यमघ्नं तु	४.३६
पञ्चामृतं समादाय	३.१२	पीतवर्णं यमघ्नं वै	४.१४
पद्महस्तधरां सौम्यां	७.३	पीतशरावोपरि स्थाप्य	४ ३३
पद्माख्यं भावयेत् प्राज्ञो	१०.१०	पीतं रक्तं तथा श्यामं	१५.४
परमानन्द सइ असहाव	१७.३१	पीतं श्यामं पुनः पीतं	१४.५३
परमास्वभावनायोगात्	५.२५	पीतं साध्यं विचिन्त्याशु	४.३७
पलअउ अत्ती णैव	१७.३२	पीतां रक्तां तथा श्यामां	१५.१३
पश्चान्मध्ये यकारस्य	५.१८	पीयतां मानसं वारि	७.२४
पश्चिमे कामदेवीं तु	१५.१२	पुण्णस्सावेगो सम्बन्ध	१७.२९
पश्चिमेनालिखेत् पद्मं	२.१३	पुष्पां धूपां तथा दीपां	१३.१५
पश्चिमे पद्मडाकिं तु	१३.६	पुंसां तु शान्तिके लेख्यं	४.१२
पश्चिमे पद्मपुष्पं तु	२.१४	पूर्वकोणे लिखेच्चक्रं	२.१४
पश्चिमे पर्णशबरी	१५.३	पूर्वचक्रं यथादृष्टं	१४.४३
पश्चिमे पाण्डरां देवीं	१३.१४	पूर्वतो मायूरी लिखेद्	१५.३
पश्चिमे रागवज्रं तु	१.१२	पूर्वद्वारे मोहवज्रं	१.११
पश्चिमे विह्वलां ध्यात्वा	१४.४९	पूर्वशूले लिखेच्चक्रं	२.१२
पश्चिमे ससिराज्ञीं तु	१३.२०	पूर्वसेवायुतं जप्त्वा	५ १९

पूर्वसेवायुतं जप्त्वा पृ० ४१
पूर्वेण तु महाश्वेतं १४.११
पूर्वेण बुद्धडाकिं तु १३ ४
पूर्वेण रतिं ध्यायाद् १५.१२
पूर्वेण लोचनां स्थाप्य १३.१४
पूर्वेण वडवां ध्यायेद् १३.२०
पूर्वेण सुन्दरीं न्यस्य १४.४९
पौष्टिके पीतचन्द्रस्थं ५.१३
प्रशान्तकं हयग्रीवं १६.१०
प्रज्ञोपायस्वभावं तु ७.२३
प्रणवादिर्नमोऽन्ते च ६.१९
प्रतिदिनं प्रतिमासं वा १२.१३
प्रतिदिनं बलिं दद्यात् ९.११
प्रतिपत्सु शान्तिकं होमं ८ १४
प्रति प्रति गुलिकां योगी १२.१०
प्रत्यालीढपदाः सर्वाः १४.५१
प्रत्यालीढपदे संस्थं ४.५२
प्रथमं चित्रयेच्छुक्लै १४.३०
प्रथमं भावयेद् योग १७.८
प्रथमं मौलिसेकेन ६.५
प्रपूर्य लक्षजापेन ९.१३
प्रवेश्य सर्वसंबुद्धान् ३ ४
प्राणातिपातिनो ये च १४.१७
प्रेतस्थाश्चारुरूपाश्च १६.७
प्रेरणे चोष्ट्रदेहस्थं ५ १३
बालरूपधरं नाथ १४.४८
बिल्वलालां ततो दद्यान् १४.३२
बुद्धबिम्बं विभावित्वा १७.१
बुभुक्षितपत्रलेखिन्या ४.४६
बोधिचित्तं न वर्जेत १७.१३
बोधिसहाव लोअणि १७.६
ब्राह्मणस्य तु मांसेन ९.९
ब्रूहि धर्ममहारागं १४.२६
भगे लिङ्गं प्रभावित्वा १०.११
भवेद् योगीश्वरीसिद्धिः ७.१५
भावितव्यौ बलौ क्रुद्धौ ५.४
भिक्षां नैव भ्रमेद् योगी १७.१६
भुजद्विलक्षसम्पूर्णं ११ १९
भुजानां भावयेद् धीमान् ११.१७
भूयसीं करुणां कृत्वा ४.६६
भूर्जपत्रे लिखेद्वश्यं ५.१५
भूर्जे वा कर्पटे वापि ४ १७
भूर्जे वा कर्पटे वापि पृ० ४१
भ्रातॄणां च तथा कोपान् १७ १२
मञ्जुवज्रे प्रसिद्धे तु १४ ४७
मण्डलद्विगुणतो दीर्घं १४.४
मण्डलस्याष्टमं भागं १४.७
मण्डलं लिख्यतां नाथ ३.२
मण्डलं वर्तयेन्नित्यं ६.४
मदिराकामिनीसक्ता १४.१७
मध्यतः संलिखेद्वज्रं १४.१३
मध्याह्ने क्रूरचित्तेन ४.४६
मन्त्रखिन्नस्याहारं ११.२२
मन्त्रं चैव जपेत्तत्र १५.१८
मन्दरादिनगैर्घोरैः ४.३८
ममापि त्राणनार्थाय ८.६
मलिनं जर्जरं रोगै ४.५४
महाटवीप्रदेशेषु १०.९
महातैलेन चाभ्यज्य ११.२४
महापूजा स्तुतिश्चापि १७.११
महामांसं हयं चैव ११.२३
महामूत्रं तु पातव्यं ११.२७
महासुह भावें धम्म १७.३१
महिषवज्रं विभावित्वा २.६
महिषस्थं ललज्जिह्वं ४.४८
महिषस्य कुम्भीरस्य १०.३
महिषं मानुषं द्विरदं १२.८
महिषेण च व्याघ्रेण ४.५६

मंकारबीजसम्भूता १४.५१
मारणे यमदेहस्थं ५.१२
मारयेत् प्रेतसंघातं १२.११
माराणां जयतो गृह्ल ७.२२
माराणां शमनार्थाय १.३
मारीचीं पर्णशबरीं १४.५२
माषं दुग्धं तथा मांसं १४.२९
मासि मासि चतुर्दश्यां १२.९
मुखं त्रिभागं कायं तु १४.३७
मुखेन पिबते शिष्यो ७.२५
मुदिता सरस्वती चैव ११.६
मुद्गरं दण्डपद्मं च १३.८
मुद्गरं पूर्वतो द्वारे २.१५
मुद्गरादिचतुर्द्वारि १४.५४
मुद्गरादिचतुर्मन्त्रैः ३.५
मुद्गरादीन् न्यसेद् द्वारे १५.६
मुद्रान्यासं तथा कुर्याद् १४.१२
मुद्रिता वज्रमुद्रेण ६.२
मुशलं परशुं चैव १३.२३
मूर्ध्नि पञ्चकपालानि १६.४
मूलमुखं महाभृङ्गं ४.५१
मृत्तिकां स्निग्धां संगृह्य १४.२८
मेकारं पश्चिमे लेख्यम् ६.१४
मैत्रीचित्तं तु सर्वेषु १७.१३
मैत्री तु चर्चिका प्रोक्ता ११.६
मोहयमारिसद्रूपं ११.२
मोहवज्रस्वभावस्त्वं २.२
मोहाक्रान्तं जगद् दृष्ट्वा ११.२
मोहानुस्मृतिमालम्ब्य १०.१२
यकारे मुद्गरः स्यात १.८
यक्षिणीसिद्धिकाले तु १४.३९
यच्चनिराजा सदोरुण ६.१६
यज्ज्ञात्वा मुच्यते क्षिप्रं १६.१
यत्किञ्चित् खाद्यते नित्यं १२.१४
यथा तारकसंक्रान्ति १७.७
यथा पुष्टौ तथा वश्ये ८.१२
यथा बुद्धैर्महाधर्मे ८.६
य द यो नि र य क्षे य ६.१३
यदा नागच्छति साध्य ४.३०
यद्यन्मार्गयते योगी १०.३
यमघ्नमण्डलं घोरं ३.२
यमघ्नो मण्डलाचार्यो ८.३
यमध्यक्षे न्यसेत् पूर्वं ६.१४
यमध्ये क्षे स मं द य १.६
यमनिकास्वन्तरं दत्त्वा ८.५
यममारिप्रतीकाशं २.८
य म रा जा स दो मे य ६.१३
यमान्तकस्य मध्यस्थं १.११
यमान्तकं चन्द्रकान्ताभं ४.९
यमारिणा घातितं स्वप्ने १०.६
यमारिप्रतिमां कुर्याद् ९.९
यमारिभक्तं गुरुभक्ति १७.१९
यमारियोगमादाय ५.७
यमारियोगयुक्तेन १०.२
यमारेर्भीमरूपस्य ११.८
यमार्यन्तानि यन्त्राणि ४.५,१७.२१
यवसं वामतो ध्यायात् १३.२४
यंभवे धनुराकारे ५.८
ये केचिद् भुवि विद्यन्ते ११.१७
येन जापप्रयोगेण १२.६
येन भावितमात्रेण १४.४५,१५.१
येन भावितमात्रेण १५.७
येन विज्ञातमात्रेण १५.१०
येन होमेन सिद्धिः स्यात् ८.९
योगयोगित्वसंबन्धान् १७.२६
योषितः पद्मभाण्डे वा ४.२६
रक्तचन्दनकेनापि ४.१७
रक्तचन्दनकेनापि पृ० ४१

रक्तचन्द्रसमारूढं ४.२०
रक्तचन्द्रसमारूढं पृ० ४१
रक्तमण्डलमध्यस्थं ३.७
रक्तमण्डलमहोज्वाल पृ० ४१
रक्तवर्णं महाज्वालं ४.२०
रक्तवर्णाङ्कुशाकृष्टं ४.२८
रक्तवर्णी चतुर्वक्त्रा १५.८
रक्तसिंहसमारूढं ४.२९
रक्तसूत्रेण चावृत्य ४.२७
रक्षार्थं भावयेद् वज्रं १ ४
रत्नहस्तां महादीप्तां १३.६
रागयमारिसद्रूपं ११.४
रागवज्रस्वभावस्त्वं २.४
रागाक्रान्तं जगद् दृष्ट्वा ११.४
रागानुस्मृतियोगेन १०.१३
राजिकालवणेनापि ४.४३
रेफस्यादिर्यमघ्नः स्यात् १ ६
रोचनालक्तकं चैव ५.१५
रोचना सिन्दुवारं च ११.२५
रोमकूपमहाविवरात् ४.५२
लक्षजापेन योगात्मा १२.१२
लास्या माल्या तथा नृत्या १३.८
लिखेत् पूर्वत आरम्य ६.१७
लोअणिमंति अच्छसि १७.५
लोचनां मामकीं तारां १६.९
लोहितं पश्चिमं भागं १४.११
वक्त्रं प्रसारितं कृत्वा ७.७
वज्ज सरास्सइ विण्णममि १२.४
वज्रधर्म महानाथ १४.२६
वज्रमण्डलमारूढं ११.१६
वज्रसत्त्वप्रयोगेण १७.२५
वज्रसत्त्वस्य निष्पत्ति १७.९
वज्रं च भावयेद् देव्याः १६.८
वज्राप्सरःसमायुक्ता १४.८
वज्रेण भूमिं वाटं च १.४
वर्तयित्वा महावेदीं १४.७
वशमानयेत् जगत् सर्वं ११.२४
वश्यके चार्धचन्द्राख्यं ८.११
वश्यं यदि नागच्छति पृ० ४१
वश्यं यदि नागच्छति ४.२३
वश्ये चोत्कण्ठचित्तेन ८.१०
वश्ये वै रागवज्रेण ३.८
वसन्तं मकरकेतुं च १५.१४
वस्त्रं नानाविधं चैव १२.१७
वाक्स्तम्भनकामेन ४.४०
वाञ्छितां लभते योगी १५ १९
वाञ्छितां विह्वलां ध्यात्वा १५.१७
वाममारभ्य संलिख्य ६.१६
वामं रक्तनिभं प्रोक्तं ४.५१
वाराहीरूपमाधाय ११.१४
वाराहीं भावयेत् प्राज्ञो ७.२
वांशं वाद्यं मुकुन्दं च १३.२२
विकृतदंष्ट्राकरालास्यं ४.५३
विकृताननमहामन्त्रं ११.२०
विघ्नान् विनायकान् दुष्टान् ८.१
विजनेषु वने वापि ७.१९
विदर्भ्यं साध्यनामानि ४.४०
विवस्त्रं मुक्तकेशं च ४.२२
विवस्त्रं मुक्तकेशं च पृ० ४१
विवस्त्रं वेपमानं तु ४.५४
विश्ववज्रचतुष्कोणे १.१३
विश्ववज्रसमाक्रान्तं ४.३८
विश्ववज्रेण चाक्रान्तं ४.३६
विषराजिकालवणं १०.४
विषलवणराजिका ५.११
विषं लूतं तथा कुष्ठं ११.२६
वृक्षावलम्बितं गृह्य १०.२

वृत्तं शुक्लं महाशीतं १४.२४
वेतालसाधनोपाय १०.१
वेदी द्वारस्यार्धेन १४.९
व्यपरोपयति संसाराद् ४.६३
शत्रोर्वैरोचनां गृह्य ९.१३
शरावसम्पुटे स्थाप्य ४.१३,५.१६
शान्तावन्त्ययकारस्य ५.१८
शान्तिकादिप्रमाणेन २.१०
शान्तिके मण्डलाकारं ८.११
शान्तिके मोहवज्रं तु ३.८
शान्तिके रोचनां गृह्य ४.६
शान्तिके शान्तचित्तेन ८.१०
शिरःकपालैः संवेष्ट्य ११.१०
शिरःप्रमार्जनेनैव ९.७
शिरःशूलं न भवति ९.८
शिष्यं वैरोचनं ध्यात्वा १४.२
शीत्कारमन्त्रसम्भूतं १५.१६
शीत्कारमुच्चरन् ध्यायात् ४.५८
शुक्लवर्णं महाभीमं ९.१०
श्मशानकर्पटे चक्र ४.४३
श्मशानचेलके चक्र ५.१२
श्मशानचेलके धीमान् ४.३२
श्मशानचेलके वापि ४ २५
श्मशाने कज्जलं पात्यं ३.९
श्राद्धसत्त्वं न वै वञ्चेत् १७.१५
श्राद्धं गुरुं समयपालक १७.१८
श्रीयमारिं समालम्ब्य ५.३
श्रुवा पद्मदलाकारा १४.१६
षड्भुजं नीलवर्णाभं १३.१३
सकारे पिशुनमेवोक्तं १.७
सन्ध्यार्कसन्निभं ४.२७
सपत्रादि हरिन्माषं १३.२२
सप्तचत्वारि रेखा वा ४.३४
सप्तरात्रप्रयोगेण ७.१९
सप्तसप्तिकमध्यस्थं ३.७
सप्ताभिमन्त्रितं कृत्वा ९.८
समयसाधनमतो ११.२२
समयाक्षरेणैव १४.१०
समयान् साधयेन्नित्यं ६.४
समाजान्तानि तन्त्राणि १७.२१
समुद्रमृत्तिकां गृह्य ९.१
सरस्वती च दोकारे १.९
सर्पहस्तां महारूपां १५.२
सर्पैराभरणं कृत्वा ११.९
सर्वकामलतां पश्चा १६.६
सर्वघोषवराग्राग्र्य २.४
सर्वदोषचिकित्सात्मा ४.३
सर्वबुद्धमयः शान्तः २.२
सर्वबुद्धवराग्राग्र्य २.६
सर्वबुद्धस्वभावस्त्वं २.६
सर्वभावा न भावाख्या १७.२६
सर्वभावा न वै सत्त्व १७.२७
सर्वलक्षणसंपूर्णं २.१०
सर्वसिद्धिकरं दिव्यं ९.१४
सर्वाभरणभूषिताङ्गान् १५.९
सर्वासां कामदेवीनां १५.१३
सर्वेषां च करे खड्गं १४.५०
सर्वेषां देवतानां तु १५.१५
सर्वेषां माण्डलेयानां ६.३
संलिख्य विधिना प्राज्ञो ६.११
संस्कृतं वक्तुमारभेत् ७.१४
संस्फारयेद् रोमकूपाग्रे १०.१४
साध्यमाकर्षयन् दृष्ट्वा ४.२१, पृ० ४१
साध्यस्य नाम चादाय ४.१३, पृ० ३३,६.१५
साध्यस्य नाममादाय ५.१
साध्यं सुपीतचन्द्रस्थं ४.१५
सिच्यतेऽनेकसम्बुद्धै ४.१०

सिञ्चितं पञ्चद्रव्येण ४.२९
सितकलशैस्तु चन्द्राभैः ४.१०
सिद्धयत्यशेषनिःशेषं ७.१५
सिद्धयत्यशेषनिःशेषं ६.१२
सिद्धयन्ते नास्ति सन्देहः १४.१८
सिंहनादं ततः कार्यं ११.११
सिंहवद् विचरेद् वीरः ११.१४
सुप्तकोत्थापनं कार्यं ९.६
सुमेरुपर्वताक्रान्तां १४.२३
सुमेरुपर्वतोत्तुङ्गं ११.१९
सूत्रेण सूत्रयेत् प्राज्ञो २.९
सूर्यमण्डलमध्यस्थं १०.१४
सूर्योपरि समारूढ १३.१८
सौम्यं तु ललितं प्रोक्तं १४.३४
सौष्ठवं कुरुते चित्तं ७.२५
स्त्रीणां खगमुखान्तस्थं १५.१६
स्त्रीणां प्रज्ञास्वभावानां १७.१६
स्त्रीणां वश्याय कर्तव्यं ४.६
स्वकायनिर्गते रक्ते पृ० ४१
स्वकायनिर्गतैर्भाभी ४.२१
स्वच्छमण्डलमध्यस्थं ३.६
स्वच्छमण्डलमध्यस्थां १०.१५
स्वप्ने तु पश्यते मार्गं १३.१६
स्वाहाकारं ततो दत्वा १५.१८
हडिनिगडपदाक्रान्तं ४.५७
हडे तुअ पेक्खिअ भीमि १२.२
हरितालनीलिकाभ्यां तु १४.३१
हस्तमानां कुलालस्य ७.१०
हस्तायामं भवेच्छान्तौ ८.१२
हस्तार्धं वेधयेत् शान्तौ ८.१३
हस्ते खड्गं प्रभावित्वा १०.११
हस्ते वज्रं विभावित्वा १३.४
हारार्धहारमार्तण्ड १४.९
हुँफट्कारविदर्भेण ५.६
हूँकारबीजसम्भूतं १६.४
हूँकारं च वंकारं च ४.३५
हूँफट्कारयुता बीजाः ६.१९
हूंभ्यां विदर्भितं कृत्वा ६.१५
हृदये अङ्कुशैर्विद्धं ४.२८
हृद्बीजात् स्फारयेद् योगी ११.७
ह्रीःकारबीजसम्भूतं ११.१६
ह्रीःकारबीजसम्भूतां १५.८
ह्रीःकारं महामन्त्रं ११.१८
ह्रीः ष्ट्रीः मन्त्रेण फेडहि १२.५
ह्रीः ष्ट्र्यादिमन्त्रमुच्चार्य ११.११

गद्यानुक्रमणी

अथ कथां प्रवक्ष्यामि .... निश्चारितवान् १८.१
अथ खलु भगवन्तः ....स्तुवन्ति स्म २.१
अथ खलु भगवन्तः .... श्रृणुयामासुः ४.४
अथ खलु भगवन्तः ....वाक्यमुदाहरन्तः ४.६३
अथ खलु भगवन्तः .... नाध्येषयामासुः ६.१
अथ खलु भगवान् .... निश्चारयामास १.२
अथ खलु भगवान् .... निश्चारयामास १.६
अथ खलु भगवान् .... फट् फट् स्वाहा १.१४
अथ खलु भगवान् .... ॐ जिनजिक् १.१५
अथ खलु भगवान् ....ॐ रत्नधृक् १.१६
अथ खलु भगवान् .... ॐ आरोलिक् १ १७
अथ खलु भगवान् .... ॐ प्रज्ञाधृक् १.१८
अथ खलु भगवान् .... ॐ मुद्गरधृक् १.१९
अथ खलु भगवान् ... . ॐ दण्डधृक् १.२०
अथ खलु भगवान् .... ॐ पद्मधृक् १ २१
अथ खलु भगवान् .... ॐ खड्गधृक् १.२२
अथ खलु भगवान् .... ॐ मोहरति १.२३
अथ खलु भगवान् .... ॐ द्वेषरति १.२४
अथ खलु भगवान् .... ॐ रागरति १.२५
अथ खलु भगवान् .... ॐ वज्ररति १.२६
अथ खलु भगवान् .... स्वभावात्मकोऽहम् १.२७
अथ खलु भगवान् .... उद्योतयामास १.२८
अथ खलु भगवान् .... आः हूँ ३.३
अथ ते मैत्रेयप्रमुखाः .... वज्रावेशसमयम् १४.१९
अथ भगवत्यो .... उदानयामासुः १७.२८
अथ भगवन्तः ....अध्येषयामासुः ३.१
अथ भगवन्तः .... अध्येषितवन्तः ४.१
अथ भगवन्तः .... उदानयामासुः १७.२०
अथ भगवान् ....उदाजहार ६.१०
अथ भगवान् .... उदानयामास १२.१
अथ वज्रधरो .... उदाहरेत् ८.८

इदमवोचन्महा.... .... उद्धृतः समाप्तः १८.३
एवं मया.... ....यमारिसंघैः १.१
ॐ इन्द्राय ह्रीं .... फें फें स्वाहा ६.८
ॐ एकजटे .... स्वाहा १४.४४
ॐ कट्टनि कर्षणि ....जः जः जः हूं स्वाहा ७.१७
ॐ कुरुकुल्ले.... ....आकर्षणं भवेत् १५.१०
ॐ पिचु पिचु प्रज्ञा ....बुद्धिवर्धनि स्वाहा ७.१३
ॐ फूः जः १५.५
ॐ वज्रघोणे सुघोणे.... ....आकर्षय जः ७.९
ॐ वज्रचर्चिके .... आकर्षय जः ७.६
ॐ वज्रडाकिनी ....खड्ग हो १३.९
ॐ शून्यता ज्ञानवज्र .... स्वभावात्मकोऽहम् ८.८
ॐ ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन ....उदानयामास ४.११
ॐ ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन ....पौष्टिकसमयः ४.१६
ॐ ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन .... महावश्यसमयः ४.२४, पृ० ४२
ॐ ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन ....आकर्षणसमयः ४.३१
ॐ ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन ....महास्तम्भनसमयः ४.३९
ॐ ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन ....महावाक्स्तम्भनसमयः ४.४१
ॐ ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन .... तन्त्रमारणादिसमयः ४.६७
ॐ ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन .... महाविद्वेषसमयः ५.५
ॐ ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन ....महोच्चाटनसमयः ५.१०
ॐ ह्रीः ष्ट्रीः विकृतानन.... ....हं हः फट् स्वाहा ११.२१
तत्रेदं सूत्रपाते ....आः हूं फट् स्वाहा १४.१
तत्रेमानि .... फट् फट् स्वाहा १३.११
निश्चार्य वज्रपाणिं ....चित्तमुत्पादितम् १८.२
नीलसूत्रेण ....निखानयेत् ५.२
पादान्ते यं ....शिरसि वं १४.२१
पिङ्गवर्णां चतुर्वक्त्रां.... .... युं ॐ फट् १५.४६
मूकं कुरु मारय .... कर्मानुरूपतः ६.१८
वज्रचक्षुः ....अधिष्ठानसमयः २.७

●

टीकाधृतवचनानुक्रमणी

अखण्डशिखराग्रास्तु ६०
अग्निदेवं त्रिनेत्रं च ६१
अग्निं प्रज्वाल्य होमाय ६१
अग्राह्या अनभिलाप्याश्च ९५
अज्ञानादथ मोहाद् वा १००
अडेडेडे किट्टयमारि १२८
अतिक्रामति यो मूढः १०१
अत्रस्थः सततं नाथो ९३
अथ खलु २२, कृ० त० ४.४
अद्य बुद्धकुले जातो १०३
अद्य मे सफलं जन्म १०३
अद्याभिषिक्तस्त्वमसि ९८
अधिष्ठितत्रिकायाय ६१
अधुना मण्डलाचार्यो १००
अनतिक्रान्तदिग्भागं १०३
अनादिनिधनं सत्त्वो ९८
अनुमोदे जगत्पुण्यं ९४
अन्तरं चतुरस्राणां १०३
अन्यत् तद्द्रव्यं यत्तीक्ष्णं ९२
अन्यत्रापि दृश्यते ३ पा. सू.
अन्योन्येन समौ शेषौ १०४
अभिषेकं महावज्रं ९७, ९९
अ(इ)यं ते धारणी रम्या १०१
अर्घपात्रमिदं यत्र ९१
अर्घपाद्यं विधायास्य ६१
अर्घाभिमन्त्रणं कार्यं ९२
अस्मरणादसामर्थ्याद् ५९
आगच्छसि यथाकालं ६२
आचार्यो नावमन्तव्यः १००
आदौ गन्धोदकं देयं ९२
आध्रियेत पुरं यस्मात् ७८
आनन्देन सुखं किञ्चित् १०२
आसङ्गो नास्ति मे कश्चिद् १३५
इच्छाम्यहं महानाथ ९४
इत्ययं मण्डले सम्यग् ९६
इदं तत् सर्वबुद्धत्वं ९८,९९
इदं तत् सर्वबुद्धानां १०१
इदं ते नारकं वारि ९५
इमे पुष्पाः शुभा दिव्याः ९३
इयं [सा] सर्वबुद्धानां ९८
इष्टार्थसिद्धि बुद्ध्वैव ६१
ईर्ष्यावज्रस्वभावस्त्वं १२९
ईषदस्याधिकः कार्यो १०४
ईषन्मीलिताम्भोज १०४
उट्ठ भराडो करुणा १२५
उट्ठ भराडो चित्ते १२५
उट्ठ भराडो लोअह १२५
उदारगम्भीरनया १०२
उद्घाटयति सर्वाक्षो ९७
ऊर्ध्वभागद्वयेनैव १०४
ए चउमार पराजिअ १२५
एवं गुरूपदेशेन १३५
एहि वत्स महायानं ९५
ऐहिकं काङ्क्ष्यमाणस्य ९४
ॐ एषोऽहं व्याकरोमि ९९
ॐ एह्येहि महाभूत ६१
ॐ पद्मसुखाधार १०२
ॐ वज्रमहाद्वेष १०२
ॐ वज्रसत्त्वः स्वयं ते ९५, ९७
करुणाकोह भराडउ १२८
कर्मानुरूपतो गन्ध ९२

कर्मानुरूपतो रूपं ६१
काइ तुं अच्छसि सुण्णे १२५
कायवज्रप्रतीकाशः १२९
काला खव्व पमाणहा १२८
किट्ट भिण्णाञ्जण कोह १२८
कुण्डादूनं भवेत् कुण्ड ६०
कृत्वा मण्डलिकास्तिस्रः २३, कृ० त० ६.९
कृष्णं पीतं तथा रक्तं १२९
क्षितौ जले शुभं कर्म ८१
खगमुखैकरसो नाथ १०२
खधातुवज्रसंयोगात् १०२
गन्धोदकं मधुक्षीरं ९१
गृहाणानुकम्पार्थाय ९३
गृहीत्वाऽऽहुतिमाहार ६१
चक्रभ्रमणयोगेन १०१
चक्ररत्नाब्जखड्गवज्रं तु ५९
चतुरानन्दभाग् विश्व १०२
चतुर्थं विश्ववज्रं च १०३
चतुर्दशाङ्गुलाः पुष्टौ ६०
चतुःषष्टिबलिं दद्याद् ७७
चन्दनागुरुवृक्षेण ६०
चन्द्रे सम्यक् शुभं विन्द्यान् ८१
चित्तवज्रप्रतीकाशं १२८
जान्वभ्यन्तरविन्यस्त ६१
ज्ञानचक्रप्रवेशश्च १२९, कृ०त० १७.११
ज्येष्ठानामिकाभ्यां तु १०१
ततोऽधरस्ततो वेदी ५९
तत् कम्पमध्यमाकाशं १०४
तथतातत्त्वनिर्याता ९५
तथाष्टाद्यङ्गुला घण्टा १०४
तदेव शशिसंभूतं ८२
तस्माद् वियोगमनया १०१
तिर्यगूर्ध्वसमं सर्वं ५९
तिर्यगेकाङ्गुलं मध्ये ५९
तिहुअण सअलह १२५
तृतीयं रागनाशत्वात् १०२
तेनैव वज्रेण विभावयेच्च १२४
त्रयाणां वर्जनादेव १०३
त्रिशूकं पञ्चशूकं च १०३
त्रिशूलवज्रजिह्वाय ६१
त्र्यक्षरैः पञ्चबुद्धैर्वा ९२
त्वयापि हि सदा धार्यं ९९
त्वयापि हि सदा धार्या ९८
त्वं मे शास्ता महावीर ९४
दक्षिणे वरदं मालां ६१
दत्त्वाभिषेकं विधिभि १०२
ददामि सर्वबुद्धानां ९७,९९
दष्टाष्टशूलमूलाशा १०४
दिगुत्पलाष्टकभागे १०४
दिग्भेदः कालभेदश्च ६०
दिव्यचक्ष्वाद्यधिष्ठानं १२९, कृ०त० १७.१०
देशयिष्यामि ते सम्यग् ९४
देहि मे समयं तत्त्वं ९४
द्विधा भूयोऽपि भिद्येत १०३
न भूयो मरणं नास्ति १००
न रागो न विरागश्च १०३
न सिद्धिर्नापि साधकः ४३
नातिदीर्घानिखण्डाग्रान् ६०
नान्योपायेन बुद्धत्वं १०१
निर्भिद्य तत्क्षणं यायाद् ९५
निवृत्तं भवदुःखं वा १००
नैवेद्यं सर्वसंयुक्तं ९३
पइणच्चते कंबि अइ १२८
पञ्चशूकं महावज्रं ९७
परमविरमयोर्मध्ये १०२
परमाद्यपुरुषो भग ९८
परलोकं समुद्दिश्य ९४
परलोकार्थिनः पुंसः ९४

पश्चिमे वश्यमाख्यातं ६०
पाणिभ्यां तु समालिङ्ग्य ९९
पाद्यं तनुग्रहे देयं ९२
पिशुनवज्रस्वभावस्त्वं १२८
पीताम्बुभिस्तु वश्यादा ६२
पुण्यकामास्ततोऽन्येऽपि ९४
पुनर्विस्तरभीत्या तु ५९
पुष्पं धूपं तथा दीपं ९२
पूर्वाशाभिमुखो मन्त्री ६०
पूर्वाह्णेशान्तिकं कुर्या ६०
पौष्टिकमौत्तरे ज्ञेय ६०
प्रकीर्य पुनरेकाग्रान् ६०
प्रज्ञावध्याश्च ते क्लेशा २
प्रज्ञाया मुखं बद्ध्वा १०१
प्रतिबिम्बसमा धर्मा ९५
प्रतिबिम्बं स्फुटं शिष्याः ९५
प्रथमं स्पर्शकाङ्क्षया १०२
प्रभूतधूमश्च सविस्फुलिङ्ग ६२
प्रविशेन्मण्डलं धीमान् ९४
प्रवेशयस्व मां नाथ ९४
बुद्धं धर्मं च संघं च ९४
बुद्धानां बोधिसत्त्वानां १००
बोधिचित्तं च मण्डलम् १३
बोधिचित्तं न वै त्याज्यं १००
बोधिवज्रेण बुद्धानां ९७, १०१
बोहिसहाव लोअणि १२५
भगे लिङ्गं प्रतिष्टाप्य ५, कृ० त० १०.११
भञ्जनं भगमाख्यातं २
भवदुर्गतितोद्धृत्य ९९
भावयेदग्निमध्ये तु ६१
मकरदन्तदष्टात्तं १०३
मध्यमं ग्रहणस्थानं १०३
मध्याह्ने क्रूरकर्माणि ६०
मन्त्रसिद्धर्यार्थिनः केचित् ९४
मन्त्री भाजनं वामेन ९२
मन्त्रेण मुद्रया सार्धं ५९
ममापि त्राणनार्थाय ९७, १०१
मया निवेदिता भक्त्या ९३
महापूजा स्तुतिश्चापि १२९, कृ० त० १७.११
महामूत्रं तु पातव्यम् ८१, कृ०त० ११.२७
मायादेव्याः स्थिताः कुक्षौ ९३
मारणं हूँफडन्तेन ९२
मुखोर्ध्वं पूर्ववज्राग्रं १०४
मुद्राभिसमयः प्रोक्तो ९९
मुद्रायाः पाणिं प्रतिष्ठाप्य १०१
मूर्ध्नि वज्रं समारोप्य १०१
मृदङ्गध्वनिगम्भीरः ६२
मोहवज्रस्वभावस्त्वम् २२, ४३, ५७, १२८, कृ० त० २.२
यथा दिशि तथा काले ६०
यथा पुण्यं तथाऽस्यास्तु ९६
यथा विनयतो विश्वं ९९
यथासुखं सुखं धार्यं १००
यथा हि सर्वसंबुद्धा ९३
यथोक्तपात्रमध्यस्थं ९१
यद् बोधिस्तद् वज्रम् १२
यमार्यन्तानि २२, कृ० त० ४.५
यस्य च समाः शूलाः १०४
यस्योत्पादनमात्रेण १००
यादृक् पुण्यानुभावश्च ९६
यादृक् सिद्धिर्भवेदस्य ९६
रक्तं वश्ये तदन्यत्र ५९
रक्षोघ्नः परितो ज्वाल ९३
रत्नत्रयं मे शरणं ९४
रागवज्रस्वभावस्त्वं १२९
राजदष्टदलाम्भोज १०४
रेफेण सूर्यं पुरतो १२४
लिखितव्यं प्रयत्नेन १००

लोअणिमन्ति अच्छसि १२५
वक्त्रत्रयं कुलिश १
वज्जसरास्सइ विण्ण १२८
वज्रघण्टा च मुद्रा च १००
वज्रघण्टासमायोगा ९९
वज्रमष्टविधं कार्यं १०३
वज्रमष्टाङ्गुलं प्रोक्तं १०३
वज्राचार्याभिषेकं भो ९८
वज्रानुरूपतो ह्रास १०४
वनस्पतिरसो हृद्यो ९३
वर्णगन्धरसोपेतं ९३
वर्णगन्धशिखावर्त ६१
वश्ये दशाङ्गुला द्वेषो ६०
वश्ये रक्तोऽभिचारे तु ६२
वह्नेर्निर्वापणं दुग्धैः ६२
वाय्वग्नी यदि शून्ये वै ८२
विचित्रं विविधं ख्यात १०२
विचित्रे प्रथमानन्दं १०२
विच्छिद्यमानार्चिरुपेततेजा ६२
विपाकं तद्विपर्यासं १०२
विमर्दमालोचनं प्रोक्तं १०२
विरमानन्दे विरागः स्यात् १०२
विरमानन्दो विमर्दे च १०२
विलक्षणं त्रिभ्योऽन्यद् १०२
विसृष्टपुष्पधूपादि ६२
व्रीहीन् वा समिधश्चैव ६०
शक्रचापनिभः सम्यग् ६२
शङ्खमुखेन गन्धाम्बु ९२
शशिन्यपि च सूर्यः स्यात् ८१
शाखा यज्ञियवृक्षाणां ६०
शान्तिकं वषडन्तेन ९२
शान्तिके सितवर्णाभः ६२
शान्तौ श्वेतरजस्तत्र ५९
शुद्धकात् समयं कार्यं १०४
शुद्धोदकं तृतीयं तु ९२
शुभं दानपतेरग्नि ६१
शूलसूर्यनिभश्चैव ६२
श्रीमद्यमद्विषमशेष १
षड्भागैरामुखं घण्टा १०४
सकेशरोऽधरः कार्यो ५९
सत्त्वानामनुकम्पार्थं १००
सत्पात्रीश्रुवयाध्मात ६१
सद्धर्मो न प्रतिक्षेप्यो १००
समन्तभद्रः सर्वात्मा ९८
समयसंरक्षणात् सिद्धिः ९५
सर्वघोषवराग्राग्र १२९
सर्वपापैर्विमुक्ताः स्थ १००
सर्वबुद्धमयः शास्ता १२८
सर्वबुद्धवराग्राग्र १२९
सर्वबुद्धस्वभावस्त्वं १२९
सर्वमूर्तिर्दृढा येन ९९
सर्वलक्षणसंपूर्णम् १७, कृ० त० २.१०
सर्वसङ्गविनिर्मुक्तः १३५
सर्वसत्त्वहितार्थाय ९९
सर्वेषां माण्डलेयानां ७
सव्यहस्तं प्रसार्याथ ५९
सहजानन्दमात्रं तु १२९
सह सांयोगिकः शुद्धो ९३
संघभोज्यं ततः कृत्वा १०३
संसूचयेदकल्याण ६२
संस्फारयेद् रोमकूपाग्रे ७३, कृ० त० १०.१४
साध्यानां बहुभेदेन ५९
सितपीतारुणश्यामं ९२
सुखमुत्पद्यते यत्तत् १०२
सेवयेद् वज्रसत्त्वाख्यं ९७
सेवयेद् वज्रिणं ध्यात्वा ९७
स्थापयित्वा यथा मन्त्रं ६०
स्थूलशूलकृशाग्राग्रं १०३

स्वपरार्थसमर्थः स्यां ९८
स्वभावशुद्धैः सत्सत्त्वैः ९८
स्वभावशुद्धो हि भवः ९८
स्वमात्मानं परित्यज्य १००
स्वविद्यापुरुषतोयेन ९७
स्वार्थं चैव परार्थं च ६२
हडे तुम पेक्खिअ भीमि १२८
हस्तमानं खनेत् कुण्डं ५९
हस्तौ सम्पुटपुष्टानि ६०
हेमरूप्यशिलाशङ्ख ९१
होममापूरणं कुर्यात् ५९
होमं कृत्वा बलिं दत्त्वा १०३
होमान्ते संहृतज्वाल ६२
ह्रीः ष्ट्रीः मन्त्रेण फेडहि १२८

टीकाधृतग्रन्थ-ग्रन्थकार-मत-मतान्तरानुक्रमणी

इत्यपरे १३५
इदं चोक्तम् ८१
कुरुकुल्लायाम् ११५
तथा चागमः ८१
तथा चोक्तम् ८१
तदुक्तम् १२
त्रिशरणगाथा ९४
पञ्चाकाराभिसम्बोधौ ११५
श्रीसमाजे १३
हेवज्रतन्त्रवत् १३८

विशिष्टशब्दानुक्रमणी

अक्षोभ्य २,४,७,४३,८१,११८, १२७,१४२
अक्षोभ्यकुल १३८
अग्नि ४५,८२
अग्निमण्डल ८०,१२४,१२७
अङ्कुश ८७
अञ्जन ६९
अञ्जनसिद्धि २०
अतियोग १२३,१२७
अद्वयभावना १३२
अनन्त ११५
अनन्ता ११५
अनिरुद्ध ११६
अनुज्ञा ४४
अनुज्ञादान ९९
अनुमोद १२३
अनुयोग १२३,१२६
अन्धकारिका १५
अप्सराकर्षण ११६
अभाव १३४
अभिचार १६,५९,६२,९६
अभिषेक ९७
अभिसमय ११,१३२
अमिताभ ४३,८१,१२७
अमृतकुण्डलि ९१,११९
अमृतास्वाद ४४,७४,१२९
अमृतास्वादन १८,१९
अमोघसिद्धि ४३,८१,१२७
अरूपधातु १२२
अर्क ४५
अर्घपात्रन्यास ९२
अर्घपात्रोद्देश ८१
अर्घमन्त्र ६१
अर्घविधिभेद ९२
अर्घसाधन ९१
अर्घाभिमन्त्रण ९२
अर्घहार १२४,१४०
अवैवर्तिकाभिषेक १००
अश्मरी ३५
अश्वत्थ ११९
अष्टमातृ १४२
अष्टविमोक्ष १४२
अष्टार १०५
आकर्षणसमय २८
आकाश १३३
आकाशोपम १४१
आकृष्टि २७,६४,११७
आग्नेयमण्डल १३९
आचार्याभिषेक १००
आदर्श ११४,१४०
आदर्शज्ञान ५,९७,१२१,१२४,१४०
आदर्शादिपञ्चाकार ५
आनन्द १०२
आप १४२
आयुध ११६
आयुधविशुद्धि ८३
आरोलिक् १२६
आर्यजाङ्गुलीयोग ११५
आवेश १०७
आवेशविधान १०८
आश्वास ४४
आश्वासदान १००

ओंकार १४२
इन्द्र ४५
ईर्ष्या ३,७,८,४३,७०
ईर्ष्यायमारि ७२,१२६,१२७
ईर्ष्यावज्र ११,१२,१२९
ईर्ष्यावज्रमन्त्र ९
ईर्ष्यावज्रयमारि १
ईशान ४५
उच्चाट ४८
उच्चाटन ३८, ४०, ६०, ६६
उच्छेद १३४
उत्पल १७
उदक ५५
उदकाभिषेक ९७
उद्वद्ध ६६, ६८, ७४
उद्वर्तन ७६
उपकेशिनी ११२
उपेक्षा ७२, १२४, १२५
उपेक्षात्मिका १२६
उषापति ११६
उष्ट्र १४१
ऊर्मिस्तम्भन ६४
ऊर्मिस्तम्भनविधि ६४
ऊषरमृत्तिका ३१
एकजटा १०९–१११
ओड्डियान १३८
कण्ठी १४२
कपाल ३२
कपोल १४, ९०
कपोलपक्ष ९०
कमण्डलु ११४
कमलाधिष्ठान १०२
करुणा ३५, ७२, १२४, १२५
करुणात्मिका १२६
कर्तिका ३२
कर्त्री ८३
कर्मखड्ग २१
कर्मडाकि ८४
कर्मप्रसरचक्र ४५
कर्मवज्र १६, २०
कर्मवज्रप्रयोग २०
कर्मवज्री २०
कर्षण १९
कलशाभिषेक १००
कल्पद्रुम १५
कल्पपाद ११९
कवच ३४
कान्तिपुर १४४
कामदेवी ११६
कामधातु १२२
कायवज्र १२८, १२९
कायवज्रविशोधन १००
कायवाक्चित्ताधिष्ठानमन्त्र १०
कार्मुक ११६
कालदारुण ८
कालभेद ६०
काश्मीर २४, ३९
कुङ्कुम २१, २४
कुण्ड ५८, ५९
कुण्डल १४१
कुण्डलिका ४६, ४८
कुन्तल ११०
कुबेर ४५
कुरुकुल्ला ११५, ११६
कुरुकुल्लामन्त्र ११५
कुलमेघ ७०
कुलाष्टक ११५
कुलिक ११५

कुलिश १७
कुश ६०
कूटागार ५, ८३, १२४, १३२, १३९
कृत्यानुष्ठान ११४, ११५
कृत्यानुष्ठानज्ञान ५, ९८, १२१, १२४, १४०
कृपाबल ३५
कृष्ट ३९
कृष्णयमारितन्त्र ३१, १४४
कृष्णयमारियोग ३१
केशिनी ११२
कोटिबाहु ७५
कोश ८३, ८४
कौशिक ५६
क्रमशीर्ष १५
क्रमशीर्षिका १५
क्रूरकर्म ४७
क्रोध १०९
खगमुख ५४, ११७
खड्ग ७, १६, ३२, ४३, ४४, ६९, ७०, ८५, १२७
खड्गधृक् १२७
खड्गपाणि १२
खड्गयमारि १, ३, १२७
खड्गवज्रमन्त्र ९
खड्गवज्री १७
खड्गिनी ८४
खनि १०५
खर १४१
खर्व १०९
खुरापट्टी १५
खेचरी १४२
गञ्जन ६४
गन्ध ८६, १४२
गन्धदान ९३
गर्भमण्डल ८५
गाव १४१
गुरु ८२, १३१
गुह्यकाधिपति १३८
गुह्यगौरी १४२
गुह्याभिषेक १०१
गेया ८४
गोकर्ण ८७
गोकुदहन १२७
गोकुदहनादिसेवन १३१
गौरिका ७
गौरी ८, ४३, ५०, ७२, ७८, १२८, १४३
घण्टा ९७, १२४
घण्टाभिषेक ४४, ९८
घण्टालक्षण १०४
घस्मरी १४२, १४३
चक्र १६, १७, ३०, ३२, ४१, ८६, ९०, १०५
चक्रद्वय २७, २९, ३१, ३७, ३९, ४१
चक्री १४१
चण्डालहण्डिका ३१
चण्डाली १४२, १४३
चतुरस्र ५८, १४०
चतुर्गीति १२१
चतुर्गीतिप्रयोग १२१
चतुर्देवी ७१, १४०
चतुर्द्वार ११३, १४०
चतुर्ब्रह्मविहार ८३, १२४
चतुर्ब्रह्मविहारभावना ५
चतुर्मन्त्र १९
चतुर्महाभूत १०८

चतुर्मार १२२, १४१
चतुर्यक्षी ११०
चतुर्योगिनीचिह्न ९३
चतुश्चक्र १०७,१४२
चतुष्कोण ८
चतुस्तोरण १४०
चतुःक्रोध ७१
चतुःशूल ८
चतुःस्थान १०७
चन्द्र ४५
चन्द्रभक्षण ४४
चन्द्रमण्डल २४,१२५
चन्द्रवज्रप्रयोग ५
चर्चिका ७,८,४३,५०
७२,७८,१२१,१२५
चर्यालक्षण ७३
चामर १४०
चित्तवज्र १०२,१२८
चिन्तामणि ११९
चिविकुण्डली १०९
चुन्द्रिका ११२
चौरकेश ५२
चौरी १४२,१४३
जप २४,२६,३०,३७,४१
जपमन्त्र २८
जम्भल १०९
जलमण्डल १२४
जलेन्द्र ११०
जाङ्गुलीसाधन ११४
जाप २८,८०
जापमाला ७९
जापलक्षण ७९
जितासिंह १४४
जिनजिक् १२६
ज्ञानचक्रप्रवेश १२९
ज्ञानमण्डल ९०,१२०,१२७,१४३
ज्ञानवज्र ४०
ज्ञानसूत्र ८८
ज्ञानाकार १३४
डोम्बिनी १४२
डोम्बी १४२,१४३
तक्षक ११५
तथागत २,७
तन्त्र १३२
तारणी ८५
तारा ११९
तुरङ्ग ८६
तेज १४२
तोय ४५
तोषण १९
त्रिकुलसमय ४४
त्रिकोण ५८
त्रिशरण ९४
त्रिशरणगमन १२४
त्रिशरणगाथा ९४
थाकसिंह १४४
दण्ड ७,१७,४३,६९,८४,८५,१०५
दण्डधृक् १२६
दण्डयमारि १,३,७५,१२७
दण्डवज्रमन्त्र ९
दशकलश ११
दिग्भेद ६०
दिव्यचक्षु १२९
दीप ९६
दीपदान ९३
दुर्मुख ८७
दूरश्रवण ८५

देवताचक्र १२९
देहिनी ११०
दैवतपट्टिका ९०
द्वय ३०
द्वयचक्र ३८
द्वादशारचक्र १५
द्वारपाल ८४,११०
द्वेष ३,४३,६०,१४२
द्वेषयमारि ७२,७४,८८,१२६,१२९
द्वेषरति १२६
द्वेषवज्रयमारि १
द्वेषानुस्मृति ७०
धर्म १४२
धर्मकाय २,५७
धर्मचक्र ११८,११९
धर्मोदय १३९
धातु १३३
धारणी १५
धारणीपट्टिका १४
धूप ८६
नलकूबर १३८
नस्य ८१
नाग ११५
नागाकर्षण ११५
नाडी १०२
नामाभिषेक ४४,९८
निर्माण १४२
निर्माणकाय ५७
निर्यूह १४,९०
निर्विकल्पक १३९
निष्पन्नमण्डल १४३
निःस्वभाव १३२
नीलीमिश्र ७६
नीलीरस ११५
नृकेश २०
नृतैल २०
नृत्या ८४
नृत्याभिनय ८७
नेपाल १४४
नैरात्मा १४२
नैरात्म्य १२१,१३३,१४१,१४२
नैऋंत ४५
पक्ष ११४
पक्षक १४
पङ्कज १७
पञ्चकामगुण १७
पञ्चक्रोध १४२
पञ्चगव्य ९२
पञ्चतथागत ९३,१४२
पञ्चद्रव्य २८
पञ्चबुद्ध १४१
पञ्चमहाभूत १३३,१३९
पञ्चमांस २१,६६,८०
पञ्चमुद्रा ११८,१४१,१४२
पञ्चयमारि ११
पञ्चरत्न ९१,९३
पञ्चरश्मि ६
पञ्चव्रीहि ९३
पञ्चशूक १०३,१०५,११९
पञ्चशूल १६,८३
पञ्चाकार १२१
पञ्चाकाराभिसम्बोधि ४,७०,८३,११५,
१२४,१३७
पञ्चाकाराभिसम्बोधिक्रम १४०
पञ्चाभिषेक ९८
पञ्चामृत १८,२१,८०,९५,
१२७,१४२
पञ्चोपचारपूजा ९३

पञ्चौषधि ९१,९३
पञ्जर ६,१३९
पञ्जरबन्धन १२४
पटल ११
पट्ट १४०
पताका १२४
पद्म १६,४३,६९,८४
८५,१२७
पद्मकर्कोटक ११५
पद्मडाकि ८४
पद्मधृक् १२७
पद्मपाणि ७
पद्मपुष्प १७
पद्मभाण्ड २७
पद्मयमारि १,३,१२७
पद्मवज्रमन्त्र ९
पद्माधिष्ठान १४२
पद्मावली १५
परम १०२,१३५
परमसमय ८८
परमाणु १३३
परमानन्द १०२
परमाश्व ८६
परमाश्वमन्त्र ८७
परशु ८७
पर्णशबरी ११२,११४
पल्लव ९१
पाण्डरा ८५,११९
पात्री १०५,१०६
पादलेप २१,६९
पाद्य ९२
पाद्यमन्त्र ६१
पानरत्न ५५
पापदेशना १२३
पारज ९०
पाश ८७
पिशुन ३,७,८,२०,४३
पिशुनयमारि ७२,१२७,१२९
पिशुनवज्र १२,१२८
पिशुनवज्रमन्त्र ९
पिशुनवज्रयमारि १
पिशुनानुस्मृति ७०
पुक्कसी १११,१४२,१४३
पुक्काकर्षण १११
पुण्य १२३
पुण्यपरिणामना १२४
पुण्यानुमोदना १२४
पुत्तलि ६४
पुरुष ७८
पुष्ट १०,५८
पुष्टि २५,४८,४९,९६
पुष्प ८६,११५
पुष्पदान ९३
पुष्पपात ९६
पुष्पपातविधि ९७
पूजा २३,१२३
पूजागीत ७८
पूर्वसेवा ४०,४१,८०
पृथ्वी १४२
पृथ्वीमण्डल २९,१२४
पौष्टिक १९,२०,२४,३९,५८
५९,६०,६२
पौष्टिकसमय २५
प्रज्ञा २,५२
प्रज्ञाज्ञानाभिषेक १०२
प्रज्ञाधृक् १२६
प्रज्ञान्तक ११९
प्रज्ञापारमिता ५२,१३०,१३९

प्रज्ञोपायाभिषेक ४४
प्रतापसिंह १४४
प्रत्यवेक्षणा ११४,११५
प्रत्यवेक्षणाज्ञान ५,९८,१११,१२४,१४०
प्रत्यालीढ ३३
प्रदक्षिणा ८२
प्राकार ६
प्राकारक १२४,१३९
प्रेरण ३९,४९
बन्धन १९,१३९
बलि ८१
बलिविधान ४४
बीज ४८,४९
बीजाक्षर १२५
बुद्धक्षेत्र ३५
बुद्धडाकि ८४
बुद्धबिम्ब १२१
बुद्धबोधि ११८
बुभुक्षितपक्ष ३२
बोधि १२,१३२,१३७
बोधिचित्त १३,१२२,१३९
बोधिचित्तोत्पाद १२४
ब्रह्म ४५
भगवान् २
भद्रघट १५
भाग्नरसिंह १४४
भाव १३२,१३४
भावना १३२
भूचरी १४२
भूमि ६
भूमिवाड १२४
भृकुटि ११४
मकरकेतु ११६
मकरमुख १४
मञ्जुवज्र १११
मञ्जुवज्रसाधन ११३
मण्डल १३,१६-१८
४४,५६,७२,९०,९४
९६,१००,१११,१३०
मण्डलचक्रपूजागीत ७८
मण्डलप्रवेशविधि ९७
मण्डलागार ५६
मण्डलिका ४५,४६
मण्डलेश १२,१९,७०,१२९
मण्डलेश्वर ४,१०,१९,१२७
मदनसुन्दरी ११६
मदनोत्सुक ११६
मदिराकृष्टि ५२
मद्याकर्षणवज्र ५१
मद्याकृष्टि ५०
मन्त्र ४४,४६,८६,११०
११४,११७
मन्त्रचतुष्टय १२७
मन्त्रचर्यानय ९४
मन्त्रमहायान १२३
महाकरुणा १३६
महागुह्यक १३८
महार्चिका १३५
महातन्त्रराज १३८
महातैल ७५
महाद्वेषकुलमन्त्र ८
महाद्वेषतनु १०
महानील १०९
महापद्म ३२,११५
महापुरुषसमय ७८
महापूजा १२९
महाभूपरिग्रहसमय ८९
महाभृङ्ग ३२

महामण्डल ८८
महामांस ७६
महामुदिता १३६
महामुद्रा ७४,९९
महामूत्र ७६
महामैत्री १३५
महामोक्षपुर १३९
महायमारिक्रोध १३७
महायान ९४
महायोग १२३,१२९
महाराग १४०
महावज्र ३२
महावज्रधर १८
महावज्रप्रार्थनासमय ८९
महावज्रामृत ७६
महावश्यसमय २७,४२
महाविद्वेषसमय ३७
महावेतालसाधन ६६
महासुख १३३,१३५,१४२
महासेक ४४
महास्तम्भनसमय ३०
महाहृदय ९०
महाहेरुकसाधन ११८
महिषवज्र १९
महोच्चाटनसमय ३८
महोपेक्षा १३६
माणिक्य १५
माण्डलेय २,४,६,९,१०,१९,४३,११३
१२०,१२१,१२५,१२७
माण्डलेयदेवता ८३,१२७
मात्सर्य १४२
मामकी ८५,११९
मायूरी ११४
मायोपम १४१
मार ५,८
मारचतुष्टय १४०
मारण ३५,३९,४०,४९,५८
मारपराजय १३७
मारीची ११२
मारुतमण्डल ३८
मार्तण्ड ९०
माल्या ८४
माहेन्द्र ८२
माहेन्द्रमण्डल २९,३०,११५,१३९
मुकुटाभिषेक ४४,५५,९७
मुकुन्द ८७
मुदिता ७२,१२४–१२६
मुद्गर १७,१९,४३,६९,८४–
८६,११०,११३,११५
मुद्गरयमारि १,३,१२७
मुद्गररति १२६
मुद्रा ८६,१००
मुद्रान्यास १०५
मुद्राप्रयोग ४३
मुद्रिका १०५
मुरज ८७
मुशल ८७
मूक ४८
मेखला १०५,१४१
मैत्री ७२,१२४–१२६
मैत्रेय १०६
मोह ३,६,७,४३,१४२
मोहयमारि ६,७२,८८,१२६,१२७
मोहवज्र ८,१०,१२,१९,२०,१२८
मोहवज्रमन्त्र ९
मोहवज्रयमारि १,६

मोहरति	१२६
मोहानुस्मृति	७०
मौलिसेक	४४
यक्षिणी	११०
यन्त्र	२३,२६,२७,४१,१३२
यम	४५
यमघ्न	६,७,१३,२५,५६,११६
यमघ्नमण्डल	१८
यममारिप्रयोग	४०,८०
यमान्तक	८,८८,१२०
यमान्तकयोग	११०
यमारि	१०,१२,१३,४३
	६३,६४,८०,८२
यमारितन्त्र	१०६
यमारियोग	३८,६३,८२
योग	८२,१२३,१२४
योगिनीचतुष्टय	१२५
योगीश्वरीसिद्धि	५३
रक्त	२१
रक्ताकृष्टि	५०
रक्षा	२३,४९,१३९
रक्षाचक्र	५६
रजोमण्डल	९१
रत्नडाकि	८४
रति	११६
रत्न	१६
रत्नत्रय	९४
रत्नधृक्	१२६
रत्नपट्टिका	१४,९०
रत्नवज्र	१२,१२८
रत्नसम्भव	४३,८१,१२७
रविमण्डल	१४१
रस	१४२
राग	३,७,४३,१४२

रागयमारि	२६,७२,१२६,१२७
रागरति	१२६
रागवज्र	८,११,१२,२०,१२९
रागवज्रमन्त्र	९
रागवज्रयमारि	१
रागवज्री	२०
रागानुस्मृति	७०
रुचक	१४१
रूप	१४२
रूपधातु	१२२
रूपवज्र	१४२
लक्ष्मीनरसिंह	१४४
ललित	१०९
लास्या	८४
लेपचित्र	१०८
लोचन	८५,११९,१४२
वकुलीहारपट्टिका	१५
वज्र	२,६,१२,१६,५१,१०२,१०३
	१०५,११९,१२१,१३३
वज्रकाय	१३
वज्रगौरी	१,३,५३,७९,१२२
	१२५–१२७
वज्रगौरीमन्त्र	९
वज्रघण्टा	४४,५५,१००
वज्रघण्टाभिषेक	५५,९८
वज्रघ्राण	१३
वज्रचक्षु	१३,१२७
वज्रचर्चिका	१,३,११६,१२२
	१२५–१२७
वज्रचर्चिकामन्त्र	९,५१
वज्रचित्त	१३
वज्रजिह्वा	१३
वज्रडाकिनी	८५,१४२
वज्रडाकिनीसाधन	८३,८५

वज्रद्वय	८०	वज्राचार्य	४४
वज्रधर	२२,४३,५७,१२१	वज्राधिष्ठान	१०२,१४३
वज्रधात्वीश्वरी	१०२	वज्रानङ्ग	११६,११७
वज्रपञ्जर	७,८३,११५,१३९	वज्रामृतोदक	९५
वज्रपाणि	४,१३७,१३८	वज्राभिषेक	४४,५५,९८
वज्रपाताल	८७	वज्रावली	१४,१५
वज्रपातालयोग	८६	वज्रावेशसमय	१०६
वज्रपातालसाधन	८५	वज्री	१४२
वज्रप्राकार	५,७,८३,११५,१३९	वडवा	८६
वज्रमण्डल	७४	वरुण	४५
वज्रमार्ग	५४	वर्तुल	५८
वज्रमाला	६	वर्षापण	६३
वज्रयन्त्रमन्त्रतन्त्रमारणादिसमय	३६	वश	१९,५८,७६
वज्रयान	१३५	वशी	४८
वज्रयोषित्	१	वश्य	११,१६,२०,२७,२८,३९,
वज्ररति	१२६		४१,४९,५८,५९,९६
वज्ररत्न	१५	वश्यमन्त्र	२३
वज्रलक्षण	१०४	वश्यविधान	२६
वज्रवाक्	१३	वसन्त	११६
वज्रवाराही	१,३,७८,१२२,१२४–१२८	वसुधारा	४५,१०९,११२
वज्रवाराहीमन्त्र	५१	वाक्स्तम्भन	३०
वज्रवितान	१४	वाक्स्तम्भनसमय	३१
वज्रव्रत	४४,९९	वाग्वज्र	१२,१२९
वज्रव्रतदान	९९	वाग्वज्रविशोधन	१०१
वज्रशृङ्खला	११४	वाट	६
वज्रश्रोत	१३	वाद्य	८७
वज्रसत्त्व	४,६,५७,८३,१२१,१२४	वायव्य	१३९
वज्रसत्त्वनिष्पत्ति	१२३	वायु	४५,८२
वज्रसत्त्वव्रतापत्ति	११८	वायुधातु	१४२
वज्रसरस्वती	१,३,९,७९,१२२,	वायुमण्डल	१८,१२४,१२७
	१२५–१२८	वाराही	७,८,४३,५०,७२,७४,७८
वज्रसरस्वतीमन्त्र	५२	वारुण	८२
वज्रसूत्र	१४०	वारुणमण्डल	१३९
वज्राङ्कुश	११०	वासुकि	११५

वांश ८७
विचित्र १०२
विज्ञान १३३
वितान १४०
विदर्भण २५
विद्या १४०
विद्याभिषेक ९८
विद्याव्रत १०१
विद्वेष ३७,३९,४८
विद्वेषण ४०
विपाक १०२
विपारद ८१
विभीतक ६६
विमर्द १०२
विरम १०२
विरमानन्द १०२
विलक्षण १०२
विश्ववज्र ६,७,२९,८३,१०३,१२४
विह्वला ११२
वीरयोगिनी १४२
वेतालसाधन ६८
वेताली १४२,१४३
वेदी ५९,९०
वेमचित्रिणी ४५
वेशन १९
वैरोचन ४३,६६,८१,८८,१२७
व्याकरण १००
व्रत १३२
शङ्खपाल ११५
शतबाहु ७४
शबरी १४२,१४३
शब्द १४२
शाखा ११४
शाखोटक ६६
शान्त ४०,४९,५८
शान्ति ३१,४७,४८,९६
शान्तिक १६,२०-२४,३९,५८-६०,६२,६५,६७
शाश्वत १३४
शिरःशूल ६५
शिष्य १३१
शिष्यगुण १३१
शिष्याधिवासन ९५
शीत्कारमन्त्र ११७
शुक्राकृष्टि ५०
शुम्भवज्रक ८५
शूकचतुष्टय १५
शून्यताज्ञान १३९
शून्यताबोधि ५
शून्यताभावना ८३
शून्यमन्त्र ९७
शूल ६५
श्व १४१
श्रीयमारितन्त्र १३२
श्रुवा १०५,१०६
षडङ्गयोग १२९
षाडव ७३,१२१
षोडशशून्यता १४२
सत्यचतुष्टय १४२
सप्तबोध्यङ्ग १४२
सप्तविधानुत्तरपूजा ५,८३,१२३,१२४,१२८
सप्तसप्तिक २०
सप्तिराजमण्डल ८६
सप्तिराज्ञी ८६
समता ११४
समताज्ञान ९७,१२१,१२४,१४०
समय १३,१८,४४,१३०,१३१
समयमण्डल १२७

समयसाधन ७५
समयाक्षर ९०
समयोदकदान ९६
समाज १३२
समाधि ४,६,८,५१–५४,७८,१३७
समुद्रमृत्तिका ६३
समुद्रोर्मिस्तम्भन ६४
सम्पुट ४०
सम्भोग १४२
सरस्वती ७,८,४३,५०,७२,७८
सर्वकुण्डलि ११९
सर्वभूत ४५
सर्वशोधनमुद्रा ६०
सहजसंबोधि १०३
सहजानन्द १०२,१३२
संभोग ५७,७८
संवर ४४
साध्य ३३,३५,४१,४७
सार्वकर्मिक ११
सुन्दरी ११०,११२
सुमुख ८७
सुरतकाङ्क्षिणी ११७
सुविशुद्धधर्मधातु ११४,११५
सुविद्धधर्मधातुज्ञान ५,९८,१२१,१२४,१४०
सूत्रपात ८८
सूर्यमण्डल ३३,७१,७४,८३
सोम ९०
सौम्य १०९
स्कन्ध १४
स्तम्भन २९,३९
स्तुति १२९
स्तोत्रराज १८,२२,४३
स्प्रष्टव्य १४२
स्फोटा ११४
स्रक् १४०
स्रग्दाम ९०
स्वच्छमण्डल १९
स्वन्तपट्टी १५
स्वप्नमायोपम १३२
स्वमुद्रा ९०
स्वयम्भुकुसुमपान ७६
स्वयम्भू २७
स्वर्णा १५
हडिनिगड ३४
हयग्रीव ११९
हरिण १५
हस्ति १४१
हस्तिकर्ण ८७
हार १५,१२४,१४०
हारार्धहार ९०
हारार्धहारपट्टिका १४,९०
हाहाकार ४५
हूँकृति १४२
हृद्बीज ७२
हृद्बीजरोपण ५
हेरुक ११८
हेवज्रतन्त्र १३८
होम ५८,५९

༄། །གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད་དང་དེའི་
དཀའ་འགྲེལ་རིན་པོ་ཆེའི་ཕྲེང་བ་
བཞུགས་སོ། །

[भोट खण्ड]

གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོ་འི་རྒྱུད།

ལེའུ་དང་པོ།

༄༅། །རྒྱ་གར་སྐད་དུ། སརྦཏཐཱགཏཀཱཡཝཱཀྐཙིཏྟཏྲིཔྲཛྙཱཡམཎྜིཏནཱཊྚ'། བོད་སྐད་དུ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་རྒྱུད། འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །འདི་སྐད་བདག་གིས་ཐོས་པ་དུས་གཅིག་ན།

གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོ་འི་རྒྱུད་ཀྱི་དཀའ་འགྲེལ་རིན་པོ་ཆེའི་ཕྲེང་བ།

༄༅། །རྒྱ་གར་སྐད་དུ། ཀྲིཔྲཛྙཱཡམཎྜིཏནཱཊྚསཾབཱཧཙཀྲནཱམ། བོད་སྐད་དུ། གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད་ཀྱི་དཀའ་འགྲེལ་རིན་པོ་ཆེའི་ཕྲེང་བ་ཞེས་བྱ་བ། དཔལ་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།། བཅོམ་ལྡན་འདས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

དཔལ་ལྡན་གཤིན་རྗེ་གཤེད་པོ་ཡོན་ཏན་མ་ལུས་རབ་ཏུ་འབྱུངས། །
འོད་ཟེར་སྟོན་པོ་འཇིག་པའི་དུས་ཀྱི་ཆར་སྤྲིན་གཞོན་ནུ་སྟེ། །
ཞལ་གསུམ་པ་ལ་རྡོ་རྗེ་རལ་གྲི་འཛིན་ཅིང་གྲི་གུག་ངཅས། །
འཁོར་ལོ་རྒྱ་སྐྱེས་ཐོད་པ་བསྣམས་པ་མགོ་བོས་[2] ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

འདི་སྐད་བདག་གིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི། གསུང་རབ་རྣམས་ཀྱི་ནི་ཀུན་གྱི་ཡང་དག་དང་པོ་ཡིན་ལ། སྨྲད་པ་པོ་ནི་རྗེས་སུ་སྟོན་པའི་ཚིག་གོ།

༡ སེ་ཐྲ་ཐ༥ནྡྲྀནྡུམ། ༢ ཀྱུ་དཔེར་༠ (མཎྜ)ཡིད་ཀྱིས།

བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་རྡོ་རྗེའི་བཙུན་མོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བྷ་ག་རྣམས་ལ་བཞུགས་སོ། གཏི་སྨུག་རྡོ་རྗེའི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དང་། ཕྲ་མ་རྡོ་རྗེ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དང་། འདོད་ཆགས་

གང་གི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདའ་བའི་གནས་སྐབས་སུ་གསུངས་པ་ལས། དངོས་སུ་ནི་བྱས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཇི་ལྟར་ཡང་དག་པར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་དང་། ཁྲིད་རྣམས་ནི་སྟོན་པ་པོའི་དབང་མེད་པ་ལས་[1]དེ་ངའི་ཆོས་རྣམས་ནི་འདི་སྐད་བདག་གིས་ཐོས་པ་ཞེས་པས་བརྩམས་ཤིག་པས་སོ། །དེ་ལ་འདི་སྐད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་གང་ཇི་སྐད་དུ་རྒྱུད་ཐམས་ཅད་ལས་གསུངས་པ་དེ་ལྟ་བུ་ཉིད་དེ་[2]དེ་བཞིན་དུ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །བདག་གིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་མངོན་སུམ་དུ་ཐོས་པ་སྟེ། སྟོན་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཉིད་ལས་བདག་གིས་ཐོས་ཀྱི་གཅིག་ནས་གཅིག་ཏུ་བརྒྱུད་ནས་འོངས་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །གང་གི་ཚེ་ཐོས་ཤིང་གསུངས་ཤེ་ན། སམཡ་ནི་དུས་སོ། །གང་གི་ཚེ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཐུབ་པ་ཆེན་པོའི་བྱང་ཆུབ་ལ་བར་གཅོད་པའི་བདུད་ཉེ་བར་ལྷགས་པར་གྱུར་པ་དེའི་ཚེ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་སྐད་དུ་དེ་ཉིད་ཀྱི་ལེའུ་བཅོ་བརྒྱད་པའི་གདམས་རྒྱུད་བརྗོད་པ་ལས་[3]འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ཡང་ཅི་དང་ཅེ་ཞེ་ན། རྒྱུད་མ་ལུས་པའི་ཚིག་ཐོས་ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་བཅོམ་པ་དང་ལྡན་པས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཞེས་པ་[4] སྟེ།

---

༡ སྣ་༠ པེ་༠ སྟོན་པའི་དབང་བྱེད་པ་ལས། ༢ སྣ་༠ དེ་མི་འདུག ༣ སྣ་༠ པེ་༠ ཀ། ༤ སྣ་༠ པེ་༠ པ་མི་འདུག

རྡོ་རྗེ་གཤིན་རྗེའི་[1]གཤེད་དང་། ཕྲག་དོག་རྡོ་རྗེ་གཤིན་རྗེའི་གཤེད་དང་། ཞེ་སྡང་རྡོ་རྗེའི་གཤིན་རྗེའི་གཤེད་དང་། གཏོ་བ་གཤིན་རྗེའི་གཤེད་དང་། དབྱུག་པ་གཤིན་རྗེའི་གཤེད་དང་། པདྨ་གཤིན་རྗེའི་གཤེད་དང་། རལ་གྲི་གཤིན་རྗེའི་གཤེད་དང་། མཚམས་རྣམས་[2]སུ་རྡོ་རྗེ་ཙརྩིཀཱ་དང་། རྡོ་རྗེ་

བདུད་རྣམས་བཞི་པོ་འཇོམས་པས་ན། །
འཇོམས་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་སུ་བརྗོད། །
ཤེས་རབ་ཀྱིས་ནི་ཉོན་མོངས་འཇོམས། །
དེ་ཕྱིར་ཤེས་རབ་བཅོམ་ལྡན་བརྗོད། །

ཅེས་པའི་ཚིག་ལས་སྣང་བ་མེད་པ་གསལ་བ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་… བཞིན་གྱི་ཡེ་ཤེས་ནི་བཅོམ་པ་སྟེ། དེ་དང་ལྡན་པ་ནི་ཆོས་ཀྱི་སྐུའོ། །དེ་དང་དེར་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ནི་ལྷའི་འཁོར་ལོ་ལ་དབང་བ་སྟེ། གང་གིས་དེ་ནི་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་གཟུགས་སུ་རྫོགས་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ[3]། །བཞུགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཞན་དུ་འབྲེལ་ཏོ། གང་དུ་བཞུགས་ཤེ་ན་གསུངས་པ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་ནི་མི་བསྐྱོད་པ་ལ་སོགས་པ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་སོགས་པ་སོ་སོར་མངོན་པར་སྦྱོར་བ་བྱ་སྟེ། སྣ་ཚོགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་སྣ་ཚོགས་པའི་ས་བོན་གྱི་ཡི་གེའི་རང་བཞིན་ནོ།། རྡོ་རྗེ་ནི་མི་ཕྱེད་པ་སྟེ[4] དཀྱིལ་འཁོར་བའི་ལྷའི་སྐྱེས་བུའོ། །བཙུན་མོ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་མ་རྣམས་ཏེ་ལྷ་མོ་རྣམས་སོ། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དང་རྡོ་རྗེ་

༡ པ་◦རྡོ་◦གཉིས་རྗེའི་ཞེས་པའི་ཕྱི་ཚང་མ་ལ་མི་འདུག ༢ རྒྱ་དཔེར་◦མཚམས་རྣམས་སུ་འདི་མི་འདུག ༣ རྒྱ་དཔེར་◦འདིའི་མཚམས་སུ་ཚིག་ཁ་ཤས་མང་། ༤ སྟེ་ ཏེ་ པ་ན་སྟེ།

ཕག་མོ་དང་། རྡོ་རྗེ་དབྱིངས་ཅན་མ་དང་། རྡོ་རྗེ་གཽ་རཱི་མ་རྣམས་མཚམས་སྲུའོ། །དེ་དག་ལ་སོགས་ཏེ་གཤིན་རྗེའི་གཤེད་ཀྱི་ཚོགས་ཆེན་པོ་དང་། ཐབས་ཅིག་ཏུ་བཞུགས་སོ[༡]། ༡ །

བཙུན་མོ་དང་ཞེས་པ་སྟེ་ཕན་ཚུན་བསྡུ་བའོ། །དེའི་རྗེས་ལ་བླ་གའི་སྐྱེས་ལྡན་ཅིག་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྐུ་ནི་སྔོན་དུ་སོང་བའི་ཚིག་སྟེ་བསྐུར་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་ན་རྡོ་རྗེ་དང་བཙུན་མོ་ཞེས་བྱ[༢]་བ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྐུ་དང་ལྡན་ཅིག་སྟེ་ཐ་དད་དུའོ། །ཕྱི་ནས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐྱེས་ལྡན་ཅིག་ཏུ་ཁྱད་པར་བསྡུས་པའོ། །དེའི་རྗེས་ལ་བླ་གའི་སྐྱེས་ལྡན་ཅིག་པ་སྟེ་དེའི་སྐྱེས་བུའི་དྲུག་པའོ། །དེ་ལ་བླ་ག་རྣམས་ལ་ཞེས་པ[༣]་ནི་སྐྱེ་གནས་ཀྱི་ཕྱིར་རོ[༤] ། །དེ་དང་དེར་ལྷའི་འཁོར་ལོ་རྫོགས་པ་ལ་ལྟོས་པས་ན་དེ་དང་དེ་རྣམས་རྡོ་རྗེ·······འཆང་དང་འཁྲུད་པའི་པདྨའི་རང་བཞིན་དུའོ། །བཞུགས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་དང་སྦྱོར་བ་ལས་བྱུང་བའི་ཚོགས་ཀྱིས་རོལ་ནས་གང་དུ་དངོས་སུ་མ་གྲུབ་པ···དེའི་ཚེ་བླ་ག་རྣམས་ལ་ཞེས་པ་ནི་སྐྱེད་པར་བྱེད་པའི་གནས་ཀྱི་ཕྱིར་ཏེ། ས·····བོན་དེ་དང་དེ་རྣམས་སོ། །བཞུགས་ཞེས་པ་ནི་གནས་པའོ། །

གང་དུ་རང་དང་[༥]འདྲ་བའི་པདྨར་གནས་པའི་རྡོ་རྗེས[༦]་རྡོ་རྗེ·········སེམས་དཔའ་བསྐྱེད་ནས་ལྷའི་འཁོར་ལོ་ཉེ་བར་བསྟན་པ་གསུངས་པ་ནི་གཏྲི····ཧྲུག་རྡོ་རྗེ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། གཏྲི་ཧྲུག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ལ་སོགས་པའི་ས་བོན་རྣམས་ཀྱིས་དེ་ལྟ་ཅིག་ཅེས་པའི་དོན·········

༡ རྒྱ་དཔེར་° ཐབས་ཅིག་ཏུ་བཞུགས་སོ་མི་འདུག ༢ སྣར་° བྱས། ༣ སྣར་° ཁྱད་པར་དུ་བསྡུ་བའོ། ༤ སྣར་° སྡེ་° ཞེ་ན། ༥ སྣར་° ༼ང་མི་འདུག ༦ སྣར་° སྡེ་° རྡོ་རྗེས་མི་འདུག

དོ། །འབྲས་བུ་ལས་གཞན་མ་ཡིན་པར་ཉེ་བར་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གཏི་མུག་
གཤིན་རྗེ་གཤེད་ལ་སོགས་པའི་རྒྱུད་ས་བོན་རྣམས་ལ་འབྲས་བུའི་མིང་གིས་
བསྟན་དོ། །དེ་ལ་མི་ཕྱེད་པའི་གཏི་མུག་ནི་གཏི་མུག་རྡོ་རྗེ་སྟེ། དེ་ཉིད་ཆེ་
བ་དང་[1] དོན་མེད་པའི་རྒྱུར་[2] གྱུར་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཤིན་རྗེ་དང་འདྲ་བའི་
གཤིན་རྗེ་སྟེ། དེའི་དགྲ་ནི་དེ་དག་ཟློག་པར་བྱེད་པ་ཅན་ནོ། །གཟུང་བ་དང་
འཛིན་པ་ནི་རྣམ་པར་དཔྱད་པས་མི་བཟོད་པས་ན་རང་དང་གཞན་གྱི་འགྲོ་བའི་
རང་བཞིན་སྐད་ཅིག་སོ་སོར་འཇུན་པར་བལྟས་པ་ལ་གཏི་མུག་ཡང་དག་པར་
ཟད་པར་བྱེད་པའོ། །དང་གི་ཡི་གེ་ནི་ཕན་ཚུན་དུ་ལྟོས་ནས་བསྡུ་བའོ། །དེ་
བཞིན་དུ་ཕྲ་མ་རྡོ་རྗེ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ལ་སོགས་པ་ཚིག་བཞི་པོ་འདི་ཡང་སྟེ་
མི་ཕྱེད་པ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་དུ་རྟོགས་པར་བྱེད་པའོ། །དེ་ལ་བདག་
མེད་པ་ལ་བདག་ཏུ་འཛིན་པ་ནི་གཏི་མུག་གོ །གཞན་དང་རབ་ཏུ་འབྱེད་པའི་
ཚིག་ནི་ཕྲ་མའོ། །ཚོགས་ཐམས་ཅད་ལ་ཞེན་པ་ནི་ཆགས་པའོ། །གཞན་གྱི་
ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ལ་མི་བཟོད་པ་ནི་ཕྲག་དོག་གོ[3] །

ཐོ་བ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ། ཐོ་བ་དང་འདྲ་བ་སྟེ་
འཁོར་བ་མ་སྟོངས་ཀྱི་བར་དུ་སེམས་ཅན་མ་ལུས་པར་སོན་པའི་འཇིག་ཚོགས་
སུ་ལྟ་བའི་བདུན་པ་ཆེན་པོ་ཐོ་བས་འཇོམས་པར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཤིན་
རྗེ་གཤེད་ནི་གཤིན་རྗེའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་དགྲ་ཞེས་བྱ་བ[4] འཇིག་ཚོགས་སུ་ལྟ

[1] སྣ་༠ ཞེ་༠ དང་མི་འདུག [2] སྣ་༠ སྒྱུར། [3] རྒྱ་དཔེར་༠ (ཨརྠཱ་ནཱམྲྀདྡྷི་ཕཿ)
ཕན་ཚུན་མི་དགའ་བ་ནི་ཞེ་སྡང་ངོ་ཞེས་ཀྱང་འདུག [4] སྣ་༠ ཞེས་པ།

བ་དེ་ཉིད་འཇོམས་པའི་རྒྱུར་གྱུར་བའི་ཕྱིར་པོ་བ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཕྱི་ནས་ཀྱི་ཚིག་གསུམ་པོ་དག་ལ་ཡང་དེ་ཉིད་དུ་ལས་འཛིན་པར……བསྟུའོ། །དབྱིག་པ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དབྱིག་པ་དང་འདྲ་བས་ཏེ་འཁོར་བ་མ་སྟོངས་ཀྱི་བར་དུ་སེམས་ཅན་མ་ལུས་པ་ལ་གནས་པའི་མཐར……འཛིན་པའི་ལྟ་བའི་སྐྱོན་འབྱིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནི་གཤིན་རྗེའི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་དགྲ་སྟེ་ལྟ་བ་དེ་ཉིད་འཇོམས་པའི་རྒྱུར་གྱུར་པས་ན……དབྱིག་པ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དོ། །པདྨ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དང་ཞེས་པ་ནི་པདྨ་དང་འདྲ་བས་པདྨ་སྟེ། ལོག་པར་ལྟ་བའི་འདམ་གྱིས་མ་གོས་པའི་ཕྱིར་དང་ལོག་པར་ལྟ་བའི་གཤིན་རྗེའི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་དགྲའི་ཕྱིར་པདྨ་གཤིན་རྗེ……གཤེད་དོ། །རལ་གྲི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་རལ་གྲི་དང་འདྲ……བས་རལ་གྲི་སྟེ། ལྟ་བ་མཆོག་ཏུ་འཛིན་པའི་དགྲ་གཅོད་པས་སོ། །གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནི་ལྟ་བ་མཆོག་ཏུ་འཛིན་པ་དེ་ཉིད་གཤིན་རྗེའི་བདག་ཉིད་ཅན་ཏེ[1]……དེའི་དགྲའི་ཕྱིར་རལ་གྲི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དོ། །

རྡོ་རྗེ་ཙཀྲིཀ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་ཙཀྲིཀས་ཏེ་གསུམ་པའི་དོན་ལ་དང……པོའོ། །དེ་བཞིན་ཕྱི་མ་དག་ལ་ཡང་ངོ་། །དེ་ལ་རྡོ་རྗེ་ནི་རྡོ་རྗེ་དང་འདྲ་བ་སྟེ་དོན་མེད་པར་བྱུང་བ་དང་། ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་པ་ལས་སོ། །དེའི་ཙཀྲིཀ་ནི་གཅིག་དང་དུ་མ་དང་བྲལ་བའི་སྦྱོར་བས་རྣམ་པར་དཔྱོད་པ་དང་གཙོ་བོ[2] ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུའོ། །རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་དང་འདྲ་བས་རྡོ་རྗེ་

༡ སྣར་ ༠ ཏེ་མི་འདུག ༢ ཅོ་དཔེར་ ༠ (སྣར) འཛོམས།

སྡེ་སྣ་[1]ཀ་ལས་ཀྱི་སློབ་པ་དེ་[2]མ་བསླབས་སོ། །དེའི་ཨ་ནི་ཐམས་ཅད་ཡིན་ཞིང་རྟོགས་པའོ། །ཏ་ནི་རབ་ཏུ་བྱེད་པ་གཞན་དུ་བལྟས་ཏེ་ཞེས་པས་ཏའོ།། པི་པི་ལིང་ལ་སོགས་པའི་ཕྱིར་ན་ངིཔའོ[3]། །རྡོ་རྗེ་དབྱངས་ཅན་མ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མི་ཕྱེད་པའི་ཡེ་ཤེས་དེ་ཉིད་དབྱངས[4] ཏེ་ཤེས་ཏའི་སློབ་པའི་རྒྱུན་སེལ……བས་ནའོ། །ཅན་ནི་དེ་དང་ལྡན་པའོ། །རྡོ་རྗེ་ག་རྦི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་རྡོ་རྗེ་མི་ཕྱེད་པའོ། །ག་རྦི་ནི་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་ལྟ་བ་སྡེ་སྐྱེ་བའི་སློབ་པའི་གཉེན་པོ་འི……ཕྱིར་རོ། །དེ་ཡིན་ཞིང་འཛིན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ནི་རྡོ་རྗེ་ག་རྦའོ། །རྡོ་རྗེ་བ་རི་སྡེ་རང་གི་དོན་གྱི་སྐྱོན་ནོ། །

གླུར་[5] ཞེས་པ་ནི་ནང་[6]གི་རིམ་པའི་མི་དང་བདེན་བྲལ་ལ་སོགས……པའི་མཚམས་རྣམས་སུའོ། །གླུ་རྣམས་ཀྱིས་ཉེ་བར་མཚོན་ནས་ནང་གི་འཕར་མའི་ཤར་དང་ལྷོ་ལ་སོགས་པའི་ཕྱོགས་རྣམས་སྲུ་གད་སྲུག་ག་ཤིན་རྗེ་ག་ཤེད་ལ……སོགས་པ་རྣམས་སོ། །ཞེ་སྡང་ག་ཤིན་རྗེ་ག་ཤེད་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དབུས……སུའོ། །ཐོ་བ་ག་ཤིན་རྗེ་ག་ཤེད་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ནི་ཕྱི་རོལ་གྱི་འཕར་མའི་ཤར་དང་ལྷོ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་སུའོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཕྱི་རོལ་གྱི་གླུ་[7]རྣམས་སུ་ཐོད་པ་བཞི་པོ་རྣམས་ཀྱང་སྡེ་ཕྱིས་རྟོགས་པར་བྱའོ། །

དེ་ལྟ་བུ་ལ་སོགས་པ་[8]ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་རྣམས་ནི་གཙོ་བོ་སྡེ་དེ་ལ……སོགས་པ་དང་འདུས་པའོ། །དེ་རེ་རེ་ལས་རང་རང་གི་ས་བོན་རྣམས་ལས་

---

༡ རྒྱ་དཔེར། ([illegible]) རྡོ་རྗེ་ནི་རྡོ་རྗེ་དོན་མེད་པར་བྱུང་བ་དང་། སྡེ། སྣ་ཀ་མི་འདུག སྣ། རྡོ་རྗེ་ལྟ་བ་ནི་ཡས་ཀྱི་སློབ་པ་དེ་ལ་བསླབས་སོ། ༢ སྡེ། དེ་ལ། ༣ སྡེ། ཉིང་བའོ། ༤ རྒྱ་དཔེར། སར་སྭ་ཏཱི་མཚོ། ༥ སྣ། སྡེ། གླུ། ༦ སྣ། སྡེ། ནང་། ༧ སྣ། སྡེ། གླུ། ༨ སྣ། སྡེ། བ་མི་འདུག

དེ་ནས་[1]ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་པོ་ལ་གསོལ་བ་བཏབ་པ་དང་། དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་པོས་[2]བདུད་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་འཇོམས་པའི་རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་འདི་[3]ཉིད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་རྡོ་རྗེ་ངེས་པར་བཏོན་ཏོ། ༢ །

མཐའ་ཡས་པར་སྤྲོ་བ་དང་སྡུ་བ་རྣམས་ཀྱིས་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་ཡང་བཞུགས་སོ་ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲར་གྱི་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་བླངས་ཏེ་འབྲེལ་ཏོ། །དེའི་དོན་ཡང་བདེ་བ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པས་[4] དེ་རྣམས་ཐབས་ཅིག་ཏུ་བཞུགས་པའོ། ། དེ་རྣམས་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་གཅིག་ལ་ལྟོས་པའི་དབང་དུ་བྱས་པ་ཡིན་[5]ལ་གཞན་དག་ནི་གཞན་དག་ལ་ལྟོས་ནས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བདག་པོ་དང་དཀྱིལ་འཁོར་པ་ཡང་སོ་སོ་ཉིད་དུ་རྟོགས་པར་བྱའོ། །དེ་དག་གི་དབྱེ་བས་ནི་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་དབྱེ་བ་ཡང་ངོ་། ༡ །

ཇི་སྐད་གསུངས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལྷ་རྣམས་ཀྱི་ས་བོན་ལས་བསྐྱེད་པའི་ཕྱིར་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པ་རྣམ་པ་ལྔ་བསྟན་པར་གསུངས་པ། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དེ་ནས་ཡང་ཞེས་པ་ནི་ངག་[6]འདི་ལྟ་བུ་ཉེ་བར་བརྗོད་པའོ། །དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་བོས་ཏེ་ཞེས་བྱ་བ་འདོས་སྦྱར་བར་[7]བྱའོ། །བོས་ནས་ཞེས་པ་ནི་དྲིས་པའོ། །བོས་པ་དེ་ཡང་ལན་

---

༡ རྒྱ་དཔེར༠ བཅོམ་ལྡན་འདས་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་རྡོ་རྗེ་སེམས དཔའ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ། ཅེས་རིམ་པ་འདི་ལྟར་འདུག ༢ རྒྱ་དཔེར༠ འདིའི་མཚམས་སུ་ཁ་བཙ ཧཱུཾ༔ཧྲཱི་ནམ་མཁའི རྡོ་རྗེ་ཡིས་ཞེས་ཀྱང་འདུག ༣ རྒྱ་དཔེར༠ (ས) དང་། ༤ ནུ་༠པ་ཡིས། ༥ ནུ་༠པེ་༠ཡོད། ༦ སྟེ༠དག ༧ ནུ༠བར་མི་འདུག

དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པར་རྟོགས་པར་བྱའོ། །གཞན་དུ་ན་ནི་སྐབས་མ་ཡིན་པར་བརྗོད་པར་འགྱུར་དེ་དྲི་བ་གཞན་ལ་བསྟན་པ་གཞན་པས་སོ། །གང་ལ་བོས་ཤི་ན་གསུངས་པ། རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡིན་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ····ཐམས་ཅད་དེ་མི་བསྐྱོད་པ་ལ་སོགས་པའོ། །དེ་རྣམས་ཀྱི་བདག་པོ་ཞེས་པ་ནི་དེ་རྣམས་ཡང་དག་པར་གསུངས་[1]པའོ། །ཡང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནི་སྙིང་བྱེད་པས་སོ། །

ལན་གྱི་དོན་གསུངས་པ་ནི། དེ་ནས་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནས་བདུད་ཐམས་ཅད་བཏུལ་པ་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ་ཐམས་ཅད་ལ་འཚེ་བ་ནི་བཏེག···པའོ། །ལས་ལ་ཨ་ཀྲིན་དུ་བྱས་པས་བདུད་ཐམས་ཅད་དེ་ (སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱུང་བ་ནི་[2]) འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པའི་ཉོན་མོངས་པའོ། །དེ་དག་རྣམ་པར་བཏུལ་པ་ནི་རྣམ་པར་དག་པའོ། །དེ་ཉིད་རྡོ་རྗེ་སྟེ་མི་ཕྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ།། མིང་ནི་རབ་ཏུ་གྲགས་པའོ། །ཧྃ་ཧྃ་འཛིན་ཞེས་[3]བྱ་བ་ནི་ཧཱུྃའི་རྡོ་རྗེ་འཆང་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་གཟུགས་སོ། །ཉིད་ཀྱི་སྐུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་ལས་ཞེས་པ་ནི་མེ་ལོང་ལྟ་བུ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པ་ལྔའི་རང་བཞིན་རྣམས་ཀྱིས་སོ། །ངེས་པར་འབྱུང་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣམ་པར་སྤྲོས་ནས་སོ། ༢ །

---

1 རྒྱ་དཔེར་༠དེ་རྣམས་ཡང་དག་པར་གསུངས་པའོ་མི་འདུག 2 སྣ༠ པེ༠ སྡེ༠སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱུང་བ་ནི་ཞེས་པ་མི་འདུག་པས་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན། 3 སྣ༠ ཅེས།

ཟླ་བ་རྡོ་རྗེ་སྦྱོར་བ་ཡིས། །
གཤིན་རྗེ་མཐར་བྱེད་བསྒོམ་པར་བྱ། །
བདུད་རྣམས་ཞི་བར་བྱ་ཕྱིར་དང་། །
ཞེ་སྡང་ཐམས་ཅད་བསལ་བའི་ཕྱིར། ༢ །

ཟླ་བ་རྡོ་རྗེ་རབ་སྦྱོར་བས། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་གང་གི་ཚེ་སྙིང་གའི་ས་བོན་ལས་བཀོད་པ་རྣམས་ལ་བདུན་པོ་རྣམ་པར་དག་པའི་ཟླ་ན་མེད་པའི་མཆོད་པ་དང་། ཚངས་པའི་གནས་བཞི་བསྒོམ་པ་དང་། སྟོང་པའི་བྱང་ཆུབ་དང་རྡོ་རྗེ་ར་བ་ལ་སོགས་པ་དང་། དེའི་ནང་དུ་སོན་པའི་ནམ་མཁའ་བྱུང་བ་ཆེན་པོ་དང་། སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་ལ་གནས་པ་འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་བཞི་ཡང་དག་པར་བསྡུས[2]……པ་ལས་སྐྱེས་པའི་གཞལ་ཡས་ཁང་གི་དབུས་སུ་གནས་པའི་ཉི་མའི་རྗེས……ལ་ཟླ་བ་རྡོ་རྗེ་ལ་སོགས་པ་བསྒོམ་པ་སྟེ་གང་འདི་ལྟ་བུ་ཡང་མངོན་དུ་དཀྲུགས་པའི་རིམ་པས་བསྟན་པའོ། །དེ་ལྟ་བུ་ཡང་བརྒྱ་ལམ་ན་གང་ཞིག་ཟླ་ན་མེད་པར་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ང་རྒྱལ་བ་ཉིད་ཚག་ཙམ་ལ་རབ་ཏུ་འཇུག་ཅིང་། དེ་ནས་དམ་ཚིག་ཉམས་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལ་ཟླ་བ་ནི་ཨཱ་ལི་ལ་སོགས་པའོ། །དབྱངས་ཡིག་བཅུ་དྲུག་པོ་རྣམས་ཀྱིས་ཉིས་འགྱུར་ལས་འབྱུང་སྟེ་མེ་ལོང་ལྟ་བུའི་ཡེ་ཤེས་སོ། །རྡོ་རྗེ་ཞེས་པ་ནི་བདུད་ལས་རྒྱལ་བའི་[3]རྡོ་རྗེ་སྟེ། ཀ་ལ་སོགས་པ་གསལ་བྱེད་རྣམས་ལས་ཡི་གེ་དྲུག་ལྷག་པ་གྲངས་བཞི་བཅུ……ཉིས་འགྱུར་ལས[4]་བྱུང་བ་ཉི་མའི་རྡོ་རྗེ་སྟེ་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་སོ། །དེ་

༡ རྒྱ་དཔེར་༠ (དྷི་ཀོ་བནྡེ) དགྲ་རྣམས། ༢ སྣ་༠བསྡུས་པར་སྐྱེས། ༣ རྒྱ་དཔེར་༠(བཛྲ་སྣ་ཏྲཿ) རྡོ་རྗེ་ཉི་མ། ༤ ནེ་༠བས།

དག་ནི་ཟླ་བ་དང་ཉི་མ་དག་[1]གོ །སྦྱོར་བ་ནི་ཐུལ་དུ་གྱུར་པ་སྟེ་རབ་ཏུ་སྦྱོར······བའོ། །དེ་ནས་ཉི་མའི་སྟེང་དུ་ཧཱུྃ་ཡིག་ལས་རྡོ་རྗེ་དེའི་ལྟེ་བ་ལ་ཧཱུྃ་ཡིག······གིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ནི་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བདག་ཉིད་དོ། །དེ་ནས་ལྷའི་འཁོར་ལོ་སྤྲོ་བ་དང་བསྡུ་བར་གྱུར་པ་ནི་བྱ་བ་གྲུབ་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི······བདག་ཉིད་དོ། །དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཞུ་བ་ལས་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ནི་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བདག་ཉིད་དུ་རྟོགས་པར་བྱའོ། །གཤིན་རྗེ་འཇིགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཟླ་བ་དང་ཉི་མ་དང་རྡོ་རྗེ་དང་ས་བོན་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་སྐྱེས་པ་ཞུ་བས་བཞེངས་པ་སྟེ། རྒྱུའི་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་པོ་ཞབས་གཡོན་བརྐྱང་བ་སྐུ་མདོག་དཀར་པོ་རྩ་བའི་ཞལ་དཀར་བ་གཡས་དང་གཡོན་གྱི་ཞལ་ནི་སྔོ་དང་དམར་བའོ། །གཡས་པའི་ཕྱག་རྣམས་ཀྱིས་རྡོ་རྗེ་དང་རལ་གྲི་དང་གྲི་གུག་འཛིན་ཅིང་། གཡོན་པའི་ཕྱག་རྣམས་ཀྱིས་འཁོར་ལོ་དང་པདྨ་དང་ཐོད་པ་འཛིན་པས་རང་དང་འདྲ་བ་ལ་སྙོམས་པར་འཇུག་པའོ།། དེ་ཡང་།

སྣ་གར་ལིངྒ་རྣམས་གཞག་ནས། །
དཀྱིལ་འཁོར་བདག་པོ་རྣམ་པར་བསྒོམས། (༡༠.༡༣) །

ཞེས་ལེའུ་བཅུ་པ་ལས་གསུངས་པས་སོ། །བདུད་རྣམས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣམ་པ་བཞི་སྟེ། ཉོན་མོངས་པ་དང་། ལྷ་དང་། ཕུང་པོ་དང་། འཆི་

[1] སྣ་༠ཉི་མ་དང་ཟླ་བ་དག་ག།

འོད་ཟེར་ལྔ་ཡིས་འཁྲིགས་པ་ཡིས། །
རྡོ་རྗེ་བསྲུང་བའི་དོན་དུ་བསྒོམ། །
ཕྱི་མཚམས་རྡོ་རྗེ་ས་གཞི་དང་། །
ར་བ་གུར་བ་དེ་བཞིན་ནོ། ⌣ །

བདག་གི་བདུད་དོ། །རབ་ཞིའི་དོན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེའི་དོན་དུ་སྟེ་བཞི་པའོ།། སྣང་བ་ཐམས་ཅད་ཞི་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྣང་བ་ཐམས་ཅད་ནི་དགྲ་བོ་རྣམས་སོ།། ཞི་བ་ནི་བསལ་བར་བྱ་བའི་དོན་དུའོ། ༢ །

སྲོང་པ་ཉིད་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་རྗེས་ལ་གང་བྱ་བ་དེའི་བརྗོད་པ་གསུངས་……པ་བསྲུང་བའི་དོན་དུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ་རྡོ་རྗེ་ཞེས་པ་ནི་སྣ་ཚོགས་རྡོ……རྗེའོ། །དེས་ན་དེ་ཉིད་གསུངས་པ། འོད་ཟེར་ལྔ་ཡིས་འཁྲིགས་པ་ཡི།། ཞེས་པ་སྟེ་དེ་ཡང་ར[1]ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་ཉི་མའི་སྟེང་དུ་ཧཱུྃ་ཡོངས་སུ'……རྫོགས་པའོ། །རྡོ་རྗེ་ས་[2]གཞི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་དེ་ཉིད་ལས་འོད་ཟེར་དུ་མ་བྱུང་བ་རྣམས་ཀྱིས་འོག་ས་གཞི་ལ་ཐུག་པར་རྡོ་རྗེའི་རང་བཞིན་གྱི་ས་གཞིར……གྱུར་པའོ། །ལྕགས་རི་ཞེས་པ་ནི་རྡོ་རྗེ་ཕྲེང་བའི་འོད་ཟེར་རྣམས་ལ་ཕྱི་རོལ་དུ་ར་བ་གྲུ་བཞི་པའོ། །ར་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེའི་ས་གཞིའི་སྟེང་གི་ཕྱོགས་བཞི་འོད་ཟེར་རྣམས་ལས་བྱུང་བའི་རྩིག་པ་བཞིའོ། །གུར་ཞེས་པ་ནི་ནམ་མཁའི་ཕྱོགས་སུ་རྡོ་རྗེའི་འོད་ཟེར་རྣམས་ཀྱིས་ཁྱབ་སྟེ་ཐོག་ཕུབ་པའོ། ⌣ །

---

[1] སྡེ་°ཞེ་°ཡོངས་སུ་མི་འདུག [2] སྡེ་°ས་མི་འདུག

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སྙིང་[1] པ་པོ་བདུད་[2] འདུལ་བ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་ནས་གདོད་ཕྱག་རྡོ་རྗེ་གཤིན་རྗེའི་གཤེད་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ས་བོན་འདི་ཉིད་[3] སྐུ་གསུང་ཐུགས་རྡོ་རྗེ་རྣམས་ལ་ངེས་པར་བྱུང་བ། ༥ །

རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་རྫོགས་པའི་རྗེས་ལ་བྱ་བ་[4] གསུངས་པ། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་སྙིང་པ་པོ་ནི་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཀྱུའི་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ་ནི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་པོ་འོ། །བདུད་ཆག་པར་བྱེད་པའི་རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་ཞེས་པ་ནི། རང་གི་སྙིང་ག་ནས་འོད་ཟེར་གྱིས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་བཀུག་ཅིང་ཁར་[5] ཞུགས་ནས་སྙིང་གར་ཞུ་བར་བྱ་སྟེ། རྡོ་རྗེའི་ལམ་ནས་བྱུང་བ་དང་། རང་དང་འདྲ་བའི་པདྨར་ཟླ་བ་ཞུ་བའི་གཟུགས་ཀྱིས་དཀྱིལ་འཁོར་པའི་ས་བོན་གྱི་ཡི་གེ་རྣམས་ལ་རྫོགས་པའི་ལྷ་མོའི་འཁོར་ལོ་ནི་བདུད་ཆག་པར་བྱེད་པའི་རྒྱུ་ཉིད་ཡིན་པས་རྒྱུ་ལ་འབྲས་བུའི་མིང་བཏགས་ནས་བདུད་ཆག་པར་བྱེད་པའི་རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ནི་དེ་དག་ཉིད་དོ། །ཉིད་ཀྱི་སྐུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་རྡོ་རྗེ་རྣམས་ལས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རང་དང་འདྲ་བར་སོན་པ་སྐུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་ཀྱི་བདག་ཉིད་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་གསུམ་གྱི་རྣམ་པར་དག་པའི་ཆོས་ཀྱི་འབྱུང་གནས་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །ངེས་པར་བྱུང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡང་

---

༡ སྣ་༠བསྙེད། ༢ ཀྱ་དཔེར་༠ (སནྡྷར) བདུད་ཐམས་ཅད། ༣ པེ་༠སྣ་༠གྱི། ༤ སྣ་༠པེ་༠བུ་ས་མི་གདུག ༥ པེ་༠བར།

དབུས་སུ་ཡ་དང་ཀཧྲི་མམེ་[1] དཡཙ྄ཚཉིརྭཛྭསདྷོཙཊཡོ་ཉིརའོ།[2]

ཡ་སོགས་ཡི་གེ་དང་པོ་ལས། །
གཞིན་ཧེའི་གཞེད་དུ་གྱུར་བ་ཡིན། །
ཡི་གེ་ཀཧྲི་ནི་གདོ་སྣུག་བརྗོད། ༦ །
ཡི་གེ་མ་ནི་ཕྲ་མར་གསུངས། །
ཡི་གེ་མེ་[3]ནི་འདོད་ཆགས་ཉིད། །
ཡི་གེ་ད་ནི་ཕྲག་དོག་འགྱུར། །
གཞིན་ཧེ་གཞེད་སོགས་ལྷ་རྩ་གྲགས། ༧ །
ཡི་གེ་ཡ་ལས་ཕྲ་བར་འགྱུར། །
ཡི་གེ་[4] ཚ་ལས་དབུག་པའི་གཙོ། །
ལག་ན་པདྨ་ནི་ཡིག་ལས། །
ལག་ན་རལ་གྲི་རྭ་ལས་ཡིན། ༨ །

དག་པར་སྦྱོས་དེ་གནས་ཧེ་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་བཀོད་པ་སྟེ། གདོ་སྣུག་གཞིན་ཧེ་གཞེད་ལ་སོགས་པའི་ས་བོན་སྦྱོས་པའི་གནས་སྐབས་ལས་སོ། ༩ །

དབུས་སུ་ཡ་ཞེས་པ་ནི་གཙོ་བོ་གཞིན་ཧེ་གཞེད་ཀྱིས་བོན་དུ་……ཡ་[5]ཤུགས་ཀྱི་རྟོགས་པར་བྱའོ། །ཕྱུ་བར་གྱུར་པ་ལས་གཞིན་ཧེ་གཞེད་ཡིན་ལ། དེའི་ཆོས་བོན་ཡི་གེར་བྱའོ། །ད་ནི་ཡ་[6]ཀཧྲི་མམེད་ལ་སོགས་པ་

༡ རྒྱ་དཔེར་ཿམམེད། ༢ རྒྱ་དཔེར་ཿ ཝ་མི་འདུག ༣ རྒྱ་དཔེར་ཿམོ། ༤ རྒྱ་དཔེར་ཿཀུཙ།
༥ སྣ་ཿཛྙ་ལས། ༦ རྒྱ་དཔེ་ཿསྣ་ཿབེ་ཿཡང་། ༧ རྒྱ་དཔེར་ཿཡ་མི་འདུག

ཛ་ལས་ཙཀྲ་ཞེས་བརྗོད། །
ཡི་གེ་ས་ལས་ཕག་གདོང་མ། །
ཡི་གེ་དོ་ལས་དབྱངས་ཅན་བསྒྲགས། །
ཡི་གེ་ཏུ་ལས་གཽ་རཱི་དྲན། ༢ །

ཉིད་སྦྱོར་དེ་གནས་ཇི་ལྟ་བ་རྣམས་སྨྲའོ། །ཀཱ་ཧི་མཆེད་དག་ནི་ནང་གི་རིམ་པའི་ཕྱོགས་སུ་གནས་པ་སྟེ་ལྷག་མའོ། །ཡཙྪ་ཉིར་ནི་ཕྱི་རོལ་གྱི་སྒོ་བཞི་པོ་རྣམས་སྨྲའོ། །ཛསདོཏུ་ནི་ནང་གི་རིམ་པའི་མཚམས་རྣམས་སྨྲའོ། །ཙ[2]ཡོནིར་ནི་ཕྱི་རོལ་གྱི་རིམ་པའི་གྲྭ་བཞི་པོ་རྣམས་སྨྲའོ། །ལྷའི་དབྱེ་བས་ས་བོན་གྱི་ཡི་གེའི་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་གསུངས་པ། ར་སོགས་དང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་མི་བསྐྱོད་པའོ། །གཏི་མུག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དོ། །ཕྲ་མ་ཞེས་པ་ནི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་ནོ། །འདོད་ཆགས་ཞེས་པ་ནི་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་སོ། །ཕྲག་དོག་ཅེས་པ་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པའོ། །གཤིན་རྗེ་འཇོམས་པ་ལྔ་རྣམ་གྲགས། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་མི་བསྐྱོད་པ་ལ་སོགས་པ་དེ་ཉིད་ལ། གཤིན་རྗེ་འཇོམས་པ་ལྔ་རྣམ་གྲགས། །ཞེས་མངོན་པར་བརྗོད་པའོ། །དེའི་རྗེས་ལ་ཕྱག་རྒྱའི་སྐབས་སུ་དཀྱིལ་འཁོར་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དབུ་ལ་གཤིན་རྗེ་འཇོམས་པ་བསྒོམ་པར་བྱའོ་ཞེས་པ་ནི། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཉིད་ཇི་ལྟར་རིགས་པ་བསྒོམ་པར་བྱ་ཞེས་པའོ། ༦–༢།

---

༡ སྡེ་༠ཡཛ་བཅུག ༢ སྣ་༠ཕེ་༠ཙ་མི་བཅུག

ཆ་ཡོ་ནི་ར་མཚམས་ཀྱི་བཞི། །
ཐོད་པ་བཞི་རུ་འདོད་པ་ཡིན། །
སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་འཇིགས་རུང་བ། །
ནམ་མཁའ་རྡོ་རྗེའི་དཀྱིལ་དུ་བསམས། །
དེ་དཀྱིལ་བཞུགས་པ་[1]གཤིན་རྗེའི་གཤེད། །
གནག་ཅིང་འབར་བ་བསྒོམ་པར་བྱ། །

དེ་ནི་རྡོ་རྗེའི་ར་བ་དང་རྡོ་རྗེའི་གུར་གྱི་ནང་དུ་གནས་པའི་ནམ་མཁའི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་སྟོང་པར་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་ཞལ་ཡས་ཁང་གི་དབུས་སུ···· གཤིན་རྗེ་གཤེད་པོ་བཞུགས་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། ནམ་མཁའ་རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་ཏེ་དེ་ལ་ནམ་མཁའ་རྡོ་རྗེ་ནི་ནམ་མཁའ་འབྱུང་བ་ཆེན་པོ········ སྟེ། རྡོ་རྗེ་ར་བ་དང་རྡོ་རྗེའི་གུར་གྱི་ནང་དུ་གནས་པའི་ནམ་མཁའི་རང་བཞིན་ནོ། །དེའི་དབུས་སུ་ནི་དེར་ཁྱབ་ཅེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་ཞེས་པ་ནི་ཧཱུྃ་ཡིག་ལས་སྐྱེས་པ་སྔར་གྱི་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་ཉིད་དོ། །བསམ་ཞེས་པ་ནི་དྲན་པ་སྟེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྔའི་བདག་ཉིད་ལས་དབུས་སུ་ནག་པོ་དང་། ཤར་དུ་དཀར་པོ་དང་། ལྷོར་སེར་པོ་དང་། ནུབ་ཏུ་དམར་པོ་དང་ བྱང་དུ་ལྗང་གུའོ[2]། ༡༠ །

དེ་ཡི་དཀྱིལ་བཞུགས་གཤིན་རྗེ་གཤེད། །ཅེས་བྱ་བ་ནི་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་དེའི་ལྟེ་ཁྱུད་དུ་གནས་པའི་གཞལ་ཡས་ཁང་གི་དབུས་སུ་གནས་པའོ། །

---

༡ སྣ་ ༠པེ་ ༠པའི། ༢ སྡེ་ ༠དང་།

ཤར་དུ་གཏི་མུག་རྡོ་རྗེ་སྟེ། །
ལྷོ་རུ་དེ་བཞིན་ཕྲ་མ་ཡིན། ༡༡ །
ནུབ་དུ་འདོད་ཆགས་རྡོ་རྗེ་སྡེ། །
དེ་བཞིན་བྱང་དུ་ཕྲག་དོག་གོ །
མཚམས་ཀྱི་རྡོ་རྗེ་རྩེ་བཞི་ལ། །
ཙཀྲིཀ་སོགས་རྣམ་པར་བསྒོམ། ༡༢ །
སྒོ་ཡི་རྡོ་རྗེ་རྩེ་བཞི་ལ། །
ཐོ་བ་ལ་སོགས་རྣམ་པར་བསྒོམ། །

གཞན་ཡང་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཞུ་བར་གྱུར་པ་ལས་རྡོ་རྗེའི་གླུས་[1]བརྒྱལ……ནས་བཞེངས་པར་རྟོགས་པར་བྱའོ། །ཤར་རྩེབས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆའོ། །དེ་བཞིན་དུ་ལྷོ་དང་ནུབ་དང་བྱང་གི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆར་ཡང་རྟོགས་པར་བྱའོ། །མཚམས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ནང་གི་རིམ་པའི་གྲྭ་རྣམས་སུའོ། །རྡོ་རྗེ་རྩེབས་[2]བཞི་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་ནི་གཏི་མུག་རྡོ་རྗེ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ལ……སོགས་པའོ། །དེ་རྣམས་ཀྱི་རྩེ་མོ་ནི་ཆོས་ཀྱི་འབྱུང་གྲྭ་རྣམས་སུའོ། །ཙཀྲིཀ་ལ་[3]སོགས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཙཀྲིཀ་དང་། ཕག་མོ་དང་། དབྱངས་ཅན་མ་དང་། གོ་རི་མའོ། ༡༡–༡༢ །

སྒོ་བཞི་རྩེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཕྱི་རོལ་གྱི་འཕར་མའི་སྒོ་རུ་གང་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེའི་རྩེ་མོ་བཞི་སྟེ་རྩེ་མོ་ལྔ་པ་རྣམ་པ་བཞིའོ། །དེ་དང་ཉེ་བར་གྱུར་པའི་སྒོ

---

༡ ཐུ་ ◦ བསྒྲུ་ཤིས། ༢ ཐུ་ ◦ ཞེ་ ◦ སྟེ། ༣ ཐུ་ ◦ ཞེ་ ◦ ལ་མིཎྜུག

སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེའི་མཚམས་བཞི་རུ། །

མི་ཡི་མགོ་བོ་བཞི་དག་གོ ༡༣ །

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་པོས་གཤིན་རྗེའི་[1]གཤེད་པོ་རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་ནས་ཞེ་སྡང་ཆེན་པོའི་རིགས་ཀྱི་སྔགས་གསུངས་པ། ཨོཾ་ཧྲཱིཿ ཥྚྲཱིཿཝིཀྲྀཏཱནནཧཱུྃཧཱུྃཕཊཕཊསྭཱཧཱ། ༡༤ །

ཉིད་དུ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེའི་གྭ་རྣམས་སུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་ལ་གནས་པའི་ཞལ་ཡས་ཁང་གི་གྭ་རྣམས་སུའོ། །མིའི་མགོ་བོ་ནི་སྐྱེས་པའི་ཐོད་པ་ཁྲག་གིས་གང་བ་རྣམས་ཏེ་སྣ་ཚོགས་པདྨའི་སྟེང་དུ་གནས་པའོ། ༡༣ །

ལྷ་རྣམས་ཀྱི་སྔགས་ཀྱི་བཟླས་པ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་དེ་ནས་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས། གཤིན་རྗེ་གཤེད་རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འབྲས་བུའི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་འབྱུང་བར་འགྱུར་བའི་གནས་སྐབས་ཐོབ་ཅེས་བྱ་[2]བའི་དོན་ཏོ། །སྔགས་བཟླས་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །གསུངས་ཞེས་པ་ནི་ད་ལྟ་ཉིད་དུ་གསུངས་པར་འགྱུར་བའོ། ༡༤ །

---

༡ སྡེ་°ཞེ་°ཞི་མི་འདུག ༢ སྡེ་•ཅེས་པའི་དོན་ཏོ།

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་པོས་གདི་སྨུག་རྡོ་རྗེ་ཆེན་པོའི་ཐུགས་གསུངས་པ། ཨོཾ་ཛི་ནཛི་ཀ ༡༤ །

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་པོས་ཕྲ་མ་རྡོ་རྗེའི་ཐུགས་གསུངས་པ། ཨོཾ་རཏྣདྷྲིཀ ༡༥ །

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་······བདག་པོས་འདོད་ཆགས་རྡོ་རྗེའི་ཐུགས་གསུངས་པ། ཨོཾ་ཨཱ་རོ་ལིཀ ༡༦ །

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་པོས་ཕྲག་དོག་རྡོ་རྗེའི་ཐུགས་གསུངས་པ། ཨོཾ་པྲཛྙཱདྷྲིཀ ༡༧ །

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་······བདག་པོས་རྡོ་རྗེ་ཐོ་བའི་ཐུགས་གསུངས་པ། ཨོཾ་སུཊྭགརདྷྲིཀ ༡༨ །

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་······བདག་པོས་རྡོ་རྗེ་དབྱུག་པའི་ཐུགས་གསུངས་པ། ཨོཾ་དཀྲཊདྷྲིཀ ༡༩ །

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་པོས་རྡོ་རྗེ་པདྨའི་ཐུགས་གསུངས་པ། ཨོཾ་པདྨདྷྲིཀ ༢༠ །

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་[1] དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་······བདག་པོས་རྡོ་རྗེ་རལ་གྲིའི་ཐུགས་གསུངས་པ། ཨོཾ་ཁཊྒདྷྲིཀ ༢༡ །

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་པོས་རྡོ་རྗེ་ཙཀྲཀའི་ཐུགས་གསུངས་པ། ཨོཾ་མོ་ཧ་ར་ཏི། ༢༢ །

---

[1] ནི་༠བཅོམ་ལྡན་འདས་མི་འདུག

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་·········
བདག་པོས་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་འི་སྔགས་གསུངས་པ། ཨོཾ་ཧྲཱིཿརི། ༢༣ །

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་·········
བདག་པོས་རྡོ་རྗེ་དབྱངས་ཅན་མའི་སྔགས་གསུངས་པ། ཨོཾ་ར྄གརི། ༢༤ །

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་·········
བདག་པོས་རྡོ་རྗེ་གཽ་ར྄ི་མའི་སྔགས་གསུངས་པ། ཨོཾ་བཛྲ་རི། ༢༦ །

དེ་ནས་[1]དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་པོས་[2]སྐུ·········
གསུང་ཐུགས་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་སྔགས་གསུངས་པ། ཨོཾསརྦཏ྄ཐཱགཏ྄ཀཱ
ཡབཛྲསྭབྷ྄བཨཱཏ྄མཀོཧཾ། ཨོཾསརྦཏ྄ཐཱགཏ྄ཝཱཀབཛྲསྭབྷ྄བཨཱཏ྄མཀོཧཾ། ཨོཾས
རྦཏ྄ཐཱགཏཙིཏ྄ཏབཛྲསྭབྷ྄བཨཱཏ྄མཀོཧཾ། ༢༥ །

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་·········
བདག་པོས་ཞེ་སྡང་ཆེན་པོའི་[3]སྐུ་ངེས་པར་བསྟན་པ། ༢༨ །

དཀྱིལ་འཁོར་བའི་བརླས་པའི་སྔགས་གསུངས་པ། དེ་ཡང་[4] ཞེས་
བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཚིག་བཅུ་གཉིས་པོ་རྣམས་ཀྱིས་སོ། ༡༤–༢༦ །

སྐུ་གསུང་ཐུགས་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་སྔགས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཀྱིལ་···
འཁོར་གྱི་བདག་པོ་དང་དཀྱིལ་འཁོར་བ་རྣམས་ཀྱིའོ། ༢༥ །

ཞེ་སྡང་ཆེན་པོ་འི་སྐུ་ཞེས་པ་ནི་ཞེ་སྡང་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི·········
སྐུའོ། ༢༨ །

---

༡ རྒྱ་དགེར་ ○དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་འདུག ༢ སྣ་○ས་མི་འདུག ༣ གེ་○ ཆེན་པོ་འི་མེད་པར་ཞེ་སྡང་གི་ངེས་པར་བསྟན་པ། ༤ སྣ་○གེ་○དེ་ནས།

ཞལ་གསུམ་ཕྱག་དྲུག་ཁྲོས་པ་ལ། |
ཨིན྄དྲནཱི་ལ་འདྲ་བའི་མདོག ། |
ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་བསྣམས་པ་ཉིད། |
གཤིན་རྗེའི་གཤེད་ནི་བསྒོམ་པར་བྱ། ༡༩ |
ཞལ་གསུམ་ཕྱག་དྲུག་ཞི་བ་ལ། |
གསལ་བའི་གཟུགས་དང་འདྲ་བའི་འོད། |
ཕྱག་ན་འཁོར་ལོ་བསྣམས་པ་ཉིད། |
གཏི་མུག་རྡོ་རྗེ་རྣམ་བསྒོམ་བྱ། ༢༠ |

ཞལ་གསུམ་ཞེས་པ་ནི་རྩ་བ་ནག་པོ་དང་། གཡས་དཀར་པོ་དང་། གཡོན་དམར་པོ་འོ། །ཕྱག་ཅེས་པ་ནི་གཡས་པའི་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེས་ཉེ་བར་མཚོན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཕྱག་གཞན་གཉིས་ན་རལ་གྲི་དང་གྲི་གུག་འཛིན་པོ། །དེ་བཞིན་དུ་གཡོན་པའི་ཕྱག་གསུམ་ན་འཁོར་ལོ་དང་པདྨ་དམར་པོ་དང་ཐོད་པ་འཛིན་པའོ། ༡༩ །

ཞལ་གསུམ་པ་ཞེས་རྩ་བ་དཀར་པོ་[1]དང་། གཡོན་པ་དམར་པོ་དང་། གཡས་ནག་པོ་འོ། །ཞི་བ་ནི་ཞི་བའི་ལས་ཀྱིས་ཕན་པའོ། །གསལ་བའི་གཟུགས་ནི་ཟླ་བའོ། །དེ་དང་མཉམ་པའི་འོད་ཟེར་དཀར་པོ་འོ། ཕྱག་ཅེས་པ་ནི་གཡས་པ་སྔེ་འཁོར་ལོས་ཉེ་བར་མཚོན་པའི་ཕྱིར། ཕྱག་གཞན་གཉིས་སུ་ཡང་རལ་གྲི་དང་གྲི་གུག་འཛིན་པའོ། །དེ་བཞིན་དུ་གཡོན་པའི་ཕྱག་གསུམ་ན་རིན་པོ་ཆེ་དང་པདྨ་དང་ཐོད་པ་རྣམས་སོ། ༢༠ །

---

1 སྔོ་ ° ནག་པོ།

ཞལ་གསུམ་ཕྱག་དྲུག་རྒྱས་གྱུར་པ། །
གསེར་གྱི་རྣམ་པའི་འོད་དང་ལྡན། །
ཕྱག་ན་རིན་ཆེན་[1] བསྣམས་པ་ཉིད། །
ཕྲ་མ་རྡོ་རྗེ་རྣམ་བསྒོམ་བྱ། ༢༡ །
ཞལ་གསུམ་ཕྱག་དྲུག་དབང་བྱེད་པ། །
པདྨ་རཱག་མཚུངས་པའི་འོད། །
ཕྱག་ན་པདྨ་བསྣམས་པ་ཉིད། །
འདོད་ཆགས་རྡོ་རྗེ་རྣམ་བསྒོམ་བྱ། ༢༢ །

ཞལ་གསུམ་ཞེས་པ་ནི་རྩ་བ་སེར་པོ་དང་། གཡས་དཀར་པོ་དང་། གཡོན་ནག་པོ་འོ། །རྒྱས་པ་ནི་རྒྱས་པའི་ལས་ཀྱི་ཕན་པའོ། །གསེར་བསྒྲིག་པའི་[2] རྣམ་པ་ཞེས་པ་ནི་བསྒྲིགས་པས་མདོག་བཟང་པོ་སྟེ་དེའི་འོད་དོ། །ཕྱག་ཅེས་པ་ནི་གཡས་པ་ན་རིན་པོ་ཆེས་ཉེ་བར་མཚོན་པའི་ཕྱིར། གཞན་གྱི་ཕྱག་གཉིས་སུ་ཡང་རལ་གྲི་དང་གྲི་གུག་གོ །གཡོན་པའི་ཕྱག་གསུམ་ན་འཁོར་ལོ་དང་པདྨ་དང་ཐོད་པ་རྣམས་སོ། ༢༡།

ཞལ་གསུམ་ཞེས་པ་ནི་རྩ་བ་དམར་པོ་དང་། གཡས་དཀར་པོ་དང་། གཡོན་སྔོན་པོ་འོ། །དབང་ནི་དབང་དུ་བྱེད་པའི་ལས་ཀྱི་ཕན་པའོ། །པདྨ་རཱག་ཞེས་པ་ནི་རིན་པོ་ཆེ་དམར་པོ་འོ། །ཕྱག་ནི་གཡས་པ་ན་པདྨས་ཉེ་བར་མཚོན་པའི་ཕྱིར། ཕྱག་[3] གཉིས་སུ་ཡང་རལ་གྲི་དང་གྲི་གུག་གོ ། གཡོན་པར་ནི་འཁོར་ལོ་དང་རིན་པོ་ཆེ་དང་ཐོད་པ་རྣམས་སོ། ༢༢།

---

༡ སེ་° རིན་ཆེན་གྱི་ཚབ་ཏུ་རྡོ་རྗེ་འདུག ༢ སྣ་° པའི་མི་འདུག ༣ སྣ་° སེ་° ཕྱག་གཞན།

ཞལ་གསུམ་ཕྱག་དྲུག་ཐམས་ཅད་ལ། །

རིན་ཆེན་མཆོད་འོད་དང་ལྡན། །

ཕྱག་ན་ཤུབས་ཅན་བསྣམས་པ་ཉིད། །

ཕྲག་དག[1] རྡོ་རྗེ་རྣམ[2] བསྒོམ་བྱ། ༢༢ །

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེའི…… གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད་ལས་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་རིམ་པར་ཕྱེ་བ་སྟེ་[3] ལེའུ…… དང་པོ་འོ།། །།

ཞལ་གསུམ་ཞེས་པ་ནི་རྩ་བ་ལྗང་གུ་དང་། གཡས་ནག་པོ་དང་། གཡོན་སེར་པོ་འོ། །ཐམས་ཅད་ནི་ལས་ཐམས་ཅད་པའོ། །མཆོད་ནི་རིན་པོ་ཆེ་ལྗང་གུའོ། །ཕྱག་གཡས་པའི་ཕྱག་ན་ཤུབས་ཅན་དེ་རལ་གྲིས་ཉེ་བར་མཚོན་པའི་ཕྱིར། ཕྱག་གཞན་གཉིས་སུ་ཡང་རྡོ་རྗེ་དང་གྲི་གུག་གོ །གཡོན་པ་ནི་འཁོར་ལོ་དང་པདྨ་དང་ཐོད་པ་རྣམས་སོ།༢༢།

དེ་ལྟར་ནང་གི་རིམ་པར་གནས་པའི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་པོ་ལྷ……… གསུངས་ནས། ལེའུ་རྫོགས་པར་གསུངས་པ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་གང་སྐུ་དང་། གསུང་དང་། ཐུགས་ནི་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཞེས་བྱའོ། །གང་དེ་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ནི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོ་སྟེ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས…… ཅད་ཀྱི་སྐུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དོ། །དེ་ཉིད་རྒྱུད་དེ་དག[4]

---

༡ སྣ་༠ཕྲ་མ། ༢ སྣ་༠ རྣམས། ༣ ཅོ་དགེར་༠ རིམ་པར་ཕྱེ་བ་སྟེ། ཞེས་པ་འདི་མི་འདུག
༤ སྣ་༠ ཞེ་༠ དག་མི་འདུག

གསལ་བར་བྱེད་པ་ག་ལ་ཡོད་པ་དེ་ནི་རྒྱུད་དོ། །དེ་ལས་ཞེས་པ་ནི་ཕྱོགས་གཅིག་པ་ལས་སོ། །མངོན་པར་ཞེན་པ་ནི་མངོན་པར་དང་བ་[1]ཐམས་ཅད་ལས་དེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱིས་ཡང་དག་པར་ཐོབ་ཅིང་མངོན་དུ་བྱེད་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱིས་གང་ཐོབ་པ་དེ་ལྟ་བུ་ནི་མངོན་པར་རྟོགས་པའོ། །མི་ཤེས་པ་ཀུན་གྱི་སྒྲིབ་གཡོགས་པའི་སྐམ་བུ་དང་འདྲ་བས་སྐམ་བུའོ། །དེར་ལེན་ཞིང་འཛིན་པས་ན་ལེའུའོ། །མངོན་པར་རྟོགས་པ་ཡང་འདི་ཡིན་ལ་[2]ལེའུ་ཡང་འདི་ཡིན་པས་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་ལེའུའོ། །ལེའུ་དང་པོའི་བཤད་པ་རྫོགས་སོ།། །།

---

༡ སྣ་° སེ་° བ་མི་འདུག ༢ སྣ་° སེ་° ཡིན་པས།

ལེའུ་གཉིས་པ།

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས……

བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ལ་བསྟོད་པ། ༡ །

གཤིན་རྗེའི་གཤེད་པོ་[1] རབ་འཇིགས་པ། །

གདོ་སྒུག་རྡོ་རྗེའི་ངོ་བོ་བྲོད། །

སྟོན་[2] པ་སངས་རྒྱས་ཀུན་རང་བཞིན། །

རྡོ་རྗེ་སྐུ་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། ༢ །

གཤིན་རྗེའི་གཤེད་པོ་རབ་འཇིགས་པའི། །

ཕྲ་མ་རྡོ་རྗེ་ངོ་བོ་བྲོད། །

རྡོ་རྗེ་ཐུགས་དང་རབ་མཚུངས་པ། །

རྡོ་རྗེ་རིན་ཆེན་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། ༣ །

སློབ་མ་ལ་སོགས་པའི་དབང་དུ་བྱ་སྟེ་དཀྱིལ་འཁོར་བྲི་བ་ལ་སོགས་པའི་དོན་དུ་སློབ་དཔོན་ལ་བསྟོད་པ་བརྗོད་པ་གསུངས་པ། དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཞེས་པ་ལ་ཆེན་པོ་ནི་ཐམས་ཅད་སྟོང་པར་མཛད་པའོ། །རྡོ་རྗེ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱིས་སོ། །དེ་སྐད་དུ། བྱང་ཆུབ་སེམས་གང་[3] དེ་རྡོ་རྗེ། །ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །དེ་ལ་སེམས་དཔའི་ནི་གང་ཡོད་པའི་ཕྱིར་དང་། དེའི་རང་བཞིན་གྱི་ཕྱིར་རོ། ༡།

---

༡ སྡེ་° གཞེར་མོར། ༢ ཅོ་ནེ་° (ཀུན་ཏུ:) ཞེ་པ། ༣ སྣ་° སེམས་དཔའ།

འདོད་ཆགས་རྡོ་རྗེའི་ངོ་བོ་ཁྲོད། །
གཤིན་རྗེའི་གཤེད་པོ་རབ་འཇིགས་པ། །
རྡོ་རྗེ་གསུང་[1]དང་རབ་མཚུངས་པ། །
རྡོ་རྗེ་གསུང་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། ༥ །
ཕྲག་དོག་ངོ་བོའི་རང་བཞིན་ཁྲོད། །
གཤིན་རྗེའི་གཤེད་པོ་ལས་ཀུན་པ། །
རྡོ་རྗེ་[2]ཆགས་དང་རབ་ཏུ་མཚུངས། །
ཕྱག་ན་རལ་གྲི་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། ༦ །
སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱི་ངོ་བོ་[3]ཁྲོད། །
སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་གཅིག་བསྡུས་པས། །
སངས་རྒྱས་ཀུན་མཆོག་གཙོ་བོའི་གཙོ། །
དཀྱིལ་འཁོར་གཙོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། ༧ །

རྡོ་རྗེ་མིག་དང་། རྡོ་རྗེ་རྣ་བ་དང་། རྡོ་རྗེ་སྣ་[4] དང་། རྡོ་རྗེ་ལྕེ་

བསྟོད་པ་གང་གི་བསྟོད་ཅེ་ན་གསུངས་པ་གཏི་མུག་རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ། ༢—༧།

ལྷའི་འཁོར་ལོ་བསྒོམས་པའི་རྗེས་ལ་མིག་ལ་སོགས་པ་བྱིན་གྱིས་བརྟན་པར་གསུངས་པ། རྡོ་རྗེ་མིག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ།།[5]

---

༡ རྒྱ་དཔེར། ཐམས་ཅད་དབྱངས་ཀྱི་གཙོ་བོའི་གཙོ། ༢ རྒྱ་དཔེར། རྡོ་རྗེ་སྐུ། ༣ སྡེ་། སྣ་། པེ་། དངོས་པོ། ༤ སྣ། རྡོ་རྗེ་སྣ་དང་། མི་བདུག ༥ སྣ་། པེ་། གསུངས་པ།

དང་། རྡོ་རྗེ་ལུས་དང་། རྡོ་རྗེ་གསུང་[1]དང་། རྡོ་རྗེ་ཐུགས་ཞེས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་གསུངས་པ་ནི་མིག་ལ་སོགས་པ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་ཚོ་གའོ། ༧ །

དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་བྱ་བ། །
འདོད་པའི་དོན་ཀུན་སྒྲུབ་བྱེད་པའི། །

གསུངས་པ་[2]ཞེས་པ་ནི་གསུངས་ནས་སོ། །མིག་ལ་སོགས་པ་རྣམས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་ནས་གང་དེའི་དམ་ཚིག་ནི་བཟླ་སྟེ་མིག་ལ་སོགས་པ་བྱིན་གྱིས་…བརླབ་པའི་སྔགས་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །གླིགས་བམ་ལ་ལར་ནི་དང་པོ་འི་མཐའ་ཅན་གྱི་ཚིག་གོ །དེའི་དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ་མིག་ལ་སོགས་པ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་དམ་ཚིག་གང་གིས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཞེས་པའོ། །ཁྱད་པར་གླངས་ཏེ་འགྲོ་བའི་ཕྱིར་སོ་སོར་བྱེད་པ་འབྲུ་མང་པོ་བར་བསྡུ་བའོ། །དེ་ལྟར་ན་ནི་ཕྱི་ནས་ཀྱང་དེ་ལྟ་བུའི་ཚིག་[3]ཏུ་རྟོགས་པར་བྱའོ། ༧།

བསྒོད་པ་གསུངས་པའི་དགོངས་པ་དཀྱིལ་འཁོར་བྲི་བར་གསུངས་…པ། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། འཛམས་ཞེས་པ་ནི་རབ་ཏུ་གཏམས་པར་བྱིན་གྱིས་བརླབས་ནས་སོ། །དཀྱིལ་འཁོར་ཞེས་པ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡིན་པས་ནའོ། །དེ་སྐད་དུ་ཡང་དཔལ་གསང་བ་འདུས་པ་ལས། བྱང་ཆུབ་སེམས་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་རོ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །གཤིན་རྗེའི་དགྲ་ནི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དོ། །དེ་དང་རབ་མཚུངས་ནི་དེ་དང་འདྲ་བ་སྟེ་དེར་བྱ་བ་དང་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། འདོད་པའི་དོན་ཀུན་སྒྲུབ་པར་བྱེད། ཅེས་

---

༡ པེ་ ༠ རྡོ་རྗེ་གསུང་། མི་འདུག ༢ སྣ་ ༠ པ། མི་འདུག ༣ སྣ་ ༠ ཚོགས་སུ།

གཞིན་རྫེའི་གཞེད་པོ་ཉིད་མཚུངས་པ། །
གཞིན་རྫེའི་འཛིགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལོ། ༨ །
སྐྱུད་པ་གསར་པ་ལེགས་བསྒྲིམས་ལ། །
ལེགས་པའི་ཚད་ལ་མཛེས་པ་ཡིས། །
སྐྱུད་པ་བྱུས་པས་ཐིག་གདབ་བོ། །
གཞིན་རྫེའི་ཚོགས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ལོ། ༩ །

བྱ་བ་ནི་གང་འདོད་པའི་དོན་ཛི་སྲིད་པ་སྟེ། ཞི་བ་ལ་སོགས་པ་དེར་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པའོ།༨།

ཁྱད་པར་ནི་དབུས་ན་བཞུགས་པའི་སྐུ་མདོག་དང་མཚན་མ་ལ········སོགས་པའི་དབྱེ་བས་སོ། །དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཐིག་སྐྱུད་གསུངས་པ་སད་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ལེགས་པར་བསྐྱུབས་[1] ཞེས་པ་ནི། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྔ་རྣམ་པར་དག་པ་ལྔ་སྟེ། སྐྱུད་པ་རྣམ་ལྔ་ཁ་དོག་རྣམ་པ་ལྔར་བྱུས་པའི་ཉི་ཤུ་རྩ་ལྔའི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་སོ། །ལེགས་པའི་ཚད་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱིས་ཉིས་འགྱུར་གྱིས་[2] རིང་བས་སོ། །མཛེས་པ་ཞེས་པ་ནི་རབ་ཏུ་ལེགས་པ་ནའོ[3]། །སྒྲོམས་སུ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་སྒོའི་ཉི་ཤུ་ཆ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །སྐྱུད་པ་ཞེས་པ་ནི་སྔགས་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ལས་བྱུས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྐྱུད་པའོ། །ཐིག་གདབ་ཅེས་བྱ་བ་ལ་མན་ངག་འདི་ཡིན་ཏེ། དཀྱིལ་འཁོར་ཁྲུ་གང་བའི་དབང་དུ་བྱུས་ནས་ཁྲུ་གསུམ་པའི་ཆ་ལ་སྒྲུ་བཞི་ལེགས་པར་

---

༡ སྣ་. ཁེ་. སྐྲིབས། ༢ སྡེ་. མི་འདུག ༣ སྣ་. ནེའོ།

བྱས་ལ། དབུས་ཀྱི་ཆར་ལག་པ་གཡོན་པའི་མཐེ་བོང་དང་མཚུབ་མོས་སྐྱུད་པ་བཟུང་ནས་ལག་པ་གཡས་པས་རྡོ་རྒྱུས་དང་བཅས་པའི་སྐྱུད་པའི་རྩེ་མོ་བཟུང་སྟེ་རི་མོ་ཟླུམ་པོ་གཅིག་ཀུན་ནས་བསྐོར་བར་བྱའོ། །དེ་ནས་ཤར་དང་། ནུབ་དང་། བྱང་དང་། ལྷོ་ཅ་སློབ་དཔོན་དང་སློབ་མ་མངོན་པར་ཕྱོགས་པ་ཡང་མི་བསྐྱོད་པ་དང་། རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱི་ལྷའི་བདག་ཉིད་དུ་བྱས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པས་རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་དབུས་ཀྱི་ཆར་ཚངས་ཐིག་གཉིས་གདབ་པར་བྱའོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཀླུང་དང་། མེ་དང་། དབང་ལྡན་དང་། བདེན་བྲལ་དུ་གནས་ལ་མཚམས་ཀྱི་ཐིག་གཉིས་ཀྱང་གདབ་སྟེ། དེ་དག་གི་བར་དག་ཀྱང་མཉམ་པ་དང་ཚད་དང་ལྡན་པའོ། །དེའི་དབུས་སུ་དང་པོ་ཁང་པ་གཅིག་གིས་མ་ཆོག་པའི་སོར་མོ་བཅུ་ནས་བཟུང་སྟེ་རི་མོ་ཟླུམ་པོ་གཅིག་ཀུན་ནས་བསྐོར་བར་བྱའོ། །དེའི་རྗེས་ལ་ཡང་མཐེ་བོ་[1]གང་དུ་ཁང་པ་གཅིག་གིས་མ་ཆོག་པའི་རི་མོ་ཟླུམ་པོ་…གཅིག་པོ་ནི་རྡོ་རྗེ་ཕྲེང་པའི་དོན་དུའོ། །དེ་ནས་དེའི་རྗེས་ལ་སོར་ལྔ་པའི་རི་མོ་ཕྲ་མོ་གཅིག་ཕྱོགས་བཞི་པོ་རྣམས་སུའོ། །དེ་ནས་ཁང་པ་གཅིག་གིས་མ་ཆོག་པའི་མཐེ་བོང་གང་གི་རི་མོ་འོ། །དེ་ལྟར་རེའུ་མིག་དགུར་གནས་པ་ལས་ལྷག་པའི་རི་མོ་རྣམས་ཕྱིས་ལ་ཇི་ལྟར་མཛེས་པར་རེའུ་མིག་དང་ཀ་བ་རྣམས་བྲི་བར་བྱའོ། །དེ་ནས་ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཚངས་པའི་སྐྱུད་པ་ལས་ལྷག་པར་རྡོ་རྗེ་ཕྲེང་བའི་ཕྱི་རོལ་དུ་རི་མོ་མཐེ་བོང་ཕྱེད་དང་གཉིས་ནི་ཚོན་སྣའི་སའི་དོན་དུ་སྟེ། མེ་དང་དབང་ལྡན་གྱི་མཚམས་སུ་འམ་ཐིག་གཅིག་གིས་ཁྲུད་པར་སྐྱུད་པ་གཅིག…

[1] སྣ་ ༠ སེ་ ༠ ཐོང་།

གདབ་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་བརྒྱ[1] ཞེས་བྱ་བ་ཚོན་སྐ་ལྔའི་དོན་དུའོ། །གཞན་དག་ནི་ཀྱང་པ་གཅིག་གིས་མ་ཚོག་པའི་མཐེ་བོ་གང་སའི་ཚའོ། །དེའི་ཕྱི་རོལ་དུ་ཚངས་པའི་སྐུད་པའི་ངོས་ནས་མཐེ་བོང་ཕྱེད་དང་གཉིས་ཐོར་དེ་རི་མོ་གསུམ་གྱིས་རིང་བ་ཀྱང་པ་གཅིག་གིས་མ་ཚོག་པའི་མཐེ་བོ་གང་གི་དབུས་སུ་ཐིག་གཉིས་གཉིས་ནི་ངོས་ཞེས་བྱ་བ[2] སྟེ་རི་མོ་ལྔའི་དོན་དུའོ། །དེ་ནས་ལོགས་སུ་སོར་ཕྱེད་དང་གཉིས་ཀྱི་ཚད་དུ་ཀྱང་[3]པས་མ་ཚོག་པའི་མཐེ་བོ་གང་གི་དབུས་སུ་འགྲམ་ཞེས་བྱ་སྟེ་རི་མོ་ལྔའི་དོན་དུ་སྐུད་པ་གཉིས་གཉིས་སོ། །དེ་ནས་ཕྱོགས་ཞེས་པ་སྟེ། རི་མོ་ལྔའི་དོན་དུ་སོར་ཕྲ་བ་ཕྱེད་དང་གཉིས་ཀྱི་ཚད་ཀྱང་པ་གཅིག་གིས་མ་ཚོག་པའི་མཐེ་བོ་གང་བའི་དབུས་སུ་སྐུད་པ་གཉིས་གཉིས་སོ། །དེ་ནས་ངོས་གཉིས་སུ་ཁྲུབ་པར་ནི་ཐྲག་གོང་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ། རི་མོ་ལྔའི་དོན་དུ་ཀྱང་པ་གཅིག་གིས་མ་ཚོག་པའི་མཐེ་བོ་གང་བའི་དབུས་སུ་སྐུད་པ་གཉིས་གདབ་པར་བྱའོ། །དེའི་རྗེས་ལ་རྒྱ་གྲམ་ལས་ཕ་རོལ་དུ་མཐེབ་གང་བའི་ཚད་ཙམ་རིན་ཆེན་ཕ་གུའི་དོན་དུའོ། །ལོགས་ཀྱི་སྐུད་པ་གཅིག་པོ་ངོས་གཉིས་སུ་གདབ་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་རིན་ཆེན་ཕ་གུ་ལས་ཕྱི་རོལ་དུ་ལོགས་ལས་ཀྱང་པས་མ་ཚོག་པའི་མཐེ་བོང་གང་བོར་བ་དང་། །ཡང་ཀྱང་པས་མ་ཚོག་པའི་མཐེ་བོང་གང་གི་བར་དུ་སྐུད་པ་གཉིས་ངོས་གཉིས་སུ་གདབ་པ་ནི་ཀ་བའི་དོན་དུའོ།།

ཡ་ཕུབས་ཀྱི་སྟེང་དུ་ཀྱང་པས་མ་ཚོག་པའི་མཐེ་བོང་གང་ནི་ཀ་བའི་མགོ་བོར་གདབ་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་ཀ་བའི་ཕྱི་རོལ་གྱི་ངོས་གཉིས་སུ་རིན་ཆེན་སྣམ་བུ་

---

༡ རྒྱ་དཔེར་° གཙོ་བོ་ཞེས་བྱ་བ། ༢ སྟེ་° སེ་° བ་མི་འདུག ༣ སྟེ་°ཤད།

ལས་ཕྱི་རོལ་དུ་སོར་ཕྱེད་དང་གཉིས་ཀྱི་སྐྱུད་པ་གཅིག་པོ་ནི་གཟུངས་ཀྱི་སྐམ་བུའི་ངོས་གཉིས་སུ་[1] གདབ་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་རིན་ཆེན་སྐམ་བུའི་དོན་དུ་སྤྲང་བཞིན་དུ་སྐྱུད་པ་གཅིག་གོ །དེ་ནས་རིན་ཆེན་སྐམ་བུ་ལས་ཕྱི་རོལ་དུ་མཐེ་ཚོང་ཕྱེད་དང་གཉིས་ཀྱི་སྐྱུད་པ་གཅིག་ཞོ་སྟེ་དྲ་བ་དང་དྲ་བ་ཕྱེད་པའི་དོན་དུའོ།།

དེ་ནས་སྤྲང་བཞིན་དུ་རིན་ཆེན་སྐམ་བུའི་སྐྱུད་པའོ། །དེ་ནས་ཀ་བའི་མགོ་འི་སྟེང་དུ་ངོས་ལས་ཕང་པས་མ་ཆོག་པའི་མཐེབ་གང་པོར་བར་བཅུ་གཅིག་རྡོ་རྗེ་མཚོན་པའོ། །རྡོ་རྗེའི་ཟླ་རེ་ནི་ཕང་བས་མ་ཆོག་པའི་མཐེབ་གང་ཙམ་ཀ་བའི་མགོ་བོ་ལས་འཕྱང་ཞིང་ཤར་[2] བྱ་གཉིས་གཡོ་བ་ཇི་ལྟར་མཛེས་པས་སོ། །དེ་ནས་དྲ་བ་དང་དྲ་བ་ཕྱེད་པའི་མཚམས་ཀྱི་སྐམ་བུ་ལ་ཆུ་སྲིན་གྱི་གདོང་པ་བདུན་པོ་རྣམས་ཏེ། རིན་པོ་ཆེའི་སྐམ་བུ་ལས་བདགས་པ་དེའི་ཁའི་ངོས་གཉིས་ནས་སྤུ་དྲིག་གི་ཕྲེང་བའོ། །དྲ་བ་དང་དྲ་བ་ཕྱེད་པ་ཀུན་གྱི་དབུས་སུ་པདྨའི་གདན་ལ་གནས་པའི་ཟླ་བ་ཕྱེད་པ་དང་། ཉི་མ་ལ་གནས་པའི་རིན་པོ་ཆེའི་སྟེང་དུ་རྡོ་རྗེ་ཕྱེད་པ་རྣམས་རབ་ཏུ་འཕྱང་བར་བྱར་པའོ། །ཆུ་སྲིན་གྱི་ཁའི་དབུས་སུ་འཕྱང་བ་རྣམས་ནི་ཆེ་ཞིང་དྲི་མ་མེད་པའི་ནོར་བུ་རྩེ་མོ་གཅིག་བདགས་པས་མཛེས་པར་བྱར་པའོ། །ངོས་གཉིས་ཀྱི་ཕྲེང་བ་ནི་ཙུང་ཟད་ཆུང་བ་སྟེ་ཕྲེང་བ་གསུམ་མོ།།

དེ་ནས་སྒོའི་ངོས་གཉིས་ཀྱི་ཚོན་གྱི་ས་གཞི་ལ་པདྨའི་སྟེང་དུ་གནས་པའི་བུམ་པ་གཉིས་ཀྱང་ཇི་ལྟར་མཛེས་པར་བྲི་བར་བྱའོ། །གཟུངས་ཞེས་བྱ་བ་[3] ནི་སྐམ་བུ་ཡང་བརྩེ་བ་དང་བཅས་པའོ། །དེ་ནས་གླུ་བཞི་པོ་རྣམས་སུ་རྡོ་རྗེས་མཚན་པའི་

[1] ཐུ་° ཟུ་མི་འདུག [2] ཐུ་° པེ་° ཤམ། [3] ཐུ་° བེ་° བས།

ནོར་བུ་དབྱིག་པ་ལ་བདགས་པའི་ཛ་མ་གཡོ་ཞིང་འཁྲོལ་བའོ། །འཕན་གྱི་ཚར་ཚར་ཡང་མཐར་སླེབ་པའི་ཐི་ལྷར་ལེགས་པ་གདུགས་དང་ཡང་ངོ་། །ཀ་བ་དང་རིན་ཆེན་སྣམ་བུའི་དབུས་སུ་ཡང་བུམ་པ་བཟང་པོ་ལ་གནས་པའི་དཔག་བསམ་…གྱི་ཤིང་བྲི་བར་བྱའོ། །ངོས་དང་ཀ་བའི་བར་གྱི་མཐོངས་སུ་རྡོ་རྗེ་རིན་ཆེན་བྲི་བར་བྱའོ། །རྡོ་རྗེའི་བླ་རེའི་སྟེང་དུ་མེ་ཏོག་གི་ཕྲེང་བའི་སྣམ་བུ་སྟེ། མཐེ་བོང་གཉིས་སུ་རྒྱས་པ། ངོས་གཉིས་སུ་ཁང་པ་གཉིས་ཀྱིས་ལྷག་པ་གྲུ་བཞི་པའོ།། དེའི་རྗེས་ལ་ནོར་བུ་སྟེ། ཁང་པ་གསུམ་གྱིས་རྒྱས་པ་རིང་བ་ནི་མེ་ཏོག་དང་མཉམ་པའོ། །དེ་ནས་ངོས་གཉིས་སུ་ཁང་པས་ཆུང་བ་ཕ་གུའི་སྣམ་བུའོ།། ཁང་པ་གཉིས་ཀྱི་ཆེ་བ་ཧའི་སྨིག་པ་དང་འདྲ་བ་མདོག་སྣ་ཚོགས་པའི་སྨིག་པ་…ལྡ་བུའི་དབུས་སུའོ། །དེ་ནས་མདོག་བཟང་པོ་ཨི་སྣམ་བུའི་ཞིང་དང་བཅས་པ་མདོག་སེར་པོ་ངོས་གཉིས་སུ་ཁང་པ་གཉིས་གཉིས་ཀྱིས་ཆུང་བའོ། །དེ་ནས་ཐུན་པའི་སྣམ་བུ་ཞིང་དུ་མཐེ་བོང་གཉིས་པ། ངོས་གཉིས་སུ་མཐེ་བོང་གཉིས་ཆུང་བའོ། །དེ་’ནས་སྔར་གྱི་མདོག་བཟང་པོ་ཨི་སྣམ་བུའོ། །དེ་ནས་སྨིག་རྗེས་ལྡ་བུའི་སྣམ་བུ་ཞིང་དུ་ཁང་པ་གཉིས་སོ། །མདོག་བཟང་པོ་ཨི་སྣམ་བུ་ལས་ངོས་གཉིས་སུ་ཁང་པ་གཉིས་ཀྱིས་ལྷག་པའོ། །དེ་ནས་ནོར་བུ་ནི་ཞིང་དུ་ཁང་པ་གསུམ་པའོ། །ངས་གཉིས་སུ་ཁང་པ་ལྷག་པའོ། །དེ་ནས་སྨིག་རྗེས་ལྡ་བུའི་སྣམ་བུ་བཞི་ནི་སྔར་གྱི་སྨིག་རྗེས་ལྡ་བུའི་སྣམ་བུ་བཞིན་ནོ། །དེ་ནས་གསེར་གྱི་སྣམ་བུ་ནི་སྔར་གྱི་མདོག་བཞིན་ནོ། །དེ་ནས་ཀྲམ་ཤིར྄ྵ་ནི་སྟེང་དུ་མཐེ་བོང་

’ ཟུ་。 ཡས་ཐུང་བའི་མདོག་བཟང་པོ་ཨི།

ཕྱེད་དང་གཉིས་པ་ངོས་གཉིས་སུ་མཐེ་བོང་གི་རྐང་པ་རྐང་པས་ཆུང་ངའོ། །དེ་
ནས་རྐང་པ་གཅིག་གི་ཚད་པདྨའི་གདན་གྱི་སྟེང་དུ་རྐང་པ་དང་བཅས་པའི་སོར་
མོ་འི་ཚད་རི་དྭགས་ཀྱི་ལུས་ཀྱི་དབུས་སུའོ། །དེའི་སྐེ་ནི་སོར་ཕྱེད་དང་གཉིས་
ཀྱི་ཚད་[༡]དོ། །མགོ་བོ་ནི་སོར་མོ་ཕྱེད་དང་གཉིས་ཀྱི་ཚད་དོ། །དེའི་སྟེང་དུ་སོར་
མོ་ཕྱེད་བོར་བར་རི་མོ་གཅིག་གིས་བསྐོར་བར་[༢]བྱའོ། །དེའི་ཕྱི་རོལ་དུ་པདྨའི་
ཕྲེང་བ་མཐེ་བོང་གསུམ་གྱི་ཚད་དོ། །དེའི་ཕྱི་རོལ་དུ་རྡོ་རྗེ་ཕྲེང་བ་སོར་གསུམ་
གྱི་ཚད་དོ། །རྗེ་ལྟར་མཛེས་པར་འོད་ཟེར་ལྔ་དང་བཅས་པའོ། །དེ་ལྟར་ངོས་རེ་
རེར་གྲྭ་གང་གླུ་ལས་ཕྱི་རོལ་དུའོ། །དེ་ནས་ནང་དུ་གྲྭ་གང་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་
ནི་རྒྱ་[༣]གསུམ་དུ་གྱུར་པའོ། །དེ་ནས་རི་དྭགས་གཉིས་ཀྱི་དབུས་སུ་རྐང་པ་
གཅིག་གིས་མ་ཆོག་པའི་མཐེབ་གང་གི་ང་པདྨའི་གདན་གྱི་སྟེང་དུ་རྐང་པས་མ······
ཆོག་པའི་མཐེབ་གང་[༤] བའི་གདན་བོར་དེ་འཁོར་ལོ་འི་རྩིབས་བཅུ་གཉིས་པ······
སོར་ཕྱེད་དང་གཉིས་ཀྱི་ཚད་དོ། །དབུ་མའི་རྩེ་མོ་དག་ལའོ། །རྩེ་མོ་གཞན་པ་
བཞི་རྣམས་ནི་ངོས་གཉིས་སུ་བྲི་བར་བྱའོ། །རི་དྭགས་གཉིས་ཀྱི་མདུན་དུ་
འཕན་གཉིས་འཕྲུང་[༥]བ་ནི་རི་དྭགས་ཀྱི་མཇུག་མ་ལ་སྦྲེབས་པའོ། །རི་དྭགས་
ཀྱི་ཕྱི་ཕྱོགས་ཀྲམ་ཤིར་ཥའི་སྟེང་དུ་ཤར་དང་། ནུབ་དང་བྱང་དང་ལྷོ་རྗེ་ལྟ་ངའི་
རིམ་པས་ཁ་ཕྱི་ཕྱོགས་སུ་བལྟས་པའི་སེངྒེ་དང་། ངང་པའི་རྒྱལ་པོ་དང་། རྨ་
བྱ་དང་། ཆུ་སྲིན་གཉིས་གཉིས་བྲི་བར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་གྲྭ་གང་ནས་བརྩམས
དེ་ཇི་སྲིད་གྲྭ་སྟོང་གི་[༦]བར་དུ་དཀྱིལ་འཁོར་བྲི་བར་བྱའོ། །ཤེས་རབ་ཅེས་པ་ནི་
ཐིག་འདེབས་པ་ལ་མཁས་པའོ། ༧ །

༡ སྡེ་,པེ་,ཚད་དོ། ༢ སྣ་,བར་མི་འདུག ༣ སྣ་,བྲ། ༤ སྡེ་,གང་། ༥ སྡེ་,པེ་,འཕྲུར། ༦ སྡེ་,བའི།

མཚན་རྣམས་ཐམས་ཅད་རབ་རྫོགས་ཤིང་། །
བར་ཆད་ཐམས་ཅད་རབ་ཉམས་པ། །
ཞི་བ་ལ་སོགས་རབ་འཇུག་[1]པའི། །
དཀྱིལ་འཁོར་འཁོར་ལོ་འི་ཆ་བྱད་ལ། ༡༠ །

རྩེ་མོ་ལྷ་དང་མཉམ་ལྡན་པའི། །
ལས་ཀྱི་རྡོ་རྗེ་དེ་ལ་བྲི། །
རྡོ་རྗེ་འབར་བ་འཁྲིགས་པ་ཡི། །
རྡོ་རྗེ་དེ་ཡི་དབུས་སུ་བྲི། ༡༡ །

ཞི་བ་ལ་སོགས་[2]རབ་འཇུག་པ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཞི་བ་དང་། རྒྱས་པ་དང་། དབང་དང་། མངོན་སྤྱོད་ལ་སོགས་པའི་ལས་བྱེད་པ་སྟེ། ཁྱད་པར་ནི་དབུས་སུ་གནས་པའི་མདོག་དང་མཚན་མའི་དབྱེ་བ་ལས་[3]སོ།༡༠།

ལས་ཀྱི་རྡོ་རྗེ་ནི་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེའོ། །རྩེ་མོ་ལྷ་པ་ནི་རྣ་ལྔ་པའོ།། མཉམ་ལྡན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཕྱོགས་བཞི་པོ་རྣམས་ལའོ། །དེའི་དབུས་སུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེའི་ལྟེ་ཁྱུད་ལ་གནས་པ་སྟེ་གཞལ་ཡས་ཁང་གི་ནང་གི་རིམ་པའི……དབུས་སུའོ། །རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་ནག་པོ་རྩེ་ལྔ་པའོ། །རྡོ་རྗེ་འབར་བ་ཞེས་པ་ནི་འོད་ཟེར་རྡོ་རྗེའི་རྣམ་པ་ཅན་ནོ།༡༡།

---

1 རྒྱ་དཔེར་༠ (སྲསྣཧེན) འཇུག་པས། 2 སྣ་༠ སེ་༠ སོགས་པ།

3 སེ་༠ པས།

’རལ་གྲི་བྱང་གི་ཕྱོགས་སུ་བྲི། །
འཁོར་ལོའི་འོད་ཀྱིས་བསྐོར་བ་ཡི། །
འཁོར་ལོ་ཤར་གྱི་ཕྱོགས་སུ་བྲི། །
འོད་ཀྱི་ཕྲེང་བ་མཉམ་འཕྲོ་བའི། ༡༣ །
རིན་པོ་ཆེ་ནི་ལྷོ་རུ་བྲི། །
པདྨ་རཱ་གའི་མདངས་འདྲའི་འོད། །

ཤར་གྱི་རྩིབས་ཞེས་པ་ནི་ནང་གི་རིམ་པ་ཉིད་དོ། །ཤར་དུའོ།། འཁོར་ལོ་ཞེས་པ་ནི་འཁོར་ལོ་དཀར་པོ་རྩིབས་བརྒྱད་པའོ། །འོད་ཟེར་ཞེས་པ་ནི་འཁོར་ལོའི་རྡོ་རྗེའི་འོད་ཟེར་ཉིད་དོ། །རིན་པོ་ཆེ་ཞེས་པ་ནི་མདོག་སེར་པོ་ཆ་དགུ་པའོ།༡༣།

པདྨ་རཱ་གའི་མདངས་འདྲའི་འོད། །ཅེས་བྱ་བ་ནི་འོད་ཟེར་དམར་པོའོ། །རལ་གྲི་ལྷུང་གུ་ཞེས་པ་ནི་ལྷག་མའོ། །སྣ་ཚོགས་འབར་བ་ཞེས་པ་

’ རྒྱ་དཔེར༔ ཤར་གྱི་རྩེ་ལ་འཁོར་ལོ་བྲི། །
འཁོར་ལོ་ཡི་འོད་ཀྱིས་འཁྲིགས་པ་ཡིས། །
རིན་པོ་ཆེ་ནི་ལྷོ་རུ་བྲི། །
འོད་ཀྱི་འཕྲེང་བ་འཁྲིགས་པ་ཡིས། །
པདྨ་ནུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་སུ་བྲི། །
པདྨ་རཱ་གའི་མདངས་འདྲའི་འོད། །
བྱང་གི་ཕྱོགས་སུ་རལ་གྲི་བྲི། །
སྣ་ཚོགས་འཕྲོ་ཞིང་འབར་བ་ཡིས། །ཞེས་པ་ལྟར་ཤར། ལྷོ། ནུབ། བྱང་།
རིམ་པ་འདི་ལྟར་འདུག

པདྨ་ནུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་སུ་བྲི། །
འོད་ཟེར་ལྷ་དང་མཉམ་ལྡན་པའི། ༡༢ །
ཤར་གྱི་མཚམས་སུ་འཁོར་ལོ་བྲི། །
ཀློ་ཙ་རྡོ་རྗེ་བྲི་བར་བྱ། །
ནུབ་ཏུ་པདྨའི་མེ་ཏོག་ནི། །
ཡུ་བ་དང་བཅས་ཁ་བྱེ་གསལ། །
འོད་ཀྱི་ཕྲེང་བ་མཉམ་འཕྲོ་བའི། །
ཨུད྄པལ་ལ་ནི་བྱང་ནུབ་བྲི’། ༡༨ །
ཤར་གྱི་སྒོར་ནི་ཐོ་བ་སྟེ། །
དབྱིག་པ་དེ་བཞིན་ལྷོ་ཡི་སྒོར། །

ནི་འོད་ཟེར་རྣམ་པ་ལྔའོ།༡༢།

དེ་ལྟར་ནང་གི་རིམ་པ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམ་པ་ལྔའི་མཚན་མ་བྲིས་ལ། དེ་དག་ཉིད་ཀྱི་གྲྭ་བཞི་པོ་རྣམས་སུ་མཚན་མ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་གྲྭ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ་ཤར་གྱི་མཚམས་སུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མེ་ཉིད་དུའོ། །ཀླ་ཙ་ཞེས་པ་ནི་བདེན་བྲལ་དུའོ། །ནུབ་ཏུ་ཞེས་པ་ནི་རླུང་དུའོ།། བྱང་དུ་ཞེས་པ་ནི་དབང་ལྡན་དུའོ།༡༨ །

ཕྱི་རོལ་གྱི་རིམ་པའི་སྒོ་བཞི་པོ་རྣམས་སུ་མཚན་མ་བྲི་བའི་དོན་དུ་ཐོ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དེ་ལ་ཐོ་བ་ནི་ནག་པོ་རྡོ་རྗེ་རྩེ་གསུམ་པས་མཚན་

---

༡ འོད་ཟེར་ལྷ་དང་མཉམ་འཕྲོ་བའི། །
བྱང་དུ་ཨུཏྤལ་སེར་པོ་བྲི། །ཞེས་འདི་ལྟར་བསྒྱུར་ན་རྒྱ་དཔེ་དང་མཐུན་ཆེ་བར་སྣང་།

འདམ་ལས་སྐྱེས་པ་ཉུབ་ཀྱི་སྐོར།
ཁྱུང་དུ་རྡོ་རྗེ་རལ་གྲིའོ། ༡༤
ཤེས་པས་དཀྱིལ་འཁོར་རྫོགས་པ་ལ།
མཆོད་པ་ཁྱད་པར་འཕགས་པ་ནི།
འདོད་པའི་ཡོན་དན་ལྷ་དག་གིས།
འཇིགས་པ་མེད་པར་མངོན་པར་མཆོད། ༡༥

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེའི······

པའོ། །དབྱིག་པ་ནི་དཀར་པོ་རྡོ་རྗེ་རྩེ་གསུམ་པ་ནག་པོས་མཚན་པའོ། །པདྨ་ནི་པདྨ་དམར་པོའོ། །རྡོ་རྗེ་རལ་གྲི་ནི་ལྷུང་གུའོ་༡། །ཕྱི་རོལ་གྱི་འཕར་མ་གྲུ་བཞི་པོ་རྣམས་སུ་མ་གསུངས་པ་ཉིད་ནི་ཐོད་པ་རྣམ་པ་བཞི་པོ་རྣམས་སུ་ཤེས་···པར་བྱ་སྟེ། མཚན་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཡང་དག་རྫོགས། །ཞེས་གསུངས་པ་ལས་སོ། །གཞན་དུ་ན་ནི་དམན་པ་ཉིད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །ལྷའི་གདན་གྱི་རིམ་པས་མཚན་མའི་གདན་རྣམས་སུ་ཡང་ཤེས་པར་བྱའོ། །རྫོགས་པ་ཞེས་པ་ནི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་སྒོ་རྣམས་སུ་རབ་ཏུ་ཞུགས་པ་སྟེ། བྱ་བ་གཞན་ལ་ལྟོས་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །སངས་རྒྱས་ཞེས་པ་ནི་མཚན་མའི་ཚུལ་དུ་གནས་པ་རྣམས་སོ། །ཐེ་ཚོམ་མེད་པར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བདེན་པ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པ་རྣམས་སྤངས་པའོ།༡༤–༡༥།

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་ལྷ་མ···

---

༡ ཅོ་ ༠ ནེ་ ༠ རལ་གྲི་ལྷུང་གུར།

གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད་ལས་དཀྱིལ་འཁོར་ཆེན་པོའི་རིམ་པར་ཕྱེ་བ་[1] སྟེ་ལེའུ……
གཉིས་པའོ།། །།

བཞིན་ནོ། །དཀྱིལ་འཁོར་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་ཆེན་པོ་ཡང་དེ་ཡིན་ལ། དཀྱིལ་འཁོར་ཡང་དེ་ཡིན་པས་དཀྱིལ་འཁོར་ཆེན་པོའོ། །དེ་སྟོན་པར་བྱེད་པའི་གཞུང་གི་ཚོགས་ནི་ལེའུ་སྟེ། ལེའུ་གཉིས་པའི་བཤད་པ་རྫོགས་སོ།། །།

---

༡ ཅོ་དཔེར་༠ རིམ་པར་ཕྱེ་བ་མི་འདུག

ལེའུ་གསུམ་པ།

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་ ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བསྟོད་པའི་རྒྱལ་པོ་འདིས་བསྟོད་ནས་གསོལ་བ་བཏབ་པ། ༡ །

སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་འཇོམས་པ་ཡི། |
འཇིགས་པའི་གཤིན་རྗེ་འཇོམས་དཀྱིལ་འཁོར། |
དཀྱིལ་འཁོར་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གཙོ་བོ། |
མགོན་པོ་དཀྱིལ་འཁོར་བྲི་བར་མཛོད། ༢ |

དཀྱིལ་འཁོར་བྲི་བའི་དོན་དུ་བསྟོད་པ་བྱས་པ་ལ་གསོལ་བ་གདབ་པར་བྱའོ། །ཞེས་པ་དེ་གསུངས་པ་དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས་ཏེ་བདག་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའོ། །བསྟོད་པའི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པའོ། །གསོལ་བ་གདབ་པ་ཞེས་[2] པ་ནི་ཞུས་པ་རྣམས་སོ།༡།

སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་ཅེས་པ་ནི། སྲོག་གཅོད་པ་ལ་སོགས་པ་བགྱིད་པ་དང་བགྱིད་དུ་སྩལ་བ་དང་བགྱིད་པ་ལ་རྗེས་སུ་ཡི་རང་བའོ། །འཇིགས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྔར་གྱི་བཞིན་ནོ། །དཀྱིལ་འཁོར་ཀུན་གྱི་གཙོ་བོ་སྟེ། ཞེས་བྱ་བ་ནི་འདིར་གསུངས་པའི་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་ལ་སོགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལས་གཙོ་བོར་གྱུར་པའོ།༢།

༡སྡེ་◦པེ་◦ཅོ་◦ལ་མི་འདུག ༢ ཅོ་◦ཞེས་བྱ་བ་ནི།

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་འཆང་[1] ཆེན་པོས་ཉིད་ཀྱི་སྐུ་གསུང···
ཐུགས་རྣམས་ལས་བདུད་རྩི་འབྱུང་བའི་ཚོ་ག་ངེས་པར་འབྱུང་བ།[2] ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ༢ །

རྒྱལ་ཆེན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་རབ་བསྒོམས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལྷའི······ འཁོར་ལོ་རྫོགས་ནས་བཟའ་བཏུང་གསུངས་པ། དེ་ནས་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། བདུད་རྩི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འོག་ཏུ་ཡཾ་[3] ཡིག་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་གླྀ་གཉིས་སུ་བ་དན་གཡོ་བ་གཉིས་ཀྱིས་མཚན་པ་གཞུའི་རྣམ་པའི་རླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་རོ། །དེའི་སྟེང་དུ་རཾ་ཡིག་ཡོངས་སུ་གྱུར་པའི་མེ་ལ། ཨ་ཡོངས་སུ་གྱུར་པའི་ཐོད་པའི་ནང་དུ་གོ་ཀུ་ད་ཧ་ནའི་གཟུགས་ཀྱིས་བཟའ་བ་ལ་སོགས་པ··· ལྔ་བླུའོ། །རླུང་གིས་བསྐུལ་ནས་མེས་བསྒྲོས་[4] པའི་ཐོད་པར་ཞུ་བར་གྱུར་པ། ཨོཾ་ཡིག་གིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའོ། །དེའི་ཐིག་ལེ་ལས་བྱུང་བའི་འོད་ཟེར་གྱིས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྙིང་པོ་བཀུག་སྟེ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བདུད་རྩི་དང་གཅིག་ཏུ་བྱས་པའི་བདུད་རྩི་རྣམ་པ་ལྔའོ། །དེ་འབྱུང་བ་ནི་ཉེ་བར་འོངས་སྤྱོད་པའོ། །དེའི་དམ་ཚིག་ནི་བརྟའོ། །བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་སྔགས་ནི་ངེས་པར་འབྱུང་བ་སྟེ་རབ་ཏུ་བསྟན་པའོ། །གང་ཞེ་ན། བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་སྔགས་ཞེས་གསུངས་ཏེ། ཨོཾ་ལ་སོགས་པའོ། །ཡི་གེ་གསུམ་གྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབ།། ཅེས་པའི་དོན་ཏོ། ༢།

---

1 པེ་ ༠ རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ། སྡེ་ ༠ རྡོ་རྗེ་འཛིན། 2 པེ་ ༠ བྱུང་བ།
3 པེ་ ༠ ཨ། 4 སྣ་ ༠ བསྒྲིགས།

རྡོ་རྗེ་ལྡེ་ཡི་སྦྱོར་བ་ཡིས[༡]། |

རྡོ་རྗེ་ཅན་ཀུན་མཉེས་པ་དང་། |

རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་བཞུགས[༢]། |

ཡེ་ཤེས་འབྱུང་གནས་ངོ་བོ་ཉིད། ༨ |

དགུག་པ་དང་ནི་གཞུག་པ་དང་། |

བཅིང་དང་དེ་བཞིན་དབང་བྱ་ཉིད། |

རྡོ་རྗེ་ལྡེ་ཡི་[༣]སྦྱོར་བ་ཡིས། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཧཱུཾ་ཡིག་ལས་ལྡེ་རྡོ་རྗེ་རྩེ་གཅིག་པའི་རྣམ་པར་བྱས་ལ་དེ་ལས་བྱུང་བའི་འོད་ཟེར་སྤྲུ་གུའི་རྣམ་པས······སོ། །དེའི་དགོས་པ་[༤]ཅི་ཞེ་ན། མཉེས་པ་སྟེ་དགྱེས་པའོ། །རྡོ་རྗེ་ཅན་ཀུན་ཞེས་པ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བདག་པོ་དང་། དཀྱིལ་འཁོར་པའོ། །གང་གི་ཚེ་བདུད་རྩི་སྤྱང་བར་བྱ་ཞེ་ན་གསུངས་པ། བཞུགས་ཞེས[༥]་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཞེས་བྱ་བའི་དམ་ཚིག་གི་དཀྱིལ་འཁོར་དང་འདྲ་བ་རྣམས་རང་གི་སྙིང་གའི་ས་བོན་ལས་བྱུང་བའི་འོད་ཟེར་རྣམས་ཀྱིས་བཀུག་སྟེ་ནམ་མཁའི་ཕྱོགས་སུ་གནས་པའོ། །ཡེ་ཤེས་འབྱུང་གནས་རང་བཞིན་གྱིས། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྨི་ལམ་དང་སྒྱུ་མའི་རང་བཞིན་གྱིས་སོ། ༨།

དགུག་པ་དང་ཞེས་པ་ནི། བཀུག་པའི་ལྷའི་འཁོར་ལོ་ལ་མཆོད་ཡོན་ལ་སོགས་པ་ཕུལ་ཏེ་ཤིན་ཏུ་ཉེ་བར་བྱས་པའོ། །བཞུགས་པ་ཞེས་པ་ནི། དམ་ཚིག་གི་འཁོར་ལོ་དང་། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་དག་གཅིག་ཏུ་བྱས་པའོ།།

---

༡ ཐོ་༠རྡོ་རྗེ་ཤེ་ལྡེ་སྦྱོར་བ་ཡིས། ༢ ཀྱི་དཔེར་༠(སྣར་ཐང)གཞུག ༣ ཐ་༠བེ་༠ནི། ༤ ཐ་༠བས།
༥ ཐ་༠བེ་༠ཞེས་མི་འདུག

ཁྲོ་བ་ལ་སོགས་སྔགས་བཞི་ཡིས། །
མཉམ་པར་བཞག་པས་རྣམ་པར་བསྒོམ། ༤ །
མ་ཧེ་རྡོ་རྗེ་རྣམ་བསྒོམས་ལ། །
དཀྱིལ་འཁོར་གཙོ་བོ་རྣམ་བསྒོམ་བྱ། །
ཟླ་བའི་[2] དཀྱིལ་འཁོར་དབུས་གནས་པར། །
གཏི་མུག་རྡོ་རྗེ་རྣམ་བསྒོམ་བྱ། ༥ །

བཅིངས་པ་ཞེས་པ་ནི་རབ་ཏུ་བརྟུག་པ་ལས་འགྲོ་བར་མི་བྱེད་པའོ། །དབང་དུ་བྱེད་པ་ཞེས་པ་ནི་བཅིངས་པའི་སྟུག་ངསྔལ་བཏང་སྟེ་བདེ་བར་གྱུར་པའོ། །ཡང་། ཁྲོ་བ་ལ་སོགས་སྔགས་བཞི་ཡིས། །ཞེས་པ་ནི། ཨོཾ་སུམྦྷ་ར་ཛཿ། ཨོཾ་དྷ་ཀྐ་ཊ་སྟྭཾ། ཨོཾ་པདྨ་བཾ། ཨོཾ་ཁ་ཊ་ག་ཧོཿཞེས་པ་འདི་དག་གི་རིམ་པ་ཛཿཧཱུྃ་བ་བཞིན་དུའམ། ཛཿསྟྭཾ་བཾ་ཧོཿཞེས་པ་འདྲེས་སོ།༤།

གཤིན་རྗེ་གཤེད་པོ་གང་ཞིག་གང་ལ་བཅིབས་ནས་བསྒོམ་པར་བྱ་ཞེ་ན་གསུངས་པ། མ་ཧེ་རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། མ་ཧེ་ནི་མ་ཧེ་ཆེན་པོ་སྟེ། དེའི་སྟེང་དུ་རྡོ་རྗེའོ། །རྡོ་རྗེ་བདུད་ལས་རྒྱལ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་བསྒོམ་སྟེ་གདན་དུ་བྱས་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བདག་པོ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་གཙོ་བོའོ། །གསང་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ཞེས་པ་ནི་[2] ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་རོ། །གཏི་མུག་རྡོ་རྗེ་ནི་གཏི་མུག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དོ།༥།

---

1 རྒྱ་དཔེར་༠(སྟམྦྷ)དག་པ།

2 རྒྱ་དཔེར་༠ (སྟམྦྷམཎྜལེཥུ) དག་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་ཞེས་པ་དེ།

རྟ་བདུན་ལྡན་པའི་དབུས་གནས་པ། །
ཟླ་མ་ཞེས་བྱ་རྣམ་བསམ་[1]བྱ། །
དཀྱིལ་འཁོར་དམ་[2]པའི་དབུས་གནས་པ། །
འདོད་ཆགས་རྡོ་རྗེ་རྣམ་བསྒོམ་བྱ། །
ལས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་དབུས་གནས་པ། །
རྡོ་རྗེ་ལས་ནི་བསྒོམ་པར་བྱ། ༧ །

ཞི་བའི་གཏི་སྨུག་རྡོ་རྗེ་སྟེ། །
རྒྱུས་པ་དེ་བཞིན་ཟླ་མ་ཡིན། །

བདུན་གྱི་བདུན་པ་ནི་རྟ་སྟེ། གང་ལ་དེའི་བདུན་གྱི་བདུན་པ་ཅན་ཉི་མའོ། །དཀྱིལ་འཁོར་དམར་པོ་[3]ཞེས་པ་ནི་ཉི་མའོ། །ལས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཞེས་པ་ནི་ཉི་མའོ[4]། །ལས་ཀྱི་རྡོ་རྗེ་ནི་ཕྲག་དོག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དོ། །རྡུལ་ཚོན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཕྱོགས་ལ་སྣ་ཚོགས་པདྨའི་སྟེང་དུ་ཇི་ལྟར་རིགས་པ···ཉི་མ་དང་། ཟླ་བ་ལ་གནས་པ་རང་རང་གི་མཚན་མ་ཙམ་བྲི་བར་བྱའོ། ༧།

བསྒོམ་པའི་བདག་ཉིད་དང་། བརླམས་པ་རིག་པ་པོས་ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་གང་གིས་བྱ་བ་གང་གི་བསྟན་པའི་དོན་དུ། ཞི་བ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ་ལས་ཀྱི་རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཕྲག་དོག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་གྲུས་སོ།།

---

༡ སེ་°བསྒོམ། ༢ སེ་°རྒྱ་དཔེར་°(རཀྟ)དམར་པོ། ༣ སྣེ་°དམར་པོ་མི་འདུག

༤ སྣེ་°ཚིག་རྐང་འདི་མི་འདུག

འདོད་ཆགས་རྡོ་རྗེ་དབང་དུ་བྱས། །
རྡོ་རྗེ་ལས་ཀྱིས་ཐམས་ཅད་དུའོ། ༨ །
རྡོ་རྗེ་ལས་ཀྱི་སྦྱོར་བ་ཡིས། །
མི་ཆོལ་མི་ཡི་ཐོད་པར་བཞག །
དེ་བཞིན་མི་སྐྲས་སྦྱོང་བྱ་བྱ། །
དུར་ཁྲོད་དག་དུ་དུ་བ་བསྐྱབ[1]། ༩ །
མིག་སྨན་དག་ནི་དེ་བཞིན་དུ། །
མིག་སྨན་ལས་ཀྱི་བསྒོམ[2]་པ་དང་། །

ཐམས་ཅད་ཅེས་པ་ནི་ཀུན་ཏེ། གང་ཇི་སྲིད་[3]ད་ལྟར་བརྗོད་པ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ།༨།

མི་ཆོལ་ཞེས་པ་ནི་སྐྱེས་བུ་[4] བསད་པའི་ཤ་དང་། རུས་པའི་མར་ཁུའོ། །མི་སྐྲ་ཞེས་པ་ནི་སྐྱེས་བུ་བསད་པའི་སྐྲས་[5]ར་བ་དང་ལྡན་ཅིག་པའོ།། དུར་ཁྲོད་དུ་མར་ངོ་འི་བཅུ་བཞི་འམ་བརྒྱད་པ་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །བདང་ཞེས་པ་ལ་མིའི་ཐོད་པ་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །རྡོ་རྗེ་ལས་ཀྱི་སྦྱོར་བ་ཡིས། །ཞེས་པ་ནི་ཕྲག་དོག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་གཟུགས་སུ་འཛིན་པའོ།༩།

མིག་སྨན་ཞེས་པ་ནི་དྲེག་པ་ལས་གྲུབ་པའོ། །ལས་ཀྱི་བསྒོམ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཕྲག་དོག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་གཟུགས་ཀྱིས་དེ་ལྟར་[6]བྱའོ། །མིག་

---

༡ སྣ་•སྒྲུབ། ༢ སྣ་◦སྒོམ། ༣ སྣ་◦པེ་◦ཇི་སྙེད། ༤ སྣ་◦པེ་•སྐྱེས་བུ་ནི། ༥ སྣ་•པེ་•སྐྲ་ཡིས། ༦ སྣ་◦པེ་◦ལྟ་བར་བྱའོ།

ལས་ཀྱི་བརླས་པའི་སྦྱོར་བ་ཡིས། །
མིག་སྨན་འདི་ནི་འགྲུབ་པར་འགྱུར། །
ཁྲག་དང་གུར་གུམ་གཟུང་བྱས་ནས། །
སྒྲུབ་པ་བྱུག་པ་བསྒྲུབ་པར་བྱ། །

སྨན་དག་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དྲིག་[1]པ་དེས་སྐྱད་པའི་མཛུབ་མོ་ལའོ། །མིག་སྨན་གྲུབ་པ་ནི་གསུམ་སྟེ་ཇི་སྲིད་དུ་དྲིག་པ་[2]དེ་འབར་བ་ལས་མིག་སྨན་དུ་བྱས་པ་དེས་འཇིག་རྟེན་གསུམ་དུ་རྒྱུ་ཡང་སུས་ཀྱང་མི་མཐོང་ངོ་། །མིག་སྨན་གྱི་དྲིག་པ་ལ་[3]དུ་བ་བྱུང་ན་ས་འོག་གི་དངོས་གྲུབ་བོ། །དྲོ་བར་གྱུར་པའི་མིག་སྨན་གྱི་དྲིག་པས་ནི་འགྲོ་བ་ཀུན་གྱིས་བཙེ་བར་བྱའོ་[4] ། །འབར་བ་ལ་སོགས་པས་ཅི་བྱེད་པ་ཡིན་ཞེ་ན། གསུངས་པ། ལས་ཀྱི་ཧོ་རྗེ་རབ་སྦྱོར་བ། །ཞེས་པ་སྟེ་དོན་ནི་[5] འདི་ཡིན་ཏེ། ཕྲག་དོག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་[6]ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་གྱིས་ལག་པ་གཡས་པས་བཀབ་སྟེ། དྲིག་པ་དེ་ཇི་སྲིད་འབར་གྱི་བར་དུ་བརླས་པར་བྱས་ཏེ་དུ་བ་དང་དྲོ་བ་ལ་ཡང་ངོ།༡༠།

གུར་གུམ་ཞེས་པ་ནི་བུད་མེད་ཀྱི་མེ་ཏོག་གོ ཁྲག་ཅེས་པ་ནི་སྐྱེས་བུ་བསད་པའི་ཤའོ། །དེ་དག་ནི་མན་ངག་གོ །ཧོ་རྗེ་ལས་ཀྱི་རབ་སྦྱོར་བས།། ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཕྲག་དོག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་དང་འཛིན་པ་དང་[7]། གཉིས་པོ་དེ་དག་ཀྱང་ཆ་མཉམ་པ་ལས་གཅིག་ཏུ་བྱས་ཏེ་ཐོད་པར་བཙུག་ལ་ལག་

༡ སྣ་༠དྲག ༢ སྣ་༠པེ་༠ཏ་མི་འདུག ༣ སྣ་༠པེ་༠ལས། ༤ སྣ་༠པེ་༠བྱེད་དོ།
༥ སྣ་༠པེ་༠ཞེས་པ་ནི་དོན་འདི། ༦ སྡེ་༠གཉེན། ༧ སྣ་༠པེ་༠འཛིན་པའོ།

ལས་ཀྱི་རྡོ་རྗེ་སྦྱོར་བ་ཡིས། །
རྐང་[1]་མགྱོགས་དག་[2]་ནི་འགྲུབ་པར་འགྱུར། ༡༡ །
བདུད་རྩི་ལྔ་ནི་མཉམ་པ་ལ། །
ཤ་ལྔ་དང་ནི་ལྡན་པ་ཡིས། །
ལྷུགས་གསུམ་དུ་ནི་བཙུག་བྱས་ན། །
ལས་ཀྱི་སྦྱོར་བས་འགྲུབ་པར་འགྱུར། ༡༢ །
ཀུན་དའི་ལྷུགས་ཀྱི་རལ་གྲི་ནི། །
ལས་ཀྱི་སྦྱོར་བ་བསྒྲུབ་པར་བྱ། །

པས་ཁ་བཅད་ལ་དུར་ཁྲོད་དུ་རྡེ་སྲིད་ཀྱབ་པ་གསུམ་མ་བྱུང་གི་བར་དུ་བཟླས་པ་ནི་སྔར་བཞིན་ནོ།༡༡།

བདུད་རྩི་ལྔ་ཞེས་པ་ནི་ཤུ་དང་། པི་དང་། ར་དང་། ཤྭ་དང་། མའི་མིང་ངོ་[3]། །ཤ་ལྔ་ནི་[4]། གོ་ཀུ་ད་ཧ་ནའོ། །བཙུ་པོ་དེ་དག་ཆ་མཉམ་པའི་རིལ་བུ་ནང་[5]་ཡུང་བ་ཙམ་དུ་གཟུང་ངོ་། །ལྷུགས་གསུམ་གྱིས་དཀྲི་ཞེས་པ་ནི། གསེར་དང་། དངུལ་དང་། ཟངས་ཀྱི་སྣོད་དུ་རིམ་པ་བཞིན་དུ་རིལ་བུ་བྱས་ཏེ། དེ་རྣམས་ཀྱི་རིམ་པ་ཟླ་བ་བཞིན་མན་ཆའི་ཚད་གསུམ་དང་། བཞི་དང་། བཞི་ཙ་དགུ་པའོ། །བདུན་དང་གསུམ་དང་ལྔའི་ར་དིས་ལྷག་པ་ཅན་གྱི་རིལ་བུ་རག་ཆུང་གི་ཚད་ཙམ་མོ། །ལས་ཀྱི་སྦྱོར་བ་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ནི་[6]་སྔར་གྱི་བཞིན་ནོ།༡༢།

ཀུན་དའི་ལྷུགས་ཀྱི་རལ་གྲི་ཞེས་པ་ནི་གདོང་དྲུག་པའི་ཀུན་དའི་ལྷུགས་

---

༡ སྣ་༠སྐང་བ། ༢ ཅོ་དཔེར༠སྣ་。པེ་。བྱུག་པ། ༣ སྡེ་。མི་མོ་ཤུ་ཉུག
༤ སྡེ་。ཁ་སྦྲིད། ༥ སྣ་。པེ་。ནས། ༦ སྣ་。པེ་。ཐམས་ཅད་ཀྱི།

ལས་ཀྱི་རྡོ་རྗེ་སྦྱོར་བ་ཡིས། །
ལས་ཀྱི་རལ་གྲི་རབ་འགྲུབ་འགྱུར། ༡༢ །

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེའི······
གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད་ལས་ལས་ཀྱི་རིམ་[1]པར་ཕྱེ་བ་སྟེ་ལེའུ་གསུམ་པའོ།། །།

ཀྱི་རྒྱུ་ལས་བྱས་ཏེ་བརྡུངས་པའི་རལ་གྲིའོ། །ལས་ཀྱི་སྦྱོར་བ་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཕྲག་དོག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་རྣམ་པར་ལག་པས་གཟུང་བར་བྱ་སྟེ་ཇི་སྲིད་དངོས་གྲུབ་རྣམ་པ་གསུམ་མ་བྱུང་བ་དེ་སྲིད་དུ་བཟླས་པ་ཡང་སྔར་བཞིན་ནོ། །ལས་ཀྱི་རལ་གྲི་ཞེས་པ་ནི་ཕྲག་དོག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཉིད་ཀྱི་རལ་གྲི་དང་འདྲའོ། །ཞི་བ་ལ་སོགས་པ་ཇི་སྐད་གསུངས་པ་བཞག་སྟེ[2]། མངོན་སྤྱོད་ལ་སོགས་པ་ལས་གཞན་དག་ནི་གཙོ་བོ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་སྒྲུབ་པ་སྟེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་གསལ་པོ་ཉིད་དུ་མ་གསུངས་ཀྱང་ཤུགས་ལས་རྟོགས་པར་བྱ་ཞེས་པའོ། ༡༢།

ལས་ཀྱི་སྦྱོར་བའི་རིམ་པར་ཕྱེ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ལས་ནི་སྣ་ཚོགས་པའི······ཕྲིན་ལས་སོ་སོར་གསུངས་པའོ། །སྦྱོར་བ་ནི་དེ་དག་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་སོ། །དེ་དག་བསྟོད་པར་བྱེད་པའི་གཞུང་གི་ཚོགས་ལ་ཡང་ལེའུ་ཞེས་བྱ་སྟེ། དེས་ན་ལས་ཀྱི་སྦྱོར་བའི་རིམ་པར་ཕྱེ་བའོ། །རིམ་པར་ཕྱེ་བ་[3]གསུམ་པའི་བཤད་པ་རྫོགས་སོ།། །།

---

༡ རྒྱ་དཔེར་◦རིམ་པར་ཕྱེ་བ། མི་འདུག ༢ སྡེ་◦པེ་◦བཞག་པ་སྟེ།
༣ རྒྱ་དཔེར་◦རིམ་པར་ཕྱེ་བ་མི་འདུག སྡེ་◦པེ་◦ཕྱེ་བའི།

ལེའུ་བཞི་པ།

དེ་ནས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བཅོམ་ལྡན་འདས་······ རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ་ཆེན་པོ་ལ་བསྟོད་པའི་རྒྱལ་པོ་འདིས་བསྟོད་ནས་གསོལ་བ······ བདབ་པ།༡།

ལས་ཀྱི་དགེ་བའི་དགེ་བ་ལས། །
སེམས་ཅན་འཇུག་པ་ཇི་ལྟར་འགྱུར། །
རྡོ་རྗེ་ཆེན་པོས་བཤད་དུ་གསོལ། །
ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོ་རྣམས་ཀྱི་ལགས། ༢ །

ཞི་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་པའི་འཁྲུལ་འཁོར་གྱི་ལས་[1]ཀྱི་[2]རིམ··· པ་བརྗོད་པའི་དོན་དུ། དེ་ནས་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། འདི་ཞེས་བྱ་བ་ནི། གདི་སྨུག་རྡོ་རྗེའི་རང་བཞིན་ཁྱོད། །ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་བསྟོད་པའི་རྒྱལ་པོས་སྔར་གསུངས་པས་བསྟོད་ཅེས་པ་ལྷག་མའོ། །གསོལ་བ་གདབ་པ་ནི་དྲིས་པའོ།༡།

ལས་ཀྱི་དགེ་བས་རབ་ཕྱེ་བ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལས་ཀྱི་དགེ་བ་སྟེ་ཞི་བ་ལ་སོགས་པའོ། །རབ་དགེ་བ་ཞེས་པ་ནི་ཞི་བ་ལ་སོགས་པ་གང་ལ་ཕྱུལ་དུ་གྱུར་པའི་དགེ་བས་ཁྱད་པར་དུ་གྱུར་པ་སྟེ། དེ་ཡང་ལྷའི་གཟུགས་སུ་བསྒོམས་པ་ལ་སོགས་པས་བསྒྲུབ་བྱ་བསྒྲུབ་པ་ལས་སོ། །རྡོ་རྗེ་ཆེན་པོ་ཞེས་པ་ནི་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའོ། །ཡོ་ཤེས་རྒྱ་མཚོ་རྣམས་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་སོ།༢།

---

༡ རྒྱ་དཔེར་༠ (ཝི་ཁ་ན་བ་རི་ཥ་ཏེ°) འབྲི་ལུགས། ༢ སྣ་༠ཀྱི་མི་འདུག

དེ་ནས་རྡོ་རྗེ་འཛིན་རྒྱལ་པོས། །
ལས་ནི་ཐམས་ཅད་རབ་སྐྲབ་[1]པ། །
ཉེས་ཀུན་གསོ་བའི་བདག་ཉིད་ཀྱིས། །
འདི་སྐད་ཀྱི་ནི་ཚིག་གསུངས་སོ། ༢ །

བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཐུགས་རྡོ་རྗེ་ཉིད་ཀྱི་མཐུས་ཕྱག་འཚལ་ཞིང་མཆོད་པ་བྱས་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་ལན་……… གསུམ་བསྐོར་བ་བྱས་ཏེ། ཡང་དང་ཡང་དུ་ཕྱག་བྱས་ནས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་གསུང་ཉན་ཏོ། ༣ །

ཉེས་ཀུན་གསོ་བའི་བདག་ཉིད་ཅེས་པ་ནི་ཐམས་ཅད་དུ་སྐྱོན་ཐམས་…… ཅད་ལས་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་གྲོལ་བའོ། །འདིར་ལས་འདི་ནི་མ་རུངས་པའི་ལས་སུ་བསམ་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་ཏེ། རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུས་ཀྱང་ཕ་རོལ་པོ་དག་དཀྱིལ་བར་འགྲོ་བ་ལས་[2]ཀུན་ནས་འདོན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཇི་ལྟར་གཅོང་ནད་ཅན་ལ་སྨན་པ་མཁས་པས་བསྲེགས་པ་ལ་སོགས་པའི་ལས་བཞིན་ནོ། །འདི་སྐད་ཀྱིས་ནེ་ཚིག་ཅེས་པ་ནི། འཆད་པར་འགྱུར་བའི་འཁྲུལ་འཁོར་མཐར་ཐུག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཅེས་[3]བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་སོ། ༢།

རྒྱུན་དུ་བྱ་བའི་རིམ་པ་[4]བླ་མའི་མན་ངག་གཟུང་བའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། དེ་ནས་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ༣ །

---

༡ སྣ་° བསྐྲབ། ༢ སྡེ་° ག། ༣ སྣ་° པེ་° ཅེས་མི་འདུག ༤ རྒྱ་དཔེར་° (ཨུད་རྡ་) ཀུན་ལས།

དེ་ནས་རྡོ་རྗེ་འཛིན་རྒྱལ་པོས། །
དབང་དུ་བྱ་བའི་འཁྲུལ་འཁོར་བསྟན། །
ག་ཉིན་ཛེའི་གཞེད་ལས་འཁོར་ལོ་[1]མཆོག །
མ་བྱུང་འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་རོ། ༤ །
བུད་མེད་དབང་དུ་བྱ་བ་དང་། །
བསྲུང་བའི་དོན་དང་དེ་བཞིན་དུ། །
ཞི་བ་རོ་ཙ་ནས་བཟུང་སྟེ། །
གྲོ་གའམ་དེ་བཞིན་སྨྱུག་ཤུན་ལ། ༥ །

དབང་གི་དོན་དུ་འཁྲུལ་འཁོར་ནི་དབང་དུ་བྱ་བའི་འཁྲུལ་འཁོར་རོ། །ཅི་བརྗོད་ཅེ་ན་གསུངས་པ། ག་ཉིན་ཛེ་གཞེད་ཀྱི་འཁྲུལ་འཁར་ཞེས་པ་ནི་འདི་ལྟ་བུས་ཀྱང་འཁྲུལ་འཁོར་གྱི་སྤྱོད་ཡུལ་གྱུར་པར་བྱ་བའི་དོན་དུའོ།༤།

བསྲུང་བའི་དོན་དུ་ཞེས་པ་ནི་ཞི་བའི་དོན་དུའོ། །དབང་དུ་བྱ་བ་དང་ཞི་བ་དག་ལ་མངོན་པར་བརྗོད་པ་ནི་[2] ཞི་བའི་གོ་རོ་ཙ་ན་གཟུང་སྟེ་ཞེས་བརྗོད་པ་སྟེ་གཉིས་ཀ་ལ་ཡང་གོ་རོ་ཙ་ན་ཉིད་ཀྱིས་བྲི་བར་བྱའོ། །ཤོག་བུ་གང་ལ་བྲི་བར་བྱ་ཞེ་ན་གསུངས་པ། གྲོ་ག་ལ་སོགས་པ་སྟེ། སྨྱུག་མའི་ཤུན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྨྱུག་མའི་ཚིགས་ཀྱི་ནང་གི་སྟེང་པར་གནས་པ་ཤོག་བུ་དང་འདྲ་བའི་པགས་པའོ། །འཁོར་ལོ་བྲི་བའི་ལེའུ་དྲུག་པ་ལས་འཆད་པར་འགྱུར་རོ། །དཀྱིལ་འཁོར་རིམ་པ་གསུམ་བྱས་ཏེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ།༥།

---

༡ ཀྱི་དཔེར་༠ (ཨནྡྲཱཥེ) འཁྲུལ་འཁོར་རྣམས། ༢ སྟེ་༠ན།

འཁོར་ལོ་གཉིས་ནི་མཉམ་སྦྲིས་ནས། །
ནམཿམིང་གིས་རྣམ་བསྟེན་[1]ལ། །
ནག་དང་ཡུ་ཅན་མ་ཡིན་པའི། །
ཁམ་ཕོར་གཉིས་ནི་ཁ་སྦྱར་དེ། ༧ །
མར་དང་སྦྲང་རྩིས་བཀང་བར་གཞུག །
སྐུད་པ་དཀར་པོས་ཁམ་ཕོར་བཅིང་། །
ཤར་དུ་མངོན་པར་ཕྱོགས་པ་ཡིས། །
མེ་ཏོག་དཀར་པོས་དུས་གསུམ་གཏོར། ༨ །
གཤིན་རྗེ་མཐར་བྱེད་རྒྱ་ཤེལ་འདྲར། །
བདག་ཉིད་བསྒོམས་ནས་མདུན་བཀོད་ལ། །

ནམོ་ན་མ་རྣམས་བསྟེན་ལ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ནམའི་སྐྲས་ནམ་རྣམ་པར་བརྟེན་པ་སྟེ་ཞི་བ་ལའོ། །འདིར་ཉེ་བར་མཚོན་པ་ལས། ལས་གང་དང་གང་བྱེད་པ་དེ་དང་དེར་གསུངས་པའི་སྔགས་ཀྱིས་[2] སྤྲེལ་བའོ། །འཁོར་ལོ་སྦྲིས་ལ་གཞག་པའི་གནས་གསུངས་པ། གནག་དང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མདོག་གནག་པའོ།། ཡུ་[3]ཅན་ཞེས་བྱ་བ་དབྱུས་ཀྱི་ཆའོ། །ཕྱི་དང་ནང་དང་དམན་པ་དག་ཀྱང་ངོ་།། སོགས་པའི་སྐྲ་ནི་གས་པ་དང་ཡོ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་བདག་ཉིད་དུ་བསམ་ཞེས་པར་འབྲེལ་ཏོ།༧–༨།

ཇི་ལྟ་བུར་འགྱུར་ཞེ་ན། ཟླ་བའི་འོད་ཟེར་དང་འདྲ་བ། གདི་སྨུག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དོ། །བསྒྲུབ་བྱ་མདུན་དུ་དགོད་ཅེས་བསྒྲུབ་བྱ་གཞན་དག་

[1] སྣ་° ནུམ་ནམས་རྣམ་སྟེན། [2] སྣ་° ཀྱིས་མི་འདུག [3] སྡེ་° ཡུ།

ལྷ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་ནས། །
བསྒྲུབ་བྱ་བཞུས་ནས་དབང་བསྒྱུར་བྱ། ༩ །
བདུད་རྩི་ལྔ་ཡིས་གང་བ་ཡི། །
ཐུམ་པ་དཀར་པོ་[1] ལྷ་བ་འདྲས། །
རྫོགས་སངས་དུ་མས་ཁྲུས་བྱས་དེ། །
བཞུས་ནས་སྔགས་ཀྱི་བཟླས་པ་བརྩམ། ༡༠ །
ཨོཾ་ནམཿ[2] ཧྲཱིཿཥྚྲཱིཿཝི་ཀྲྀ་ཏཱ་ན་ན་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ་ཕཊ་[3] དེ་བ་ད་ད་ཡ་ཨ་ནནྟ་ཀོ······

དང་འབྲེལ་དོ། །ལྷ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འཁྲུལ་འཁོར་ཏེ་ལྷའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་བྱ་སྟེ། དེའི་དབུས་སུ་གསོན་པའོ། །བསྒྲུབ་བྱ་ཞེས་པ་ནི་གང་ཞེ་བར་བྱ་བའོ།༩།

རྫོགས་སངས་རྒྱས་ཞེས་བྱ་བ་ནི། རང་གི་སྙིང་གའི་ས་བོན་ལས་སྤྲོས་དེ། གདོ་སྡུག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དུ་མ་རྣམས་ཀྱིས་སོ། །དེ་ཞེས་པ་ནི་བསྒྲུབ་བྱའོ།། བཞུས་ནས་ཞེས་པ་ནི་དེ་ལྷ་བུའི་རྣམ་པར་བསམ་པར་བྱའོ། །སྔགས་བརྗོད་པ་གསུངས་པ། ཨོཾ་ཧྲཱིཿ དེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་དེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྔགས་ཉིད་དེ་དང་ཐོར་ཨོཾ་ཡིག་ནས་ཧཱུྃ་ཡིག་གི་[4] མཐར་ཐུག་པས་ཡི་གེ་དགུའོ། །དེའི་ཕ་རོལ་དུ་སྤེལ་བའི་སྔགས་གཉིས་ཀྱི་ནང་དུ་སོང་བ་བསྒྲུབ་བྱའི་མིང་བྲི་བའོ། །ཞི་བའི་དམ་ཚིག་ནི་ཞི་བའི་སྔགས་སོ། །གསུངས་པའོ་ཞེས་པ་ནི་བརྗོད་ཟིན་

---

1 སེ་ ༠ དཀར་པོས། 2 རྒྱ་དཔེར་ ༠ ནམཿ མི་འདུག 3 རྒྱ་དཔེར་ ༠ ཥ་ཊ། ཨོཾ་ནམོ་ཞེས་ཁུང་འདུག
4 སྡེ་ ༠ དཀྲི། 5 སྣ་ ༠ སེ་ ༠ ཏི་ཊུ་གི་ཨ་གེའི།

ཙནམཿསཱུ་ཏྲ། ཞི་བའི་ཆོ་ག་[1] གསུངས་པའོ། ༡༡ །

སྐྱེས་པ་ཞི་[2] ལ་གྲུར་ཀུམ་གྱིས། །

བྲི་བྱ་དེ་བཞིན་རྒྱས་པ་ཡང་[3]། །

འཁོར་ལོ་གཉིས་ནི་ཁ་ཆེ་ཡི། །

སཱུ་ཏྲ་ནས་མིང་ནི་བཀྲུན་པ་ཡི། ༡༢ །

བསྐྲུབ་བྱའི་མིང་ནི་བྲིས་བྱས་ལ། །

མར་དང་སྤྲང་རྩིས་བཀང་ནས་ནི། ། .

པ་སྟེ། སྦྱོར་གྱི་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ་ཞེས་བྱ་བ་[4] ནི་འབྲེལ་ཏོ།༡༠—༡༡།

སྐྱེས་པ་ཞི་བ་ལ་སྣག་ཚ་གང་གིས་བྲི་བ་གསུངས་པ། སྐྱེས་པ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ལྷ་ལ་སོགས་པ་ཡང་བུད་མེད་ཞི་བའི་ཆོ་ག་དེ་ཡིས་སོ།། དེ་བཞིན་རྒྱས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྐྱེས་པ་རྒྱས་པའི་སྐབས་སུ་ནི་གུར་གུམ་ཉིད····· ཀྱིས་སོ། །བུད་མེད་རྒྱས་པ་ལ་གང་གིས་བྲི་བར་བྱ་བ་གསུངས་པ། འཁོར་ལོ་གཉིས་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ་བུད་མེད་རྒྱས་པའི་སྐབས་སུ་ཡང་གུར་གུམ་གྱིས་སོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །སཱུ་ཏྲ་མིང་ཞེས་པ་ནི་སཱུ་ཏྲའི་སྒྲ་[5] ངེས་སྦྱོལ་བའོ། །དང་པོ་དང་ཐ་མ་སཱུ་ཏྲའི་སྒྲས་སྦྱིན་པར་བྱའོ།༡༢།

གང་དང་སྦྱོལ་བར་བྱ་བ་གསུངས་པ་བསྒྲུབ་བྱ་ཞེས་བྱའོ། །ཅི་བྱས་ཤེ་ན་གསུངས་པ། མིང་ནི་བྲངས་ནས་ནི་ཞེས་པ་སྟེ། བསྒྲུབ་བྱའི་མིང་གིས་

---

༡ ཀྱི་དཔེར་◦(སམཡ) དམ་ཚིག ༢ སྡེ་◦ བཞི། ༣ སྣ་◦ ཡང་། ༤ སྣ་◦ བར་འབྲེལ་ཏོ།

༥ པེ་◦ སྒྲ་མི་འདུག

ཁམ་ཕོར་ཁ་སྦྱར་ནང་དུ་གཞུག །
སྐུད་པ་མེར་པོས་བཅིངས་ནས་ནི། ༡༣ །
མེ་ཏོག་མེར་པོ་དུས་གསུམ་གཏོར། །
བྱང་དུ་ཁ་བལྟས་མདོག་མེར་བའི། །
གཤིན་རྗེའི་གཤེད་དུ་བདག་ཉིད་བསམ། ༡༤ །
བསྒྲུབ་བྱ་ཟླ་བ་མེར་ནག་ལ། །
བྲམ་པ་མེར་པོས་བཀྲུ[1]བྱ་ཞིང་། །
དབང་བསྒྱུར་བ་ནི་བསྒོམ་བྱས་ལ། །
སྲོས་ལ་ཀྲུས་པའི་བཟླས་པ་བྱ། ༡༧ །

ཨོཾཧྲཱིཿཥྚྲཱིཿཝིཀྲྀཏཱནནཧཱུཾཧཱུཾཕཊཕཊསྭཱཧཱ། དེབདཏྟམཱརཡཥྚོཾཀྲུཾ[2]

སྤེལ་བར་བྱ། །ཞེས་པའི་དོན་ནོ། །བྲིས་དེ་འཁྲུལ་འཁོར་དུ་གཞུག་ཅེས་པ་ལྷག་མའོ། ༡༣།

ཁ་དོག་མེར་པོ་གཤིན་རྗེ་གཤེད། །ཅེས་བྱ་བ་ནི་ཡྨ་མ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དོ། །ཟླ་བ་མེར་པོ་གནས་ཞེས་པ་ནི་འཁྲུལ་འཁོར་ཉིད་ཟླ་བ་མེར་པོར་བསམས་དེ་དེར་གནས་པ་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །བྲམ་པ་མེར་པོ་ཞེས་པ་ནི་སྙིང་གའི་ས་བོན་ལས་བྱུང་བའི་ཡྨ་མ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དུ་མའི་ལག་པས་འཛིན་པའོ། ༡༤–༡༧།

ཧོཥྚ་ཅེས་པ་ནི་ཧོཥྚའི་སྔགས་མིང་སྤེལ་བའོ། །ཀྲུས་པའི་དམ་

༡ སྣ་ ° བསྐུར། ༢ ཅོ་ནེ་ ° ཀྲུཾཀྲུཾ།

སྭཱཧཱ།[1] ཨོཾཧྲཱིཿཥྚྲཱིཝིཀྲྀཏཱནནཧཱུཾཧཱུཾཕཊཕཊ།[2] བཽཥཊ[3]དེབདཏྟསྱཥྚིཾ ཀུརུབཽཥ[4]ཊསྭཱཧཱ། འདི་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་རྒྱས་པའི་ཆོ་ག་གསུངས་པའོ།༡༧།

གྲོ་གའམ་རས་ལ་རྒྱ་སྐྱེགས་ཀྱི། །
ཁ་བའམ་ཙན་དན་དམར་པོའམ། །
སྨིན་ལག་གི་ནི་ཁྲག་ཀྱང་རུང་། ༡༥ །
ཡི་གེ་ཧྲཱིཿཡིས་བརྡེན་པ་ཡིས།[5] །
འཁོར་ལོ་གཉིས་ནི་མཉམ་པར་བྲི། །
འཇོར་ལོ་ནག་པོ་སོགས་བྲལ་བའི། །
ཁམ་ཕོར་གཉིས་ནི་ཁ་སྦྱར་དུ། ༡༦ །

ཚིག་ནི་རྒྱས་པའི་ཆོ་གའོ།༡༧།

དབང་དུ་བྱ་བའི་ཆོ་ག་གསུངས་པ། གྲོ་གའམ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། རས་ནི་ཁྲག་གིས་བསྒོས་པའི་རས་སོ། །སྨིན་ལག་གི་ཁྲག་ཅེས་པ་ནི་གང་དབང་དུ་བྱ་བར་འདོད་པ་པོ་དང་། བྱེད་དུ་འཇུག་པར་ཡང་དག་པར་རྫོམ་པ་སྟེ། དེའི་གཡོན་པའི་སྨིན་ལག་གི་ཁྲག་གིས་སོ། །དེ་དག་ཀྱང་ངེས་པར་སྦྱང་བར་བྱ་བའི་རྒྱ་སྐྱེགས་ལ་སོགས་པས་སོ་སོའམ་བསྡུས་པས་སོ།༡༥།

ཡི་གེ་ཧྲཱི་ཡིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཉེ་བར་མཚོན་པ་སྟེ། བཽཥ[6]ཊའི་སྔགས་

---

༡ རྒྱ་དཔེར་༠ སྭཱ་ཧའི་རྗེས་སུ་བཽཥཊྭ་འདུག ༢ རྒྱ་དཔེར་༠ སྭཱ་ཧཱ་ཡང་འདུག ༣ རྒྱ་དཔེར་༠ ཨོཾ་བཽཥཊ། ༤ རྒྱ་དཔེར་༠ བཽཥཊཧེཕཊ། ༥ སྣར་༠ ཡི། ༦ རྒྱ་དཔེར་༠ བཥཊ།

མར་དང་སྦྲང་རྩིས་བཀང་བ་བཞག །
སྐུད་པ་དམར་པོས་བཅིངས་བྱས་ལ། །
ནུབ་ཕྱོགས་སུ་ནི་ཁ་བལྟས་ནས། །
མེ་ཏོག་དམར་པོས་མཆོད་པར་བྱ། ༡༩ །
བདག་ཉིད་གཤིན་རྗེ་མཐར་བྱེད་པ། །
ཁ་དོག་དམར་པོ་ཆེར་འབར་བ། །
ཟླ་བ་དམར་པོ་ལ་གནས་པའོ།[1] །
བསྒྲུབ་བྱ་ཡང་ནི་ནམ་བསམ་བྱ། ༢༠ །
རང་གི་ལུས་ལས་བྱུང་བ་ཡི། །
འོད་ཟེར་དམར་པོ་ལྕགས་ཀྱུ་ཡིས། །

ཀྱང་སྤྱིལ་ལོ་ཞེས་ཉེ་བར་སྟོན་པར་འགྱུར་རོ། །ནག་སོགས་བྲལ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྔར་གྱི་བཞིན་ནོ།།༡༨–༡༩།

ཁ་དོག་ཁྲག་ཅེས་པ་ནི་དམར་པོའི་བདག་ཉིད་ཅན་ནོ། །གཤིན་རྗེ་མཐར་བྱེད་ཅེས་པ་ནི་བདག་ཉིད་འདོད་ཆགས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དུ་བྱས་པས་སོ། །ཟླ་བ་དམར་པོ་ལ་གནས་པ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་འཁྲུལ་འཁོར་ཉིད་ཟླ་བ་དམར་པོར་བསམ་པར་བྱས་ལ་བསྒྲུབ་བྱ་དེར་ཆུད་པའོ།༢༠།

རང་ལུས་ལས་བྱུང་འོད་ཟེར་གྱིས། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་རང་ལ་གནས་པའི་ས་བོན་ལས་བྱུང་བའི་འོད་ཟེར་གྱི་ལྕཀྱུའི་གཟུགས་སོ། །ཁྲི་ཅམ་ནི་སྟོང་

---

[1] ཞེ་, བའི།

བསྒྲུབ་བྱ་དགུག་པར་བྱ་བར་བསམ། །
སྔགས་ནི་སྟོང་ཕྲག་ཁྲི་བཟླས་བྱ། ༢༡ །
དེས་ནི་བསྒྲུབ་བྱ་ཉམས་གྱུར་ནས། །
རྐང་པ་གཉིས་སུ་ལྕགས་གྱུར་ནས། །
གོས་བྲལ་སྐྲ་ནི་བཤིག་གྱུར་བ། །
རྣམ་པར་བསམས་ལ་བཟླས་པ་བརྩམ། ༢༢།

གལ་ཏེ་དབང་དུ་མ་གྱུར་ན། །
མར་ལ་སོགས་པ་བྲལ་བྱས་ལ། །
དུ་བ་མེད་པའི་སེང་ལྡེང་མེས། །
འཁོར་ལོ་དེ་ནི་སྐྲུབ་པོས་བསྲོ[1]། ༢༣ །

ཨོཾཧྲཱིཿཥྚྲཱིཝིཀྲྀཏཱནནཧཱུཾཧཱུཾཕཊཕཊསྭཱཧཱ།[2] ཧོཿརེབདད[3] ཞཤཾཀུ
ཙཧོཿ ཨོཾཧྲཱིཿཥྚྲཱིཝིཀྲྀཏཱནནཧཱུཾཧཱུཾཕཊཕཊསྭཱཧཱ། བཾཥཊརེབདདསྲཱ ཞཤྲཱཀ

བཅུ་སྟེ། འདིར་ཡང་ཉེ་བར་མཆོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ལས་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་སྔགས་སྟོང་ཕྲག་བཅུ་བཟླས་པར་བྱའོ།༢༡–༢༣།

སྔགས་ཁྲི་བཟླས་པ་བྱས་པས་ཀྱང་བསྒྲུབ་བྱ་མ་གྲུབ་ན་བྱ་བའི་ཁྱད་··· པར་གསུངས་པ། གལ་ཏེ་དབང་དུ་མ་གྱུར་ན། །འཁྲུལ་འཁོར་བསྒོམས་[4] ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དེ་སྲི་བར་ནི་སྔར་གྱི་སྔགས་བཟླས་པར་བྱའོ། །མར་

༡ སྣ་° སྲོས། པེ་° སྲོ། ༢ ཅོ་དཔེར་° སྭཱ་ཧཱ་མི་འདུག ༣, ཅོ་དཔེར་° རེབདདསྲཱལབྷཛདདཏཾ། ༤ སྣེ་° འཁྲུལ་འཁོར་བསྒོམས་མི་འདུག

ཤམནཡབོཛྲ། འདི་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དབང་དུ་བྱ་བའི་ཆོ་ག་གསུངས་པའོ།༡༧ །

དུར་ཁྲོད་གོས་སམ་ཡང་ན་ནི། །
རང་བྱུང་གོས་བསྐུས་རས་ལ་ནི། །
ཁྲག་དང་རྒྱ་སྐྱེགས་བསྲེས་པ་ཡིས། །
འཁོར་ལོ་གཉིས་ནི་མཉམ་བྲིས་ལ། ༡༤ །
ཡི་གེ་ཛཿདང་ཡི་གེ་ཧྲཱིས། །
མིང་ནི་རྣམ་པར་བརྡེན་བྱས་ལ། །

ལ་སོགས་པ་བྲལ་[1] བྱས་ལ། །ཞེས་པ་ནི་མར་དང་སྦྲང་གིས་གང་བའི་ཁམ་ཕོར་ཁ་སྦྱར་ནས་གདོན་པའོ།༡༢–༡༧ །

དགུག་པ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། དུར་ཁྲོད་ཅེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཆོ་ལ་ཀ་ས་ནི་རས་སོ། །ཡང་ནའི་སྒྲ་ནི་དང་གི་དོན་དེ[2]། འཆད་པའི་དབང་དུ་བྱས་ནས་བླངས་ཏེ་ཕྱོགས་གཞན་གྱི་དོན་ཏོ། ། དེས་[3]ན་རང་བྱུང་གི་མེ་ཏོག་གི་རས་སམ། དུར་ཁྲོད་ཀྱི་རས་ལ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ཁྲག་དང་རྒྱ་སྐྱེགས་ཕྱེད་བསྲེས་པས། །ཞེས་པ་ནི་རྒྱ་སྐྱེགས་སམ་རང་གི་ལག་པའི་[4] སྲིན་ལག་གི་ཁྲག་བསྲེས་པས་སོ།༡༤།

ཡི་གེ་ཛ་དང་ཡི་གེ་ཧྲི་[5] ཞེས་པ་ནི་དང་[6]བྲོ་དང་ཐ་མར་ཛཧྲཱིཿ[7]ཞེས་པའི་ཡི་གེ་གཉིས་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །བཙུན་མོ་ཡི་ནི་པདྨའི་སྟོད། །ཅེས་པ

༡ སྡེ་° དབྲག ༢ ཅོ་° དོན་ཏོ། ༣ ཅོ° དེར་ན། ༤ རྒྱ་དཔེར་° (ཤྨཤཱནཏྲ) ཡག་གཡོན། ༥ སྡེ་° ཏྲི།
༦ ཅོ་° ཞེ་° དང་པོ་མི་འདུག ། ༧ སྡེ་° ཏྲི།

བཙུན་མོ་ཡི་ནི་པདྨའི་སྟོད། །
ཁ་སྦྱོར་ནང་དུ་བཙུད་བྱས་ཏེ། ༢༦ །
སྐྱུད་པ་དམར་པོས་བཅིངས་བྱས་ལ། །
མེ་ཏོག་དམར་པོས་མཆོད་པར་བྱ། །
བདག་ཉིད་གཤིན་རྗེ་མཐར་བྱེད་པ། །
ཉུབ་ཀའི་ཉི་མ་དང་འདྲ་དམར། ༢༧ །
ལྕགས་ཀྱུ་དམར་པོས་བཀུག་པ་ཡི། །
བསྒྲུབ་བྱ་དང་ནི་རྣམ་བསྒོམ་བྱ། །
སྙིང་ལ་ལྕགས་ཀྱུས་བརྒྱབ་ནས་ནི། །
སྐེ་ནས་ཞགས་པས་བཅིང་བྱས་ཏེ། ༢༨ །
གཅེར་བུ་སྐྲ་ནི་མ་བཅིངས་པར[1]། །

ནི་བུད་མེད་ཀྱི་ཐོད་པའོ། ཁ་སྦྱོར་ཞེས་པ་ནི་གཉིས་པོ་དེ་དག་འོག་དང་སྟེང་དུ་གཞག་པའོ།༢༦།

དམར་ཞེས་པ་ནི་འདོད་ཆགས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དོ། །ལྕགས་ཀྱུ་དམར་པོས་བཀུག་པ་ཡི། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་རང་གི་སྙིང་གའི་ས་བོན་ལས་འོད་ཟེར་ལྕགས་ཀྱུའི་རྣམ་པས་བཀུག་པའོ། །ཞགས་པ་བཅིངས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཕྱག་གཡས་པའི་མཐོན་མ་པདྨ་དམར་པོའི་ལྕུག་མ་འཛིན་པས་འཆིང་[2]བའོ།༢༧–༢༨།

རླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་སྦྱོར་བ་ཡིས། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡཾ་དམར་པོ་

---

༡ ཅོ་དགེར་། ཚིག་རྐང་འདི་མི་འདུག ༢ སྣར་། ཞེ་། འཆང་བའོ།

ཀླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་སྦྱོར་བ་ཡི་[1]། །
སེ་ཀྲྀ་[2]དམར་པོའི་སྟེང་འདུག་ལ། །
ཇམ་ལྷ་ཡིས་ནི་བཀུ་བྱ་ཞིང་། །
འོངས་པ་རྟ་ནི་བསམ་པར་བྱ། ༢༩ །

གལ་ཏེ་བསྐྱབ་བྱ་མི་འོང་ན། །
སེང་ལྡེང་གི་ནི་མེ་མདག་[3]ལ། །
དེར་[4] ནི་བཟླས་པ་བརྩམ་པར་བྱ། །
བརྟུལ་ཞུགས་ཅན་གྱི་འཁོར་ལོ་བསྒྲ །༣༠ །

ཨོཾ་ཧྲཱིཿཥྚྲཱིཿཝི་ཀྲྀ་ཏཱ་ན་ན་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ་ཕཊ་[5]སྭཱ་ཧཱ། ཨོཾ་ཧྲཱིཿཨ་མྲྀ་ཏ་ཀ་ར་ཥ·····

ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་ཀླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་གཞུའི་རྣམ་པ་སེང་གེ་དམར་པོའི་འོག་ཏུ་བལྟ་བར་བྱའོ། །ཇམ་ལྷའི་ཞེས་པ་ནི་སྲུ་དང་། བི་[6]དང་། ར་དང་། སྲོ་དང་། མ་ཡིས་སོ། །དབང་གི་རབ་ཏུ་དབྱེ་བས་ནི་དགུག་པ་སྟེ་དེར་མ་བཟློད་ཀྱིས་ཀུང་ཐམས་ཅད་སྔར་བཞིན་དུ་རྫོགས་པར་བྱའོ། ༢༩།

མངོན་པར་འདོད་པ་མ་གྲུབ་པས་ལས་ཀྱི་ཁྱད་པར་གྱི་དོན་དུ·········
གསུངས་པ། གལ་ཏེ་བསྐྱབ་བྱ་མི་འོང་ན། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། འཁྲུལ་འཁོར་བསྒྲོས་ཞེས་པ་ནི་ཐོད་པ་ཁ་སྦྱར་ནས་བདོན་ཏེ་བཟླས་པ་དང·····

[1] ན་ཡིས། [2] ས་སེང་སྡེང་། [3] ས་འདག [4] ས་དེ་ནི། [5] སྡེ་ཕཊ་ཕཊ་ཛཿཧྲཱིཿཨ་མྲྀ་ཏ་ཀཱ་ཡ་ཧཱུྃ་ཛཿ། ས་ཧྲཱིཿཨ་མྲྀ་ཏ་ཨ་ཀ་ར་ཥ་ཡ་ཧྲཱིཿཨོཾ་ཧྲཱིཿཥྚྲཱིཿཝི་ཀྲྀ་ཏཱ་ན་ན་ཧཱུྃ་ཕཊ། [6] སྡེ་བོ།

ཡཀྲཱིཀྲཱིཥཊཥཊསྭཱ ཧཱཀྲཱིཿའདི་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དགུག་པའི་ཚིག…………གསུངས་པའོ།༢༡།

དར་ཁྲོད་གོས་ལ་མཁས་པས་ནི། །
ཡུང་བ་ཡི་ནི་ཁ་བ་ཡིས། །
འཁོར་ལོ་གཉིས་ནི་མཉམ་པར་བྲི། །
ཡི་གེ་ལཾ་གྱིས་བརྟེན་པ་ཡི། ༢༢ །

བསྒྲུབ་བྱའི་མིང་ཡང་བྲི་བར་བྱ། །
ཁམ་ཕོར་ཁ་སྦྱོར་ནང་དུ་སྟེ། །
ཁམ་ཕོར་སེར་པོའི་སྟེང་དུ་བཞག །
དེ་ལ་མཁས་པས་རི་ཁཱ་བྲི། ༢༣ །

འཁྲུལ་འཁོར་ཡང་དག་པར་རྩོམ་[1]མོ། །བསྒོ་བའི་ཚེ་སྔགས་ཀྱི་བཟླས་པ་ནི་སྔར་བཞིན་ནོ།༢༠–༢༡།

རིངས་པར་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། ཡུང་བ་ཡི་ནི་ཁ་བ་ཡིས། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ཡུང་བ་ནི་རབ་ཏུ་གྲགས་པའོ། ཁ་བ་ནི་བ་བླའོ། །དེ་དག་གིས་ཡང་དག་པར་བྲིས་ཏེ་ཁམ་ཕོར་ཁ་སྦྱོར་གྱི་ནང་དུ་བཅུག་ལ་ཁམ་ཕོར་སེར་པོའི་སྟེང་དུ་རི་མོ་བྲི་བར་བྱའོ་ཞེས་འབྲེལ……ཏོ།༢༢–༢༣།

---

༡ སྣ་ བརྩམ།

ཟེ་ཁྲ་བདུན་ནམ་ཡང་ན་བཞི། |
མཉམ་པར་བཞག་པས་བྲི་བར་བྱ། |
རི་རབ་སློག་[1]བརྒྱད་ཅེས་གྲགས་པ། |
དེ་ཡི་སྟེང་དུ་མཉམ་པར་བྲི། ༢༨ |

ཡི་གེ་ཧཱུྃ་དང་ཡི་གེ་བཾ། |
རི་རབ་དེ་ནི་འདེབས་པར་བྱ། |
དེའི་སྟེང་དུ་ལཾ་ཡིག་ལས། |
དབང་ཆེན་དཀྱིལ་འཁོར་དགོད་པར་བྱ། ༢༩ |

དེ་ཡི་སྟེང་དུ་མཉམ་པར་བྲི། །ཞེས་པ་ནི་རི་མོ་བཞིའམ། བདུན་གྱི་རི་མོའི་ཐིག་ཏུ་བསྒོམ་པར་བྱ་བ་ནི་རི་མོ་ཉིད་རྒྱ་མཚོའི་བདག་ཉིད་ཀྱིས······ བསྐོར་བའི་རི་རབ་བསྒོམ་པར་བྱ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །༢༨ |

རི་རབ་འདི་ཡིས་འདེབས་པར་བྱ། །ཞེས་པ་ནི་རི་རབ་ཀྱི་སྟེང་[2]དུ་ཧཱུྃ་ཡིག་བཟླ་བར་བྱ་བ་སྟེ། སྒྲུབ་པ་པོའི་དབང་དུ་བྱས་པའི་གཡོན་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆར་རོ། །ཆ་གཞན་དུ་ཡང་[3]བཾ་ཡིག་སྟེ། །སྒྲུབ་[4]པ་པོའི་ལུས་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ་གཡས་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆར་རོ། །དེའི་སྟེང་དུ་ཞེས་པ་ནི་རི་རབ་ཀྱི་འོག་ཏུའོ། །དབང་ཆེན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སའི་དཀྱིལ་འཁོར་ཏེ། གྲུ་བཞི་མདོག་སེར་པོ་གྲྭ་རྣམས་སུ་རྡོ་རྗེ་རྩེ་གསུམ་པས་མཚན་པའོ། །༢༩།

---

༡ ཞེ་ ◦ ཚོག ༢ ཐུ་ ◦ ཏུ་མི་འདུག ༣ སྡེ་ • ཡིཾ། ༤ ཐུ་ ◦ བསྒྲུབ།

སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེས་མནན་པ་ལ། |
སྐྲུད་པ་སེར་པོས་བཅིངས་ནས་ནི། |
གཤིན་རྗེའི་གཤེད་པོ་མདོག་གསེར་པོ[1]། ༢༦ |
དབང་ཆེན་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་པ། |
བསྒྲུབ་བྱ་སེར་པོ་རྣམ་བསམས་ལ། |
རི་རབ་ཀྱིས་ནི་མནན་དྲས་པ། ༢༧ |
ཕྱུག་ན་[2]རྡོ་རྗེས་མནན་བྱས་པ། |
དབང་ཆེན་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འོག་ཏུ། |

སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེས་མནན་པ་ལ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེས་མནན་པའོ། །ས་འོག་ཏུ་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ།༢༦།

དབང་ཆེན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་བཞེངས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རང་ཉིད……དབང་ཆེན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་པ་བསྒོམས་[3]པའོ། །བསྒྲུབ་བྱ་རྣམས་བསམས་ནི་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེའི་འོག་ཏུ་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །རི་བོ་རྣམས་ཞེས་པ་[4]ནི་རི་རབ་ཉིད་ཀྱིས་སོ། །རྣམས་ཀྱིས་མང་པོའི་ཚིག་ཉིད་ནི་རི་རབ་མང་པོ་དང་ལྡན་པས་མནན་པ་སྟེ་ལྷོག་བརྒྱད་པའི་ཕྱིར་རོ།༢༧།

གང་དུ་གཞག་ཅེ་ན། གསུངས་པ་དཀྱིལ་འཁོར་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེའི་འོག་ཏུ་མནན་པའོ། །དབང་ཆེན་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འོག་ཏུ།[5] །དོན་ནི་འདི་

---

༡ ཀྱི་དཔེར° (ཨུ་དྲ་སྨྲ་ནཱ་ཙ་བི་ཙི་ཏྲ་ཡེ་ཏ) བདག་ཉིད་དུ་ནི་རྣམ་པར་པས ། (དཀཱི་ཀྲྀ་ཏྲི་ཤུ་ལོ་ཡོ་གི) རྣལ་འབྱོར་ལྷོ་རུ་མངོན་ཕྱོགས་ནས། །ཞེས་ཀྱང་འདུག ༢ ཀྱི་དཔེ་ར° (བིཀྲ) སྣ་ཚོགས། ༣ སྣ° བསྒོམ། ༤ སྣ° བྱ་བ་ནི། ༥ སྡེ° ཚིག་རྐང་འདི་མི་འདུག

མནྡཱར་སོགས་རི་བོ་དང་། །
སྣ་ཚོགས་རི་བོ་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་། །
བསྐྱབ་བྱ་མཐན་པར་བསྐོམ་པར་བྱ། །
དེ་ལ་གནས་ནས་བཟླས་པར་བྱ། ༢༨ །

ཨོཾ་ཧྲཱིཿཥྚྲཱིཿབིཀྲྀཏཱནན་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ་ཕཊ་ལཾ་དེ་བ་དཏྟ[1] སུཁཏེ[2] སྨྲ་ཕླ་ཡ··· ཀུརུ[3]ལཾ། འདི་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་རེངས་པར་བྱེད་པའི་ཚིག་གསུངས་པའོ། ༢༩།

ངག་ནི་རེངས་པར་འདོད་པ་ཡིས། །
དེ་བཞིན་འཁོར་ལོ་གཉིས་བྲིས་ལ། །

ཉིད་ཡིན་དེ། འབྲུལ་འཁོར་སེར་པོ་ནི་ཟླ་བ་སྟེ་དེའི་སྟེང་དུ་བསྐྱབ་བྱ་སེར་པོ། དེའི་སྟེང་དུ་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་དང་། དེའི་སྟེང་དུ་ས་དང་། དེའི་སྟེང་དུ་རི་རབ་བསྐམ་པར་བྱའོ། །ནགེ་ནི་རི་བོས་སོ། །བླྀལཡ་ནི་ཁ་བ་སྟེ་དེ་ལས་བྱུང་བའི་རི་བོ་རྣམས་ཀྱིས་སོ། །མནྡ་ཞེས་པ་ནི་ངོས་རྣམས་ནས་དེ། སྟེང་ནས་ནི་རི་རབ་ཉིད་ཀྱིས་མནན་པས་སོ། ༢༨–༢༩།

ངག་རེངས་པར་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། ངག་ནི་རེངས་པར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ[4] གསུངས་པ་དེ་བཞིན་ཞེས་པ་ནི་སྔར་གྱི་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་ནོ། །དེ་ནས་ལྷའི་གཟུགས་ཉིད་ཀྱང་དེ་ཉིད་དེའི་ཁྱད་པར་ནི་འདི་ཡིན་

[1] རྒྱ་དཔེར་ ༠ དཏྟསྱ། [2] རྒྱ་དཔེར་ ༠ སྭཱ་ཧཱ། [3] རྒྱ་དཔེར་ ༠ ཀུརུ་མི་འདུག
[4] སྣ་ ༠ ཞེ་ ༠ སོགས་པར།

བསྐྲུན་བྱའི་མིང་ཡང་བྲི་བར་བྱ། |

དེར་ནི་སྔགས་ཀྱང་སྨྲོས་ལ་བཟླས། ༨༠ |

ཨོཾ་ཧྲཱིཿཥྚྲཱིཿཝིཀྲྀཏཱནནཧཱུྃཧཱུྃཕཊཕཊལཾདེབདཏྟསྱཡཤཱནྟཱིརབྲྀཏ[1]། |

ཀརཀྲིདདེནནདེཝིརཡཤཱཨཱབིརཙུཔཀཾདེབདཏྟཡཛྙཱདདཡསྱཏྲཀཀྵུསྒཾབྷྲནཀུ·····

རུཎིཾ[2]། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་རེངས་པར་བྱེད་པའི་ཚིག་དེ་སྐད་གསུངས་སོ། ༨༡།

ཤིན་ཏུ་ལེགས་པར་སྨྲས་པ་ཡིས། |

འདི་ལས་གསུངས་བཞིན་དགོས[3]་བ་དག |

གཤིན་རྗེའི་གཤེད་ནག་སྦྱོར་བ་ཡིས། |

ཉི་མ་གཅིག་གིས་འགྲུབ་པར་འགྱུར། ༨༢ |

སྔར་བཞིན་དུར་ཁྲོད་ཀྱི་རས་ལ། |

འཁོར་ལོ་གཉིས་བྲིས་བདུལ་ཞུགས་ཅན། |

དེ། བསྐྲུན་བྱའི་ལྟེ་ལ་སྔ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་སེར་པོའི་སྟེང་དུ་དབང་ཆེན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་རོ། །དེའི་སྟེང་དུ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་སེར་པོ[4] བསམ་པར་བྱའོ། ༨༠–༨༡།

རྗེ་ལྟར་བརྗོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཞི་བ་ལ་སོགས་པའོ། །གཤིན་རྗེ་ནག་པོའི་སྦྱོར་བ་ཡིས། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད་ལས་གསུངས་པའི་སྦྱོར་བས་སོ། ༨༢།

སངས་རྒྱས་དང་ཆོས་དང་དགེ་འདུན་ལ་གནོད་པའི་མི་འདི་དམྱལ་བར་འགྲོ་བ་ལས་བསྒྲལ་བའི་དོན་དུའོ། །མིང་བཟུང་སྟེ་བསད་པས་དོན་ཆེན་པོར

[1] སྡེ་ ◦སྲིར་སྭཱ། [2] རྒྱ་དཔེ་ར་ ◦ཀརཀྲིདདེནནདེཝིརཡཤཱཨཱབིརཙུཔཀཾདེབདཏྟཡཛྙཱདདཡསྱཏྲཀཀྵུསྒཾབྷྲནཀུརུཎིཾ་བཏ། [3] སྣ་ ◦དགོངས། [4] སྡེ་ ◦སེར་པོ་མི་འདུག

སྐྱེ་ཚེ་དང་ནི་རྩྭ་དང་ནི།[1]
དུག་དང་གཞན་ཡང་ནིམ་པ་དང་། ༡༢
ཚ་བ་གསུམ་དང་ཚ་བའི་མར།
དུར་ཁྲོད་ཀྱི་ནི་སོལ་བ་དང་།
རྡུར་[2] ལོ་མའི་ཁུ་བ་དང་།
ཙནྡལི་འབྲས་མཛུབ་མོ་ཁྲག[3]
ཚ་སྒོ་ཅན་གྱི་ས་བླངས་ཏེ།
གདོལ་བའི་རྫ་མའི་དྲེག་པ་དང་།
རབ་ཏུ་ལྷོགས་མའི་[4] སྨྱུ་གུ་ཡིས།
བཅུ་བཞི་ལ་བྲིས་བཏུལ་ཞུགས་ཅན།
ཁྲོས་པའི་སེམས་ཀྱིས་ཉིན་ཕྱེད་ན།
གདུག་པ་ཅན་རྣམས་གསད་པའི་ཕྱིར། ༡༡–༡༦

འགྱུར་ཞེས་བསྟན་པའི་ཕྱིར་དུར་ཁྲོད་རས་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། བཏུལ་ཞུགས་ཅན་ནི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་པའོ། །སྔགས་ཚ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ་སྐྱེ་ཚེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། འདབ་མ་ལས་བྱུང་བའི་ཁུ་བའོ། །གདུམ་པོའི་ས་བོན་ཞེས་བྱ་བ་རྡུར་ས་བོན[5] ལ་སོགས་པའོ། ༡༢–༡༤

མཛུབ་མོ་ནི་རང་གིའོ། །ཙིཏྟ་ཀའི་ཁ་བས་སམ་ཞེས་པ་ནི་ལས་ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲ་ནི་བསྒྱུ་བའོ། ༡༥

---

༡ ཁེ་ ཡང་། ༢ ནོ་ ཁེ་ རྡུར་ཁི། ༣ རྒྱ་དཔེ་ལྷུར། དེ་བཞིན་ཚཎྜའི་ས་བོན་དང་།། མཛུབ་མོས་ཁྲག་ནི་ལེན་བྱས་ཏེ། །ཙིཏྟ་ཀ་ཡི་ཁ་བས་སམ། །ཞེས་བསྒྱུར་ཏེ་ཚིག་ཁ་གསལ་ན་མཐུན་ཆེ་བར་སྣང་། ༤ རྒྱ་དཔེར་ (ཙནྡྲ་ཀ་ཊི་ཏ་ཀ) ཙ་ཁྲོད་ཀྱི་གཏོག་སྒྲོས། ༥ སྡེ་ རྡུར་ས་བོན་མི་འདུག

སེམས་ཅན་གནོད་པ་བྱེད་པའི་མིང་། །
ཡི་གེ་ཧཱུྃ་གིས་བརྟེན་རུས་ལ། །
བདག་ཉིད་གཤིན་རྗེ་མཐར་བྱེད་པའི། །
སྦྱོར་བས་ལྷོ་ཕྱོགས་ཁ་བལྟས་ཏེ། ༤༧ །
ཁྲོ་ཆེན་རབ་ཏུ་དྲག་པོའི་གཟུགས། །
རུས་པས་མགོ་བོ་རྣམ་བརྒྱན་ལ། །
མ་ཧེ་ལ་བཞུགས་ལྟེ་སྦྲུང་འདྲིལ། །
གསུམ་པ་ཆེ་ལ་རབ་འཇིགས་པ། ༤༨ །
སྐྲག་བྱེད་སྐྲ་འབར་གྱེན་དུ་འགྲེང་། །
སྨ་ར་སྨིན་མ་དེ་བཞིན་སེར། །
གཡས་ན་རྡོ་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་། །
གཉིས་པ་ན་ནི་རལ་གྲི་དང་། ༤༩ །

རབ་ཏུ་ལྡོགས་[1]པའི་སྐྲ་སྐྲུག་ཅེས་[2]པ་ནི་བྱ་རོག་ཆེན་པོའི་སྐྲ་སྐྲུག་གིས་བྲི་བའོ། །སེམས་ཅན་གནོད་པར་བྱེད་པའི་མི། །ཞེས་པ་ནི་གསད་པར་བྱ་བའི་སེམས་ཅན་གྱི་མིང་ངོ་། །ལྷའི་རྣམ་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ་བདག་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས་ཏེ།༤༦_༤༨།

སྨ་ར་སྨིན་མ་དེ་བཞིན་སེར། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྨ་ར་དང་། སྨིན་མ་དང་། སྐྲ་ཡང་སེར་བའོ། །བྲི་སྟེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །འཁོར་

---

༡ སྡེ་ ° རྫོགས། ༢ སྣ་ ° ཞེས།

གསུམ་པའི་ཕྱག་ན་གྲི་གུག་གོ
ད་ནི་[1] གཡོན་པའི་བྲི་བར་བྱ།
འཁོར་ལོ་དང་ནི་པདྨ་ཆེ།
ཐོད་པ་ཉིད་ནི་གཡོན་ནའོ། ༧༠
རྩ་བའི་ཞལ་ནི་ཤིན་ཏུ་གནག
གཡས་པའི་ཟླ་འོད་བཟང་པོ་འདྲ།
གཡོན་པའི་དམར་པོ་ཡིན་པར་བརྟག
རྡོ་རྗེ་རྒྱན་གྱིས་རབ་ཏུ་བརྒྱན། ༧༡
བ་སྤུ་ཁུང་ནས་འཇིགས་ཆེན་པོ།
རང་རིགས་བདག་པོ་རབ་འཕྲོ་བ།

ལོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཀར་པོའོ། །པདྨ་ཆེན་པོ་ནི་དམར་པོའོ། །ཐོད་པ་ཉིད་ནི་དཀར་པོའོ། །ཟླ་བ་བཟང་པོའི་འོད་ནི་དཀར་པོའོ། །རྡོ་རྗེ་རྒྱན་གྱིས་ཡང་དག་བརྒྱན། །ཞེས་པ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ལྷ་འཛིན་པའོ། ༦༩-༧༡།

བ་སྤུའི་སྦུ་ག་ཆེན་པོ་ནས། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་རང་གི་སྙིང་གར་གསང་[2] བའི་མཚན་མ་ལ་གནས་པའི་ས་བོན་ལས་བྱུང་བའི་འོད་ཟེར་གྱི་རྣམ་པ་བ་སྤུའི་སྦུ་ག་ཀུན་ནས་སོ། །རང་རིགས་བདག་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རང་གི་གཟུགས་འཛིན་པའི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་ཚོགས་དང་འདྲེས་ཏེ་བར་མཚོན་པ་ལས་གཤིན་རྗེ་…… གཤེད་བདག་ཉིད་ཀྱང་རྟོགས་པར་བྱའོ། །གཡོན་པ་བརྒྱང་བ་ཞེས་པ་ནི་

༡ ཞེ་ ༠ དེ་ནི། ༢ སྣ་ ༠ གནས།

ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་སྟེང་ན་ནི།
ཞབས་ནི་གཡོན་པ་བརྐྱང་བས་གནས། ༧༢
མཆེ་བ་གཙིགས་ཤིང་ཀྲུགས་པ་ཡིས།
བསྐལ་པའི་འབར་བ་མེ་དང་མཚུངས།
འདི་ལྟ་བུ་ཡི་བདག་ཉིད་ཀྱིས།
བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་མདུན་དུ་དགོད། ༧༣
གདུག་པའི་མཚོན་གྱིས་བརྒྱན་པ་ཡིས།
དྲི་མ་ཅན་ལ་ནད་ཀྱིས་གཟིར།
གོས་མེད་འདར་ཞིང་ཉམ་ཆུང་བས།
དོན་འདོད་པ་ཡི་ཚིག་སྨྲ་ཞིང་། ༧༤

གཡོན་པ་རབ་ཏུ་བརྐྱང་སྟེ་གཡས་པ་བསྐུམ་པས་སོ། །ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་སྟེང་ན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མ་ཧེའི་རྒྱབ་ཏུ་ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་གནས་པ་དེའི་སྟེང་དུ་གནས་པའོ།༧༢།

བསྐལ་པའི་མེ་འབར་བ་[1] དང་མཚུངས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འཇིགས་པའི་དུས་ཀྱི་མེའོ། །གོ་ཆ་ཞེས་པ་ནི་ཡང་དག་པར་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །དྲི་མ་ཅན་ནི་ནག་པོ་འོ། །གཟིར་བ་ནི་རིད་ཅིང་ཉམ་ཐག་པའོ། །གང་གི་ཞེ་ན། གསུངས་པ་ནད་ཀྱིས་སོ། །ལུས་ལ་ལྷུང་ཞིང་ཞེས་པ་ནི། དམན་པའི་ལུས་སུ་ཉམས་པར་གྱུར་པའོ། །དོན་འདོད་པའི་ཚིག་སྨྲ་བ་ཞེས་པ་ནི་སློ་ལུ་ཞིང་བཟློད་པའོ།༧༣–༧༤།

༡ སྣ་•བ་མཻ་འདུག

མཚོན་གྱིས་གཟིར་བར་གྱུར་པ་ཡི། །
རྣག་གི་ཐུམ་པོས་ལུས་གང་བ། །
གྲང་བའི་རླུང་གིས་གཙེས་གྱུར་ཞིང་། །
མེ་ཡི་ནང་དུ་ཞུགས་པ་ལ། ᠔᠔ །
མ་ཧེ་དང་ནི་སྟག་དག་དང་། །
ཁྱི་དང་མཆུ་རིངས་ཅན་དག་གིས། །
སངས་རྒྱས་སྲེ་ནི་མངོན་འཛིགས་པའི། །
སྡིག་པོ་ཆེ་ནི་[1]བཟའ་བར་བྱེད། ᠔᠖ །
མཐར་བྱེད་པ་ཡི་ལྷོར་[2]གནས་པ། །
ཆེར་མས་ལུས་ནི་བཀང་བ་དང་། །
ཀང་པ་ཤིང་ལྕུགས་སྒྲོག་གིས་བསྡམས། །
དེ་བཞིན་དུམ་བུ་དུམ་བུར་གྱུར། ᠔᠘ །

མཚོན་གྱིས་ཞེས་པ་ནི་མདུང་དང་། མདའ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་སོ། །གཟིར་བར་བྱ་ཞེས་པ་ནི། ལུས་ཀུན་ལ་རྨ་ལ་སོགས་པ་མང་པོ་དང་ལྡན་པས་སོ། །མཆུ་རིང་ཅན་ནི་ཀང་ཀའོ། །ཆེར་མས་ལུས་ནི་བཀང་བ་དང་། །ཞེས་པ་ནི་ཆེར་མས་གང་བའི་ལུས་སོ། །ཀང་པ་གདོས་དང་སྒྲོག་གིས་བསྡམ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་གདོས་དང་ལྕུགས་ཀྱིས་བཅིང་བའོ། ᠔᠔–᠔᠘།

᠑ སྡེ་° ཆེ་དག པེ་° ཆེ་དག ᠒ རྒྱ་དཔེ་ར་° (མཆུ་སྒྲོ) དབུས་གནས་པ།

པགས་པ་དག་ནི་བཤུས་བྱས་ནས། །
དེ་ལ་རྩྭ་དང་སྐེ་ཚེ་བསྐུས། །
ཧཱུྃ་[1]ཞེས་བརྗེར་བ་བསྒོམ་པར་བྱ། །
དེ་ཡི་ལུས་བསྲུང་ལ་སོགས་པ། ༤༨ །

གཅད་པ་དག་ནི་མདུན་དུ་དགོད[2]། །
དེ་ཡི་གོ་ཆའང་མེད་བྱས་ནས། །
སྟོང་པའི་ལུས་ནི་མདུན་དུ་བསམ། །
རང་གི་ལུས་སྲུང་ཁྲོ་བོ་ནི། །
གཞིན་རྗེའི་གཞེད་སོགས་བདག་ཉིད་འདྲས། ༤༩།

དེའི་ལུས་བསྲུང་བ་ལ་སོགས་པ་ཞེས་པ་ནི་ལུས་དང་། ངག་དང་། ཡིད་དང་། མིག་ལ་སོགས་པ་ལ་བྱས་ཞེས་སོ། །རང་གི་སྙིང་གའི་ས་བོན་གྱི་འོད་ཟེར་བཀུག་པ་དང་། བདག་གི་མདུན་དུ་ཞེས་པས་ཏེ། རང་གི་ལྷའི་གཟུགས་ལའོ། །དགོད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་གནས་ཇི་ལྟ་བར་གཞུག་པར་བྱའོ། །ཀྱབ་པར་བྱ་བ་བསྒོམ་པའི་དུས་སུ་ཀུན་གྱི་དང་པོ་དེ་དག་ཉིད་བྱས་ལ། ཕྱི་ནང་[3]ཐི་མས་གོས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་བལྟ་ངར་བྱའོ། ༤༨།

གོ་ཆ་ཞེས་པ་ནི་གང་ལྷ་རུ་ངསྒོམ་པར་བྱས་པ་དེའི་རྗེས་ལ་འབྲངས་ཏེ་བཀུག་ལ་རང་དང་འདྲ་བའི་པདྨར་བཅུག་སྟེ་རྗེས་མཐུན་པར་བལྟ་བར་...... བྱའོ། །སྟོང་པའི་ལུས་ལྟར་ཞེས་པ་ནི་རོ་དང་འདྲ་བའོ། ༤༩།

---

1 རྒྱ་དཔེར་ ◦ ཀི། 2 ཚིག་རྐང་འདི་རྒྱ་དཔེར་མི་འདུག 3 ནུ་◦རྒྱ་དཔེར་◦ནས།

དེ་ཡི་ལུས་ལ་བཀྲབ་ནས་ནི། །
ཆོལ་བྱ་ཀང་དག་འཕྱུང་བར་བྱེད། །
དེ་ཡི་མདུན་དུ་ག་ཤིན་རྡེ་བསྐོམ། །
ལག་ན་དབྱིག་པ་སྟོབས་པོ་ཆེ། ༦༠ །

གདུག་པ་ཅན་དེར་[1] རྡེག་པར་བྱེད་[2]། །
དེ་ཡི་རྒྱ་མའི་ཕྲེང་བ་སོགས། །
བྱ་རྒོད་ཀྱིས་ཁྲིར་མཁའ་ལ་འགྲོ། ༦༡ །

ས་ཡི་འོག་ནས་ཀླུ་དང་ནི། །
ལྷ་མ་ཡིན་[3] ལ་སོགས་པས་རྡེག །

བཀྲབ་པ་ནི་གསོད་པར་བྱའོ། །འཕྱུང་བར་བྱེད་ཅེས་པ་ནི་འཕྱུང་བར་བྱེད་པའི་ཁྲོ་བོ་དེ་དག་གོ །ཀང་དང་ཆོལ་[4] དག་ཅེས་པ་ལ་བསྒྲུབ་བྱ་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ།༦༠–༦༡།

ཚུ་འགགས་ལ་སོགས་ནད་ཀྱི་ཞེས་པ་ནི་ཨཤྨ་[5]རི་ནི་དྲི་ཚུ་འགགས་པའི་ནད་དོ། །ཚིག་འདི་ལྟ་བུ་ཉིད་ནི་རང་ཉིད་ཉོན་མོངས་པ་ཅམ་གྱི་བྱ་བ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་དགག་[6] པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། སྙིང་རྗེ་ལ་གནས་པའི་སེམས་

---

1 སྡེ་ ◦ རེས། 2 རྒྱ་དཔེར་ ◦ ([illegible]) གདུག་པ་ཅན་དེར་རྣམ་སྨྲོམ་བྱ། །ཞེས་ཀྱང་འདུག 3 རྒྱ་དཔེར་ ◦ (आनाह) ཙུ་འགགས་ཀྱི་གདད། 4 སྣ་ ◦ མེ་ ◦ ཆོག 5 སྡེ་ ◦ ཨཤྨ་རི།
6 སྡེ་ ◦ དགག

འདི་ལྟར་བསྐྲུན་བྱ་ཉམས་བྱ་བ། |
སྙིང་རྗེ་ལ་གནས་སེམས་ཀྱིས་ནི། ༦༢ |
བྱེད་པས་འཁོར་བའི་གནས་བརྟན་ནས། |
སངས་རྒྱས་ཞིང་དུ་འགྲོ་བར་བྱེད། |

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཁྱད་པར་ཅན་གྱི་ཐུགས་ཀྱིས་འདི་ལྟ་བུའི་གསུང་བྱུང་བར་མཛད་དོ།༦༢།

ཨེ་མའོ་གསང་བའི་ཡང་དག་གསང་། |
བསད་པ་མ་ཡིན་སྲོག་ལས་བཀྲོལ། |
ཛི་སྲིད་བསད་ཀྱང་[1]མ་བསད་དོ། |
སྲོག་པ་སྟོང་ཕྲག་བྱས་པ་ཡི། |
མཐར་མེད་ལ་སོགས་མི་སྐྱེ་བ[2]། |

ཀྱིས་ཞེས་པ་སྟེ་དེ་དག་ཉིད་ཀྱིས་དམྱལ་བར་འགྲོ་ཞེས་རྣམ་པར་དཔྱད་ནས······ སོ།།༦༢།།

འོ་ན་སྡུག་བསྔལ་དང་སྡུག་བསྔལ་གྱི་རྒྱུ་ལ་གྲོལ་བར་འདོད་པ་ནི···· སྙིང་རྗེ་ཡིན་ལ་དེ་ལྟ་བུ་ཐམས་ཅད་ནི་བདག་ལ་གནོད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། གསུངས་པ་གནས་བརྟན་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དེར་གནས་པའི་སྡུག་བསྔལ་ལ་སྒྲོལ་བར་བྱེད་པ་སྟེ། ཇི་ལྟར་ཕ་རོལ་གྱི་དོན་བྱེད་པ་ལས་གཞན་ཅི་ཡོད་ཅེས་པའི་དོན་ཏོ། །འདི་ལྟ་བུར་གསུངས་ཞེས་པ་ནི་འདི་ལྟ་བུའི་ངག་

---

༡ པེ་ ༠ ཀྱི། ༢ པེ་ ༠ བས།

ཨེ་མའོ་སངས་རྒྱས་ཆེ་བའི་བདག །

བསད་པས་བྱང་ཆུབ་ཐོབ་པར་བྱེད། ༦༨–༦༧ །

སེམས་ཅན་གསོད་པ་བསད་པ་ཉིད། །

སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱིས་བྱས། །

ཨེ་མའོ་སྙིང་རྗེ་སྟོབས་ཀྱི་མཆོག །

སྙིང་རྗེ་དམན་པས་འགྲུབ་མི་འགྱུར། ༦༦ །

ཨོཾ་ཧྲཱིཿཥྚྲཱིཿཝི་ཀྲྀ་ཏཱ་ན་ན་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ་ཕཊ། ཧཱུཾ་དེ་བ་ད་དུཾ་སྨ་ར་ཡ་ཧཱུཾ……

ཀོ ༑སྦྱང་བར་མཛད་ཅེས་པ་ནི་བརྗོད་ནས་སོ། །ཇི་ལྟ་བུ་གསུངས་ཤེ་ན། གསུངས་པ་ཨེ་མའོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ༦༢–༦༧།

སེམས་ཅན་གསོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བླ་མ་དང་སངས་རྒྱས་ལ་གནོད་པ་བྱེད་པའོ། །རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཆེན་པོ་ཡང་ཡིན་ལ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཡང་ཡིན་པས་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཆེན་པོ་སྟེ། དུད་འགྲོ་ལ་སོགས་པའི་སྡུག་བསྔལ་གྱི་རང་བཞིན་ནོ། །དེ་དག་གསོད་པར་བྱེད་པ་ནི་ཐག་པར་བྱེད་པ་སྟེ་དེའི་དོན་གྱིས་ན་རྡོ་རྗེ་དང་འདྲ་བས་ན་རྡོ་རྗེ་སྟེ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཆེན་པོ་གསོད་པར་བྱེད་པས་གསོད་པའི་རྡོ་རྗེའོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་གང་ཡིན་ཞེ་ན།། འདི་ལྟ་བུའི་ཚིག་གསུངས་པ། འཁྲུལ་འཁོར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཚིག་གསུངས་ཏེ། དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ་འཁྲུལ་འཁོར་ལ་སོགས་པ་ལ་དམ་ཚིག་ཏུ་ངེས་པར་གྱུར་པས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པས་ཁྲད་པར་གང་འཁྲུལ་…

---

༡ རྒྱ་དཔེར། ༢ ཧཱུཾ་ཏུ་མི་འདུག

ཕཊ྄། ཨོཾ་ཧྲཱིཿ ཥྚྲཻ་ལྲཱི་ཀྲི་དྲ་ཎ་ན་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ྄་ཕཊ྄། དེ་བ་ད་དྲྀཾ་སྨྲ་ར་ཡ་[1] ཕཊ྄། དེ་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་[2] གསོད་པའི་[3] འཁྲུལ་འཁོར་དང་སྔགས་དང་སྐན་[4] ལ་སོགས་པའི་ཆོ་གའོ། ༤༧།

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད་ལས་རིམ་པར་ཕྱེ་བ་[5] བཞི་པའོ[6]།། །།

འཁོར་ལ་སོགས་པ་ཉིད་དོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་དམ་ཚིག་སྡེ་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཉིད་ཀྱི་དོན་དུ། ༤༤-༤༧།

ལེའུ་བཞི་པའི་བཤད་པ་རྫོགས་སོ།། །།

---

༡ རྒྱ་དཔེར༌ སྨ་ར་ཡ་སྨ་ར་ཡ་ཀྲྀ་ཀྲྀཾ་ཕཊ་ཕཊ།

༢ རྒྱ་དཔེར༌ (མཧཱཝིཀལྤ) རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཆེན་པོ།

༣ རྒྱ་དཔེར༌ (ཀྵུདྲབཛྲ) གསོད་པའི་རྡོ་རྗེ།

༤ རྒྱ་དཔེར༌ (མཱརཎཱདི) བསད་པ་ལ་སོགས།

༥ རྒྱ་དཔེར༌ རིམ་པར་ཕྱེ་བ་མི་འདུག

༦ ཚིག་ལྷག་འདི་གཉིས་རྒྱ་དཔེའི་གོ་རིམ་དང་མཐུན་པར་པེ་ཅིང་དང་སྣར་ཐང་པར་མ་ལྷུར་བཞག་ཡོད། སྡེ༌ དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེའི་གཤེད་ནག་པོ་འི་རྒྱུད་ལས་རྣམ་པར་རྟོག་པ་གསོད་པའི་རྡོ་རྗེའི་འཁྲུལ་འཁོར་དང་སྔགས་དང་སྐན་གྱིས་གསད་པ་ལ་སོགས་པའི་ཆོ་ག་སྟེ་རིམ་པར་ཕྱེ་བ་བཞི་པའོ།། །།

ལེའུ་ལྔ་པ།

དེ་ནས་འཁོར་ལོ་གཉིས་བྲིས་ལ། །
ཡི་གེ་ཕཊ་ཀྱིས་བརྡེན་[1] པ་ཡི། །
བསྒྲུབ་བྱའི་མིང་ནི་བྲི་བྱས་ལ། །
ཐོད་པ་ཁ་སྦྱར་ནང་དུ་གཞུག ༡ །
སྐུད་པ་སྔོན་པོས་བཅིངས་བྱས་ཏེ། །
ཉི་མ་ཕྱེད་ཀྱི་དུས་སུ་ནི། །
དུར་ཁྲོད་ས་ཡི་ནང་དུ་སྦ[2]། ༢ །
གཞིན་ཛྲེའི་[3]གཞེད་ཀྱི་སྦྱོར་བ་ཡི།[4] །
རྟ་དང་མ་ཧེ་ཞོན་པ་ཡི། །

ཕན་ཚུན་དུ་རྣམ་པར་དབྱེ་བའི་དོན་གསུངས་པ། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དེ་ནས་ཞེས་པ་ནི་སྣག་ཚ་[5] དང་ལྐ་ལ་སོགས་པ་སྟེ་སྦྱོར་མ་བཞིན་ནོ། །ཐོད་པ་ཁ་སྦྱོར་ཞེས་པ་ནི། ཟླུ་བ་ལ་སོགས་པའི་གྲུ་མོ་གཉིས་སུ་བཤད་[6]པའི་འཁྲུལ་འཁོར་བཅུག་ལ་ཞེས་རྟོགས་པར་བྱའོ། ༡–༢ །

གཞིན་ཛྲེ་མཐར་བྱེད་ཅེས་པ་ནི། བཤད་པ་ལ་བརྗོད་པ་ཉིད་དོ། །རྟ་དང་མ་ཧེ་ཞོན་པ་དག །ཅེས་པ་ནི་གཅིག་ནི་རྟ་ལ་ཞོན་པ་ཡིན་ལ། གཞན་

---

༡ སྣ་༠ བརྟེན། ༢ སྣ་༠ སྒྲས། ༣ རྒྱ་དཔེར་༠ (ཤྲཱིཁཱསཱརེཾ) དཔལ་གཞིན་ཛྲེའི། ༤ སྣ་༠ ཡིས།
༥ སྡེ་༠ སྣ་ཚོགས། ༦ སྡེ་༠ གསད།

ལག་ན་མཚོན་ཐོགས་བསྒྲུབ་བྱ་གཉིས། །
མདུན་དུ་བསྒྲུབ་བྱ་དགོད་པར་བྱ། ༢ །
ཁྲོས་པའི་ལུས་ལ་སྤྲུལ་པའི་ཚོགས། །
གཉིས་ཀའི་ཕྱོགས་སུ་བསམ་པར་བྱ། །
གཉིས་ཀས་འཐབ་མོ་མང་པོ་བྱེད། །
ཁྲོས་ཤིང་གདུག་པའི་སེམས་ལྡན་པའི། །
སྟོབས་ལྡན་ཁྲོས་པ་བསྒོམ་པར་བྱ། །
བསྒོམས་པས་བཟླས་པ་བརྩམ་པར་བྱ། ༤ །
ཚིག་དག་ནི་སྔ་མ་བཞིན། །
འཁོར་ལོ་གཉིས་ནི་བྲི་[1]བྱས་ལ། །

ཨོཾ་ཧྲཱིཿཥྚྲཱིཿཝི་ཀྲྀ་ཏཱ་ན་ན་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ་ཕཊ། དེ་བ་དཏྟ[2] ཡཛྙ་དཏྟེ[3] བི་དྭེ་ཥ་ཡ་ཧཱུཾ་ཕཊ[4] ། འདི་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དབྱེ་བའི་ཚིག་གསུངས་པའོ། ༥།

དག་ནི་མ་ཧེ་ལ་ཞོན་པའོ། །སྤྲུལ་པའི་འཁོར་ལོ་འི་ཚོགས་ཀྱིས་[5] ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཉིས་ཀ་ཡང་སྤྲུལ་པའི་ཁྲོ་བོ་འི་ཚིག་དགོད་པར་བྱའོ། །སྟོབས་དག་ཅེས་པ་ནི་སྟོབས་དང་ལྡན་པའོ། ཁྲོས་པ་ནི་ཁྲོས་པ་དང་ལྡན་པའོ། ༢–༥།

བསྒྲུབ་པ་ཞེས་པ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། འཁོར་ལོ་གཉིས་

---

[1] ལྷ་° བྲིས། [2] སྡེ་° དཏྟ། [3] རྒྱ་དཔེར་° དཏྟེ་ནསད། [4] རྒྱ་དཔེར་° ས་ཧཱ་ཡང་འདུག [5] སྤྲུལ་པའི་འཁོར་ལོ་འི་ཚོགས་ཀྱིས་ཞེས་པའི་ཚབ་ཏུ་རྒྱ་དཔེར་ནི་མི་ཏྟཱཿཀྲ་ཧྨ་ཎཱཾ་ཀྲྀ་ཏེ་ཞེས་ཡོད་པ་བོད་དཔེ་རྩ་བར་ཁྲོས་པའི་ལུས་ལ་སྤྲུལ་པའི་ཚོགས་ཞེས་བསྒྱུར་འདུག

ཡི་གེ་ཧཱུ་ཕཊ་ཀྱིས་བརྟེན་[1]པ། །
ཐོད་པ་ཁ་སྦྱར་ནང་དུ་གཞུག ༦ །

སྐུད་པ་ནག་པོས་བཅིངས་བྱས་ལ། །
ཤ་ཟའི་ཚལ་[2]དུ་སྦ་བར་བྱ། །
གཤིན་རྗེའི་སྦྱོར་བ་ལ་གནས་པས། །
མདུན་དུ་བསྒྲུབ་བྱ་བསྒོམ་པར་བྱ། ༧ །

ཡཾ་བྱུང་གཞུ་ཡི་དབྱིབས་འདྲ་བའི། །
རླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་ནག་པོ་ལ། །
དེ་སྟེང་མདོག་སྔོན་ཛ་མོ་བསྒོམ[3]། ༨ །

ནི་བྲི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ཚིག་ཉིད་ནི་འདི་དག་ཅེས་པ་ནི་བཤད་པའི་ཚིག་བསྟན་པའི་སྐབ་ཚ་ལ་སོགས་པས་སོ། །ཡི་གེ་ཧཱུ་ཕཊ་ཀྱིས་བརྟེན་[4]པ་ཞེས་པ་ནི་བསྒྲུབ་བྱའི་མིང་དང་ཧཱུ་ཕཊ་དག་སྤེལ་བའོ། །ཐོད་པ་ཁ་སྦྱར་ནི་ཕྲུ་བ་ལ་སོགས་པའི་གྱོ་མོ་གཉིས་སྦུའོ། །ཤའི་ནགས་སུ་ཞེས་པ་ནི་དུར་ཁྲོད་དུའོ། །གཤིན་རྗེའི་གཤེད་ནི་གཤིན་རྗེའི་[5]གཤེད་དོ།༦–༧།

ཡཾ་བྱུང་ཞེས་པ་ནི་ཡཾ་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས[6]། གྲུ་བའི་ཚོགས་ཀྱིས་

---

༡ ཞ་°བརྟེན། ༢ རྒྱ་དཔེར་°(ཤཱི་ཏ་ཝ་ནེ་ནི་ཁ་ན་ཡེཏ) དུར་ཁྲོད་དུ་ནི་སྦ་བར་བྱ།།
༣ འདིའི་ཚབ་ཏུ། དེའི་སྟེང་དུ་མདོག་སྔོན་པོ་ཡི། །ཛ་མོ་ཆེན་པོ་རྣམ་བསྒོམ་བྱ། །ཞེས་བསྒྱུར་ཏེ་ཚིག་ཁ་བསྐང་ན་རྒྱ་དཔེ་དང་མཐུན་ཆེ་བར་སྣང་། ༤ སྣ་°བརྟེན། ༥ རྒྱ་དཔེར་°(ཡ་མཱ་རེཿ) ཞེས་སྣང་གཤིན་རྗེ་གཤེད་འདུག ༦ སྣ་°ཞེ་°ལས་སོ། །

དེ་ལ་གདུག་པ་ཅན་བསྒྲོན་ལ། |
ལྷོ་ཡི་ཕྱོགས་སུ་ཁ་བསྟན་དེ། |
ཁྲོ་བོའི་ཚོགས་ཀྱིས་དེ་བརྡེག་པ། |
སངས་རྒྱས་ཡིན་ཡང་བཟློག་པ་[1]དཀའ། ༩།

ཨོཾཧྲཱིཿཥྚྲིཝིཀྲྀཏཱནནཧཱུཾཧཱུཾཕཊཕཊ། ཧཱུཾཕཊ[2]དེབནདྷཏྡྷུཀྲོདྷཡ[3]ཧཱུཾཕཊ། འདི་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བསྒྲད་[4]པའི་ཚིག་གསུངས་པའོ། ༡༠།

ཁྲོས་པས་རྣལ་འབྱོར་སྦྱོར་བལྟས་ལ། |
རང་ཁྲག་[5]རོ་བསྲེགས་ཐལ་བ་དང་། |

ཞེས་པ་སྒྲོས་པའི་གཞིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱིས་སོ། །མ་གྲུབ་ན་ཡིད་ཆེས་པའི་དོན་དུའོ་ཞེས་ལྷག་མའོ། ༨–༡༠།

ཚིག་གསུངས་པའོ་ཞེས་བརྗོད་ནས་བརྒྱ་ལམ་ན་སློབ་མ་འབྲུལ······བར་གྱུར་ན། ལྷའི་གཟུགས་དང་རས་ལ་སོགས་པ་དེ་དག་གསུངས་པ། ཁྲོས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ་སྦྱོར་བལྟས་པ་ནི་སྦྱོར་མངོན་པར་ཕྱོགས་པའོ། །རང་ཁྲག་ཅེས་པ་ནི་རང་གི་ལག་པ་གཡོན་པའི་མཐེབ་མོ་འི་ཁྲག་གོ །ཐལ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སོལ་བའོ། །སྨྲིན་པའི་འདབ་མའི་ཁ་བས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐང་

---

༡ ལྷ༽ པས། ༢ རྒྱ་དཔེར༽ ཏུ་ཕཊ་མི་འདུག ༣ ཏེ༽ ཡཾ། ༤ རྒྱ་དཔེར༽ བསྒྲད་པ་ཆེན་པོ། ༥ ཏེ༽ ར་ཁྲག

དུག་གི་རྩ་དང་སྐྱེ་ཚེ་དང་། |
མར་ཁ་སྨྱོན་[1] པའི་ཁ་བ་ཡིས། ༡༡ |

དུར་ཁྲོད་རས་ལ་འཁོར་ལོ་གཉིས། |
རིམ་པ་འདི་བཞིན་བྲི་བར་བྱ། |
བསད་པ་གཤིན་རྗེའི་ལུས་ལ་གནས། |
དབྱེ་བ་རྟ་དང་མ་ཧེ་ཡིས། ༡༢ |

བསྐྲད་པ་ཛ་མོ་ཙིའི་ལུས་ལ་གནས། |
ཞི་བ་ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱིས། |

ཕྲོམ་གྱི་འདབ་མའི་ཁ་བས་སོ།༡༡།

འཁོར་ལོ་རྣམས་ཀྱི་ཁྱད་པར་གྱི་བྲི་བའི་ཐབས་གསུངས་པ། བསད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ་བསད་པའི་ཆོ་གར་གསུངས་པའི་སྐབ་ཚ་ལ……སོགས་པ་སྟེ་འཁོར་ལོ་གཉིས་ཀ་ལ་ཡང་དེའི་ལུས་ལ་གནས་པ་ནི་དེའི་ལྟོར……བལྟས་པའི་འཁོར་ལོ་འོ། །རྟ་དང་མ་ཧེ་དག་ཅེས་པ་ནི་འཁོར་ལོ་གཅིག་ནི་མ་ཧེའི་རྒྱབ་ཏུ་ཡིན་ལ་གཞན་ནི་རྟའི་རྒྱབ་ཏུའོ།༡༢།

བསྐྲད་པ་ཞེས་པ་ནི་གནས་ནས་བཏོན་[2] པའོ། །ཛ་མོ་ཙིའི་ལུས་ལ་གནས་ཞེས་པ་ནི་འཁོར་ལོ་གཉིས་ཀ་ལ་ཡང་ཛ་མོ་སྔོན་པོའི་རྒྱབ་ཏུའོ། །ཟླ་

---

༡ ཞེ་༠ སྨྱོན། ༢ ཆུ་༠ ཞེ་༠ གཏོན།

རྒྱས་པ་ཟླ་བ་སེར་པོ་ལ། །
བཙུན་མོའི་སྙིང་གར་དབང་དུ་བྱ[1]། ༡༣ །
ར་ལ་སྐྲོན་པས་དགུག[2]་པར་བྱེད། །
རི་བོའི་དཀྱིལ་དུ་རིངས་བྱ་གཞག །
ཤརྞྐའམ་སེ་ཊྣེས་དགུག །
དེ་བཞིན་གཞན་ཡང་མཆོན་པར་བྱ། ༡༤ །
རོ་ཙ་ན་དང་རྒྱ་སྐྱེགས་དང་། །
ཁ་ཆེ་ཡི་ནི་ཁྲུད་པར་གྱི། །

བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ཞེས་པ་ནི་འཁོར་ལོ་ལ་ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱིས་ཀུན་···ནས་བསྐོར་དེ་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །བཙུན་མོའི་སྙིང་གར་ཞེས་པ་ནི་སྙིང་གའོ།༡༣།

ར་ལ་བསྐྲོན་ཞེས་པ་ནི་ལྕུག་ལ་ཡང་བསྐྲོན་ཞེས་པའོ། །རི་རབ[3] དཀྱིལ་དུ་ཞེས་པ་ནི་རིའི་ཕྲེང་བས་ཀུན་ནས་བསྐོར་བའོ། །སེང་གེ་སར་པ་ནི་ཀང་པ་བརྒྱད་པའི་སེང་གེའོ། །གཞན་དག་ལ་ཞེས་པ་ནི་སྨྲོན་པ་ལ་རོགས་པར་བྱེད་པའི་སྤྲེའུ་དང་སྐྱེས་བུ་བཟི་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་བྲི་བར་བྱའོ། །ལན་གཉིས་བཅིངས་པ་ནི་ལེགས་པར་བཅིངས་པ་ཡིན་ཞེས་པ་སྟེ།༡༤།

སྣག་ཚ་ལ་སོགས་པ་ཡང་ཟློས་པར་གསུངས་པ་རོ་ཙན་ཞེས་པ་གོ་རོ་ཙ་ནའོ། །བུད་མེད་ཞི་བ་ནི་བུད་མེད་ཀྱི་དོན་དུའོ། །སྐྱེས་པ་དང་བུད་མེད་དབང་དུ[4] བྱ་བ་ནི་རྒྱ་སྐྱེགས་དེ་སྐྱེས་པ་དང་བུད་མེད་གཉིས་ཀ་དབང་ལ···

---

༡ སྣ་ ཅག། ༢ སྣ་ འགུགས། ༣ སྣ་ ཞེ་ རི་རབ་ཀྱི། ༤ སྣ་ དབང་ཀ།

དབང་དུ་བྱ་བ་གྲོ་གར་བྲི། །
དགེ་བའི་སེམས་ཀྱིས་བཟུང་བྱས་ན། །
འགུབ་པར་འགྱུར་དེ་ཐེ་ཚོམ་མེད། །
ཁམ་ཕོར་ཁ་སྦྱར་ནང་དུ་གཞུག །
ཁྭ་ཡི་སྒྲོ་ཡི་སྨྱུ་གུ་ཡིས། །
ཉི་མ་ཕྱེད་ནས་བྲི་བར་བྱ། ༡༤_༡༦ །

བྱ་བའོ། །གཉིས་ཀྱི་སྟེང་དུ་གཞན་ཡང་། སྐྱེས་པའི་དོན་དུ་ཁ་ཕྱེ་ཡིས། །ཞེས་པས་དེ་སྐྱེས་པ་ཞི་བ་ལའོ། །སྐྱེས་པ་དང་བུད་མེད་གཉིས་ཀའི་རྒྱས་པ་ལ་ཡང་སྟེ་དབང་དུ་བྱ་བར་བྲི་ཞེས་ཉེ་བར་མཚོན་པའོ། །ཞི་བ་དང་རྒྱས་པ་དག་ལ་ཡང་།༡༤།

དགེ་བའི་སེམས་ཀྱིས་དེ། བྱ་བ་གང་ལ་ཡང་ངོ་ཞེས་ལྷག་མའོ།། དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། ཞི་བ་དང་། རྒྱས་པ་དང་། དབང་རྣམས་ལ་ཁམ་ཕོར་ཁ་སྦྱར་དུ་གཞག་པར་བྱའོ། །དྲག་པོ་ལས་ཀྱི་དགོངས་པས་བྱ་རོག་གི་སྒྲོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། བྱ་རོག་ནི་བྱ་རོག་ཆེན་པོའོ། །སྨྱུ་གུས་ནི་བསད་པ་དང་། དབྱེ་བ་དང་། བསྐྲད་པ་ལ་སོགས་པ་བྲི་བར་བྱ་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །ཉི་མ་ཕྱེད་ན་རོ་བསྲེགས་སར། །ཞེས་པ་ནི་རོ་སྲེག་པའི་སའི་ནང་དུ་བཀོས་ཏེ་གཞུག་པར་བྱའོ། །པདྨ་ཁ་སྦྱོར་ཞེས་པ་ནི། ཁ་སྦྱོར་དང་པདྨའི་ཁ་སྦྱོར་པདྨ་སྟེ། དེ་ལས་བསད་པ་དང་བསྐྲད་པ་དང་དབྱེ་བའི་

པདྨའི་ཁ་སྦྱོར་རོ་བསྲེགས་སར། |
ག་ཤིན་ཛྙེའི་རྣལ་འབྱོར་བདག་ཉིད་ཀྱིས། |
ཨོཾ་ཧྲཱིཿཧ་ཧཱཿལ་སོགས་གསང་སྔགས་བཟླས། |
ལྷོ་ཕྱོགས་གནས་ཏེ་ཚར་གཅད་[1]བྱ། ༡༧ |

མཐའ་ཡིས་ཡ་ངོར་ཞི་བ་ལ། |
ཡི་གེ་ནི་དེ་གཉིས་ཀ་དང་། |

སྤྱོད་ཡུལ་ལ་ནི། ཕྲུ་བ་ལ་སོགས་པའི་གྲོ་མོ་ཁ་སྦྱོར་དུའོ། །དགུག་པ་ནི་པདྨ་སྟེ་བུད་མེད་ཀྱི་ཐོད་པའོ། །ག་ཤིན་ཛྙེའི་རྣལ་འབྱོར་བདག་ཉིད་ཀྱིས། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་དེར་ཛ་སྐད་གསུངས་པའི་ག་ཤིན་ཛྙེ་ག་ཤེད་ཀྱི་གཟུགས་ཀྱིས་སོ། | བཟླས་ཏེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བརྗོད་པའོ། །ལྷོ་ཕྱོགས་གནས་ཏེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷོ་ཕྱོགས་སུ་མངོན་པར་ཕྱོགས་པ་སྟེ། དྲག་པོའི་ལས་ཀྱི་དགོངས་པས་འདིར་ཉེ་བར་མཚོན་པར་བྱ་སྟེ། གཞན་དག་དང་གཞན་དག་ལ་[2]ལྟོས་ནས་གཞན་དང་གཞན་གྱི་དོན་དུ་མངོན་པར་ཕྱོགས་པ་ཤེས་པར་བྱའོ། །༡༦–༡༧།

ལས་གྲུབ་ནས་འཁྲུལ་འཁོར་གནས་པ་ལ་དགོས་པ་མེད་པས་ན་…… རིམ་པ་བཞིན་དུ་དབྱེ་བའི་དོན་གསུངས་པ། ཞི་བ་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ་ལས་གྲུབ་པ་དང་དགོས་[3]པ་ཉེ་བར་གྲུབ་ནས་གང་ཚེ་བསྡུང་བ་རིག་པར་བྱེད་པ་དེའི་ཚེ་འཁོར…… ལོ་འཛིན་པ་ཡང་ཡི་གེ་བཞི་པོ་དེ་དག་ཕྱིས་ཏེ་གཟུང་བར་བྱའོ་ཞེས་པ་ནི་མན…

---

༡ ཞེ་. གཅོད། ༢ སྡེ་. གི ༣ སྡེ་. དགོངས།

ཕྱི་ནས་དཀྱིལ་གྱི་ཡ་སྤྱངས་དེ། །
ཡི་གེ་ལྷག་མ་ཇི་བདེ་བར། ༡༨ །
སྔོན་དུ་བསྙེན་པ་ཁྲི་ཚམ་བྱ། །
འདིས་ནི་ལས་རྣམས་རབ་སྒྲུབ་པ། །
ཡེ་ཤེས་རྡོ་རྗེས་བྱ་བ་སྟེ། །
གཞིན་ཧྲེའི་གཞེད་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་པས། ༡༩ །
རབ་ཏུ་གྲགས་པའི་འཁོར་ལོ་འདི། །
ཡི་གེར་བྲིས་ནས་གནས་པ་དང་། །
འཁོར་ལོ་བྲིས་ནས་གནས་པ་ཡི། །
ཁྱིམ་དེར་འཐབ་མོ་རྟག་ཏུ་འབྱུང་། ༢༠ །

ངག་གོ ། ལྷག་མ་ཞེས་པ་ནི་ཡི་གེ་བཞི་པོ་ཕྱིས་པ་ལས་གཞན་དག་གོ ། ཇི་ལྟར་བདེ་བར་ཞེས་པ་ནི་ཇི་ལྟར་འདོད་པར་བྱེད་པའམ་[1]གཞན་[2]པར་བྱའོ། ༡༨།

ཁྲི་ཞེས་པ་ནི་སྟོང་ཕྲག་བཅུའོ། །ཡེ་ཤེས་རྡོ་རྗེ་ཞེས་པ་ནི་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པ་དང་བྲལ་བའི་སེམས་ཀྱིས་དེ་གྲིབ་མ་དང་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ཉམ་པས་སོ། ། གཞིན་ཧྲེ་གཞེད་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་གྱིས། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་ལྟ་བུའི་གཞིན་ཧྲེ་གཞེད་ཀྱི་གཟུགས་ཀྱིས་སོ། ༡༩།

ཡི་གེ་བཞི་པོ་འདི་དག་དབྱེ་བར་བྱ་བ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། གསུངས་པ། ། འཁྲུལ་འཁོར་འདི་ཞེས་པས་སོ། ། བྲིས་ནས་ཞེས་པ་འདི་[3]ཡི་གེ་ཐམས་ཅད་གཞག་པ་ནའོ། ༢༠།

---

༡ ཐུ་° དབྱེ་བདམ། ༢ ཐེ་° གཞན། ༣ ཐུ་° ཞེ་° ཏེ།

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེའི······ གཤེད་ནག་པོའི་[1]རྒྱུད་ལས་འཁྲུལ་འཁོར་གྱི་གོ་རིམས་བྲི་བ་ཞེས་བྱ་སྟེ་རིམ······ པར་ཕྱེ་བ་[2]ལྔ་པའོ།། །།

འཁོར་ལོ་བྲི་བའི་སྔར་གྱི་རིམ་པ་ནི་གོ་རིམས་ཀྱིས་དེ་འཁོར་ལོ······ སྔར་[3]རིམ་མོ། །ཤྲཱིཛོདརདྭི་[4]ནི་བྲིས་པའི་སྨྲ་ལས་དབྱེ་བའོ། །བྲི་བ་[5]ནི་རོ་ཅན་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དེ་ན་བྲི་བའོ། །འཁྲུལ་འཁོར་གྱི་རིམ་པ་བྲི་བའི་དོན་དུ་རོ་ཅན་ལ་སོགས་[6]ཏེ་གང་ལ་དེ་སྟོན་པའོ། །མངོན་པར་འདོད་པའི་དོན་ཡོངས་སུ་བཅད་པ་ཅན་ནི་ལེའུ་སྟེ། ངག་གི་ཚོགས་བ་ལ་ཡང་ངོ་། །ལེའུ་ལྔ་པའི་བཤད་པ་རྫོགས་སོ།། །།

---

༡ རྒྱ་དཔེར། (རཏྣ) གསང་བའི། ༢ རྒྱ་དཔེར། རིམ་པར་ཕྱེ་བ་མེ་འདུག

༣ སྡེ། སྣར། སྔ། ༤ འདིར་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད། སྡེ། སྣར། ཤྲདྡྷདརས། སྡེ། ཤྲདྡྷི་ཨཱདརས། ༥ སྡེ། གཏི། ༦ སྡེ། སྣར། སོགས་པ།

ལེའུ་དྲུག་པ

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་པོས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་འཆང་ཆེན་པོ་ལ་བསྟོད་པའི་རྒྱལ་པོ་འདིས་གསོལ་བ་བཏབ་པ།༡།

གང་གིས་རྡོ་རྗེ་ཅན་མཉེས་པ། །
ཞི་སྣང་[5] ཕྱག་རྒྱའི་རྣལ་འབྱོར་གྱིས། །
རྡོ་རྗེའི་ཕྱག་རྒྱས་རྒྱས་བཏབ་པས། །
དངོས་གྲུབ་རྒྱ་ཆེན་ཐོབ་པར་བྱེད། ༢ །

ཕྱག་རྒྱ་འཆོལ་[2] བའི་བསྒོམ་པ་ལས་ནི་དངོས་གྲུབ་དང་སྒྲུབ་པ་པོ་… མེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ། བསྟོད་པ་སྔོན་དུ་འགྲོ་བའི་གསོལ་བ་གདབ་པས་ཕྱག་[3] འདི་འདུ་བའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། འདིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྔར་གསུངས་པའི། གཏི་སྨུག་རྡོ་རྗེའི་རང་བཞིན་ཁྱོད། །ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་སོ།༡།

སྟོན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྟན་[4] པར་བྱེད་པ་དང་རབ་ཏུ་གསལ་བར་… བྱེད་པའོ། །རང་རང་ཕྱག་རྒྱ་ཞེས་པ་ནི་རང་རང་གི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་སོ།༢།

---

༡ རྒྱ་དཔེར༌ (ཏིཀ) བཀོད་པ། བརྟན་པ། ༢ སྡེ༌ ལྕོག ༣ སྣ༌ ཕྱག་རྒྱ། ༤ རྒྱ་དཔེའི་ཚིག (ཏིཥྛཏིཀཥ) དང་མཐུན་པར་སྟོན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྟན་པར་བྱེད་པ་ཞེས་བཞག་ཡོད། ༥ སྡེ༌ ཞི་སྣང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཞི་སྣང་བར་བྱེད་པ་འདུག

དེ་ནས་རྡོ་རྗེ་འཆང་རྒྱལ་པོས། །
འདི་ལྟ་བུ་ཡི་གསུང་བསྒྲགས་སོ། །
དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ནི་ལྷ་ཀུན་གྱི། །
དབུ་ལ་གཤིན་རྗེའི་[1]གཤེད་པོ་བསྒོམ། ༢ །

དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ནི་ལྷ་ཀུན་གྱི། །ཞེས་པ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བདག་པོ་ཡངས་པ་ལས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྷ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་སྐྱེད་པའོ། །ཀུན་གྱི་ཞེས་པ་ནི་གཞུང་ལས་ལྷག་པ་སྟེ། དེས་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བདག་པོ་གཙང་ངོ་། །གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཅེས་པ་ནི་ལེའུ་དང་པོར་མི་བསྐྱོད་པ་ལ་སོགས་པ་ལྔ་བཤད་པས་སོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་ཞེ་སྡང་དང་གཏི་མུག་དང་ཕྲ་མ་དང་འདོད་ཆགས་དང་ཕྲག་དོག་དང་གཤིན་རྗེ་གཤེད་རྣམས་ལ་རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བས་མི་བསྐྱོད་པ་དང་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དང་། རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་དང་། སྣང་བ་མཐའ་ཡས་དང་། དོན་ཡོད་གྲུབ་པ་རྣམས་[2]དབུ་ལ་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །ཙཪྩིཀ་དང་། ཕག་མོ་དང་། དབྱངས་ཅན་མ་དང་། གཽ་རཱི་མ་རྣམས་ཀྱི་དབུ་ལ་མི་བསྐྱོད་པ་དང་། རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དང་། སྣང་བ་མཐའ་ཡས་དང་། དོན་ཡོད་གྲུབ་པ་རྣམས་རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་ནོ། །ཐོ་བ་དང་དབྱུག་པ་དང་པདྨ་དང་རལ་གྲི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་རྣམས་ལ་ནི། མི་བསྐྱོད་པ་དང་། རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དང་། སྣང་བ་མཐའ་ཡས་དང་། དོན་ཡོད་གྲུབ་པ་རྣམས་ཀྱིས་སོ། ༢ །

---

༡ ལྷ་. ཚེ། ༢ ཅོ་. སེ་. དོན་ཡོད་གྲུབ་པ་རྣམས་རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་ནོ་ཞེས་འདུག དབུ་ལ་བསྒོམ་ནས……དོན་ཡོད་གྲུབ་པ་རྣམས་པར་མི་འདུག

རྡག་ཏུ་དཀྱིལ་འཁོར་བྲི་བར་བྱ། །
རྡག་ཏུ་སྦྱིན་སྲེག་གིས་ཀྱང་དགང་། །
རྡག་ཏུ་དམ་ཚིག་དག་ཀྱང་གཟུང་། །
སྨོམ་པ་དག་ཀྱང་ཡང་དག་གཟུང་། ༡ །

དང་པོ་ལ་ནི་ཅོད་པན་དབང་། །
གཉིས་པ་རལ་གྲི་སྦྱིན་པར་བྱ། །
གསུམ་པ་རྡོ་རྗེ་དྲིལ་བུ་དང་། །
བླ་བ་བཟའ་བ་བཞི་པ་སྟེ། ༢ །

རྡག་ཏུ་དཀྱིལ་འཁོར་ནི་འཁོར་ལོའི་ལྷ་རྣམས་སོ། །བྲི་བར་བྱ་ཞེས་པ་ནི་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །སྦྱིན་སྲེག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་ནང་གི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱིས་ཏེ་གསུངས་པའི་བདུད་རྩི་མྱང་བའི་ཚོ་གའི་རིགས་པས་སོ། །དགང་ཞེས་པ་ནི་ལྷའི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་གཟུགས་ཚིམ་པར་བྱེད་པའོ། །དམ་ཚིག་རྣམས་ལ་ཞེས་པ་ནི་གོ་ཀུ་དཧ་ན་ལ་སོགས་པ་རྣམས་སོ། །བསྲུབ་པར་བྱ་ཞེས་པ་ནི་ཇི་ལྟར་གསུངས་པའི་བདུད་རྩི་མྱང་བའི་ཚོགས་བཟའ་བར་བྱའོ། །སྨོམ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ངེས་པར་བྱ་བ་སྟེ། དེ་ཡང་དཀྱིལ་འཁོར་བཞེངས་པ་ལ་སོགས་པ་ཅན་ཉིད་དོ།༡།

དང་པོ་ལ་ནི་དབུ་རྒྱན་དབང་། ཞེས་པ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་ཞུགས་ནས་རྒྱུའི་དབང་གི་རྫས་ལ་དབུ་རྒྱན་གྱི་དབང་གིས་སོ། །རལ་གྲི་ཞེས་པ་ནི་རྡོ་

བཞི་པོ་འདི་ནི་དབང་ཆེན་པོ། །
ནག་པོའི་ཞལ་ནས་བྱུང་བ་ཡི། །
དབང་འདི་དག་གི་བྱེ་བྲག་གིས། །
རྒྱལ་བའི་སྲས་ཀྱིས་བྱང་ཆུབ་ཐོབ། ༦ །
འབྱུང་པོ་ཀུན་གྱི་གཏོར་མའི་ལུགས།[1] །
སྔགས་འདི་དེ་ནས་རབ་བཤད་བྱ། །

རྗེའི་དབང་བསྐུར་བའོ། །རྡོ་རྗེ་དྲིལ་བུ་དང་ཞེས་པ་ནི་དྲིལ་བུའི་དབང་བསྐུར་བའོ།། །ཟླ་བ་བཟའ་[2]བ་བཞི་ཞེས་བྱ་བ་ནི། མིང་གི་དབང་དང་རིགས་གསུམ་གྱི་དམ་ཚིག་དང་། རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་དང་། རྡོ་རྗེ་བརྟུལ་ཞུགས་དང་། དབུགས་དབྱུང་བ་དང་། ལུང་བསྟན་པ་དང་། རྗེས་སུ་གནང་བའི་རྗེས་ལ་སྤྱི་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་དབང་བསྐུར་བ་ཡང་གཟུང་བར་བྱའོ།༤།

ནག་པོ་ནི་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཡིས་ནི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོའི་….རྒྱུད་[3]ལས། རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཉིད་ལ་ནག་པོ་ཞེས་བྱའོ། །དབང་བསྐུར་བའི་དགོངས་པ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། དབང་འདི་དག་གིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོ་ཐོབ་[4] ཞེས་པ་ནི་རྟེད་པའོ། །རྒྱལ་བའི་སྲས་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའོ།༧།

བྱ་བ་བྱེད་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྔོན་དུ་འགྲོ་བ་ཅན་ནི་གཏོར་མ་ཡིན་པས། གཏོར་མའི་ཆོ་ག་བསྟན་པ་གསུངས་པ། དེ་ནས་སྔགས་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་

---

༡ ལྷ་ ༠ ལུས། ༢ སྡེ་ ༠ བཟང་། ༣ རྒྱ་དཔེར་ ༠ (ཀེ་ཏུཏུཏུ) རྒྱུ་ལས། ༤ སྡེ་ ༠ ཐོབ།

སྔགས་ཆེན་བཟླས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། །
འབྱུང་པོ་ཐམས་ཅད་འདར་འགྱུར་བ། ༥ །

ཨོཾ༡ ཨིནྡྲཱཡཧྲཱིཿ། ཡམཱཡཧྲཱིཿ། བརུཎཱཡཧྲཱི། ཀུབེརཱཡཧྲཱི། ཨཱིཤཱ༢ནཱཡད། ཨགྣཱཡེཨཱ། ནཻརྲྀཏྱཱཡན༣། བཱཡབེན། ཙནྡྲཱཡསྭཱ།

པ་སྟེ༔ འབྱུང་པོ་ཀུན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འབྱུང་པོར་གྱུར་པ་ཐམས་ཅད་དེ་དབང་པོ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་སོ། །དེ་ཡང་རང་གི་ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་ལྟ་སྟངས་ཀྱིས་ཡུལ་རྣམས་ཐལ་བར་བྱ་སྟེ། རང་གི་སྙིང་གའི་ས་བོན་ལས་འོད་ཟེར་སྤྲོས་པའི་བདུད་རྩིས་ཡང་དག་པར་རིག་པས་ཡུད་ཙམ་གྱི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་བདག་ཉིད་དང་འདྲ་བའི་ལྷའི་རྣམ་པར་རྫོགས་པའོ། །དེ་རྣམས་ཀྱི་གཏོར་མ་ནི་ཉེ་བར་༤ མཆོད་པའོ༔ །ཕྱུགས་ནི་བྱེད་པ་སྟེ། སྔགས་བརྗོད་པའོ། །ཇི་ལྟར་གསུངས་པའི་བདུད་རྩི་སྦྱོང་བའི་རིམ་པས་བདུད་རྩི་ལྔ་རུ་བསྐྱེད་ལ། ལྷ་རྣམས་དེ་དག་གི་ལྗེའི་འོད་ཟེར་གྱི་སྦུ་གུས་བདུད་རྩི་དེ་དག་ཉེ་བར་ལོངས་སྤྱོད་དོ། །དེ་ནས་ནི་མཐོན་༥ པར་འདོད་པའི་འབྲས་བུ་སྒྲུབ་པའི་རྗེས་ལ་སྔགས་དེ་ཉིད་གསུངས་པ། ཨོཾཨིནྡྲཡེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ངེས་ནི་ལྷ་རྣམས་ཀྱི་ཕྱིར་ལག་པ་གཡས་པས་གནས་ནི་དང་དེ་རྣམས་སུ་སྤྲོས་བདུལ་ཞིང་ལག་པ་གཡོན་པས··· འཁྲིལ་བ་དཀྱིལ་བར་བྱའོ། །འདི་ལྟ་སྟེ། གཡས་དང་གཡོན་གྱི་གནས་དང་། ལྟེ་བ་དང་། སྙིང་ག་དང་། བརྐའི་གནས་དང་། མགྲིན་པ་དང་། ཁ་དང་།

༡ རྒྱ་དཔེར་° ཨོཾ་མི་འདུག ལྷ་° ཨིནྡྲ། ༢ རྒྱ་དཔེར་° ཤཱུ། ༣ ལྷ་° ཊྱེ་ཡེ། ༤ རྒྱ་དཔེར་° ཉེ་བར་མི་འདུག ༥ སྣ་° ངེས་མཛོད།

ཨཱ་ཀཱ[1]ཡནྟྲ། བྲཧྨ་ཎེ་ཡ[2]ཕཊ། བསུནྡྷ་རི་ཎི[3]ཕཊ། བིམ་ཙེ་ཏྲི་ཎཾ[4] སྭཱ[5]། སརྦ་བྷུ་
ཏེ་ཧྲཱི། ཏུ་ཏུ་ཏི་ཏི[6]། ཧྲཱུཾ་ཧྲཱུཾ། ཕེ[7] ཕེ་ཕཊ་ཕཊ[8] སྭཱ་ཧཱ། ༨།

བཞེད[9] སྨད་ཆུ་བསྐྱིས་པས། །
དཀྱིལ་འཁོར་གྲུ་གསུམ་བྱས་ནས་ནི། །

གཡས་པའི་སྣ་བུག་དང་། ནུ་བ་གཡོན་པ་རྣམས་སུ། མིག་གཉིས་དང་
མཚོག་མ་སྟེ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གནས་སུ་ལན་གསུམ་གསུམ་དུ་དཀྲོལ་[10]བར་བྱའོ།།
དེ་ནས་ཡང་ལྟེ་བ་དང་། སྙིང་གར་ཅི་བདེ་བར་རོ། ༧–༨།

ཡང་ཆང་འཐུང་བའི་དུས་སུ་རང་གི་ལྷ་ཉིད་ཆོམ་པའི་དོན་དུ·········
གསུངས་པ། བྱས་ནས་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། གྲུ་གསུམ་ནི་རྫུར་
གསུམ་ལག་པ་གཡོན་པའི་སྲིན་ལག་གིས་གཡོན་དུ་བསྐོར་ངར་བྱ་ཞེས་མན····
ངག་གོ །ཇི་ལྟར་གྱུར་ཞེ་ན། གསུངས་པ། པི་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་
པ་སྟེ། བཤང་གཅི་ལ་སོགས་པས་བྱ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཆུ་ཞེས་པ་ནི་
བྱང་ཆུབ་སེམས་སམ་ཆང་ངོ་། །བཤང་བ་ལ་སོགས་པ་མེད་ན་སྨྱུས་བྱེད་ཙམ་
གྱིས་བྱའོ་ཞེས་པ་ནི་མན་ངག་གོ །ཆོམ་པར་བྱ་ཞེས་པ་ནི། དེ་རྣམས་ཀྱི་
དཀྱིལ་འཁོར་པ་ལ་ལག་པ་གཡོན་པའི་སྲིན་ལག་གིས་ཆོམ་པར་བྱས་ཏེ། ཨོཾ་
ཛེ་ཥ་ཛ་མ་རི་ཡེ[11] སྭཱ་ཧཱ། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱི་རིམ་པས་སོ། །ཀྱང་

---

༡ ལྷ། ཨཀཏྱ། ༢ ལྷ། ཀྱི་དཔེར། ཡ་མི་འདུག ༣ ལྷ། ཊྲི་ཊྲི།
ཀྱི་དཔེར། བསུནྡྷཱ་རཱ་ཡཻ། ༤ ཀྱི་དཔེར། ཏྲི་ཧེ། ༥ སྡེ། སྭཱ་ཧཱ། ༦ ཀྱི་དཔེར། ཏུ་ཏུ་ཏི་ཏི།
༧ ལྷ། ཕེ། ༨ ཀྱི་དཔེར། ཕཊ་ཕཊ་མི་འདུག ༩ ལྷ། བཞེད་སྦྱད། ཀྱི་དཔེར། བཞེད།
༡༠ སྡེ། དགྲོལ། ༡༡ ཀྱི་དཔེར། ཨོཾ་བ་ཛྲ་ཡཀྵ་ཡ།

ལྷ་རྣམས་ཀུན་ནི་ཆོམ་པར་བྱ།[1] །
ཏ་ཏ་ཞེས་ཀྱང་དྲན་པར་བྱ།[2] ༦–༡༠ །
དཀྱིལ་འཁོར་རིམ་གསུམ་བྱ་བ་ནི། །
བརྒྱད་དང་བཅུ་གཉིས་བཅུ་དྲུག་པའི། །

ཞེས་པ་ནི་ལྷ་རྣམས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་མ་ལུས་པར་ཆོམ་པར་བྱས་པའི་རྗེས་ལའོ། །དྲན་པར་བྱེད་པ་ནི་རྗོད་པར་བྱེད་པའོ།༦–༡༠།

ལེའུ་བཞི་པ་དང་ལྔ[3]་པ་ནི་འཁོར་ལོ་བྲི་བའི་མདོར་བསྟན་པ་ཙམ······ བྱས་ཏེ། དེ་ནས་དེ་དག་བྲི་བའི་དོན་དུ་གསུངས་པ་བྱ་བ་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། བྱ་བ་ཞེས་པ་ནི་འབྲི་བ་སྟེ། གོ་རིམ་ཅན[4]་ལ་སོགས་པ་རྣམས་སོ། །དཀྱིལ་འཁོར་རིམ་གསུམ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དང་པོའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་དཀྱིལ་འཁོར······ གཉིས་པས[5]་བསྐོར་བར་བྱ་ཞིང་གཉིས་པ་ལ་ཡང་གསུམ་པས་སོ། །བརྒྱད་དང་བཅུ་གཉིས་བཅུ་དྲུག་པ། ཞེས་པ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ནང་དུ་ན་རེའུ[6]་མིག་བརྒྱད་པ་རྣམས་དང་། དཀྱིལ་འཁོར་གཉིས་པ་ལ་བཅུ་གཉིས་པ་དང་། དཀྱིལ་འཁོར་གསུམ་པ་ལ་བཅུ་དྲུག་པ་རྣམས་སོ། །དེ་ལ་དཀྱིལ་འཁོར་གསུམ་ཆར་ལ་ཁྱབ་པའི་དབུ་མ་ལས་ཅུང་ཟད་ཀྱི་མཐའ་གཉིས་སུ་ཤར་ནས་ཐུགས་པའོ། །ནུབ་ཏུ་རི་མོ་གཉིས་དྲང་བར་བྱའོ། །དེ་བཞིན་དུ་བྱང་ནས་

---

༡ ལྷ་。བྱས། ༢ རྒྱ་དཔེར་。(ཨཐཏྲཀལྦུནམཙདཨཱུཀཏ྄ཧྲཱིཿམཏིཿཀཾཏྲལརཙཀྲསྟུཛཧཱུར) དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་པོ་ལས་རབ་འབྱམས་ཀྱི་འཁོར་ལོ······ གསུངས་པ། ཞེས་པ་ཚིགས་བཅད་བང་རིམ་བཅུ་པར་བཞག་འདུག་པ་བོད་དཔེར་མ་སྣང་།

༣ སྡེ་。ལྔ་པ། ༤ སྡེ་。རི་བོ་ན། ༥ སྣ་。པ་ཡིས། ༦ སྣ་。རེ་མིག

དཀྱིལ་འཁོར་[1]མཁས་པས་བྲིས་[2]པ་ལ། །
སྔགས་ནི་ཀུན་ཏུ་དགོད་པར་བྱ། ༡༡ །
བདུལ་ཞུགས་ཅན་གྱིས་བཅུ་གཉིས་པར། །
གྲུབ་པའི་སྔགས་རྣམས་དགོད་པར་བྱ། །

ཞུགས་ཏེ། ལྷོ་ཙ་[3]རི་མོ་གཉིས་དྲང་པར་བྱའོ། །དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ནང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་དབུ་མའི་རེའུ་[4] མིག་ཆོར་བ་དང་། རེའུ་མིག་བརྒྱད་དུ་འགྱུར་རོ༑ ༑དཀྱིལ་འཁོར་གཉིས་པའི་མཚམས་ཀྱི་ཆ་རྣམས་སུ་རི་མོ་རེ་རེ་སྦྲིན་པར་བྱའོ༑ ༑དེ་དག་གིས་ནི་གཉིས་པར་ཡང་རེའུ་མིག་བཅུ་གཉིས་སུ་འགྱུར་རོ་[5]། དཀྱིལ་འཁོར་གཉིས་པའི་མཚམས་སུ་གནས་པའི་རི་མོ་འི་མགོ་བོ་ནས་བཙམས་ཏེ་ལོགས་གཉིས་ནས་རི་མོ་གཉིས་བྲི་བར་བྱའོ། །དེ་ལྟ་བུས་ནི་ཀླུམ་པོར་བསྐོར་བར་[6]གསུམ་པ་ལ་ཡང་ལེའུ་ཚེ་བཅུ་དྲུག་ཏུ་འགྱུར་རོ།༡༡།

དགོད་པར་བྱ་ཞེས་པ་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ནང་ཀླུམ་པོར་བསྐོར་བ་ལའོ།། སྔགས་ཞེས་པ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྷ་ལྷའི་ས་བོན་གྱི་ཡི་གེ་རྣམས་ཏེ་དབུས་སུ་ཡ་སྟེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་རྗེས་ཀྱི་ཚིག་གིས་སོ། །དེ་ཡང་མཚམས་བཞི་ཤ྄་བོར་ཏེ་ལྷག་མ་རེའུ་མིག་ལྔ་ཤ྄་དག་གོ །རེའུ་མིག་བཅུ་གཉིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་གཉིས་པ་དག་གིའོ། །དེ་ལ་སྐྲི་སྐྱིང་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཡི་གེ་བཅུ་གཉིས་པ་རྣམས་སོ། །སྔགས་དགོད་པའི་དགོངས་པ་

[1] རྒྱ་དཔེར་° (ཙཀྲ) ཆ་གར། [2] སྣ་° ཀྲིས། [3] པོད་དཔེར་ལྷོ་ཙ་ཞེས་པ་མ་སྣང་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད། [4] ལྷ་° ཞེ་° རི་མིག [5] སྣ་° ཞེ་° རོ། [6] སྣ་° བ།

ཀྱུ་དང་མི་ཀྱུའི་འཇིག་རྟེན་གསུམ། །
མ་ལུས་ལུས་པ་མེད་པར་འགྲུབ། ༡༢ །

ཡམརཛྭཱས[1] ཏོ་མེཡ། ཡམེཏོཏྲ། ཙཡོདཡ། ཡདཡོནོར། ཡཀཀྵིཡ། ཡཀཀྵིཡཙཀྵ། ནིརམཡ[2]།༡༣།

དཀྱིལ་དུ་ཡ་[3]བྲུས་ཤར་དུ་ཀཀྵི། །
ལྷོ་རུ་འཇམ་པའི་རྡོ་རྗེ་སྟེ། །
ཡི་གེ་མེ་ནི་ནུབ་དུ་བྲི། །
བྱང་དུ་དནད[4] དམན། ༡༨ །

གསུངས་པ། གྲུབ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། མ་ལུས་ལུས་པ་མེད་པར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པ་ལ་ལྟོས་པའོ། །ཀྱུ་དང་མི་ཀྱུར་བཅས་པ་ནི་སྣོད་དང་བཅུད་དུ་བཅས་པའོ།༡༢།

དང་པོ་དང་གཉིས་པོའི་རླུམ་པོར་བསྐོར་བ་ལ་ས་ངོན་བསྐོར་བའི····· ཚིགས་སུ་བཅད་པ་བསྐོར་བ་གསུངས་པ། ཡམརཛ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ་ཡང་དགོད་པར་བྱ་བའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་གང་ཡིན་ཞེ་ན། གསུངས་པ། དབུས་སུ་ཡ་[5]ཞེས་པ་སྟེ་ཡ་[6]ཡིག་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ནང་རླུམ་པོར་བསྐར་བ····· དང་པོ་ལའོ། །ཀཀྵི་ཞེས་པ་ནི་ཀཀྵི་ཡིག་གོ །འཇམ་པའི་རྡོ་རྗེ་ཞེས་པ་ནི་མ་ཡིག་གོ །མེ་ཞེས་པ་ནི་མེ་ཡིག་གོ[7] །དནདམནི་[8]ད་ཡིག་གོ༡༢–༡༨།

---

༡ ལྷ་. སྣ་. ཨོཾཡམརཛྭཛྭ། ༢ ལྷ་. སྣ་. ཏ་ཏུཏ་ཏུཔར་ཞེས་ཀྱང་འདུག ༣ པེ་. དཀྱིལ་འཁོར་བྲུས་ལ། ༤ ལྷ་. སྡེ་. ད་རྐྱེ། ཀྱི་དཔེར་. དདྭ། ༥ སྣ་. པེ་. ཡང་། ༦ སྣ་. པེ་. ཡང་། ༧ ཚིག་ཤང་འདི་ཀྱི་དཔེར་མི་འདུག ༨ ཀྱི་དཔེར་. དདདམྣ་ན།

བསྒྲུབ་བྱའི་མིང་ནི་སྦྱིན་བྱ་བ། །
མཚམས་ཀྱི་སྟོང་པ་དག་དུའོ། །
རྩ་གཉིས་ཀྱིས་ནི་བརྟེན་[1] བྱས་པས[2]། །
དགོས་པ་ཐམས་ཅད་སྒྲུབ་པར་བྱེད། ༡༤ །

ཡཙྪོཏིརཛ[3]སདྟོ། །
ཙཡོ་ཏིར་ལ་སོགས་པ། །
ཕྱི་རོལ་རིམ་པར་གཡོན་བསྐམས་གྲི།[4] །
དོན་ཀུན་རབ་ཏུ་བསྒྲུབ་པའི་ཕྱིར། ༡༦ །

མཚམས་ཀྱི་སྟོང་པ་དག་ཅེས་པ་ནི་ནང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་མཚམས་ཀྱི་བཞི་པོར་བ་རྣམས་སུའོ། །དེ་དག་ཀྱང་ཅི་བསྒྲུབ་བྱ་འབའ་ཞིག་གི་མིང་བྲིའམ་ཞེ་ན། གསུངས་པ། རྩ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ཐོག་མ་དང་མཐར་རྩ་ཡིག་གཉིས་བྱ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་ལྟ་བུ་ཡང་དྲག་པོ་འི་ལས་ལྟོས་ནས་བརྗོད་པ་ཡིན་ལ། ཞི་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་ནི་ན་མོ་[5] ལ་སོགས་པའི་ཡི་གེ་སྦྱིལ་བར་རྟོགས་པར་བྱའོ། །༡༤།

དཀྱིལ་འཁོར་གཉིས་པར་བྲི་བའི་དོན་དུ་ཡཙ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ཕྱི་རོལ་དུ་ཞེས་པ་ནི་དང་པོར་བསྐོར་བ་ལས་ཕྱི་རོལ་དུ་སྟེ། རྒྱུས་པོར་བསྐོར་བ་གཉིས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །གཡོན་ནས་བསྐམས་ཏེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཡོན་པ་སྟེ་ཇི་ལྟར་ལེགས་པར་གྱུར་པའོ། །དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ་ཇི་

[1] ལྷ་ ° བརྟེན། [2] ལྷ་ ° ཅོ་ ° པ། [3] ལྷ་ ° ཡཙྪོཏིརཛ། [4] ཅོ་ ° ཏྲི། [5] སྡེ་ ° ན་མ།

རིམ་པ་གསུམ་པ་དེ་ལ་ནི། །
ཀུན་དུ་ཚ་རེ་བོར་བ་ལ། །
ཤར་ནས་[1]བརྩམས་ནས་བྲི་བར་བྱ། །
ཨོཾ་ཧྲཱིཿཥྚྲཱིཿལ་སོགས་པའི་སྔགས། །
དེ་ཡི་བར་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །
ཚ་བརྒྱད་བོར་བ་དག་ལ་བྲི། ༡༧ །

ཨ་[2]སྭཱཀཾཀུཎྜ། [3]ཨུཙྪཊྚཡ། སྦ་ཤཾ་[4]ཀུཎྜ། བིདྭེ[5]ཥཡ། ཤཱནྟིཾཀུཎྜ། པུཥྚིཾཀུཎྜ།

ལྷར་ཚོགས་སུ་བཅད་པའི་འབྱུང་བར་འགྱུར་བ་དེ་བཞིན་དུ་བྲི་བའོ། །དེས་ན་སྔོན་དུ་ཀཱ་ལི་ཡིག་ནས་བརྩམས་ཏེ་གཡས་ནས་བསྐོར་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ།༡༦།

རིམ་པ་གསུམ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཟླུམ་པོར་བསྐོར་བ་གསུམ་པའོ། །མདུན་དུ་ཞེས་པ་ནི་ཟླུམ་པོས་བསྐོར་བ་གཉིས་པ་ལ་ཤར་ཕྱོགས་ནས་བསྐོར་བ་སྟེ་ཡ་ཡིག་ལས་གཞན་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ[6]། །ཤར་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཤར་ཕྱོགས་ནས་བསྐོར་བ་དག་སྟེ་ལེ་ཚེ་ནས་བརྩམས་ཏེ་གཡས་ནས་བསྐོར་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །ཨོཾ་ཧྲཱིཿཥྚྲཱིཿ[7]བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། སྔགས་ཞེས་པ་ནི།[8] ཨོཾ་ཧྲཱིཿཥྚྲཱིཿཝི་ཀྲྀ་ཏཱ་ན་ན་ཧཱུཾ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ།༡༧།

དེ་ཡི་བར་བར་ཉིད་དག་ཏུ། །ཞེས་པ་ནི་སྔགས་བྲིས་པའི་བར་དག་

༡ རྒྱ་དཔེར་ ° (ཞྭ་ཚབ) སྔར་བཞིན། ༢ རྒྱ་དཔེར་ ° ཨ་མི་འདུག ༣ རྒྱ་དཔེར་ ° སྨར་ལ་ ཞེས་འབྱུང་འདུག ༤ སྣ་ ° ཀི ༥ སྡེ་ ° ཏ། ༦ སྣ་ ° བེ་ ° ན། ༧ སྡེ་ ° དྷྲི་ཏི། ༨ སྣ་ ° བེ་ ° ཏྲེ།

འདི་ལྟར་གཡོན་ནས་བརྩམས་ནས་ནི། །
ལས་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པར་ནི། །
མིང་དང་[3]ནམཿཔ་མའི་བར། །
ཐ་མ་[2]ཧཱུྃ་བཽཥཊ་དང་། །

དུ་ལེའུ་ཆེ་ལ་གནས་པ་ལའོ[1]། །གང་བྲི་བར་བྱ་ཞེ་ན། གསུངས་པ། མོ་[1]ཀ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ།༧༨།

རབ་སྔགས་དང་པོ་ནམོ་མཐར། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་རབ་སྔགས་དང་པོ་དང་མཐར་ནི་ནམ་ཞེས་རྟོགས་པར་བྱའོ། །རབ་སྔགས་ནི་ཨོཾ་ཡིག་སྟེ་གང་གི་དང་པོར་རབ་སྔགས་འདིའོ། །ཨོཾ་ཧྲཱིཿཥྚྲཱིཿཝིཀྲྀཏཱནནཧཱུྃ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །སྔགས་འདིའི་མཐར་ནམའི་སྒྲ་བྲི་བའོ། །མཐར་ཞེས་པ་ནི་བསྒྲུབ་བྱའི་ཡི་གེ་མཐར་[5]ཡང་ནམའོ། །དེ་དག་ནི་ཞི་བ་སྟེ། དེས་ན་དོན་འདི་ཡིན་ཏེ། ཨོཾ་ཧྲཱིཿཥྚྲཱིཿཝིཀྲྀཏཱནན་ཧཱུྃ། ནམོ་ཨམུཀསྱ་ཤཱནྟིཾ་ཀུ་རུ་ནམཿཞེས་བྱའོ། །བཥ[6]ཊ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དབང་དུ་བྱའོ། །བཽཥཊ་ཅེས་པ་ནི་ཀྲུས་[7]པའོ། །ཧཱུྃ་ཞེས་པ་ནི་བསད་པའོ། །ཕཊ་ཅེས་པ་ནི་སྐྲོད་པའོ། །གཞན་ཡང་ཧཱུྃ་གི་ཡི་གེ་གཉིས་བྱས་ཏེ་ཧཱུྃ་ཕཊ་ཅེས་རྟོགས་པར་བྱའོ། །འདི་དག་གིས་ཉེ་བར་མཚོན་ནས་གཞན་དུ་ཡང་ཧོ་ཞེས་པ་འདི་ལྟ་བུ་དང་པོར་བྱ་སྟེ་ཇི་ལྟར་རིགས་པར······བརྗོད་[8]པར་བྱའོ། །ས་བོན་ཞེས་པ་ས་བོན་དང་འདྲ་བ་ས་བོན་ཏེ། ཨོཾ་ཧྲཱིཿལ་

---

༡ ལྷ་, སྣ་, པེ་, ཤུག་འཆག་ནམ། ༢ ཀྱི་དཔེར་, ཕཊ་ཞེས་ཁུང་འདུག ༣ སྣ་, པད། ༤ ཀྱི་དཔེར་, སྣུག ༥ པེ་, མཐད། ༦ ཀྱི་དཔེར་, ཕཊ། ༧ སྣ་, ཀྱལ། ༨ སྣ་, བཅོད།

ཧཱུ་ཕཊ་དང་ལྷན་ས་ཛོན་གྱིས། །
ཞི་དང་རྒྱས་དང་མཐར་དབང་བྱེད།༡༨–༡༩།

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེའི····· གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད་ལས་འཁོར་ལོ་རྣམ་པར་བྲི་བ་[1] ཞེས་བྱ་བ་སྟེ་རིམ་པར···· ཕྱེ་བ་[2] དྲུག་པའོ།། ||

སོགས་པའི་ས་ཛོན་རྣམས་སོ། །ཐ་མར་ཞེས་པ་ནི་ཐ་མར་རམ་ལྷག་མ་སྟེ་བསད་པའོ། །ཧྲཱིཿཞེས་པ་ནི་དགུག་[3]པའོ། །ཞི་བ་དང་སྐྲོད་པ་ལ་སོགས་པར་བྱེད་ཅེས་པའི་དོན་ཏོ།༡༩།

བསྡུང་ཞིང་འཁོར་ལོ་རྣམ་པར་བྲི་[4] བ་ལ་བསྡུང་བ་ནི་ཞི་བའོ། །འདི་དག་ཉེ་བར་མཚོན་པ་སྟེ་[5]། དེའི་དོན་གྱིས་ན་འཁོར་ལོ་སྟེ་འཁྲུལ་འཁོར་གཉིས་སོ།། །དེའི་རྣམ་པ་བྲི་[6]བ་ནི། ཡང་དག་པའི་རིམ་པ་ཉིད་[7]ཀྱིས་ངེས་པར་བྱས་ན་འདི་ལ་ཡང་དེ་བཞིན་དུའོ་[8]། །ལེའུ་དྲུག་པའི་བཤད་པ་རྫོགས་སོ།། ||

---

༡ རྒྱ་དཔེར་◦ བྲི་བ་མི་འདུག ༢ རྒྱ་དཔེར་◦ རིམ་པར་ཕྱེ་བ་མི་འདུག
༣ རྒྱ་དཔེར་◦ (ཀྲཱུརཾཔཡཱཨཀརྵ) འགུག་པ་དང་བྲོས་པའོ། ༤ རྒྱ་དཔེར་◦ (ཨཱལིཁན) རྣམ་པར་ལྷུ་བ། ༥ སྣར་◦ པའོ། ༦ རྒྱ་དཔེར་◦ (ཨཱལིཁྱེཏ) རྣམ་པར་བལྟས་པ། ༧ སྣར་◦ གཉིས
༨ སྣར་◦ པེ་◦ ཏེའོ།

ལེའུ་བདུན་པ།

ཁྲག་དཀྱུག་པ་ཡི་སྦྱོར་བ་ནི། །
ཞལ་གསུམ་ཕྱག་དྲུག་སྐེམ་[1]པ་ཡི། །
ཕྱག་ན་འཁོར་ལོ་ཟླ་འོད་འདྲའི། །
མཁས་པས་ཙཀྐི[2]བསྐོམ་བྱ། ༡ །
ཚང་དག་དཀྱུག་པའི་སྦྱོར་བ་ནི། །
ཞལ་གསུམ་ཕྱག་དྲུག་ཕག་གདོང་མ། །

སྐར་མ་གསུངས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་བཞིའི་ཞལ་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། ཞལ་གསུམ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས་ཏེ། ཕྱག་ན་འཁོར་ལོ་[3]ཞེས་པ་འདིས་གཏི་མུག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་ཕྱག་མཚན་གྱི་གཙོ་བོ་འཛིན་པའི་ཕྱིར་མཚན་མ་ཞེས་[4] གཞན་དག་ཞལ་ཡང་གཏི་མུག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དང་འདྲ་བའོ། །དགོས་པ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་ཁྲག་དཀྱུག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས་ཏེ་སྦྱོར་བ་ལས་ཤེས་པའི་རབ་ཏུ་སྦྱོར་བའི་སྤྱོད་ཡུལ་ལས་སོ།༡།

རྡོ་རྗེ་ཕག་གདོང་མའི་[5] ཞལ་ལ་སོགས་པའི་དོན་དུ་ཞལ་གསུམ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས་ཏེ་མགོན་[6]ཞེས་པ་ནི་ཕག་གི་གདོང་པ་ཅན་ནོ། །ཕྱག་

༡ རྒྱ་དཔེར༌ (ཀུཀླཱུ) དཀར་པོ། ༢ ཞྭ༌ ཙཀྐི ༣ རྒྱ་དཔེར༌ (བཛྲཙཀྲཀྲ) རྡོ་རྗེ་འཁོར་ལོ་ཕྱག་ན། ༤ སྡེ༌ རྒྱ་དཔེར༌ ཞེས་མི་འདུག ༥ སྡེ༌ ཕག་མོ་ཞབ། ༦ རྒྱ་དཔེར༌ མགོན་ཀླུ།

རབ་སྔོ་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་བསྣམས། །
མཁས་པས་ཕག་མོ་བསྒོམ་པར་བྱ། ༢ །
ཤེས་རབ་བསྐྱེད་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར། །
ཞལ་གསུམ་ཕྱག་དྲུག་དམར་བ་ལ། །
ཞི་བ་ཕྱག་ན་པདྨ་བསྣམས། །
དབྱངས་ཅན་བརྟུལ་ཞུགས་ཅན་གྱིས་བསྒོམ། ༢ །
ཁྲ་བ་དགུག་པའི་སྦྱོར་བ་ནི། །
ཞལ་གསུམ་ཕྱག་དྲུག་རལ་གྲི་[1]བསྣམས། །

ན་རྡོ་རྗེ་ཞེས་པ་འདོས་རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་འདི་ཡང་ཞེ་སྡང་གཤིན་རྗེ་······གཤེད་དང་འདྲའོ[2]། །དགོས་པ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་ཚང་དགུག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ།༢།

རྡོ་རྗེ་དབྱངས་ཅན་མའི་ཞལ་ལ་སོགས་པའི་དོན་དུ་ཞལ་གསུམ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། པདྨ་དམར་པོ་འཛིན་ཞེས་བྱ་བ་འདིས་ཀྱང་རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་འདིར་[3]འདོད་ཆགས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དང་འདྲ་བའོ། །དགོས་པ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། ཤེས་རབ་འཕེལ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ།།༢།།

རྡོ་རྗེ་གཽ་རཱིམའི་ཞལ་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། ཞལ་གསུམ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། འདི་ལྟ་བུས་ཀྱང་ཕྲག་དོག་གཤིན་…

---

༡ རྒྱ་དཔེར་༠ (ཁཙཾ༢) མེད་སྣང་། ༢ སྣ་༠ འདྲ་བའོ། ༣ སྣ་༠ འདིར་མི་འདུག

ནོར་བུ་མགྲོན་འདྲ་བ་ནི། །

གཱུར་མཁས་པས་བསྒོམ་པར་བྱ། ༨ །

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་གཞོན་རྗེའི་[1] གཞིད་པོ་[2] གསང་.....[3] པ་དང་དགུག་པ་ཞེས་བྱ་བའི་[4] ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་ནས་རྡོ་རྗེ་ཙཀྲ་ཀའི་[5] སྔགས་འདི་གསུངས་སོ།༤།

ཨོཾ་[6] ཙཀྲ་ཀ་སི་དྷྲི་[7] ནཱ་ནི་ལ་[8] ཏྲ་ཊི་ཏི་ར་ད་ན་ཏ་ཡ་ཨ་པ་ཀ་ཊི་ཏི་ཚ་ཏི་[9]......... ར་ཨ་ཀ་ཀྲཱ[10] ཡཛཿ།༦།

ཛྲེ་གཞིད་ཀྱི་ཞལ་དང་། སྐུ་མདོག་གཙོར་བསྟན་པ་ལས། འདི་ཡང་ཕྲག་དོག་གཞོན་རྗེ་གཞིད་དང་འདྲ་བའོ། །དགོས་པ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། ཁྲ་བ་དགུག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ།༥།

ཙཀྲ་ཀའི་དགོས་པ་བསྟན་པ་བཤད་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། དེ་ནས་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ཁྲག་དགུག་ཅེས་[11] པ་ནི་གང་གིས་ཁྲག་འགུག་པར་བྱེད་པ་དེ་ལྟ་བུའོ། །དེ་ཉིད་ནི་རྡོ་རྗེ་སྡེ་མི་ཕྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཡང་རྡོ་རྗེ་ཙཀྲ་ཀའི་གཟུགས་ཏེ་དེར་སེམས་གཅིག་པས་ན་དེ་ཉིད་ཏིང་ངེ······འཛིན་ནོ།༤—༦།

---

༡ ལྷ་ ཛྲ། ༢ རྒྱ་དཔེར་ (སཏྭམ) གཞིན་ཛྲེ་ཆེན་པོ། ༣ ལྷ་ བསད། རྒྱ་དཔེར་ རཀྵ ༤ རྒྱ་དཔེར་ (བཛྲ) ཏོ་ཛེ་ཞེས་ཀྱང་འདུག ༥ ལྷ་ ཙཀྲ་ཀའི། ༦ རྒྱ་དཔེར་ ཨོཾ་བཛྲ། ༧ ལྷ་ ཙཀྲ་ཀ་སི་ཏྲ། ༨ པེ་ ནག ༩ ལྷ་ ཏྲི། ༡༠ རྒྱ་དཔེར་ ཨུཀྐཱ་ཡ ཞེས་པ་གཉིས་འདུག ༡༡ སྡེ་ ཞེས་བྱ་བ་ནི།

སྔགས་འདི་དག་ནི་དྲན་བྱས་ན། |
ཁ་གདངས་པ་དག་བྱས་པ་ཡིན། |
འཇིག་རྟེན་གསུམ་གྱི་ཁྲག་ཆེན་[1]པོ། |
འགུགས་པ་[2]འདི་ལ་ཐེ་ཚོམ་མེད། ༥ |

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་གཤིན་རྗེའི་[3]གཤེད་ཆེན་པོ་ཚང་...... འགུགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་[4] ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་ཏེ། རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་འི་ཚང་འགུགས་[5]པའི་སྔགས་གསུངས་པ།༦།

ཨོཾ་བཛྲ་ཀྲོ་དྷ་ཧ་ཡ་གྲཱི་ཝ[6] བཛྲ་མ་མ་ཀི[7] ཧྲྀཾ་ཧྲྀཾ། སམ་ཧྲྀཾ་སམ་ཧྲྀཾ། ཧྲི་ཧྲུ་ཀ[8]ཧྲ། [9]ཨ་ཀ་ཏྲ་ཡ་ཛཿ།༧།

ཁ་གདངས་པ་དག་བྱས་པ་ནི། ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྕེ་ལ་ཧཱུཾ་ཡིག་དམར་པོ་བལྟས་ཏེ། དེའི་འོད་ཟེར་རྣམས་ལས་སྲིན་བུ་བདུན་གྱི་རྣམ་པར་སོང་སྟེ། བསྒྲུབ་བྱའི་སྙིང་ཁྲག་སྟེ་དེའི་ཁྲག་རྣམས་སྲིན་བུ་བདུན་གྱི་རྣམ་པ་དེས་བཀུག་ནས་རང་གི་ཁར་ཞུགས་པར་ང་རྒྱལ་བརྟན་པར་བྱ་ཞིང་སྔགས་བཟློད་པ་དང་ལྡན་པའོ། | ཁམས་གསུམ་ནི་འཇིག་རྟེན་གསུམ་པའོ། ཁྲག་ཆེན་པོ་ནི་ཁྲག་གི་ཚོགས་སོ།༥།

ཚང་འགུག་པའི་རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྟེང་བཞིན་པའི་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་འི་གཟུགས་[10]དེ། འདིར་གསུངས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གསུངས་ནས་སོ།༦–༧།

---

༡ རྒྱ་དཔེར། (མཧཱ་རཏྣ) རིན་པོ་ཆེ་ཆེན་པོ། ༢ ལྷ། བར། ༣ ལྷ། རྗེ། ༤ རྒྱ་དཔེར། རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བའི། ༥ རྒྱ་དཔེར། ཚང་འགུགས་པའི་ཞེས་པ་མི་འདུག ༦ ལྷ། སྣ། ཊེ། ༧ རྒྱ་དཔེར། ཀི ༨ པེ། ཧྲི་ཧྲུ་ཀ་སཾ། ༩ རྒྱ་དཔེར། (མཧཱ་མུ་དྲེ) ཚང་ཆེན་ཞེས་ཀྱང་འདུག ༡༠ སྣ། གཟུགས་སོ་དེ།

ཛ་མཁན་ལག་པ་ཕྱིས་པའི་སས། །
བུམ་པ་ཁ་མཛེས་ཉེར་བྱས་ལ། །
ཀུན་མའི་སྐྲ་ནི་རྟེན་བཞག་སྟེ། །
སྤྲགས་ནི་རྫིས་སུ་དྲན་པར་བྱ། །
སྤྲགས་འདི་ཆེ་བའི་བདག་ཉིད་འདི། །
བ་ད་[1] མཆོད་རྟེན་དག་ཏུ་བསྟན། །

ཚང་གཞག་པའི་སྐོར་གསུངས་པ། ཛ་མཁན་ལག་པ་ཕྱིས་པའི་ས། ། ཞེས་པ་སྟེ་ཁམ་པའི་རྫོད་བྱས་པའི་རྫིས་ལ་ལག་པ་ཕྱིས་པ་རྗེས་ཏེ་ཀ་ང་འཛམ་པ་ཛ་མཁན་གྱི་ས་འཇོར་བ་དེ་ལས་སོ། །ཉེ་བར་བྱས་ལ་ཞེས་པ་ནི་རིང་ཐུང་གི་ཚད་ཁྲུ་གང་ལ་ཁའི་ཞེང་དུ་མཐོ་གང་བ་ལྟོ་ཆེ་བ་དེར་ཚང་བླུགས་ལ་སྐོད་རྩང་བ་གཞན་ཞིག་དང་ལྡན་པས་ཁ་བཙད་[2] པའོ། །ཀུན་མའི་སྐྲའི་སྟེང་ཞེས་པ་ནི་གཡེངས་པའི་སྐྲ་ལས་རྒྱན་བོ་བྱ་སྟེ། སྤྲགས་འདིས་[3] རྫིས་སུ་དྲང་བར་བྱ། ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཚང་ཚུང་ཟད་སྲོས་ནས་འོངས་ཏེ། སྐོད་དུ་བླུགས་ནས་ཚང་དེ་ལ་ཛཿཡིག་དམར་པོ་འི་འོད་ཟེར་གྱི་སྤུ་གུས་སྤུབས་ནས་དྲངས་ཏེ་ཀྲུགས་ནས་སྐོད་དུ་བླུགས་པ་ཉིད་དུ་བསམ་ཞིང་སྤྲགས་བརྗོད་པར་བྱའོ།།༡༠།

པདྨའི་[4] མཆོད་རྟེན་དག་ཏུ་བསྟན་པ་ ཞེས་པ་ནི་ཨོཾ་དེ་[5] ཤ་…… ཞེས་བྱ་བའི་གནས་ན་པདྨའི་མཆོད་རྟེན་ཡོད་པ་སྟེ། དེར་དཔའ་བོ་དང་དཔའ་

---

1 རྒྱ་དཔེར་。(ཙཎྜེ) གྲོང་ཁྱེར་དུ། 2 རྒྱ་དཔེར་。(སམ་ཀྲྀ་ཏམ) ཁ་བཅས།
3 སྣ་。འདིས་ཞེས་པ་མི་འདུག 4 ལེགས་སྦྱར་དུ་པཎྜན་ཞེས་པ་གྲོང་ཁྱེར་ལ་བརྗོད་པས་སྐབས་འདིར་(ཙེཏྱཔཎྜན) སྟེ་མཆོད་རྟེན་གྱི་གྲོང་ཁྱེར་ཞེས་པའི་དོན་དུ་སྣང་། 5 སྣ་。བེ་。བ་མི་འདུག
6 རྒྱ་དཔེར་。(ཨུཌྜཡནེཀེ) བྱང་གི་ཕྱག་དུ།

དཔལ་ཀྱི་[1] དམིགས་ནས་འབད་པར་བྱ། །
ཆང་ནི་འགྱུགས་པར་རབ་ཏུ་གྲགས། ༡༡ །

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དམ་ཚིག་ཆེན་པོའི་གཤིན་རྗེའི་[2] གཤེད་རྡོ་རྗེ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་[3] ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་ནས་རྡོ་རྗེ་དབྱངས་ཅན་མའི་སྔགས་གསུངས་པ། ༡༢།

མོ་འི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་དག་ཉིད་ཀྱི་ཚོགས་འཛིག་རྟེན་གསུམ་གྱི་ཆང་འགྱུགས་པའོ། ། དེ་ལྟར་ཡང་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་འི་ཁྲིམ་དེ་ཉིད་ན་ཆང་གི་དྲི་ཟད་པ་མེད་པ་ཡོད་དོ། ། དཔལ་གྱིས་དམིགས་ནས་འབད་པར་བྱ།། ཞེས་པ་ནི་ཕ་རོལ་གྱི་སྤྱོད་ཡུལ་མ་ཡིན་ཏེ་མི་སླ་བས་སོ། ༡༡།

ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རབ་ཏུ་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་སྟེ། གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་དངོས་པོ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ནི་ཤེས་རབ་བོ། ། དེའི་ཕ་རོལ་ནི་[4] ཆོས་ཐམས་ཅད་བདག་མེད་པའི་གཉིས་སུ་མེད་པའི་ཤེས་པའི་མཚན་ཉིད་ཅན་ནོ། ། ཕྱིན་པ་ནི་བློ་སྟེ་དེས་ན་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའོ། ། དེ་ཉིད་མི་ཕྱེད་པས་ན་རྡོ་རྗེ་སྟེ་དབྱངས་ཅན་མའི་གཟུངས་སོ། ། ཏིང་ངེ་འཛིན་ཞེས་པ་ནི་སྔར་གྱི་བཞིན་ནོ། ། གཟུངས་[5] འདིས་ཀྱང་བརྩམས་པ་ལ་ཞུགས་ཏེ་ཞག་སོ་སོར་བཟླ་བར་བྱའོ། ། ཨོཾ་རཱ་ག་རྡི་ཞེས་པའི་

---

༡ ལྷ་° ཀྱིས། ༢ ལྷ་° ཆེ། ༣ རྒྱ་དཔེར་° (བཛྲ) རྡོ་ཆེ་ཞེས་ཀྱང་འདུག
༤ སྡེ་° ཕྱི་རོལ་ན། ༥ སྡེ་° གཟུགས།

ཨོཾ་པི་ཙུ་པི་ཙུ་པྲཛྙཱ་བརྡྷ་ནི་ཛྭ་ལ་ཛྭ་ལ་མེ་དྷཱ་བརྡྷ་ནི། དྷཱི་རི་དྷཱི་རི། བུདྡྷི་བརྡྷ་ནི་སྭཱ་ཧཱ།༡༢།

ཆོས་ཀྱི་དང་པོ་ནས་བཟུང་སྟེ། |
ཀུན་དུ་ཟླ་བ་ཉ་ཡི་བར། |
སྦྱར་བའི་སྐད་ནི་སྨྲ་བར་བྱ། |
ཇི་སྲིད་ཟླ་བའི་རྗེས་འཇུག་པས། ༡༨ |
རྟག་ཏུ་ཚིགས་བཅད་བརྒྱ་ཟིན་འདི། |
ངག་གི་དབང་ཕྱུག་འགྲུབ་པར་འགྱུར། |

སྔགས་ནི་སྔར་གྱི་བསྙེན་པའི་ཡི་གེ་འབུམ་བཟླས་པར་བྱའོ། །ཧོ་ཛེ་དཛྙངས་ཅན་མའི་གཟུགས་ཉིད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ལ་བྱའོ། །ཞེས་པ་ནི་མན་ངག་གོ༡༢–༡༢།

ཆོས་ཀྱི་དང་པོ་ནས་བཟུང་སྟེ། ཞེས་པ་ནི་ ༡དཀར་པོའི་ཚེས་ནས་བཟུང་སྟེ། དུས་ནམ་གྱི་ཚེ་ཞེ་ན། གསུངས་པ། ཇི་སྲིད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ་གང་ཙམ་ཟད་བརྗོད་པ་ཀུན་ཏེ་ཡང་དག་པར་འདུས་ཟུས་པ་དེ་ཉིད་ཀྱིས་སོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱོགས་ལ་ཡང་ཅི་ཉིན་ཞག་དེ་ཉིད་ལ་ཡང་དག་པར་འདུས་པ་དེ་ཉིད་དམ་ཞེ་ན། གསུངས་པ། ཇི་སྲིད་ཟླ་བའི་རྗེས་སུ་འཇུག་པ་ཞེས་པ་སྟེ། གང་གི་ཚེ་ཟླ་བ་ཤར་བ་དང་དེར་མངོན་པར་ཕྱོགས་པའོ། །མི་ནུས་ན་མདུན་དུ་སྣོད་རྒྱས་བཀང་ལ་ཟླ་བའི་གཟུགས་ལ་བལྟ་ཞེས་པ་ནི་མན་ངག་གོ ༡༨།

མ་ལུས་ལུས་པ་མེད་པ་ནི། །ཞེས་པ་ནི་འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་

---

༡ ས྄ྟ་༠ ཞེས་བྱ་བ་ནི།

ཁམས་གསུམ་མ་ལུས་པ་དག་ནི། །
མ་ལུས་ལུས་པ་མེད་པར་འགྱུབ། ༡༤ །

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་གཤིན་རྗེའི་[1]གཤེད་[2]རྡོ་རྗེས་ཁྲ་བ………འགུགས་པ་[3]ཞེས་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་ནས། ཁྲ་བ་འགུགས་པར་བྱེད་པའི་གོ་རིའི་སྔགས་འདི་གསུངས་སོ།༡༦།

ཨོཾ་ཨཱ་ཀྲ་ཧོ་ཙོ་ ཧྲཱི་ཧྲཱིཿ ཥཊ་ཊཱ། ཥཊ་ཊཱ། ཤུཀྲམ། ཨཱ་ཀྲ་ཡ་ཛཿཛཿཛཿཧྲཱུཾ་ཧྲཱུཾ་ཧྲཱུཾ་སྭཱ་ཧཱ[4] །༡༧།

པདྨ་ཁ་[5]དང་རྡོ་རྗེ་དང་། །
དྲིལ་བུ་ལྕགས་ཀྱུའི་རླུང་སྦྱོར་གྱིས། །

རྟེན་ལས་འདས་[6]པའོ། ཁམས་གསུམ་མ་ལུས་པ་ཞེས་པ་ནི་འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་ཀུན་ཀྱང་དབང་དུ་བྱར་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ།༡༤།

ཁྲ་བ་འགུག་པ་ལ་སོགས་པ་ནི་སྔ་མ་བཞིན་ནོ། །རྡོ་རྗེ་གོ་རིའི་གཟུགས་ལ་ཞེས་པའི་དོན་དོ།༡༦_༡༧།

རླུང་དང་དྲིལ་བུ་ལྕགས་ཀྱུ་སྦྱོར། །ཞེས་བྱ་བ་ནི། ཨོཾ་ཀཏ་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་སྔགས་བརྗོད་པ་སྟེ། གང་གི་ཚེ་ཛཿཡིག་གསུམ་བརྗོད་པར་བྱས་པ་དེའི་ཚེ་ལྟེ་ལ་ཛཿཡིག་དམར་པོའི་འོད་ཟེར་དང་བཅས་པའི་

1 ལྷ་༠ རྗེ། 2 ཀྱུ་དགེ་ར་༠ (མདྲལམ) གཤེད་ཆེན་པོ། 3 ཀྱུ་དགེ་ར་༠ (བརྗོད་བྲལ) རྡོ་རྗེ་ཞེས་པའི་འདུག 4 ཀྱུ་དགེ་ར་༠ ཨོཾ་ཀ་ར་ར་ཏི་ཀ་ཧོ་ཙ་ཧྲི་ཛཿཛཿཧྲཱིཿཥཊ་ཀ་རཥཊ་ར་ཡཿཤུཀྲམ་ཀ་ཧོ་ཡ་ཛཿཛཿཛཿཧོ་ཧུ་སྭ་ཧཱ། 5 བོད་འགྲེལ་དུ་ཁ་གདོང་དང་ཀྱུ་དགེ་ར་ཁ་གདོང་། 6 ཀྱུ་དགེ་ར་༠ (ཨུཏྟམ) གཉིས་ཀ་ཞེས་ཀྱང་འདུག 7 ཀྱུ་དགེ་ར་༠ ཀཏཏ།

བརླས་དང་བསྒོམ་པའི་སྦྱོར་བ་ནི། |
ཁྲ་བའི་ཚོགས་ནི་འགུགས་པར་བྱེད། ༡༨ |
ནགས་ཀྱི་ནང་ངམ་དབེན་པ་རུ། |
ལས་འདི་དག་ནི་བསྒྲུབ་བྱས་ནས། |
ཉུབ་བདུན་ཙམ་དུ་སྦྱོར་བ་ཡིས། |
འགུབ་འགྱུར་འདི་ལ་ཐེ་ཚོམ་མེད། ༡༩ |

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་གཤིན་རྗེའི་གཤེད་ཆེན་པོ། རྡོ་རྗེ་ནག་པོ་འཇིགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་ནས་དངང་

འབྱུང་བའི་རླུང་ལྷུགས་ཀྱིའི་རྣམ་པས་ནང་དུ་སྨྲ་ཀྱིའི་རྣམ་པས་ཁྲ་བ་ངཀུག་སྟེ་…
ཁར་ཞུགས་པས་[1]བལྟ་བར་བྱའོ། །དེའི་ཚེ་གང་ནས་འོང་ཞེ་ན། སྤྲང་གྱི་དང་སྦྱར་བར་བྱ་སྟེ་ཁ་[2]གདོང་ཞེས་པ་ནི་བླ་གའི་ལམ་ནས་སོ། །རྡོ་རྗེའི་ལམ་ནས་ཞེས་པ་ནི་ཕོ་འི་དབང་པོ་འི་བུག་པ་ནས་སོ། །དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ་ལམ་དེ་ནས་རླུང་དང་དྲིལ་བུ་ལྷུགས་ཀྱིའི་སྦྱོར་བ་འདི་རབ་ཏུ་ཞུགས་ཏེ་མགོ་བོ་ན……
གནས་པའི་ཁྲ་བའི་ཚོགས་ཏཾ་[3]ཡིག་ལས་བཀུག་ཅིང་དྲང་ངར་བྱའོ། །བརླས་དང་བསྒོམ་པ་ཞེས་པ་ནི་སྔགས་བརླས་པ་དང་ལྷར་བསྒོམ་པའི་སྦྱོར་བ་ལས……
སོ།། ༡༨—༡༩།།

གཤིན་རྗེ་འཇོམས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཉོན་མོངས་པ་སྟེ་ཞེ་སྡང་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་གཟུགས་སོ། །དབང་བསྐུར་བའི་མཆོག་ཅེས་པ་ནི་སེམས་ཅན་རྗེས་

---

༡ སྣ་ ༠ ཞེ་ ༠ ཤུག་པར། ༢ སྣ་ ༠ ཁ། ༣ རྒྱ་དཔེར་ ༠ ཏཾ་ཏུ།

བསྐུར་བ་མཆོག་གི་དམ་ཚིག་འདི་ཉིད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་རྡོ་རྗེ་རྣམས་ལས······ ཕྱུང་བར་མཛད་དོ།༢༠།

ཨུདུམབཱ[1]རམཎདྷཱར། །
པཱ[2]རིཛྫད་ཀ་ཕྲེང་དང་། །
ཀརཎིཀ་ཡི་ཕྲེང་བ་ནི། །
བྲ་ཧྨད་ཟུང་[3]ལ་བྱིན་གྱིས་རློབ[4] ། ༢༡ །
རལ་གྲི་ཆེན་པོ་[5]ཁམས་གསུམ་པའི། །
སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱིས་ཕྱག་བྱས་པ། །
འབྱུང་པོ་ཐམས་ཅད་འགུགས་པར་བྱེད[6]། །
ལས་ཀྱི་རལ་གྲི་དམ་པ་འདི།. །

སྐུ་བཟུང་བ་ལ་ཕུལ་དུ་བྱུར་པས་ན་མཆོག་གོ །དབང་བསྐུར་བ་ནི་དབང་གི་རྒྱུར་གྱུར་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་དམ་ཚིག་སྔགས་ནི་དེས་ན་དབང་བསྐུར་བ་མཆོག་གི་དམ་ཚིག་གོ །དཀྱིལ་འཁོར་དུ་ཞུགས་པའི་དོན་དུ་མེ་ཏོག་སྦྱིན་པའི་སྔགས་སོ།། །།དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། སློབ་མ་ལ་མིག་རས་བཀབ་ལ་དཀྱིལ་འཁོར་ཁང་པའི་ཕྱི་རོལ་དུ་ཡོལ་བ་ཕྱུག་སྟེ། ཨུ་དུམྦཱ་ར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་སྔགས་ཀྱི་ཚིག་འདིས་ལག་པར་མེ་ཏོག་སྦྱིན་པར་བྱའོ།༢༠–༢༡།

མེ་ཏོག་དོར་བའི་རྗེས་ལ། ཆུ་དང་དབུ་རྒྱན་གྱི་དབང་སྦྱིན་པ་དང་། གང་གི་ཚེ་རྗེ་རྗེས་དབང་བསྐུར་བ་དེའི་ཚེ་ཁམས་གསུམ་ཆེན་པོའི་ལ་སོགས···· པའི་སྔགས་འདིས་སྦྱིན་པར་བྱའོ།༢༢།

༡,༢ ལྷ་༠ བ། ༣ ལྷ་༠ ཟུངས། ༤ ལྷ་༠ རློབས། ༥ ལྷ་༠ པོས། ༦ རྒྱ་དཔེ་ར་༠ ཚིག་རྐང་འདི་མི་འདུག

བཟུང་ན་བདུད་ལས་རྒྱལ་བར་འགྱུར། །
ཤེས་རབ་ཐབས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད། །
རྡོ་རྗེ་དྲིལ་བུ་བསྒྲུབས་[1]པ་འདི[2]། །
[3]ཡོང་ལ་སློབ་མ་ཡང་དག་ཟུང་[4] །༢༢–༢༣།

བཏུང་བ་རིན་པོ་ཆེ་འདིས་ནི། །
རྡོ་རྗེ་ལུས་ནི་རབ་ཏུ་སྒྲུབ། །
ཀུན་དུ་ཡེ་ཤེས་བྱ་ཁྲོད་ཀྱིས། །
འབྱུང་[5] ཤིག་ཡེ་ཤེས་ལས་བྱུང་བ། ༢༤ །

རྡོ་རྗེ་དྲིལ་བུའི་དབང་བསྐུར་བ་གསུངས་པ། ཤེས་རབ་ཐབས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། རྡོ་རྗེ་ཁྲོད་ཀྱིས་བྱ་བ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྔའི་ངོ་བོ་ནི་ཁྲོད་དོ་ཞེས་དབུགས་དབྱུང་བ་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །སློབ་མ་བསླུ་བ་ཉིད་དུ་གྱིས༑ ༑ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྗེས་སུ་གནང་བའི་སྦྱིན་པའོ།༢༣།

ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ལས་བྱུང་བའི་[6]བྱང་ཆུབ་སེམས་བཟའ་བའི་...... ཐུགས་སུ་གསུངས་པ། བཏུང་བ་རིན་པོ་ཆེ་འདིས་ནི། རྡོ་རྗེའི་ལུས་ནི་རབ་སྒྲུབ་པ། ཞེས་པའོ། །བཏུང་བའི་གནས་སྐབས་ལས་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་འཇུག་པའི་དམ་ཚིག་གི་ཆུ་བཏུང་བའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། འབྱུང་ཞིག་ཅེས་བྱ་བ་

---

༡ ཞ་. སྒྲུབ། ༢ ཅོ་དཔེ་ར་. (གྲྀཧཱིཏྭཱ་བཛྲ་གྷཎྚཱཾ) སྔ་གཟུང་ཞིག་རྡོ་རྗེ་དྲིལ་བུ་ཁྲོད་ཀྱིས་ཞེས་པའི་ཚིག་རྐང་གཅིག་མང་འདུག ༣ ཞ་. ཡོངས། ༤ ཞ་. གཟུང་། ༥ ཞ་. འབྱུངས། ༦ ཅོ་དཔེ་ར་. ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ལས་བྱུང་བའི་ཞེས་པ་མི་འདུག

སློབ་མའི་ཁར་ཡང་བླུག་བྱ་བ། |
གཤིན་རྗེའི་[1] གཤེད་ཀྱིས་བསྒྲགས་[2] པ་ཡིན། |
རྡོ་རྗེ་སློབ་མ་བདག་ཉིད་ཆེས། |
ཤིན་ཏུ་དགའ་བའི་སེམས་སུ་བྱ། ༢༥ |

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེའི་…[3] གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད་ལས་དགུག་[4] པ་ལ་སོགས་པའི་སྦྱོར་བའི་[5] རིམ་པར་ཕྱེ་བ་[6] སྟེ་བདུན་པའོ།། ||

ལ་སོགས་པའོ། །དོན་ཆེན་པོའི་རྒྱུའི་ཕྱིར་དང་མི་གཙང་བ་བསལ་བའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། ཤིན་ཏུ་དགའ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། བདག་ཉིད་ཆེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡོན་ཏན་ཆེན་པོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༢༣–༢༥།

ལེའུ་བདུན་པའི་བཤད་པ་རྫོགས་སོ།། ||

---

༡ ལྷ་° རྗེ། ༢ ལྷ་° སྣ་° བསྒྲུབས། ༣ ལྷ་° རྗེ། ༤ ལྷ་° འགུགས།
༥ ལྷ་° པ། ༦ རྒྱ་དཔེར་° རིམ་པར་ཕྱེ་བ་མི་འདུག

ལེའུ་བརྒྱད་པ།

དེ་ནས་རྡོ་རྗེ་འཛིན་རྒྱལ་པོ། །
སྟོང་བའི་འཁོར་ལོ་སྒྲོར་བར་བྱེད། །
བགེགས་དང་ལོག་པར་འདྲེན་པ་དང་། །
གདུག་པ་ཅན་དག་བསལ་ཕྱིར་གསུངས། ༡ །
དཔལ་ལྡན་[1]རལ་གྲི་འཆང་བའི་བདག །
སྟོང་བའི་འཁོར་ལོ་སྒྲོར་བར་བྱེད། །
རལ་གྲི་འབར་བའི་བདག་ཉིད་ཀྱིས། །
རིག་པ་གསུམ་ལས་མཆོད་པར་བྱེད[2]། ༢ །

སྔོན་དུ་གསུངས་པའི་གསོལ་བ་བཏབ་པའི་རྗེས་ལ། དཀྱིལ་འཁོར་བྲི་བའི་དོན་དུ་ས་གཞི་ཡོངས་སུ་གཟུང་བ་གསུངས་པ། དེ་ནས་རྡོ་རྗེ་འཛིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། བགེགས་དང་ལོག་པར་[3]འདྲེན་པ་དང་གདུག་པ་ཅན་དག་ཅེས་པ་ནི་ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ཀྱི་དབྱེ་བས་སོ། བཟླག་པའི་ཕྱིར་ནི་བསལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །གསུངས་པ་[4]ནི་སྔགས་ཞེས་པ་[5]ལྷག་མའོ།༡།

རལ་གྲི་འཆང་ཞེས་པ་ནི་ཉེ་བར་མཚོན་ནས་འཁོར་ལོ་དང་། རིན་པོ་ཆེ་དང་། པདྨ་དང་། རྡོ་རྗེ་རྣམས་བྱིན་ལ། ལྷ་ཚར་ལ་ཡང་སྔགས་འདི་བརྗོད་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་རལ་གྲི་ཉེ་བར་མཚོན་ནས་གཅོད་པར་བྱེད་པ་འགེགས་པར་བྱེད་པའོ། །རིགས་པ་[6]གསུམ་ལས་སྐྱེས་པ་ནི། ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ལས་ཡང་དག་པར་བྱུང་བའོ།༢།

---

༡ རྒྱ་དཔེར་། (ཁཌྒ) རྒྱལ་པོ། ༢ རྒྱ་དཔེར་། (ཏྲིཀུལམིཏྲིཀུལཨརྦྦད྄) སྒྲ་གསུམ་ལས་སྐྱེས་གཅོད་པར་བྱེད། ༣ སྣ་། པར་མི་འདུག ༤ སྣ་། པེ་། གསུངས་ཞེས་པ། ༥ སྣ་། པ་མི་འདུག
༦ རྒྱ་དཔེར་། (ཏྲིཀུལཨརྦྦ) སྒྲ་གསུམ་ལས་སྐྱེས།

[1]སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་སྐྱོབ་པ་ཡི། |
སྤྱོད་པའི་ཚུལ་དང་ཁྱད་པར་གྱིས། |
ས་དང་ཕ་རོལ་ཕྱིན་པ་ལ། |
ལྷ་མོ་ཁྱོད་ནི་དབང་དུ་གྱུར[2]། |
གཤིན་རྗེའི་[3]གཤེད་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ནི། |
སློབ་དཔོན་བདག་[4]གིས་དཀྱིལ་འཁོར་བྲི། ༢ |

གོས་ཀྱིས་གདོང་ནི་བཅིངས་བྱས་ལ། |
དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ནི་མདུན་སྐོར་[5]བཞག |

སའི་ལྷ་དགུག་པའི་དོན་དུ་ལྷ་མོ་ཁྱོད་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས། སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དྲུག་པའི་དོན་གྱི་གཉིས་པའོ། །དབང་དུ་གྱུར་ཞེས་པ་ལ་དབང་པོ་ནི་ལེགས་[6]པར་མཐོང་བའི་ལམ་དུ་གསུངས་པ། དེ་ལ་ཡོད་པས་དབང་པོའོ་[7]།༢།

དཀྱིལ་འཁོར་དུ་གཞུག་པའི་དམ་ཚིག་དང་བྱ་བ་གསུངས་པ། །དམར་པོའི་གོས་ཀྱིས་ཞེས་པ་ནི་རས་ཀྱིས་སོ། །མདུན་སྐོར་ཞེས་པ་ནི་ཤར་སྐོར་

---

༡ རྒྱ་དཔེར་。འདི་མན་ཆོག་རྐང་གསུམ་མི་འདུག ༢ རྒྱ་དཔེར་。འདིའི་མཚམས་སུ་ (སརྦབུདྡྷཱཡིནཱམ) སྐྱོབ་པ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཞེས་ཀྱང་འདུག ༣ ལྷ་。རྗེ། ༤ ལྷ་。དག ༥ སྡེ་。སྐོར། ༦ རྒྱ་དཔེར་。(ལ) དང་། ༧ སྣ་。པེ་。དབང་པོ།

ཁྱོད་སུ་ཞེས་ཀྱང་འདི་སྐད་དྲི། །
སྐལ་བཟང་བདག་ཅེས་ཚིག་ཏུ་བརྗོད། ༤ །
གསོལ་བདབ་པ་ཡི་བློ་བཟང་ལ། །
ཡོལ་བའི་ནང་དུ་སྦྱིན་པར་བྱ། །
དབང་བསྐུར་དོན་དུ་གུས་ཆེན་པོས། །
དེ་ནས་ལན་གསུམ་ཆེད་དུ་བརྗོད། ༥ །

རོ། ། །དྲི་བ་བརྗོད་ཅེས་པ་ནི་སློབ་མ་[1]ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །བརྗོད་པ་ཡང་སློབ་མས་[2]ཞེས་པ་ལྷག་མ་ལའོ་[3]།༤།

གསོལ་བ་གདབ་ཅེས་པ་ནི་སློབ་མས་[4]དེ། རས་སམ་དར་དམར་པོས་གདོང་དཀྲིས་ལ་མེ་ཏོག་བཟུང་བའི་རྗེས་ལའོ། །གསུམ་པ་[5]ཞེས་པ་ནི་ལན་གསུམ་དུའོ། །རྗེས་སུ་བརྗོད་པ་ནི་གསོལ་བ་གདབ་པར་བྱེད་པ་སྟེ། སངས་རྒྱས་ཞེས་པ་ནི་ཆོས་དང་གང་ཟག་ཐམས་ཅད་ལ་བདག་མེད་པར་རྟོགས་པ་…… ལས་ཆོས་ཀྱི་སྐུའི་རང་བཞིན་རྣམས་ཀྱིས་སོ། །ཆོས་ཆེན་པོ་ཞེས་པ་ནི་ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པ་དང་སྤྲུལ་པའི་སྐུས་ཏེ་དེ་དག་གི་སྒོ་ཞེས་[6]པའི་དོན་ཏོ། །རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་རྡོ་རྗེ་ནི་ཟླ་ན་མེད་པའི་བྱང་ཆུབ་བོ། །དེ་ལ་སེམས་དཔའ་ནི་གང་ལ་བསམ་པ་ཡོད་པ་དེ་ལྟ་བུའི་དོན་ནི་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་[7]ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །བདག་ཀྱང་བསྐལ་བའི་དོན་དུ་ཞེས་པ་ནི་བདག་ནི་རང་ཉིད་དོ།།

---

༡ སྣ་° སློབ་མ་ཀ། ༢ སྣ་° མའི། ༣ སྣ་° མའོ། ༤ སྣ་° པེ་° ཡིས་ཏེ། ༥ སྡེ་° པེ་° བ་མི་འདུག ༦ རྒྱ་དཔེར་° (སོ་གྲྀ་ཧེ་ཎེ་དུ་ཥྛཿ) ཐར་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ་ཞེས་འདུག ༧ རྒྱ་དཔེར་° བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ།

ཛཻ་ལྟར་སངས་རྒྱས་ཆོས་ཆེན་པོས། །
རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་དབང་བསྐུར་ལྟར། །
བདག་ཀྱང་མགོན་པོས་དབང་བསྐུར་ཞིང་། །
མཆོག་ཀྱང་བདག་ལ་སྩལ་དུ་གསོལ། ༦ །
དེ་བཞིན་བླ་དང་རོལ་མོས་མཆོད། །
དེ་བཞིན་ཁྲུས་དང་ཕྱག་པས་ཀྱང་། །
སློབ་མ་དང་བས་[1] ཕྱག་པར་བྱ། །
དེ་ལ་བསྟོད་པ་[2] ཀུན་ཀྱང་བྱ། ༧ །

དེ་ནས་རྡོ་རྗེ་འཆང་གི་རྒྱལ་པོས་སྟོང་པའི་སྔགས་གསུངས་པ།

ཨོཾ་ཤཱུ་ནྱ་ཏཱ་ཛྙཱ་ན་བཛྲ་སྭ་བྷཱ་ཝ་ཨཱཏྨ་ཀོ྅ཧཾ། ཨོཾ་[3]ཡོ་[4] ཛ་བཛྲ་སྭ་བྷཱ་ཝ་ཨཱཏྨ་ཀོ྅ཧཾ། ཨོཾ་དྷརྨ་[5]ཛྙཱ་ན་བཛྲ་སྭ་བྷཱ་ཝ་ཨཱཏྨ་ཀོ྅ཧཾ། ༨ །

བསྐྱལ་བ་ནི་བསྲུང་བའོ། །མཆོག་ནི་མངོན་པར་འདོད་པའི་དོན་ཏེ་དབང་བསྐུར་བ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །བདག་གི་ནི་བདག་པའོ་[6]།༥–༦།

དེའི་རྗེས་ལ་སློབ་མའི་བྱ་བ་གསུངས་པ། བླ་དང་རོལ་མོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། བསྟོད་ཅེས་པ་ནི། གདེ་ཧྲུག་རྡོ་རྗེའི་རང་བཞིན་ཁྱོད། །ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ།༧།

སྟོང་པ་ཉིད་བསྒོམས་པའི་རྗེས་ལ། བརྗོད་[7]པ་གསུངས་པ། ཨོཾ་ཤཱུ་ནྱ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དེའི་དོན་རྣམ་པར་དཔྱད་པས་ཅི་དགོས་ཤེ་ན། ཉེ་བར་བརྗོད་པ་དེ་ཉིད་འབྲས་བུར་གསུངས་པའོ།༨།

---

[1] ལྷ་༠ཡེ་༠ཐོ་༠དད་པས། [2] པེ་༠ཇི་ལྟ་བརྗོད་པས། [3] རྒྱ་དཔེར་༠ ཨོཾ་ཡ་ཤུདྡྷཾ།
[4] ལྷ་༠ཕུ། [5] ལྷ་༠ཛྙཱ། [6] ཐོ་༠པེ་༠གཉེ། [7] ཐོ་༠བརྗོད།

ཞི་བ་ལ་སོགས་དབྱེ་[1]བ་ཡི། །
སྦྱིན་སྲེག་དེ་ནས་བཤད་པར་བྱ། །
སྦྱིན་སྲེག་གང་གིས་གྲུབ་པ་ཡི། །
ལས་རྣམས་ཐམས་ཅད་རབ་སྒྲུབ་པ། ༩ །

ཞི་བ་ཞི་བའི་སེམས་ཀྱིས་དེ། །
རྒྱས་པ་རྒྱས་པའི་སེམས་ཀྱིས་སོ། །
དབང་ཡང་དེར་གདང་[2]སེམས་ཀྱིས་དེ། །
བསད་དང་བསྐྲད་པ་ལ་ཡང་ངོ་[3]། ༡༠ །

ཞི་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ཟླུམ་པོ་སྟེ། །
རྒྱས་པ་ཡི་ནི་ཟུར་བྱ་འདྲ། །
དབང་དུ་བྱ་བ་ཟླ་གམ་ལྟར། །
ནམ་མཁའི་ཁམས་འདྲ་བས་ནི་བསད། ༡༡ །

རབ་ཏུ་གནས་པ་དང་། སློབ་མའི་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་དམན་པའི་སྐྱོན་བསལ་བའི་དོན་དུ་སྦྱིན་སྲེག་གསུངས་པ། དེ་ནས་སྦྱིན་སྲེག་ཅེས་ཟུ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ།༩།

རྒྱས་པའི་སེམས་ཀྱིས་ཞེས་པ་ནི་བྱ་རམ་དང་འོ་མ་ཟོས་པའོ། །འདོད་པ་ནི་ཆགས་པའོ། ཁྲོ་བོ་ནི་ཁྲོ་བོ་དང་བཅས་པའོ།༡༠།

དཀྱིལ་འཁོར་རྣམ་པ་ནི་ཐབ་ཁུང་ཟླུམ་པོ་འོ། །ཟུར་བྱའི་རྣམ་པ་ནི་གྲུ་བཞི་པའོ། །ནམ་མཁའི་ཁམས་འདྲ་བ་ནི་གྲུ་གསུམ་མོ།༡༡།

---

༡ ལྷ་༠ སྣ་༠ བྱེད། ཞེ་༠ བྱས་པ། ༢ ལྷ་༠ སྣ་༠ གཏད། ༣ པེ་༠ ཡོད་དོ།

ཞི་བ་ཁྲུ་གང་ཚད་དུ་སྟེ། །
དེ་བཞིན་རྒྱས་པའི་ཁྲུ་དོ་པ། །
ཛེ་ལྟར་རྒྱས་པ་དེ་ལྟར་དབང་། །
བཤད་པ་[1] ལ་ནི་སོར་ཉི་ཤུ། ༡༢ །
ཞི་བ་སྟེང་དུ་ཁྲུ་ཕྱེད་ཚད། །
རྒྱས་པ་ལ་ནི་ཁྲུ་ཙམ་སྟེ། །
སོར་བླ་གཉིས་ནི་བཤད་པ་[2] ལ། །
དབང་ལ་ཇི་ལྟར་དེ་བཞིན་དགུག ༡༣ །

རྒྱར་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། ཁྲུ་གང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ།། ཛེ་ལྟར་རྒྱས་པ་དེ་བཞིན་དངང་། །ཞེས་པ་འདི་ཡང་ཁྲུ་གཉིས་པ་ཉིད་དོ། །སོར་ཉི་ཤུ་ཞེས་པ་ནི་སོར་ཉི་ཤུའི་ཚད་དོ།༡༢།

ཐབ་ཁྲང་རྣམས་ཀྱི་ཟབས་གསུངས་པ་[3]། ཁྲུ་ཕྱེད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ།། བླ་གཉིས་ཞེས་བ་ནི་སོར་བཅུའོ། །དབང་ལ་ཇི་ལྟར་དེ་བཞིན་དགུག་པ་ཡང་དབང་གི་ཐབ་ཁྲང་དང་མཐུན་པར་རོ། །རིངས་པ་ལ་མ་གསུངས་པ་ལ་ཡང་རྒྱས་པའི་ཐབ་ཁྲང་དང་འདྲ་བ་ཡིན་དེ་ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་དང་མཚུངས་⋯ པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་བཞིན་དུ་བསྐྱོད་པ་དང་དབྱེ་བ་དང་བསད་པ་རྣམས་ཀྱང་ཐབ་ཁྲང་འདྲ་བར་ཤེས་པར་བྱའོ།༡༣།

[1,2] ཞི° c གསང་བ། [3] རྒྱ་དཔེར་° (ཀུཎྜཱནཱཾཁྲཱཏྲཱཔ) ཐབ་ཁྲང་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ།

ཆོས་གཅིག་ལ་ནི་ཞི་བ་བྱ། །
ཐྲ་བ་ཉ་ལ་ཀྲུས་པ་སྟེ། །
བཙ་བཞི་ལ་ནི་མངོན་སྤྱོད་དོ། །
དབང་གི་ལས་ནི་ཆོས་བརྒྱད་ལའོ། ༡༨ །

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེའི་[1]……གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད་ལས་སྦྱིན་སྲེག་གི་ཆོ་ག་རིམ་པར་ཕྱེ་བ་[2] སྟེ་བརྒྱད་……… པའོ།། ||

ཉི་མའི་ངེས་པ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། ཆོས་གཅིག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། བཙ་བཞི་ནི་ནག་པོའི་འོ། །མངོན་སྤྱོད་ནི་དབྱེ་བ་དང་བསྐྲད་པ་དང་བསད་པའོ། །ཆོས་བརྒྱད་ནི་དཀར་པོའི་འོ། །འདིར་མན་ངག་[3]ནི་འདི་ཡིན་ཏེ།

དྲན་པ་མེད་ཅིང་ནུས་མེད་པས། །
གང་ཞིག་ཆོ་ག་དམན་གྱུར་ནའང་། །
རབ་གནས་ལ་སོགས་རྗེས་ལ་ནི། །
སྦྱིན་སྲེག་ཀུན་ནས་དགང་[4] བར་བྱ། །
བསྒྲུབ་བྱ་དུ་མའི་དབྱེ་བ་ཡིས། །
སྦྱིན་སྲེག་དབྱེ་བའང་མང་པོར་འགྱུར། །
གཞུང་མངས་དོགས་པའི་འཇིགས་པ་ཡིས།།

---

༡ ལྷ་ ◦ ཚེ། ༢ རྒྱ་དཔེར་ ◦ རིམ་པར་ཕྱེ་བ་མི་འདུག ༣ རྒྱ་དཔེར་ ◦ (ཀླི་ཀེ་ཁ༔) ཁྱད་པར།
༤ སྣ་ ◦ དཀར།

འདིར་ནི་ཕྱོགས་ཙམ་བརྗོད་པའོ། |
སྔགས་དང་ཕྱག་རྒྱ་བཅས་པ་ཡིས། |
དང་པོར་ས་ནི་སྦྱང་བ་ནི[1]། |
ལག་པ་གཡས་པས་གཟུང་བྱ་ཞིང་། |
དེ་རྗེས་རྡོ་རྗེ་བསྐོམས་དེ་བརྡེག |
ཨོཾཧནཧནཀྲོཧྣཧཱུྃཕཊ། |
ཐབ་ཁུང་ཁྲུ་གང་ཚད་དུ་བཀོ་འོ། |
བཀས་པ་ཁྲུ་ཕྱེད་ཟབས་སུ་གྱུར། |
དེ་ལས་གཞི་དང་ཁ་ཁྱེར་དེ། |
དེའི་ཕྱི་རོལ་རྡོ་རྗེ་རྭ[2]། |
གཞི་ནི་གེ་སར་བཅས་པར་བྱ། |
ཁ་ཁྱེར་པདྨ་ཁ་བྱེ་བའོ། |
རྩ་དང་ཞིང་དུ་ཀུན་དུ་མཉམ། |
སོ་སོར་སོར་ནི་བཞི་པའོ། |
རྒྱས་པ་བཞི་ནི་སོར་བརྒྱད་དོ། |
དེ་དོར་འཕངས་སུ་སོར་བརྒྱད་དེ། |
སོར་བརྒྱད་པ་ལ་གྲུ་བཞི་སྟེ། |
སྦུ་ཁྱུད་རྡོ་རྗེས་མཚན་པའོ[3]། |

དབང་དང་དགུག་པ་ལ་ནི་རྒྱས་པ་བཞིན་དུའོ། །ཟླ་བ་ཕྱེད་པའི་རྣམ་པའོ། །དྲག་པོ་ལས་ཀྱི་ཐབ་ཁུང་ནི། །གཞི་དང་ཁ་ཁྱེར་སྒྲུངས་པའོ།།

---

༡ ཟླ་°. ཞེ་°. རྒྱ། ༢ ཚིག་རྐང་འདི་བོད་དཔེར་མི་སྣང་ཡང་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
༣ འདི་ཡན་ཚིག་རྐང་བཞི་རྒྱ་དཔེར་ཚིག་ལྷུག་སུ་འདུག

ཐབ་ཁྲང་དེ་དག་གི་དབུས་སུ་ནི་འཁོར་ལོ་དང་། རིན་པོ་ཆེ་དང་། པདྨ་དང་། རལ་གྲི་དང་། རྡོ་རྗེ་སྟེ། དབུས་ཀྱི་འཕངས་སུ་[1]སོར་གཅིག་ལ་རྩར་སོར་བརྒྱད་པ་བྲི་བར་བྱའོ་[2]། །

ཞི་བའི་རྡུལ་ཚོན་དཀར་པོ་དང་། །
རྒྱས་པའི་རྡུལ་ཚོན་སེར་པོར་བྱ། །
དབང་ལ་དམར་པོ་གཞན་ལ་གནག །
ལས་ཀྱི་རབ་ཏུ་དབྱེ་བས་སོ། །
ཕྱོགས་དང་དུས་ཀྱི་དབྱེ་བས་ནི། །
བདེན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པའོ། །
ཕྱོགས་ལ་ཇི་ལྟར་དེ་བཞིན་དུས། །
མཁས་པས་ལས་ནི་དེ་དེར་བྱེད། །
སྔགས་པས་ཁ་ནི་ཤར་དུ་ཕྱོགས། །
ཞི་བ་ལས་ནི་ཡང་དག་བརྩམ། །
རྒྱས་པ་བྱང་དུ་ཤེས་[3]བྱ་སྟེ། །
མངོན་སྤྱོད་ལས་ནི་ལྷོ་རུའོ། །
དབང་ལ་ནུབ་ཏུ་བརྗོད་པ་སྟེ། །
གང་ཕྱིར་དགུག་པ་ལ་ཡང་ངོ་། །
སྔ་དྲོ་ཞི་བ་བྱ་བ་སྟེ། །
དགོངས་མོ་ལ་ཡང་རྒྱས་པའོ། །

---

༡ སྣ་° འཐངས་སུ་མི་འདུག ༢ རྒྱ་དཔེར་° ཚིག་ལྷུག་འདི་རྣམས་ཚིགས་བཅད་དུ་འདུག
༣ སྣ་° པེ་° ཞེས།

ཉི་མ་གུང་ལ་དྲག་པོའི་ལས། །
ནམ་ཕྱེད་ལ་ནི་དབང་དག་གོ །
སྦྱིན་སྲེག་རྗེས་མཐུན་ཤིང་རྣམས་ནི། །
མ་གས་པ་དང་རྩེ་མོའི་ཆ། །
ལོ་མ་གཉིས་ལྡན་དགེ་བའོ། །
ལས་ཀྱི་དབྱེ་བས་བསྡུས་པ་ནི། །
རྒྱས་པ་སོར་ནི་བཅུ་བཞི་སྟེ། །
ཞི་བ་སོར་ནི་བཅུ་གཉིས་པའོ། །
དབང་ལ་སོར་ནི་བཅུ་པ་སྟེ། །
དབྱེ་དང་བསྐྲད་ལ་སོར་ནི་བརྒྱད། །
[1]དེ་བཞིན་ཞི་ལ་ཤཀར། །
དཀར་པོའི་འབྲས་ནི་མ་གྲུགས་པ། །
དེ་བཞིན་དབང་དང་དགུག་པ་དག །
མར་དང་སྦྲང་དང་ཀ་རར་བསྲེས། །
མེ་ཏོག་དམར་པོའམ་ཨུཏྤལ། །
དེ་བཞིན་རྒྱས་དང་རངས་པ་དག །
མེ་ཏོག་སེར་པོ་མར་ལ་སྦགས། །

དེ་བཞིན་དུ་བཤད་པ་ལ་[2]ནི་ཚེར་མ་དང་[3]། དུག་དང་། སྐྱི་ཚེ་དང་། ཚྭ་དང་། ཤིང་སྐམ་འཁྱོག་པོ་རྣམས་ཚ་བའི་མར་གྱིས་སྦགས་ཏེ་དེ་རྣམས་

---

༡ འདི་མན་ཚིག་རྐང་བདུན་རྒྱ་དཔེར་ཚིག་ལྷུག་སུ་འདུག ༢ སྣ་༠ སེ་༠ ལ་མི་འདུག

༣ རྒྱ་དཔེར་༠ (སྒྲ༢༢ཏུར) ཐང་འཁྲོམ་ཞེས་ཀྱང་འདུག

སྲེག་པར་བྱེད་དོ། །དེ་བཞིན་དུ་བསྐྲད་པ་ལ་བྱ་རོག་ཆེན་པོའི་སྒྲོས་སྦྱིན་སྲེག་བྱའོ༑ ༑དེ་ལྟར་གཞན་དང་གཞན་དག་ནི་རྗེས་སུ་འབྲངས་ཏེ་ཤེས་པར་བྱའོ༎

འབྲུ་དང་ཤིང་རྣམས་ཉིད་དང་ནི། |
མཆོད་ཡོན་སྣོད་ནི་གཡས་སུ་གཞག |
རིམ་པ་ཇི་ལྟར་བཞག་ནས་ལ། |
དེ་ཀུན་མངོན་པར་སྔགས་པར་བྱ། |
རྒྱས་པས་ལག་པ་ཐལ་སྦྱར་ནས། |
དབུས་མ་གཉིས་པོ་བཀྲུང་ནས་ལ། |

ཐམས་ཅད་དག་པར་བྱེད་པའི་ཕྱག་རྒྱའོ། །ཨོཾ་ཤྲཱི[1]སྭཱ་ཧཱ། ན་ར་དག་པར་བྱེད་པའི་སྔགས་སོ། །ཨོཾ་སྭ་སྭཱ་ཧཱ་ རྫས་འཁྲུ་བའི་སྔགས་སོ། ། ཨོཾ་ཧྲཱིཾ[2]སྭཱ་ཧཱ། འབྲུ་རྣམས་དག་པར་བྱེད་པའི་སྔགས་སོ། །ཨོཾ་ཀུཎྜ་ཀུཎྜ[3]སྭཱ་ཧཱ། རྫས་གཞན་རྣམས་སྦྱོང་བར་བྱེད་པའི་སྔགས་སོ། །ཨོཾ་ཨ་ར་སྭཱ་ཧཱ། ཡམ་ཤིང་སྦྱོང་བའི་སྔགས་སོ། |

ཤིང་ནི་ཐབ་ཁུང་ལས་དམའ་བ། |
ཐབ་ཁུང་སྦྱིན་སྲེག་ཆ་ལས་བྱུང་། |
ཀུ་ཤར་[4] མིན་རྩེ་རྣམ་མིན། |
རྩེ་མོ་ཤར་ཕྱོགས་ཁ་བསྟན་པ། |
བཀྲམ་ནས་ཡང་ནི་རྩེ་གཅིག་ཏུ། |

---

[1] ཅུ་དགེར༌། ཤྲཱིཾ། [2] ཅུ་དགེར༌། ཛཾ། [3] སྣ༌། པེ༌། རཀྵ་རཀྵ། ཅུ་དགེར༌། ཀྵ་རཀྵར།
[4] ཅུ་དགེར༌། (དྭ་རྒྱུ) རིང༌།

ཁ་ཁྱེར་ལ་ནི་དགྲམ་པའོ།

ཙན྄དནཨགརུ་ཤིང་རྣམས།

གཞན་ཡང་དྲི་དང་ལྡན་པའི་ཤིང་།

སྦྱིན་སྲེག་རྣམ་པས་འབར་བ་དང་།

ཕྱི་ནས་ཡང་ནི་མེ་དགུག་བྱ།

མེ་ཡི་དབུས་སུ་བསམ་བྱ་བ།

པདྨ་ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ།

མེ་ཡི་ལྷ་ནི་སྤྱན་གསུམ་པ།

ཕྱག་བཞི་ཞལ་ནི་བཞི་པའོ།

གཡས་པ་མཆོག་སྦྱིན་བགྲང་ཕྲེང་དང་།

གཡོན་པ་དབྱི་གུ་སྤྱི་བླུགས་སོ།

ཁ་དོག་ལས་ཀྱི་རྗེས་མཐུན་པར།

ས་བོན་རཾ་ལས་བསྒོམ་པར་བྱ།

སྤོས་སྣོད་ལག་ཏུ་བཟུང་བྱས་ལ།

ཨོཾ་ཚུར་སྤྱོན་ཚུར་སྤྱོན་འབྱུང་པོ་ཆེ།

ལྷ་ཡི་དྲང་སྲོང་བྲམ་ཟེ་མཆོག

སྲེག་བླུགས་ཞལ་ཟས་བཞེས་སླད་དུ།

འདི་ཉིད་དུ་ནི་ཉེ་བར་བཞུགས།

དགུག་པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པའོ།

དེ་ལ་མཆོད་ཡོན་ཞབས་བསིལ་དབུལ།

དེ་ལ་མཆོད་ཡོན་གྱི་སྔགས་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། ཨོཾཛཿཧཱུཾབཾཧོཿཁཾརཾ། ཞབས་བསིལ་གྱི་སྔགས་ནི། ཨོཾཎྲིཏྲིཧཱུཾཁཾ། བགོས་གཙང་གི་སྔགས་ནི། ཨོཾཧྲཱཾཧྲཱཾ[1]།

འདོད་པ་དངོས་གྲུབ་བློ་ཉིད་ཀྱིས། །
དམ་ཚིག་ཡང་དག་བཟློད་པར་བྱ། །

ཨོཾབཛྲཎལམཧཱདཧནསཏྭ[2]ཛྭལཡསམསྨྲིཀུཎྜ། སམནྟཱཧཱུཾཏཱཏཱཧཱུཾཕཊ། ཏྲཱིཤཱུཾཛཿཧཱུཾབཾཧོཿསམཡསྟྭཾསམཡཨཧཾ། དམ་ཚིག་སྦྱིན་པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་ནི། ལག་པ་གཡས་པ་ཁུམ་མོ་ཅི་ནང་དུ་བཙུག་སྟེ་བཟུང་བ་ནི། དཀང་གཟར་ཀླུགས་གཟར་དམ་པ་སྟེ།

ས་བོན་རྡོ་རྗེ་མཚན་དབུས་བསྒོམས། །
མེ་ལྕེའི་སྐུ་གསུང་བྱིན་གྱིས་བརླབ། །
དབུ་ལ་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་ཏེ། །
ལྕེ་ལ་རྡོ་རྗེ་རྩེ་གསུམ་མོ། །
སྒྲིག་ཀླུགས་བཟང་པོ་དབུལ་བར་བྱ། །

ཨོཾཨགྣཡེསྭཱཧཱ། མར་གྱི་འོ། ཨོཾསརྦཔཱཔཾདཧན[3]བཛྲཱཡསརྦ[4]པཱཔཾདཧནཱཡསྭཱཧཱ། ཏིལ་ནག་པོ་ཡི་འོ། །ཨོཾཀྵུཏྤྲ[5]ཡེསྭཱཧཱ། འབྲས་ས་ལུ[6]མ་གྲུགས་པའི་འོ། །ཨོཾསརྦསམྤདེསྭཱཧཱ། འབྲས་ཆན་ཞོ་དང་མཉམ་དུ་སྦྱར་བའི་ཟན་གྱི་འོ། །ཨོཾསརྦ[7]སིདྡྷཡེསྭཱཧཱ། འབྲས་ཀྱི་སོ་བ་གྲ་མ་ཆད་

༡ ཅོ་. ཨོཾཧྲཱུཾཧྲཱུཾ། ༢ སྡེ་དགེ་. སཏྭཱ། ༣ ཅོ་. བཛྲཙཎྜཔཱཔཾདཧནཱཡསྭཱཧཱ། ༤ སྡེ་དགེ་. ཨསྟྲཀུཎྜཔཱཔཾདཧནཱཡསྭཱཧཱ། ༥ སྡེ་དགེ་. བཛྲཀྵུཏྤྲཊེ། ༦ ཅོ་. སཱ་ལུ། ༧ སྡེ་དགེ་. བཛྲ།

པའོ༔ ༔ཨོཾམཏཱབེ[1]གཱལསྭཱཧཱ། ནས་ཀྱིའོ། །ཨོཾཿཏཱབཱའཡསྭཱཧཱ། སྲིན་མ་ཤའིའོ། ༔ཨོཾབཛྲཀླཱསྨྲིསྭཱཧཱ། གྲོའིའོ། །ཆོ་ག་འདི་ནི་ལས་ཐམས་ཅད་པ་སྟེ་མཐུན་པའོ། ཁྱད་པར་དུ་ནི་ལས་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པར་བསྲེག་རྫས་རྣམས་ཁྱད་པར་གྱི་སྟགས་ཀྱིས་སྦྱིན་སྲེག་བྱའོ། །

ཁ་དོག་དྲི་དང་རྩེ་མོ་འཁྲིལ། །
གཙུགས་སྐྲ་སོགས་པ་དགེ་བ་སྟེ། །
ཡོན་ཏན་[2]གྱི་ནི་དགེ་བ་ཡིས[3]། །
མེ་ལ་བསྲེག་རྫས་བསྲེག་པ་ཞེས། །
ཞི་བ་ལ་ནི་དཀར་བ་སྟེ། །
རྒྱས་པ་ལ་ནི་སེར་པོའི་མདོག །
དབང་ལ་དམར་པོ་མངོན་སྤྱོད་ནི། །
ཁ་དོག་ནག་པོ་མཆོག་ཏུ་འགྱུར། །
དབང་པོའི་གཞུ་དང་འདྲ་བ་དང་། །
སྤྲིན་སྲེག་གཡས་སུ་འཁྱིལ་བ་མཆོག[4] །
ཧ་ཡི་སྐྲ་བཞིན་ཟབ་པ་དང་། །
སྐྱུམ་ཞིང་རྩེ་མོ་གཅིག་ཏུ་འཁྲེལ། །
དུ་བའི་ཚོགས་ནི་མང་ཞིང་མི་སྡུག་ངཅས། །
རིམ་པས་ལངས་ཤིང་དལ་བུ་དལ་བུས་ཏེ།། །
འོད་ཟེར་དུམ་བུར་ཆད་ཅིང་གཟི་བརྗིད་ལྡན།།
སྐྱུམ་མེད་པར་སྣང་གནག་དང་བཅས། །
པལ་ཤ་ཡི་མདོག་འདྲ་བ། །

---

༡ སྡེ་° བཀཱལ། ༢ རྒྱ་དཔེར་° (ཏཱནཔཏེ) སྦྱིན་པའི་བདག་པོ་ཞེས་འདུག་པ་དེ་ནི་སྦྱིན་པར་བྱ་བའི་ཡོན་ཏན་དང་ལྡན་པའི་དོན་གྱིས་ཡིན་པར་སྣང་། ༣ སྣ་° ཡི། ༤ སྡེ་° མཆོས།

རྫེ་ཀོ་ཉི་མ་མཉམ་པའི་མདོག །
དེ་བཞིན་བ་སླང་མགོ་[1] དང་མཚུངས། །
མི་དགེ་མཚན་མ་ཡང་དག་མཐོང་། །
དེ་ལྟ་བུ་[2] སོགས་[3] མཚོན་པའོ། །

སྦྱིན་སྲེག་གི་མཐར་མེ་འབར་བ་ཞི་བ་དང་། ཁྱད་པར་དུ་གྱུར་པའི་མེ་ཏོག་དང་། སྤོས་ལ་སོགས་པའི་མཆོད་པའི་ཚོགས་དང་། ཚིགས་སུ་བཅད་པ་འདོས་ག་ཤེགས་སུ་གསོལ་བར་བྱའོ། །

བདག་གི་དོན་དང་གཞན་གྱི་དོན། །
བསྒྲུབས་ཏེ་སྲེག་བླུགས་བཞེས་ནས་ཀྱང་། །
ཇི་ལྟའི་དུས་སུ་ཡང་ནི་གཤེགས། །
བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་མཛོད། །
མེ་ནི་བསད་པར་དཀར་བ་སྟེ། །
ཞི་དང་རྒྱས་པའི་སྒྲུབ་པ་ལ། །
ཆུ་ནི་དཀར་སེར་དབང་སོགས་ལ། །
ཆུ་ནི་དམར་དང་ནག་པོ་ཤེས། །

ཨོཾ་ཀི་ལི་ཀི་ལི་[4] ཧཱུྃ་ཛཿ སྭཱ་ཧཱ། ཞེས་བྱ་བ་འདོས་ཐལ་བ་སྟོས་དང་མེ་ཏོག་དང་༎ ཛ་[5] སྣ་དང་བཅས་པས་ཆུ་བོ་དག་ཏུ་བསྐུར་བར་བྱའོ། ༡༧།

ལེའུ་བརྒྱད་པའི་བཤད་པ་རྫོགས་སོ།། །།

---

[1] སྣ་ ༠ སེ་ ༠ བ་སྣང་གི་ནི་མདོག་དང་མཚུངས། [2] སྣ་ ༠ པེ་ ༠ ལྟ་བུ་ལ། [3] སྣ་ ༠ སོགས་པ།
[4] ཅོ་དགེར་ ༠ ཀྲྀ་ལི་ཀྲྀ་ལི། [5] ཅོ་དགེར་ ༠ ཛ་མི་འདུག

ལེའུ་དགུ་པ།

རྒྱ་མཚོའི་ས་ནི་སླངས་བྱས་ལ། །

ཀླུ་ཡི་གཟུགས་གཅིག་བཙམས་བྱས་ཏེ། །

ཆར་དབབ་པའི་ཆོ་ག་གསུངས་པ། རྒྱ་མཚོའི་ས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དེའི་མ་རྙེད་པའི་ཕྱོགས་ལ་ཡང་ཉེ་བར་མཚོན་པ་ལས་ཏེ། ཆུ་བོ་དང་། ཆུ་ཀླུང་དང་། ལྟེང་ཀ་དང་། རྫིང་དང་། ལྕུམ་ཞིང་དང་། ཁྲོན་པ་རྣམས་ཀྱི་ངོས་གཉིས་ནས་སླང་བར་བྱའོ། །ཀླུ་གཅིག་ཅེས་པ་ནི་འཛིམ་པ་ལས་པདྨ་འདབ་མ་བརྒྱད་པའི་དབུས་སུ་ཆུ་བདག་སྦྲུལ་གྱི་གདེངས་ཀ་བདུན་པ། སྐྱེས་བུའི་གདོང་པ་ཅན་ཕྱག་གཉིས་པ། གཡས་རལ་གྲི་འཛིན་ཞིང་གཡོན་པ་ནི་ཞགས་པ་བསྣམས་པ་བཾ་ཡིག་[1]ལས་སྐྱེས་པའོ། །ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་འདབ་མ་ལ་མཐའ་ཡས་ཨུཏྤལ་སྔོན་པོ་ལྟར་སྔོ་བསངས། ལྷོ་ཕྱོགས་ན་ནོར་རྒྱས་དཀར་པོ། ནུབ་ཕྱོགས་ན་འཇོག་པོ་དམར་པོ། བྱང་ཕྱོགས་ན་སྟོབས་རྒྱུ་ནག་པོ། མེར་པདྨ་དམར་པོ། བདེན་བྲལ་དུ་པདྨ་ཆེན་པོ་དཀར་པོ། རླུང་དུ་དུང་སྐྱོང་སེར་པོ། དབང་ལྡན་དུ་རིགས་ལྡན་སྣ་ཚོགས་སོ། །དེ་རྣམས་ཀྱང་འཛིམ་[2]པ་ལ་ནཾ་[3]ཀྱི་ཡི་གེ་ལན་བདུན་དུ་མངོན་པར་བསྒྲགས་ཏེ། ནཾ་[4]ཡིག་ལས་སྐྱེས་པ། སྙིང་གར་ཐལ་མོ་སྦྱར་བ་གཞག་ལ། སྦྲུལ་གྱི་གདེངས་ཀ་རེ་རེ་དང་ལྡན་པ་བལྟ་བར་བྱའོ། །ཨོཾ་ཕྲུ་སྙིང་གར་དགོད་ཅེས་པ་ནི། ཨོཾ་ཧྲཱིཿ

---

༡ ཅོ་དཔེར་ ◦ བཾ་ཡིག ༢ སྡེ་ ● འཛིམ། ༣ ཅོ་དཔེར་ ● ནཾ་ཡིག ༤ ཅོ་དཔེར་ ◦ ལཾ་ཡིག

[1]ཡི་གེ་ཧཱུྃ་[2]ཕྲུཿསྙིང་གར་ནི། |
ཧྲཱིཿཔདྨཿལ་སོགས་བཟླས་པ་བྱ། ༡ |

པདྨཿཔྲིཡ་ད་ན་ན་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ། སརྦ་ད་ལ་ག་ད་ན་ན་ག[3]ཨ་ག་ན་ཡ་ད[4] རཛཡ། [5]ཕྲུ་ཕྲུ་ཕྲུ་ཕྲུ་ཕྲུ་ཕྲུ་ཕྲུ་ཕྲུ་ཧཱུྃ[6]། དེ་རྣམས་གྲོ་ག་ལ་བྲིས་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྙིང་གར་གཞུག་པར་བྱའོ། །ཧྲཱིཿཔདྨ་ལ་སོགས་སྔགས་བཟླས་ཏེ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྙིང་གར་བཀོད་པའི་སྔགས་དེ་ཉིད་བཟླས་པར་བྱ་སྟེ། གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་ཞིང་བདག་ཉིད་ཁྲོས་པའི་རེ་ཆས་ཀྱིས་བྲན་ཐམས་ཅད་ཀྱང་སྔོན་པོ། ཕྱོགས་བརྒྱད་ན་གནས་པའི་ཀླུ་རྣམས་ཀྱི་མཛུག་མ་དག་དབུས་ཀྱི་ཆུ་བདུན་གྱིས་ཡང་དག་པར་མནན་ཞིང་། ཐམས་ཅད་ཀྱི་མགོ་བོ་རྣམས་ཀྱང་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱིས་མནན་ནས་གནས་པར་བལྟ་ཞིང་། ཀླུ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གནས་རྣམས་སུ་འབར་བའི་གཟུགས་སུ་ཡང་ནས་ཡང་དུ་བལྟ་བར་བྱའོ། །གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་ཚོགས་སུ་གསལ་བ་ཡི། ཕྱག་མཚན་སྣ་ཚོགས་པས་གཟིར་བ་དང་ལྡན་པ་ཉིད་ཀྱང་སྟོང་ཕྲག་བཅུར་བཟླས་པ་བྱས་པས་གདོན་མི་ཟ་བར་ཆར་འབབ་པར་འགྱུར་རོ། །གཞན་དག་ཏུ་མཐོང་བ་ཡང་སླངས་ནས་འདི་ལྟ་བུ་ཡང་བྱ་སྟེ། གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་བཞེངས་སུ་གསོལ་བར་བྱས་ལ།། དེ་ནས་རླུང་གི་ཕྱོགས་སུ་རྫིང་བུ་ཆུང་ངུ་བྱའོ། །དེའི་དབུས་སུ་ཀླུ་རྣམས་ཁམ་ཕོར་ཁ་སྦྱར་དུ་གཞུག་པར་བྱའོ། །གླང་པོ་ཆེ་སྨྱོས་པ་ནི་མགོ་བྱུག ཀླུ་

༡ རྒྱ་དཔེར་། ཨོཾ་འདུག ༢ རྒྱ་དཔེར་། ཧཱུྃ་ཕྲུ་མེ་འདུག ༣ རྒྱ་དཔེར་། ནཱ་ཏཱ། ཁེ་། གནག་ནཱ་ག་ཀཱ་ཡཛཡ། སྣེ་། གནག་ཏཱ་ནཱ་ག་ཀཱ་ཡཛཡ། ༤ སྣེ་། ད། ༥ རྒྱ་དཔེར་། འདིའི་མཚམས་སུ་གཛཡ་ཡང་འདུག ༦ རྒྱ་དཔེར་། ཧཱུྃ།

[1]ཆར་ནི་མི་འབབ་དུས་དག་ཏུ། |
བརླས་པ་ཁྲི་བྱས་འབབ་པར་འགྱུར། |
སྦྲུལ་ནག་པོ་ཡི་ཤ་དང་ནི། |
ནིམ་པའི་ལོ་མ་དང་བསྲེས་ལ། ༢ |
དེ་ལ་རོལ་བུ་[2]བྱས་ནས་ནི། |
བདུལ་ཞུགས་ཅན་གྱིས་རྒྱ་མཚོར་གཞུག[3] |
སྔགས་ཀྱི་བརླས་པ་ཁྲི་བྱས་ན། |
མཚོ་རླབས་རིངས་བྱེད་མཆོག་ཡིན་ནོ། ༣ |

གདུལ་བར་བྱེད་པས་ནི་ཀླུ་རྣམས་ལ་བྱུག་པར་བྱ། བ་ནག་མོ་འི་འོ་མས་ནི་ཁམ་ཕོར་དཀང་བར་བྱ། ཁམ་ཕོར་ཁ་སྦྱར་ནི་སྐྱུད་པ་ནག་པོས་དཅིང་དར་བྱའོ། །མཆོད་པ་དང་གཏོར་མ་ལ་སོགས་པ་དང་། དམ་ཚིག་ཀྱང་བཟའ་ཞིང་དྲག་པོའི་ལས་ཀྱི་ཆོ་བསྙེན་པ་དང་ལྡན་པར་བྱའོ། ༡།

རྒྱ་མཚོའི་རླབས་རིངས་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། སྦྲུལ་ནག་པོའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། སྦྲུལ་ནག་པོ་ནི་ཨལགརྡའི་[4] ཤ་སྟེ་ནིམ་པའི་ལོ་མ་དང་ཆ་མཉམ་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །རོལ་བུས་ཞེས་པ་ནི་སྲན་ཙནགའི་ཚད་ཙམ་མོ། །བརླས་པ་ཁྲི་བྱས་ཞེས་པ་ནི་རིངས་པའི་ཚོགས་[5] སྟོང་ཕྲག་བཅུ་བརླས་པར་བྱའོ། །རླབས་རིངས་པར་བྱེད་པ་ནི་གང་གི་ཚེ་རླབས་བྱུང་བར་གྱུར་པ་དེའི་ཚེ་རོལ་བུ་གཅིག་བསྐུར་བར་བྱའོ། ༢–༣།

---

༡ སྡེ་。 འཆར། ༢ པེ་。 བུ། ༣ སྣ་。 བཞུགས། ༤ རྒྱ་དཔེ་ར་。 ཨལགར་རྡའི། ༥ སྡེ་。 ཚོགས།

ཙཱུ་ཏ་[1]འབྲས་བུ་བརྒྱ་བླངས་ལ། །
འབྲས་དང་མར་ཤས་བསྲེས་བྱས་ཏེ། །
འབུམ་ཕྲག་བརྒྱ་ནི་རབ་བཟླས་ལ། །
སྨིན་སྲིག་བྱས་ན་ལྷ་མཐོང་འགྱུར། ༨ །

ཙཱུ་ཏ་[2]ཀྱི་འབྲས་བུ་བརྒྱ་ཞེས་པ་ནི། དདུརའི་འབྲས་བུའི་ནང་ན་གནས་པའི་ས་བོན་རྣམས་ནི་ཉི་ཤུ་ལྔ་སྟེ། ས་ཤའི་འབྲས་བུ་རྣམས་ཀྱང་དེ་ཙམ་མོ།། །འབྲས་ཞེས་པ་ནི་མ་གྲུགས་པའི་འབྲས་[3]ས་ལུ་སྟེ། དེ་ཡང་དེ་དག་ཙམ་ཉིད་དོ། །དེ་ལྟར་རྩིས་པས་བརྒྱ་ཕྲག་གསུམ་དུ་གྱུར་པའོ། །འབུམ་ཕྲག་བརྒྱད་ཅེས་པ་ནི་དགུག་པའི་ཚོགས་འབུམ་ཕྲག་བརྒྱད་མངོན་པར་རྫོགས་པ་སྟེ།། བརྒྱ་ཕྲག་གསུམ་ཞེས་པ་ནི་ལྷག་མའོ། །སྨིན་རྡིག་ལ་ནི་ལྷ་ཞེས་པ་ནི།། དགུག་པའི་རིམ་པ་ཙམ་ནི་ཙཱུ་ཏོ་[4] དང་། འབྲས་[5]ས་ལུ་[6]རྣམས་རེ་རེ་བླངས་པ་ལས་བསྒོམས་པས་ས་བོན་རྣམ་པ་གསུམ་མོ། །སྨིན་སྲིག་ནི་བསྲིག་རྫས་ཀུན་ནས་བསྲིག་པའོ། །ལྷ་ཞེས་པ་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོ་[7]ཉིད་དེ། དེས་ཀྱེ་བར་མཚོན་ནས་གང་ཡང་རུང་བའི་ཤིང་ཏོག་སྨིན་སྲིག་བྱས་པས་དེ་ཉིད་མཐོང་བར་འགྱུར་རོ། །མཐོང་བ་ཉིད་ནི་མངོན་པར་འདོད་པའི་དངོས་གྲུབ་བོ། ༨ །

---

༡ ཞེ°ཙནྡནའི། ཀླ°། སྣེ°ཙནྡན། ༢ སྣེ°ཙནྡན། ༣ སྣ°འབྲས་བུ། ༤ རྒྱ་དཔེར་°ཙཱུ་ཏ། སྣ°ཞེ°ཙནྡན་གྱི་ཇ། ༥ སྣ°འབྲས་བུ། ༦ སྣེ°སཱ་ལུ། ༧ རྒྱ་དཔེར་°ནག་པོ་མི་འདུག

དུར་ཁྲོད་རོ་བསྲེགས་ཡོག་པའི་ཤིང་། །
བརྡུལ་ཕྱུགས་ཅན་གྱི་[1]གཟུགས་སུ་བྲི། །
སྨྱོན་པའི་ཁ་བས་བསྐུ་[2]བྱས་ལ། །
སྔགས་ཁྲི་བཟླས་པས་མཛེས་ཐེབས་འགྱུར། ༤ །
གཞུབ་པའི་ཡུངས་ཀར་བླངས་བྱས་ལ[3]། །
འབུམ་ཕྲག་བཞི་ནི་བཟླས་བྱས་ན། །
སྦྲུལ་གྱིས་བཟུང་ནས་འགྱེལ་བ་ལ། །
གཏོར་ན་འཚོ་བར་ཐེ་ཚོམ་མེད། ༥ །

ཡོག་པའི་ཤིང་ཞེས་པ་ནི། ཤི་བའི་རོ་ལ་བསྲེགས་པའི་ཕྱེད་ཙམ་ཚིག་པ་དཀྲུགས་པའི་ཤིང་བུའི་སོལ་བའོ། །སྨྱོན་པའི་[4] ཁ་བ་དང་བདགས་ཞེས་བྱ་བར་འབྲེལ་ལོ[5]། །ཁྲི་ཞེས་པ་ནི་དབང་དུ་བྱ་བའི་ཚོགས་སྟོང་ཕྲག་བཅུ་བཟླ་བར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་ལྷན་ཅིག་ཏུ་བསྒྲུབས་ནས་གང་གི་ཚེ་དགོས་པ་དེའི་ཚེ་[6]གང་ལ་བལྟས་པ་དེ་དབང་[7]དུ་བྱེད་པར་འགྱུར་རོ། ༤ །

རྩ་སྔགས་འབུམ་ཕྲག་བཞི་བཟླས་ཞེས་པ་ནི་གཏི་མུག་གཤིན་རྗེ······ གཤེད་ཀྱིས་དེ་ཉི་ངའི་ཚིག་ལ་ཞེས་པའོ། །མིང་སྦྱིན་པ་སྔར་མ་མཐོང་ན་[8]ནི་མཐོང་བ་ཞེས་དེ་བཟླས་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་བྱས་ན་གང་ཡང་རུང་བ་ལ་སྦྲུལ་གྱིས་ཟིན་པ་དེ་ལ་ལན་བདུན་མངོན་པར་བསྔགས་[9]པའི་ཡུངས་ཀར་མངོན་པར་བརྡེག་པར་བྱའོ། ༥ །

---

༡ ལྷ་. གྱིས། ༢ ལྷ་. བསྐུས། ༣ ལྷ་. ན། ༤ སྣ་. པེ་. སྨྱོན་པའི། ༥ སྣ་. པེ་. ཏོ།
༦ རྒྱ་དཔེར་. འདིའི་མཚམས་སུ་དཀྱ་ཀི་སྐྱེ་སྦྲག་ལ་སོགས་པས་ལོ་བརྒྱུབས་པ་ཞེས་ཀྱང་འདུག
༧ རྒྱ་དཔེར་. (ཅེར་གླིཀམ) དུག་མེད་པར། ༨ རྒྱ་དཔེར་. འདིའི་མཚམས་སུ་དཀྱ་ཀི་ཞེས་ཀྱང་འདུག ༩ སྣ་. སྔགས།

རི་གཤོང་[1] རྒྱ་ཡི་ས་བླངས་ལ། |
སྟོགས་ཀྱི་བརླས་པ་འབུམ་བྱས་ནས། |
མགོ་ལ་བསྐུས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། |
མགོ་ཡི་ནད་ནི་ཉམས་པར་བྱེད། ༧ |
སྟོགས་ནི་ལན་བདུན་མངོན་བརླས་པའི། |
ལག་པས་མགོ་བོ་མཉེས་ན་ནི། |
མགོ་ནི་ཟུག་གཟེར་འབྱུང་མི་འགྱུར། |
དེ་ནི་འདི་ལྟར་ཐེ་ཚོམ་མེད། ༨ |

རི་གཤོང་ས་ནི་བླངས་ལ་ཞེས་པ་ནི་གང་ཡང་རུང་བའི་རི་གཤོང་··· ནས་སའི་ཆ་དཀར་པོ་འི་དུམ་བུ་ལ་རང་གི་ལག་པས་མནན་ཏེ། ས་འོག་བཞིན་དུ་ཀུན་ལ་མཐོང་བར་གྱུར་པའི་བར་དུ་སྟེ། ཞི་བའི་ཚིགས་མགོ་ནད་ཅེས་སྤེལ་བའི་འབུམ་[2] སྟོགས་ཀྱིས་མངོན་པར་བསྟོགས་པར་དགོའོ། །མ་འོངས་པའི་དུས་སུ་ཡང་ཇི་སྲིད་ནམ་མཁའི་མཐར་ཐུག་གི་ངར་དུ་བློ་ངྲན་པས་ཐོན་གྱིས་བརླབ་པ་བྱས་འཛམ་པ་དེས་དེ་ནས་མགོ་ནད་ཅན་གང་ཡང་རུང་བའི་མགོ་ལ་བྱུག་པར་བྱའོ ། །དེས་མགོ་ནད་[3] ཉམས་པར་བྱེད་དོ། ༧ |

ལན་བདུན་མངོན་པར་ངསྟོགས་ཞེས་པ་ནི་ཞི་ངའི་ཚིགས་[4] སོ། །ལག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་[5] ལག་པར་ནླ་ངའི་དཀྱིལ་འཁོར་ངསྐོམས་པ་ལས་ང་མོ······ ལྟ་བུའི་ཆར་བའི་རྒྱུན་གྱིས་སོ། །འབྱུང་མི་འགྱུར་ཞེས་པ་ནི་མ་འོངས་པའི་དུས་སུ་ཡང་སྐྱེ་བར་མི་འགྱུར་ངའོ། །ཉམས་པར་བྱེད་ཅེས་པ་ནི་བསྐྱེད་ཟིན་པ་ཡང་ཞི་བར་བྱེད་པའོ། ༨ |

༡ པེ་ རིག་ཤེད། ༢ འབུམ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད། ༣ སྣ་ ནད་མགོ་ཉམས་པར་བྱེད་དོ།
༤ སྣ་ ཚོ་ག་ཤེས། ༥ པེ་ ནི་མི་འདུག

བྲམ་ཟེ་ཡི་ནི་ཤ་དག་ལ།
དུར་ཁྲོད་ས་དང་ཐལ་བ་ལས།
གཤིན་རྗེའི་[1]གཤེད་ཀྱི་གཟུགས་བྱས་ཏེ།
ཕྱུག་གཉིས་ཞལ་ནི་གཅིག་པ་ལ། ༩
རྡོ་རྗེ་ཆེན་པོ་གཡས་པ་ན།
དེ་བཞིན་མི་མགོ་གཡོན་པ་ནའོ།
མདོག་ནི་དཀར་པོ་ཆེར་འཇིགས་པ།
དེ་ཡིས་གདུག་པ་འཇོམས་པར་བྱེད། ༡༠
བདུད་རྩི་ལྔ་དང་[2]ཤ་ལྔ་ཡིས།
ཉིན་རེ་བཞིན་དུ་གཏོར་མ་སྦྱིན།

ཚར་བཅད་པ་བསྟན་པའི་དོན་གསུངས་པ། བྲམ་ཟེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ཐལ་བ་ཞེས་བྱ་བས་ནི་སོལ་བས་[3]སོ། །དུར་ཁྲོད་ས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འཇམ་པ་དག་གིས་སོ། །གཟུགས་བརྟན་ནི་ཇི་ལྟར་འདོད་པའི་ཚད་ཙམ་ལྷག་མའོ། ༩ །

རྡོ་རྗེ་ཆེན་པོ་ནི་རྩེ་མོ་ལྔ་པའི་རྡོ་རྗེའོ། །ཨཔྶསབྱ[4] ནི་གཡོན་པའོ། །ནྲི་[5]མགོ་ནི་མིའི་མགོ་བོའོ། །ཆེར་འཇིགས་པ་ནི་འཇིགས་པར་བྱེད་པ་ཅན་དེ་ཞལ་རྣམ་པར་འགྱུར་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་སོ། ༡༠ །

བདུད་རྩི་དང་ཤ་ལྔ་ཡོས[6]། ཞེས་བྱ་བ་ནི། ཤ་ལྔ་པོ་དང་བདུད་རྩི་ལྔ་པོ་དག་གོ །ཉག་གསོལ་གདབ་ཅེས་བྱ་བ་ནི་དེའི་རྣལ་འབྱོར་དུ་དམིགས་

---

༡ ལྷ་. ཛེ། ༢ ལྷ་. ཤེ། ༣ སྣ་. སོལ་བ་ཡིས། ༤ སྡེ་. ཨཔསྦུ། ༥ སྡེ་. ཉི། ༦ སྣ་. ཡིས།

བདག་གི་དགྲ་བོ་ཚོམས་ཤིག་ཅེས། །
རྣལ་འབྱོར་པས་བདག་གསོལ་བ་གདབ། ༡༡ །
ནུབ་མོ་དེ་སྐད་བརྗོད་པས་ཉལ།[1] །
དགྲ་ནི་ཐོ་རངས་འཆི་བར་འགྱུར། །
རྩ་འགགས་ལ་རྟོགས་པས་གཟིར་ཞིང་། །
ཡང་ན་ནད་ཀྱིས་ཐེབས་པར་འགྱུར། ༡༢ །
དགྲ་ཡི་བཻརོཙན་སླང་། །
མི་ཡི་ཁང་སྨྲུབས་ཡོངས་བཀང་སྟེ། །

ལ༔ ཨོཾ་ཧྲཱིཿཕྲཱིཿཀྲཱིཀྲིཏཱ་ལ་སོགས་པའི་སྔགས་དང་། དགྲ་བོའི་མིང་དུ་སྦྱིལ་ལ་གསང་བའི་[2] ཚོགས་བཟླ་བར་བྱའོ། ༡༡ །

འདི་སྐད་བརྗོད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་དུས་སྦྱར་བ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །གང་ཡང་རྩུང་བའི་ཉིན་ཞག་ལ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༡༢ །

ཚར་བཅད་པ་[3]གཞན་དག་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། དགྲའི་[4] ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ནི་བཤང་བའོ། །མིའི་ཁང་སྨྲུབས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བཙངས་པའི་རྫས་[5] རང་གི་ཐུར་མའི་སྨྱུ་གུའོ། །འབྲུམ་བཟླས་ཞེས་པ་ནི་དགྲའི་མིང་དང་སྦྱིལ་བ་སྤྱར་གྱིའོ། །ངན་སྐྲད་པ་ལ་ནི་ངན་སྐྱོམ་པ་སྟེ། འཕྲུལ་འཁོར་དང་བྲལ་བ་ཉིད་ཀྱིས་ངན་བཟླས་པར་རྡུས་ནས་སོ། །ཤིང་གི་རྩེར་ཞེས་པ་ནི་ས་ཁོ་ཏའི་[6] ཤིང་ངམ་བ་རུ་རའི་ཤིང་པོ་རྒྱ་མི་ནའོ། །མཉིས་

༡ ཅོ་དཔེར་ (སམྦྷུ) བཅུག ༢ སྡེ་ གསང་བའི། ༣ སྣ་ བ་མི་འདུག ༤ སྡེ་ དགྲའི།
༥ ཅོ་དཔེར་ (ཛརྦྷ) རྫི་ངར། ༦ ཅོ་དཔེར་ ཁུ་ཁོ་ཊ་ཀ

རབ་ཏུ་བཀང་ནས་འབུམ་བཟླས་ན། །
ཞིང་རྟེར་ཀྱུ་བའི་ཡི་དྭགས་མཚོངས།༡༣ །
[1]ལྷ་རྫས་དངོས་གྲུབ་ཀུན་བྱེད་ཅིང་། །
དགོས་པ་སྣ་ཚོགས་རབ་བསྒྲུབ་པའོ[2]།༡༨།

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེའི་[3] གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད་ལས་འཇིགས་བྱེད་གཤིན་རྗེའི་ གཤེད་རེས་བྱ་བའི་ རིམ་པར་[4] ཕྱེ་བ་སྟེ་དགུ་པའོ།། ||

ཞེས་པ་ནི་གང་དེ་ཞིང་ལས་ཐང་ལ་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ངས་ནས་[5]དེ། ཀང་སྦྱངས་མར་[6] འབའ་ཞིག་གིས་བཀང་ནས་དགྲ་ལ་ཞི་ངའི་ཆོ་ག་བྱ་སྟེ། སྟོང་ཕྲག་བརྒྱད་ཅུ་བཟླས་པ་བྱས་ན་དེའི་ཚེ་དེ་བདེ་ངར་འགྱུར་རོ།༡༣–༡༨།

གཤིན་རྗེ་འཇིགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཤིན་རྗེ་འཇིགས་པ་གོང་དུ་ སྟོན་པ་དེ་ཡང་དེ་བཞིན་ནོ། །ལེའུ་དགུ་པའི་བཤད་པ་རྫོགས་སོ།། ||

---

༡ རྒྱ་དཔེར་༠ འདིའི་མཚམས་སུ ([illegible]) དོ་ཡང་ཆེན་པོའི་སྒྲུབ་ཐབས་ནི། །དེ་ནས་གཞན་དུ་ཡང་དག་བཤད་པར་བྱ། །ཞེས་ཀྱང་འདུག ༢ ལྷ་༠ ལྷ། ཕེ་༠ པོ། ༣ ལྷ་༠ རྗེ། ༤ རྒྱ་དཔེར་༠ རིམ་པར་ཕྱེ་བ་ཞེས་མི་འདུག ༥ སྣ་༠ པེ་༠ གསལ། ༦ རྒྱ་དཔེར་༠ (ཀྵི་ར) ནོ་མ།

ལེའུ་བཅུ་པ།

[1]ཪོ་ལངས་ཆེན་པོའི་སྒྲུབ་ཐབས་ནི། |
དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་པར་བྱ། |
སྒྲུབ་པ་བཟང་པོ་ཀུན་བྱེད་ཅིང་། |
དགོས་པ་སྣ་ཚོགས་རབ་སྒྲུབ་པའི[2]། |
བཟང་པོ་མ་གོད་རྨ་མེད་པ། |
ཤིང་ལ་དབྱངས་[3]པས་བསྡུས་[4]བྱས་ལ། |

སྔར་གྱི་ལེའུ་ཪོ་ལངས་སྒྲུབ་པའི་ཚིག་མདོར་བསྟན་པའི་དོན་བཤད་པའི་[5]དོན་དུ་གསུངས་པ། ཤིང་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ[6]། ཤིང་ལ་དབྱངས་[7]པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འཕྲིགས་པའོ། །མ་གོད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་དམན་པ་མ་ཡིན་པའི་ལུས་སོ། །ཡན་ལག་གོ། རྨ་མེད་ནི་མཚོན་གྱིས་མ་བསྒྲུབ་པའོ།། ལེགས་པ་ཞེས་པ་ནི་ཞ་ཧུལ་བའོ། ཁྲུས་ཞེས་པ་ནི་དྲི་བཟང་པོས་ཞེས་ལྷག་མའོ།། །གཞན་ཡང་ཪོའི་སྟེང་གར་རང་གི་སྟེང་གཞི་ས་ངོན་ལས་འཇིགས་པའི་ཡི་དྭགས་བཀུག་པ་སྟེ། ལག་པ་ནི་གྲི་གུག་དང་ཐོད་པ་ཅན་རབ་ཏུ་བཅུག་སྟེ།། མེ་ཏོག་དང་སྤོས་དང་བྱུག་པ་ལ་སོགས་པས་ཀྱང་[8]མཆོད་པ་ཇུས་ལ་དེ་གན་རྒྱལ་དུ་བྱས་ལ་དེའི་སྟེང་དུ་སྡུགས་[9]ཏེ་དེ་ཙ་བཀླས་པ་ཞེས་པའོ། །ཨོཾ་ཧྲཱིཿ

༡ འདི་མན་ཚིག་རྐང་བཞི་པོ་རྒྱ་དཔེ་ར་མེད་སྐབས་ཚིགས་བཅད་ཨང་རིམ་འགོད་མེད། ༢ ལྷ་° པའི།
༣ ལྷ་° སྡེ་° སྦྱངས། ༤ རྒྱ་དཔེ་ར་° (གྲྀཧྣ) འཛིན་པ། ༥ སྣ་° པེ་° ཚིག་བཤད་པའི།
༦ སྡེ་° ནི་གགས་མ་སྐྱེ། ༧ སྣ་° སྦྱངས། ༨ སྡེ་° ཀྱང་། ༩ སྡེ་° བསྡུགས།

ཕབ་ལ་ལེགས་པར་བཀྲུ་བྱ་སྟེ། །
དེར་འདུག་སྔགས་བཟླས་བརྟུལ་ཞུགས་ཅན། ༡།

ཨེ་མ་ཧོ་[1] ངོ་མཚར་སྔགས་ཀྱི་མཐུ། །
བསམ་པ་མེད་པའི་[2] འོ་དོད་འབོད། །
གཤིན་རྗེའི་[3] རྣལ་འབྱོར་ལྡན་པ་ཡི། །
ཡིད་ཀྱིས་ཚུང་ཟད་འཇིགས་མི་བྱ། ༢ །
རྣལ་འབྱོར་ལམ་ནི་གང་འདོད་པ་[4] ། །
དེ་ཀུན་ཐམས་ཅད་སྟེར་བར་བྱེད། །

[illegible]། ཀྱེ་ཡི་དྭགས་བདག་གིས་མངོན་པར་འདོད་པའི་དངོས་གྲུབ་སྩོལ་ཅིག་ཅེས། བརྟུལ་ཞུགས་ཅན་ཞེས་པ་ནི་དཔལ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པས་སོ། ༡།

དངོས་གྲུབ་ཀྱི་མཚན་མ་བསྟན་པའི་དོན་གསུངས་པ། ཨེ་མའོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། འོ་འདོད་འབོད་པ་ནི་རྣམ་པར་འགྱུར་བའི་སྒྲའོ། ༢།

འཇིགས་པ་[5] མེད་པ་ལས་ཅིར་འགྱུར་བ་གསུངས་པ། གང་དང་གང་གིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། གང་བསྒྲངས་པ་ཞེས་པ་དེ་ནི་སེམས་ཀྱིས་བྱེད་པ་སྟེ་རལ་གྲི་དང་མིག་སྨན་དང་རྐང་མགྱོགས་ལ་སོགས་པའོ། ¦བཅོམ་ལྡན་འདས་མགོན་པོ་དཔལ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་པོའི་[6] གཟུགས་ཀྱི་དོན་དང་འཇམ་

[1] སྡེ་° ལྷ་° ཨེ་མའོ། [2] སྣ་° ཆེན་པོའི། ལྷ་° ཆེན་པོས། [3] ལྷ་° རྗེ། [4] སྡེ་° འདོད་པ། [5] སྣ་° གེ་° བ་མི་འདུག [6] སྣ་° པེ་° ནག་པོའི།

མ་ཧེ་དང་ནི་ཀུ་བེར[1]། |

སྟག་དང་དེ་ལས་གཞན་པ་དང་། ༢ |

དོམ་དང་སྤྲེའུ་དག་ལ་ནི། |

ཁྲི་དག་གི་ནི་ཁྲིད་པར་དང་། |

དུག་དང་སྐྱེ་ཚེ་ཚྭ་དང་ནི། |

དེ་བཞིན་ཚྭ་གསུམ་སོ་བཙྭ་ཛན[2]། ༣ |

འདི་དག་ལེགས་པར་སྦྱར་གཟུགས་བྱ། |

གཞིན་རྗེའི་གཤེད་པོ་འཇིགས་པའི་གཟུགས། |

དེ་ལ་རྣལ་འབྱོར་པས་གསོལ་གདབ། |

ཀྲྀཿཕཊ྄ཀྲྀཿལ་སོགས་སྔགས་ཀྱིས་ནི། ༤ |

ཆེ་གེ་མོ་དེ་བདག་ལ་སྦྱོལ། |

དེ་ཡི་ཕ་ཡིས་སྟེར་བར་བྱེད། |

གལ་ཏེ་རྣལ་འབྱོར་པ་མ་ཕྱིན[3]། |

པ་ལས་འདུས་བྱ་བར་བསྟན་པ་གསུངས་པ། མ་ཧེའི་·ཤའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། གཟུགས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཟུགས་ཀྱི་དོན་དུ་འཇིམ་པ་བྱ་བའོ། ༢–༤།

ཆེ་གེ་མོ་དེ་དག་ལ་སྦྱོལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེའི་ཕ་དང་དེའི་མིང་དག་རབ་ཏུ་སྤེལ་ཏེ། དེ་ནས་ཨོཾ་ཀྲྀཿཕཊ྄ཀྲྀཿཤྲཱིཀྲིཏ྄ཉཉཧྲཱུཾཧྲཱུཾ། ཆེ་གེ་མོས་བདག་ལ་སྦྱོལ་ཅིག་ཧཱུྃ། དེ་ལྟར་སྟོང་ཕྲག་བཅུ་བཟླས་པ་བྱ་སྟེ། དེ་བསྐྱངས་པས་དེ་སྟེར་

---

[1] རྒྱ་དཔེར་° (ཀུམྦྷི་རཀྵ) ཅ་སྦྲིན་གྱི [2] ཅོ་° པེ་° སྡེ་° བཅྭ་ཛ། སྣར་° བཙ་ཛ།
[3] སྣར་° པེ་° བ་མ་ཕྱིན།

སྐྱི་ལམ་གཤིན་རྗེའི་[1] གཤེད་བཟེག་[2] ཅིང་། |
ལྷོ་ཡི་ཕྱོགས་སུ་ཁྲིར་མཐོང་ནས[3]། |
སད་ན་དེ་ཡི་ཕ་ཡིས་སྡེར[4] ། |
ཞལ་གསུམ་ཕྱག་དྲུག་འཇིགས་པ་ལ། |
ཨིནྡྲ་ནཱི་ལ་འདྲ་བའི་མདོག |
ཁྲོ་བ་འཛིན་[5] པའི་བརྟུལ་ཞུགས་ཅན། |
ཕྱག་ཏུ་ཁྲོ་བ་དགོད་པར་བྱ། |
ཞལ་གསུམ་ཕྱག་དྲུག་ཁྲོས་པ་ལ། |
མདོག་དམར་[6] པོ་སྟེ་ཁྲོས་པར་[7] འཇིགས[8] །༦—༨།
འཇིགས་པ་ཡང་ནི་འཇིགས་པར་མཛད། |
མཁས་པས་ཕྱག་ཏུ་དབྱིག་པ་དགོད། |
ཞལ་གསུམ་ཕྱག་དྲུག་དམར་བ་ལ[9] ། |
འཇིགས་པ་ཆེན་པོ་བསྐོགས་པ་ཡི། ༩ |

ཇོ།། །མི་སྡེར་བར་གྱུར་ན་དེ་སྡུག་བསྔལ་བར་གསུངས་པ། གཤིན་རྗེ་གཤེད་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །སྔར་མ་གསུངས་པའི་ཁྲོ་བ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ལ་སོགས་པ་སྒོ་སྐྱོང་བཞིའི་ཞལ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཞལ་གསུམ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཞེ་སྡང་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་གཟུགས་ལ།། ཁྱད་པར་ནི་རྡོ་རྗེའི་གནས་སུ་ཁྲོ་བའོ། །དེ་ལྟར་གཏི་མུག་གཤིན་རྗེ་

1 ལྷ°. ཆེ། 2 ལྷ°. རིག 3 སྣ°. མེ°. ཁྱེར་བ་བྱེད། 4 མེ°. སྐྱེང་། 5 ཅོ་དགེར°. (སྣ་ལྷ་ཡིད) བསྒོམ་པའི། 6 ཅོ་དགེར°. (དཔ༅་དགསྐྲི) ཕྱག་ན་དབྱུག་པ། 7 ལྷ°. སྣ°. བས། 8 ཅོ་དགེ་ལྟར་ན། གོང་གསལ་ཚོགས་བཅད་གསུམ་གྱི་ཚིག་ཤང་རེ་ཟུང་མན་ཚུན་པང་རིམ་སྤེ་གྱི་འཁྲུགས་འདུག་སྟབས་ཚོགས་བཅད་ཨང་རིམ་སོ་སོར་འཁོད་མེད། 9 མེ°. མོ་ལ།

ཕྱག་ན་པདྨ་དམར་པོ་བསྣམས། |
པདྨ་ཞེས་བྱ་མཁས་པས་བསྒོམ། |
ཞལ་གསུམ་ཕྱག་དྲུག་ལྡང་གུ་སྟེ། |
ཕྱག་ན་རལ་གྲི་བསྣམས་པ་ཡི། ༡༠ |
ལས་ཀུན་བྱེད་པར་གྱུར་པའོ། |
རལ་གྲི་ཞེས་བྱ་རྣམ་བསྒོམ་བྱ། |

གཤེད་དང་འདྲ་བ་ནི་དབྱིག་པ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དེ་ཁྱད་པར་ནི་འཁོར་ལོ་འི···· གནས་སྐུ་རྡོ་རྗེའི་དབུག་པའོ། །དེ་ལྟར་པདྨ་དང་རལ་གྲི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱང་འདོད་ཆགས་དང་། ཕྲག་དོག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ངག་ཉིད་དང་འདྲའོ[1] །༨–༡༠།

རྗེ་ལྟར་སྔར་གྱི་རིམ་པས་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པ་རྣམ་པ་ལྔའི་རྗེས··· ལ༔ ལྷ་བསྒོམ་པ་གསུངས་པ། ཏྐ་གར་ལིངྒ་རྣམ་པར་བསྒོམས། ཞེས་པ་ལ༔ ཏྐ་གར་ལིངྒ་ནི་ཕྱུལ་དུ་གྱུར་པའི་རྣལ་འབྱོར་ལས་ས་བོན་གྱི་ཡི་གེ་རྣམ་པར་བསྒོམ་པས་སྐྱེས་པའོ། །དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། རང་དང་འདྲ་བ་ལ་སྒོམས་པར་འཇུག་པ་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་ཁ་ཚ་སྙིང་གའི་ས་བོན···· ཀྱི་[2]འོད་ཟེར་གྱིས་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་བཀུག་སྟེ་བཅུག་པས་ཞུ་བར་བྱ་སྟེ། རྡོ་རྗེའི་ལམ་ནས་ལྷ་མོ་འི་པདྨའི་ནང་དུ་ལྷུང་བའི་ཡ་ཡིག་ངོར་བ་ཀཱ་ལི་མེད··· པ་ལ་སོགས་པ་ས་བོན་བཅུ་དྲུག་པོ་རྣམས་ཡང་དག་པར་སྦྱོར་ཏེ་གནས་རྗེ་ལྟར···

---

༡ ཞེ་ ༠ ༧༢་བདོ། ༢ ས་བོན་གྱི་ཞེས་པ་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

ཐྲ་གར་ལིང྄་རྣམ་བསྒོམ་ཉིད། |
དཀྱིལ་འཁོར་བདག་པོ་རྣམ་པར་བསྒོམ།༡༡།
ཞེ་སྡང་རྗེས་དྲན་རྣལ་འབྱོར་གྱིས། |
གཏི་མུག་རྗེས་དྲན་རྣམ་བསྒོམ་བྱ[1]། |
གཏི་མུག་རྗེས་དྲན་ལ་དམིགས་ནས། |
ཕྲ་མ་རྗེས་དྲན་བསྒོམ་པར་བྱ། ༡༢ |
ཕྲ་མ་རྗེས་དྲན་རྣལ་འབྱོར་གྱིས། |
འདོད་ཆགས་རྗེས་དྲན་བསྒོམ་པར་བྱ། |
འདོད་ཆགས་རྗེས་དྲན་རྣལ་འབྱོར་གྱིས། |
ཕྲག་དོག་དྲན་བྱ་བརྟུལ་ཞུགས་ཅན། ༡༣ |

བཀོད་པ་ལས་དཀྱིལ་འཁོར་བདག་པོ་རྣམས་བསྒོམ་ཞེས་པའོ། །ཆགས་པ་དང་རྗེས་སུ་ཆགས་པ་ཤེས་རབ་དང་བཅས་པ་ཞུ་བར་བྱ་སྟེ། ཡཾ་གི་ཡི་གེ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པའོ། །དེ་ནས་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱིས་ཡང་དག་པར་བསྐུལ་བར་གྱུར་པ་དང་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བདག་པོ་ཞེ་སྡང་ཆེན་པོ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་རྫོགས་པར་འགྱུར་རོ།༡༡།

ཞེ་སྡང་རྗེས་དྲན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཞེ་སྡང་གཤིན་རྗེ་གཤེད་རྫོགས་པར་གྱུར་ནས་སོ། །གཏི་མུག་རྗེས་དྲན་[2]བསྒོམ་པར་བྱ་ཞེས་པ་ནི་ས་བོན་ཀྲྀ་ཡིག་ལས་སྐྱེས་པའི་གཏི་མུག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་གོང་ནས་གོང་ཉིད་དུ་རྟོགས་པར་བྱའོ།༡༢–༡༣།

---

༡ ལྷ་° སྣ་° བསྒོམ་པར་བྱ། ༢ སྡེ་° གཏི་མུག་གཤིན་རྗེ་གཤེད། འདིར་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

སོ་སོའི་རིགས་ཀྱི་སྒྲིན་རྣམས་ནི། །
བ་སྤུའི་ཁུང་ནས་སྤྲོ་བར་བྱ། །
ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་དབུས་སུ་ནི། །
གདུམ་པོའི་[1]ཁྲོ་བོ་བསྒོམ་པར་བྱ[2]། །
ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་དབུས་སུ་ནི། །
ལྷ་མོ་བཞི་པོ་རབ་བསྒོམ་བྱ། ༡༨ །

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེའི་[3] གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད་ལས་[4] རྗེས་སུ་དྲན་པ་རིམ་པར་ཕྱེ་བ་སྟེ་བཅུ་པའོ།། ||

ལྷའི་འཁོར་ལོ་རྫོགས་ནས་སྤྲོ་བར་བསྟན་པའི་དོན་དུ་སྤྲོ་བར་བྱ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། རིགས་ཀྱི་སྒྲིན་ཞེས་པ་ནི་རང་དང་འདྲ་བའི་[5]ལྷའི་ཚོགས་རྣམས་སོ། །སོ་སོ་ཞེས་པ་ནི་སོ་སོ་དང་ལྡན་པའོ། ། ཁྲོ་ངོ་བཞི་ཞེས་པ་ནི་ཐོ་བ་ལ་སོགས་པ་བཞི་པོ་རྣམས་སོ། །གསལ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ནི་ཟླ་ངའི་དཀྱིལ་འཁོར་རོ། ༡༨།

ལེའུ་བཅུ་པའི་བཤད་པ་རྫོགས་སོ།། ||

---

༡ རྒྱ་དཔེར་༌ (ཙཏུཿཀྲོ་ཏྟི) ཁྲོ་བོ་བཞི། ༢ རྒྱ་དཔེར་༌ (ཝིརྒཱུ་བཡེད) རྣམ་བསྒོམ་བྱ། ༣ ཨཱ་༌ཆེ། ༤ རྒྱ་དཔེར་༌ (བེ་དཱུ་ལ་སཱ་ཏྟཱ) ངོ་ཡངས་མའི་སྒྲུབ་པ་ཞེས་ཀྱང་འདུག ༥ རྒྱ་དཔེར་༌ (ཝིཤྭཱསནྟིཀ) སྣ་ཚོགས་དང་འདྲ་བའི།

ལེའུ་བཅུ་གཅིག་པ།

ཞེ་སྡང་གིས་མནན་འགྲོ་མཐོང་ནས།
ཞེ་སྡང་གཤིན་རྗེའི་[1] གཤེད་གཟུགས་སུ།
བཅོམ་ལྡན་གཤིན་རྗེའི་དབང་དུ་མཛད[2]།
ཞེ་སྡང་ཐམས་ཅད་ཟད་པར་བྱེད། ༡

གཏི་མུག་གིས་མནན་འགྲོ་མཐོང་ནས།
གཏི་མུག་གཤིན་རྗེའི་[3]གཤེད་གཟུགས་སུ།
བཅོམ་ལྡན་གཤིན་རྗེའི་[4] དབང་མཛད་[5]ནས།
གཏི་མུག་ཐམས་ཅད་ཟད་པར་མཛད། ༢

འགྲོ་བ་ཕྲ་མས་མནན་མཐོང་ནས།
ཕྲ་མས་[6]གཤིན་རྗེའི་[7]གཤེད་གཟུགས་སུ།
བཅོམ་ལྡན་སྙིང་རྗེ་ཅན་གྱིས་མཛད།
ཕྲ་མ་[8]ཐམས་ཅད་ཟད་པར་མཛད། ༣

ཞེ་སྡང་ལ་སོགས་པའི་དབྱེ་བའི་དགོས་པ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ།། ཞེ་སྡང་གིས་མནན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས། གཤིན་རྗེ་གཤེད་པོ་ནི་ཞེ་སྡང་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དོ། །དམ་པའི་གཟུགས་ནི་གྲིབ་མ་དང་སྒྱུ་མ་ལྟ་

༡ ལྷ° རྗེ། ༢ ཀྱི་དགེར° བཅོམ་ལྡན་སྙིང་རྗེ་ཅན་གྱིས་མཛད། ༣,༤ ལྷ° རྗེ། ༥ ཀྱི་དགེར° བཅོམ་ལྡན་སྙིང་རྗེ་ཅན་གྱིས་མཛད། ལྷ° སྣ° གཤིན་དབང་མཛད། ༦ སྣ° ཕ་མས། ལྷ° ཕྲ་མ། ༧ ལྷ° རྗེ། ༨ སྣ° ཕྲ་མས།

འདོད་ཆགས་ཀྱིས་མནན་འགྲོ་མཐོང་ནས། །
འདོད་ཆགས་གཤིན་རྗེའི་[1]གཤེད་གཟུགས་སུ།། །
བཅོམ་ལྡན་སྙིང་རྗེ་ཅན་མཛད་ནས། །
འདོད་ཆགས་ཐམས་ཅད་ཟད་པར་མཛད། ༤ །
ཕྲ་དོག་གིས་མནན་འགྲོ་མཐོང་ནས། །
ཕྲ་དོག་གཤིན་རྗེའི་[2]གཤེད་གཟུགས་སུ། །
བཅོམ་ལྡན་སྙིང་རྗེ་ཅན་མཛད་ནས། །
ཕྲ་དོག་ཐམས་ཅད་ཟད་པར་མཛད། ༥ །
ཁྲམས་པ་ཙཀྲ་ཀཱར་[3]གསུངས་དེ། །
སྙིང་རྗེ་དེ་བཞིན་ཕག་མོ་འོ། །
དབྱངས་ཅན་མ་ནི་དགའ་བ་སྟེ། །
བཏང་སྙོམས་གཽ་རཱི་ཡི་[4] གཟུགས་སོ། ༦ །
བདག་ཉིད་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས། །
རྫོགས་པར་ཁྲུས་ནས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི ། །

འགྲེལ། །དེ་བཞིན་གཏི་མུག་གིས་མནན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡང་འདིས་རྟོགས་པར་ཐུའོ། ༡–༦།

སྣ་ཚོགས་པའི་གཟུགས་ཀྱང་བློས་དབྱེར་མི་ཕྱེད་པར་ལྟ་བའི་ཕྱིར····གསུངས་པ། བདག་ཉིད་ཀྱིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། བདག་ཉིད་དཀྱིལ་འཁོར་དང་དཀྱིལ་འཁོར་བ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ལྷག་པར་མོས་པར····

༡,༢ ལྷ་ ༠ ཆེ། ༣ ལྷ་ ༠ ཀར། ༤ སྡེ་ ༠ གོ་རཀྵི།

ཐལ་འབྱོར་སྙིང་གཞི་ས་བོན་སྨྲོ། |
འགྲུབ་པར་འདི་ལ་ཐེ་ཚོམ་མེད། ༧ |
དེ་ནས་དེ་ནི་[1]བཤད་བྱ་བ། |
སྤྱོད་པ་ཡི་ནི་མཚན་ཉིད་མཆོག |
གཤིན་རྗེའི་གཤེད་པོ་འཇིགས་གཟུགས་ཀྱིས། |
སྐུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་སུ་གྲུབ[2]། ༨ |
དགོན་པ་ཆེན་པོའི་ས་ཕྱོགས་སུ། |
མ་ཧེ་མཆོག་ནི་བཀུག་ལ་ཞོན། |

བྱའོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱང་བདག་ཉིད་ལས་དབྱེར་མི་ཕྱེད་དོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ།། ཐལ་འབྱོར་སྙིང་གཞི་ས་བོན་སྨྲོ། །ཞེས་པ་ནི། བ་སྤུའི་ཁུང་བུའི་རྩེ་ནས་སྨྲོ།། ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྔར་ཇི་ལྟར་གསུངས་པ་དེའོ། །དེ་ལྟར་བྱས་པས་ཅིར་འགྱུར་ཞེ་ན། དངོས་གྲུབ་ཅེས་པ་སྟེ་གྲུབ་པའི་མཚན་མ་མཐོང་བའོ།༧།

དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། སྤྱོད་པ་ནི་ཨ་གུ་བ་[3]སྟེ་ཇི་ལྟ་བའི་ཁྱད་པར་ཏེ་དེའི་མཚན་ཉིད་དོ། །ཅིའི་དོན་དུ་ཞེ་ན། གསུངས་པ། གཤིན་རྗེ་གཤེད་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། སྐུ་གསུང་ཐུགས་སུ་གྲུང་ཅེས་པ་ནི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་པོར་གྱུར་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ།༨།

སྤྱོད་པ་དེ་ཉིད་གསུངས་པ། དགོན་པ་[4]ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་

---

༡ ས་° དེ་ནི། ༢ སྣ་° འགྲུབ། ༣ སྡེ་° དགུ་བ། ༤ སྡེ་° མགོན་པོ། འདིར་རྒྱ་དཔེ་དང་མཐུན་པར་བཞག་ཡོད།

སྦྲུལ་དག་[1] གིས་ནི་བཀྲུན་པར་བྱ། །
ལྕགས་ཀྱི་རྡོ་རྗེ་གཟུགས་པར་བྱ། ༩ །
སྒྲ་ཡང་སེར་པོ་དག་ཏུ་བྱ། །
བྲིན་བརྟེས་[2] པ་ཡི་ཁྲུད་པར་གྲིས། །
མགོ་ལ་ཐོད་པས་ཡང་དག་བསྐོར། །
སྐ་ར་ཀློག་སྤུ་སེར་པོ་བྱ། ༡༠ །
ཧྲཱིཿཧྲཱིཿལ་སོགས་སྔགས་བརྗོད་ཅིང་། །
ལྕགས་ཀྱི་རྡོ་རྗེ་མཁའ་ལ་གསོར། །
རྡོ་རྗེ་གཞིན་རྗེའི་[3] གཤེད་སྦྱོར་བས། །
སེངྒྲིའི་སྒྲ་ཡང་དེ་ལ་བྱ། ༡༡ །
ནུས་པ་ཙང་ཟད་སྐྱེས་པ་ན་[4] ། །
རོལ་ཅིང་གྲོང་དུ་འཇུག་པར་བྱ། །

པ་སྟེ།། གང་གི་ཚ་འདིས་ཚོག་དེ་ལྟ་བུས་ནུས་པ་དང་ལྡན་པར་དྲུས་པ་དེའི་ཚ་[5] ཚོག་[6] གཞིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་དངོས་གྲུབ་ཐབ་པའོ།༩–༡༡།

དེ་ཡང་གང་གི་དུས་སུ་བྱ་ངར་ནུས་ཤེ་ན། གསུངས་པ། ནུས་པ་ཙང་ཟད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། སྐྱེས་པ་ནི་མངོན་དུ་བྱས་པའོ། །བཀྲ་ལམ་ན་བསྒོམ་པ་[7] ཙམ་གྱི་ཇི་ལྟ་བ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དྲུག་ལས་

---

༡ སྣ་ ° སྦྲུལ་ནག ༢ པེ་ ° རྫེས། ༣ ལྷ་ ° རྗེ། ༤ ལྷ་ ° ནི། ༥ སྡེ་ ° ཚ་མི་འདུག ༦ སྣ་ ° ཚོག་མི་འདུག ༧ རྒྱ་དཔེར་ ° ཐོས་པ་ཙམ།

གར་དང་བདེ་བའི་ཆ་ཀུན་གྱིས། །
དྲུག་ལས་སྐྱེད་[1] སོགས་སྒྲུ་སྣང་བྱ། ༡༢ །
དེ་ནས་རྒྱལ་མཚན་ཁྲམས་[2] མཐོང་ན། །
དེར་ནི་འོ་མ་རབ་བསྒྲུབ་བྱ། །
འོ་མ་ལ་སེམས་གཅིག་གོམས་པས། །
ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་རབ་བསྒྲུབ་བྱ། ༡༣ །
ཕག་མོ་ཡི་ནི་གཟུགས་བཟུང་བའི། །
བཙུན་མོ་ཀུན་ལ་འཁྱུད་པ་ཡིས། །

སྐྱེས་ཞེས་པ་ནི་དྲུག་ལས་སྐྱེས་པ་དང་འདྲ་བས་ན་དྲུག་ལས་སྐྱེས་དེ་རོ་དུ་མ་དང་ལྡན་པ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས་ཆགས་པ་དང་རྗེས་སུ་ཆགས་པར་གྱུར་པ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ །༡༢།

ནུས་པ་གཞན་དག་ཀྱང་བསྟན་པའི་དོན་དུ་རྒྱལ་མཚན་ཞེས་པ་ལ····· སོགས་པ་སྟེ། རྒྱལ་མཚན་ཁྲམས་ནི་དཔྱངས་པའི་ཚོའོ། །འོ་མ་ཞེས་པ་ནི་ཨ་སྟེ་སྟོད་ལ་གནས་པའོ། །བདུད་རྩི་རྒྱུང་བ་ལ་བསྒོམ་པའི་རིམ་པས་མངོན་དུ་ཕྱུ་བར་བསྒྲུབ་པར་བྱས་པའོ། །འོ་མ་གོམས་[3] པར་ཞེས་པ་ནི་བདུད་རྩིའི་ཚིག་དེ་བཞིན་དུ་གོམས་པར་བྱས་པས་སོ།༡༣།

ཕག་མོའི་གཟུགས་སུ་བྱ་ཞེས་པས་ནི། ཇི་སྐད་གསུངས་པའི་ཕག་

---

[1] ལྷ་° སྐྱེས། [2] ལྷ་° པེ་° སྣར་° ཁམས། [3] སྡེ་° ཚིག་མ་གོམས་པར།

དཔའ་མོ་[1]སེངྒེ་བཞིན་དུ་སྒྲོད། །
འདོད་པའི་དོན་ཀུན་རབ་ཏུ་འགྲུབ། ༡༨ །
དེ་ནས་ད་ནི་བཤད་པར་བྱ[2]། །
ཕྱག་རྒྱ་[3]མ་ནི་རབ་སྦྱར་ཐབས། །
གསང་སྔགས་ཆེན་པོ་ཡི་གེ་གཅིག །
དེ་ཡི་བཟླས་པ་མངོན་བཤད་བྱ། ༡༩ །
ཡི་གེ་ཧཱུྃ་ལས་བྱུང་བ་ཡི[4] ། །
མ་ཧེ་ཡང་དག་བསྒོམ་བྱ་སྟེ། །

མོའི་གཟུགས་སུ་ལྷག་པར་མོས་དེ་རང་ཉིད་གཤིན་རྗེ་གཤེད་[5]ཀྱི་གཟུགས་སུ····
བསྒོམ་པར་བྱ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༡༨།

དེའི་རྗེས་ལ་མདོར་བསྡུས་པའི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་འབྲས་བུ་[6]དང་བཅས་པ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། འདིར་ཡང་མཆོད་པ་ལ་སོགས་པ་དང་། རྡོ་རྗེ་གུར་གྱི་ནང་དུ་སོན་པའི་ནམ་མཁར་གནས་པའི་ལྷ་ཚོགས་རྡོ་རྗེའི་ངར་དུ་ཐམས་ཅད····
མཐུན་པའོ། ༡༩།

ས་བོན་ཅི་ལ་འབྱུང་བར་བསྒོམ་ཞེ་ན། གསུངས་པ། ཡ་གེ་ཧཱུྃ[7] ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། འདིར་དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། ལྷ་ཚོགས་རྡོ་རྗེའི་ནང་དུ་[8]རེཕ་ལས་ཉི་མ་དང་། དེའི་སྟེང་དུ་ཧཱུྃ[9]ཡིག་ལས་སྐྱེས་པའོ། །ཇི་

---

༡ ལྷ་° རྒྱ་དཔེར་° (ཝཱི་རཿ) དཔའ་བོ། ༢ ལྷ་° སེ་° དེ་ནི་བཤད་བྱ་བ། ༣ རྒྱ་དཔེར་° ཕྱག་བརྒྱ། ༤ ལྷ་° ཡིས། ༥ རྒྱ་དཔེར་° (དྭེཥཡམཱརི) ཞེ་སྡང་གཤིན་རྗེ་གཤེད། ༦ རྒྱ་དཔེར་° (མཧཱཕལ) འབྲས་བུ་ཆེན་པོ། ༧ སྡེ་° ཧཱུྃ། ༨ རྒྱ་དཔེར་° (བཛྲ་གརྦེ) རྡོ་རྗེའི་སྙིང་དུ། ༩ ཅོ་° ཧཱུྃ། འདིར་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

རྡོ་རྗེ་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་པ། |
མ་ཧེ་སྟེང་དུ་བསྒོམ་པར་བྱ། ༡༦ |
གང་ཡང་ཙུང་ཟད་གཅོད་ཅིང་འབིགས། |
མཚོན་ཆ་སྣ་ཚོགས་གཟུགས་དེ་ནི། |
མ་ཧེ་སྣ་ཚོགས་བསྒྲུབ་པ་ཡི། |
ཀླུ་དང་ལྡན་པའི་ཕྱག་ན་བསྣམས[1]། ༡༧ |
དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་བྱ་བ། |
དབྱིག་པ་གཞིན་ཛེའི་[2]གཞེད་སྒྲུབ་ཐབས། |
ཡི་གེ་ཧྲཱིཿནི་གསང་སྔགས་ཆེ། |
མ་ཧེ་ཆེན་པོ་ལ་བཅིབས་པ། ༡༨ |

ལྟར་འབྱུང་ཞེ་ན། གསུངས་པ། རྡོ་རྗེའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་པ། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། མ་ཧེའི་སྟེང་དུ་ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་པའོ།༡༦།

མཚོན་ཆ་བསྟན་པའི་དོན་གསུངས་པ། གང་ཡང་ཙུང་ཟད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ཕྱག་རྣམས་ཀྱིས་ཞེས་པ་ནི་ཕྱག་རྣམས་ཀྱིའོ།༡༧།

དབྱིག་པ་གཞིན་ཛེ་གཞེད་ཀྱི་ཡང་ཕལ་ཆེར་ནི་ཕྱག་བརྒྱ་པའི་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་ཉིད་བཞིན་ནོ། ཁྱད་པར་ནི་འདི་ཉིད་ཀྱི་ས་བོན་ཡི་གེ་ཧྲི་སྟེ། གདོང་པ་ཡང་མའིའོ།༡༨།

---

༡ རྒྱ་དམར་༠ (ཀླུ་ཕྱི་ཤེར) བསྒོམ། ༢ ལྷ་༠ ཛེ།

ཕྱུག་ནི་འབུམ་ཕྲག་[1]རྫོགས་པའི་ཕྱུག །
སྐུ་ནི་མི་རོ་འི་ཐལ་བས་བསྐུས། །
རོ་རབ་དང་ནི་མཚམ་པའི་ལུས། །
གསེར་གྱི་ས་གཞི་ཐུག་པར་མནན། ༡༩ །
དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་བྱ་བ། །
བྱེ་བའི་ཕྱུག་ཅན་སྒྲུབ་པའི་ཐབས། །
ཡི་གེ་ཧཱུྃ་ལས་བྱུང་བའི་གཙོ། །
ཝིཀྲིཏཱནན་གསང་སྔགས་ཆེ། ༢༠ །
ཨོཾཧྲཱིཿཥཊྲཱིཿཝིཀྲིཏཱནནཧཱུཾཧཱུཾཕཊཕཊཏཏཱཏིཏཱིཏུཏཱུཏེཏཻཏོ ཏཽཏཾཏཿཕཊསྭཱཧཱ།༢༡།
དགོས་པ་ཐམས་ཅད་བསྒྲུབ་པ་ཡི། །
དམ་ཚིག་སྒྲུབ་ཐབས་བཤད་པར་བྱ། །
ཕྱུགས་ཀྱིས་དུབ་པས་ཁ་ཟས་བཟའ། །
ངན་པ་དང་བྲལ་སྙིད་དཀའ་མིན། ༢༢ །

རོ་རབ་ཛི་ལྟར་མཐོ་ཞེས་པ་ནི་དེ་དང་འདྲ་བ་སྟེ་རི་རབ་མཚམ·········པའོ། ༡༩།

ཞལ་རྣམ་པར་འགྱུར་པ་ལ་ཡང་དབྱིག་པ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་བཞིན་ནོ། ཡང་དེའི་ས་བོན་ནི་ཧཱུྃ་ཡིག་སྟེ་དེས་ཐམས་ཅད་རྫོགས་པའོ།༢༠–༢༡།

ཕྱུགས་ཀྱིས་དུབ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པའོ། །སྙིད་སྣ་ཞེས་པ་ནི་ཀུན་གྱིས་སྨད་པས་ན་སླངས་པ་དམན་པ་ལ་སོགས་པ་ལས་སོ།༢༢།

༡ ཅུ་དགེར་ ༠ (དེབ་ཀྱ) ཚིས་ འབུམ།

ཤ་ཆེན་དང་ནི་ཧྲ་དང་ནི། །
གླང་པོ་ཆེ་ཡི་ཁྲད་པར་དང་། །
བ་ལང་གི་དང་ཁྲི་དང་ནི། །
ཁོང་བུ་ཛ་མོ་ཙེ་[1]སྤྱང་ངོ་། ༢༣ །
སྔོན་[2]ཕོ་དང་ནི་བསྲེས་པ་ཡི། །
སྦྲུམ་ཆེན་གྱིས་ནི་ལུས་བྱུགས་ན། །
ལུས་ལ་བྱུགས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། །
འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་དབང་དུ་འགྱུར། ༢༤ །
སྣང་མཛད་སོ་དྲུབ་[3]ར་དང་། །
དེ་བཞིན་བིལ་བའི་ལོ་མ་དང་། །

ཁར་[4] ནི་བོང་བུའོ། །ཀྐུ་ཊཿ[5] ནི་ཙེ་སྤྱང་ངོ་།༢༣།

སྦྲུམ་ཆེན་ནི་མིའི་མར་ཁུའོ། །སྔོན་ཕོ་ནི་རྣམས་སོ། །བསྲེས་ཞེས་པ་ནི་རྣམས་ཀྱི་ལོ་མའི་ཁུ་བ་དང་ཆ་མཉམ་པའོ།༢༤།

དྲིལ་ཕྱིས་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། རོ་ཙན་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། རོ་ཙ་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དོ། །དེའི་ཐོག་མ་དང་ཐ་མའི་ཆ་སྤྲངས་ཏེ་བར་པ་བླང་བར་བྱའོ། །སོ་ཕག་ཕྱེ་མ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཆུའི་ནང་དུ་དུས་རིང་པོར་གནས་པའི་རོ་ཕག་གོ །ཕྱེད་མཉམ་ཞེས་པ་ནི་རོ་ཙན་ལ་སོགས་པ་ཆ་མཉམ་

---

༡ ལྷ་. སྤྱི། ༢ སྡེ་. སྔོན་པོ། ༣ སྡེ་. པ། ༤ སྡེ་. གར། ༥ སྡེ་. ཀྐུ།

སོ་ཕག་ཕྱི་མ་བསྲེས་[1]པ་དང་། །
གསེར་ཤིང་ལོ་མའི་ཁ་བ་རྣམས། ༢༤ །
འདི་ཡིས་དྲིལ་ཕྱིས་བྱས་གྱུར་ན། །
ཁམས་གསུམ་པོ་ནི་དབང་དུ་འགྱུར། །
དུག་དང་ཚུ་སྦུར་དེ་བཞིན་མཛེ། །
དྲིལ་ཕྱིས་བྱས་པས་ཉམས་པར་བྱེད། ༢༥ །
གཅི་བ་ཆེན་པོ་བཏུང་བར་བྱ། །
རྡོ་རྗེ་བདུད་རྩི་དེ་བཞིན་དུ། །

པ་ཛཱི་ཙམ་གྱི་ཚད་ཙམ་དུ་སོ་ཕག་གི་ཕྱི་མའི་ཚད་ནི་དེ་ཙམ་མོ། །གསེར་ཤིང་ནི་དདུར་[2]སྦྱེ། ཐམས་ཅད་དུས་[3]གཅིག་ཏུ་བྱས་ནས་འདོམས་མཉེ་ཞིང་དྲིལ་བར་བྱའོ། །༢༤–༢༥།

གཅིན་[4] པ་ཆེན་པོ་ནི་མིའི་དྲི་ཆུའོ། །བཏུང་བར་བྱ་བ་ནི་སྣ་ནས་སོ་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །རྡོ་རྗེ་[5]བདུད་རྩི་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་སོ། །དེ་དག་རེ་རེ་ཞིག་ནས་བཏུང་བར་བྱ་བའམ་ཞེས་གསུངས་པ། རང་བྱུང་མེ་ཏོག་བཏུང་དེ་བཞིན། ཞེས་པ་ནི་བུད་མེད་ཀྱི་ཁྲག་ག་ས་ལྷན་ཅིག་བསྲེ་བའོ། །འདི་ཉེ་བར་མཚོན་པ་ལས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་གཞན་དག་ཀྱང་ཛགས་པར་བྱའོ། །འདིའི་སེམས་ནི་དོན་གསལ་བར་བྱེད་པ་ནི། ལེའུ་ཕྱི་མར་གཏོར་མ་དྲུག་ཅུ་

---

༡ རྒྱ་དཔེར་ (ཨམྲྀ་ཏ) དང་། བོད་འགྲེལ་དུ་འང་ཕྱིར་མཐུམ་ཞེས་འདུག ༢ རྒྱ་དཔེར་ ཧུདྡྲ་ར། ༣ སྡེ་ པེ་ དུས་མི་འདུག ༤ སྣེ་ གཅིག་པ། ༥ རྒྱ་དཔེར་ (ཨཀྵབཛ) དོ་རྗེ་ཆེན་པོ།

འདི་ནི་རྣལ་འབྱོར་མཆོག་གཙོ་བོ། །
རང་འབྱུང་མེ་ཏོག་བཏུང་བ་བཞིན། ༢༤ །

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེའི་[1]…
གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད་ལས་སྦྱོར་བ་སྒྲོན་[2] པ་ཞེས་བྱ་བའི་རྒྱུད་རིམ་པར་[3] ཕྱེ་བ་…
སྡེ་བཅུ་གཅིག་པའོ།། །།

རྩ་བའི་སྒྲིན་པ་དབྱུ་གུ་དྲུག་ཅུ་རྩ་བཞི་ལ་ཞེས་པས་དེ་མཁས་པས་འདོར་རྟོགས་པར་བྱའོ།༢༤།

ལེའུ་བཅུ་གཅིག་པའི་བཤད་པ་རྫོགས་སོ།། །།

---

༡ ལྷ་ ○ ཇེ། ༢ རྒྱ་དཔེར་ ○ (ཙཎྜ་སམཡསུཧྣན) སྦྱོར་པའི་དམ་ཚིག་སྒྲོན་ཐབས། ༣ རྒྱ་དཔེར་ ○ རིམ་པར་ཕྱེ་བ་མི་འདུག

ལེའུ་བཅུ་གཉིས་པ།

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་སྐྱེས་བུ་ཆེན་པོ་འི་དམ་ཚིག་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་ང་བོ་[1] ཙཀྲ་ཀའི་རྣམ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་ཡང་[2] སྙོམས་པར་ཞུགས་ཞིང་། ཕག་མོ་འི་[3] རྣམ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་ཡང་[4] སྙོམས་པར་ཞུགས་སོ[5]། །དབྱངས་ཅན་གྱི་རྣམ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་ཡང་སྙོམས་པར་ཞུགས་སོ[6]། །གཽ་རཱི་མའི་རྣམ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་[7] སྙོམས་པར་ཞུགས་ཏེ། མཆོད་པའི་སྔགས་འདི་དག་བརྗོད་པར་མཛད་དོ། ༡།

དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་འི་སྔགས་མཆོད་པ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། སྐྱེས་བུ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་གཉུག་མའི་[8] ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པའི་སྐུའི་བདག་ཉིད་པས་ན་ཆེན་པོ་ཡིན་ལ། གང་གི་ཕྱིར་ཀུན་འགེངས་པར་བྱེད་པ་དེ་ཉིད་ལ་སྐྱེས་བུ་ཞེས་མངོན་པར་བརྗོད་པས་ན་སྐྱེས་བུ་སྟེ། དེ་ཡང་འགེངས་པ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་འོ། །དེའི་དམ་ཚིག་ནི་གང་ལ་ཉེ་བར་[9] སྤྲོ་བ་སྟེ[10]། དེ་ཉིད་སྐྱེས་བུ་ཆེན་པོ་འི་དམ་ཚིག་སྟེ་དཔལ་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའོ། །ཙཀྲ་ཀའི་རྣམ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་ཞེས་པ་ནི། རྡོ་རྗེ་ཙཀྲ་ཀའི་གཟུགས་སུ་བྱེད་པ་སྟེ་དེ་བཞིན་དུ་གཞན་དག་ལ་ཡང་ངོ་། །འདི་བརྗོད་དོ་ཞེས་པ་ནི་བརྗོད་བཞིན་པའོ། ༡།

---

༡ ཅོ་དགེར་࿒ རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་ངོ་བོ་ཞེས་མི་འདུག ༢ ལྷ་࿒ ཡང་མི་འདུག ༣ ཅོ་དགེར་࿒ (བཛྲ་ཝཱ་རཱ་ཧཱི་) རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་ཡི། ༤ ལྷ་࿒ ཡང་མི་འདུག ༥ ལྷ་࿒ སྣ་࿒ པ་དང་། ༦ ལྷ་࿒ པ་དང་། ༧ ལྷ་࿒ ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་ཡང་། ༨ ཅོ་དགེར་࿒ གཉུག་མའི་མི་འདུག ༩ ཅོ་དགེར་࿒ ཉེ་བར་མི་འདུག ༡༠ སྣ་࿒ པེ་࿒ སྤྲོས་ཏེ།

ཨ་ཀྲེ་ཀྲེ་གཤིན་རྗེའི་གཤེད་ནག་སླ། །
སྲིན་པོ་འི་གཟུགས་ཅན་རང་བཞིན་ཁྲོད། །
བདག་གིས་ཁྲོད་མཐང་ཤིན་ཏུ་འཛིགས། །
ཁྲོ་བའི་[1]རང་བཞིན་འདི་མཐོང་མཛོད། ༢ །
མཐོ་རིས་ས་སྟེང་ས་འོག་བཅས། །
ཁྲོད་ཀྱི་གར་གྱིས་གཡོས་པར་མཛད[2]། །
ཨཉྫ་ནག་པོ་བཙག་[3]འདྲ་བའི། །
ཁྲོ་ཁྲོད་རོ་ལངས་ཞི་གར་མཛོད། ༢ །

ཨ་དེ་དེ་[4] ཞེས་པ་ནི་ཨ་རེ་རེའོ[5]། །གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་ཅེས་པ་ནི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོའོ། །བདག་ཅེས་པ་ནི་བདག་ཉིད་བྲམས་པའི་རང་བཞིན་གྱིས་ཅསྐ་ཀའོ། ཁྲོད་ཅེས་པ་ནི་ཁྲོད་ལའོ། །མཐོང་བ་ནི་མཐོང་ནས་སོ༑ ༑འཛིགས་པ་ནི་རབ་ཏུ་འཛིགས་པས་སོ། །སླ་ནི་སླ་མའོ། །མཐོང་ཞེས་པ་ནི་ཡོངས་སུ་གདང་བའོ། ཁྲོས་པའི་རང་བཞིན་ནི་ཁྲོས་པའི་ངོ་བོའོ།༢།

ཀྱུ་མཚོ་ས་སྟེང་ས་སླ་[6]ས་འོག་ནི་ཀྱུ་མཚོ་དང་། མཐོ་རིས་དང་། ས་འོག་དང་། ས་སྟེང་རྣམས་སོ[7]། །མིག་སྨན་ནི་ནག་པོ་བཙག་ཅེས་པ་ནི་མིག་སྨན་བཙག་དང་འདྲ་བ་ནག་པོའོ། །དེ་དག་ནི་ཕག་མོས་[8]བརྗོད་པའོ༑ ༢ ༑

༡ ཞ° ཁྲོས་པའི། ༢ ཞ° མཛོད། ༣ སྡེ° བཙག ༤ རྒྱ་དཔེར° ཨཊེཊེ། ༥ རྒྱ་དཔེར° ཨརེརེ་མི་འདུག ༦ སྣ° པེ° ས་སླ་མི་འདུག ༧ སྣ° པེ° རྣམས་སོ་མི་འདུག ༨ སྣ° པེ° མ་ཕག་མོས།

རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་གཟུགས་སྤྲུལ་ཞིང་། |
མདངས་ནག་ཚད་ནི་ཐུང་བ་ལ། |
བདེ་ཆེན་ངོ་བོ་ཁྲོ་གར་[1]གྱིས། |
རྡོ་རྗེ་དབྱངས་ཅན་མ་གསོལ་འདེབས། ༨ |

ཧྲཱིཿཧ་ཧྲཱིཿསྤུགས་དང་གར་གྱིས་ཁྲོད། |
སྲིད་པ་གསུམ་གྱི་འཁྲུལ་པ་ཆོད[2]། |

གནག་ཅིང་ཞེས་པ་ནི་ནག་པོ་ཀྱི་ཞེས་པའོ། །ཐུང་བའི་ཚད་ཅེས་པ་ནི་ཐུང་བ་ལྟ་བུའི་ཚད་དོ། །རྣམ་པ་མང་པོ་ཞེས་པ་ནི་རྣམ་པ་མང་པོར་རོ།། སྤྲུལ་ཞེས་པ་ནི་སྤྲུལ་པར་བྱེད་པའོ། །གཟུགས་ཞེས་པ་ནི་གཟུགས་སུའོ། །རྡོ་རྗེ་དབྱངས་ཅན་ཞེས་པ་ནི་རྡོ་རྗེ་དབྱངས་ཅན་མའོ། །དུད[3]ཅེས་པ་ནི་ཞུ་བར་བྱེད་པའོ། ཁྲོད་ནི་གར་ཞེས་པ་ནི་ཁྲོད་ཀྱི་གར་རོ། །བདེ་ཆེན་རང་བཞིན་ཞེས་པ་ནི་ཀྱི[4] བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན[5]ནོ། ༨ |

ཧ་རྗེ་གོ་རིམས་བརྗོད་པ་གསུངས་པ། ཧྲཱིཿཧ་ཧྲཱིཿཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། སོལ་ཞེས་པ་ནི་སྤྲོ་བར་བྱེད་པའོ། །སྲིད་པ་གསུམ་གྱི་འཁྲུལ་པ་ནི་ཁམས་གསུམ་གྱི་འཁྲུལ་པ་རྣམས་སོ། །སྙིང་རྗེ་ཡིས་ནི་ཁྲོས་པ་ནི་ཀྱེའི་རྡོ་རྗེའི[6] ཁྲོ་བོ་རྣམས་སོ། །རྗེ་བཙུན་ནི་དད་སློལ་ལོ། །དེ་མཛད་ནི་དེ་བཞིན་

---

༡ ལྷ་ ༠ བློ་གར། ༢ ལྷ་ ༠ ཆེར། ༣ སྡེ་ ༠ བདུད། ༤ སྡེ་ ༠ ཀྱི་མི་འདུག ༥ རྒྱ་དཔེ་ར་ ༠ (ཟུར) གཟུགས། ༦ རྒྱ་དཔེ་ར་ ༠ ཀྱི་སྙིང་ཧྲིའི།

སྙིང་རྗེ་ཁྲོས་པའི་ངང་སྒྲོལ་[1]གར། །
འགྲོ་བས་དད་ནི་ངོ་མཚར་འགྱུར། ༥ །
དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་བྱ་བ། །
བརླས་པ་ཡི་ནི་མཚན་ཉིད་མཆོག །
བརླས་པ་གང་ཞིག་རབ་བརླས་ན[2]། །
དངོས་ཀུན་ཡངས་པ་ཐོབ་པ་ནི། ༦ །
མྱུར་བར་མ་ཡིན་དལ་བར་མིན། །
རིང་དུ་མ་ཡིན་ཐུང་དུ་མིན། །
ཕྱོགས་ནི་ཚུང་ཟད་ཐོས་པར་[3]བརླས། །
གཞིན་རྗེ་སློབ་དཔོན་[4] མི་མཆོག་གི ༧ །

དུ་མཛོད་ཅིག་པའོ། །གང་ནི་གང་རྣམས་སོ[5]། །འགྲོ་བ་ནི་འགྲོ་བ་རྣམས་སོ། །བལྟས་ནི་ལྟ་བར་བྱེད་པའོ། ༥ །

བརླས་པ་མཚན་ཉིད་ཅེས་པ་ནི་བརླས་པའི་ཕྱོགས་བརྗོད་པའི་ཚུལ་ལོ། ༦ །

རིང་པོ་མ་ཡིན་ཞེས་པ་ནི་ཐུང་ངུ་ལ་རིང་པོར་བརྗོད་པའོ། །ཐུང་མིན་ཞེས་པ་ནི་རིང་པོ་ཐུང་ངུར་བྱེད་པ་སྟེ་དེ་དག་མ་ཡིན་པའོ། །ཕྱོགས་ནི་ཚུང་ཟད་ཐོས་པར་[6]རོ་ཞེས་པ་ནི་ཇི་ལྟར་གཞན་གྱིས་མི་ཐོས་པར་རོ། དེ་བཞིན་དུ་བརླས་ཞེས་པའི་[7]དོན་ཏོ། ༧ །

---

༡ སྡེ་ ༠ དང་སྒྲོག། ༢ ཀྱི་དཔེར་ ༠ (ཟླ་ཚོ་གེན) རབ་སྒྲོར་ན། ༣ ཀྱི་དཔེར་ ༠ མ་ཐོས་པར། ༤ ཀྱི་དཔེར་ ༠ (ཛབམྱུ་ཏོ) བརླས་པ་པོ་དེ། ༥ ཚིག་རྐང་འདི་ཀྱི་དཔེར་མི་འདུག ༦ ཀྱི་དཔེར་ ༠ མ་ཐོས་པར། ༧ སྡེ་ ༠ ཞེ་ ༠ པ་དེ།

མ་ཏེ་མི་དང་སོ་གཉིས་དང་། །
བ་ལང་དང་ནི་རྟ་དག་དང་། །
འོང་བུ་ཛ་མོ་འི་རྣམ་པ་ལས། །
བརླབས་པའི་ཕྲེང་བ་རབ་བསྒྲུབ་བྱ། ༨ །
ཟླ་ངོ་གཅིག་གི་བཅུ་བཞི་ལ། །
བདུད་རྩི་ལྔ་དང་ལྡན་པ་ཡིས། །
ཤ་ལྔ་དག་ནི་བསྐུ་བྱས་ནས། །
བརླབས་ན་དངོས་གྲུབ་འགྲུབ་པའི་མཆོག ༩ །
རིལ་བུ་དག་ནི་སོ་སོ་ལ། །
རྣལ་འབྱོར་པ་ཡིས་གཤིན་གཤེད་བསྒོམ། །
མཁས་པས་ཡང་ནི་མི་མགོ་སྐྱེ[1]། །
ཁྲག་གིས་བཀང་བའི་མགོ་བསྒོམ་བྱ། ༡༠ །

གཤིན་རྗེའི་ཞེས་པ་ནི་གཤིན་རྗེའོ། །གཉིས་ཟ་ནི་གླང་པོའོ། །བ་ཛོ[2]་ཞེས་པ་ནི་རྟའོ། །གདུང་ཞེས་པ་ནི་རྣམ་པའོ། ༨ །

བཅུ་བཞིའི་ཞེས་པ་ནི་ནག་པོའོ། །ཤ་ལྔའི་ཞེས་པ་ནི་གོཀུདཏནའི[3] ཤ་ལྔ་ཡིས་སོ། །བརླབས་ན་ཞེས་པ་ནི་ཕྲེང་བ་བརླབས་པའོ། །མིའི་མགོ་བོ་ཁྲག་འཛག་ཅེས་པ་ནི་བཅད་མ་ཐག་གི་ཁྲག་འཛག་པའོ། །རི་ལྭ་བུ་མིན་ན[4] འགྲོ་བ་ཉིད་དུ་ལྷག་པར་མོས་པར་བརླབས[5]་བྱའོ། ༩–༡༠།

---

༡ ལྷ་° པེ་° སྡེ་° ཐུ་° མཁས་པས་ནི་ཡང་མི་མགོ་སྐྱེ། ༢ སྡེ་° བ་ཛ། ༣ པེ་° གོཀུདཏནའི། ཐུ་° གོཀུདཏནའི། ༤ སྡེ་° མིན་ནོ། ༥ སྡེ་° བརླབས་མི་འདུག

ཀྲི་ཙམ་གྱིས་ནི་འབྱུང་པོ་རྣམས། |
མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་སྟོང་ཕྲག་གིས། |

འབྱུང་པོ་རྣམས་ཞེས་པ་ནི་བརྒྱ་བྱིན་ལ་སོགས་པ་རྣམས་དེ་མི་རྣམས་ལ་གནོད་པར་བྱེད་པའོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ཀྱིས་ཞེས་པ་ནི་གཉིས་པའི་དོན་གྱིས་དྲུག་པའོ། །སྟོང་ཕྲག་དག་ལ་ཞེས་པ་ནི་སྟོང་ཕྲག་དག་གིས་སོ།། གསོད་པར་བྱེད་ཅེས་པ་ནི་ཚར་གཅོད་པར་བྱེད་པའོ། །གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་སྦྱོར་བ་ཡིས། ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་ལ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་བྱས་པས་འབྱུང་པོས་བཟུང་བར་ཤེས་པར་བྱས་ལ། དེའི་ཚེ་སྐྱེས་བུ་དེ་ལ་སྙིང་གའི་ས་བོན་གྱི་འོད་ཟེར་གྱིས་འབྱུང་པོ་ལ་སོགས་པ་དགུག་པ་དང་། གཞུག་པ་དང་། བཅིངས་པ་ནི་ཛཿཧཱུྃ་བཾ་ཞེས་པའི་ཡི་གེ་གསུམ་གྱིས་དགུག་པ་ལ་སོགས་པ་གསུམ་པོ་རིམ་པ་བཞིན་དུ་བྱའོ[1]། །དེའི་རྗེས་ལ་མགོ་བོ་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེས་མཚན་པའོ[2]། །ཡང་ཧཱུྃ་ཡིག་ལས་སྐྱེས་པའི་རྩེ་མོ་ལྔ་པའི་རྡོ་རྗེ་གཉིས་ཀྱི་ངོས་གཉིས་སུ་བཅོར་བ། ཡཾ་ཡིག་ལས་བྱུང་བའི་རླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་དང་། མེའི་དཀྱིལ་འཁོར་འབར་བས་[3]འོག་ནས་མགྲིན་པའི་བར་དུ་བསྒྲིགས་པར་བསྒྲུབ་བྱ་བལྟ་བར་བྱའོ། །ཧཱུྃ་ཡིག་འབར་བ་ལས་སྐྱེས་པ་དང་འདྲ་བའི་ཡུངས་ཀར་ལ་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་མངོན་པར་བསྔགས་པའི་ང་རྒྱལ་གྱིས་སྔགས……… བཟླས་ཤིང་བརྒྱབ་པས་དེའི་ལུས་ངེས་པར་ཕྲུག་པ་ཉིད་དུ་བལྟ་བར་བྱས་ནས…· ངེས་པ་ཉིད་དུ་གྲོལ་བར་འགྱུར་རོ། །ཡང་ན་རང་གི་ལག་པ་གཉིས་ལ་ཧཱུྃ་ཡིག་

---

༡ པེ་༷ བྱའོ་མི་འདུག ༢ ཅོ་དགེ་ར་༷ (ཝིཤྭབཛྲཨངྐིཏ) སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེས་མཚན་པའོ། |
༣ སྣ་༷ པེ་༷ བ་ཞིག།

བདུད་དང་ཡི་དྭགས་ཚོགས་ཀྱང་[1]འཆི། །
གཤིན་གཤེད་རྡོ་རྗེའི་སྦྱོར་བ་ཡིས། ༡༡ །

རྣལ་འབྱོར་བདག་ཉིད་འབུམ་བཟླས་ནས[2]། །
དེས་ནི་[3]ལས་ཀུན་བྱེད་པ་ཡིན། །
བྱེ་བ་བཟླས་ནས་[4] དངོས་གྲུབ་སྟེར། །
བྱེ་བ་ལྔ་བཟླས་སྨོས་ཅི་དགོས། ༡༢ །

ལས་སྐྱེས་པའི་རྡོ་རྗེ་འབར་བ་གཉིས་བསམ་པར་བྱའོ། །བསྒྲུབ་བྱའི་ལུས་ལས་འབྱུང་པོ་ལ་སོགས་པ་དགུག་གོ །རྡོ་རྗེ་གཉིས་ཀྱི་བར་དུ་ཚུད་པར་བྱ་ཞིང་དེའི་འོད་ཟེར་གྱིས་ཟིན་པ་དེ་རང་གི་ལག་པ་ཁ་སྦྱར་གྱི་དལ་བུས་[5]མཉེ·····ཞིང་བསྐུ་བར་བྱ་ཞིང་སྔགས་ཀྱང་བཟླས་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟ་བུས་སམ་རྐང་པས་ཀྱང་མཉེ་བར་བྱའོ། ༡༡ །

སྔོན་དུ་བསྙེན་པ་དང་བྲལ་བས་དགོས་པ་མི་འགྲུབ་པ་བསྟན་པའི·····དོན་དུ་གསུངས་པ། འབུམ་བཟླས་ན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །རྣལ་འབྱོར་བདག་ཉིད་ནི་ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པའོ། །དངོས་གྲུབ་སྟེ་ཞེས་པ་ནི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་གཟུགས་ཐོབ་པའོ། །སྨོས་ཅི་དགོས་ཞེས་པ་ནི་འདི་ཡང་མི་རྣམས་ཀྱིས་ངག་གི་སྤྱོད་ཡུལ་མ་ཡིན་ཏེ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་དུ་ཏུས་པའི་ཕྱིར་རོ། ༡༢།

---

༡ པེ་° ཀྱི། ༢ ཞོ་° ན། ༣ པེ་° དེ་ནས། ༤ ཞོ་° ན། ༥ རྒྱ་དཔེ་ར་° (संपुटेनशनैःशनैः) ཁ་སྦྱར་གྱིས་དལ་བུ་དལ་བུས།

ཉིན་རེའམ་[1]ཡང་ན་ཟླ་རེའམ། །
དེ་བཞིན་ལོ་ནི་རེ་རེ་ལ་[2]། །

གཅིན་[3]པ་ཆེན་པོ་བཏུང་བར་བྱ། ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ། དེ་གང་གི་ཚེ་བཏུང་བར་བྱ་ཞེ་ན། རེ་རེ་ལས་ཞེས་པ་ནི་ཉི་མ་སོ་སོ་[4]ལའོ། །ཉི་མ་སོ་སོ་ལ་མ་རྙེད་ན་ཅི་ལྟར་བྱ་ཞེ་ན། ཟླ་བ་རེ་རེ་ལའོ། །ཟླ་བ་རེ་རེ་ལ་ཡང་མ་རྙེད་ན། གསུངས་པ། ལོ་རེ་རེ་ལ་སྟེ་གཏོར་མ་སྦྱིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པར་འབྲེལ་ཏོ། །གཏོར་མ་ཞེས་པ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱི་མཆོད་པའི་རྣམ་པ་སྟེ། ནང་གི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་སྦྱིན་སྲེག་ལས་སོ། །གང་ནས་ཤེ་ན། སྣ་ནས་སོ། །དྲུག་ཅུ་རྩ་བཞི་ཞེས་པ་ནི་[5]འདི་ཡང་དགུ་གུ་ཞེས་པ་འདིར་འབྲེལ་ཏོ། །དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། བཞིས་ལྷག་པའི་དགུ་གུ་དྲུག་ཅུ་ནི་སྦྱོར་བ་སྟེ། དགུ་གུ་དྲུག་ཅུ་[6]ནི་ཉིན་ཞག་གཅིག་ལའོ། །ཉིན་ཞག་གཅིག་པོ་དེའི་དགུ་གུ་ལས་ཅིར་འགྱུར་ཞེ་ན། དྲུག་ཅུ་རྩ་བཞིར་ཞེས་པ་སྟེ། དྲུག་ཅུ་རྩ་བཞི་ལ་ནི་ཞག་གི་ལྷག་མ་ལ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ་[7]། །འདིའི་མན་ངག་ཀྱང་སྣ་ནས་ཏེ་དང་པོར་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དང་། རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་དང་། སྣང་བ་མཐའ་ཡས་དང་། མི་བསྐྱོད་པ་དང་། དོན་ཡོད་གྲུབ་པ་དང་། ནར་[8]ལ་སོགས་པའི་བདག་ཉིད་རྣམས་ཀྱི་[9]སོ་སོ་ཞིང་ཡང་རབ་ཏུ་ལྷའི་ཚད་ལ་མི་''' བསྐྱོད་པ་ལྷག་མ་[10]ལ། རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་[11]ནི་དབྱལ་རྒྱ་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ།

---

༡ ལྷ°། རབ་ཅང་། ༢ ལྷ°། པེ°། སྣ°། རེ་རེའམ། ༣ སྡེ°། གཅིག ༤ སྣ°། པེ°། དོན་མོ་སོ། ༥ སྣ°། ཉེ་མི་འདུག ༦ རྒྱ་དཔེར°། (ཙཏུཿཥཥྚི) དྲུག་ཅུ་རྩ་བཞི། ༧ རྒྱ་དཔེར°། (ཤེཥདཱནཱཾཤིཥྚཱཾཤཿ) ལྷག་མ་ལ་དགུ་གུ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ་འདུག ༨ པེ°། ནར། ༩ རྒྱ་དཔེར་འདི་བར་ཚིག་རྐང་ཕྱེད་མི་འདུག ༡༠ སྣ°། པེ°། ལྷག་མ་ལ། ༡༡ རྒྱ་དཔེར°། སེམས་དཔའི་མི་འདུག

རདི་གཅིག་བདུལ་དེ་དེར་བསྒྲེ་གར་བྱའོ། །རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་བླང་བ་ནི་ནག་མོ་དང་སྤོ་བསངས་མ་ལ་ནི་ནག་པོའི་ཕྱོགས་ལ་བླང་བར་བྱའོ། །དཀར་མོ་[1] དང་དཀར་ཤམ་ལ་ནི་དཀར་པོའི་ཕྱོགས་ལའོ། །གཞན་ཡང་གལ་ཏེ་ནག་པོ་དང་། དཀར་པོའི་ཕྱོགས་ཞེས་བྱ་བ་གང་གིས་ཀྱང་མཐུན་པར་གྲུབ་པ་དེ་བཞིན་དུ་དེའི་ནང་གསེས་[2] ཀྱི་དབྱེ་བ་ནི། དཀར་པོའི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་གཅིག་དང་གཉིས་[3] དང་གསུམ་ལ་ནི་དཀར་པོའི་ཕྱོགས་ཀྱི་དགོས་པ་བསྒྲུབ་པར······བྱའོ།། །།བཞི་པ་དང་། ལྔ་པ་དང་། དྲུག་པ་ལ་ནི་ནག་པོའི་ཕྱོགས་ཀྱི་དགོས་པ་བྱའོ། །དེ་བཞིན་དུ་བདུན་པ་ལ་སོགས་པ་ཉི་མ་གསུམ་ལ་[4] དཀར་པོའི་ཕྱོགས་ཀྱི་དགོས་པའོ། །བཅུ་པ་ལ་སོགས་པའི་ཉི་མ་གསུམ་ལ་[5] ནག་པོའི་ཕྱོགས་ཀྱི་དགོས་པའོ། །ཆོས་བཅུ་གསུམ་ལ་སོགས་པའི་ཉི་མ་གསུམ་ལ་ཡང་དཀར་པོའི་ཕྱོགས་ཀྱི་དགོས་པའོ། །ཇི་སྐད་དུ་གསུངས་པ་ལས་གོ་རིམ་བཟློག་པས་[6] ནག་པོའི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་གཅིག་ལ་སོགས་པ་ཉི་མ་གསུམ་ལ་རྫོགས་པར་བྱའོ། །ལུང་ལས།

རི་བོང་ཅན་ཉིད་ཉི་མ་སྟེ། །
ཉི་མ་རི་བོང་ཅན་ཉིད་དོ། །

རི་བོང་ཅན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཀར་པོའི་ཕྱོགས་ཡིན་ལ། ཉི་མ་ནི་ནག་པོའི་ཕྱོགས་སོ་ཞེས་གསུངས་པ་ཡིན་ནོ། །ཇི་སྐད་གསུངས་པ་དཀར་པོའི་

---

༡ སྣ་༠ དཀར་མོ། ༢ སྣ་༠ སེ་༠ ནང་བསྲེས། ༣ སྣ་༠ བཅུ་གཉིས་དང་། ༤,༥ སྣེ་༠ ཡ་ཡང་།
༦ སྣ་༠ བཟློག་པ་ཡིས།

ཉིན་མོ་དང་། མཚན་མོ་འི་ལྷག་མ་ལ་སྐ་ཐུག་གཡོན་པ་ནས་བླུགས་པར་བྱའོ།། [1]མཚན་མོ་འི་ལྷག་མ་ལ་ཡང་སྐ་ཐུག་གཡས་པའི་ཐུ་ག་ནས་སོ། །དེ་ཡང་སྐ་ཏུ་ཆུ་དང་། དབང་ཆེན་སྦྱོར་བས་སྐ་ཐུག་གཡོན་པར་དེ་ཤིན་ཏུ་བཟང་བ་མ་ཡིན་པའོ[2]། །མེ་དང་རླུང་སྦྱོར་བས་ནི་འབྲིང་པོ་འོ། །སྐ་ཐུག་གཡས་པར་ཡང་མེ་དང་རླུང་དང་སྦྱོར་བ་ནི་ཐམས་ཅད་བླུགས་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པའོ།། རླུང་[3]དང་དབང་ཆེན་སྦྱོར་བ་དེ་ཉིད་ཙམ་ལ་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །དེ་སྐད་གསུངས་པ།

ས་དང་ཆུ་ལ་བཟང་པོ་འི་ལས། །
རླུང་དང་མེ་ལ་ནག་པོ་འོ། །
ཟླ་བ་བཟང་པོ་ཡང་དག་རིག །
འོད་རྣོ་བ་ལ་འབྲིང་པོ་འོ། །
གལ་དེ་ཉི་མའི་[4]རླུང་དང་མེར། །
ངེས་པར་ཡང་ནི་འཆི་བ་སྟེ། །
དེ་ཉིད་ཟླ་བ་བྱུང་གྱུར་ན། །
ཤིན་ཏུ་སྡུག་བསྔལ་སྟེར་བ་མིན། །

ཞེས་པའོ། །སྦྱོར་བ་རྣམ་པ་བཞི་ནི་རླུང་དང་དབང་ཆེན་དང་མེ་དང་ཆུ་དང་[5] ཞེས་བྱ་སྟེ། རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་ཡོགས་དང་སྟེང་དང་དབུས་དང་འོག་རྣམས་ནས་རླུང་རབ་ཏུ་རྒྱུ་བའི་མཚན་ཉིད་དོ། །བྱ་བ་གཞན་དག་ལ་ཡང་སྦྱོར་བ་འདི་ཉིད་ལས་དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བའི་མཚན་ཉིད་[6]རྣམས་སུ་རང་ཉིད····

---

༡ རྒྱ་དཔེར་。 འདིའི་མཚམས་སུ (ཏཐཱ་གྲཱིཿ ཧཱཿ མ་ཀཱཿ རི་བ་ས་སུ) དེ་བཞིན་ནག་ཕྱོགས་ཉིན་མོ་ཡི་ཞེས་ཀྱང་འདུག ༢ སྡེ་。 པེ་。 ཟླ། ༣ རྒྱ་དཔེར་。 (ཕླུ་ཏཱ) ཆུ་དང་། ༤ རྒྱ་དཔེར་。 (ཀུ་ཏུ) སྦྱོང་བའི། ༥ སྡེ་。 པེ་。 དང་མི་འདུག ༦ སྡེ་。 པེ་。 མཚན་མ།

གཏོར་མ་དྲུག་ཅུ་རྩ་བཞི་སྦྱིན། །
དབྱུ་གུ་དྲུག་ཅུ་རྩ་བཞིར་ཤེས། ༡༣ །
ཧག་ཏུ་ཚུང་ཟད་ཙི་ཟ་དང་། །
དེ་བཞིན་ཚུང་ཟད་འཐུང་བ་དང་། །
གཞན་ཡང་བཟའ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི ། །
ཕྱུད་ནི་ག་ཤིན་རྗེའི་ག་ཤེད་ལ་དབུལ། ༡༤ །
དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་བྱ་བ། །
བླ་མ་ལ་ནི་ཡོན་མཆོག་དབུལ[1]། །
ལས་ནི་ཐམས་ཅད་བསྒྲུབ་[2]པ་དང་། །
བདག་ཉིད་ཞི་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར། ༡༥ །
བདག་ཉིད་ཀྱང་ནི་དབུལ་བ་དང་། །
ཧ་དང་བ་དང་[3]སྐྱང་པོ་དང་། །

ཤེས་པར་བྱས་པའོ། །གང་ཞིག་ཧག་ཏུ་ག་ཤིན་རྗེ་ག་ཤེད་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པ་དེའི་གང་བྱས་པ་ནི་ག་ཤིན་རྗེ་ག་ཤེད་ཉིད་ཀྱི་བྱ་བ་སྟེ། དེ་ཐོབ་པ་ལ་ནི་ཚུང་ཟད་ཀྱང་བཟློད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །གང་ཡང་གོམས་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་དེ་ལ་ནི་འདི་ལྟ་བུས་ལྷག་པར་མོས་པར་བྱ་བ་ཡིན་དེ།༡༣།

དེའི་ཕྱིར་གསུངས་པ། ཧག་ཏུ་ཚུང་ཟད་ཙི་ཟ་[4]དང་། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །གཞན་ཡང་བཟའ་ཞེས་པ་ནི་མེ་ཏོག་དང་ཕྲིག་ཁྱི་[5]ལ་སོགས་

༡ ཅོ་དཔེ་དང་མཐུན་པར་མཆོག་དབུལ་ཞེས་བཞག་ཡོད། ཞ་° སྣེ་° བླ་མ་ལ་ནི་ཡོན་དབུལ་བའོ། །
༢ ཞ་° སྐྱོབ། ༣ ཞ་° ལང་། སྣ་° སྐྱང་། ༤ སྣ་° པེ་° ཙི་ཟད། ༥ ཅོ་དཔེར་° ཁྱིག

གསེར་དང་དེ་ལས་གཞན་པ་དང་། |
རང་གི་ཆུང་མ་དེ་བཞིན་བྲ། ༡༦ |
མ་དང་སྲིང་མོ་ཚ་མོ་དང་། |
དེ་བཞིན་དུ་ནི་སྲུན་ཟླ་དང་། |
ན་བཟའ་སྣ་ཚོགས་དག་དང་ནི། |
གདུགས་དང་རྡུལ་ཡབ་[1]མཛེས་པ་དང་། ༡༧ |
ཁྲིམ་དང་གདན་དང་དྲི་ཞིམ་དང་། |
དེ་བཞིན་སླུ་དང་རོལ་མོ་དང་། |
རལ་གྲི་དང་ནི་རྒྱན་དག་དང་། |
བརྟུལ་ཞུགས་ཅན་གྱིས་བླ་མར་དབུལ། ༡༨ |

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེའི…[2] གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད་ལས་ཉེ་བར་མཁོ་བའི་ལས་ཀྱི་[3]ཁྱད་པར་ཐམས་ཅད་ཞེས་བྱ་སྟེ་རིམ་པར་ཕྱེ་བ་[4] བཅུ་གཉིས་པའོ།། ||

པ་ལའོ། །ཕུད་དབུལ་ཞེས་པ་ནི་ཐོག་མ་ཉིད་ཀྱི་བཤོས་གཙང་ངོ་། བླ་མ་མཉེས་པས་ཐམས་ཅད་འགྲུབ་པས་དེ་ལ་དབུལ་བའི་དོན་[5] གསུངས་པ། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ཡོན་ནི་ཕུལ་དུ་ཕྱུར་པ་ཡིན་ནོ། ༡༥–༡༨།

ཉེ་བར་མཁོ་བའི་ཁྱད་པར་ཀུན། ཞེས་པ་ནི་གང་དག་འཁོར་ཞིང་བཏུབ་པ་རྣམས་ཏེ། དེའི་ཁྱད་པར་རོ། །དེ་དག་གསལ་བར་བྱེད་པ་སྟེ་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། །ལེའུ་བཅུ་གཉིས་པའི་འགྲེལ་པ་རྫོགས་སོ།། ||

---

༡ ལྷ་, སྣ་, རྡུལ་ཡང་། ༢ ལྷ་, རྗེ། ༣ རྒྱ་དཔེ་ར་, ལས་ཀྱི་ཞེས་པ་མི་འདུག ༤ རྒྱ་དཔེ་ར་, རིམ་པར་ཕྱེ་བ་མི་འདུག ༥ པེ་, དོན་དུ།

ལེའུ་བཅུ་གསུམ་པ།

དེ་ནས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི།
སྡིག་པ་དག་ནི་ཇི་སྙེད་པ།
དེ་དག་གཅོད་པའི་གྲི་གུག་སྟེ།
ཉོན་མོངས་[1]གཅོད་པའི་ཤུབས་ཅན་ནོ། ༡
དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་བྱ་བ།
རིང་བའི་[2]ཐོས་པ་[3]བསྒྲུབ་པའི་[4] ཕྱིར།
རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་སྒྲུབ་ཐབས།

བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་ཕྱག་མཚན་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། སྡིག་པའི་ལས་ནི་ཇི་སྙེད་པ[5]། །ཞེས་པ་ལ་སྡིག་པའི་ལས་ནི་སྡུག་བསྔལ་བའོ། །ཤུབས་ཅན་ནི་རལ་གྲིའོ། །ཉོན་མོངས་པ་ནི་འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པ་སྟེ་ཉེ་བར་མཚོན་པ་ལས་སོ། །ཇི་སྐད་གསུངས་པ་གཞན་དག་ལས་ཀྱང་[6]རྣམ་པར་དག་པ་རྟོགས་པར་བྱའོ། ༡།

ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་དབུས་གནས་བསམ། །ཞེས་པ་ནི་བདུན་པོ་རྣམ་པར་དག་པ་[7]དང་། ཟླ་ན་མེད་པའི་མཆོད་པ་དང་། ཚངས་པའི་གནས་བཞི་བསྒོམས་པའི་རྗེས་ལ། འགྲོ་བ་པ་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་རང་བཞིན་

---

1 ཅོ་ནེ་དང་པོད་འགྲེལ་མཐུན་པར་ཉོན་མོངས་ཞེས་བཞག་ཡོད། སྣར་。སྡེ་。ཞེ་སྡང་། 2 སྣར་。བ་ཞི། 3 སྣར་。སྤོད་པ། 4 ཅོ་དགེར་ཚིག་རྐང་འདི་མི་འདུག 5 ཅོ་དགེར་。ཚིག་རྐང་འདི་མི་འདུག 6 སྡེ་。ཡང་། 7 ཅོ་དགེར་。(སན་ད྄ཀྲི) རྣམ་པ་བདུན།

ནམ་མཁའི་ཁམས་ཀྱི་དབུས་གདོགས་པར། །
ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་མཆོག་བསམ་བྱ། ༢ །
གནས་དེར་རྩ་ལྷ་པ་ཡང་བསྒོམ། །
དེ་ཡི་སྟེང་དུ་གནས་དགོད་བྱ། །

ལ་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་བསྒོམས་པས་རྨི་ལམ་ལྟ་བུར་དུས་ལ། ཐོགས་པར་བྱ་བ་དང་བྲལ་བ་བདག་ཉིད་འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་ནམ་མཁའ་སྟེ། ནམ་མཁའི་ཕྱོགས་སུ་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །དེར་ཅི་ཞེ་ན། གསུངས་པ། ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་དེ། རཾ་ལས་བྱུང་བའོ་ཞེས་ལྷག་མའོ། ༢ །

རྩ་ལྷ་པ་ཞེས་པ་ནི་རྐྱེ་ཡིག་ལས་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེའོ། །གནས་དེར་ཞེས་པ་ནི། གཞི་གཞལ་ཡས་ཁང་ཞེས་པའོ། །དེའི་དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། རྡོ་རྗེ་ར་བ་དང་། རྡོ་རྗེ་གུར་གྱི་ནང་དུ་གནས་པའི་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེའི་སུ་ཕྲུད་ལ་གནས་པའི་འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་བཞི་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་གཞལ་ཡས་ཁང་ངོ་། །དེ་བཞིན་དུ་ཕྱིས་ཀྱི་དག་པ་ལ་ཡང་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་འི་ནང་དུ་རྟོགས་པར་བྱའོ། །ཧྲཱི་[1]ཞེས་པ་ནི་ས་བོན་ཉེ་བར་བཀོད་པ་སྟེ། འདིར་ཡང་སྔར་བཞིན་དུ་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པ་རྣམ་པ་ལྔ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ཕྲུད་པར་ནི་ཉི་མ་དང་། ཟླ་བ་དང་། རྡོ་རྗེ་དང་། ས་བོན་གྱུར་པ་ལས་ཞུ་བ་དང་[2]། ཞུ་བ་ལས་བཞེངས་པ་དང་། ཡང་རྡོ་རྗེ་གནས་པ་དང་། ས་བོན་ཉིད་ནི་[3]རྡོ་རྗེ་

---

༡ སྡེ་དགེ་ར༌ ཉིད། ༢ སྡེ་དགེ་ར༌ (ཝིཛྭ་ཀྲཱུར) ས་བོན་འཛོམས་པ། ༣ སྡེ་དགེ་ར༌ (མིཏྲ) ཉིད་ནི་འདིར།

མཐིལ་མདོག་ནག་པོ་འཇིགས་ཚུལ་ལ། །
ཕྱག་དྲུག་འཇིགས་སུ་རུང་བ་སྟེ། ༣ །
ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་རྣམ་བསྒོམ་བྱ། །
ཕྱག་གཞན་དག་ལ་གཞན་དག་དགོད། །
ཤར་དུ་སངས་རྒྱས་མཁའ་འགྲོ་མ། །
ཕྱག་དྲུག་གཏི་མུག་རྡོ་རྗེ་མཚུངས། ༤ །
ལག་ན་འཁོར་ལོ་འཇིགས་པར་བྱེད། །
བསྒོམ་བྱ་སྦྱོར་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ། །
ལྷོ་རུ་རིན་ཆེན་མཁའ་འགྲོ་མ། །
ཕྱག་དྲུག་ཕྲ་མ་དང་མཚུངས་པ། ༥ །
ཕྱག་ན་རིན་ཆེན་རབ་འབར་བ། །
ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་བསྒོམ་པར་བྱ། །

སེམས་དཔའོ། །དེ་དག་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་དེ་ཉིད་སྐྱེས་པའོ། །དེའི་ཐུགས་ཀར་ས་བོན་ལས་དཀྱིལ་འཁོར་པའི་ལྷ་རྣམས་སྤྲོ་བར་བྱའོ།། ༢ །།

ཕྱག་ཅེས་པ་ནི་གཡས་པའི་ཕྱག་གི་གཙོ་བོ་འོ། །གཞན་དག་ཅེས་པ་ནི་ལྔ་པོ་རྣམས་སུའོ། །རལ་གྲི་དང་། གྲི་གུག་དང་། འཁོར་ལོ་དང་། པདྨ་དང་། ཐོ་བ་[1]རྣམས་སོ། །རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པ་འདི་

---

[1] ཅོ་དགེར་. (ཀཔ ཞཏི) སྤོད་པ་རྣམས།

ནུབ་ཏུ་པདྨའི་མཁའ་འགྲོ་མ།
ཕྱག་དྲུག་པདྨ་འཛིན་པའོ། ༦
བྱང་དུ་ལས་ཀྱི་མཁའ་འགྲོ་མ།
རལ་གྲི་འཛིན་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་རིམ་པའོ[1]།
མེ་ལ་སོགས་པ་མཚམས་བཞི་རུ།
ལྷ་མོ་བསྒོམ་བྱ[2] བདུལ་ཞུགས་ཅན། ༧
ལཱ་སྱེ་མ་ལེ་དེ་བཞིན་གར[3]།
གླུ་མ་ཡི་ནི་ཁྲུད་པར་རོ།
ལས་ཀྱི་ཆ་ག་མཐོང་བ་ཡིས[4]།
དེར་ནི་སྒོ་སྐྱོང་[5] བསྒོམ་པར་བྱ།
ཐོ་བ་དབྱིག་པ་དང་པདྨ།
དེ་བཞིན་གཞན་ནི་རལ་གྲིའོ[6]། ༨

རྣམས་[7] ནི་ཞེ་སྡང་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་ཞལ་གསུམ་པ་ཕྱག་དྲུག་པ་[8] རྣམས་སོ། །ལཱ་སྱེ་ནི་དཀར་ཞིང་སྒོ་བ་སྒེག་པའི་[9] ཆ་བྱད་དོ། །ཕྲེང་བ་མ་སེར་མོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཕྲེང་བ་བསྣམས་པའོ། །གར་མ་དམར་མོ་གར་སྒྱུར་བའོ[10]། །གླུ་མ་སྔོ་བསངས་གླུ་ལེན་པའོ། །དེ་རྣམས་ཀྱང་ཞལ་གཅིག་ཕྱག་གཉིས་པའོ། །དེ་བཞིན་གཞན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྒོ་རྣམས་སུ་ཐོ་བ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་[11] ལ་སོགས་པ་སྔེ་སྔར་བཞིན་ནོ། །ཀླུ་རྣམས་སུ་ཡང་འདིར་མ་གསུངས་མོད་ཀྱི་ཐོད་པ་རྣམ་པ་བཞིའོ། ༧–༨།

---

༡ ཚིག་གི་སྦྱོར་སྟངས་བྱས་ན་འདིར་པར་གཞི་ཀུན་མཐུན་པར་བརྒྱད་ཚིག་ཅན་འདུག རྒྱ་དཔེར°། (ཁཊྭཱ་ངྒ་ཀྲམཥྚ་ཙཀྲེ) རལ་གྲི་པདྨའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ། ༢ སྣ°། བསྡམས། ༣ སྣ°། གྲར།
༤ ལྷ°། པེ°། སྣ°། དེས། ༥ སྣ°། སྐོང་སྐྱེས། ༦ རྒྱ་དཔེར°། (ཁ་ཌྒ་ཡེ) ཕུབས་ཀྱང་ངོ་།།
༧ རྒྱ་དཔེར°། ལྷ་མོ་རྣམས་ནི། ༨ སྡ°། བཅུ་དྲུག་པ། ༩ རྒྱ་དཔེར°། གར་གྱི་ཆ་བྱད་དོ།།
༡༠ རྒྱ་དཔེར°། ཚིག་རྐང་འདི་གཉིས་མི་སྣང་། ༡༡ རྒྱ་དཔེར°། གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཞེས་པ་མི་འདུག

ཨོཾ་བཛྲ་ཌཱ་ཀི་ནི[1]། ཨོཾ་བུ་དྡྷ་ཌཱ་ཀི་ནི[2]། ཨོཾ་ར་ཏྣ་ཌཱ་ཀི་ནི[3]། ཨོཾ་པདྨ་ཌཱ་ཀི་ནཱི། ཨོཾ་ཀརྨ་ཌཱ་ཀི་ནཱི། ལཾ་ནཾ་གཾ་མཾ[4]། མཚམས་སྦྱོར། །ཨོཾ་སུ་ད་ག་ར་ཛཿ ཨོཾ་དཧཊཀྵུ། ཨོཾ་བནྡྷ་བཾ། ཨོཾ་ཁ་ཊ་ག[5]་ཧོཿ[6]།༩།

འདི་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་ཅན་གྱིས་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མའི····སྒྲུབས་ཐབས་གསུངས་པའོ། །རིང་པོའི་ཐོས་པ་བསྒྲུབ་དོན་དུ། །རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་བསྒོམ་བྱ།༡༠།

རེར་ནི་གསང་སྔགས་ཀྱི་དངོས་གྲུབ་འགྲུབ་པར་འགྱུར་ཏེ[7]། ཨོཾ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ་ཙ་ར་བཛྲ[8]་ཌཱ་ཀི་ནི་སྭཱ་ཧཱ[9]།༡༡།

དེ་ནས་[10]ཡང་དག་བཤད་བྱ་བ། །
རྡོ་རྗེ་ས་འོག་སྒྲུབ་ཐབས་སོ། །
ས་འོག་རྣམ་པར་བསྒྲུབ་དོན་དུ། །
གནོད་མཛེས་རྡོ་རྗེ་བསྒོམ་པར་བྱ། ༡༢ །

ཨོཾ་བཛྲ་ཌཱ་ཀི་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་བཟླས་པའི་སྔགས་སོ། ༩ །

བསྒོམ་པ་དང་སྔགས་ཀྱི་དགོས་པ་གསུངས་པ། རིང་བའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། རིང་བ་ནས་ཐོས་པ་ནི་རིང་བའི་ཐོས་པའོ།༩–༡༡།

ཡང་དག་གནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཡོན་བརྐྱང་བས་གནས་པའོ། ། རིན་ཆེན་ཐོར་ཅོག་[11]ཅེས་པ་ནི་རིན་པོ་ཆེའི་དབུ་རྒྱན་ནོ། །རལ་གྲི་ཞེས་པ་ནི་

༡,༢,༣ སྣེ་ ○ ལྷ་ ○ ནཱི། ༤ ཀྱ་དཔེར་ ○ ཨོཾ་ཎཱི་མཱི་ནཱི་གཱི། ༥ སྣེ་ ○ ཁཎྜ ༦ ཀྱ་དཔེར་ ○ ཧོ།
༧ ཀྱ་དཔེར་ ○ (ཨཱཀཱཤ (ཙ) མཱདབཌྜཱ་ཀི་ནཱི) རེར་ནི་སྔགས་འདི་རྣམས་འགྱུར་ཏེ།
༨ ཀྱ་དཔེར་ ○ བཛྲ་མི་འདུག ༩ ཀྱ་དཔེར་ ○ ཧཱུཾ་ཕཊ་ཕཊ་ཞེས་ཀྱང་འདུག
༡༠ ཀྱ་དཔེར་ ○ གཞན་ཡང་ཞེས་ཀྱང་འདུག ༡༡ སྣེ་ ○ ཐོར་ཅིག

ཕྱག་དྲུག་མདོག་སྔོན་འཇིགས་པ་ཡི། |
ཕྱག་ཏུ་གདུང་ཤིང་དགོད་པར་བྱ། |
དཀྱིལ་འཁོར་ཀྱི་ནི་དཀྱིལ་དག་ཏུ། |
འདི་ནི་རབ་ཏུ་དགོད་པར་བྱ། ༡༢ |
ཤར་དུ་སྤྱན་མ་དགོད་པར་བྱ། |
དེ་བཞིན་ལྷོ་རུ་མཱ་མ་ཀཱི། |
ནུབ་ཏུ་ལྷ་མོ་གོས་དཀར་མོ། |
སྒྲོལ་མ་བྱང་གི་ཕྱོགས་སུ་དགོད། ༡༣ |
མི་དོག་སྤོས་དང་དེ་བཞིན་དྲི། |
མར་མེ་ལ་སོགས་མཚམས་སུ་དགོད། |

གཡས་པའི་ཕྱག་དང་པོ། |སྡིགས་མཛུབ་ཞགས་པ་ཞེས་པ་ནི་གཡོན་པའི་ཕྱག་དང་པོ[1] ། ༡༢–༡༣ །

སྤྱན་མ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྐུ་མདོག་དཀར་མོའོ། |ཕྱག་གཡས་པ་ན་འཁོར་ལོ་འཛིན་པའོ། |མཱ་མ་ཀཱི་ནི་སྔོན་མོ་ཕྱག་གཡས་པ་ན་[2] རྡོ་རྗེ་འཛིན་པའོ། |གོས་དཀར་མོ་ནི་དམར་མོ་[3] ཕྱག་གཡས་པ་ན་པདྨ་འཛིན་པའོ། |ལྷ་མོ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཞབས་གཡོན་བརྐྱང་ལ་[4] | གཡོན་པའི་ཕྱག་སྡིགས་མཛུབ་དང་ཞགས་པ་བསྣམས་པའོ། ༡༣།

མེ་ཏོག་མ་ནི་དཀར་མོ་ཕྱག་ན་མེ་ཏོག་གི་ཕྲེང་བ་འཛིན་པ་[5] ཅན་ནོ། |སྤོས་མ་ནི་སྔོན་མོ་སྤོས་ཀྱི་སྣོད་བསྣམས་པའོ། |མར་མེ་མ་དམར་མོ་མར་

---

༡ ཕྱུགས་སྐྱང་དགོས་རྒྱུར། ཚིགས་བཅད་བཅུ་གཉིས་པ་དང་བཅུ་གསུམ་པའི་རྩ་འགྲེལ་ཐད་ཚུན་མི་མཐུན་པ་དེ་བཞིན་རྒྱ་དཔེར་ཡང་འདུག ༢ སྣ་° ཞེ་° ན་མི་འདུག ༣ སྡེ་° དམར་མོ་མི་འདུག ༤ སྣ་° ག་° བ། ༥ ག་° སྣ་° འཛིན་པ་མི་འདུག

ཐོ་བ་ལ་སོགས་སྐོ་དྲུང་སྦྱི། །
སྤྲུལ་གྱིས་བརྒྱན་པའི་སྣ་རགས་བྲུས།༡༥ །
ལས་ཀྱི་ཆོ་ག་མཐོང་ནས་ནི། །
དཀྱིལ་འཁོར་[1]འདི་ལྟར་བསྒོམ་པར་བྱ། །
རྡོ་རྗེ་ས་འོག་སྦྱོར་ལྡན་པས། །
སྨི་ལམ་དུ་ནི་ལམ་མཐོང་འགྱུར། ༡༦ །
དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་བྱ་བ། །
བདུན་པའི་རྒྱལ་པོ་ཡི་དཀྱིལ་འཁོར་དེ། །
མཁའ་སྤྱོད་ཉིད་ནི་རབ་བསྒྲུབ་ཕྱིར། །
ཧ་ཡི་མཆོག་ནི་རབ་ཏུ་བསྒྲུབ། ༡༧ །
ཕྱག་གཉིས་པ་ལ་ཞལ་གཅིག་པ། །
སྐྲ་མདོག་ལྷུང་གུ་འཛིགས་པར་བྱེད། །
ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་སྟེང་དུ་གཞག །
ཧ་ཡི་གདོང་[2]པ་རབ་མཛེས་པས། ༡༨ །

མེའི་སྟོང་བུ་འཛིན་པའོ། །བྲུག་པ་མ་ནི་ལྷུང་གུ་དྲིའི་དུང་ཕོར་འཛིན་པའོ། །
འདི་དག་ནི་གཡས་བཀྲུང་བས་གནས་ཤིང་གར་གྱིས་བསྒྲེངས་པར་བྱེད་པའོ། །
ཐོ་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ནི་སྔར་གྱི་བཞིན་ནོ་ཞེས་ལྷག་མའོ།༡༥།

ལས་ཀྱི་ཆོ་ག་མཐོང་ནས་ནི། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་བསྐྱེད་པའི་རྗེས་ལ། དེའི་སྙིང་གའི་ས་བོན་ཉིད་ལས་ལྷ་ཐམས་ཅད་སྤྲོ་བར་བྱའོ།༡༦།

བདུན་པའི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་པ་ནི་རྟའི་མཆོག་གོ །བསྒོམ་པར་བྱ་ཞེས་པ་ནི་སྔར་གྱི་བཞིན་ནོ།༡༧–༡༨།

---

༡ ཅོ་དཔེར་༠(ཅཱ)དཀོར་ལོ། ༢ སེ་༠དགོད།

གཡས་པ་སྣོད་བྲུ་ཁ་རྩུར་བཅས། །

ཕྱག་གཡོན་པ་ནི་ཐོད་པའོ། །

ཨོཾ་ཕུཾ་ཕུཾ་ཕུཾ་[1]རིརིརི། །

གསང་སྔགས་འདི་ནི་[2]མཁས་པས་བཟླ། །

ཧཱ་ཡི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་པར་གྲགས། ༡༩ །

ཤར་དུ་བཀྲ་བོ་[3]བསྒོམ་བྱ། །

ལྷོ་ཕྱོགས་སུ་ནི་རིམ་གྲོ་མ[4] । །

ནུབ་ཏུ་བདུན་པའི་རྒྱལ་པོ་སྟེ། །

ཧ་མཆོག་མ་ནི་བྱང་ཕྱོགས་དགོད[5] । ༢༠ །

བདག་པོ་འི་ཞལ་ཕྱག་[6]ཛེ་ལྷ་བར། །

ཐམས་ཅད་དེ་དང་འདྲ་བར་བསྒོམ། །

གཡས་པ་ཞེས་པ་ནི་གཡས་པའི་ཕྱག་གོ །སྔགས་ནི་ཕུ་གསུམ་དང་ཧྲི་གསུམ་མོ[7] । །ཛི་ལྷར་ཕྱག་རྒྱ[8]མ་གསུངས་པ་དང་། མ་བཤད་པ་ནི་དེ་ཡང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཁ་དོག་གི་རྗེས་སུ་འབྲངས་ནས…… རྟོགས་པར་བྱའོ། །ལྷ་མོ་རྣམས་ཀྱི་ཁ་དོག་ལ་སོགས་པའི་དབྱེ་བ་ཡང་སྔར་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་བཞིན་དུ་བྱའོ།༡༩–༢༠།

བདག་པོའི་ཞལ་ཕྱག་ཛི་ལྷ་བ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་བདག་པོ་སྟེ། གཙོ་བོ་བཞིན་དུ་ཕྱག་གཉིས་མ། ཧའི་ཞལ་གདོང་གཅིག་པ། དེའི་ཕྱག་མཚན་འཛིན་

---

༡ རྒྱ་དཔེར་。ཕུཕུཕུ། ༢ གསང་སྔགས་འདི་ནི་ཞེས་པ་རྒྱ་དཔེར་མི་འདུག ༣ ལྡ་。པེ་。སྣ་。བཀྲབོ།
༤ རྒྱ་དཔེར་。(ཏུརངྒམུཀ) ཏ་ཞེས་འདུག ༥ པེ་。སྣ་。ཚིག་རྐང་འདི་མི་འདུག
༦ པེ་。སྣ་。བདག་མོ་འི་ཕྱག་དག ༧ རྒྱ་དཔེར་。ཧཱུཿགསུམ་དང་ཧྲཱིཿགསུམ་མོ། །
༨ རྒྱ་དཔེར་。(མུདྲམ་ཏཱ) ཕྱག་རྒྱ་སྔགས།

སྡིགས་འདི་ཡིས་ནི་ཐམས་ཅད་དུ། |
གཤེགས་སུ་གསོལ་བར་རབ་ཏུ་གྲགས། ༢༡ |
སྨྱུག་མའི་སླིང་བུ་པོ་ལྦང་[1]དང་། |
ཧ་ལྷུམ་ཧ་བྲན་མཚམས་སུ་གཞག |
[2]བ་ལང་[3]སྣ་[4] དང་གླང་པོའི་སྣ། |
དེ་བཞིན་གདོང་བཟང་གདོང་ངན་དེ། |
གདུན་ཤིང་དང་ནི་སྭ་རེ་དང་། |
ལྕགས་ཀྱུ་དང་ནི་ཞགས་པ་དང་། ༢༢–༢༣།

པའི་འོ། །སྡིགས་འདིས་ནི་ཞེས་པ་ནི་ཧའི་མཆོག་[6]གི་སྐོང་ག་ན་གནས་པའི་ཧཾ་[7]ཡིག་ཉིད་དོ། །འབྱུང་ཞེས་པ་ནི་སྦྱོར་བའོ། །སྨྱུག་མའི་སླིང་བུ་ལ་སོགས་པ་ནི་རང་རང་གི་མིང་གི་མཚན་མ་འཛིན་པའོ། །གདོང་བཟང་[8]མ་དང་གདོང་ངན་མ[9]། །ཞེས་པ་ནི་བདུད་ཙམ་དུ་ཟད་དོ། །འདི་དག་ཀྱང་ཡང་དག་པར་ན་ཁྲོ་བོའི་ཆ་བྱད་ཅན་ནོ། །ཁ་དོག་གི་དབྱེ་བ་ནི་སྔར་གྱི་བཞིན་ནོ། །སྒོ་སྐྱོང་རྣམས་ཀྱི་རིམ་པ་ཇི་ལྟར་ཕྱག་གཡས་པ་རྣམས་སུ་ཕྱག་མཚན་འཛིན་པར་གསུངས་པ། གདུན་ཤིང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །རྡོ་རྗེ་ས་འོག་གི་སྡིགས་མ་གསུངས་པ་བརྗོད་པའི་དོན་དུ་ཇི་ལྟར་ཧ་མཆོག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ།

---

༡ སྡེ་° བང་། ༢ རྒྱ་དཔེར་° འདིའི་མཚམས་སུ (སམཏུ་རིཏ་རེ་ཏུ་སྤུ་ཀྵུ་ཀ་མཱི་ཀི་ཏུ་སཏྟྭཿ) སྐྱེ་ལོ་མ་སོགས་པ་བཅས་སྤྲན་བྱུང་དང་། །ར་ཀ་དག་ནི་ཐམས་ཅད་དུ། །ཞེས་ཚིག་རྐང་གཉིས་མང་འདུག
༣ སྡེ་° བན་གླང་། ༤,༥ རྒྱ་དཔེར་°(ཀཾ) ནི། ༦ སྣ་° ཧ་མཆོག ༧ རྒྱ་དཔེར་° ཀྵཱ་ཡིག
༨ སྡེ་° བཟངས། ༩ གདོང་ངན་མ་ཞེས་པ་ནས་དངོས་གྲུབ་ངེས་པར་སྟོན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། ཞེས་པའི་བར་རྒྱ་དཔེར་མ་བཞུགས།

གར་ལ་སོགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་གྱིས། །
སྒོ་བཞི་ཅུ་ནི་དག་ཏུ་བསྒོམ། །
སྤྲོ་ཚགས་གཡོན་པར་བསྒོམ་པར་བྱ། །
རང་གི་ཕྱག་མཚན་དེ་བཞིན་གཡས། ༢༨ །
ཛྫ་ལྟར་[1]དུ་མཆོག་སྟགས་ཀྱིས་ནི། །
རྡོ་རྗེ་ས་འོག་གི་ཡང་གཏེར། །
དུ་མཆོག་རྣལ་འབྱོར་ཉིད་ཀྱིས་ནི་[2] ། །
ཁམས་གསུམ་ནམ་མཁའི་ཁམས་སུ་འགྱུར་[3] ། ༢༤ །

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེའི་གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད་ལས་དངོས་གྲུབ་ངེས་པར་བསྟན་པ་སྟེ་རིམ་པར་ཕྱེ་བ་[4] བཅུ་གསུམ་པའོ།། །།

དེའི་ཕྱིར་ན་རྡོ་རྗེ་ས་འོག་གི་སྟགས་ཉིད་དོ། །ས་བོན་གྱི་ཡི་གེ་ནི་ཧྲཱི་ཡིག་དག་གོ །མཁའ་ལ་ཞེས་པས་ནི་ནམ་མཁའ་ལའོ། །ཁམས་ནི་འཇིག་རྟེན་གསུམ་མོ། ༢༡–༢༤།

དངོས་གྲུབ་ངེས་པར་སྟོན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། དངོས་གྲུབ་རྣམས་ནི་ས་འོག་གི་བུག་པར་[5] འཇུག་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་སོ། །གང་དུ་ངེས་པར་བསྟན་པ་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། །ལེའུ་བཅུ་གསུམ་པའི་བཤད་པ་རྫོགས་སོ།། །།

---

[1] ཅོ་དགེར་° (ཏཐཱ) དེ་ལྟར། བསྒོམ། [2] ཅོ་དགེར་° (ཀླུ་ཤྲཱུ) བསྒོམ། [3] ཅོ་དགེར་° (ཁཏྟུ་ཏཱིཀཱ་ཨ་སྤྲཱ་མ་ཏ) ནམ་མཁའི་ཁམས་ནི་ཡོངས་ཁྱབ་འགྱུར། [4] ཅོ་དགེར་° རིམ་པར་ཕྱེ་བ་ཞེས་མི་འདུག [5] ཆུ་° བུ་གར།

ལེའུ་བཅུ་བཞི་པ།

དེ་ལ་འདི་ནི་སྨྲ་བྱ་བརྒྱུད་པའི་[༡]དམ་ཚིག་གི་མཆོག་སྟེ།
[༢]ཨཀཱརོམུཁཾསརྦདྷརྨཱཎཱཾ ཨཱདྱནུཏྤནྣཏྭཱཏ྄[༣]། ༡ །
དཔལ་ལྡན་གཤིན་རྗེའི་[༤] གཤེད་བསྒོམ་[༥]ལ། །
སློབ་མ་རྣམ་སྣང་མཛད་དུ་བསྒོམ། །

དཀྱིལ་འཁོར་བཞེངས་སུ་གསོལ་བའི་དོན་དུ་ཐིག་གདབ་པ་གསུངས་པ་། དེ་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། དེ་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ས་ཡོངས་སུ་གཟུང་བ་དང་སྦྱང་བ་བྱས་པའི་ས་གཞི་ལའོ། །མཆོག་ཅེས་པ་ནི་མངོན་པར་འདོད་པས་ནའོ། །དམ་ཚིག་ཅེས་པ་ནི་འདའ་བར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པའོ། །ཡེ་ཤེས་ཐིག་སྐུད་ཅེས་བྱ་བ་ནི། བར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་[༦]། ཨཀཱརོམུཁཾ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། སྔགས་འདིས་ཐིག་སྐུད་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པར་བྱའོ།། རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ནི་གཏི་མུག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཡིན་ལ། གཤིན་རྗེ་མཐར་བྱེད་ནི་ཞེ་སྡང་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དོ། །[༧]ཡེ་ཤེས་ནི་ཡཀྵ་མ་མེད་[༨]ཞེས་པའི་ཡི་གེ་རྣམ་པ་ལྔའོ། །དེས་བསྐྱེད་པས་ཐིག་སྐུད་ནི་ཡེ་ཤེས་ཐིག་མཆོག་གོ །

---

༡ ལྷ° སྣ° བརྒྱུད་པའི། ༢ ལྷ° ཅོ་དགེར° ཨོཾཨཀཱརོ། ༣ ཅོ་དགེར° ཨོཾཨཱཿཏྲཾ་དུཥཙྐཱ་ཏྲཱ། ཞེས་ཀྱང་འདུག ལྷ° ཨཱདྱནུཏྤནྣཏྭཱཏ྄ཨོཾཨཱཿཏྲཾ། ༤ ལྷ° རྗེ། ༥ ཅོ་དགེར° (དྷ་སྒོམ) གཟུགས་ཅན། ལྷ° བསྒོམས། ༦ ཅོ་དགེར° ཚིག་རྐང་འདི་གཉིས་མི་འདུག ༧ ཅོ་དགེར° (ཛྙཱནཏེཏེ) ཡེ་ཤེས་ཐིག་སྐུད་ཅེས་བྱ་བ་དེ་ཞེས་ཀྱང་འདུག ༨ ཅོ་དགེར° མམེད།

ཡེ་ཤེས་ཐིག་མཆོག་རྩེ་མོ་རྩེ། །
ཤིན་ཏུ་མཉམ་པར་བཞག་ནས་བདབ[1]། ༢ །
དེ་ལ་འདི་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་ཆེན་པོ་འི་དམ་ཚིག་མཆོག[2] ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ༣ །
དཀྱིལ་འཁོར་ཉིས་འགྱུར་རིམ་པར་བྱ། །
དེ་ཡི་སློ་[3]ཡི་ཉི་ཤུའི་ཚད། །
བ་ཡི་རྣམ་ལྔ་མཉམ་སྦྲུགས་པའི། །
སྐུད་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་རབ་བཏགས། ༤ །
དེ་ལ་འདི་ནི་རྡོ་རྗེ་ཆེན་པོ་གསོལ་བ་གདབ་པའི་དམ་ཚིག་གོ །
ཨེ་མ་ཧོ་སངས་རྒྱས་སློབ་དཔོན་ཆེ། །

དེ་ལྟ་བས་ན་རྩེ་མོ་འི་[4] རྩེ་མོ་འོ། །ཤིན་ཏུ་མཉམ་གཞག་ཅེས་པ་ནི། ཤར་ལ་སོགས་པའི་ཕྱོགས་ཀྱི་གོ་རིམས་བཞིན་ནོ། ༡—༢།

དེ་ཅི་དཀྱིལ་འཁོར་ཆེན་པོ་དམ་ཚིག་ཡིན་ཞེ་ན། གསུངས་པ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཞེས་པའི་ཡི་གེ་གསུམ་པོ་འདིས་དཀྱིལ་འཁོར་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པར······བྱའོ། ༣ །

ཐིག་སྐུད་ཀྱི་ཚད་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། དཀྱིལ་འཁོར་ཉིས་འགྱུར་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །སྒྲོམ་ཕྲ་[5] བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། སྒོ་འི་ཞེས་པའོ[6]། ༤ །

རྡོ་རྗེ་ཆེན་པོ་ལ་གསོལ་བ་གདབ་པའི་དམ་ཚིག་ཅེས་བྱ་བ། རྡོ་རྗེ་ནི་རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་ཏེ། དེ་ལ་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་གཞུག་པའི་དོན་དུའོ། །གསོལ་

---

༡ ཞ་ སྣ་ གདབ། ༢ ཀྱ་དགེར་ (ཐུཀྐིཁནསམཡ) དམ་ཚིག་འཛུག ཞ་ དམ་ཚིག་གོ
༣ ཀྱ་དགེར་ ཞ་ ཏ་ སློ་ཡི། ༤ སྡེ་ ཙྪེ་མོ་འི་མི་འདུག ༥ ཀྱ་དཔེར་ ཕྲ་ཞེས་མི་འདུག
༦ ཀྱ་དཔེར་ ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །

ཨེ་མ་ཧོ་ཆོས་དང་ཚོགས་ཀྱི་གཙོ། །
དམ་ཚིག་དེ་ཉིད་བདག་ལ་སྟོལ། །
བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱང་བདག་ལ་སྟོལ། ༤ །

དེ་ལ་འདི་ནི་ས་ཆེན་པོ་ཡོངས་སུ་གཟུང་བའི་ཆོ་ག་སྟེ། རྡོ་རྗེ་སའི་ལྷ་མོ་བཀུག་ལ།

ལྷ་མོ་ཁྱོད་ནི་དབང་དུ་འགྱུར། །
སྐྱོབ་པ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །
སྤྱོད་པ་ཡི་ནི་ཁྱད་པར་དང་། །
ས་དང་ཕ་རོལ་ཕྱིན་པ་ལའོ། ༥ །
སྐོ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་ཆ་བརྒྱད་དེ། །
ཁྲུམས་ཆེན་དག་ནི་བོར་བ་ལ། །

བ་གདབ་པ་ནི་ཞུ་བའོ། །དེའི་དོན་གྱིས་ན་དམ་ཚིག་སྟེ་དེ་བརྗོད་པའོ། །དེ་ཉིད་གསུངས་པ། ཨེ་མའོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ། ༤ །

ས་ཡོངས་སུ་གཟུང་བའི་དམ་ཚིག་ཅེས་པ་ནི། ས་གཞི་ཡོངས་སུ་གཟུང་བའི་ཐབས་སོ། །དེའི་དགོས་[1]པ་ཇི་ལྟ་བུ་ཞེ་ན། གསུངས་པ། རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དགུག་ལ་[2]ཞེས་པ་ནི་མངོན་དུ་ཏུའོ། །དེ་ཡང་ཚོགས་སུ་བཅད་པའི་ཐབས་གང་ཡིན་ཞེ་ན། གསུངས་པ། ལྷ་མོ་ཁྱོད་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ། ༥ །

ཐིག་སྐུད་སྐོ་འི་ཉི་ཤུའི་ཚའི་སྦོམ་ཕྲ་གསུངས་པ་དེ་ཉིད་མི་ཤེས······ སོ་ཞེ་ན། སྐོ་འི་ཚད་གསུངས་པ། དཀྱིལ་འཁོར་བརྒྱད་ཆ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་

༡ སྡེ་。 དགོངས། ༢ སྣར་。 པ།

བདག་ཉིད་ཆེན་པོས་ཤེས་པར་བྱ། །
ཡིད་དུ་འོང་ཞིང་ལེགས་སྦྱར་པའི། ༥ །
སྒྲ་ཁྲུད་སྒོ་ཙམ་ཤེས་པར་བྲི[1]། །
ལྷ་ཡི་སྐུམ་བྱའང་དེ་ཙམ་མོ། །

སོགས་པ་སྟེ། བརྒྱད་ཆ་ཞེས་པ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་ཁྲུ་གང་གི་དབང་དུ་བྱས་ན་སོར་གསུམ་མོ། །བཞེངས་སུ་གསོལ་ཞེས་པ་ནི་རྡུལ་ཚོན་དགྱེ་བ་ཡང་དག་པར་བྲིས་ནས་སོ། ཁྲུམས་ཆེན་ཞེས་བྱ་བ་ལ། ཆེན་པོ་ཡང་དེ་ཡིན་ལ། ཁྲུམས་ཀྱང་ཡིན་པས་ཁྲུམས་ཆེན་ཏེ། དེ་ཡང་ཆེན་པོ་ནི་ལྷའི་གཙོ་བོར་བཞུགས་པའི་གནས་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། ནང་གི་རིམ་པ་ཞེས་པའི་ཐ་ཚིག་གོ །ཡིད་དུ་འོང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རི་མོ་ལྔའི་ས་དང་འབྲེལ་བ་ལ་ནི། ཀང་པ་གཅིག་གིས་མ་ཚོགས་པའི་མཐེབ་གང་དང་། ཚོན་གྱི་ས་དང་འབྲེལ་བ་ལ་ནི་མཐེ་བོ་ཕྱེད་གཉིས་དང་། རྡོ་རྗེ་ཕྲེང་བ་དང་འབྲེལ་བ་ནི་ཀང་པ་གཅིག་གིས་མ་ཚོགས་པའི་མཐེབ་གང་ངོ་། །དེ་བཞིན་དུ་ངོས་བཞི་ཆར་ལ་ཡང་མཐེ་བོ་གསུམ་གསུམ་[2] དོར་བས་མཐེ་བོ་བཅོ་བརྒྱད་པོ་དེ་ལ་ལེགས་པར་སྦྱོར་བ་ཞེས་བྱ་སྟེ། ས་གཞི་དེ་ཉིད་ལ་སྣ་ཚོགས་པའི་ཀ་བ་ཞེང་དུ་ཀང་བ་གཅིག་གིས་མ་ཚོགས་པའི་[3] མཐེབ་གང་བ་བྲིས་པ་ལེ་ཚེ་དགའི་བདག་ཉིད་དུ་བྱས་པའོ། ༥ །

སྒོ་ཁྲུད་ཅེས་པ་ནི་སྒོ་འི་ཚོན་སྣ་ལྔའོ། །སྒོ་ཙམ་ཞེས་པ་ནི་ཚུར་[4] སོར་གསུམ་མོ། །དེ་ཙམ་ཞེས་པ་ནི་སྒོ་ཙམ་སྟེ། མཐེ་བོ་[5] གསུམ་གྱི་

---

༡ ཞེ་ ◦ བྱ། ལྷ་ ◦ ཕྲིས། ༢ རྒྱ་དཔེར་ ◦ མཐེ་བོ་གསུམ་དོར་བས། ༣ ཞེ་ ◦ སྣ་ ◦ པའི་མི་འདུག ༤ སྣ་ ◦ ཞེ་ ◦ མཚར། ༥ སྣ་ ◦ མཐེ་བོང་།

རོ་རྗེ་ལྕམ་མོ་ལྡན་པ་ཡིས། །
གླུ་དང་རོལ་མོ་གར་ཡང་དགོད། ༤ །
མཆོད་སྣམ་སྣ་ཡི་ཕྱེད་[1] ཉིད་དེ། །
འགྲམ་དང་ངོས་ཀྱང་དེ་ཙམ་མོ། །
དོ་ཤལ་སེ་མོ་[2] དོ་དང་ནི། །

ཚད་དོ། །ལྷའི་སྣམ་བུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་རྟུལ་ཚོན་གྱི་སྣམ་བུ་ལ་ལར་གྲིས་དགོད་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེའི་དོན་དུ་འདིར་ནི་ཐོད་པ་རྣམས་སུ་གསུངས་ཏེ། བླ་རྣམས་སུ་སོར་མོ་གསུམ་གྱི་ཚད་ཙམ་མོ། །སྣོ་འི་ངོས་གཉིས་སུ་ཡང་བྲམ་པ་གཉིས་ཏེ། ཐམས་ཅད་[3] དཀར་པོ་དང་ལྡན་པའོ[5] ། །ཡང་ལྷའི་སྣམ་བུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་མཆོད་པའི་སྣམ་བུར་བྲི་བའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། རོ་རྗེ་ལྕམ་མོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ། ༤ །

ཁྲམས་དེའི་ཚད་ཇི་ཙམ་ཞེ་ན། གསུངས་པ། མཆོད་སྣམ་[6] ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ཕྱེད་ཀྱི་ཞེས་པ་ནི་མཐེ་བོ་ཕྱེད་དང་གཉིས་སོ། །འགྲམ་ཞེས་པ་ནི་སྒོ་ཁྱུད་ཀྱི་སྟེང་དུ་གང་ཚོན་སྣ་ལྔའི་ངོས་དེ་ཉིད་འགྲམ་མོ། །དེའི་སྟེང་དུ་གང་ཚོན་སྣ་ལྔ་དང་ཉེ་བ་དེ་ནི་ལོགས་སོ། །དེ་ཙམ་མོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་དག་གཉི་ག་ལ་ཡང་མཐེ་བོ་ཕྱེད་དང་གཉིས་ཀྱི་ཚད་ཙམ་མོ། །ལྷའི་སྣམ་བུ་ལས་ཕྱི་རོལ་དུ་མཐེབ་གང་པའི་ཀང་པའི་[7] ཚད་ཀྱི་རིན་ཆེན་སྣམ་བུར་ངོར་བར། གང་དྲ་བ་དང་དྲ་བ་ཕྱེད་པའི་སྣམ་བུ་དེ་ཉིད་མཐེ་བོ་ཕྱེད་དང་གཉིས་ཀྱི་ཚད་དོ་ཞེས་

༡ ལྷ་༌ ཕྱེད། ༢ ལྷ་༌ སེན་མོ། ༣ རྣ་༌ ཐམས་ཅད་དུ། ༤ རྒྱ་དཔེར་༌ ཚིག་རྐང་འདི་མི་འདུག ༥ འདིའི་ཐར་རྒྱ་དཔེར་ནརྟཱ་སྐྱེ་གར་མཁན་མ་ཞེས་ཀྱང་འདུག ༦ རྣ་༌ རྣམས། ༧ རྒྱ་དཔེར་༌ (ཧཱ་སྟ་དམ་ཏྲ་) རྐང་པ་གསུམ་གྱི་ཚད།

ཉི་མ་ཟླ་བ་མེ་ཏོག་ཕྲེང་། །
དེ་ལ་གོས་དང་འཕན་དག་གོ །
རྩ་བས་ཡི་ཐིག་བྱབ་དུ། །
ཚོན་རྩེའི་[1] སྣམ་བུ་དེ་ཡི་ཕྱེད། ༦ །

དེ་ལ་སྙིང་པོ་ཆེན་པོ་འདྲིས།

བདག་ཉིད་འཁོར་ལོ་རྣམ་པར་དགོད། །
དེར་ནི་རང་གི་ཕྱག་རྒྱའང་བསྟེན། །

བརྗོད་པ་ནི། ཟླ་བ་དང་[2] ཟླ་བ་ཕྱེད་པ་ལ་སོགས་པ་ཞེས་ཏེ། སྣམ་བུ་དེའི་ཚད་དུ་རྫོགས་པར་བྱ་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །དེའི་ཕྱེད་ཅེས་པ་ནི་སྣོའི་ཕྱེད་ཅེས་ཏེ། མཐེ་བོ་ཕྱེད་དང་གཉིས་[3] སོ། །རྩ་བའི་ཐིག་ཅེས་པ་ནི་ནང་གི་རིམ་པའི་རྡོ་རྗེ་ར་བའི་ཕྱི་རོལ་དང་། རི་མོ་ལས་ཀྱང་ཕྱི་རོལ་ལོ། ༦ །

རི་མོ་འི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་གཞུག་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། དེ་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། སྙིང་པོ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་དང་འབྲེལ་བའི་ཕྱིར། བཅུད་དུ་གྱུར་པའི་ཕྱིར་ན་ཆེན་པོ་ཡིན་ལ་སྙིང་པོ་ཡང་དེ་ཡིན་པས་སྙིང་པོ་ཆེན་པོའོ། །རྣམ་པར་དགོད་[4] ཅེས་པ་ནི་ནམ་མཁའི་ཕྱོགས་ལས་བཀུག་སྟེ་གནས་པར་བྱའོ[5] ། །བདག་ཉིད་འཁོར་ལོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡུལ་ཚོན་གྱི་འཁོར་ལོ་དང་མཉམ་པའི་ཡི·····

---

༡ སྡ་ ༠ སྟེའི། ༢ སྡ་ ༠ ཟླ་བ་ཟླ་བ་པ་ལ་སོགས་པ། ༣ རྒྱ་དཔེ་ར་ ༠ (ཏིས་ཀྱུ་ཏཱཀྨྱ་ཛེན) ཀྱང་བའི་མཐེ་བོ་གསུམ། ༤ རྒྱ་དཔེ་ར་ ༠ (ཁྱེ་སེ་དྲི) ནམ་མཁར་དགོད། ༥ སྡ་ ༠ བྱ་བའོ། །

དམ་ཚིག་ཡི་གེ་[1]གཞུག་པ་སྟེ། །
དེ་ལྟར་དཀྱིལ་འཁོར་བསྒྲུབ་པར་བྱ། ༡༠ །

ཤེས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་[2]ཚིག་གོ །རང་གི་ཕྱག་རྒྱ་ནི་རང་གི་ཤེས་རབ་སྟེ། གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པས་ལྷག་མའོ། །བསྟེན་ཞེས་པ་ནི་དབང་པོ་གཉིས་སྙོམ་པར་འཇུག་པར་བྱེད་པའོ། །དམ་ཚིག་གི་ཡི་གེ་ཞེས་པ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་པས་སོ། །དཀྱིལ་འཁོར་ཞེས་པ་ནི་རྡུལ་ཚོན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བཀུག་ནས་གཅིག་ཏུ་བྱས་པའོ། ། །དེའི་རབ་ཏུ་བསྒྲུབ་པ་ནི་བསང་གཏོར་བྱ་བའོ། །

གང་གི་ཚེ་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་སོགས་པ་རབ་ཏུ་གནས་པ་ལ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་མངོན་དུ་བསྐྱེད་པར་མི་ནུས་པ་དེས་ན་བསྒོམས་པས་ཀྱང་བྱ་བའོ། །དེ་བཞིན་དུ་བུམ་པ་བཙྭ་བྱ་བ་ནི་ལྟོ་བ་ཆེ་བ། མཆུ་འཕྱང་ཞིང་མགྲིན་པ་རིང་བ། རྡོ་རྒྱུས་ཀྱིས་དཀར་པོར་བྱས་པ་དབུས་ཀྱི་བུམ་པའི་ངོས་ལ་སྣ་ཚོགས་པདྨ་དང་། ཉི་མ་ལ་གནས་པའི་རྡོ་རྗེ་རྩེ་ལྔ་པའོ། །ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་བུམ་པའི་ངོས་ལ་སྣ་ཚོགས་པདྨ་དང་། ཟླ་བ་ལ་གནས་པའི་འཁོར་ལོ་རྩིབས་བརྒྱད་པའོ། །དེ་བཞིན་དུ་ལྷོ་ཕྱོགས་ལ་སོགས་པ་གཞན་གསུམ་པ་ལ་ཡང་སྣ་ཚོགས་པདྨ་དང་། ཉི་མ་ལ་གནས་པའི་རིན་པོ་ཆེ་དང་པདྨ་དང་རལ་གྲི་རྣམས་བྲི་བར་བྱའོ། །མེའི་མཚམས་སུ་ཡང་སྣ་ཚོགས་པདྨ་དང་། ཟླ་བ་ལ་གནས་པའི་སྤྱན་གཉིས་སོ། །བདེན་བྲལ་ལ་སོགས་པ་གསུམ་པོ་རྣམས་སུ་ཡང་སྣ་ཚོགས་པདྨ་དང་། ཟླ་བ

༡ རྒྱ་དཔེ་དང་བོད་འགྲེལ་ལྟར་བཞག་ཡོད། ལྷ་. སྡེ་. ཡི་གེས། ༢ སྣ་. པེ་. ཐ་མི་འདུག

ལ་གནས་པའི་རྡོ་རྗེ་དང་། པདྨ་དམར་པོ་དང་། གསེར་གྱི་ཨུཏྤལ་རྣམས་ཀྱིས་
མཚན་པའོ། །ལས་ཐམས་ཅད་པ་ལ་སྣ་ཚོགས་པདྨ་དང་། ཉི་མ་ལ་གནས་
པའི་བདུད་རྩི་འཁྱིལ་པའི་མཚན་མ་སྟེ་རྡོ་རྗེ་རྩེ་ལྔ་པ་བྲི་ངར་དུའོ། །ཐུམ་པ་
དེ་རྣམས་ཀྱང་། འཛམབུ་དང་། ཚུད་དང་། བཛྲཤུར་དང་། མནྡཱ་ཀར་
དང་༔ ཛཡནྟིའི་[1]ཤིང་རྣམས་ཀྱི་ལོ་མས་ཁ་བརྒྱན་པའོ། །རྡོ་རྗེ་[2]སྐེ་ཅན་
ལ༔ གསེར་དང་། དངུལ་དང་། ཟངས་དང་། ཤུ་མེན་དང་། བྲི་ཧ་སྤེ་རིན་
པོ་ཆེ་ལྔ་དང་ལྡན་པའོ། །སོ་བ་དང་། མ་ཤ་དང་། ནས་དང་། གྲོ་དང་།
ཏིལ་རྣམས་ཀྱང་ནང་དུའོ། །ཨཔརཙིད་དཀར་པོ་དང་། བྲི་ཧཏི་དང་། ཀཎྜ
ཀ་རི་དང་། སཧདེབ་དང་། བི་ཤ་[3]དེབ་རྣམས་ཏེ། སྨན་ལྔ་དང་ལྡན་པའོ། །
དེ་ནས་དབུས་ཀྱི་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་བུམ་པ་ལ་མི་རྟོག་གི་ཕྲེང་བ་གདགས་པར་
བྱའོ༔ །བུམ་པ་བརྒྱད་པོ་གཞན་རྣམས་ལ་[4] ཡང་དེ་ཉིད་ཀྱི་མི་རྟོག་གི་ཕྲེང་བ་
དང་སྤྲིལ་ཞིང་གདགས་པར་བྱའོ། །རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་བུམ་པའི་ཁ་རུ་རྡོ་རྗེ་
བཞག་སྟེ། རབ་ཏུ་གནས་པའི་[5] ཆའམ། དེའི་རིགས་ཀྱིས་སྔགས་བརྒྱ་རྩ་
བརྒྱད་བཟླ་བར་བྱའོ། །ཤར་ལ་སོགས་པའི་བུམ་པ་རྣམས་ལ་ནི་ཨོཾ་དང་། ཨཿ
དང་པོར་བྱིན་པ[6]། སྔ་ཡིག་ནི་ཐ་མར་ཏེ། པ་ཏྲ[7] ཨོཾ[8] ཧྲཱུཾ[9] ཁཾ་གི་སྔགས་
བཞི་པོ་རིམ་པ་བཞིན་དུ་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་བཟླ་བར་བྱའོ། །མེ་ལ་སོགས་པའི་བུམ་
པ་རྣམས་ལ་ཡང་རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ། [10]ལཾ་མཾ་པཾ་ཏཾ་ཞེས་པའི་སྔགས་

---

༡ སྣར་° པེ་° ཙོན་ཨནྟྲཱི། ༢ རྒྱ་དཔེ་ར་° (ཕྲཱུཾ) ཀོས། ༣ སྡེ་° པེཀ
༤ སྣར་° པེ་° ལ་མི་འདུག ༥ པེ་° གཞག་པའི། ༦ སྣར་° ལ། ༧ རྒྱ་དཔེ་ར་° ཕྱུྃ། ༨ སྣར་° པེ་° ཨོཾ།
༩ རྒྱ་དཔེ་ར་° ཛཿ། ༡༠ རྒྱ་དཔེ་ར་° ལཿ མཿ པཾཿ ཏཿ།

བཞི་པོ་སྦྱར་བཞིན་བཟླ་བར་བྱའོ། །བདུད་རྩི་འཁྱིལ་བའི་ཁྲུམ་པ་ལ་ཡང་། ཨོཾ་ཀྵུཾ་སྭཱ་ཧཱ་ཞེས་པའི་སྔགས་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་བཟླས་ཏེ། བྱང་ཕྱོགས་སུ་གཞག་པར་བྱའོ། ། །ཐམས་ཅད་ཀྱང་གཡས་ཕྱོགས་ནས་བསྐོར་ཏེ་གཞག་པར་བྱའོ། ། དགོངས་མོ་འི་དུས་སུ་སོང་བ་དང་ཞག་དེའི་ལྷག་མ་དང་། དུས་བཟང་པོ་ལ་རབ་ཏུ་གནས་པ་དང་། རྒྱལ་ཆེན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་དང་མཐུན་པའི་ལྷ་རྣམས་དང་རང་གི་[1]སྙིང་གའི་ས་བོན་གྱི་འོད་ཟེར་གྱིས་བཀུག་སྟེ། འདི་རིམ་པ་བཞིན་དུ་[2]མཆོད་ཡོན་ལ་སོགས་པ་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །མཆོད་ཡོན་གྱི་རིམ་པ་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ།

གསེར་དང་དངུལ་དང་ཟ་ཕྱིས་དུང་། །
ཛོ་དང་འཛིམ་པ་ཟངས་ཀྱི་སྣོད། །
འདི་དག་མཆོད་ཡོན་སྣོད་ཡིན་ཏེ། །
མ་འགྱོར་ཤིང་ལོ་སྣོད་ཀྱིས་བྱ། །

མཆོད་ཡོན་གྱི་སྣོད་བསྟན་པའོ། །

དྲི་ཞིམ་ཆུ་དང་འོ་མ་མངར། །
ཆུ་གཙང་མེ་ཏོག་དཀར་པོ་རྣམས། །
ཇི་ལྟར་རུང་བའི་[3]སྣོད་ནང་བཞག །
སྤྲོས་ཀྱིས་བདུག་ཅིང་མངོན་པར་བསྔགས། །

དེ་དག་ནི་མཆོད་ཡོན་བསྒྲུབ་པའི་ཆོ་གའོ། །

ཞི་དང་རྒྱས་སོགས་སྒྲུབ་པ་ལས། །

---

༡ ཀྱི་དཔེ་ར་° (བེ་ཀ) ཐུ་ཚོགས། ༢ ཀྱི་དཔེ་ར་° འདི་རིམ་པ་བཞིན་དུ་ཞེས་པ་མི་འདུག
༣ ཐུ་° པེ་° སྐྱོད་པའི།

ལས་དང་ཇེས་སུ་མཐུན་པ་ཏུ། །
དཀར་པོ་སེར་པོ་དམར་པོ་ལྗང་། །
དྲི་དང་རྩ་སོགས་དེ་བཞིན་སྦྱར། །

མཚོད་ཡོན་གྱི་ཚོ་གའི་དབྱེ་བའོ། །

མེ་ཏོག་སྤོས་དང་མར་མེ་དང་། །
དྲི་ཡི་དྭང་སོགས་གཡས་སུ་གཞག །
གཡོན་དུ་སྔགས་ཀྱི་མཆོད་ཡོན་སྔོད། །
སྔོད་རྣམས་མདུན་དུ་གཞག་པར་བྱ། །

མཆོད་ཡོན་གྱི་སྔོད་དགོད་པའོ། །

ཡི་གེ་གསུམ་མམ་སངས་རྒྱས་ལྔའི། །
སྔགས་ནི་རྒྱུད་ལས་ཅི་གསུངས་པ། །
མཆོད་ཡོན་ལ་སོགས་[1] སྔགས་སུ་བྱ། །
ཇི་ལྟར་རྒྱུད་ཀྱི་རྗེས་འབྲངས་ལ། །
ཞི་བའི་མཐའ་ཏུ་བཤད[2]། །
རྒྱས་པ་བཞི་ཤའི་[3] མཐའ། །
བསད་[4] པ་ཀྲུཾ་ཕཊ་མཐའ་ཡིས་སོ། །
དགུག་དང་དབང་ལ་ཛ་དང་ཧྲཱིཿ། །

མཆོད་ཡོན་མངོན་པར་བསྔགས་པའོ། །

དང་པོར་དྲི་ཞིམ་རྩ་དབུལ་བྱ། །
སྔང་དང་འོ་མ་གཉིས་པོ་འོ། །

---

༡ རྒྱ་དཔེར་། ༠ སོགས་མི་འདུག ༢ སྡེ་། ༠ སྔགས། ༣ སྡེ་། ༠ གེ་། ༠ བརྒྱགསཱ་ཧཱ། ༤ སྡེ་། ༠ གསད།

གསུམ་པ་རྩ་ནི་དག་པའི་རྒྱ། །
བཞི་པ་མེ་ཏོག་དང་ལྡན་པའོ། །
ལྔ་ཞིམ་རྩ་ནི་དྲུང་ཆོས་ནས། །
ཞབས་བསིལ་དུ་ནི་དབུལ་བར་བྱ། །

ཨོཾ་ནཱི་[1]རཱིཥྚུ་ཁཾ་ཥྚུ་[2]པ་དཱུ།

འོ་མ་སྦྲང་ནི་ཞལ་དུ་སྟེ། །
ཀུ་ཤའི་རྩན་པོས་བསང་གཏོར་ནས། །
ཡང་ནི་རྒྱ་གཙང་འབབ་ཞིག་ལ། །
མཆོད་ཡོན་སྤྱགས་ནི་བཟླས་པ་ཉིད[3]། །
ཨོཾ་སཏྲསཾ་ཤོཧྣ་ནི་ཥྚུ་ཕཊ། །
ཞབས་[4] བསིལ་དང་ནི་འཁོར་འབྱུང་ངོ་། །
མཐེ་བོ་མཛུབ་མོ་མེ་ཏོག་བླང་། །
མཐེ་བོ་མཐེའུ་ཆུང་དཀྲོལ་བྱ་སྟེ། །
མེ་ཏོག་ལྡན་པས་མཆོད་པར་བྱ[5]། །
ཞབས་བསིལ་བཟེད་ཞལ་ཆོལ་[6]བཟངས་སུ།།
ཉི་རེག་དེ་བཞིན་ལྷུགས་སྟོད་དུ། །
ཛམ་གཞན་མན་ཧེ་[7]སྟེང་གནས་པའི། །
གསེར་ལ་སོགས་པའི་སྟོད་དུ་དབུལ། །

---

༡ སྣ་° སེ་° དེ། ཅོ་དགེ་ར་° ནཱི། ༢ ཅོ་དགེ་ར་° ཀཾ། ༣ ཅོ་དགེ་ར་° བཟླས་པ་ཉིད་མི་འདུག
༤ ཅོ་དགེ་ར་° ཞག། ༥ ཅོ་དགེ་ར་° ཨོཾ་ནཱི་ནས་མཆོད་པར་བྱ། བར་ཚིག་ལྷག་མ་སྤྱ་འདུག
༦ སྣ་° པེ་° ཆོས། ༧ སྣ་° སེ་° མན་ངག་འདི།

དེའི་ཕྱི་ནས་རྡུལ་ཚོན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་དང་མཐུན་པའི་ལྷའི་འཁོར་ལོ་རྣམས། ཛཿཧཱུྃབཾཧོཿཞེས་པ་འདས་དགུག་པ་དང་། གཞུག་པ་དང་། བཅིང་བ་དང་། དབང་དུ་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པ་དང་། ཡི་གེ་གསུམ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པ་དང་། དབང་བསྐུར་ཏེ་[1]དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཕྱག་རྒྱ་ཡང་བྱ་སྟེ། མི་ལོང་དུ་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་གཟུགས་བརྙན་སྣང་བ་དང་། དང་པོར་བའི་[2]རྣམ་པ་ལྷས་བཀྲུ་བར་བྱ་སྟེ། ཨོཾསརྦཏཐཱགཏཀཱཡབིཤོདྷནི་ཞེས་པའི་སྔགས་ཀྱིས་སོ། །དེ་བཞིན་དུ་སྦླཱུྃ་[3]ཨཾ་[4] ཛྲྃ་[5]ཁཾཀྵུ་ཞེས་པའི་སྔགས་ཀྱིས་[6]ཧྲཱི་ཞེས་པའི་མར་ཁྲས་བྱུག་པར་བྱའོ་[7]། །སྔགས་འདི་ཉིད་ཤུན་ལྤགས་ལྤ་ལེགས་པར་བདགས་པས་ཀྱང་བྱུག་པར་[8]བྱའོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཨོཾསརྦབུདྡྷཌཱཀྐིནཱིཀབཛྲསྭབྷཱཝཨཏྨཀོཧཾ་ཞེས་པ་འདས་ཧྲཱི་ཞེས་པོ་[9]བྱུག་སྟེ་བཀྲུ་བར་བྱའོ༎ ༎དེ་ནས།

གཙང་ཞིང་གཙང་མར་སྦྱར་བ་ཡི། །
ལྷ་རྫས་བཟང་པོ་འི་མེ་ཏོག་འདི། །
བདག་ནི་གུས་པར་འབུལ་ལགས་ན། །
བཞེས་ཏེ་བདག་ལ་བཀའ་དྲིན་སྩོལ། །

མེ་ཏོག་དབུལ་བའོ། །

ནགས་ཚལ་བཙུད་ནི་ཡིད་དུ་འོང་། །
དྲི་ཡི་རྒྱལ་པོ་འི་དྲི་མཆོག་འདི། །

---

༡ མི་° བ་དང་། ༢ སྣ་° བེ་° བའི་མི་འདུག ༣ རྒྱ་དཔེར་° བཾ། ༤ སྣ་° པེ་° ཨཾ་མི་འདུག ༥ རྒྱ་དཔེར་° ཛྲཾ། ༦ རྒྱ་དཔེར་° སྔགས་ཀྱིས་ཞེས་མི་འདུག ༧ རྒྱ་དཔེར་° (སྦྲུམ) བཞག་པར་བྱའོ། ། ༨ རྒྱ་དཔེར་° (ཀོཎྜཾ) དག་པར་བྱའོ། ། ༩ སྣེ་° པོས།

བདག་ནི་གུས་པས་འབྱུལ་ལགས་ན། །
བཞེས་དེ་བདག་ལ་བཀའ་དྲིན་སྩོལ། །

སྤོས་དབྱུལ་བའོ། །

གདོན་རྣམས་འཇོམས་ཤིང་བཀྲ་ཤིས་ལ། །
དགེ་ཞིང་སྨུན་པ་རྣམ་སེལ་བ། །
བདག་ནི་གུས་པས་[1]འབྱུལ་ལགས་ན། །
བཞེས་དེ་བདག་ལ་བཀའ་དྲིན་སྩོལ། །

མར་མེ་དབྱུལ་བའོ། །

ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་དང་སྣང་ཞིང་དག །
ཤངས་ལ་ཚིམ་བྱེད་དྲི་འདི་རྣམས། །
བདག་ནི་གུས་པས་འབྱུལ་ལགས་ན། །
བཞེས་དེ་བདག་ལ་བཀའ་དྲིན་སྩོལ། །

དྲི་དབྱུལ་བའོ[2]། །

བཤོས་གཙང་ཐམས་ཅད་ཡང་དག་ལྡན། །
བཟའ་དང་བཅའ་བར་ལྡན་བཅས་པ། །
ཁ་དོག་དྲི་དང་རོ་ལྡན་པ། །
དབུལ་གྱིས་སོ་སོར་བཞེས་སུ་གསོལ། །

བཤོས་དབུལ་བའོ[3]། །དེ་ལྟར་མཆོད་པ་རྣམ་པ་ལྔ་དབུལ་བར་བྱས་ལ།

ཇི་ལྟར་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་། །
དགའ་ལྡན་གནས་ན་ཡང་དག་བཞུགས། །

---

༡ སྣ་° པེ་• དད་པས། ༢ སྣ་• པེ་° ཚིག་རྐང་འདི་མི་འདུག ༣ སྣ་° ཅོ་ནེར་° ཚིག་རྐང་
འདི་མི་འདུག

ཀླུ་མོ་སྒྲུ་འཕྲུལ་ལྡུམས་སུ་གནས། །
དེ་བཞིན་འདུས་[1] བཞུགས་བརྟན་པར་མཛོད། །
མགོན་པོ་རྟག་ཏུ་འདིར་བཞུགས་པར། །
གྱུར་ནས་མེ་ཏོག་ལ་སོགས་འདི། །
བཞེས་ནས་བདག་ལ་བརྩེར་དགོངས་ཏེ། །
བྱང་ཆུབ་སེམས་ནི་འཕེལ་བར་མཛོད། །

དེའི་རྗེས་ལ་[2] བསྡུས་པའི་དུས་སུ། ཨོཾ་ཀི་ཊི་ཀི་ལི[3] ཧཱུྃ་ཛཿ སྭཱ་ཧཱ། ཞེས་པ་འདིས་རྟུལ་ཚོན་བསྡུ་བར་བྱས་ལ། སྣོད་གཙང་མར་རྟུལ་ཚོན་རྣམས་བླུགས་ཏེ།; ཐུགས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་ཆུ་ངོར་རབ་ཏུ་དོར་རོ། །འདི་ཉིད་ཀྱི་རིམ་པ་ཐམས་ཅད་ནི། བྲིས་སྐུ་རབ་ཏུ་གནས་པ་ལ་ཡང་སྟེ། གཤེགས་སུ་གསོལ་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །སློབ་མའི་བྱ་བ་ལ་ཡང་བུམ་པ་དང་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་བྱའོ། །རྒྱུད་འདིར་གསུངས་པའི་སློབ་མའི་ཆོ་ག་ནི་ཕྱོགས་གཅིག་ཙམ་དུ་བསྟན་པས་ན། དེ་ཙམ་གྱི་བྱ་བ་མ་ཡིན་ཏེ། ཐུན་མོང་དུ་གསུངས་པ་མདོར་བསྡུས་ཏེ་བརྗོད་པར་བྱའོ། །

དེ་ལ་བྲིས་སྐུ་ལ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམ་པ་ལྔ་དང་[4] ། རྣལ་འབྱོར་མ་བཞི་མཚན་མ་དང་བཅས་པའི་བུམ་པ་གཅིག་སྟེ། རིན་པོ་ཆེ་ལྔ། སྨན་ལྔ།; འབྲུ་ལྔ། སྙིང་པོ་ལྔ་དང་། དྲི་ཞིམ་པའི་ཆུས་གང་བའོ། །ཨོཾ་ཨཱཿབཱི་ཀྲྀཏཱནནཧཱུྃཕཊ་ཅེས་པའི་ཐུགས་ཀྱིས་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་བཟླས། ཤིང་པལ་ལྤགས་ཁ་བརྒྱན་ཞིང་མགུལ་པ་རས་ཀྱིས་དཀྲིས་པ། མེ་ཏོག་དང་། སྤོས་ལ་

[1] སྣ་༎ སེ་༎ འདིར། [2] སྣ་༎ སེ་༎ རྗེས་ལ་ཞེས་མི་འདུག [3] ཕྱི་དཔེར་༎ ཙི་ཀི་ཙི་ཀེ། [4] ཕྱ་༎ ཕྱི།

སོགས་པས་མཆོད་དེ་མདུན་དུ་གཞག་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་སློབ་མས་མཎྜལ་ཕུལ་ལ། མེ་ཏོག་གི་ཕྲེང་བ་རྣམས་བཟུང་སྟེ། བྱིས་མོ་གཡས་པའི་ལྷ་ང་ས་ལ་བཙུགས་ལ། སྔགས་ཀྱི་ཐེག་པའི་སྣོད་དུ་གྱུར་པས་གསོལ་བ་འདེབས་པའི་དོན་དུ།

སྔགས་ཀྱི་དངོས་གྲུབ་དོན་གཉེར་གང་། །
དཀྱིལ་འཁོར་འདོར་ནི་གཞུག་པར་བྱ། །
དེ་ལས་གཞན་པ་བསོད་ནམས་འདོད། །
གཞན་ཡང་འཇིག་རྟེན་ཕ་རོལ་གཉེར། །
འཇིག་རྟེན་ཕ་རོལ་ལ་དམིགས་ནས། །
དད་པ་[1] ཆེན་པོར་བྱེད་པ་ཡི། །
བློ་ལྡན་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་ནི་གཞུག །
འདི་ཡི་འབྲས་བུ་འདོད་མ་བྱ། །
འདི་ཡི་འབྲས་བུ་འདོད་གྱུར་ན། །
འཇིག་རྟེན་ཕ་རོལ་འབྱུང་བ་མིན། །
སྐྱེས་བུ་འཇིག་རྟེན་ཕ་རོལ་གཉེར། །
དཀའ་བ་མེད་པར་[2] འདི་འབྲས་འགྲུབ། །

ཅེས་རྣ་བར་བསྒྲག་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟ་བུའི་སློབ་མ་དེ་རང་ཉིད་ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་དུ་བྱས་པའི་ལུས་སྲུ་[3] བློས་བཏག་ལ། རང་གི་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ནས་ཕྱུང་ལ་རང་སྣང་བའི་[4] པདྨར་གནས་པ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཞུ་བས་བསྐུལ་ཏེ་བྱུང་

---

༡ སྡེ་° དང་པ། ༢ ཅོ་དཔེར་° (ཐ་ཀ་གཉིས) མང་པོ་ཞེས་འདུག ༣ སྣར་° བུ་མི་འདུག
༤ ཅོ་དཔེར་° (ཞི་དུ) རིག་མའི་ཞེས་ཀྱང་འདུག

ནས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཞར་ཕྱོགས་ཀྱི་སྐོར་ཙོག་ཙོག་པོར་འདུག་སྟེ། འཇུག་པའི་དོན་དུ་གསོལ་བ་གདབ་པ།

ཁྱོད་ནི་བདག་སྟོན་དཔའ་བོ་ཆེ། །
མཀྱཱ་དང་མཉམ་སྦྱོར་ལྡན། །
མགོན་པོ་ཆེན་པོ་བདག་འཚལ་ལོ། །
བྱང་ཆུབ་ཆེན་པོའི་ཚུལ་བསྟན་པ[1]། །
དམ་ཚིག་དེ་ཉིད་བདག་ལ་སྩོལ། །
བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱང་བདག་ལ་སྩོལ། །
སངས་རྒྱས་ཆོས་དང་དགེ་འདུན་དེ། །
སྐྱབས་གསུམ་དག་ཀྱང་བདག་ལ་སྩོལ། །
ཐར་པ་ཆེན་པོའི་གྲོང་ཁྱེར་དུ། །
མགོན་པོ་བདག་ནི་འཇུག་པར་འདོད། །

ཅེས་སློབ་མའི་གཙོ་བོ་གཅིག་ལ་བྱས་ལ།

བུ་ཆུར་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ། །
གསང་སྔགས་ཚུལ་གྱི་ཆོ་ག་ནི། །
ཁྱོད་ལ་[2]ཡང་དག་བསྟན་པར་བྱ། །
ཁྱོད་ནི་ཐེག་ཆེན་སྣོད་ཡིན་ནོ། །

ཞེས་བརྗོད་ལ།

དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་བདག་སྐྱབས་མཆི། །
སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་སོ་སོར་བཤགས། །

༡ ཅུ་དཔེར་° (ཅོ་ནེ) བརྟན་པ། ༢ སྣ་° ཞེ་° ཡི།

འགྲོ་བའི་དགེ་ལ་རྗེས་ཡི་རང་། །

སངས་རྒྱས་བྱང་ཆུབ་ཡིད་ཀྱིས་གཟུང་། །

ཞེས་བྱ་བས་གསུམ་ལ་སྐྱབས་སུ་འགྲོ་བའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་ལན་གསུམ་དུ་བརྗོད་པའི་སློབ་མ་དེ་རྣམས་ལ། ཨོཾ་ཨཱཿཝིགྷྣཱན་ཏ་ཀྲྀཏ་ཧཱུྃ་ཕཊ་ཅེས་བདུད་རྩི་འཁྱིལ་བའི་སྔགས་ཀྱིས་ཀུན་བསྲུང་བ་བྱས་ལ། དེ་རྣམས་ཀྱི་སྙིང་ག་དང་། མགྲིན་པ་དང་། མགོ་བོར་ཉི་མ་ལ་གནས་པའི་རྡོ་རྗེ་སྔོན་པོ་[1] དང་། ཟླ་བ་དམར་པོ་ལ་གནས་པའི་པདྨ་དམར་པོ་[2] དང་། ཟླ་བ་དཀར་པོ་ལ་གནས་པའི་[3] འཁོར་ལོ་དཀར་པོ་རྩིབས་བརྒྱད་པའི་ལྟེ་བ་རྣམས་ལ། རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་ཧཱུྃ་ཨཱཿཨོཾ་རྣམ་པར་བསམ་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་སློབ་དཔོན་གྱིས་ལག་པ་གཡས་པར་རྡོ་རྗེ་བཟུང་སྟེ། སློབ་མ་རྣམས་ཀྱི་སྙིང་ག་དང་། མགྲིན་པ་དང་། མཆོག་མར་[4] རེག་ཅིང་། ཧཱུྃ་ཨཱཿཨོཾ་ཞེས་བརྗོད་ཅིང་མེ་ཏོག་ནི་མགོ་བོར་རོ། །མདུན་དུ་ནི་སྤོས་སོ། །དེ་བཞིན་དུ་མར་མེ་དང་། བྱུག་པ་ནི་སྙིང་གར་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །དེ་དག་ནི་སློབ་མ་ལྷག་པར་གནས་པའོ། །

དེ་ནས་གདོར་མ་སྦྱིན་ཏེ། རང་གི་ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་སྔོན་དུ་སོང་བ་དང་ལྡན་པས་སོ། །རང་ཉིད་སློབ་མ་འཇུག་པའི་ཚོགས་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་འཇུག་པ་ནས་བརྩམས་ཏེ། རྗེས་སུ་གནང་བའི་དབང་བསྐུར་བའི་བར་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་བློས་བླངས་ཏེ། བདེན་པའི་དོན་དུ་གསོལ་བ་གདབ་པར་བྱའོ། །

---

༡ ཅོ་དཔེར་ ○ (ཁྲི་ཀ་) ནག་པོ། ༢ སྡེ་ ○ དམར་པོ་ཞེས་མི་འདུག་འདིར་ཅོ་དཔེ་དང་མཐུན་པར་བཞག་ཡོད། ༣ སྣར་ ○ པེ་ ○ ཟླ་བ་དཀར་པོ་ལ་གནས་པའི་ཞེས་པ་མི་འདུག ༤ ཅོ་དཔེར་ ○ (ཁེར་སྦབཛྲ་) མགོ་བོར་རྡོ་རྗེ་ཞེས་འདུག

ཆོས་རྣམས་གཟུགས་བརྙན་ལྟ་བུ་སྟེ། །
དག་ཅིང་གསལ་ལ་རྙོག་པ་མེད། །
གཟུང་བ་མེད་ཅིང་བརྗོད་དུ་མེད། །
རྒྱུ་དང་ལས་ལས་ཀུན་དུ་འབྱུང་། །
དེ་བཞིན་དེ་ཉིད་ལས་བྱུང་བ། །
བདེན་པ་དེ་ཡིས་དཀྱིལ་འཁོར་ནི། །
གཟུགས་བརྙན་དང་མཚུངས་སློབ་མ་ཡིས། །
སྡིག་མེད་གསལ་བར་མཐོང་བར་ཤོག །

དེ་ནས་ཡོལ་བའི་ཕྱི་རོལ་དུ་ཡོན་ཕུལ་བའི་སློབ་མ་རེ་རེ་ཞིང་ཡང་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱི་གཟུགས་སུ་དམིགས་ལ། ཨ་ཁ་བཱི་རཱཧཱུྃ་ཞེས་པའི་སྔགས་ཀྱིས་ལན་བདུན་མངོན་པར་བསྔགས་པའི་མེ་ཏོག་ལག་ཏུ་བྱིན་ནས་གདོང་རས་བཀབ་སྟེ་ཐུམ་པའི་རྒྱུས་བསངས་ལ་དྲི་བར་བྱའོ། ཁྱོད་སུ་ཡིན། ཅི་ལ་དགའ[2]། ངེས་སྨྲས་པ། སྐལ་བ་དང་ལྡན་པ་ནི་བདག་སྟེ། བདེ་བ་ཆེན་པོར་རོ། །དེ་ནས་དེའི་སྙིང་གར་རྡོ་རྗེ་གཞག་ལ། ཨོཾ་སརྦ་ཡོ་ག་ཙིཏྟོཏྤཱ་ད་ཡཱ[3]མི[4]། སུ་ར་ཏེ་སམ་ཡ་སྟྭཾ[4]། ཧོཿསིདྡྷྱ[5]་བཛྲ་ཡ་ཐཱ་སུ་ཁཾ། དེ་ནས་ཧཱུྃ་ཛཿ་ཞེས་པའི་སྔགས་འདོས[6]་བཀུག་སྟེ། ཡོལ་བའི་ནང་དུ་གཞུག་ཅིང་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་སྒོར་བཞག་པས་བརྗོད་པར་བྱ་བ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་མ་མཐོང་བ་རྣམས་ལ་སྨྲ་བར་བྱ་བ་མ་ཡིན་ཞིང་། དམ་ཚིག་ཉམས་པར་མ་བྱེད་ཅིག་ཅེས་པའོ། །

༡ རྒྱ་དཔེར་༠ ཨཱ། མེ་༠ ཨོཾ། ༢ རྒྱ་དཔེར་༠ (ཨཱདྲིབྲཱིཨཱདྲི) ཤིན་ཏུ་དཀའ། ༣ རྒྱ་དཔེར་༠ ཨུཏྤཱ། ༤ རྒྱ་དཔེར་༠ ཡཱམི། ༥ རྒྱ་དཔེར་༠ ཧོཿ སིདྡྷ། ༦ རྒྱ་དཔེར་༠ ཞེས་པ་འདྲེས།

དེ་ནས་[1]མགོ་བོར་རྡོ་རྗེ་བཞག་ལ། གལ་ཏེ་ཚུལ་འདི་སླས་པར་གྱུར་པ་ཡིན་ན[2]། དམ་ཚིག་གི་རྡོ་རྗེ་འདིས་མགོ་འགས་པར་བྱེད་དོ། །

དེ་ནས་རྡོ་རྗེ་མེ་ཏོག་དང་བཅས་པ་སྙིང་གར་གཞག་ལ་བརྗོད་པར་··· བྱ་སྟེ།

ཨོཾ་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་དེང་ཁྱོད་ཀྱི། །
སྙིང་ལ་ཡང་དག་ཞུགས་པ་སྟེ། །
གལ་ཏེ་ཚུལ་འདི་སླས་ན་ནི། །
དེ་མ་ཐག་ཏུ་དྲལ་ཏེ་གཤེགས། །

འདིས་མནའ་བསྐག་པར་བྱ་སྟེ། བདུད་རྩིའི་སྣོད་དུ་བདུད་རྩི་ལྔ་གཞག་ལ་ཡི་གེ་གསུམ་[3]གྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབ་སྟེ། ཨོཾབཛྲཨམྲིདཀྱུདཀཿ[4] ཞེས་པ་ལན་བདུན་དུ་བཟླས་ལ།

འདི་ནི་ཁྱོད་ཀྱི་དམྱལ་བའི་ཆུ། །
དམ་ཚིག་འདས་ན་སྲེག་པར་བྱེད། །
དམ་ཚིག་བསྲུངས་ན་དངོས་གྲུབ་ཀྱི། །
རྡོ་རྗེ་བདུད་རྩིའི་ཆུ་འདིས་འགྲུབ། །

ཅེས་བརྗོད་ལ་བླུད་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་འདི་སྐད་བརྗོད་པར་བྱ། དེང་ནས་བཙམས་ཏེ་ཁྱོད་ཀྱི་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་ང་ཡིན་པས་ངས་གང་ཅི་བསྒོས་པ་དེ······

---

༡ དེ་ནས་ཞེས་པ་རྒྱ་དཔེ་དང་མཐུན་པར་བཞག་ཡོད། ༢ སྣ་° ནོ། ༣ རྒྱ་དཔེར་° (ཨཿཧཱུཾཀཿར) ཡི་གེ་བརྒྱད། ༤ རྒྱ་དཔེར་° ཨམྲིཏཀཎཌ།

དག་ཐམས་ཅད་བྱ་དགོས་སོ། ཁྱོད་ཀྱིས་ང་ལ་ཡང་བརྙས་པར་[1]མ་བྱེད་ཅིག ཡ་ང་བ་མ་སྤངས་པར་དུས་བྱས་ནས་སེམས་ཅན་དམྱལ་བར་ལྟུང་བར་གྱུར་ཏུ··· རེ་ཞེས་དམ་ཚིག་གི་རྒྱ་བླུད་པར་བྱའོ། །

དེ་ནས་སློབ་མས་འདི་སྐད་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་རློབས་ལ་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་བདག་ལ་དབབ་ཏུ··· གསོལ་ཞེས་པའོ། །དེ་ནས་སློབ་མའི་སྙིང་གར་ལཾ་སེར་པོ་ལས་བྱུང་བའི་དབང་ཆེན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་གྲུ་བཞི་པ་རྡོ་རྗེས་[2]མཚན་པ་ལ་ཀླཱྀ་ཡིག་ནག་པོ་གནས···· པའོ། །མཆོག་མར་[3]ཆུའི་དཀྱིལ་འཁོར་བཾ་ཡིག་ལས་བྱུང་བ་དཀར་ཞིང་ཟླུམ་པ་བུམ་པས་[4] མཚན་པ་ཧཾ་ཡིག་དཀར་པོ་ཁ་ཐུར་དུ་བལྟས་པ་གནས་པའོ། །མགྲིན་པར་ཡཾ་ཡིག་ནག་པོ་ལས་བྱུང་བའི་རླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་གཞུའི་རྣམ་པ[5] བ་དན་གཡོ་བས་མཚན་པ་དམར་པོ་གནས་པའོ། །རྐང་པ་ནི་རླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱིས་བུས་པས་མེའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྲུ་གསུམ་འོད་ཟེར་འབར་བ་ལ་གནས་པའི་ཧྲཱི[6] ཡིག་འོད་ཟེར་དང་བཅས་པ་བསམས་ཏེ། བསྐྲིངས་པ་དང་བཅས་པས་དྲིལ་བུ་འཁྲིལ་ཞིང་ཨཱཝེཤཡསྟམྦྷཡརཾརཾརཾ[7] ཙལཡཙལཡ[8] ཧཱུྃ[9] ཧཨཱཧྲཱི[10]···· ཞེས་བརྗོད་པས་འབེབས་པར་བྱེད་དོ། །ཕེབས་པར་གྱུར་ནས་ལྕེ་ལ་ཨ་ཡིག་དམར་པོ་བསམས་ཏེ། སྣ་ལ་[11]སྣང་བ་མཐའ་ཡས་ཀྱི་གཟུགས་བསམ་པར་བྱའོ།།

---

1 སྡེ་。མ། 2 ཅོ་དཔེར་。(ཏྲིཤཱུ་ལབཛ) རྡོ་རྗེ་རྩེ་གསུམ་པས། 3 ཅོ་དཔེར་。(ཤིརསི) མགོ་བོར།
4 ཅོ་དཔེར་。དྲིལ་བུས། 5 སྡེ་。རྣམས་པར། 6 ཅོ་དཔེར་。ཧཱུཾ་ཡིག 7 ཅོ་དཔེར་。རཾ་བཞི་འདུག
8 ཅོ་དཔེར་。ཙུལཡཙུལཡ། 9 ཅོ་དཔེར་。ཧཱུཾ་ཕཊ། 10 ཅོ་དཔེར་。ཨཱཿཨེཿ།
11 ཅོ་དཔེར་。ཟླ་ལ་མི་འདུག

དེ་ནས་བུ་[1]སློས་ཤིག་ཅེས་པས་དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བ་སྨྲ་བར་འགྱུར་རོ། བརྗོད་པ་ཤེས་ནས་ཨོཾ་དི་ཊ྄ཛབཛྲ་ཞེས་པས་བརྟན་པར་བྱས་ལ། ཁྲོད་ཀྱི་མིག་གིས་རྡོ་རྗེ་ལྟར་མཐོང་[2]། ཞེས་དྲི་བར་བྱའོ། །དྲི་བར་བྱས་པ་དཀར་པོ་དང་། སེར་པོ་དང་། དམར་པོ་དང་། ནག་པོ་རྣམས་སྣང་ཞེས་དེས་སྨྲས་ན། ཞི་བ་དང་། རྒྱས་པ་དང་། དབང་དང་། མངོན་སྤྱོད་ཀྱི་དངོས་གྲུབ་རྣམས་ཀྱི་སྣོད་དུ་འགྱུར་རོ་ཞེས་བསྟན་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་བདེན་པའི་བྱིན་གྱི་རླབས་བྱ་སྟེ།

བདག་གིས་དཀྱིལ་འཁོར་འདི་ཙ་ན། །
སློབ་མ་ཡང་དག་གཞུག་པར་བགྱི། །
རྡོ་རྗེ་ལྟར་བསོད་ནམས་དེ་བཞིན་ཤོག །
ལྷ་ཡི་རིགས་ཀྱི་རིམ་པ་ནི[3]། །
དངོས་གྲུབ་འདི་ནི་གང་གྲུབ་པ། །
གང་གི་རིགས་ཀྱི་སྣོད་དུ་འགྱུར། །
གང་ལ་བསོད་ནམས་ཅི་ཡོད་པ། །
དཀྱིལ་འཁོར་འདིར་ནི་དེ་བཞིན་ཤོག །

དེ་ནས་མེ་ཏོག་གཅིག་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་དོར་བར་བྱ་སྟེ། སྲདིཙ྄ཚབཛྲཧོཿ། ཞེས་པ་འདིས་སོ། །དེ་ནས་མེ་ཏོག་དོར་བ་ལས། དམན་པ་དང་མཆོག་ལ་སོགས་པའི་དངོས་གྲུབ་མཚོན་པར་བྱ་སྟེ། དེ་ལ་གལ་ཏེ་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་དབུའམ། མཆོག་མའམ། སྤྱི་གཙུག་ཏུ་ལྷུང་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་

༡ བུ་ཞེས་པ་རྒྱ་དཔེ་དང་མཐུན་པར་བཞག་ཡོད། ༢ རྒྱ་དཔེར་༌(ཀྲུཔེཿཀ྄ེཀྲིཀོབཛྲཁ) ཁྲོ་བས་ཞེ་སྡང་བཅོད། ༣ ལྷ་༌ལེ་༌སྡེ་༌ རིག་པ་དག་འདྲེར་རིམ་པ་ནི་རྒྱ་དཔེ་དང་མཐུན་པར་བཞག་ཡོད།

པོའི་དངོས་གྲུབ་ཏུ་འགྱུར་རོ། །གལ་ཏེ་སྤྱན་ནས་ཞལ་དུ་ལྷུང་བ་དེའི་ཚེ་སྔགས་ཀྱི་དངོས་གྲུབ་ཏུ་འགྱུར་ལ། ཡན་ལག་མཆོག་ཏུ་ལྷུང་ན་མཆོག་དང་། ཡན་ལག་འབྲིང་པོ་ལ་ནི་འབྲིང་པོ་དང་། སྨད་ཀྱི་ཆ་ལ་ནི་ཐ་མ་འགྲུབ་པའོ། །སྐུ་ལས་རིང་དུ་ལྷུང་ན་ཐ་མ་འགྲུབ་[1]ལ། ཉེ་བར་གྱུར་ན་མྱུར་དུ་འགྲུབ་བོ། །ལྷ་རྣམས་ཀྱི་རང་རང་གི་གནས་ནི་ཡི་ཚེའི་[2] རེ་མོས་བཅད་པར་ཤེས་པར་བྱའོ། །

གང་གི་ཚེ་གཉིས་ཀྱི་[3]བར་དུ་ལྷུང་བར་གྱུར་པ་དེའི་ཚེ་མེ་ཏོག་གང་[4] ལ་ཉེ······བར་གྱུར་པ་དེའི་རིགས་སུ་འགྱུར་རོ། །དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཕྱི་རོལ་དུ་ལྷུང་ན་ནི་དམན་པའི་དངོས་གྲུབ་ཏུ་འགྱུར་རོ། །གལ་ཏེ་རི་མོ་ལ་[5] ལྷུང་བ་དེའི་ཚེ་ཡང་[6] དོར་བར་འགྱུར་རོ། །ལན་གསུམ་དུ་དོར་བས་དེའི་ཚེ་དེ་ཉིད་དུ་ལྷུང་ན་དངོས་གྲུབ་མེད་ལ། རྡོ་རྗེ་ཕྲེང་བའི་ཕྱི་རོལ་དུ་ལྷུང་ན་ནང་དུ་ལྷུང་བ་ཙམ་གྱིས་ཡང་དཀའ་བའོ། །དེ་དག་ནི་མེ་ཏོག་དོར་བའི་ཆོ་གའོ། །

དེ་ནས་མེ་ཏོག་བླངས་ཏེ། སློབ་མའི་མགོ་ལ་བཅིངས་ཏེ་ཕྲཊ྄་གྲིཧྞ་སྭ་[7] སིདྡྷིཾ་[8] མཉྭལ་ཞེས་བརྗོད་པས་སོ། །དེ་ནས་མིག་གཉིས་སུ་ཡི་གེ་ཨོཾ་བསམས་ལ།

ཨོཾ་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་དེང་ཁྱོད་ཀྱི། །
མིག་འབྱེད་པ་ནི་བརྩོན་པ་སྟེ། །
མིག་ནི་ཐམས་ཅད་འབྱེད་མཛད་པ། །
རྡོ་རྗེའི་མིག་ནི་བླ་ན་མེད། །

---

༡ རྒྱ་དཔེར་° (ཨབྷིཙཱར꞉) མངོན་སྤྱོད་དོ། ། ༢ སྣར་° ཅོ་° གནས་སུ་ནི་ལེ་ཚེས། ༣ སྣར་° ཀྱི་མི་འདུག ༤ སྡེ་° གར། ༥ སྣར་° པེ་° ལ་མི་འདུག ༦ སྡེ་° ཡང་མི་འདུག ༧ རྒྱ་དཔེར་° སྭཱ། ༨ རྒྱ་དཔེར་° བདྷ།

ཅེས་བརྗོད་ལ་གདོང་གཡོགས་དགྲོལ་བར་བྱའོ། །དེ་དག་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་གཞུག་པའི་ཆོ་གའོ། །ད་ནི་དབང་བསྐུར་བ་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ།

བྱང་ཆུབ་རྡོ་རྗེ་སངས་རྒྱས་ལ། །
མཆོད་ཆེན་[1]ཛི་ལྷར་སྐུལ་[2]བ་བཞིན། །
བདག་ཀྱང་བསྐྱལ་བའི་དོན་དུ་ནི། །
ནམ་མཁའ་རྡོ་རྗེ་དེང་བདག་སྐྱོལ། །

ཞེས་གསོལ་བ་འདེབས་པ་དང་ལྡན་པའི་སློབ་མ་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱི་གཟུགས་སུ་དམིགས་ལ།

རང་གི་རིག་མ་སྐྱེས་བུའི་རྒྱ། །
ཐུམ་པ་བརྒྱད་པོ་ཐམས་ཅད་དེ། །
རྡོ་རྗེ་ཐུགས་སུ་རབ་བསྒོམས་ནས། །
རྡོ་རྗེ་ཅན་གྱི་དབང་བསྐུར་བྱ། །

ཁ་ཚར་དང་བཅས་པ་ནས་ཆུ་བླུགས་ལ།

སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱིས་བྱིན་པ་ཡི། །
གསང་གསུམ་གནས་ལས་བྱུང་བ་ཡི། །
ཁམས་གསུམ་ཀུན་གྱིས་ཕྱག་མཛད་པ།།
རྡོ་རྗེའི་དབང་བསྐུར་ཆེན་པོ་འོ། །

བཛྲཨབྷིཥིཉྩ་ཞེས་བརྗོད་པས་ནི། སློབ་མ་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་བ་ལྟ་བུའི་དབང་བསྐུར་བར་བྱའོ། །དེ་དག་ནི་ཆུའི་དབང་བསྐུར་བའི་ཆོ་ག་སྟེ། མེ་ལོང་ལྟ་བུའི་ཡེ་ཤེས་སོ། །

---

༡ སྣ°. སེ°. ཧྲེན། ༢ སྣ°. སེ°. གསལ།

དེའི་རྗེས་ལ་གསེར་རམ། གོས་ལ་སོགས་པས་[1] བསྣུང་བའི་དབུ་རྒྱན་སློབ་མའི་མགོ་ལ་བཅིངས་ལ་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་གྱི་སྦྱོར་བ་ལས་ནས······མཁའི་ཕྱོགས་ན་བཞུགས་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་དབུ་རྒྱན་ལ····རིགས་ཀྱི་གཟུགས་སུ་གནས་པར་བལྟ་བར་བྱའོ། །དེ་དག་ནི་དབུ་རྒྱན་གྱི་དབང་བསྐུར་བ་སྟེ་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་སོ། །དེ་ནས་[2] རྡོ་རྗེ་ཆེན་པོ་རྩེ་ལྔ་པ་སློང་གར་རང་གི་ལག་པས་བཟུང་ལ་དབང་བསྐུར་རྡོ་རྗེ་རེ་མས་ཞེས་བརྗོད་དོ། །

སློབ་མ་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་བྱ། །
སངས་རྒྱས་རྡོ་རྗེ་དབང་བསྐུར་བྱ། །
[3]འདི་ནི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །
ཤིན་ཏུ་གསུབ་ཕྱིར་རྡོ་རྗེ་ཟུངས། །

ཞེས་བརྗོད་ཅིང་རྡོ་རྗེ་སློང་ག་དང་། མགྲིན་པ་དང་། མཆོག་མ་[4] རྣམས་སུ་རེག་པར་བྱས་ཏེ། ལག་པ་གཡས་པས་རྡོ་རྗེ་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །དེ་དག་ནི་རྡོ་རྗེའི་དབང་བསྐུར་བའི་ཆོ་ག་སྟེ། སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་སོ། །

དེ་ནས་དོན་ཡོད་གྲུབ་པའི་གཟུགས་སུ་དམིགས་ཤིང་ལག་པ་གཡོན་པའི་དྲིལ་བུ་བྱིན་ལ། རྡོ་རྗེ་དྲིལ་བུ་ལྡན་པ་དག་གིས་འཁྲུད་པའི་ཚུལ་དུ་བྱས་ལ༔ ཨོཾབཛྲཨདྷིཔཏི[5] ཏྭཾཨབྷིཥིཉྩཱམིཀཱད[6] ཞེས་བྱ་བ་ནི་དྲིལ་བུའི་དབང་བསྐུར་བའི་ཆོ་ག་སྟེ་བྱ་བ་གྲུབ་པའི་ཡེ་ཤེས་སོ། །

---

༡ སྣ་. པེ་. ལས། ༢ ཅོ་དཔེར་. རྡོ་རྗེ་ཆེན་པོ་ནས་བརྗོད་དོ་བར་ཚིགས་བཅད་དུ་འདུག
༣ ཅོ་དཔེར་. འདིའི་མཚམས་སུ་ (ཨཱུཾ་ རྦྷིཥིཉྩཧཱུཾ་མཱི) ནི་རིང་བྲོར་ནི་དབང་ལྡན་གྱུར། །ཞེས་ཀྱང་འདུག ༤ ཅོ་དཔེར་. (ཤེར་སུ) མགོ་བོ། ༥ ཅོ་དཔེར་. ཏེ༹ ཏྭཾ་མབྷིཥིཉྩཱམིབཛྲསྨཱཧཱ།
༦ ཅོ་དཔེར་. ཏཿ།

དེ་ནས་མི་བསྐྱོད་པར་བསམས་ལ། མིང་གི་དབང་བསྐུར་བ་ཡང་སྦྱིན་པར་བྱ་སྟེ། མགོ་བོར་རྡོ་རྗེ་དང་དྲིལ་བུ་ཕྱིན་ལ། ཨོཾ་བཛྲ་སཏྭ་ཧཱུྃ་[1] ཨ་བྷི་ཥིཉྩ་མི་བཛྲ་ཎ་མ་ཨ་ཤྲི་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ། ཀྱེ་དཔལ་གཉིས་སྨུག་རྡོ་རྗེ། ཀྱེ་དཔལ་འདོད་ཆགས་རྡོ་རྗེ། ཀྱེ་དཔལ་ཞེ་སྡང་རྡོ་རྗེ། ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་རིགས་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་མིང་གདགས་པར་བྱའོ་ཞེས་ང་ནི། མིང་གི་དབང་བསྐུར་བའི་ཆོ་ག་སྟེ། ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་པའི་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་སོ། །

དེ་ལྟར་དབང་བསྐུར་བ་རྣམ་པ་ལྔ་པོ་དེ་དག་ནི་རིག་པའི་དབང་བསྐུར་ཞེས་བརྗོད་དོ། །ཐམས་ཅད་ཀུང་སྦྱིན་ལ་སོགས་པའི་རིག་པའི་བྱ་བ་ལ་འཇུག་པས་ཞེས་པས་སོ། །དེའི་རྗེས་ལ།

རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་དབང་བསྐུར་བས། །
ཀྱེ་བདག་ལ་སྩོལ་ཅིག་སྙིང་རྗེའི་མཆོག །
རང་གཞན་དོན་གྱི་ནུས་པར་གྱུར། །
ཇི་ལྟར་བདག་ལ་དེང་སྩོལ་ཅིག །

ཅེས་གསོལ་བ་འདེབས་པའི་སློབ་མ་སྟེ། སེང་གེའི་སྟན་ལ་བཞག་སྟེ།། སྣ་ཚོགས་པདྨ་འདབ་མ་བརྒྱད་པའི་སྟེང་དུ་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་གཟུགས་སུ་དམིགས་ལ། ཧཱུྃ་ལས་བྱུང་བའི་རྡོ་རྗེ་ཕྱིན་[2] ལ།

ཐོག་མཐའ་མེད་པའི་སེམས་དཔའ་ནི། །
རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་དགའ་བ་ཆེ། །

---

[1] ཀུ་དགེ་ར་ ˳ དྲྭ་མ། [2] ཀུ་དགེ་ར་ ˳ (ཧཱུྃ་ དྲྭ) བསམས་ལ།

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཀུན་བདག་ཉིད། །
རྡོ་རྗེ་སེམས་བདག་བདག་པོའི་བདག[1] །

བཅོམ་ལྡན་འདས་དཔལ་མཆོག་དང་པོའི་སྐྱེས་བུའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱིས་གཞུང་བར་བྱའོ[2]། །དེའི་རྗེས་ལ་ཨཿཡིག་ལས་བྱུང་བའི་དྲིལ་བུ་ལ[3]།

འདི་ནི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །
ཤེས་རབ་དབྱིངས་ཅན་རྗེས་འགྲོར་བཤད། །
ཁྱོད་ཀྱིས་ཀྱང་ནི་རྟག་ཏུ་ཟུངས། །
བྱང་ཆུབ་མཆོག་ཏུ་རྒྱལ་བ་བཞེད། །

ཅེས་པ་འདིས་ལག་པ་གཡོན་པར་དྲིལ་བུ[4] སྦྱིན་པར་བྱ་ཞིང་།

སྲིད་པ་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་དག །
ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྲིད་བྲལ་བྱ། །
རང་བཞིན་དག་པའི་སེམས་དཔའ་མཆོག །
སྲིད་པ་ཡི་ནི་མཆོག་ཏུ་བརྗོད། །

ཅེས་བརྗོད་ལ། སློབ་མས་དྲིལ་བུ་དཀྲོལ་བར་བྱའོ། །དེའི་རྗེས་ལ།

ཡིད་ཀྱིས་གཟུགས་ནི་བརྟན་པའི་ཕྱིར། །
ཕྱག་རྒྱ་དམ་ཚིག་ཅེས་སུ་བརྗོད། །
གང་ཆེ་ཀུན་གྱི་གཟུགས་སུ་བརྟན། །
དེ་ནི་ཕྱག་རྒྱར་རབ་ཏུ་གྲགས། །

---

༡ ཅོ་དཔེར། (ཨཧྃ་ཧཱུྃ) རྣལ་འབྱོར་ཀུན་གྱི་བདག ༢ ཅོ་དཔེར། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཞེས་པ་ནས་གཞུང་བར་བྱའོ་བར་ཚིགས་བཅད་དུ་འདུག ༣ སྣ་། སེ་། དང་། ༤ ཅོ་དཔེར། དྲིལ་བུ་ཞེས་མི་འདུག

ཞེས་པ་འདིས་རང་ཉིད་ལྷའི་གཟུགས་ཀྱི་ནང་གི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོར་བྱིན་གྱིས་བརླབས་ནས་འཁྲུད་པར་བྱའོ། །སློབ་དཔོན་གྱིས་དེའི་ཚེ་རང་གི་སྙིང་གའི་ས་བོན་ལས་བྱུང་བའི་ལྷ་རྣམས་ཀྱི་ཚོགས་ནམ་མཁའ་ལ་གནས་པ་རྣམས་ཀྱིས་དབང་བསྐུར་བར་བསམ་པར་བྱ་སྟེ།

སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱིས་བྱིན་པ་ཡི། །
གསང་གསུམ་གནས་ནས་བྱུང་བ་ཡི། །
ཁམས་གསུམ་ཀུན་གྱིས་ཕྱག་བྱས་པ། །
རྡོ་རྗེ་དབང་བསྐུར་ཆེན་པོ་འོ། །

ཞེས་པས་དབང་བསྐུར་བའོ། །དེ་སྐད་དུ་ཡང་གསུངས་པ།

ཤེས་རབ་བཅུ་དྲུག་ལོན་པ་ལ། །
ལག་ཟླ་དག་གིས་ཡང་དག་འཁྲུད། །
རྡོ་རྗེ་དྲིལ་བུ་མཉམ་སྦྱོར་བས། །
སློབ་དཔོན་གྱི་ནི་དབང་དུ་འདོད། །ཅེས་པའོ། །

དེ་ནས་སློབ་མ་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱི་གཟུགས་སུ་དམིགས་པ་ལ་རྗེས་སུ་གནང་བ་སྦྱིན་པར་བྱ་སྟེ།

སེམས་ཅན་ཀུན་ལ་ཕན་པའི་ཕྱིར། །
འཇིག་རྟེན་ཀུན་ལ་ཐམས་ཅད་དུ། །
ཇི་ལྟར་སྣ་ཚོགས་འདུལ་འགྱུར་བ། །
ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་རབ་ཏུ་བསྐོར། །ཞེས་པའོ། །

ཆོས་ཀྱི་གནས་སུ་རིན་པོ་ཆེ་དང་[1]། རྡོ་རྗེ་དང་། པདྨ་དང་། རལ་གྲིའི་སྣ་བཙུག་པའི་རིམ་པ་ལས་ཚོགས་སུ་བཅད་པ་རྣམ་པ་ལྔ་ནི་རྗེས་སུ་གནང་བར་སྦྱིན་པའོ། །དེའི་རྗེས་ལ་མི་བསྐྱོད་པའི་གཟུགས་སུ་དམིགས་ལ།

[2]འདི་དེ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །
རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་ཕྱག་ན་གནས། །
ཁྱོད་ཀྱིས་ཀྱང་ནི་དག་ཏུ་བཟུངས། །
ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་བརྟུལ་ཞུགས་བརྟན། །

ཞེས་པ་འདིས་རྐྱ་ལས་བྱུང་བའི་རྡོ་རྗེ་སློབ་མའི་ལག་ཏུ་སྦྱིན་པར་བྱ། ཨོཾསརྦཏཐཱགཏ[3]སམཡབཛྲཏིཥྛཨེཥསྟྭཾདྷཱརཡཧཱུཾ། [4]ཊིཊིཊིཊིཀྵྲྀ་ཞེས་སློབ་མ་ལ་བརྗོད་པར་བྱས་ནས་རྡོ་རྗེའི་བརྟུལ་ཞུགས་སྣང་བར་བྱའོ། །ཞེས་པ་ནི་རྡོ་རྗེའི་བརྟུལ་ཞུགས་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །

དེ་ནས་བདག་ཉིད་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གཟུགས་སུ་བསམས་ཏེ། སློང་གར་གཡོན་པའི་ཁ་ཚུར་གྱིས་ཆོས་གོས་ཀྱི་གྲྭ[5]ནས་བཟུང་སྟེ། གཡས་པ་མཆོག་སྦྱིན་པའི་ཕྱག་རྒྱ་བཅས[6]ནས། སློབ་མ་གང་གི་རིགས་དེའི་གཟུགས་སུ་དམིགས་ནས་ལུང་བསྟན་པར་བྱ་སྟེ།

ཨོཾ་འདིར་ནི་ངས་ཁྱོད་ལུང་བསྟན་ཕྱིར། །
རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་དེ་བཞིན་གཤེགས། །
སྲིད་པའི་ངན་འགྲོ་རྣམས་ལས་བཏོན། །
སྲིད་པའི་མཆོག་ནི་འགྲུབ་པར་བྱེད[6]། །

---

༡ རྒྱ་དཔེར° རྡོ་རྗེ་དང་རིན་པོ་ཆེ་དང་། ༢ རྒྱ་དཔེར° འདིའི་མཚམས་སུ (བཛྲཪྻཾདད) རྡོ་རྗེ་བརྟུལ་ཞུགས་སྦྱིན་པར་བྱ། །ཞེས་ཀྱང་འདུག ༣ རྒྱ་དཔེར° གཏཝེཏྲཀྵབཛྲསམཡཏིཥྛ། ༤ རྒྱ་དཔེར° ཏྲྀ་ཞེས་ཀྱང་འདུག ༥ རྒྱ་དཔེར° (བདྷྭཝ) བཅིང་ནས། ༦ རྒྱ་དཔེར° (ཨནུཏྟརབཀཎྜཨེ) སྲིད་པའི་མཆོག་ནི་དག་པར་བྱེད།

ཀྱི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཆེ་གེ་མོ། ཁྲོད་ནི་དམ་ཚིག་བསྐྱབ་པའོ།། ཧྲཱུྃ་ཧྲཱུྃ་ཕཊ་ཞེས་ཞུང་བསྟན་ཏྲས་ལ། གང་འདི་ལྷ་བྲའི་ཆོས་འབྱུང་བའི་ཕྱག་རྒྱས་ལྗང་སྟོན་པར་བྱེད་པ་སྟེ། དེ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་དང་། དེ་ནི་འཁོར་གྱི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དང་བཅས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་རྣམས······ཀྱིས་མགྲིན་གཅིག་ཏུ་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་ལྗང་སྟོན་པར་བྱེད་དོ། །གང་འདི་ལྷ་བྲ་ཉིད་ནི་ཆོས་འབྱུང་བའི་ཕྱག་རྒྱ་སྟེ། བྱིན་གྱི་རླབས་ཀྱིས་སྟོབས་ཏེ། འདི་ནི་སྔགས་ཀྱི་སྟོབས་སོ། །ཞེས་དད་པར་བྱའོ་ཞེས་བརྗོད་དོ། །དེ་དག་གིས་ལྗང་བསྟན་པའོ། །

དེའི་རྗེས་ལ། མཏྭསམཡ ཧྲཱིཕཊ་ཅེས་བརྗོད་ཅིང་དབུགས་དབྱུང་བ་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །གསང་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་མཆོག་ཏུ་ནི། །ཞུགས་ཤིང་མཐོང་བ་དམ་པ་སྟེ།

ཐོག་པ་ཀུན་ལས་གྲོལ་བར་གནས། །
ཁྲོད་ནི་དེ་རིང་བཟང་པོར་གྱུར། །
ཐེག་པ་ཆེན་པོ་བདེ་ཆེན་འདིར། །
ཡང་ནི་འཆི་བ་ཡོད་མིན་ཏེ། །
སྲིད་པའི་མཆོག་ནི་འགྲུབ་པའི་ཕྱིར། །
སྲིད་པའི་སྡུག་བསྔལ་ལས་བརྒལ་བའོ། །
བྱང་ཆུབ་སེམས་ནི་སྲུང་མི་བྱ། །
རྡོ་རྗེ་ཞེས་པའི་ཕྱག་རྒྱ་སྟེ། །

---

༡ སྣེ་༠ དང་པོར། ༢ ཅོ་དཔེར་༠ (ཤེསྤྲ བདེཔ) སྟོབ་མར་བརྗོད་དོ། ། ༣ ཅོ་དཔེར་༠ ས་མ་ཡ་ཏྭཾ།
༤ སྣ་༠ ན་༠ འདོད། ༥ སྣ་༠ པེ་༠ ཚིག་ཁང་འདི་མི་འདུག

གང་ཞིག་བསྐྱེད་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། །
སངས་རྒྱས་ཉིད་དུ་ཐེ་ཚོམ་མེད། །
དམ་པའི་ཆོས་ནི་སྤང་མི་བྱ། །
ནམ་ཡང་འོར་བར་བྱ་བ་མིན། །
མི་ཤེས་པའམ་རྨོངས་པ་ལ། །
དེ་ནི་བསྟན་པར་མི་བྱའོ། །
རྡོ་རྗེ་དྲིལ་བུའི་ཕྱག་རྒྱ་ཡང་། །
ནམ་ཡང་སྤང་བར་མི་དྲུའ། །
སློབ་དཔོན་དག་ཀྱང་སྨད་མི་བྱ། །
དེ་ནི་སངས་རྒྱས་ཀུན་དང་མཉམ། །
རང་དག་[1]ཡོངས་སུ་སྤྱངས་ནས་སུ། །
དཀའ་ཐུབ་རྣམས་ཀྱིས་གདུང་མི་བྱ། །
ཇི་ལྟར་བདེ་བ་བདེ་བ་གཟུང་། །
འདི་ནི་མ་འོངས་རྫོགས་སངས་རྒྱས། །
དེ་རིང་སློབ་དཔོན་དཀྱིལ་འཁོར་གྱུར། །
ཕྱོགས་དང་རྒྱུད་རྣམས་འཛིན་པར་འགྱུར[2]། །
སངས་རྒྱས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དང་། །
ལྷ་རྣམས་ཀུན་གྱིས་མཐུན་པར་གསུངས། །
སེམས་ཅན་རྗེས་སུ་བརྩེ་དོན་དུ། །
ཁྱོད་ཀྱིས་དཀྱིལ་འཁོར་ཆོ་ག་བཞིན། །

---

༡ རྒྱ་དཔེར་ (ཨཱཏྨཱ) བདག ༢ སྣ་ པེ་ ཚིག་རྐང་འདི་མི་འདུག

ནན་དན་གྱིས་ནི་བྲི་བར་གྱིས། །
སློབ་པོ་རྣམས་ཀྱང་རྒྱུད་ལ་སྦྱོར། །

ཞེས་པ་ནི་དབུགས་འབྱུང་སྦྱིན་པའོ། །

རྗེས་སུ་གནང་བ་ལ་སོགས་པ་བཞི་པོ་འདི་རྣམས་ནི་དབང་བསྐུར་བ་རྣམ་པ་ལྔའི་རྗེས་ལའམ་སློབ་དཔོན་གྱི་དབང་བསྐུར་བའི་རྗེས་ལ་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །སློབ་དཔོན་གྱི་དབང་བསྐུར་བ་ཉིད་ནི་ཕྱིར་མི་ལྡོག་པའི་དབང་བསྐུར་བ་ཞེས་བརྗོད་དོ། །དབང་བསྐུར་བ་ལྔ་དང་། སློབ་དཔོན་གྱི་དབང་བསྐུར་བ་ལ་ནི་བུམ་པའི་དབང་བསྐུར་བ་ཞེས་བརྗོད་དེ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་བུམ་པའི་བྱ་བ་ལ་འཇུག་པས་སོ། །དབང་བསྐུར་བ་དྲུག་པོ་འདི་དག་ནི་རྒྱུད་དེ་ཀུན་དང་མི་འགལ་བའོ། །དེ་དག་ནི་སློབ་དཔོན་གྱི་དབང་བསྐུར་བ་སྟེ། རྡོ་རྗེའི་ལུས་སུ་རྣམ་པར་དག་པའོ། །

དེའི་རྗེས་ལ་ཡོལ་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་དབེན་པར་བྱས་པའི་ཕྱོགས་སུ་སློབ་མ་གསང་བའི་དབང་བསྐུར་བའི་དོན་དུ་སྐལ་བ་དང་ལྡན་པས་ཡུལ་ཏེ་ངེས་པར་འབྱུང་བའི་གནས་སྐབས་སུ་གསོལ་བ་གདབ་པར་བྱའོ[1]། །

བྱང་ཆུབ་རྡོ་རྗེ་སངས་རྒྱས་ལ། །
མཆོད་ཆེན་ཇི་ལྟར་ཕུལ་བ་བཞིན། །
བདག་ཀྱང་རབ་ཏུ་བསྐྱལ་སླད་དུ། །
ནམ་མཁའི་རྡོ་རྗེ་བདག་ལ་[2]སྩོལ[3]། །

---

༡ འདིའི་ཐད་རྒྱ་དཔེར་ ([illegible]) ཡོངས་སྒྲོར་གྱི་སྐབས་སུ་གཞུག་པར་བྱ་སྟེ། ཞེས་བྱུང་འདུག ༢ རྒྱ་དཔེར་༠ ཉིང་བདག ༣ རྡོ་༠ གསོལ།

བླ་མས་ཀྱང་ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་དུ་ལྷག་པར་མོས་ཏེ། རང་རིག་པ་མངོན་དུ་བྱས་ལ། ནམ་མཁའི་ཁམས་སུ་འཚོར་[1]བ་ཡི། ཤེས་རབ་པདྨ་ནས་བྱུང་སྟེ།

ཤེས་རབ་གདོང་ནི་བཅིང་[2]བ་དང་། །
ཐབས་ཀྱི་གདོང་ཡང་དེ་བཞིན་ཏེ། །
མཐེ་བོ་སྦྲིན་ལག་དག་[3]གེ་ས་ནི། །
སྦྱོར་མའི་ཁ་ཊྭ་ལྡུང་[4]བར་བྱ། །

དེས་ཀྱང་ཨཧོསུཁ་ཞེས་བརྗོད་ཅིང་ལོངས་སྤྱོད་ཀྱི་སྦུབས་སུ་གཞུག་པར་བྱ་སྟེ། རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱི་བདག་ཉིད་དུ་སོན་པའོ། །དེས་ཀྱང་ལངས་ཏེ་དེ་ལྟ་བུ་ཉིད་ཀྱིས་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །དེ་དག་ནི་གསང་བའི་དབང་བསྐུར་བ་སྟེ། རྡོ་རྗེའི་ངག་རྣམ་པར་དག་པའོ། །དེའི་རྗེས་ལ་སྦྱོར་མའི་ལག་ཏུ་སྟེ།

ཕྱག་རྒྱ་ལག་ཏུ་གཏད་བྱ་ཞིང་། །
དེ་བཞིན་གཤེགས་རྣམས་དཔང་[5]པོར་བྱས།།
སྤྱི་བོར་རྡོ་རྗེ་ཡང་དག་ཟུངས། །
བླ་མ་རྡོ་རྗེ་ཅན་གྱིས་བརྗོད། །
འདི་ནི་ཁྱོད་བཟུང་ལེགས་པ་ཡིན། །
སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱིས་བསྟན་[6]པར་གསུངས།།
འཁོར་ལོ་བསྐོར་བའི་རྣལ་འབྱོར་གྱིས། །

༡ རྒྱ་དཔེར༌། (ཕྲིཏྭཻ) རྣམ་པར་སྤྲུལ། ཅོ༌། ནེ༌། ཁམས་མི་འཚོར་བ་ཡིས། ༢ སྡེ༌། གཙང་བ། ༣ སྡེ༌། ལག ༤ ཅོ༌། ནེ༌། ལྡང་། ༥ སྡེ༌། དཔང་ཞེས་མི་འདུག ༦ རྒྱ་དཔེར༌། (ཤཱུ) བསྟེན།

དམ་པའི་བདེ་བ་ཡང་དག་བཙམ། །
འཇིག་རྟེན་གསུམ་འདི་དག་པ་སྟེ། །
གཞན་གྱིས་ཀྱང་ནི་སངས་རྒྱས་མིན། །
དེ་བས་ལྷན་ཅིག་མི་གནས་པར། །
ཁྲོད་ཀྱིས་ནམ་ཡང་བྱ་བ་མིན། །
འདི་ནི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །
རིག་པའི་བརྟུལ་ཞུགས་བླ་ན་མེད། །
སྤོངས་པ་གང་ཞིག་འདའ་བྱེད་པ། །
བླ་མེད་དངོས་གྲུབ་འབྱུང་མི་འགྱུར། །

ཞེས་བརྗོད་ལ་སློབ་མའི་ཕྱིར་དེ་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་རང་ལྷའི་[1] བདག་པོའི་རྣལ་འབྱོར་གྱིས། དེའི་མཚོག་མ་[2] དང་། སྙིང་ག་དང་། ལྟེ་བ་དང་། གསང་བ་དང་། བཅུ་རྣམས་སུ་རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ། ཨོཾ་ཧཱུཾ་སྭཱ་ཨཱཿ[3] ཞེས་པའི་རིག་སྔགས་[4] ཀྱི་ཚོགས་སུ་བྱའོ། །དེའི་རྗེས་ལ་ཧཱུྃ་གིས་ཨས་པདྨ་དང་རྡོ་རྗེ་སྟེ། དེ་དག་གི་ཟླ་འབྲུ་ལ་ཡང་ཨ་དང་ཨོཾ་ཡིག་གོ །བུ་ག་སྒོར་ཡང་ཕཊ་སེར་པོ་བསམ་པར་བྱས་ལ།

ཨོཾ་པདྨསུཁདྷ་ར་མ་ཧཱ་རཱ་ག་སུ་ཁཾ་ད་ད། ཙ་ཏུ་ར་ཨཱ་ནནྡ་བྷ་ག་བི་ཤྭ། ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཀཱཪྻཾ་ཀུ་རུཥྭ་མེ། ཞེས་པས་[5] པདྨ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པ་དང་།

ཨོཾ་བཛྲ་མ་ཧཱ་དྭེ་ཥ། ཙ་ཏུ་ར་ཨཱ་ནནྡ་དཱ་ཡ་ཀ ཁ་ག[6] མུ་ཁཻ་ཀ་ར་སོ། ནཱ་ཐ ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཀཱཪྻཾ་ཀུ་རུཥྭ་མེ། ཞེས་པས་རྡོ་རྗེ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའོ། །

---

༡ སྡེ་༠ པེ་༠ རང་ཉིད་ལྷའི། ༢ ཀྱི་དཔེར་༠ (གཞིར་) མགོ་བོ། ༣ ཀྱི་དཔེར་༠ ཁཱ་ཨཱཿཏྲ། ༤ ཀྱི་དཔེར་༠ (པདྨཙཀྲ) རིགས་ལྔ། ༥ སྣར་༠ པེ་༠ ཞེས་བྱ་བས། ༦ སྡེ་༠ ཁག ། འདིར་ཀྱི་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

དེ་ནས་བླ་གར་གཡོན་གྱི་རྩ་གནས་པ། རྡོ་རྗེ་དབྱིངས་ཀྱི་དབང་ཕྱུག་མ་ཞེས་བྱ། ཚུང་ཟད་སོར་མོས་བསྐྱོད་བྱས་ནས། དེ་ཡིས་[1] བླ་མའི་བཀའ་ལས་ཤེས། དེའི་རྗེས་ལ། ཨོཾསརྦཏཐཱགཏཨནུརཱགིཎབཛྲསྭབྷཱཝཱཏྨཀོ྅ཧཾ། ཞེས་[2] དགའ་བ་བརྩམ་པར་བྱའོ། །

མཁའ་ཁམས་རྡོ་རྗེ་ཡང་དག་སྦྱོར། །
རིག་པས་ངོ་མཚར་ཆེན་པོ་ལས། །
གང་ཞིག་བདེ་བ་སྐྱེས་[3] པ་དེས། །
མཆོག་ཏུ་དགའ་བར་ངེས་བྱེད་པའོ། །
མཆོག་དང་དགའ་བྲལ་དབུས་སུ་ནི། །
མཚོན་ཞིང་ལྟོས་ལ་བརྟན་པར་གྱིས། །

ཞེས་པས་ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་དབང་བསྐུར་བས་ཐུགས་རྡོ་རྗེ་རྣམ་པར་དག་པར་བྱེད་པའོ། །དེ་ནས།

ཇི་སྐད་གསུངས་པའི་ཚིགས་དབང་བསྐུར་སྦྱིན།།
སློབ་མའི་སོས་པས་ཡིད་ཀྱི་ཡང་དག་ཤེས། །
ཟབ་ཅིང་རྒྱ་ཆེའི་ཚུལ་ལ་སོས་གྱུར་ན། །
དབང་བསྐུར་རིན་ཆེན་ཚིག་གི་སྦྱིན་པར་བྱ། །
དགའ་བ་བདེ་བ་ཚུང་ཟད་བདེ། །
མཆོག་ཏུ་དགའ་བ་དེ་ལས་ལྷག །

---

༡ སྡེ་ ༠ ཡང་། ༢ རྒྱ་དཔེ་ར་ ༠ སློབ་མས་ཞེས་ཀྱང་འདུག ༣ སྣ་ ༠ པེ་ ༠ བསྐྱེད།

དགའ་བྲལ་ཆགས་དང་བྲལ་ཉིད་དེ། |
ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་དགའ་ལྷག་མའོ། |
དང་པོ་རིག་པར་འདོད་པ་དང་། |
གཉིས་པར་བདེ་བར་[1]འདོད་པ་སྟེ། |
གསུམ་པ་ཆགས་པ་ཉམས་པ་སྟེ། |
དེ་ནས་བཞི་པ་བསྒོམ་པར་བྱ། |
རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་དང་པོའི་དགའ། |
མཆོག་ཏུ་དགའ་བ་རྣམ་པར་སྨིན། |
དགའ་བྲལ་རྣམ་པར་ཉེད་[2]པ་སྟེ། |
ལྷན་སྐྱེས་མཚན་ཉིད་བྲལ་བའོ། |
རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་སྣ་ཚོགས་བརྗོད། |
འོ་དང་འཁྱུད་པ་ལ་སོགས་ལ། |
རྣམ་པར་སྨིན་པ་དེ་ལས་བཟློག |
བདེ་བའི་ཡེ་ཤེས་ཉེར་ལོངས་སྤྱོད། |
རྣམ་པར་ཉེད་[3]པ་གྲོགས་སུ་བརྗོད། |
བདག་གིས་བདེ་བ་ཟོས་པའོ། |
མཚན་ཉིད་བྲལ་བ་གསུམ་ལས་གཞན།།
ཆགས་དང་ཆགས་བྲལ་རྣམ་པར་སྤངས།།
དེས་ན་འདི་སྐད་དུ་གསུངས་ཏེ།

༡ རྒྱ་དཔེར་༠(ཀུཤལབཧེཏུ)དགེ་བརྗོད། ༢ སྣ་༠བྱེད། ༣ སྡེ་༠ ངེས་པ། འདིར་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

འདོད་ཆགས་མ་ཡིན་ཆགས་བྲལ་མིན།།
དབུ་མར་དམིགས་པར་མི་འགྱུར་ དེ། །
གསུམ་པོ་སྤྱངས་པས་འདི་ཉིད་ན། །
ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པ་རྟོགས་པར་བརྗོད། །

ཅེས་དབང་བསྐུར་བ་ཐོབ་པ་ནི་བྱ་བ་བྱས་པའོ་ཞེས་བརྗོད་དེ།

དེང་དུས་བདག་ཚེ་འབྲས་བུར་བཅས། །
བདག་གིས་གསོན་པ་འབྲས་བུ་སྟེ། །
དེ་རིང་སངས་རྒྱས་རིགས་སུ་སྐྱེས། །
བདག་ནི་ད་ལྟར་སངས་རྒྱས་སྲས། །

གཞན་ཡང་འདིར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་གསུངས་པའི་བཀས་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་འཇུག་པ་ལ་སོགས་པ་དང་། དབང་བསྐུར་བ་སོ་སོ་ལ་བླ་མའི་དོན་དུ་གོས་གསུམ་དང་ཡོན་དབུལ་བར་བྱའོ། །མ་འབྱོར་བར་གྱུར་ན་དང་པོ་དང་བར་མ་དང་ཐ་མར་རོ། །ཐམས་ཅད་དུ་འབྱོར་པར་མ་གྱུར་པའི་ཕྱོགས་ལ་ནི། ཀུན་ཕྱོགས་གཅིག་ཏུ་བྱས་ཏེ། ཐོག་མ་ཉིད་དུ་གོས་གསུམ་དང་ཡོན་གྱི་བར་དུ་དབུལ་བར་བྱའོ། །ཡང་མ་འབྱོར་ན་ཇི་ལྟར་གང་རུང་བ་སྟེ།། བླ་རེ་དང་འཕན་རྣམས་དེ། རས་[1]བལ་འཇམ་པོའི་སྣན་མཐོན་པོ་དང་། གསེར་གྱི་སོར་གདུབ་ངེས་པར་དབུལ་བར་བྱའོ། །དེ་བཞིན་དུ་སྦྱིན་རྟེག་དང་[2] རབ་ཏུ་གནས་པ་ལ་ཡང་ངོ་ཞེས་པའོ། །དེ་ནས།

---

༡ སྡེ་༠ ག་༠ རག། ༢ ཅོ་ནེ་༠ (ཧོམནཨཾ) སྦྱིན་སྲེག་གསུམ།

སྦྱིན་སྲེག་བྱ་ཞིང་གཏོར་མ་སྦྱིན། །
འགྲོ་མཆོག་རྣམས་ཀྱང་གདུལ་བྱ་ཞིང་། །
དེ་རྗེས་དགེ་འདུན་ཆོས་སྟོན་བྱ། །
མགོན་མེད་ཕོངས་པ་ཚིམ་པར་བྱའོ། །

ཞེས་འདི་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྡོ་རྗེ་དང་རྡོ་རྗེ་དྲིལ་བུ་དང་བཅས་པའི་ལག་པར་བྱའོ། །དེ་ལ།

རྡོ་རྗེ་སོར་ནི་བརྒྱད་ནས་བརྩམས། །
ཉི་ཤུ་རྩ་གཉིས་[1]གྲངས་མཉམ་བྱ། །
རྡོ་རྗེ་བརྒྱད་ནི་ཚུལ་ལས་ངེས། །
གསེར་དང་ར་གན་སོགས་[2]འབྱུང་བའོ། །
རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་རྣམ་པ་གསུམ། །
རྩེ་གསུམ་རྩེ་ལྔ་རྩེ་དགུ་པའོ། །
ཡང་ན་རྣམ་པ་གཉིས་དབྱེ་སྟེ། །
ཞི་དང་མ་ཞིའི་དབྱེ་བས་སོ། །
བཞི་པ་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་ནི། །
རྩེ་མོ་ལྔ་པ་གདོང་བཞི་པའོ། །
དབུས་མ་གཟུང་[3]བའི་གནས་ཡིན་ཏེ། །
མཐའ་ཡི་རྩེ་མོ་དེ་ཡི་ཚད། །
ཆུ་སྲིན་སྤྲུལ་བ་མཐའ་དང་མཐར། །

༡ ཀུ་དཔེར་༠ (ཧྭདཀ) བཅུ་གཉིས། ༢ ཅོ་༠ པེ་༠ ལ་སོགས། ༣ ཅོ་༠ བཟུང་།

ཆུ་སྲིན་ཁ་ནས་བྱུང་བའོ། །
ཁ་སྦྱོར་རྩེ་མོ་བགགས་ཀྱིས་ཕྲ[1]། །
རྩེ་མོ་རྒྱ་ཞིང་རིམ་གྱིས་རྣོ། །
ཕྱོགས་ཀྱི་ཆ་ལས་མ་འདས་པ། །
དབུས་མའི་ནྭ་[2]ནི་ནས་ཀྱི་དབྱིབས། །
ནྭ་བཞི་ཡི་ནི་བར་དག་ཀྱང་། །
དབུས་ཀྱི་ནྭ་དང་བར་མཚམས་བྱ། །
རྡོ་རྗེ་དང་ནི་རྗེས་མཐུན་པར། །
ཆུང་ངུ་སོར་[3]གཉིས་ཆ་བསྐྱེད་བྱ། །
རྩེ་མོ་ཡན་ཆུན་མཉམ་བྱ་ཞིང་། །
དབུས་མ་ལ་ནི་ཆུང་ཟད་བསྐྱུང་། །
ནྭ་བརྒྱད་རྩ་བའི་ཡན་ལག་ཏུ། །
པདྨའི་ཁ་ཁྱེར་[4]སྣ་རགས་བཏགས། །
དབུས་ཀྱི་ཆ་ནི་ཆུང་ཟད་ཙམ། །
སྣ་རགས་ལས་ནི་ལྷག་པར་བྱ། །
ཡན་ཆུན་མཉམ་པའི་ལྷག་མ་ནི། །
རིམ་གྱིས་ཉིས་འགྱུར་མཐོན་པོར་བྱ། །
ཆུ་སྐྱེས་འདབ་མ་བརྒྱད་མཛེས་པའི། །

---

༡ སྣ་° པེ་° རྩ་སྦྱོར་རྩེ་མོ་བགག་གིས་བྲ། ༢ སྣ་° པེ་° ར། ༣ སྡེ་• གོར། ༤ སྣ་° ཕྱེར།

ཁ་ནི་རྩ་བར་ཕྲེང་བ་གཉིས། |

ཞེས་པ་ནི་རྡོ་རྗེའི་མཚན་ཉིད་དོ། |

དྲིལ་བུའི་དབྱུག་ཆ་ཀུན་ནས་ཞལ། |
དེ་ལ་ཆ་བཞི་དག་པ་ཡི། |
ཁར་བའི་རང་བཞིན་ལས་ནི་བྱ། |
གཞན་ནི་གཞན་ལས་བསྲུབ་[1] པ་ཡིན། |
དྲིལ་བུ་དེའི་ནི་ནང་གི་ཁར། |
ཞིང་ནང་རྩ་རྩ་མཉམ་པར་བྱ། |
ཁ་ཁྱེར་ཨུཏྤལ་བརྒྱད་ཆ་ཡིན། |
གཞན་ལ་བུམ་པའི་ཆ་དང་ནི། |
སྟེང་གི་ཆ་ནི་གཉིས་ཡིན་ཏེ། |
ངོས་སུ་ཞེས་རབ་གདོང་པ་བྱ། |
གདོང་དེ་སྟེང་གྱི་རྡོ་རྗེ་ཕྱེད། |
ཉིད་དེ་རྡོ་རྗེ་ཕྱེད་འདྲ་བྱ། |
དེ་ལྟར་སོར་བརྒྱད་ལ་སོགས་པའི། |
དྲིལ་བུའི་རྡོ་རྗེ་མཐུན་པར་སྦྱར། |
ཚད་ཟད་རྩ་སྐྱེས་ཁ་བྱེ་བའི། |
ཁའམ་ཡང་ན་ཁ་ལ་མཆུ། |

ཞེས་པ་ནི་དྲིལ་བུའི་མཚན་ཉིད་དོ། ༡༠ !

---

[1] སྣ་° བསྲུང་། ཅོ་དཔེར་° (ཧིམི) སྲུ་ཕ་པ།

ཤར་དུ་དཀར་པོ་ཆེན་པོ་སྟེ། །
ལྷོར་ནི་སེར་པོ་དང་ལྡན་པས། །
ནུབ་ཀྱི་ཆར་ནི་དམར་པོ་འོ། །
བྱང་དུ་ལྗང་ཀུ་[1] དང་ལྡན་པར[2]། ༡༡ །
ཨིནྡྲནཱིལའི་འོད་འདྲ་བའི། །
དབུས་ཀྱི་ཆར་ནི་ཡང་དག་བྲི། །
དེ་ལ་ཕྱག་རྒྱ་དགོད་པར་བྱ། །
ལས་ཀྱི་ཚོགས་མཐོང་ནས་ནི། ༡༢ །
དག་ཏུ་ཕྱག་རྒྱ་མཁའ་མཉམ་པ། །
ཕྱག་རྒྱ་དེ་ཉིད་དག་ཏུ་བྲི[3]། །

རྒྱལ་ཚོན་གྱིས་[4] གཞིའི་ཁ་དོག་གི་[5] དབྱེ་བ་བརྗོད་པའི་དོན་དུ་…… གསུངས་པ། ཤར་དུ་ཤེས་རབ་[6] ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ་གོ་སླའོ། ༡༡། ལས་ཀྱི་[7] ཚོགས་མཐོང་བ་ཡིས། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཇི་ལྟར་རིགས་པར་ཉི་མ་དང་། ཟླ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་གནས་པའོ། །རྡོ་རྗེ་ཞེས་པ་ནི་རྩེ་ལྔ་པའོ། །འཁོར་ལོ་ནི་རྩིབས་བརྒྱད་པའོ། །དེ་ལྟ་བུ་ལ་སོགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རིན་པོ་ཆེ་སེར་པོ་ཆ་དགུ་པ་དང་། པདྨ་དམར་པོ་དང་། རལ་གྲི་ལྗང་གུ་སྟེ་[8] ནང་གི་རིམ་པའི་ཕྱོགས་རྣམས་སུའོ། །མཚམས་རྣམས་སུ་ནི་འཁོར་ལོ་དང་། རྡོ་རྗེ་དང་། པདྨ་དང་། ཨུཏྤལ་རྣམས་སོ། །ཕྱི་རོལ་གྱི་རིམ་

---

༡ སྣར་。ཀུ། ༢ རྒྱ་དཔེར་。(ནནྡིབྷདྲ) འདུ་བར། ༣ ཚིག་རྐང་འདི་གཉིས་རྒྱ་དཔེར་མི་འདུག
༤ སྡེ་。ས་མི་འདུག ༥ སྣར་。པེ་。ཁ་དོག་གི་མི་འདུག ༦ རྒྱ་དཔེར་。ཤེས་རབ་ཅེས་མི་འདུག
༧ རྒྱ་དཔེར་。ལས་ཀྱི་ཞེས་པ་མི་འདུག ༨ སྣར་。པེ་。དང་།

དེ་ཡི་དཀྱིལ་དུ་རྡོ་རྗེ་བྲི། །
ཤར་དུ་འཁོར་ལོ་ཡང་དག་བྲི། །
དེ་ལྟ་བུ་ལ་སོགས་པ་བལྟ། །
ཕྱག་མཚན་[1] ཀུན་དུ་ཞལ་དང་མཚུངས།༡༢།

དེ་ལ་འདི་ཡི་དགང་གཟར་ནི།

དེ་ཡི་ཡུ་བའི་ཚད་དུ་[2] བྱ། །
ཁྲུ་གང་དང་ནི་ལྡན་པར་བྱ། །
དེ་ཡི་དཀྱིལ་འཁོར་རྩེ་མོ་ནི། །
སོར་བཞི་པོ་ལ་ཟླུམ་པོར་བྱ[3]། ༡༨ །

བའི་སྒོ་[4] རྣམས་སུ་ནི་ཐོ་བ་ནག་པོ་དང་། དབྱུག་པ་དཀར་པོ་དང་། པདྨ་དམར་པོ་དང་། རལ་གྲི་ལྗང་གུའོ། །ཕྱི་རོལ་གྱི་འཕར་མའི་གྲྭ་རྣམས་ལ་ཡང་ཐོད་པ་རྣམ་པ་བཞིའོ། །ཕྱག་མཚན་[5] ཀུན་དུ་ཞལ་དང་མཚུངས། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷ་རྣམས་རང་ཉིད་ཀྱི་ཞལ་གཙོ་བོའི་སྐུ་མདོག་གོ[6] ༡༢–༡༣།

དང་པོའི་[7] ཁྲུ་གང་ཙམ་ཞེས་པའི་འོག་ན་གནས་པའི་རིན་ཆེན་སོར་གཉིས་པ་དང་། རྡོ་རྗེ་[8] སོར་དྲུག་པ་བོར་བ་སྟེ། ཡུ་བ་ཁྲུ་གང་གི་ཚད་དོ། །དེའི་སྟེང་དུ་ཡུ་བའི་སྟེང་དུ་གནས་པ་སྟེ[9]། སྐ་རགས་ཀྱིས་བཅིངས་པ་སོར་བཞི་པ་ལས་དེ་སྟེང་དུ་དཀྱིལ་འཁོར་[10] ཞེས་པ་སྟེ་གྲུ་བཞི་པའོ། །དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཚད་ཇི་ཙམ་ཞེ་ན་གསུངས་པ། སོར་བཞི་པའི་ཚད་ཅེས་པའོ།༡༨།

---

༡ རྒྱ་དཔེར。 (སུནྡྲ) ཕྱག་རྒྱ། ༢ སྣ་。 པེ་。 ཅོ་。 ཚད་བྱ་བ། ༣ སྣ་。 པ། ༤ རྒྱ་དཔེར。 (ཝཱ་ཛཱ་རེཎྜར) ཤར་གྱི་སྒོ། ༥ རྒྱ་དཔེར。 ཕྱག་རྒྱ། ༦ བོད་དཔེར་གོ་ཞིབ་པ་མི་འདུག ༧ རྒྱ་དཔེར。 དང་པོ་འི་མི་འདུག ༨ རྒྱ་དཔེར。 (རཏྣབཛ) རིན་ཆེན་རྡོ་རྗེ། ༩ སྣ་。 པེ་。 དང་། ༡༠ རྒྱ་དཔེར。 (སུཀཱཏམཀ) མགོ་བོ་བཞིན།

གདིང་དུ་སོར་གཉིས་ཟབ་པ་ལ། །
དེ་ལ་སོར་ཕྱེད་མཚུར་བུས་པའོ། །
ཁ་ནི་མཐེ་བོའི་ལྟོ་གང་ལ། །
དེ་ལ་སོར་གཅིག[1]ཙམ་ཟབ་པ། ༡༤ །
ཐྲུགས་གཟར་པདྨའི་འདབ་འདྲ་བའི[2]། །
རྒྱུད་འདི་རྩ་ནི་རབ་ཏུ་བསྟུགས། །

གདིང་དུ་སོར་གཉིས་ཞེས་པ་ནི་སོར་བཞི་པ་དང་ལྡན་པ་ལ་སོར་······ གཉིས་གདིང་དུ་བྲུ[3]བ་སྟེ། ཞིང་དུ་སོར་བཞི་པ་ལ་གདིང་དུ་སོར་ཕྱེད་འོར་བ་བྲུ[4] བ་སྟེ། དཀྱིལ་དུ་ནི་རྩེ་གསུམ་པའི་རྡོ་རྗེ་སོར་གཉིས་པའོ་ཞེས་པ་སྟེ། མན་ངག་གོ །བཙུད་འཇག་ཁྲང་བུ་ཞེས་པ་ནི་དགང་གཟར་གྱི་མགོ་འོར་གནས་པ;། པདྨའི་འདབ་མའི་རྣམ་པ་ཞིང་དུ་སོར་བརྒྱད་པ། ཟབས་སུ་སོར་གཉིས་པའི་དབུས་སུ་རྒྱར་སོར་བཞི་པ་བཀོས་པར་གནས་པའི་རྡོ་རྗེ་རྩེ་གསུམ[5] པ······ སོར་བཞིའི་ཚད་ཀྱི་དགང་གཟར་ལ་མར་འཇག་པའི་དོན་དུ་སོར་ཕྱེད་ཀྱི་བུག··· པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་སོར་ཕྱེད[6]དེ་བཙུད་འཇག་ཁྲང་བུའོ། །དེ་ལྟ་བུ་འདི་ནི་ཁྲུ་དོ་པའི་ཚད་ཀྱི་དགང་གཟར་རོ།༡༤།

ཐྲུགས་གཟར་པདྨའི་འདབ་འདྲ་ཞེས་པ་ནི། ཐྲུགས་གཟར་ཁྲུ་ཕྱེད་དང་གཉིས་པ་སྟེ། དེ་ཡང་འོག་ཏུ་རྡོ་རྗེ་རྩེ་ལྔ་པ་སོར་གཉིས་པ་དེའི་འོག་ཏུ་རིན་པོ་ཆེ་སོར་གཅིག་པའོ། །དེའི་སྟེང་དུ་ཡུ་བ་ཁྲུ་གང་པའོ། །དེའི་སྟེང་

---

༡ རྒྱ་དཔེར་° སོར་གཉིས། ༢ ཚིགས་བཅད་བཅུ་དྲུག་པའི་བང་རིམ་རྒྱ་དཔེ་དང་མཐུན་པར་བཞག་ཡོད། ༣,༤ སྣ་° འབྲུ། ༥ རྒྱ་དཔེར་° (པྲྀཛཀྲྀཀ) ཕྱེ་ཕྲ། ༦ རྒྱ་དཔེར་° (ཉཡཏཀུཔ) སོར་གཉིས།

དཀྱིལ་འཁོར་དུ་ནི་མ་ཞུགས་དང་།
མཚམས་མེད་ལྔ་ནི་བྱས་པ་དང་། ༡༦
སེམས་ཅན་སྲོག་ནི་གཅོད་པ་དང་།
ཉ་དང་ཤ་ནི་མངོན་ཟ་དང་།
ཆང་ལ་མངོན་པར་དད་པ་དང་།
ཆད་ལྡའི་བདུལ་ཞུགས་འཛིན་པ་དང་། ༡༧
མངོན་པར་དབང་ནི་མ་བསྐུར་དང་།
ཀུན་དུ་འཁྲམ་ཞིང་སྡོང་[1] བུ་དང་།
གྲོང་གི་[2] གླ་མི་བྱེད་པས་[3] ཀྱང་།
གཤིན་རྗེའི་[4] གཤེད་རྒྱུད་མངོན་གཞོལ་ན།།
ནག་པོའི་ཚིག་ནི་ཛེ་ལྟ་བུར་[5]།
ཁྱབ་པར་[6] འདི་ལ་ཐེ་ཚོམ་མེད། ༡༨

དུ་ཡང་སྐྲ་རིགས་སོར་གསུམ་པས་ཉེ་བར་བཀྲན་པའོ། །དེའི་སྟེང་དུ་སོར་དྲུག་པའི་ཚད་ཀྱི་པདྨའི་འདབ་མའི་[7] རྣམ་པའོ། །རྡོ་རྗེ་རྩེ་གསུམ་སོར་གསུམ་པས་བླུགས་གཟར་རོ། །རྒྱུད་[8] ཀྱི་ཆེ་བའི་བདག་ཉིད་བསྟན་པའི་དོན་དུ་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་ནི་མ་ཞུགས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ༡༦–༡༧།

གཤིན་རྗེའི་གཤེད་ཀྱི་རྒྱུད་ལ་བརྟེན་ནས་མཆོད་པ་དང་དད་པ་ཙམ་གྱིས་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །དེ་ཉིད་ཛེ་ལྟ་བུ་ཞེ་ན། ནག་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དབང་པོ་མཆོག་གི་རྒྱུ་[9] དང་འབྲས་བུའི་ཚུལ་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཉིད་ཀྱིས་མཁྱེན་ཏོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༡༨།

---

༡ སེ་。ལྗོམ་པོ། སྣ་。ལྗོམ་པ། ལྷ་。འཁྲུམས་ཤིང་ལྗོམ་བུ་དང་། ༢ རྒྱ་དཔེར་。(གྲཱམཀཱུཊ) གྲོང་སྟེ། ༣ སྡེ་。པས། ༤ ལྷ་。རྗེ། ༥ ལྷ་。པར། ༦ ལྷ་。གྲུབ་པ། ༧ འདབ་མའི་ཞེས་པ་རྒྱ་དཔེ་དང་མཐུན་པར་བཞག་ཡོད། ༨ རྒྱ་དཔེར་。(55) དེར། ༩ སྡེ་。རྒྱུད།

དེ་ནས་བྲམས་པ་ལ་སོགས་ཀྱིས། །
རྡོ་རྗེ་ངེས་པ་འདི་མཐོང་ནས[1]། །
རྡོ་རྗེ[2] བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཀུན། །
མི་སླུ་བར་ནི་སྨྲོད་པར་གྱུར[3]། །
དེ་ལ་འདི་ནི་རྡོ་རྗེ་དབབ་པའི་ཚིག་འོ[4] ། ༡༩ །
འབྱུང་བཞིའི་ས་བོན་ཆེན་པོ་ཡིས། །
འཁོར་ལོ་བཞི་ནི་རབ་བསྒྲུབ་བྱ། །
གནས་བཞིར་རབ་ཏུ་སྦྱོར་བ་བསམ། །
ནམ་མཁའ་ལ་ནི་གཡོ་བར་བྱེད། ༢༠ །

རྡོ་རྗེའི་ཚིག[5] ཅེས་པ་ནི་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་ངེས་པའི་ཚིག་སྟེ······ དངོས་པོའི་རང་བཞིན་བརྗོད་པ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་ནི་མ་ཞུགས[6] ཞེས་བྱ་བ··· ལ་སོགས་པའོ། །[7]སློབ་མས་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་གསར་དུ་འཇུག་པའི་དོན་དུ་དེ་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ།༡༩།

འབྱུང[8] བ་བཞིའི་ས་བོན་ཞེས་པ་རླུང་དང་མེ་དང་ས་དང་ཆུ་སྟེ········ འབྱུང་བ་ཆེན་པོའི་ས་བོན་ཡཾ་ལཾ་བཾ་ཡི་གེ་རྣམས་ཀྱིས་སོ། །འཁོར་ལོ་བཞི་ཞེས་པ་ནི་རླུང་ལ་སོགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་རྣམས་སོ། །གནས་བཞི་ཞེས་པ་ནི་རྐང་པའི་འོག་དང་། ལྟེ་བ་དང་། སྙིང་ག་དང་། མཆོག[9] མར་རོ།༢༠།

---

༡ རྒྱ་དཔེར། (ཝྲྀ་ཏཱ) ཐོས་ནས། ༢ རྒྱ་དཔེར། (བུདྡྷ) སངས་རྒྱས། ༣ ལྷ། འགྱུར།
༤ རྒྱ་དཔེར། འདི་ཡན་ཚིག་རྐང་བཞི་ཚིག་ལྷུག་སུ་འདུག ༥ རྒྱ་དཔེར། (བཛྲཌྜཱཀྐི)
རྡོ་རྗེའི་ངེས་ཚིག ༦ རྒྱ་དཔེར། བཞུགས། ༧ རྒྱ་དཔེར། (ཨཱཔ་རམཱཎ) གཞན་ཡང་ཞེས་ཀྱང་གསལ།
༨ རྒྱ་དཔེར། (མཧཱབྷཱུ) འབྱུང་བ་ཆེན་པོ། ༩ རྒྱ་དཔེར། མགོ་བོར་རོ། །

ཀང་པ་དག་གི་འོག་ཏུ་ཡི། །
ལྟེ་བར་རོ་སྟེ་སྙིང་གར་ལོ། །
མགོ་བོ་ལ་ནི་ཡི་གེ་བཾ[1]། ༢༡ །
གཞུའི་རྣམ་པ་[2]ནག་ཆེན་པོ། །
དྲག་ལ་རྣམ་པ་རབ་འགྱུར་[3]བའི། །
གྲུ་གསུམ་སྨིག་པའི་མེ་ལྟར་འབར། །
ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལྟ་བུར་དམར། ༢༢ །
རྡོ་རྗེ་ས་གཞི་འཛིན་བཟོད་པའི། །
སེར་པོ་ཆེན་པོ་གྲུ་བཞི་པ། །

རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་གནས་རྣམས་སུ་ས་བོན་གྱི་ཡི་གེ་བརྗོད་····· པའི་དོན་དུ་ཀང་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ[4] ། །འཁོར་ལོ་བཞི་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། གཞུའི་རྣམ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། གྲུ་གཉིས་སུ་གཡོ་བའི་བ་དན་གཉིས་དང་ལྡན་པའོ། །གྲུ་གསུམ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཟུར་གསུམ་མོ༑ ༑བ་ནི་ཞེས་པ་ནི་མེའི་དཀྱིལ་འཁོར་རོ། །རྡོ་རྗེ་ཅན་ནི་འཛིན་བཟོད་པ། ། ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་རི་བོ་འཛིན་པར་བཟོད་པའོ།༢༡—༢༢½།

རྡོ་རྗེ་རི་བོ་དེ་ཉིད་བསྟན་པའི་དོན་དུ། རི་རབ་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ༑ སྤྲིན་ཞེས་པ་ནི་ཚོགས་རྣམས་སོ། །བསིལ་བ་ཆེན་པོ་ཞེས་ཇི་སྐད་གསུངས་པའི་དོན་གསུངས་པའོ། །གངས་ཀྱི་རི་བོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་

༡ ཚིགས་བཅད་ཉེར་གཅིག་པ་རྒྱ་དཔེར་ཚིག་ལྷུག་སུ་བཞུགས་པ་འདིར་ཚིག་རྐང་གསུམ་དུ་འདུག
༢ རྒྱ་དཔེ་དང་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཞག་ཡོད། ལྡ༷. ཅོ༷. ལ་སེ་ལ་ནི། ༣ ལྡ༷. གྱུར། ༤ ཅོ༷. པེ༷. ལས་བརྗོད་པའོ། །

རི་རབ་རི་ཡིས་མནན་པ་ཡི[1]། །
ནོར་འཛིན་དེ་ནི་བསྐོར་བར་བྱ། ༢༢ །
དཀར་པོ་ཟླུམ་པོ་བསིལ་ཆེན་པོ། །
སྤྲིན་བཞིན་དུ་ནི་ཆར་པ་འཛིན། །
རྒྱ་མཚོ་དུ་མ་རྒྱུས་གང་བའི། །
གངས་ཀྱི་རི་བོ་ལྟར་བསིལ་བའི། ༢༣ །
གནས་བཞི་རུ་ནི་སྦྱོར་བས་ན། །
རྡོ་རྗེ་[2]སྣང་བ་མཐའ་ཡས་དེ། །
སློབ་མ་རྡོ་རྗེ་བསྐོར་བར་བྱ། །
སྒུར་བ་རུ་ནི་འབེབས་པར་བྱེད། ༢༤ །

དེ་ལ་འདི་ནི་དྲི་བའི་[3]ཆོ་གའོ། །

རྡོ་རྗེ་ཆོས་ནི་མགོན་ཆེན་པོ། །
སྣང་བ་མཐའ་ཡས་བདེ་བ་ཆེ། །

ལ་གངས་ཀྱི་རི་བོ་ནི་ཁ་བའིའོ། །འབེབས་ཞེས་པ་ནི་ལུས་[4] ལ་འབེབས་པའོ། །ངག་ལ་འབེབས་པའི་དོན་གསུངས་པ། རྡོ་རྗེ་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་སྦྱོར་བ་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ། ཕེབས་པའི་སློབ་མའི་ལྕེ་ལ་ཡི་གེ་ཨ[5] དམར་པོ་ཡོངས་སུ་གྱུར་པའི་ཉི་མ་ལ་ཧྲཱིཿཡིག་དམར་པོ་བལྟས་པ་དེ་ཉིད་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་སུ་བལྟ་བར་བྱའོ། །༢༢–༢༤ །

དེ་ལ་ཞེས་པ་ནི། དེའི་ཚེ་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་སུ་རྫོགས་ནས་སོ། །དྲི་བའི་དམ་ཚིག་ཅེས་པ་ནི་དྲི་ཞིང་[6] ཞུ་བ་སྟེ། ཇི་སྐད་དུ་གསུངས་པའི་འབྱུང་

---

[1] སྣ་° ཡིས། [2] རྒྱ་དཔེ་དང་འགྲེལ་པ་ལྟར་བཞག་ཡོད། སྣ་° སྡེ་° ཁར་དེ། [3] རྒྱ་དཔེའི་པྲཙྪནསམཡ་དང་མཐུན་པར་དྲི་བའི་ཚིག་ཞེས་བཞག་ཡོད། སྣ་° སྡེ་° སྒྲོ་བའི། [4] ཅོ་° ལུག། [5] རྒྱ་དཔེར་° ཨཱ། [6] ཅོ་° ཞིས།

གསུངས་ཤིག་འདོད་ཆགས་ཆོས་ཆེན་པོ། །
དགེ་དང་མི་དགེ་ལེགས་པར་དྲི་[1]། ༢༦ །
ཀྲྀ་གང་ནས་ནི་བརྩམས་ནས་ནི། །
ཛི་སྙིད་ཀྲྀ་ནི་སྟོང་གི་བར། །
སྒྲོལ་མ་ཆེན་པོ་འཕར་བར་འགྱུར། །
དེ་ནི་དབབ་པའི་ཚོ་གའོ། ༢༧ །
འཇིགས་གཟུགས་[2] རི་མོ་འི་མཚན་ཉིད་ནི། །
དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་པར་བྱ། །
ས་ནི་འཇམ་པོ་བླངས་བྱས་ལ། །
བརྟུལ་ཞུགས་ཅན་གྱིས་[3] བཟླས་པ་བྱ། ༢༨ །
སྨན་གྱིཙ་འོ་མ་དེ་བཞིན་ཤ། །
བྱ་རམ་ཏྲིནཱནི་[4] ལ་སོགས། །
སྐུམ་དང་ནིམ་པའི་ལོ་མ་དང་། །
ནྲྀ[5] དེ་བཞིན་ཛ་གེ་སར་[6]། ༢༩ །

པ་བཞི་པོ་བསྒོམས་པས་རང་གི་བསོད་ནམས་ཀྱི་སྟོབས་ལས་གང་ཡང་རུང་…… བའི་སེམས་བཀུག་པ་གང་གི་རྟགས་དེ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་ཀྲྀ་གང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ། ༢༦_༢༧།

དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནས། རིན་ཆེན་ཅོད་པན་སོར་དྲུག་

---

༡ ལྷ་ ° བྲི། ༢ རྒྱ་དཔེར་ ° (ལེབ) འབྲུག་པ། ༣ སྡེ་ ° གྲི། ༤ ལྷ་ ° སྣ་ ° ཏྲིནཱི་ནི་ཡ་སོགས། རྒྱ་དཔེར་ ° ཏྲིནྟྲིཎཱི། ༥ རྒྱ་དཔེར་ ° (ནྲྀཏྟ་གཱི་ཛཀཱཿ) ནྲྀཏྟ་གཱིའི་ས་བོན། ༦ ལྷ་ ° ཛ་གེ་ས།

དང་པོར་དཀར་པོར་བྲི་བར་བྱ།
ཁ་དོག་གཞན་གྱིས་དེ་ནས་བསྒོམ།
རྡོ་རྒྱུས་དང་ནི་བཙག་དག་ལས།
རྒྱ་སྐྱེགས་ལྷ་བྱའི་མདོག་ཏུ་འགྱུར། ༢༠
ཡུང་བ་དེ་དང་[1]རམས་དག་ལས།
དེ་བཞིན་ཁ་དོག་ལྗང་གུར་འགྱུར།
སྔོན་པོ་དག་ནི་རམས་ཀྱིས་བྱ།
དེ་བཞིན་དུ་བས་ནག་པོ་འོ། ༢༡
ལྗང་རོས་ཀྱིས་ནི་སེར་པོ་སྟེ།
དམར་པོ་དེ་བཞིན་མཚལ་[2]གྱིས་སོ།
དེ་ལ་བཞིལ་[3]བའི་སྙིང་པོ་བཞག
ཏ་ཙང་ཉུང་དང་མང་བ་མིན། ༢༢
མང་[4]ན་ནག་པོར་འགྱུར་བ་སྟེ།
ཉུང་ན་དེ་བཞིན་འཁྲུལ་བར་འགྱུར།
གཟུགས་ནི་བྲི་དང་ཞི་བའོ།
མཚན་ཉིད་དག་ནི་བཤད་པར་བྱ། ༢༣
རོལ་པ་[5]ཞི་བར་གསུངས་པ་སྟེ།
བྲི་བོ་སློམ་ལ་སྦྱང་བར་བཤད།

---

༡ སྣ་ ° དག ༢ སྣ་ ° ཉཚག། ༣ སྣ་ ° མེག། ༤ སྡེ་ ° མངས། ༥ སྣ་ ° རོག

[1]སྣ་ནི་སོར་བཞི་བྱ་བ་སྟེ། །
དཔྲལ་བ་ཀོས་ཀྱི་མཆུ་དེ་བཞིན། ༢༦ །
མགྲིན་པ་འགྲམ་པ་དེ་བཞིན་མཚན། །
སོར་བཞི་དག་ཏུ་བྱ་བ་ཡིན། །
ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་ལག་པ་ལ། །
གྱེན་དུ་སོར་ནི་ཉི་ཤུ་ཡིན། ༢༧ །
ལག་པ་རྐང་པ་གདོང་ཇི་ལྟར། །
མིག་ནི་མཐེ་ཐོང་གང་ཙམ་སྟེ། །
རྣ་བ་གཉིས་ལ་སོར་གཉིས་བསྣགས། །
འབྲས་བུ་གཉིས་ལ་དེ་བཞིན་བཞི། ༢༨ །
མཆུ་ནི་སོར་གཉིས་བསྒོམས་པའོ། །
ལྟེ་བར་སོར་གཅིག་ཟབ་པ་ཡིན། །
ལུས་ནི་མགྲིན་པ་འཁོར་བ་ཡི། །
གདོང་ནི་གསུམ་འགྱུར་ལུས་ལ་དགོད། ༢༩ །
རལ་པ་ཅོད་པན་དེ་ཡི་ཚད། །
རིན་ཆེན་ཅོད་པན་སོར་དྲུག་པའོ། །

པ། །ཞེས་བྱ་བའི་བར་རྫོགས་པར་སྨྲ་ཞེས་པ་སྟེ་མ་བཤད་དོ། ༢༦—༢༩½།

གནོད་སྦྱིན་མོ་བསྒྲུབ་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། གནོད་སྦྱིན་མོ་ནི་བསྒྲུབ་དུས་སུ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་གནོད་སྦྱིན་

---

[1] སྡེ་དགེར་° (ཞུ་ཆེན) ཕྲུབས་ཁོང་། ལྷ་° ཅ་ར།

རལ་པ་གཅིག་མ་རབ་སྒྲུབ་ཐབས། །
དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་པར་བྱ[1]། ༣༨ །
གནོད་སྦྱིན་མོ་ནི་སྒྲུབ་འདོད་པས། །
རལ་པ་གཅིག་མ་རབ་སྒྲུབ་ཐབས། །
ཕྱག་གཉིས་པ་ལ་ཞལ་གཅིག་སྟེ། །
གྲི་གུག་དང་ནི་ཐོད་པ་ལ། ༣༩ །
ཤིན་ཏུ་སྨྲིམ་ལ་མདོག་སྔོ་བ། །
དཀྱིལ་འཁོར་དབུས་སུ་བསྒོམ་པར་བྱ། །
ཛམྦྷལ་ནི་ཤར་དུ་བསྒོམ། །
བསུནྟར་ལྷོ་ཕྱོགས་སུ། ༤༠ །
རྒྱ་དབང་ནུབ་ཏུ་དགོད་པར་བྱ། །
བྱང་དུ་ན་ཚ་ཀོས་[2] ཀོ་འཕྲུང་། །
མེ་ལ་སོགས་པའི་མཚམས་དག་ཏུ། །
གནོད་སྦྱིན་[3]མོ་བཞི་རབ་བསྒོམ་བྱ[4]། ༤༡ །
ཀུནྡཱལཱི་ཧྲིདེཧྲ་གེཧ[5]། །
སུནྡརཱི་ཚོག་བཞིན་དགོད[6]། །

མོ་བསྒྲུབ་པར་འདོད་པའི་དུས་སུ་སྟེ་སྔོན་མོ་ཆེ་ཞེས་ལྷག་མའོ། །ས་བོན་མ་གསུངས་པ་ཡང་མན་ངག་གི་ཧཱུྃ་[7]ཡིག་ལས་སྐྱེས་པའོ། །དེ་ཡང་གཞལ་ཡས་ཁང་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ནི་གཤིན་རྗེའི་གཤེད་ཀྱི་གཞལ་ཡས་ཁང་བཞིན་ནོ། །

1 ལྷ་. སྣ་. ཟེ་. བཤད་བྱ་བ། 2 ལྷ་. ཀོས། 3 སྡེ་. གནོད་བཞིན། 4 ཟེ་. ནམ་བཞི་བྱ། 5 སྡེ་. ཀུཏྤཀྲིཧྲིཧེཧྲིཧེ། འདིར་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད། 6 ལྷ་. སྡེ་. བསུནྟཱི་ཚོག་བཞིན་དགོད། འདིར་ཞེ་ཀིང་པར་མ་དང་རྒྱ་དཔེ་མཐུན་པར་བཞག་ཡོད། 7 རྒྱ་དཔེར་. (གྲཱྀཥྚ་ཏྭ་ཀཱུར) ཏུ་ཡིག་ནག་པོ།

དེར་ནི་སློབ་རྣམ་བསློམས་དེ། །
བློ་བ་ལ་སོགས་མཉམ་པར་སོ། ༧༢ །

འཁོར་ལོ་སྟ་[1] མ་མཐོང་བ་བཞིན། །
དེ་བཞིན་མདོག་ནི་རབ་སྒྲུར་བྱ[2]། །

འདི་དག་ཐམས་ཅད་ནི་ཕྱུག་གཉིས་པ་ཡིན་ལ། བློ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཕྱུག་དྲུག་པ་ཉིད་དོ།༢༨—༧༢།

སྔར་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཞེས་པ་ནི་རྡུལ་ཚོན་བཀྱེ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་[3]བཞིན་དེ་གཞིན་རྗེའི་གཤེད་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་བཞིན་ནོ། །བདག་པོའི་མཚན་མ་འཛིན་ཞེས་པ་ནི་རལ་གཅིག་མ་བཞིན་བོད་པ་དང་གྲི་གུག……འཛིན་པའོ། །དོན་ནི་འདི་ཡིན་དེ། རལ་གཅིག་མའི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པས་སྔགས་ཀྱི་ཡི་གེ་འབྲུམ་ཅང[4] མི་སླ་བར་བཟླས་དེ། གང་གི་ཚེ་གནོད་སྦྱིན་མོ་བསྒྲུབ་པ་དེའི་ཚེ་གཞོན་ནུ་མས་བཀལ་བའི་སྐྲུད་པ་ལ་རས་ཁ་ཚར་མ་བཅད་པ་ལས་གནོད་སྦྱིན་མོ་བྲིས་པའི་ཐང་ཀ་བྲ་སྟེ། དེ་ཡང་རྒྱན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བརྒྱན་པ་ལང་ཚོ་ཕྱུན་སུམ་ཚོགས་པ་དང་། སྐྱེག་པའི་ཉམས་དང་། མེ་ཏོག་དང་། འབྲས་བུར་བཅས་པའི་སྤྱ་ངན་མེད་པའམ། བདའམ་ཨམྲའི་ཤིང་རྣམས་གང་ཡང་རུང་བའི་ཡལ་ག་ལག་པ་གཡོན་པས་འཛིན་ཅིང་གཡས་པས་མཆོག་སྦྱིན་པའོ། །དེའི་མདུན་དུ་མེ་ཏོག་དང་། སྤོས་དང་། བཟོས་གཙང་ལ་སོགས་པ་སྦྱིན་དེ[5]། དབེན་པའི་གནས་སུ་རལ་གཅིག་མའི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པས་

---

༡ ཅོ་༠ ཀླུ། ༢ ཐོ་༠ སྦྲང་། ༣ ཅོ་༠ གོ་ཀོ། ཐོ་༠ པེ་༠ གོ་འི། ༤ ཅོ་༠ ཅན། ༥ ཐོ་༠ ཞེ་༠ ས།

ཕྱག་མཚན་བདག་ཉིད་ལྷར་[1] འཛིན་པ། །
མཁས་པས་ཕྱི་ནས་སྔགས་བཟླས་ཏེ། ༨༣།

སྔགས་བཟླས་པར་བྱས་ན་ཉི་མ་བདུན་གྱིས་འོང་བར་འགྱུར་རོ། །འོང་བར་གྱུར་ན་དྲི་ཞིམ་པོའི་མེ་ཏོག་གི་ཆུ་མཆོད་ཡོན་དུ་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་ལས་[2] སྒྲུབ་པར་འགྱུར་རོ། །མ་དང་སྲིང་མོ་དང་། ཆུང་མ་སྟེ་གང་ཡང་རུང་བ་ངེས་པར་སླུ་བར་བྱའོ། །དེ་ལྟ་བུས་དེས་ཕ་སྐད་དུ་བྱེད་པར་འགྱུར་རོ། །གཞན་དུ་ན་གསོད་[3] པར་བྱེད་ཅེས་སོ། །ཡང་ན་ནག་པོའི་བཅུ་བཞི་འམ། བརྒྱད་པའི་ཚེས་གང་ཡང་རུང་བ་ལ་སྦྱང་ལེབ་ལ་སྔར་བཞིན་དུ་བྲི་བར་བྱས་ལ། རལ་གཅིག་མའི་རྣལ་འབྱོར་ལས་སྙིང་གའི་ས་བོན་གྱིས་[4] བཀུག་སྟེ། ཐོ་བ་ལ་སོགས་པའི་སྔགས་བཞིས་[5] ཉེ་བ་ཉིད་དུ་བཀུག་པ་དང་། རི་མོ་ལ་གཞུག་པ་དང་བཅིང་བ་དང་། དབང་དུ་བྱས་ལ་སྐྱེ་གནས་ལག་པས་བཀབ་ལ་སྔགས་བཟླ་བར་བྱའོ། །གཞན་དུ་ཅང་མི་སླུ་བས་སོ། །དེ་ནས་ཉི་མ་བདུན་གྱིས་འོང་བར་འགྱུར་རོ། །འོངས་ནས་སྒྲུབ་པོའི་སྟོབས་ཀྱིས་འདོད་པར་[6] བྱེད་ཅིང་བཙེ་[7] བ་སྣ་ཚོགས······པ་ཡང་སྟོན་པར་འགྱུར་རོ། །འཇིགས་པ་ཡང་སྟོན་པར་བྱེད་དོ། །འོན་ཀྱང་འཇིགས་པར་མི་བྱ་ཞིང་སླུ་བར་ཡང་མི་བྱའོ། །དེ་ནས་བདེ་བླག་ཏུ་གྱུར་པའི་རྗེས་ལ་དངོས་གྲུབ་ཏུ་འགྱུར་ཞིང་རྣལ་འབྱོར་པ་གང་ཡིན་པར་མངོན་པར་འདོད་པ་དེ་[8] དང་རྩེ་བར་བྱེད་དོ། །དེ་ནས་ཀྱང་མ་གྲུབ་ན་དེའི་ཚེ་གཤིན་རྗེའི་གཤེད

༡ ལྷ་° ལྷར། ༢ རྒྱ་དཔེར་° ལས་མི་འདུག ༣ པེ་° གསོལ། ༤ རྒྱ་དཔེར་° (བོ་ཌར་ཀྲ་མིད་) ས་བོན་གྱི་འོད་ཟེར་གྱིས། ༥ སྡེ་° བཞིན། ༦ སྣ་° པེ་° བས། ༧ སྡེ་° རྩེ། ༨ སྣ་° དེ་ཞེས་མི་འདུག

ཨོཾ་ཨེ་ཀ་ཛ་ཊཱི་བསྲུཧྣ་རཱི་ཧྲི[1]་སྭཱཱ་ཧཱཱ། ༨༨ །

ཀྲུ་ཀ་ཀཱི[2]་ནི་རབ་སྒྲུབ་ཐབས། །
དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་པར་བྱ། །
གང་ཞིག་བསྒོམས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། །
འཇིག་རྟེན་གསུམ་ལ་འཚོ[3]་ནུས་པ། ༨༩ །
སྐུ་མདོག་སེར་པོ་ཞལ་བཞི་པ། །
ཕྱག་བཞི་བོང་བུ་ལ་བཅིབས་པ། །

ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་རམ[4]། རལ་གཅིག་མའི་རྣལ་འབྱོར་གྱིས་རང་གི་སྙིང་གའི་ས་བོན་ལས་རྡོ་རྗེ་ལྕགས་ཀྱུ་སྤྲོས་པ་དང་། ལྕགས་ཀྱུ་རྣམས་ཀྱིས་སྐྱེ་གནས་ཕྱག་ལ༔ ཞགས་པས་སྐེ་ནས་བཅིངས་ཏེ་བཀུག་ནས་རི་མོ་ལ་གཞུག་པར་བྱའོ། །དེའི་མགོ་བོ་ཉིད་ལ་གཤིན་རྗེ་མཐར་བྱེད་བསྐལ་པའི་མེ་དང་མཉམ་པར་བསམ་པར་བྱ་ཞིང་འོག་ནས་ཀྱང་རེ་ཕས་མའི་ཐབ་ཁུང་སྟེ། དེ་ནས་ང་རྒྱལ་དང་བཅས་པས་དེར་བཀུག་སྟེ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་པོའི་སྔགས་པས་རལ་གཅིག་མའི་སྔགས་བཟླས་པར་བྱས་ནས་ངེས་པ་ཉིད་དུ་ཉི་མ་བདུན་ན་འགྲུབ་པར་འགྱུར་རོ། ༨༢_༨༨།

དེ་ནས། ཀྲུ་ཀ་ཀཱི་ནི་རབ་ཏུ་བསྒྲུབ། །ཅེས་བྱ་བ་ལ་དེའི་དངོས་གྲུབ་ནི་ཀྲུ་ཀ་ཀཱི་ཞེས་པ་སྟེ་དེ་ནི་སྙིང་པོ་འདོན་པར་བྱེད་པའོ། ༨༩།

སྐུ་མདོག་སེར་མོ་ཞེས་བྱ་བ[5]་ནི་གོ་སླ་སྟེ། ཕྱུ་ཡིག་གི་ས་བོན་ལས་སྐྱེས་པ་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །ཀྲུ་ཀ་ཀཱིའི་ལས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྙིང་འཕྲུག་པའི་

---

[1] ཅོ་དགེ་ར་. བསྲུསྣན། ལྷ་. བསྲུདྣ་རཱི། [2] ལྷ་. ཀྲ་ཀཱ་ས། [3] སྡེ་. འཚོ།
[4] སྣ་. ཟེ་. རྣལ་འབྱོར་མ། [5] ཅོ་དགེ་ར་. ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ།

ཕྲུཀ྄ཀཱསྟྲཱིཡི་ལུས་[1]བསྒོམ་བྱ། །
ཞགས་པ་ཐོ་བ་མདའ་དག་དང་། །
བརྟུལ་ཞུགས་ཅན་གྱིས་གཞུ་བཅས་བསྒོམ།།
ཨོཾ་ཕྲུཀ྄ཀཱསྟྲཱིཡཾ་ཞེས་སྔགས་བརྗོད་དོ་[2]།༡༧།
འཇམ་པའི་རྡོ་རྗེའི་དཀྱིལ་འཁོར་ནི། །
དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་པར་བྱ[3]། །

ལས་སོ། །དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། དེ་ལྟ་བུའི་རྣལ་འབྱོར་པས་[4] ལྕེ་ལ་ཛ་[5]ཡིག་དམར་པོ་ལས་བྱུང་བའི་འོད་ཟེར་རྣམས་ཀྱིས་བསྒྲུབ་བྱའི་སྙིང་ཕུག་སྟེ། སྙིང་ཁཾ་ཡིག་དཀར་པོར་བསམ་པར་བྱ་སྟེ། དེ་ནས་དེའི་སྙིང་འོད་ཟེར་དེ་རྣམས་ཀྱིས་བཀུག་སྟེ། རང་གི་སྙིང་ལ་ཞུགས་པར་བསམ་པར་བྱའོ། །ཞགས་པ་ནི་གཡོན་དུའོ། །ཐོ་བ་ནི་གཡས་པར་རོ། །གཡས་པ་ན་མདའོ། །གཞུ་ནི་གཡོན་པ་སྟེ། དེ་ཡང་ཞགས་པ་ནི་དེའི་སྐེ་ནས་འཆིང་བར་བྱེད་དོ། །ལྕགས་ཀྱུ་[6]ནི་འགུག་པར་བྱེད་དོ། །གཞུ་ནི་བཀང་སྟེ་སྙིང་གི་གནས་སུ་མདའ་རྡེག་པར་བྱེད་དོ། །ཨོཾ་ཕྲུཀ྄ཀཱ་ཕྲུཀ྄ཀཱ་[7]ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཨོཾ་ཕྲུཀ྄ཀཱ་ཆེ་གེ་མོ་འི་ཕྲུཀ྄ཀཱ་[8]ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི་ཡི་གེ་འབུམ་སྔོན་དུ་བསྙེན་པར་བྱའོ།༡༨།

མི་སྣང་བའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་

༡ ཀུ་དཔེར་། (ཀཱསྟྲི) ལུས། ༢ ཀུ་དཔེར་། ཨོཾ་ཕྲུཀ྄ཀཱསྟྲཱིཡཾ་ཨོཾ་བཞིན། ཀུ་དཔེར་། གོང་གསལ་ཚིག་རྐང་ལྔ་ཚིག་ལྷུག་སུ་འདུག ༣ ལྷ་། ནེ་། བྱ་བ། ༤ སྣ་། པས། ༥ ཀུ་དཔེར་། ཛཿ། ༦ ཀུ་དཔེར་། (ཕྲུཀ྄ཀཱཀྟེ)གྲོ་བ། ༧ སྣེ་། ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཨོཾ་ཕྲུཀ྄ཀཱ་ཞེས་པ་ཆད་འདུག
༨ ཀུ་དཔེར་། ཕྲུཀ྄ཀཱ་ཞེས་གཉིས་འདུག

དེ་ཡི་མོད་ལ་མི་སྣང་བར།
འཇམ་པའི་རྡོ་རྗེ་གྲགས་འགྱུར་པ། ༨༧
འབར་བའི་གསེར་འོད་[1] འདྲ་བ་ཡི།
སེར་པོ་ཞལ་གསུམ་ཕྱག་དྲུག་པ།
གཞོན་ནུའི་གཟུགས་ནི་འཛིན་པའི་མགོན།
མི་མཐོང་བྱ་བའི་དོན་དུ་བསྒོམ། ༨༨
ཤར་དུ་མཛེས་མ་དགོད་པར་བྱ།
དེ་བཞིན་ལྷོ་རུ་སྒྲ་ཅན་མ།
ནུབ་ཏུ་སེར་པོ་བསྒོམ་པར་བྱ།
བྱང་དུ་ཉེ་བའི་སྒྲ་ཅན་མ། ༨༩
ཐམས་ཅད་ཕྱག་ན་རལ་གྲི་དང་།
འཁོར་ལོ་ལ་སོགས་གཞན་ལ་དགོད།

ལ། འཇམ་པའི་རྡོ་རྗེ་རབ་བསྒྲུབ་པ་ནི་འཇམ་པའི་རྡོ་རྗེ་རབ་ཏུ་གྲུབ་ནས་བསྒྲུབ་པའོ། ༨༧།

སེར་པོ་ཞེས་པ་ནི་རྩ་བའི་ཞལ་སེར་པོའོ། །གཡས་པ་དང་། གཡོན་པ་དག་ནི་དཀར་པོ་དང་སྔོན་པོའོ། །མན་ངག་ལས་ནི་གཡས་པ་ན་[2] རལ་གྲི་དང་། མདའ་དང་གྲི་གུག་འཛིན་པའོ། །གཡོན་པ་ན་ཨུཏྤལ་སྔོན་པོ་དང་གཞུ་དང་ཐོད་པ་འཛིན་པ་དང་། ༨༨–༨༩།

ཕྱག་ཅེས་པ་ནི་གཡས་པའི་ཕྱག་དང་པོ་འོ། །འཁོར་ལོ་ལ་སོགས་

---

1 སྡེ་ སེར་པོ། 2 ཅོ་ ན་རི།

ཐམས་ཅད་ཞལ་གསུམ་ཕྱག་དྲུག་པ། །
སྣ་ཚོགས་རྒྱན་གྱིས་བརྒྱན་པའོ། ༤༠ །

ས་བོན་ཡི་གེ་མཾ་[1] ལས་བྱུང་། །
དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ནི་དབུས་ན་བཞུགས། །
ཐམས་ཅད་ཞབས་ནི་གཡོན་བརྐྱང་བས། །
རི་བོང་ཅན་གྱི་གདན་ལ་བཞུགས། ༤༡ །

འོད་ཟེར་ཅན་དང་རི་ཁྲོད་མ། །
དེ་བཞིན་ནོར་འཛིན་སྐྱིལ་བྱེད་མ། །
མེ་ལ་སོགས་པའི་མཚམས་བཞི་རུ། །
བསྡུམ་[2] པ་དགོད་བྱ་སྐྱོང་པོ་ལའོ། ༤༢ །

སྒྱུ་ངན་མེད་དང་ཡལ་འདབ་དང་། །
འབྲས་ཀྱི་སྐྱེ་མ་དབྱིག་པའོ། །

གཞན་ལ་དགོད། །ཅེས་བྱ་བ་ནི་ཕྱག་གཞན་ལྷག་མ་རྣམས་སྐྱུའོ། །ཀཏྟི་ཀ་སྒྲུག་གཤིན་རྗེའི་གཤེད་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་མཚན་མ་འཛིན་པའོ། །སྐྱོང་པོ་བསྡུས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྐྱོང་བོར་གྱུར་པའོ།༤༠_༤༢།

ཕྱག་མཚན་གྱི་གཙོ་བོ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། སྒྱུ་ངན་མེད་འདབ་ཅེས་[3] བྱ་བ་སྟེ། མེ་ཏོག་དང་འབྲས་བུར་[4] བཅས་པའི་སྒྱུ་ངན་མེད་པའི་ཡལ་འདབ་བོ། །ཡལ་ག་ཞེས་པ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཤིང་གི་ཡལ་གའོ། །དབྱིག་

1 ཞེ་。 མ་ལས་བྱུང་། 2 ལྷ་。 བསྡུས། 3 སྡེ་。 ཞེ་。 འདུད་ཞེས། 4 ཅོ་ནེ་。 (བཞ) ལོ་མ།

སེར་དང་ལྗང་དང་ཡང་སེར་པོ། །
དཀར་པོའི་ལུས་ནི་བསྐམ་པར་བྱ། ༧༢ །
ཀུན་ཀྱང་ཞལ་གསུམ་ཕྱག་དྲུག་པ། །
དཀྱིལ་འཁོར་དག་ཏུ་གདབ་པར་བྱ། །
ཐོ་བ་ལ་སོགས་སྐོ་བ་བཞི། །
བསྒོམས་ན་མཐོང་བར་མི་འགྱུར་རོ། ༧༨ །

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེའི་[1]… གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད་ལས་འཇམ་པའི་རྡོ་རྗེ་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་ཞེས་བྱ་སྟེ་རིམ…… པར་ཕྱེ་བ་[2]བཅུ་བཞི་པའོ།། །།

པ་ཞེས་པས་ནི་དགྲ་གུ་གསུམ་པའོ། །འདི་རྣམས་ཀྱང་ཕྱག་གཉིས་པའི་ཕྱིར་ན་གཞན་གྱིས་ནི་ཕྱོགས་མཐུན་ཅན་ནོ། །སྐུ་མདོག་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ༑ སེར་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུའོ། །ཐོ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་སྔར་བཞིན་ནོ། །བསྒོམ་ཞེས་པ་ནི་འདི་ལྟ་བུའི་བཅོམ་ལྡན་འདས་སོ༑༧༢༑

མཐོང་བར་མི་འགྱུར་ཞེས་པ་ལ། ཙ་ཡིག་ནི་བདག་ཉིད་སྙིང་རྗེའི་དབང་གིས་སྟོན་པར་ཡང་བྱེད་དོ།༧༨།

གང་དུ་འཇམ་པའི་རྡོ་རྗེ་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་སྟོན་པ་དེ་བཞིན་དུ་ལེའུ…… འདི་ཡང་ངོ་། །ལེའུ་བཅུ་བཞི་པའི་བཤད་པ་རྫོགས་སོ།། །།

---

༡ ལྷ་༠ ཛེ། ༢ རྒྱ་དཔེར་༠ རིམ་པར་ཕྱེ་བ་མི་འདུག

ལེའུ་བཅོ་ལྔ་པ།

འཕགས་པ་ཛཱ་གུའི་འི་[1] སྒྲུབ་ཐབས།
དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་པར་བྱ།
གང་ཞིག་བསྒོམ་པ་ཙམ་གྱིས་ནི།
རྒྱ་ཡི་སྟེང་ནས་འགྲོ་འགྱུར་བ། ༡
སེར་པོ་ཞལ་གསུམ་ཕྱག་དྲུག་པ།
ས་བོན་ཧྲཱུཿལས་ཡང་དག་བྱུང་།
སྐུ་ཆེན་ཕྱག་ན་སྦྲུལ་བསྣམས་པ།
རྨ་བྱ་ལ་ནི་ཞོན་པ་[2] དགོད། ༢

ས་བོན་ཧྲཱུཿལས་ཡང་དག་བྱུང་། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྔར་བཞིན་དུ་གཞལ་ཡས་ཁང་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པའི་རྗེས་ལ་སྟེ། ཨ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ནི་མེ་ལོང་ལྟ་བུའི་ཡེ་ཤེས་[3] དང་། ཀ་ལ་སོགས་པས་ནི་མཉམ་པ་ཉིད་དང་། ཧྲཱུ་ཡིག་ལས་བྱུང་བའི་སྦྲུལ་ནི་སོ་སོར་རྟོག་པ་དང་སྦྲུལ་གྱི་སྙིང་གར་ཡང་ཡི་གེ་ཧྲཱུཿནི་བྱ་བ་གྲུབ་པའི་ཡེ་ཤེས་[4] སོ། །མེ་ལོང་ལ་སོགས་པ་གཅིག་ཏུ་གྱུར་ན་ནི་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་པའི་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཏེ། དེ་ལས་སྐྱེས་པའི་ཧྲཱུཿཡིག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་རྫོགས་དེ་[5]། ཕྱག་ན་སྦྲུལ་རྣམས་ཞེས་པ་ནི་གཡས་པའི་ཕྱག་ནའོ། །གཡས་པའི་ཕྱག་གཞན་དག་ནི་རལ་གྲི་དང་གྲི་གུག་འཛིན་པའོ། །གཡོན་པའི་ཕྱག་གསུམ་དུ་འཁོར་ལོ་དང་། པདྨ་དང་། ཐོད་པ་[6] བསྣམས་པའོ། །རྨ་བྱ་ལ་ནི་ཞོན་ཞེས་པ་[7] ནི་རྨ་བྱ་ལ་ཆིབས་པའོ། ༡–༢།

༡ ཐ་ c འཇངགུལིའི། ཕ་ o ཇངགུལིའི། ༢ ཕ་ o པར། ༣ ཅོ་ནེར་ o ལྟ་བུའི་ཡེ་ཤེས། ཞེས་མི་འདུག ༤ ཅོ་ནེར་ o ཡེ་ཤེས་མི་འདུག ༥ ཐ་ o ཕ་ o སོ། ༦ ཐ་ o ཕ་ o ཐོ་བ།
༧ ཐ་ o ཕ་ o ཞེས་བྱ་བ་ལ་བྱ་བ་ཆིབས་པའོ། །

ཤར་དུ་ཙ་བྱ་དགོད་པར་བྱ། |
དེ་བཞིན་ཀློ་ཙ་ཁྲོ་ཉེར་ཅན། |
ནུབ་ཏུ་རི་ཁྲོད་ལོ་མ་ཅན། |
བྱང་དུ་ཧོ་ཧེ་ལྷུགས་སྐྱོག་མ། ༢ |
ཙ་བྱའི་སྒྲོ་དང་སྤྱི་བླུགས་དང་། |
ལོ་མ་དང་ནི་ལྷུགས་སྐྱོག་མ། |
དེ་དག་རྣམ་པར་བསྒོམ་པར་བྱ། |
སེར་དང་དམར་དང་དེ་བཞིན་ལྗང་། ༣ |
ཁ་དོག་སྔོན་པོ་དབྱེ་བ་ཉིད། |
མཁས་པས་འདི་རྣམས་[3]བསྒོམ་པར་བྱ། |
དེ་བཞིན་སྔགས་འདི་དག་ཀུང་བཟླས། ༤ |

ཨོཾ་ཕྲུཿ[2] ཛཿ།

ཙ་བྱ་[1]ལ་སོགས་པ་རིམ་པ་བཞིན་དུ་ཕྱག་གཡས་པའི་མཚན་མ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། སྒྲོ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། སྒྲོ་ནི་ཙ་བྱའི་སྒྲོ་འི་ཚོགས་སོ། །ཡལ་ག་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཤིང་གི་ཡལ་གའོ། །ལྷུགས་སྐྱོག་ནི་ཧོ་ཧེ་ཡུ་ག་རྒྱུད་དོ། །འདི་རྣམས་ཀྱི་རིམ་པ་ཛི་ལྟ་བར་ཁ་དོག་དབྱེ་བ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། སེར་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ། ། འདི་རྣམས་ཀྱི་ཕྱག་མཚན་ཇི་སྐད་གསུངས་པའི་བར་དུ་ནས་ཕྱག་གཞན་རྣམས་སུ་ཡང་གཏི་མུག་ག་ཤིན་ཧེ་གཤེད་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་ཕྱག་མཚན་རྣམས་སོ། །༢—༤།

---

༡ རྒྱ་དཔེ་དང་བོད་འགྲེལ་ལྟར་འདི་རྣམ་ཞེས་བཞག་ཡོད། ཅོ་༠ སྡེ་༠ འདི་ལྟར། ༢ རྒྱ་དཔེར་༠ ཧྲཱུཿ། ཅོ་༠ ཨོཾ་ཧྲཱུ་ཛ། ༣ སྣ་༠ པེ་༠ ཙ་ཐ་མ་ལ།

ཐོ་བ་ལ་སོགས་སྒོ་རུ་དགོད། |
མེ་ཏོག་ལ་སོགས་མཚམས་སུ་དགོད། |
ཛཾ་གུ་ལི་[1]ཡི་སྦྱོར་བ་ཡིས། |
རྒྱ་ཡི་སྟེང་ནས་རྟག་ཏུ་འགྲོ ༦ |
ཀུཎྜ་ཀུལླི་རབ་སྦྱིན་ཐབས། |
དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་པར་བྱ། |
གང་གིས་བསྒོམས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། |
སྐུ་ཡི་བུ་མོ་རབ་འགུགས་པ། ༨ |

མེ་ཏོག་ལ་སོགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྔར་བཞིན་དུ་ཕྱག་གཉིས་པ་ཉིད་དོ།། །དེ་ལྟར་བསྒོམ་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་དང་། རྒྱའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་ལཾ་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་དབང་ཆེན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་སེར་པོ་བསྒོམ་པར་བྱའོ།།༦།

ཀུཎྜ་ཀུལླེ་ཡང་རྡོ་རྗེའི་ར་བ་དང་རྡོ་རྗེའི་གུར་བསྐྱེད་པའི་མཐར་...... ཐམས་ཅད་སྔ་མ་བཞིན་ནོ། ཁྱད་པར་ནི་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པ་ལྔ་སྟེ། ས་བོན་ལས་ཨུཏྤལ་[2]ནི་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་[3]ཡིན་ལ། དེའི་ལྟེ་བར་[4]ཟླ་བ་ལ་གནས་པའི་ས་བོན་ལས་སྤྲོས་པ་དང་བསྡུས་པ་ནི་བྱ་བ་སྒྲུབ་པ་དང་། ཐམས་ཅད་རོ་གཅིག་ཏུ་གྱུར་པ་ནི་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་པའི་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་...སོ།། །དེ་ལས་བྱུང་བའི་ཧྲཱིཿཡིག་ནི་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའོ་[5] །༨½།

---

༡ རྒྱ་དཔེར༔ (ཛྷཾ་ཛྫུ་ཀུལི) འཐགས་པ་ཛཾཀུལི། ཅོ༔ ཛཾང་ཀུལི། སྣར༔ ཛཾཀུལི།
༢ རྒྱ་དཔེར༔ (བཱི་ཛ་ཨོཏྤལ) ས་བོན་ལས་སྐྱེས་པ། ༣ རྒྱ་དཔེར༔ ཡེ་ཤེས་མེ་འདུག
༤ རྒྱ་དཔེར༔ (གརྦྷ) སྙིང་པོ། ༥ རྒྱ་དཔེར༔ (སཏྭ་ཙཀྲེ་ཤྭ་ར) སེམས་དཔས་རྫོགས་པའོ།།

ཁ་དོག་དམར་པོ་ཞལ་བཞི་པ། །
ཕྱག་བརྒྱད་དང་ནི་རབ་ཏུ་ལྡན། །
ཧཱུྃ་ཡི་ས་བོན་ལས་བྱུང་བས། །
ཀླུ་ནི་འགུགས་པར་བྱེད་པ་ཡིན། ༨ །

ཕྱག་བརྒྱད་དུ[1]་ནི་ཀླུ་དགོད་དེ། ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཡས་པའི་ཕྱག་བཞིར་མཐའ་ཡས་དང་། འཇོག་པོ་དང་། རིགས་ལྡན་དང་། དུང་སྐྱོང་རྣམས་རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བར་ཨུཏྤལ་སྔོན་པོ་ལྟར་སྔོ་བསངས་དང་། དམར་མོ་དང་། མདོག་སྣ་ཚོགས་དང་། སེར་པོ་རྣམས་སོ། །གཡོན་པར་ཕྱག་བཞིར་ནི་པདྨ་དང་། སྟོབས་ཀྱི་རྒྱུ་དང་། ནོར་བདག་དང་། པདྨ་ཆེན་པོ་རྣམས[2]་རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བར་དཀར་པོ་དང་། ནག་པོ་དང་། སེར་པོ་དང་། དཀར་བསངས་ཀྱི་མདོག་རྣམས་སོ། །ཀླུ་འགུགས་པར་བྱེད་པ་གསུངས་པ། འདིས་ནི་ཆར་འབེབས་པའི་ནུས་མཐུ་འབྱུང་བ་ཉིད་དོ། །དེ་ལ་མན་ངག་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། ཁམ་ཕོར་སོ་མ་བདང་བ་ལ་རམས་ཀྱི་ཁྲ་ཐེས་རལ་གྲི[3]་རྩིབས་བརྒྱད་པའི་འཁོར་ལོ་འི་…དབུས་སུ་པདྨ་འདབ་མ་བརྒྱད་པ་བྲིས་ལ། ལྟེ་བར་ཀུཎྜ་ཀུ་ལཱི་འི་སྔགས་བསྒྲུབ་བྱའི་ཀླུའི་མིང་དང་སྤེལ་ཏེ་བྲི་བར་བྱའོ། །ཨོཾ་ཀུཎྜ་ཀུ་ལཱི་ཧཱུྃ་ཨ་མོ་ཀྵ་ན་གཱ་ཀ་ཁ་ཡ[4]། བརྟར་ཤ་ཡ[5]། དར་ཛ་ཡ[6]། གར་ཛ་ཡ། ཕུཿཧྲིཿསྭཱ་ཧཱ། དབུར་ཀླ་ར་བ་ལ་སོགས་པའི་ཀླ་བ་གསུམ་ལ་རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བར་སྟོབས་ཀྱི་རྒྱུ་དང་། དུང་སྐྱོང་དང་ནོར་བདག་རྣམས་ཏེ། དེ་ལྟར་བརྗེས[7]་ཤིང་བསྒྱུར་བས། ཀླ་བ་ནི་རིམ་པ་

1 ཅུ་ ༠ དུ་མི་འདུག 2 ཅུ་ ༠ རྣམས་དང་། 3 རྒྱ་དཔེར་ ༠ རལ་གྲི་མི་སྣང་། 4 རྒྱ་དཔེར་ ༠ ཁཱཡ། 5 ཅུ་ ༠ བརྟར་ཤཱཡ། 6 རྒྱ་དཔེར་ ༠ གརྫཡཧཱུྃ་ཕུཿ 7 ཅོ་ ༠ བརྗེ།

ཕྱག་བརྒྱད་དུ་ནི་སྐུ་དགོད་དེ། །
མཐའ་ཡས་ལ་སོགས་སྐུ་རིགས་བརྒྱད། །
ལུས་ནི་སྨུལ་[1]གྱིས་རབ་ཏུ་བརྒྱན། །
བདུལ་ཞུགས་ཅན་གྱི་[2]མཛེས་མ་བསྐོམ། ༧ །
སྔགས་ནི་ཨོཾ་ཀུ་ཎྜ་ལཱི་ཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱཧཱ། །
དེ་ནས་གསང་བ་བཤད་པར་བྱ། །
བསྡུས་ན་[3]ཡིན་གྱི་རྒྱས་པ་མིན། །
ཤེས་པ་གང་ཞིག་པ་ཙམ་གྱི་[4] ། །
ལྷ་ཡི་བུ་མོ་འགུག་[5]བྱེད་པ། ༡༠ །
ཕྱག་གཉིས་པ་ལ་ཞལ་གཅིག་སྟེ། །
ཕྱག་ན་མདའ་དང་གཞུ་བསྣམས་པ། །

བཞིན་དུ་སྐུ་རྣམས་ཀྱི་མིང་དང་སྤྱིལ་བར་བྱས་ལ། ཁམ་ཕོར་སོ་མ་བདང་བ་གཞན་ཞིག་གིས་ཁ་སྦྱར་བར་བྱ་ཞིང་སྐྱུད་པ་སེར་[6]པོས་དཀྲི་བར་བྱའོ། །དེ་ཙ་ཀུ་ཎྜ་ལཱི་དགུག་པ་དང་། གཞུག་པ་དང་། བཅིངས་པ་དང་། དབང་དུ་བྱས་ལ་ཡང་དག་པར་མཆོད་ཅིང་གནང་བ་མནོས་ནས་སྐུས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་ཆུ་མིག་ལ་སོགས་པར་བཅུག་ན་དེར་འབེབས་པར་འགྱུར་རོ། ༨–༧།

རིག་པ་འཛིན་མ་[7]དགུག་པའི་དོན་དུ་ཧོ་ཛེ་ལུས་མེད་བསྟན་པ། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དབང་དུ་བྱེད་ཅེས་པ་ནི་ཕན་པར་བྱེད་པའོ། །

---

༡ ཅོ་དཔེར་° (སྣ) ཀུན། པེ་° ཚིག་རྐང་འདི་མི་འདུག ༢ ལྷ་° ཀྱིས། ༣ ལྷ་° ནས། ༤ ལྷ་° གང་ཞིག་ཞེས་པ་ཙམ་ཀྱིས་ནི། ༥ ལྷ་° འགུགས། ༦ ཅོ་དཔེར་° (ནེ་བརྒྱད་) སྐུད་པ་སྔོན་པོས། ༧ པེ་° པ། ཅོ་དཔེར་° (ཨམས་) ལྷ་མོ།

ལུས་འདི་[1] སེར་པོ་ཆེན་པོ་ཡི། |
རྡོ་རྗེ་ལུས་མེད་བསྒོམ་པར་བྱ། ༡༡ |
ཤར་དུ་དགའ་མ་བསྒོམ་པར་བྱ། |
ལྷོ་རུ་འདོད་པའི་མཛེས་མ་བསྒོམ། |
ནུབ་ཏུ་འདོད་པའི་ལྷ་མོ་བསྒོམ། |
བྱང་དུ་འདོད་པའི་ལྕགས་ཀྱུའོ། ༡༢ |
འདོད་པའི་ལྷ་མོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི། |
ཕྱག་ཏུ་མདའ་དང་གཞུ་བསྒོམ་བྱ། |
སེར་དང་དམར་དང་དེ་བཞིན་ལྗང་། |
དམར་སྐྱ་དག་ནི་བསྒོམ་པར་བྱ། ༡༣ |
མཚམས་རྣམས་སྨུ་ནི་ནག་དགོད་པ། |
མི་འགག་དེ་བཞིན་མཚམས་ཀྱི་བདག |

ཕྱག་ན་མདའ་དང་གཞུ་བསྣམས་[2] ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཡས་ལ་དང་གཡོན་གྱི་ཕྱག་དག་ན་མདའ་དང་གཞུ་འཛིན་པའོ། ༡༠–༡༣།

དགའ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཕྱག་མཚན་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། གཞུ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །སྐུ་མདོག་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། སེར་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །མ་འགགས་པ་ལ་སོགས་པ་[3]ནི། རྡོ་རྗེ་ཙརྩིཀ་ལ་སོགས་པའི་སྐུ་མདོག་ཡིན་ལ། དབྱིད་ལ་སོགས་པ་ནི་སྤྲོ་བ་ལ་

---

༡ ལྷ་° ནི། ༢ སྣ་° པེ་° བསྐུམས་ཤེས་ཞེས། ༣ ཤུ་དཔེར་° ཞེ་ནི།

དཔྱིད་[1] དང་སྤྲིཙུའི་[2] རྒྱལ་མཚན་ནི། །
སྒོ་ཡི་ཕྱོགས་ཀྱི་བཞེད་པར་བྱ། ༡༣ །
འདོད་པ་འཁྱིང་དང་འཁྱིང་བག་ཅན། །
དྲན་དང་དེ་བཞིན་མདའ་གྲི་ཅན། །
ལྷ་རྣམས་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །
དབུ་ལ་ཀ་ཤིན་ཛེའི་[3] ཀ་ཤེད་པོ་བསྒོམ། ༡༤།
བྱད་མེད་ཀྱི་ནི་པདྨ་ཙ° ། །
རྡོ་རྗེ་ལུས་མེད་བསྒོམ་པར་བྱ། །

སོགས་པའི་མདོག་གོ །འདི་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཕྱག་གཉིས་པའོ་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །ཀ་ཤིན་ཛེ་ཀ་ཤེད་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྔར་གྱི་དེ་བཞིན་དུ་[5] དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་སོ། ༡༣–༡༤།

དགུག་པའི་ཚིག་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། བྱད་མེད་ཀྱི་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། བྱ་རོག་གི་གདོང་གི་ནང་དུ་གནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི། བསྒྲུབ་བྱ་བྱད་མེད་ཀྱི་སྐྱེ་གནས་ཀྱི་དབུས་སུ་གནས་པའོ། །གཞན་ཡང་བདག་ཉིད་རྡོ་རྗེ་ལུས་མེད་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པར་གྱུར་པས་སོ། །རྡོ་རྗེ་ལུས་མེད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་དེའི་ལྟགས་ཏེ་[6] ལྟགས་དང་ལྷ་དག་དབྱེར་མི་ཕྱེད་པའི་ཕྱིར་…

---

༡ རྒྱ་དཔེ་དང་བོད་འགྲེལ་ལྟར་དཔྱིད་ཞེས་བཞག་ཡོད། སྡེ་° སྣར་° ཀཡི། ༢ རྒྱ་དཔེར་° (མཀར་ཀེ་ཏུ) ཟ་སྤྲིན་རྒྱལ་མཚན། ༣ སྡེ་° ཆེ། ༤ རྒྱ་དཔེར་° (ཁགསྐྱཁ) བྱ་རོག་གདོང་ཞེས་ཡོད་པ་བོད་འགྲེལ་དུ་བྱད་མེད་ཀྱི་སྐྱེ་གནས་ཀྱི་དོན་དུ་གསལ། ༥ རྒྱ་དཔེར་° དེ་བཞིན་དུ་མི་འདུག ༦ སྣར་° ཡེ་° ལྟགས་མོ་ཏེ།

ཡི་གེ་ཧྲཱིཿ[1] ལས་ཡང་དག་བྱུང་། །
ཀུན་དུ་འཁོར་བར་རྣམ་པར་འགྲོ། ༡༦ །
བསྐུས་ཤིང་གཡེངས་པ་བསྒོམ་པར་བྱ། །
སྒྲོས་ནས་བདེ་བའི་འདོད་ཡོད་ཀྱིས[2]། །
དམར་པོ་འི་གོས་ཀྱིས་ཡོངས་དཀྲིས་དེ། །
ཀང་པའི་དྲུང་དུ་ལྷུང་བར་འགྱུར། ༡༧ །
དེར་ནི་ཐུགས་ཀྱང་བཟླས་པར་བྱ། །
ཡི་གེ་ཨོཾ་ནི་རིང་པོར་སྣང་[3]། །
ཡི་གེ་སྭཱ་ཧཱ་མཐའ་མར་སྦྱིན། །
ཡི་གེ་ཤིདའི་[4] ཐུགས་བཟླས་བྱ། ༡༨ །

རོ༔ །དེའི་ཐུགས་[5] ཅི་ཞེ་ན། གསུངས་པ། ཡི་གེ་སིདའི་[6] ཐུགས་སོ། །ཡི་གེ་སིད་ལས་ཡང་དག་བྱུང་། ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཤིན་ཏུ་གསལ་བའི་འོད་ཟེར་འབར་བ་རྣམ་པར་སྤྲོས་པ་དེའི་ལུས་ཐམས་ཅད་ཁྱབ་པའོ།༡༦།

སྒྲོས་ནས་བདེ་བ་འདོད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་ཤིན་ཏུ་བདེ་བ་འདོད་པའོ། །ཨོཾ་གྱི་ཡི་གེ་དབྱངས་དང་སྦྱིལ། ཞེས་བྱ་བ་ནི་མན་ངག་གིས་ཨོཾ་དང་ཧྲིཿཡིག་ནི་དང་པོར་བྱ་བའོ། །ཡི་གེ་སྭཱ་ཧཱ་དེ་རྗེས་སྦྱིན། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡི་གེ་སིདྡྷ་[7] དབུས་སུ་སྦྱིན་ཞིང་མཐར་ནི་སྭཱ་ཧཱའི་སྒྲ་སྦྱིན་པར་དྲའོ།༡༧–༡༨།

༡ ཅུ་དཔེར་° ཤིད། ལྷ་° ཨིད། ༢ ལྷ་° ཀྱི། ༣ ལྷ་° ས་° སྣ་° སྣང་། ༤ ཅུ་དཔེ་ལྟར་ཤིདའི་ཞེས་བཞག་ཡོད། ལྷ་° སྣེ་° སིདྡིའི། ༥ སྣ་° ཐུགས་ནི་ཅི། ༦,༧ ཅུ་དཔེར་° ཤིདྡྷ།

ཆེ་གེ་མོ་ཞིག་བདག་དབང་འགྱུར། |
ཐམས་ཅད་དུ་ནི་བསྒོམས་[1]བྱས་ན[2]། |
ནག་པོའི་ཚིག་ནི་ཇི་བཞིན་གྱིས། |
རྣལ་འབྱོར་འདོད་པས་དེ་འཐོབ་འགྱུར། ༡༦།

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེའི······ གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད་ལས་ལུས་མེད་རྡོ་རྗེའི་སྒྲུབ་ཐབས་རིམ་[3]པར་ཕྱེ་བ་སྟེ······ བཅོ་ལྔ་པའོ།། ||

དེ་ལས་[4] ནི་ཨོཾཧྲཱིཨསྟྲུཀམེབཤིབབསྟུ[5] སིདྡྷི[6] སྭཱཧཱ། ལན་བདུན་ནི་ཉི་མ་བདུན་ནོ། ༡༦།

གང་དུ་རྡོ་རྗེ་ལུས་མེད་ཀྱི་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་བསྟན་པ་དེ་ནི་[7]རྡོ་རྗེ་ལུས་ཀྱི་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་སོ། །ལེའུ་བཅོ་ལྔ་པའི་བཤད་པ་རྫོགས་སོ།། ||

---

1 ཅོ་དཔེར་། (བྷཱ་བ་ཡེཏྶརྦ་བ་དྷཱ་སརྦ) ཉིན་བདུན་དུ་ནི་བསྒོམ་བྱས་ན། 2 ལྷ་། ནས།
3 ཅོ་དཔེར་། རིམ་པར་ཕྱེ་བ་ཞེས་མི་འདུག 4 ཅོ་དཔེར་།(མདྡཿ) ཐུགས་ནི།
5 ཅོ་དཔེར་། ན་ཤུ་ཏུ། 6 ཅོ་དཔེར་། ཀྐུ། 7 སྣ་། པེ་། དེའི་རྡོ་རྗེ།

ལེའུ་བཅུ་དྲུག་པ།

ཧེ་རུ་ཀ་ཆེན་སྒྲུབ་པའི་ཐབས། |
དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་པར་བྱ། |
རྣལ་འབྱོར་འཁོར་བར་བཅིངས་པ་ལ། |
གང་ཞིག་ཤེས་པས་[1] མྱུར་གྲོལ་བ། ༡ |

ཕྱག་གཉིས་པ་ལ་ཞལ་གཅིག་སྟེ། |
ཁ་དོག་སྔོན་པོ་ཕྱེད་གར་ཅན། |
རྡོ་རྗེ་ཕྱག་ཏུ་བསྒོམ་པར་བྱ། |
གཞན་ཡང་ཐོད་པ་བསྒོམ་པར་[2] བྱ། ༢ |

སྤྱན་གསུམ་སྐྲ་ནི་གྱེན་དུ་འགྲེང་། |
ཕྱག་རྒྱ་ལྔ་ཡིས་རྣམ་པར་བརྒྱན། |

ཤེས་པར་ཞེས་པ་ནི་མངོན་དུ་བྱེད་པའོ། ༡ |

དེའི་རང་བཞིན་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ[3]། ཕྱག་གཉིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། རྡོ་རྗེ་[4] ཕྱག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཡས་པའི་ཕྱག་རྒྱའོ། །གོ་རོད་[5] ནི་ཐོད་པའོ། །གཞན་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཡོན་པར་རོ། ༢ |

ཕྱག་རྒྱ་ལྔ་[6] ཞེས་པ་ནི་འཁོར་ལོ་དང་། རྣ་ཆ་དང་། མགུལ་རྒྱན་

---

༡ སྡེ་° ས། ༢ ཅོ་དཔེར་° (སྣར་ཐང་)དགོད་པར་བྱ། ༣ སྡེ་° པེ་° པའོ། ༤ ཅོ་དཔེར་° རྡོ་རྗེ་མི་འདུག
༥ སྡེ་° ཏོ། ཅོ་དཔེར་° ཀ་རོ་ཊི། ༦ སྡེ་° ཕྱག་ལྔ། འདིར་ཅོ་དཔེ་དང་མཐུན་པར་བཞག་ཡོད།

ཁ་ཊྭཾ་ག་ནི་གཡོན་ཕྱོགས་སུ། །
ཕྲེང་བ་དག་གིས་རྐང་པ་བརྒྱན། ༢ །

ས་བོན་ཧཱུྃ་ལས་ཡང་དག་བྱུང་། །
ཡི་དྭགས་ལ་གནས་ཏག་ཏུ་དགོད། །
སངས་རྒྱས་ལྷ་ཙ་རབ་སྦྱོར་བ། །
ཐོད་པ་ལྷ་ནི་དབུ་ལའོ། ༨ །

ཅོད་པན་ལ་ནི་མི་བསྐྱོད་བསྒོམ། །
ཧེཙཀར་གྲགས་བསྒོམ་པར་བྱ། །
ཤར་དུ་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་མ། །
སངས་རྒྱས་བྱང་ཆུབ་སྙོཙའོ། ༩ །

འདོད་པ་ཀུན་གྱི་འཁྲིས་མ་ཐུབ། །
བྱང་དུ་ཧེཙཀ་ཉིད་འདྲ། །

དང་། ལག་གདུབ་དང་། སྐྲ་རགས་རྣམས་སོ། ༢ །

ས་བོན་ཧཱུྃ་ལས་ཡང་དག་བྱུང་། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་བདུན་པོ་རྣམ་པར་དག་པ་ནི་བླ་ན་མེད་པའི་མཆོད་པ་ལ་སོགས་པ་ནས་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཞུ······བའི་བར་དུ་བྱས་ནས་སོ། །ཡི་དྭགས་ལ་གནས་ཞེས་པ་ནི་རོ་འི་སྙིང་གར་ཉི་མ་ལ་གནས་པའོ། །རབ་སྦྱོར་བས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣམ་པར་དག་པ་ལས་སོ། །སྣ་

རྒྱན་ཀུན་གྱིས་ནི་རྣམ་བརྒྱན་པའི། །
ཁ་དོག་སྣ་ཚོགས་རྣམ་པར་དགོད། ༦ །

གཟུགས་མཛེས་ཡི་དྭགས་ལ་བཞུགས་པ། །
གདི་སྐྱུག་ཐམས་ཅད་ཉེར་འཛོམས་བྱེད། །
ཆོས་འཁོར་ཨ་ཤྭཏྠའི་དབྱུག་[3]པ། །
དེ་བཞིན་ཡིད་བཞིན་ནོར་བུའི་ཤིང་། ༧ །

ལྷ་མོ་རྣམས་ཀྱི་ཕྱག་གཡས་སུ། །
རྡོ་རྗེ་ཡང་ནི་བསྣམས་པར་བྱ། །
ཆོས་ཀྱི་[2] འཁོར་ལོ་ཐམས་ཅད་ལ། །
ཐོད་པའི་སྣོད་ནི་གཡོན་པ་ལ། ༨ །

ཚོགས་གཟུགས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཀར་པོ་དང་། སེར་པོ་དང་། དམར་པོ་དང་། སྔོ་བསངས་ཀྱི་མདོག་རྣམས་སོ། ༥_༦ །

ཡི་དྭགས་ལ་གནས་ཞེས་པ་ནི་རི་འི་སྟེང་གར་ཟླ་བ་ལ་གནས་པའོ།། ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ནི་འཁོར་ལོ་འི་རྩིབས་བརྒྱད་པའོ། །ཨ་ཤྭཏྠ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཤིང་ངོ་། །ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་དང་། དཔག་བསམ་གྱི་ཤིང་སྟེ་དེ་རྣམས་ཀྱི་འོག་ཏུ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་བྲི་བར་བྱའོ། ༧ །

རྡོ་རྗེ་ཞེས་པ་ནི་རྩེ་[4] ལྔ་པའོ། །ལྷ་མོ་ཞེས་པ་ནི་ལྷ་མོ་རྣམས་ཀྱིའོ།། ཕྱག་གཡས་ཆ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཡས་པའི་ཕྱག་ཏུའོ། །ཐོད་པའི་སྣོད་ནི་ཐོའི་སྣོད་དོ། །ཨབསབྱ་ནི་གཡོན་པའོ། ༨ །

---

༡ ཅོ་དཔེར༌ (དྷརྨཙཀྲཾཏཐཱཤྭཏྠཾ) ཆོས་འཁོར་དེ་བཞིན་ཨཤྭཏྠ། སྡེ༌ སྣར༌ ཆོས་ཀྱི་ཨ་ཤད་དབྱུག་པའི་ཐོ། ༢ ཅོ་དཔེར༌ (མཎྜལེ) དཀྱིལ་འཁོར། ༣ ཅོ་དཔེར༌ (མཎྜ) དབྱུག་གུ། ༤ སྣར༌ སྡེ༌ རྩེ་མོ་ལྔ།

སྤྱན་མ་མཱ་མ་ཀཱི་སྒྲོལ་མ། །
གོས་དཀར་ཡིད་དུ་འོང་བ་རྣམས། །
མེ་ལ་སོགས་པའི་མཚམས་བཞི་རུ། །
འཁོར་ལོ་ཕྱི་རོལ་གཤིན་གཤེད་དོ། ༧ །
ཤེས་རབ་མཐར་བྱེད་རྟ་མགྲིན་དང་། །
འཁྱིལ་བར་བཅས་པ་[1]བསྒོམ་པར་བྱ། །

ཡིད་དུ་འོང་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྤྱན་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་སོ་[2] སོར་སྦྱར་བར་བྱའོ་[3]། །སྒོ་འི་ཆ་ཞེས་པས་[4] ནི་ཤར་ཕྱོགས་དང་། ལྷོ་ཕྱོགས་ལ་སོགས་པའི་སྒོ་རྣམས་སོ། ༨ །

འཁྱིལ་བར་བཅས་[5] ཞེས་བྱ་བ་ནི་བདུད་རྩི་འཁྱིལ་བའི་འོ། །ལས་ཀྱི་ཚོགས་མཐོང་བས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཕྱོགས་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱི་གཡོན་དུ་ཁ་ཊྭཱཾ་གའོ། །དེ་ལ་སྤྱན་ལ་སོགས་པ་ནི་དཀར་པོ་དང་། སེར་[6]པོ་དང་། དམར་པོ་དང་། སྔོ་བསངས་དེ། འཁོར་ལོ་དང་། རྡོ་རྗེ་དང་། པདྨ་དམར་པོ་དང་[7]། རལ་གྲི་གཡས་པ་དག་གིས་འཛིན་པའོ། །གཡོན་དུ་ནི་ཐོད་པ་འཛིན་པའོ། །གཤིན་རྗེ་མཐར་བྱེད་ལ་སོགས་པ་ནི་ཐོ་བ་དང་། དབྱུག་པ་དང་[8]། པདྨ་དང་། རལ་གྲི་འཛིན་པའོ། །གཡོན་པས་ནི་ཞགས་པ་

---

1 ཅོ་དཔེར་། (མཆན) ཐམས་ཅད། སྣར་། བཅས་པར། 2 སྡེ་། ཅོ་། སོ་མི་འདུག 3 པེ་། བྱའི།
4 སྒོ་འི་ཆ་ཞེས་པ་ཚུ་བར་མི་སྣང་། 5 ཅོ་དཔེར་། (མཆན་ཀྱི་ཊཱིཀ) འཁྱིལ་བ་ཐམས་ཅད།
6 ཅོ་དཔེར་། (ཏྲི་ཀ) སྔོན་པོ། 7 སྣར་། མི་འདུག་ཀྱང་འདིར་ཅོ་དཔེ་དང་མཐུན་པར་བཞག་ཡོད།
8 ཅོ་དཔེར་། ཚིག་རྐང་འདི་མི་འདུག

འཁོར་ལོ་ཡི་ [1]ཉི་སྐྱོ་སྤུངས་དེ། |

ཚོ་གའི་ལས་ནི་མཐོང་བས་སོ། ༡༠ |

[2]གཤིན་རྗེའི་ [3]གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད་ལས་དེ་རྟོག་བསྒྲུབ་པའི་རིམ་...
པར་ཕྱེ་བ་སྟེ་བཅུ་དྲུག་པའོ།། ||

འཇོན་ཞིང་ཕྱོགས་མཐུན་བྱེད་པའོ། །དེ་བཞིན་དུ་མ་གསུངས་ཀྱང་ཡི་ཤེས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་གཞུག་པ་དང་། ཕྱག་རྒྱ་རྒྱས་བཏབ་པ་ཡང་བྱ་བའོ་ཞེས་པས་སོ།། འདིར་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་བསྐྱེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་དཀྱིལ་འཁོར་བ་ཞེས་པ་ཡང་... བསྐྱེད་པ་སྟེ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་སྙིང་གའི་ས་བོན་ལས་སོ། ༡༠ |

ལེའུ་བཅུ་དྲུག་པའི་བཤད་པ་རྫོགས་སོ།། ||

---

༡ རྒྱ་དཔེར་ ● (སརྦ) ཐམས་ཅད་ཀྱི། ༢ རྒྱ་དཔེར་ ○ དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཉིས...... ༣ ལྷ་ ● ཆེ།

ལེའུ་བཅུ་བདུན་པ།

རྣམ་པ་ལྔ་ནི་བསྒོམ་བྱས་ལ། །

སངས་རྒྱས་གཟུགས་ནི་བསྒོམ་པར་བྱ། །

རྒྱུད་ནི་ཐམས་ཅད་དུ་བསྒོམ་པ་རྣམས་དཀྲུགས་ཀྱང་རིམ་པ་[1]ཛཱི་ལྔ… པ་བཞིན་དུ་རྟོགས་པར་བྱ་སྟེ་དེ་བཞིན་དུ་བརྗོད་[2]པ་གསུངས་པ། རྣམ་པ་ལྔ་ ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དེ་ལ་ཨ་ཡིག་ལ་སོགས་པ་དབྱངས་ཀྱི་ཡི་གེ་ བཅུ་དྲུག་པོ་ཉིས་འགྱུར་གྱིས་ཟླ་བ་མེ་ལོང་[3]ལྟ་བུའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཀྱི… རྣམ་པའོ། །ཀ་ལ་སོགས་པ་དང་ཕྱ་ར་ཡ་[4] དང་བཅས་པ་ལྔག་མ་སྟེ། གསལ་ བྱེད་བཞི་བཅུ་ཐམ་པ་ཉིས་འགྱུར་གྱི་ཉི་མ་ནི་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་དེ་བྱང… ཆུབ་པ་[5] གཉིས་པའོ། །ས་བོན་གྱི་ཡི་གེ་ལས་མཚན་མར་སྐྱེས་ཤིང་མཚན་མ་ ལ་ཡང་ས་བོན་ཞེས་པ་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་དེ་གསུམ་པའི་རྣམ་པའོ། ། དེ་དག་ལས་[6]སྦྱོ་བ་དང་[7]བསྡུ་བ་ནི་བྱ་བ་གྲུབ་པ་སྟེ་[8]བཞི་པའི་རྣམ་པའོ། །དེ་ ལ་ཟླ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཞུ་བ་རོ་གཅིག་ཏུ་གྱུར་པ་ནི་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་ དག་པ་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་དེ་རྣམ་པ་ལྔའོ། །སངས་རྒྱས་གཟུགས་ ནི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའོ། །རྡོ་རྗེ་[9]ཅན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གླུ་བཞེས་ཏེ་

---

༡ རྒྱ་དཔེར་ རཏྣ་ཞེས་འདུག་པའི་དོན་སྐབས་འདིར་རྟོགས་སླ་བའི་དོན་དུ་བཀོ། ༢ སྡེ་ བཀོད།

༣ པེ་ མི་འཕོང་གང་བ། ༤ སྣ་ ཕྱ་ལ། པེ་ ཕྱར་ལར་བ། རྒྱ་དཔེར་ ཏཐད་རྩལ་བ། ༥ རྒྱ་དཔེར་ (ཕྱཀྲ་) ཉམ་པ། ༦ རྒྱ་དཔེར་ (རེཕ་ཅན) ཕྲའི་འཁོར་ལོ་ཞེས་ཁུང་འདུག ༧ སྣ་ བས།

༨ བྱ་བ་སྒྲུབ་པ་རྫེ་ཞེས་པ་རྒྱ་དཔེ་དང་མཐུན་པར་བཞག་ཡོད། ༩ རྩ་བར་འཁོར་ལོ་ཞེས་འདུག

སངས་རྒྱས་གཟུགས་ནི་བསྒོམ་པ་ཡིས། |
མཁས་པས་འཁོར་[༡]ལོ་བསྒོམ་པར་བྱ། ༡ |
སྒྲ་[༢]བཞི་ཡི་ནི་སྦྱོར་བ་ཡིས། |
འཁོར་ལོ་བསྐྱེད་པར་བྱ་བ་སྟེ། |
ཙཀྲ་སོགས་སྒྲ་དང་ནི། |
ཧྲུག་ལས་[༣]སྐྱེས་སོགས་ལེན་པར་བྱེད། ༢ |

པར་བསྐུལ་ནས་མངོན་པར་འདོད་པའི་ལྷའི་གཟུགས་དེ་གཙོ་བོ་འོ། །དེ་ཉིད་གསུངས་པ། སྒྲ་བཞི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ཙཀྲ་སོགས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྔར་གང་བྱམས་པ་[༤] ལ་སོགས་པ་བསྒོམ་པ་དེ་ཉིད་དུ་རྫོགས་པ་བྱ་སྟེ་དཀྱིལ་འཁོར་པ་རྣམས་ནི་ད་དུང་བསྐྱེད་པར་གྱུར་པས་[༥] སོ། །གང་དུ་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་[༦] བསྐྱེད་པ་མེད་པ་དེར་ནི་ཐམས་ཅད་སྡུག་བསྔལ་[༧] ལས་བྱུང་བའི་མཚན་མ་ལ་གནས་པའི་ས་བོན་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་སྟོ[༨]། གང་གི་ཕྱིར་མཚན་མ་ནི་རྡོ་རྗེར་བརྗོད་ལ་དེ་གང་སེམས་དཔའ་ནི་ས་བོན་དེ་དེས་ན་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའོ། །དེ་ལ་ཁྱད་པར་ནི་སླུས་བསྐུལ་བ་དང་ཉེར་བར་བྲལ་བ་ཉིད་དེ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་སྐྱེས་པ་ཙམ་མོ། །ཧྲུག་ལས་སྐྱེས་སོགས་[༩] ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཧྲུག་སྟེ་སྔར་བཤད་ཟིན་ཏོ། །སོགས་ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲ་ནི་དབྱངས་དུ་མ་དང་ལྡན་[༡༠] པའོ། ༡–༢ |

---

༡ འགྲེལ་པར་རྡོ་རྗེ་ཞེས་འདུག ༢ སྡེ་. གྲུ ༣ སྡེ་. ཧྲུག་པ། ༤ རྒྱ་དཔེར་. (ནཻར་ཏྨ) བདག་མེད་མ། ༥ སྡེ་. པེ་. སྐྱེ་བར་མ་གྱུར། ༦ རྒྱ་དཔེར་. (བཛྲ་སཏྭ) རྡོ་རྗེ་འཆང་གི ༧ རྒྱ་དཔེར་. (སྠིཏྲ) བསྡུ་པ། ༨ སྡེ་. གོ། ༩ སྡེ་. སྐྱེས་པའོ། ༡༠ རྒྱ་དཔེར་. ཀཱམཡུ་རིཡུ་རིཀྱི༔ཞེས་པ་ཞིག་འདུག་ཀྱང་དོན་གསལ་བར་མི་རྟོགས།

སྙིང་རྗེ་ཁྲོས་པའི་དད་[1]སྒྲོལ་བཞེངས། །
ཁམས་གསུམ་ཀུན་གྱི་གདི་སྡུག་སོལ[2]། ༢ །
དད་གྲོལ་གསོལ་བས་མ་བཞུགས་བཞེངས།།
བདུད་འདི་དག་ལས་རྒྱལ་བར་མཛོད། ༣ །
འཇིག་རྟེན་མགོན་པོ་སྟོང་ཉིད་ཇི་སྟེ་[3]བཞུགས། །
དད་[4] སྒྲོལ་འཇིག་རྟེན་བསོད་ནམས་ཀྱིས་བཞེངས་ཤིག[5] ༥།

ལངས་[6]ཞེས་པ་ནི་བཞེངས་པའོ། །དད་སྒྲོལ་ཞེས་པ་ནི་རྗེ་བཙུན་ནོ།། སྙིང་རྗེ་ཁྲོས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐུགས་རྗེ་ལས་བསྐྱལ་བའི་ཁྲོ་བོའོ་[7]། ཁམས་གསུམ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྲིད་པ་གསུམ་སྟེ། འདོད་པའི་ཁམས་དང་། གཟུགས་ཀྱི་ཁམས་དང་། གཟུགས་མེད་པའི་ཁམས་སོ། །སོལ་ཞེས་པ་ནི་སོལ་བར་བྱེད་པའོ། །དེ་དག་ནི་རྡོ་རྗེ་ཙརྩིཀདིའོ[8]། ༢ །

བདུད་འདི་དག་ལས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཉོན་མོངས་པ་དང་ལྷ་དང་........ ཕྱུང་[9]པོ་དང་། འཆི་བདག་གི་གཟུགས་དེ་བདུད་བཞི་པོ་འདི་དག་གོ །རྒྱལ་བར་མཛོད་ཅེས་པ་ནི་ཕ་རོལ་ལས་རྒྱལ་བ་སྟེ་རྒྱལ་[10]བར་བྱེད་པའོ། །དད་སྒྲོལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྒྱལ་རིགས་སོ། །མཛོད་ཅེས་པ་ནི་འདོད་པའོ། །རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་ཞིའོ། ༣ །

འཇིག་རྟེན་མགོན་པོས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འཇིག་རྟེན་པ་རྣམས་མགྲོན་དུ་བོས་པའོ། །སྟོང་ཉིད་ནི་སྟོང་པ་ཉིད་ལས་དེ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རོར་མཐར་ཕྱིན་

---

༡ སེ་° ངང་། ༢ ཟླ་° གསོག ༣ ཟླ་° ཅེ་སྟེ། ༤ ཟླ་° ངང་། ༥ ཟུ་° བཞུགས་གིང་། ཟླ་° བཞུགས་གིག ༦ ཟུ་° སེ་° གོངས། ༧ ཟུ་° ཁྲོ་བོ་ཤི་ཁམས་གསུ°་ཞེས་ཚིག་སྣ་ཕྱི་འགྱུར་འདུག ༨ ཟུ་° རྣམས་སོ། ༩ ཟུ་° ཕྱང་བོ། ༡༠ ཟུ་° ང་རྒྱལ།

བྱང་ཆུབ་འདོད་པའི་འཇིག་རྟེན་མགོན་པོས་ནས། །
ཁྲོད་ནི་སྟོང་པ་ཉིད་ལ་སེམས་པར་བྱེད། ༡–༦ །
ཛཱི་ལྟར་སྐར་མདའ་འཕྲོ་[1]བ་བཞིན། །
བྱང་ཆུབ་སེམས་ལ་ཞུགས་པར་གྱུར། །
རྡོ་རྗེ་འཆང་རང་ངོ་བོ་ཉིད། །
སྙིང་རྗེ་དང་ནི་འདོད་ཆགས་སེམས། ༧ །

པའོ།། །།འཇིག་རྟེན་བསོད་ནམས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འཇིག་རྟེན་པའི་བསོད་ནམས་ཀྱིས་སོ། །དེ་དག་ནི་རྡོ་རྗེ་དབྱིངས་ཅན་མའི་འོ། ༥ །

ཅིའི་ཕྱིར་ཁྲོད་ནི་གང་གི་ཕྱིར། སྟོང་ཉིད་སེམས་ཞེས་བྱ་བ་ནི། སྟོང་པ་ཉིད་རྣམ་པར་སེམས་པ་སྟེ[2]། སྟོང་པ་ཉིད་ནི་དོན་དུའོ་ཞེས་པའོ། །འཇིག་རྟེན་མགོན་པོས་[3]ཞེས་བྱ་བ་ནི་འཇིག་རྟེན་རྣམས་པོས་པའོ། །དེ་དག་ནི་རྡོ་རྗེ་གྲི་འོ། ༦ །

གླུའི་[4] དགོས་པ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། ཛཱི་ལྟར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། ཐུགས་རྗེ་ཆགས་པའི་སེམས་ཀྱིས་ཞུ་ཞིང་ཐིམ་པའི་རྗེས་ལ་ཡང་དག་པར་བསྐུལ་བ་དང་དེའི་རྗེས་ལ་སྐར་མདའ་འཕང་བ་བཞིན་[5] བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཞུགས་སོ་ཞེས་རྟོགས་པར་བྱའོ། །བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཞེས་པའི་ཡི་གེ་གསུམ་པོ་འབར་བའི······གཟུགས་སོ། ༧ །

༡ པེ་◦སྣ་◦འགྲོ་བ། ༢ ཚིག་ཀྲང་འདི་ཀྱི་དཔེར་མ་བཞུགས། ༣ སྡེ་◦མགོན་པོས། ༤ སྡེ་◦གྲུའི།
༥ ཀུ་དཔེར་◦བཞིན་མི་འདུག

དང་པོར་བསྒོམ་པ་རྣལ་འབྱོར་དེ། །
གཉིས་པ་རྗེས་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་ཡིན། །
གསུམ་པ་ཤིན་ཏུ་རྣལ་འབྱོར་དེ། །
བཞི་པ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོ་འོ། ༨ །

རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་རྫོགས་པ་ཡིན། །
རྣལ་འབྱོར་ཡིན་པ་[1]འདི་ལྟར་འདོད། །
དེ་ནི་རྒྱུ་མཐུན་ལྷ་ཡི་སྐུ[2]། །
རྗེས་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་ཡིན་པར་གྲགས། ༩ །

འཁོར་ལོ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་རྫོགས་པ། །
ཤིན་ཏུ་རྣལ་འབྱོར་ཡིན་པར་གྲགས[3]། །

རྒྱུད་འདིར་བདེ་བླག་ཏུ་རྟོགས་པའི་དོན་དུ་ཐིག་མར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ངག་གི་[4] བརྗོད་སྟེ་དང་པོའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་དང་པོ[5] བསྟན་པའི་དོན་དུ་[6]རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་དང་པོ་སྟེ། བདུན་པོ་རྣམ་པར་དག་པ་བླ་ན་མེད་པའི་མཆོད་པ་ནས་བཟུང་སྟེ། རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་རྫོགས་པའི་མཐར་ཐུག་པ་སྟེ་རྣལ་འབྱོར་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེའི་རྒྱུ་མཐུན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་དེ་ཉིད་ཞུ་བ་ལས་ཡང་དག་པར་བསྐྱུལ་བས་ལངས་པའི་ལྷ་སྟེ་འབྲས་བུ་[7]གཤིན་རྗེ་གཤེད་དོ། ༨—༩།

འཁོར་ལོ་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་པའི་ལྷ་རྣམས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་འི་[8]ཚོགས་སོ། །སྐུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་ནི། སྐུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའོ། །

---

[1] ལྷ་° ༠ པར། [2] རྒྱ་དཔེར་° ༠ (ཏདྡེ་ཛྷུ་ཏྡོ་དཡོ་ཏེཁྲ) དེ་ནི་རྒྱུ་མཐུན་བྱུང་བའི་ལྷ། །ཞེས་འདུག
[3] ལྷ་° ༠ བསྒྲགས། [4] སྣ་° ༠ གང་གི [5] སྣ་° ༠ དང་པོར། [6] སྣ་° ༠ པེ་° ༠ ཏུ་མི་འདུག
[7] རྒྱ་དཔེར་° ༠ (ཀྱཱ) ཏུས། [8] རྒྱ་དཔེར་° ༠ འཁོར་ལོ་ཞི་མི་འདུག

དེ་དག་གི་དོན་ནི་[1]འདི་ཡིན་ཏེ[2]། སྒྲུབ་ཐབས་ལེགས་པར་བརྗོད་པར་བྱའོ། །རང་གི་སྙིང་གར་ཡཾ་ཡིག་[3]དམར་པོ་ལས་བྱུང་བའི་ཉི་མ་དམར་པོ་དེ་ལ་གནས་པའི་ཧཱུྃ་ཡིག་ནག་པོ་ལས་འོད་ཟེར་རྣམས་ཕྱུང་སྟེ། མདུན་[4]དུ་ཞུགས་[5]པ་དང་། ལྕགས་ཀྱུའི་རྣམ་པ་གཉིས་སུ་གྱུར་པས། གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་དང་[6]འདྲ་བར་བསྒོམ་པར་བྱ་བའི་འོག་ནས་ཕྱུག་ཅིང་སྟེང་ནས་བཅིངས་ཏེ། མདུན་དུ་གནས་པ་ལ་འོད་ཟེར་རྣམས་དྲང་པོར་བྱ་སྟེ། དེ་དག་གི་སྒོ་ལས་མཆོད་པ་སྣ་ཚོགས་པ་རྣམས་སྤྲུལ་ཞིང་ཕྱག་བྱ་བ་དང་། ཇི་སྲིད་དུ་བདག་གིས་སྡིག་པ་བགྱིས་པ་དང་བགྱིད་དུ་སྩལ་བ་དང་། རྗེས་སུ་ཡི་རང་བའི་སྡིག་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་བཤགས་པར་བགྱིའོ།། ཡང་བདག་གིས་འཚོ་བའི་དོན་དུ་མི་བགྱིད་དོ་ཞེས་སྡོམ་པར་བགྱིད་དོ[7]། །གང་ཇི་སྲིད་བསོད་ནམས་བྱས་པ་དེ་དག་ལ་རྗེས་སུ་ཡི་རང་བ་དང་། དེ་ནས་དེ་ལྟར་མཆོད་པ་ལ་སོགས་པ་ཇི་སྲིད་བསོད་ནམས་སུ་གྱུར་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་འགྲོ་བ་རྣམས་ཀྱི་དོན་དུ་བླ་ན་མེད་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་ཡོངས་སུ་བསྔོ་བར་བགྱིའོ།། བྱང་ཆུབ་མ་ཐོབ་ཀྱི་བར་དུ་སངས་རྒྱས་ལ་སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །ཆོས་ལ་སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །དགེ་འདུན་ལ་སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། །དེའི་རྗེས་ལ་བདག་ཉིད་ཀྱིས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་རང་བཞིན་དུ་སངས་རྒྱས་པར་གྱུར་པ་དང་། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་དཔལ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་གཟུགས་སུ་རྫུས་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟ་བུའི་དོན་གྱིས་བདག་ཉིད་གསང་སྔགས་ཆེན་པོ་[8]འདི་ཉིད་ཡང་དག་པར·····

---

༡ སྣ་, ཏུ། ༢ པེ་, འདི་དག་ཡིན་ཏེ། ༣ ཅོ་དགེར་, རཾ་ཡིག ༤ པེ, བདུན། ༥ ནེ་, ཕྱུགས། ༦ ཅོ་དགེར་, (མཐའ་བར) བདེ་མཆོག་ཅེས་ཀྱང་འདུག ༧ སྣ་, ནེ་, བགྱིའོ། ༨ ཅོ་དགེར་, (མཐའ་ལྡན) ཐེག་པ་ཆེན་པོ།

བསྟེན་[1] པར་བགྱིའོ། །དེ་ལྟར་མཆོད་པ་དང་། སྡིག་པ་བཤགས་པ་དང་། བསོད་ནམས་ལ་རྗེས་སུ་ཡིད་རང་བ་དང་[2]། བསོད་ནམས་ཡོངས་སུ་བསྔོ་བ་དང་། གསུམ་ལ་སྐྱབས་སུ་འགྲོ་བ་དང་། བྱང་ཆུབ་མཆོག་ཏུ་སེམས་བསྐྱེད་པ་དང་། ལམ་བསྟེན་པའི་མཚན་ཉིད་དོ་ཞེས་པ་བདུན་པོ་རྣམས་ཡང་དག་པའི་[3] མཆོད་པ་བྱས་ལ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་བུ་གཅིག་པ་ལྟར་བརྩེ་བའི་མཚན་ཉིད་ཅན་གྱི་བྱམས་པ་དང་། སྡུག་བསྔལ་དང་། སྡུག་བསྔལ་གྱི་རྒྱུ་ལས་ཡང་དག་པར་བསྒྲལ་ངར་འདོད་པའི་མཚན་ཉིད་ཅན་གྱི་སྙིང་རྗེ་དང་། རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདེ་བ་ཡང་དག་པར་བསྒྲུབ་བར་འདོད་པའི་[4] བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་དགའ་བ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་བདེ་བའི་རྒྱུན་ལ་འདོད་པའི་རྣམ་པ་ཅན་གྱི་བཏང་སྙོམས་ཏེ། དེ་ལྟ་བུའི་ཚངས་པའི་གནས་བཞི་བསྒོམ་པར་བྱས་ལ། འགྲོ་བ་རྣམས་ཀྱི་ལམ་དང་སྐྱུ་མ་ལྟ་བུར་བསམ་ཞིང་། ཨོཾ་ཤཱུ་ནྱ་ཏཱ་ཛྙཱ་ན་བཛྲ་སྭ་བྷཱ་བ་ཨཱཏྨ་ཀོ྅་ཧཾ་ཞེས་པའི་སྔགས་བརྗོད་པས་སེམས་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པར་བྱའོ། །

མདུན་དུ་རེཕ་ལས་ནི་ཉི་མ་རྣམ་པར་བསྒོམ། །
ཉི་མ་དེར་ནི་ཧཱུྃ་བྱུང་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་སྟེ། །
རྡོ་རྗེ་དེ་ཉིད་ཀྱི་ནི་ར་བ་དང་། །
གུར་བཅིངས་[5] པ་ཡང་རྣམ་པར་བསྒོམ་པར་བྱའོ།།

རེས་ས་གཞི་བཅིང་བ་[6] དང་། དེ་ནི་ཁང་པ་ལྟ་བུ་སྟེ་དེའི་ནང་དུ་སྣ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ་གནས་པའི་སྟེང་དུ་གནས་པ་ནམ་མཁའི་བདག་ཉིད་[7] ནམ······

༡ སྣ་° བརྗེད། ༢ ཚིག་རྐང་འདི་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད། ༣ རྒྱ་དཔེར་°(ཨརྡྷ་[illegible])བློ་ན་མེད་པའི། ༤ སྣ་° འདོད་པ། ༥ སྡེ་° བཅངས། ༦ རྒྱ་དཔེར་°(ཕྲ་) ཕྲུགས་ར། ༧ སྣ་° ཉིད་ཅེས་མི་འདུག

མཁའི་ཕྱོགས་སུ་ཡཾ་ཡིག་ནག་པོ་ལས་རླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་ནག་པོ་གཞུའི་རྣམ་པ་གཉིས་སུ་བ་དན་གཡོ་བ་གཉིས་དང་ལྡན་པའོ། །དེའི་སྟེང་དུ་རཾ་ཡིག་དམར་པོ་ལས་མེའི་དཀྱིལ་འཁོར་དམར་པོ་གྲུ་གསུམ་གྲྭ་རྣམས་སུ་རིཕས་མཚན་[1]པའོ། །དེའི་སྟེང་དུ་བཾ་ཡིག་[1]དཀར་པོ་ལས་ཆུའི་དཀྱིལ་འཁོར་དཀར་པོ་ཁ་འོག་ཏུ་བལྟས་པ་བུམ་པས་[2]མཚན་པའོ། །དེའི་སྟེང་དུ་ལཾ་ཡིག་སེར་པོ་ལས་སའི་དཀྱིལ་འཁོར་སེར་པོ་གྲུ་བཞི་པ་[3]རྣམས་སུ་རྡོ་རྗེ་རྩེ་གསུམ་པས་མཚན་པ་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །དེའི་ཐོག་[4]ཏུ་རླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་གཞལ་ཡས་ཁང་རིམ་པ་[5]གཉིས་པར་སྣ་ཚོགས་······པདྨའི་འདབ་མའི་སྟེང་དུ་རང་རང་གི་གནས་ཛཱ་ལྷ་བར་ཟླ་བ་དང་ཉི་མའི་གདན་རྣམས་སོ། །[6]གྲུ་བཞི་པ་ལ་སྒོ་བཞི་པ། །ཀ་བ་བརྒྱད་ཀྱིས་ཉེ་བར་བརྒྱན།། རྟ་བབས་བཞི་དང་ཡང་དག་ལྡན། །དྲ་བ་དྲ་ཕྱེད་དྲིལ་བུ་དང་། །བ་དན་ལ་སོགས་དང་བཅས་པའོ། །མཚན་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཡང་དག་པར་[7]རྫོགས་པ་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །ནང་གི་རིམ་པའི་དབུས་སུ་ཨ་ཡིག་ལ་སོགས་པ་དབྱངས་ཡིག་བཅུ་དྲུག་པ་རྣམས་ཀྱིས་གཡས་སྐོར་དང་གཡོན་སྐོར་གྱི་ཉིས་འགྱུར་ལས་ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ནི་མེ་ལོང་ལྟ་བུའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རྣམ་པར་དག་པའོ། །དེའི་སྟེང་དུ་ཀ་ཡིག་ལ་སོགས་པ་གསལ་བྱེད་རྣམས་ལས་ལྷག་པར་ད ཀྵ ཡ ར ལའི་[8]ཡི་གེ་རྣམས་ཀྱི་ཉིས་འགྱུར་གྱི་རིམ་དང་རིམ་མ་ཡིན་པ་ལས་ཉི་མའི······

1 སྣ°, པེ°, ཞིག་ཅེན་མི་འདུག 2 ཅོ་དབེར°, (ཀླཊྚ) ཏྲིག་བུམ། 3 སྡེ°, བཞི་པ་ཞེས་མི་འདུག
4 ཅོ་དཔེར°, (ཧྲྀཏ) དེ་མ་ཐག་ཏུ། 5 སྣ°, པ་མི་འདུག 6 སྣ°, གྲུ 7 སྣ°, པར་མི་འདུག
8 ཅོ་དཔེར°, ཀ ཊ ད ཀྵ ཡ ཀ། སྣ°, ད ད ཕྲ ཡ ར ཀ།

དཀྱིལ་འཁོར་ནི་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རྣམ་པར་དག་པའོ། །དེའི་སྟེང་དུ་ཀླུ་ཡིག་ལ་དེ་ཉིད་ལས་རྡོ་རྗེ་རྩེ་ལྔ་པའོ། །དེའི་ལྟེ་བ་ལ་ཡང་ཉི་མ་ལ་གནས་པའི་ཀླུ་ཡིག་ནི་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རྣམ་པར་དག་པའོ། །ཀླུ་ཡིག་དེ་ཉིད་ལས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་འཁོར་ལོ་སྤྲོས་པས་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་བྱས་ནས་ཡང་སྙིང་པོར་བཀུག་པ་ནི་བྱ་བ་གྲུབ་པའི་ཡེ་ཤེས་སོ། །དེ་དག་ཐམས་ཅད་སྐད་ཅིག་གིས་ཞུ་བར་གྱུར་པ་ལས་དཀར་པོ་ནི་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་པ་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་སུ་[1]བསྒོམ་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་ན་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པ་རྣམ་པ་ལྔས་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་ཕྱག་མཚན་འཛིན་པ་སྐུ་མདོག་དཀར་པོ་ཞལ་གསུམ་ནི་རྩ་བ་དཀར་པོ། གཡས་པ་ནག་པོ་གཡོན་པ་དམར་པོ་དང་ལྡན་པ་ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་པའོ། །རང་སྣང་བའི་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་འི་རྣམ་པ་དམར་པོ་[2]དང་སྙོམས་པར་ཞུགས་པར་བལྟ་བར་བྱའོ། །དེ་དག་ནི་རྣལ་འབྱོར་རོ། །

དེ་ནས་རང་གི་སྙིང་གར་གནས་པའི་ཀླུ་ཡིག་གི་འོད་ཟེར་རྣམས་ཀྱིས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་བཀུག་སྟེ། ཁར་ཞུགས་ནས་ཆགས་པ་དང་རྗེས་སུ་ཆགས་པས་[3]ཞུ་བར་བྱ་སྟེ། རྡོ་རྗེའི་ལམ་ནས་ལྷ་མོ་འི་པདྨའི་ནང་དུ་སྤྲོས་པ་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དེ་དག་ལས་སྐྱེས་པ་དཀྱིལ་འཁོར་པའི་ས་བོན་གྱི་ཡི་གེ་རྣམས་གནས་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་དགོད་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་ནང་གི་རིམ་པའི་ཤར་དུ་ནི་ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ཀཱྀ་ཡིག་དཀར་པོ་དང་། ཀློ་

---

༡ ཅོ་དཔེ་ར་° (ཛྙཱ་ནཱ་ཏྨ་ཀཾ) ཡེ་ཤེས་ཉིད་དུ། ༢ ཅོ་དཔེ་ར་° (པདྨ) དཀར་པོ།

༣ སྣར་° པེ་° རྗེས་སུ་མཐུན་པས།

ཕྱོགས་སུ་ཉི་མ་ལ་གནས་པའི་མ་ཡིག་སེར་པོ་དང་། ནུབ་དུ་ཉི་མ་ལ་གནས་པའི་མི་ཡིག་[1]དམར་པོ་དང་། བྱང་དུ་ན་ཡིག་ལྗང་གུ་ཉི་མ་ལ་གནས་པའོ། །མི་ལ་སོགས་པའི་མཚམས་རྣམས་སུ་[2]ནི་ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་[3]གནས་པའི་རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་ཛ ས ནོ ཙ་ཞེས་པའི་[4] ཡི་གེ་རྣམ་པ་[5] བཞི་དཀར་······པོ་དང་། ནག་པོ་དང་། དམར་པོ་དང་། ལྗང་གུའི་མདོག་གོ །ཕྱི་རོལ་གྱི་རིམ་པའི་ཤར་དང་། ལྷོ་ལ་སོགས་པའི་སྒོ་རྣམས་སུ་ཡ ཙྪ་[6] ནི་ར་ཞེས་པའི་ཡི་གེ་བཞི་པོ་ཉི་མ་ལ་གནས་ཤིང་ནག་པོ་དང་། དཀར་པོ་དང་། དམར་པོ་དང་། ལྗང་གུའི་མདོག་གོ །གྲྭ་བཞི་རུ་ནི་ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་པའི་ཊ་ཡ་[7]ནི་ར་ཞེས་པའི་ཡི་གེ་བཞི་པོ་ཁ་དོག་དཀར་པོར་བལྟ་བར་བྱའོ། །དེ་ནས་རང་གི་རིག་མ་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་ཆགས་པ་དང་། རྗེས་སུ་ཆགས་པར་ཞུ་བ་[8]ལས་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཞུ་བའི་གཟུགས་སུ་བལྟ་བར་བྱའོ། །དེ་ནས་སྔོན་གྱི་སྨོན་ལམ་གྱི་སྟོབས་ཀྱི་དབང་གིས་བྱམས་པ་དང་། སྙིང་རྗེ་དང་། དགའ་བ་དང་། བཏང་སྙོམས་ཀྱི་ཙརྩི་ཀ་ལ་སོགས་པ་རྣལ་འབྱོར་མ་བཞི་པོ་རྣམས་ནང་གི་རིམ་པའི་གྲྭ་རྣམས་སུ་བལྟ་བར་བྱའོ། །དེ་ལ་རྡོ་རྗེ་ཙརྩིཀས་ནི་འདི་ལྟར་གསོལ་བ་འདེབས་པར་བྱེད་དེ།

སྙིང་རྗེས་ཁྲིས་པའི་རྗེ་བཙུན་བཞེངས། །
སྲིད་གསུམ་ཀུན་གྱི་གཉིད་རྨུག་སོལ། །

---

༡ སྣ་༷ མི་ཡིས། ༢ རྒྱ་དཔེར་༷ (ཙནྡྲ་ཀཱ་ནྟཱ) མཚམས་བཞི་རྣམས་སུ། ༣ སྣ་༷ ལ་མི་འདུག
༤ སྡེ་༷ ཞེས་པའི་མི་འདུག ༥ སྣ་༷ པེ་༷ པ་ཞེས་མི་འདུག ༦ སྡེ་༷ ཡཙྪ། ༧ སྣ་༷ ཊ་ཡ།
༨ རྒྱ་དཔེར་༷ (ཀཱཡཱནཱ) བྱང་སེམས་ཞུ་བ།

ཇི་བཞིན་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོས་ཀྱང་སྟེ།

རྗེ་བཙུན་གསོལ་བས་མ་ཞུགས་བཞེངས། །

བདུད་ནི་[1] དག་ལས་རྒྱལ་བར་མཛོད། །

དེ་བཞིན་དུ་རྡོ་རྗེ་དབྱངས་ཅན་མས་ཀྱང་།

འཇིག་རྟེན་མགོན་པོ་[2] སྟོང་ཉིད་ཟི་ལྡར་བཞུགས།།

རྗེ་བཙུན་འཇིག་རྟེན་བསོད་ནམས་ཀྱིས་བཞེངས་ཤིག །

དེ་བཞིན་དུ་རྡོ་རྗེ་གཱི་ཏཱིས་ཀྱང་[3]།

བྱང་ཆུབ་འདོད་པའི་འཇིག་རྟེན་མགྲོན་པོས་ནས།།

ཅི་ཕྱིར་བྲོད་ནི་སྟོང་ཉིད་སེམས་པར་བྱེད[4] ། །

སྐུའི་དེ་མ་ཐག་པའི་རྗེས་ཉིད་དུ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཞེས་པའི་ཡི་གེ་གསུམ་པོ་དམར་ཞིང་[5] ཞུ་བའི་ཚོགས་སུ་ཞུགས་པར་བལྟ་བར་བྱའོ། །དེ་ནས་ཞུ་བ་དེ་ཉིད་ལས་ཉི་མ་དམར་པོ་ལ་གནས་པའི་ཡཾ་ཡིག་སྔོན་པོ་[6]ལས་རྡོ་རྗེ་སྔོན་པོ་[7] རྩེ་ལྔ་པའོ། །དེའི་ལྟེ་བར་ཡང་ཉི་མ་དམར་པོ་ལ་གནས་པའི་ཡཾ་ཡིག་སྔོན་པོའོ[8]། །དེ་ནས་ས་བོན་དང་བཅས་པའི་རྡོ་རྗེ་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་བདག་ཉིད་ཞི་སྡང་གཤིན་རྗེ་གཤེད་གནག་ཅིང་ཁྲོ་ལ་དྲག་པ་[9] མགོ་བོའི་ཕྲེང་བ…… འཕྱང་བ་འཛིན་པ། མཆེ་བ་གཙིགས་པ། དབུ་སྐྲ་སེར་པོ་གྱེན་དུ་འབར་བ། སྨིན་མ་དང་། ཨག་ཚོམ་སེར་པོ། མཆེ་བ་ཙུང་ཟད་གཙིགས་པ། གསུམ་པ་འཕྱང་བ། འཇིག་པའི་དུས་ཀྱི་མེ་ལྟ་བུ། སྦྲུལ་བརྒྱད་ཀྱིས་བརྒྱན་པ། ཕྱག་

༡ སྣ་。སེ་。ཀདེ། ༢ སྣ་。པོས། ༣ སྣེ་。ཐང་། ༤ སྣ་。བསྐྱེད། ༥ འདིར་རྒྱ་དཔེར་。(རཀྟཧཱུཾ་ཀ་ར་ཧྲཱིཿ) ནོ་ཡིག་དམར་པོ་གཉིས་རྣམ་པར་ཞུ་བ་ཞེས་པ་མང་འདུག ༦ རྒྱ་དཔེར་。ནག་པོ། ༧ རྒྱ་དཔེར་。སྔོན་པོ་མི་འདུག ༨ རྒྱ་དཔེར་。ནག་པོ། ༩ སྣེ་。དྲག་པའི།

གི་བགགས་པ་རྣམས་དཀྲིས་པ། ཞལ་གསུམ་པ། ཙ་བ་ནག་པོ། གཡས་དཀར་པོ༑ གཡོན་དམར་བ་ཕྱག་དྲུག་སྟེ། གཡས་པའི་ཕྱག་གསུམ་ན་རྡོ་རྗེ་དང་། རལ་གྲི་དང་། གྲི་གུག་འཛིན་པའོ། །གཡོན་པའི་ཕྱག་གསུམ་[1]ན་འཁོར་ལོ་དང་། པདྨ་དང་ཐོད་པ་འཛིན་པ་མ་ཧེ་ཆེན་པོའི་ཀྲབ་དུ་[2]ཉི་མ་[3]ལ་ཞབས་གཡོན་བརྐྱང་བའོ། །དབུ་ལ་སངས་རྒྱས་ལྔའི་རང་བཞིན་གྱི་ཐོད་པའི་དུམ་བུ་ལྔ་གནས་ཤིང་ཕྱག་རྒྱ་ལྔ་འཛིན་པའོ། །བ་སྤུའི་བུ་ག་རྣམས་ལ་རང་དང་འདྲ་བའི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་ཚོགས་སྤྲོ་ཞིང་། ཨོཾ་ཧྲཱིཿཥྚྲཱིཿཝིཀྲྀཏཱནནཧཱུྃཧཱུྃཕཊཕཊསྭཱཧཱ༑ ཞེས་པའི་སྔགས་[4] བཟློད་པར་བསམ་པར་བྱའོ། །དེ་དག་ནི་རྗེས་སུ་རྣལ་འབྱོར་རོ། །

དེའི་རྗེས་ལ་ནང་གི་རིམ་པའི་ཤར་ཕྱོགས་སུ་གནས་པའི་ཀྲྀ་ཡིག་ལས་གཏི་མུག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དཀར་པོ། ཙ་བའི་ཞལ་དཀར་བ། གཡས་སྔོན་པོ[5]། གཡོན་[6]དམར་པོ། ཕྱག་གཡས་པ་རྣམས་ཀྱིས་འཁོར་ལོ་དང་། རལ་གྲི་དང་། གྲི་གུག་འཛིན་པའོ། །གཡོན་པའི་ཕྱག་རྣམས་ཀྱིས་རིན་པོ་ཆེ་དང་། པདྨ་དང་། ཐོད་པ་འཛིན་ཅིང་ཨོཾ་ཛིནཛིཀ་ཅེས་པའི་སྔགས་བཟློད་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་ལྷོ་ཕྱོགས་མ་ཡིག་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་ཁྲ་མ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་སྐུ་མདོག་སེར་པོ། །ཙ་བའི་ཞལ་སེར་པོ། གཡས་དཀར་བ། གཡོན་དམར་བ[7]། གཡས་པའི་ཕྱག་རྣམས་ཀྱིས་རིན་པོ་ཆེ་དང་། རལ་གྲི་དང་། གྲི་གུག་འཛིན་པའོ། །གཡོན་པའི་ཕྱག་རྣམས་ཀྱིས་[8]འཁོར་ལོ་དང་། པདྨ་

༡ སྡེ་° ཕྱག་གིས་ནི། ༢ ཀྱི་དཔེར་° (སྦྱར་ཆ་ཙྪར) ཛ་མ་འཛིན་པ། ༣ ཀྱི་དཔེར་° ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར། ༤ སྣ་° སྔགས་ཀྱིས། ༥ ཀྱི་དཔེར་° ནག་པོ། ༦ ཅོ་° ནེ་° གཡོན་པ། ༧ ཀྱི་དཔེར་° ནག་པོ། ༨ ཅོ་° ཀྱིས་ནི།

དང་ཐོད་པ་འཛིན་ཞིང་ཨོཾ་རཏྣ་ཌཱ་ཀི་ཅེས་པའི་སྔགས་བརྗོད་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་ནུབ་ཕྱོགས་སུ་མེ་ཡིག་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་[1] ལས་འདོད་ཆགས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་སྐུ་མདོག་དམར་པོ། རྩ་བའི་ཞལ་དམར་ཞིང་གཡས་པ་ནག་པོ། གཡོན་པ་དམར་ཕྱོ་འོ[2]། །གཡས་པའི་ཕྱག་རྣམས་སུ་པདྨ་དམར་པོ་དང་། རལ་གྲི་དང་གྲི་གུག་འཛིན་པ། གཡོན་པའི་ཕྱག་རྣམས་སུ་འཁོར་ལོ་དང་། རིན་པོ་ཆེ་དང་ཐོད་པ་འཛིན་པའོ། །ཨོཾ་ཨ་རོ་ལིཀ་ཅེས་སྔགས་[3]བརྗོད་པར་བྱའོ། །

དེ་ནས་བྱང་ཕྱོགས་སུ་ད་ཡིག་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་ཕྲག་དོག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་མརྐཏའི་མདོག་ཅན། རྩ་བའི་ཞལ་ལྗང་གུ་གཡས་པ་ནག་པོ། གཡོན་པ་སེར་པོ། གཡས་པའི་ཕྱག་རྣམས་སུ་རལ་གྲི་དང་། རྡོ་རྗེ་དང་། གྲི་གུག་འཛིན་ཅིང་། གཡོན་པའི་ཕྱག་རྣམས་ཀྱིས་འཁོར་ལོ་དང་། པདྨ་དང་། ཐོད་པ་འཛིན་ཅིང་། ཨོཾ་པྲཛྙཱ་ཌཱ་ཀི་ཅེས་པའི་སྔགས་བརྗོད་པར་བྱའོ། །བཞི་པོ་དེ་རྣམས་ཀྱང་ཞབས་གཡོན་བརྐྱང་བ་དབུ་སྐྲ་སེར་པོ་གྱེན་དུ་འགྲེང་བ། སྤྱན་གསུམ་ཟླུམ་ཞིང་དམར་བ་འཇིགས་པའི་དུས་ཀྱི་མེ་ལྟར་བཟོད་པར་དཀའ་བའོ། །

དེ་ནས་ནང་གི་རིམ་པའི་མེའི་མཚམས་སུ་གནས་པ་ནི[4] ཛ་ཡིག་ལས་རྡོ་རྗེ་ཙརྩིཀ་གདོང་སྨུག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དང་འདྲ་བ། བྱམས་པ་ཆེན་པོའི[5] རང་བཞིན། ཨོཾ་མོཧ་རཏི་ཞེས་པའི་སྔགས་བརྗོད་ཅིང་བལྟ་བར་བྱའོ། །དེ་ནས་བདེན་བྲལ་དུ་ས་ཡིག་ལས་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་ཞེ་སྡང་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དང་འདྲ་བ་ལ།

༡ རྒྱ་དཔེར་ ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ཞེས་མི་འདུག ༢ རྒྱ་དཔེར་ དཀར་པོ། ༣ སྡེ་ སྔགས་ཞེས་མི་འདུག
༤ སྣར་ ནི་མི་འདུག ༥ རྒྱ་དཔེར་ ཆེན་པོ་འི་མི་འདུག ༦ སྣར་ མཏྟ།

ཙ་བའི་ཞལ་ཕག་པའི་གདོང་ཅན་སྙིང་རྗེའི་བདག་ཉིད་ཅན། ཨོཾ་ཧྲིཥར྄དི་[1] ཞེས་པའི་སྔགས་བརྗོད་ཅིང་བསམ་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་རླུང་གི་མཚམས་སུ་ཧོ་ཡིག་ལས་རྡོ་རྗེ་དབྱངས་ཅན་མ་སྐྱ་མདོག་དམར་མོ་འདོད་ཆགས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་··· དང་འདྲ་ཞིང་དགའ་བའི་བདག་ཉིད་ཅན། ཨོཾ་ར྄གར྄དི་[2] ཞེས་བྱ་བའི་སྔགས་བརྗོད་ཅིང་བསམ་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་དབང་ལྡན་དུ་དུ་ཡིག་ལས་རྡོ་རྗེ་གཽ་རཱི་མ་ཕྲག་དོག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དང་མཚུངས་པ་ལ། རལ་གྲིའི་གནས་སུ་ཨུཏྤལ་སེར་པོ་འཛིན་པ་བདང་སྐོམས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཅན། ཨོཾ་བཛྲར྄དི་[3] ཞེས་བྱ་བའི་སྔགས་བརྗོད་ཅིང་བལྟ་བར་བྱའོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་དེ་རྣམས་ཀྱང་ཞབས་གཡས་བརྐྱང་བས་གནས་པའོ། །

དེ་ནས་ཕྱི་རོལ་གྱི་རིམ་པའི་ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་སྒོར་ཡཾ་ཡིག་[4] ལས··· ཐོ་བ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཞེ་སྡང་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དང་འདྲ་བ་ལས་ཁྱད་པར་ནི··· རྡོ་རྗེའི་གནས་སུ་རྡོ་རྗེ་རྩེ་གསུམ་པས་མཚན་པའི་ཐོ་བ་འཛིན་པ་སྟེ། ཨོཾ་མུདྒར་དྷྲྀཀ་ཅེས་པའི་སྔགས་བརྗོད་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་ལྷོ་ཕྱོགས་ཀྱི་སྒོར་ཙ་ཡིག་[5] ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་དབྱིག་པ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཕྲ་མ་[6] གཤིན་རྗེ་གཤེད་དང་འདྲ་བ་ལས་ཁྱད་པར་ནི་འཁོར་ལོའི་གནས་སུ་རྡོ་རྗེ་རྩེ་གསུམ་པས་མཚན་པའི་དབྱིག་པ་འཛིན་ཅིང་ཨོཾ་དཎྜ་དྷྲྀཀ་ཅེས་བྱ་བའི་སྔགས་བརྗོད་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་ནུབ་ཕྱོགས་ཀྱི་སྒོར་ནི་ཡིག་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་པདྨ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་·· འདོད་ཆགས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དང་འདྲ་བ་སྟེ། ཨོཾ་པདྨ་དྷྲྀཀ་ཅེས་བྱ་བའི་སྔགས་བརྗོད་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་བྱང་ཕྱོགས་ཀྱི་སྒོར་ར་ཡིག་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་

༡,༢,༣ ཅོ་དཔེར་ ར྄དེ། ༤ ཅོ་དཔེར་ ཡ་ཡིག ༥ ཅོ་དཔེར་ ཙ་ཡིག ༦ ཅོ་དཔེར་ གཏི་མུག

རལ་གྲི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཕྲག་དོག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དང་འདྲ་བ་ཨོཾ་ཁཊྒ་དྲྀཀ་ཅེས་པའི་སྔགས་བརྗོད་ཅིང་བསམ་པར་བྱའོ། །དཀྱིལ་འཁོར་པའི་ལྷ་རྣམས་ཀུང་འཁོར་ལོ་འི་བདག་པོ་འི་རྒྱན་གྱིས་བརྒྱན་པའོ། །དེ་ནས་ཕྱི་རོལ་གྱི་རིམ་པར་གྲུ་བཞི་ལ་གནས་པ་ནི་ནཡོ་ནི་རཱ་ཎྜི་ས་བོན་ལས་སྐྱེ་ཚོགས་པདྨ[1]ལ་གནས་པའི་རང་གི་གདན་ལ་ཐོད་པ་རྣམ་པ་བཞི་པོར་བདུད་རྩི་རྣམ་པ་ལྔས་གང་བར་བསམ་པར་བྱའོ། །དེ་དག་ནི་འཁོར་ལོ་ཐམས་ཅད་རྫོགས་པ་སྟེ། ཤིན་ཏུ་རྣལ་འབྱོར་དུ་བརྗོད་པའོ། །

དེ་ནས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བདག་པོ་དང་དཀྱིལ་འཁོར་བ་རྣམས་ཀྱི་མིག་ལ་སོགས་པ་ལ། ཨོཾ་བཛྲ་ཙཀྲ་ཧཱུྃ། ཨོཾ་[2]བཛྲ་ཀྲོ་དྷ[3]། ཨོཾ་[4]བཛྲ་ཀུཎྜ[5]། ཨོཾ་[6]བཛྲ་ཛི་བ། ཨོཾ་[7]བཛྲ་ཀཱ་ཡ[8]ཞེས་པའི་སྔགས་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པར་བྱའོ། །དེ་བཞིན་དུ་མགོ་བོ་ལ་ཟླ་བར་ཨོཾ་ཡིག་དཀར་པོ་གནས་པ་དང་། མགྲིན་པ་ཨཱཿཡིག་དམར་པོ་པདྨ་དམར་པོ་ལ་གནས་པ་དང་། སྙིང་གར་ཉི་མ་དམར་པོ་ལ་གནས་པའི་ཧཱུྃ་ཡིག་སྔོན་པོ[9]སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་བདག་ཉིད་དུ་བལྟ་བར་བྱའོ། །དེ་ནས་རང་གི་སྙིང་གའི་ས་བོན་གྱི་འོད་ཟེར་གྱིས་ནམ་མཁའི་ཕྱོགས་སུ་གནས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་དག་པར་མཆོད་ནས[10]དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་དེ་བདག་ལ་དབང་བསྐུར་ཕྱིར་ཀྱིས་སྩོལ་ཞེས་གསོལ་བ་གདབ་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་དེ་རྣམས་ཀྱིས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་གཟུགས་སུ་བྱ་སྟེ། བུམ་པ་བདུད་རྩི་ལྡན་གང་བ་བཟུང་སྟེ་དབང་བསྐུར་བར་བྱེད་དོ། །དེ་

༡ ཅོ་དཔེར་༌ འདབ་མ་ཞེས་ཀུང་འདུག ༢ ཅོ་དཔེར་༌ ཨོཾ་མི་འདུག ༣ ཅོ་དཔེར་༌ ཁྲོད།
༤ ཅོ་དཔེར་༌ ཨོཾ་མི་འདུག ༥ སྡེ་༌ ཀྲན། ༦,༧ ཅོ་དཔེར་༌ ཨོཾ་མི་འདུག ༨ ཅོ་དཔེར་༌ ཀཱཡ།
༩ ཅོ་དཔེར་༌ ནག་པོ། ༡༠ སྡེ་༌ མཆོད་པར་དེ་བཞིན།

ནས་ཕྱི་དང་ནང་གི་དྲྀ་མ་མ་ལུས་པ་བཀྲུས་ཏེ་འབར་ཞིང་གསལ་བ་དང་ལྡན་པ་བདག་ཉིད་ཀྱི་ཕྱི་དང་ནང་གི་དྲྀ་མ་མ་ལུས་པ་དག་པར་[1]བལྟ་བར་བྱའོ། །དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བདག་པོ་དང་དཀྱིལ་འཁོར་བ་རྣམས་ཀྱི་དབྱུ་ལ་རང་གི་[2]རིགས་ཀྱི་བདག་པོར་བལྟ་བར་བྱའོ། །དེ་ཡང་འདི་ལྟ་སྟེ། དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བདག་པོ་ནི་མི་བསྐྱོད་པའོ། །གཏི་མུག་གཞིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དོ།། ཕྲ་མ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྡན་ནོ། །འདོད་ཆགས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་སོ། །ཕྲག་དོག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པའོ། །རྡོ་རྗེ་ཙརྩི་ཀ་ནི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དོ། །རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་ནི་མི་བསྐྱོད་པའོ། །རྡོ་རྗེ་དབྱངས་ཅན་མ་ནི་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་སོ། །རྡོ་རྗེ་གཽ་རཱི་མའི་ནི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པའོ། །ཐོ་བ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་མི་བསྐྱོད་པའོ། །དབྱིག་པ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་དོ། །པདྨ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་སྣང་བ་མཐའ་ཡས་སོ། །རལ་གྲི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་དོན་ཡོད་གྲུབ་པ་ཞེས་པའོ[3]།།

དེའི་རྗེས་ལ་རང་གི་སྙིང་གའི་ས་བོན་གྱི་འོད་ཟེར་གྱིས་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་[4]བཀུག་སྟེ་ཡང་དག་པར་མཆོད་ནས། ཨོཾ་སུ་རྣ་ར་[5]ཛཿ། ཨོཾ་དྷ྄ཱ་ཧཱུྃ། ཨོཾ་པདྨ་བཾ། ཨོཾ་ཁཊྭཱང་ག་ཧོཿ་ཞེས་པའི་སྔགས་རྣམ་པ་བཞི་དགུག་པ་དང་། གཞུག་པ་དང་། བཅིང་བ་དང་། དབང་དུ་བྱས་པས་དམ་ཚིག་གི་འཁོར་ལོ་[6]དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་[7]གཅིག་ཏུ་བྱའོ། །དེ་ནས་[8]ཡཾ་ཡིག་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་ཧཱུྃ་སྐད་གསུངས་པའི་རླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་དེ་སྟར་བའི་རཾ་[9]ཡིག

---

༡ ཅོ་དཔེར་༎ དྲྀ་མ་མ་ལུས་པ་དག་པར་ཞེས་པ་མི་འདུག ༢ ཅོ་དཔེར་༎ རང་རང་གི ༣ ཅོ་༎ བྱའོ།
༤ ཅོ་དཔེར་༎ དཀྱིལ་འཁོར། ༥ ཅོ་༎ སུ་དགཛཿ ཅོ་༎ ཨོཾ་སུ་ཧྣ་རཛ། ༦,༧ ཅོ་དཔེར་༎ དཀྱིལ་འཁོར།
༨ ཅོ་༎ པེ་༎ ཡང་ཡཾ་ཡིག ༩ ཅོ་༎ པེ་༎ ཡཾ་ཡིག

ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་མེའི་དཀྱིལ་འཁོར་རོ། །དེས་བསྲོས་པའི་ཨ་ཡིག་དཀར་པོ་ཡོངས་སུ་གྱུར་པའི་ཐོད་པ་སྒོག་དང་བྲལ་བའི་གཀུདཧྲུན་ཨོཾ་ཡིག་གི་⁚⁚ བྱིན་གྱིས་བརླབས་པས་ཞུ་བར་གྱུར་པར་བལྟ་བར་བྱ་ཞིང་། ཨོཾ་ཡིག་གི་ཐིག་ལེ་ལས་བྱུང་བའི་འོད་ཟེར་གྱིས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐུགས⁚⁚⁚ ཀའི་བདུད་རྩི་བླངས་ཏེ། དེར་ཞུགས་པས་བདུད་རྩི་རྣམ་པ་ལྔས་བསིལ་བར་བྱ་སྟེ།། ཨོཾཨཱཿཧཱུྃ ཞེས་པའི་ཡི་གེ་གསུམ་གྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབ་ཅིང་ལྷ་རྣམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཞལ་དུ་ཧཱུྃ་ལས་སྐྱེས་པའི་རྡོ་རྗེ་⁚ རྩེ་གཅིག་པའི་འོད་ཟེར་[1]གྱི་སྦུ་⁚ གུས་རབ་ཏུ་གཞུག་པར་བལྟ་བར་བྱའོ། །དེ་ནས་འཁོར་ལོ་ཆེམ་བར་གྱུར་པར་བལྟ་བར་བྱ་ཞིང་རྡོ་རྗེ་ཙཱརྱ་ཀའི་ཞལ་གྱི་གླུས་མཆོད་པར་བྱ་སྟེ།

ཨ་ཀྱེ་ཀྱེ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་ལྷ། །
སྨིན་པོའི་གཟུགས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཁྱོད། །
བདག་གིས་ཁྱོད་མཐོང་ཤིན་ཏུ་འཇིགས། །
ཁྲོས་པའི་རང་བཞིན་འདི་ཐོང་མཛོད། །

དེ་ནས་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་འི་ཞལ་ནས།

ས་བླ་ས་འོག་ས་སྟེང་གསུམ། །
ཁྱོད་ཀྱི་གར་གྱིས་གཡོ་བར་མཛད། །
མིག་སྨན་བདར་[2]འཆག་ཁྲོས་པའི་ཐུགས། །
ཁྱོད་ནི་རོ་ལངས་བཞིན་གར་མཛོད། ། !

---

༡ ཅོ་དཔེར་ ● (ཙིཏྟབཛྲ) ཙ་ཚོགས་རྡོ་རྗེ། ༢ ཅོ་དཔེར་ ● (བཛྲཀྵི) རྡོ་རྗེ་གདོང་ཅན།
༣ ཙ་ ● ཕྱར་དག ཞེ་ ○ བདར་དག

དེ་ནས་རྡོ་རྗེ་དབྱངས་ཅན་མའི་ཞལ་ནས།

མདངས་ནག་ཚོད་ནི་སྦུང་[1]་པ་ལ། །

ཉམ་པ་ཚོགས་གཟུགས་ཡུལ་མཛོད། །

དབྱངས་ཅན་མ་བདག་གསོལ་བ་འདེབས། །

བདེ་བ་ཆེན་པོ་ཁྲོད་གར་མཛད། །

དེ་ནས་རྡོ་རྗེ་གཽ་རཱི་མའི་ཞལ་ནས་ཀྱང་།

ཧཱུྃ༔ཕཊ྄་ཧཱུྃ༔འི་ཐུགས་ཀྱི་གར་གྱིས[2]། །

སྲིད་པ་གསུམ་གྱི་འཁྲུལ་པ་སོལ། །

རྗེ་བཙུན་སྙིང་རྗེའི་དབང་ཕིས་ཁྲོས། །

འགྲོ་བས་གར་བྱེད་པ་ནི་མཐོང་། །

ཞེས་པའི་སྒྲུའི་དཀྱིལ་འཁོར་ཡང་དག་པར་མཆོད་ནས་དེ་ལ་བསྟོད་པ་བྱ་སྟེ།

གཏི་མུག་རྡོ་རྗེའི་[3]རང་བཞིན་ཁྲོད། །

གཤིན་རྗེ་གཤེད་པོ་ཤིན་ཏུ་འཇིགས། །

སྟོན་པ་སངས་རྒྱས་ཀུན་རང་བཞིན། །

རྡོ་རྗེ་སྐུ་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །

ཕྲ་མ་རྡོ་རྗེའི་རང་བཞིན་ཁྲོད། །

གཤིན་རྗེ་གཤེད་པོ་ཤིན་ཏུ་འཇིགས། །

རྡོ་རྗེ་ཐུགས་དང་རབ་མཚུངས་པ། །

རྡོ་རྗེ་རིན་ཆེན་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །

---

༡ ཐུ་ ཐུག་པ། ༢ ལེ་ གར་ཕྱིན་བདག་ཁྲོད་ཞེས་འདུག ༣ ལེ་ གཤིན་རྗེའི།

འདོད་ཆགས་རྡོ་རྗེའི་རང་བཞིན་ཁྱོད། །
འདོད་ཆགས་ཆོས་ཀྱི་སྦྱུང་གནས་གཙོ། །
དབྱིངས་ཀུན་གྱི་ནི་མཆོག་གི་མཆོག །
རྡོ་རྗེ་གསུང་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
ཐུགས་དོག་རྡོ་རྗེ་རང་བཞིན་ཁྱོད། །
གཤིན་རྗེ་གཤེད་པོ་ལས་ཀུན་པའི། །
རྡོ་རྗེ་སྐུ་དང་རབ་མཚུངས་པ། །
ཕྱག་ན་རལ་གྲི་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །
སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱི་རང་བཞིན་ཁྱོད། །
སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་གཅིག་བསྡུས་པ། །
སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱི་མཆོག་གི་མཆོག །
དཀྱིལ་འཁོར་གཙོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །

ཅེས་པ་སྟེ། དེ་ནི་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའ[1]།

མིག་སོགས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་དང་། །
སྐུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་ཉིད་དང་། །
ཡེ་ཤེས་འཁོར་ལོ་གཞུག་པ་དང་[2]། །
བདུད་རྩི་མྱང་བ་དག་དང་ནི། །
མཆོད་པ་ཆེ་དང་བསྟོད་པ་ནི། །
རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོ་ཞེས་བརྗོད་པའོ། །

---

1 སྡེ་° སྐྱེ། 2 སྣ་° སེ་° ཡང་།

ཞེས་པ་འདིས་ཉེ་བར་མཚོན་པར་བྱ་སྟེ། འཆད་པར་འགྱུར་བས་ཀྱང་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོར་རྟོགས་པར་བྱའོ། །

བདག་ཉིད་དེ་ལྟར་བསྒོམས་[1]ནས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྙིང་གར་རང་རང་གི་སྟན་དང་ཟླ་བ་དང་ཉི་མ་ལ་གནས་པའི་རང་རང་གི་ས་བོན་ཡི་གེ་རྣམས་བལྟ་ཞིང་བཟླ་བར་[2]བྱའོ། །དེ་ལ་སྔགས་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། ཨོཾཡཀཱཡིམམེདཡཙཎི རཛྷསརོཏྲ། ཧཱུཾཡོཾ ནིརྻ ཀྲྀཀྲྀཕཊཕཊ[3]སྭཱཧཱ། དེ་བཞིན་དུ་ལྷ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་རྣམས་ལས་རང་དང་འདྲ་བའི་ལྷའི་སྐུ་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་དུ་སྤྲོ་བར་བྱའོ། །

དེ་ལ་ཞེ་སྡང་གི་རིགས་ཀྱི་སྐོར་དུ་གྱུར་པའི་སེམས་ཅན་རྣམས་བདུལ་ནས་མཆོད་པ་ཆེན་པོ་ཞེ་སྡང་ཆེ་བ་ལ་[4]བཀོད་ནས་འོད་ཟེར་དེ་[5]དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བདག་པོའི་ལུས་ལ་རབ་ཏུ་ཞུགས་པས་ཞེ་སྡང་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་འཁོར་ལོར་བལྟ་བར་བྱའོ། །དེ་བཞིན་དུ་གཏི་མུག་གི་རིགས་ཀྱི་སྐོར་དུ་གྱུར་པའི་སེམས་ཅན་རྣམས་[6]མཆོད་པ་ཆེན་པོ་གཏི་མུག་ཆེ་བ་ལ་[7]བཀོད་ནས་[8]གཏི་མུག་[9]གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་ཚོགས་རྣམས་[10]གཏི་མུག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་སྐུ་ལ་བསྡུ་བར་བྱའོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཕྲ་མའི་རིགས་ཀྱི་སྐོར་དུ་གྱུར་པའི་སེམས་ཅན་རྣམས་མཆོད་པ་ཆེན་པོ་ཕྲ་མ་ཆེ་བ་ལ་བཀོད་ནས་ཕྲ་མ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་སྐུ[11]ལྷའི་འཁོར་ལོ་རྣམས་བསྡུ་བར་བྱའོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཕྲག་དོག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱང་རྟོགས་པར་བྱའོ། །

---

1 ཅོ་དཔེར་。(ཀྲིཥྞ) རྣམ་བསྒོམ། 2 ཅོ་དཔེར་。(མཉྫུཝཛྲ) སྔགས་བཟླ་བར། 3 ཅོ་དཔེར་。ཛྷཝརོཏྲཨཡོ ནིརཀྵིཧྲཱུཾཕཊཕཊ། 4 ཞ.ཡ. ལས། 5 ཅོ་དཔེར་。(ཡུགཏ) འོངས་ཏེ། 6 ཅོ་དཔེར་。(ཛྙི་ཏ) བདུལ་ནས་ཞེས་ཀྱང་འདུག 7 ཞ. ལས། 8 ཅོ་དཔེར་。(ཡུགཏ) འོངས་ཏེ་ཞེས་ཀྱང་འདུག 9 ཞ. གཏི་མུག་ཞེས་མ་མི་འདུག 10 ཅོ་དཔེར་. གཏི་མུག་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་ཚོགས་རྣམས་ཞེས་མ་མི་འདུག 11 ཞ.ཡ. སྐུ་ཞེས་མི་འདུག

སྐུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་རྣམས་དང་། །
ལྷ་ཡི་མིག་སོགས་བྱིན་རླབས་[1]དང་། ༡༠ །
ཡི་ཤེས་འཁོར་ལོ་གཞུགས་པ་དང་། །
བདུད་རྩི་མྱང་བ་དག་དང་ནི། །
མཆོད་དང་བསྟོད་པ་ཆེན་པོ་དག །
རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱའོ། ༡༡ །
སློབ་དཔོན་ལ་ནི་བཏུས་མི་བྱ། །
བདེ་གཤེགས་བཀའ་ལས་འདའ་མི་བྱ། །

དེ་ལྟར་ཡང་དང་ཡང་དུ་བསྒོམ་པར་ངེས་པས་ངལ་བར་གྱུར་ན་ཡན་ལག་དྲུག་གི་རྣལ་འབྱོར་བསྒོམ་པར་བྱ་སྟེ།

ནག་དང་སེར་དང་དེ་བཞིན་དམར། །
སྔོ་བསངས་དཀར་ལྗང་རིམ་པ་ལས། །
ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་དགའ་ཙམ་དུ་ནི། །
འཁོར་ལོ་བདག་པོར་བཅས་པ་བསྒོམ། །

དེ་ནས་ལངས་ཏེ་སྔར་བཞིན་དུ་ལྷའི་འཁོར་ལོ་རྣམས་བསྒོམ་ཞིང་སྦྱོ་བ་དང་བསྟུ་བ་ལ་སོགས་པའི་སྔགས་བཟླ་བར་བྱའོ།༡༠–༡༡།

དེ་ལྟར་ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པས་གཏོར་མ་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པ་དང་ཞི་བ་ལ་སོགས་པའི་ལས་རྣམས་བརྩམ་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་ཇི་ལྟར་རྟོགས་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། སློབ་དཔོན་ཞེས་བྱ་བ་[2]ལ་སོགས་པ་སྟེ། བདེ་

---

༡ སྣ་. བརླབ། ༢ སྣ་. ཞེས་བྱ་བ་མི་འདུག

དེ་བཞིན་སྤྱན་ལ་བྲོ་བ་དང་། །
ཉེས་པ་བསྒྲག་པར་མི་བྱའོ། ༡༢ །
བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱང་གཏང་མི་བྱ། །
བདག་གཞན་ཆོས་ལ་སྨད་མི་བྱ། །
སེམས་ཅན་ལ་ནི་བྱམས་པ་དག །
ནམ་ཡང་གཏང་བར་མི་བྱའོ[1]། ༡༣ །
ཡོངས་སུ་མ་སྨིན་སེམས་ཅན་ལ། །
གསང་བ་དག་ནི་བསྟན་མི་བྱ། །
བདག་སོགས་ཕུང་པོ་བརྙས་མི་བྱ། །
གྲོང་པའི་[2]ཆོས་ནི་སྤྱད་མི་གདོན། ༡༤ །

ག་ཤིགས་བཀའ་ཞེས་པ་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཛ་སྐད་གསུངས་པའི་གང་ལ་གནས་པ་འདི་ནི་བྱ་བའོ། །འདི་ནི་མི་བྱ་བའོ། །སྤྱན་ཞེས་པ་ནི་རྡོ་རྗེ་འཆང་གི་སྤྲུལ་པ་ལ་[3]སྤྱན་དུ་གྱུར་པ་སྟེ་སེམས་ཅན་རྣམས་ཉིད་ཀྱི་སྐྱོན་བསྟན་པར་མི་བྱའོ་ཞེས་པ་འབྲེལ་ཏོ། །དེ་བཞིན་བྲོ་བར་མི་བྱ་ཞེས་པ་ནི་བྲིས་པ་ལས་ལེགས་པའི་ཆོས་བསྟན་པ་མ་ཡིན་པའོ། །བདེན་པ་ཞེས་པ་ནི་དོན་དམ་

[1] བྱམས་པའི་སེམས་ནི་ཀུན་ཏུ། །
ནམ་ཡང་གཏང་བར་མི་བྱའོ། །
བདག་གཞན་ཆོས་ལ་སྨད་མི་བྱ། །
བྱང་ཆུབ་སེམས་ནི་གཏང་མི་བྱ། །ཞེས་འདི་ལྟར་བསྒྱུར་ན་ཀྱི་དཔེ་དང་མཐུན་ཆེ་བར་སྣང་། [2] སྡེ་ ༠ པའི། [3] སྡེ་ ༠ སྨྲ་བ་ལ་ཞེས་པ་མི་འདུག

གདུག་ལ་ཉམས་པ་རྟག་ཏུ་སྤང་[1]། །
ཆོས་ལ་ཚད་གཞལ་བར་མི་[2]བྱ། །
སེམས་ཅན་དད་པ་ཅན་མི་བསླུ། །
རྟག་ཏུ་དམ་ཚིག་བརྟེན་པར་བྱ། ༡༥ །
ཐུད་མེད་ཤེས་རབ་རང་བཞིན་ལ། །
སྨོད་པ་ཉེས་པ་དེ་བཞིན་ནོ། །
རྣལ་འབྱོར་སློང་མོས་རྒྱུ་མི་བྱ། །
རྣལ་འབྱོར་སྤོང་བར་མི་བྱ་སྟེ། ༡༦ །

པའོ[3]། །ཆོས་[4]ཞེས་པ་ནི་རྩལ་བ་[5]དང་འགལ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །ཆོས་ལ་ཚད་ནི་[6]ཞེས་པ་ནི་ཟབ་ཅིང་[7]རྒྱ་ཆེ་བའི་ལྟ་ལ་སོགས་པ་ལ་སྟེ་དགོས་པ···ཆུང་ངུ་ལ་ཞེས་བྱ་བའོ། །རྟག་ཏུ་བརྟེན་པར་བྱ་ཞེས་པ་ནི་ལྷག་མའ།༡༢–༡༥།

ཤེས་རབ་རང་བཞིན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་··གཟུགས་བརྙན་རྣམས་ཀྱིའོ། །སློང་མོས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་མངོན་པར་ཞེན་པ་[8]མེད་པས་སོ[9]། །རྣལ་འབྱོར་པར་མི་བྱ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷའི་སྐུའོ[10]། །རྟག་པར་ནི་དུས་ཐམས་ཅད་དུའོ། །རྟག་ཏུ་ཞེས་པ་ནི་མཉམ་

---

༡ ཟླ་༠ གདང་། ༢ ཟླ་༠ ཆོས་ལ་ཚད་ནི་གཞལ་མི་བྱ། ༣ ཚིག་རྐང་འདི་གཉིས། དེ་བཞིན་ཁྲོ་བ་ཞེས་པ་ནི་ཁྲོས་པས་སོ། །ཆོས་ནི་ཞིག་ས་པར་བྱས་པའོ། །(བསྟན་པ་) མ་ཡིན་ཞེས་པ་ནི་དོན་དམ་པའོ། །ཞེས་བསྒྱུར་ན་རྒྱ་དཔེ་དང་མཐུན་ཆེ་བར་སྣང་། ༤ རྒྱ་དཔེར་༠(ཀྲཱུཀྲཱུཏཀྲྀཏཱ) ཕྱོང་བའི་ཆོས། ༥ ཟླ་༠ པ། ༦ རྒྱ་དཔེར་༠(ཀྵམོནིཥྛི) ཆོས་ལ་མི་བྱ་ཞེས་པ་ནི། ༧ རྒྱ་དཔེར་༠ ཟབ་ཅིང་ཞེས་པ་མ་སྣང་། ༨ ཟླ་༠ཞེ་༠ ཞེན་པ་མི་འདུག ༩ རྒྱ་དཔེར་༠ མེད་པས་སོ་མི་འདུག ༡༠ སྡེ་༠ རྣལ་འབྱོར་རོ། །འདིར་རྒྱ་དཔེ་ལྷུར་བཞག་ཡོད།

རྟག་པར་རྒྱུན་དུ་གསང་སྔགས་བཟླ། །
རྟག་ཏུ་དམ་ཚིག་ལ་སོགས་བསྡེབ།[1] །
གལ་ཏེ་བག་[2]མེད་གྱུར་གྱུར་ན[3]། །
བླ་མ་དམ་ཚིག་ལ་གནོད་ན། །
དེས་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་བྲི་[4] བྱས་ལ། །
བདེ་གཤེགས་རྣམས་ལ་ཉེས་པ་བཤགས།༡༧།

སྙིང་རྗེ་ཅན་གྱིས་མི་བརྟག་པར། །
དད་པས་བླ་མའི་དམ་ཚིག་བསྲུང་[5]། །

པར་གཞག་པ་དང་མཉམ་པར་མ་བཞག་པའི་རྣལ་འབྱོར་གྱིས་སོ། །སྔར་དམ་ཚིག་མངོན་པར་བརྗོད་པ་ལས་ཡང་གང་ཞིག་བརྗོད་པ་ནི་དེའི་དོན་ཡང་འདི་ཡིན་ཏེ་བསྲུང་བ་དང་། བཟའ་བ་དེ་དག་གི་དམ་ཚིག་ནི་གཉིས་ཏེ། སྔར་ནི་བཟའ་བའི་དམ་ཚིག་བརྗོད་པ་ཡིན་ལ། འདིར་ནི་བསྲུང་བའི་དམ་ཚིག་ཏུ་དགོངས་ཏེ། བླ་མ་སྨོད་པ་ཞེས་པ་ནི་གནོད་པ་བྱེད་པའོ། །དེ་བཞིན་དམ་ཚིག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་དམ་ཚིག་ཉམས་པ་ནའོ། །དཀྱིལ་འཁོར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡུལ་ཚོན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་རོ། །བདེ་གཤེགས་རྣམས་ལ་ཞེས་པ་ནི་བླ་མ་རྣམས་ལ་ཞེས་པའོ། །དེ་དང་ཉེ་བར་མ་གྱུར་ན་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཉིད་ལའོ།༡༦—༡༧།

ཉམས་པའི་གནས་སྐབས་སུ་བླ་མ་འདོད་ཇི་ལྟ་བུ་ཞིག་ལ་བྱ་ཞེ་ན······གསུངས་པ། དད་པས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དམ་ཚིག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་

---

༡ ཕ་. བསྡུན། ༢ སྣེ་. བདག ༣ ཕྱུ་. ཏེ། ༤ ཕ་. བྲིས། ༥ ཕ་. སྒྲུང་།

ཉེས་པ་མ་ལུས་རྣམ་སྤངས་སེམས་ཀྱིས་ནི། །
བསམ་གཏན་ལ་སོགས་བརླབས་པ་མཆོག་གཞོལ་བར། །
བྱས་ལ་རྟག་ཏུ་བླ་མ་བླ་མར་བྱ[1]། ༡༨ །

བརྟན་ཞིང་དུལ་ལ་སྙིང་རྗེ་གཅིག་ཏུ་སེམས། །
དད་དང་ལྷག་པའི་བསམ་པས་བཟོད་པ་འཛིན། །
སློབ་མ་བླ་མ་ལ་ནི་གུས་པ་དང་། །

གོཀུདཧན་ལ་སོགས་པ་བསྟེན་[2]པའོ། །གཞན་མི་རྟག་[3]ཅེས་བྱ་བ་ནི་དམ་ཚིག་བསྟེན་པར་བྱེད་པ་ཇི་ལྟར་གཞན་གྱིས་མི་རིགས་པའོ། །ཉེས་པ་མ་ལུས་ཞེས་པ་ནི་ལུང་ལས་གསུངས་པའི་ཉེས་པ་གསུངས་པའོ། །བསམ་གཏན་ལ་སོགས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པའོ། །སེམས་ཅན་མཆོག་གཞོལ་ཞེས་པ་ནི་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་མཆོག་པའོ། །བླ་མ་དེར་ནི་བླ་མ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བླ་མ་དེ་ལ་གུས་པར་བྱ་བའོ། ༡༨།

སློབ་མའི་ཡོན་ཏན་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། བརྟན་[4] ཞེས་པ་ནི་བསྟན་བཅོས་[5] ཉན་པ་དང་ཀློག་པའོ། །དུལ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལས་དམན་པར་སེམས་པའོ། །དད་པའི་བསམ་པ་ནི་རབ་ཏུ་

---

༡ སྣ་༠ རྟག་ཏུ་བླ་མ་ལ་ནི་བླ་མར་བྱ། ༢ སྣ་༠ བསྐོར་བའོ། ༣ ཅོ་དཔེར་༠ (ཨཱནནྡ) མི་བརྟག ༤ སྡེ་༠ བསྟན། འདིར་ཅོ་དཔེ་དང་མཐུན་པར་བཞག་ཡོད། ༥ སྡེ་༠ བསྟན་པ། འདིར་ཅོ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

དད་པས་གཤིན་རྗེའི་[1] གཤེད་ལ་གུས་པ་ལ། །
བདུལ་ཞུགས་ལྡན་པས་དེ་ནི་ཡོངས་སྨིན་བྱ[2]། ༡༩ །

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་དགའ་བ་ཆེན་པོའི་ངོ་བོ་རྡོ་རྗེ་འཆང་གི་[3] གསུང་ཉེ་བར་ཐོས་ནས་ཅང་མི་སྨྲ་བར་གྱུར་ཏེ། འདི་ལྟ་བུའི་ཆེད་དུ་བརྗོད་པས་[4] ཆེད་དུ་བརྗོད་དོ། ༢༠།

དང་བའོ། །མཛེས་ཞེས་པ་ནི་ལུས་དང་ཡན་ལག་དམན་པ་མ་ཡིན་པའོ། ། སྨིན་བྱ་ཞེས་པ་ནི་ཆོས་བསྟན་པ་ལ་སྦྱོར་བའོ། ༡༩།

མཆོག་ཏུ་དགའ་བ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་དགའ་བའོ། །དགའ་བར་གྱུར་[5] ཞེས་པ་ནི་མཆོག་ཏུ་ཚིམ་པར་བྱེད་པའོ། །ཆེད་དུ་བརྗོད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་བརྗོད་པ་དང་ལྡན་པ་རྣམས་སོ། ༢༠།

---

༡ ལྷ༌ ཆེ། ༢ ཚིགས་བཅད ༡༨ དང་ ༡༩ པ་འདི་གཉིས།

དད་པས་བླ་མའི་དམ་ཚིག་བསྲུང་ལ་མི་བརྟག་པར། །
སྙིང་རྗེ་ཅན་གྱིས་ཉེས་པ་མ་ལུས་རྣམ་སྤངས་སེམས། །
བསམ་གཏན་དང་བཅས་བླ་མའི་བཟླས་པར་མཆོག་གཞོལ་བར། །
གུས་ལ་རྟག་ཏུ་བླ་མ་ལ་ནི་བླ་མ་བཞིན་དུ་བྱས། ༡༨ །
བརྟན་ཞིང་དུལ་བ་སྙིང་རྗེ་གཅིག་ཏུ་སེམས། །
དད་པའི་བསམ་པ་བཟོད་ལྡན་བརྩོན་འགྲུས་པ། །
གཤིན་རྗེ་གཤེད་དང་བླ་མར་གུས་ཅན་གྱི། །
སློབ་མར་བདུལ་ཞུགས་ལྡན་པས་ཡོངས་སྨིན་བྱ། ༡༩ །ཞེས་འདི་ལྟར་བསྒྱུར་ན་རྒྱ་དཔེ་དང་མཐུན་ཆེ་བར་སྣང་། ༣ རྒྱ་དཔེར༌ (བཛྲདྷྲྀ) རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི། ༤ ལྷ༌ ག། ༥ རྒྱ་དཔེར༌ དགའ་བར་གྱུར་ཞེས་པ་མི་འདུག

བརྟུལ་ཞུགས་མཐར་ཕྱུག་སྤྱོད་པ་ཆེན་པོ་ལྟར། །
འཁྲུལ་འཁོར་མཐར་ཕྱུག་གཤིན་རྗེའི་[1] གཤེད་ཀྱི་རྒྱུད། །
རྒྱུད་ཀྱི་མཐར་ཕྱུག་པ་ནི་འདུས་པ་སྟེ། །
བྱུང་བར་མ་གྱུར་འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་རོ། ༢༡ །

ཨེ་མའོ་[2] ཞི་བ་ཆེན་པོའི་ཆོས། །
ཨེ་མའོ་[3] ཁྲོ་བོ་འཇོམས་མཛད་པ། །

ཅི་བརྗོད་ཅེ་ན་གསུངས་པ། གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་མཐར་ཕྱུག་ཅེས་པ་ནི་དཔལ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་རྒྱུད་དང་ལྷར་[4] དངོས་གྲུབ་མྱུར་བ་གདོན་མི་ཟ་བར་འབྱུང་བའི་འཁོར་ལོ་[5] རྣམས་ལས་གཞན་དག་ཏུ་དེ་བཞིན་དུ་མ་ཡིན་པས་སོ། །སྤྱོད་པའི་མཐར་ཕྱུག་ཅེས་པ་ནི་སྤྱོད་པ་འཆང་བའི་མཐར་ཕྱུག་པ་སྟེ། ཧེ་རུ་ཀའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་མཐར་ཕྱུག་པའོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་ཉན་ཐོས་ལ་སོགས་པའི་བརྟུལ་ཞུགས་ནི་མཐར་ཕྱུག་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༢༡།

ཨེ་མའོ་ཞི་བ་ཆེན་པོའི་ཆོས། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྨི་ལམ་དང་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུ་གཉིས་མེད་བདེན་པར་མི་འགྱུར་བ་ལས་ཞི་བ་ཆེན་པོར་བྱེད་པ་པོས་[6] འཇོམས་པར་མཛད་པ་ཞེས་པ་ནི་ཞི་བར་གྱུར་ནས་གདུལ་བྱ་རྣམས་ལ་སྨད་དུ་བྱུང་བའི་འཇིགས་པའི་གཟུགས་སུ་མ་[7] སྤྲུལ་པའོ། ། དེ་ལྟ་བུའི་ལྷ་གཉིས་གསུངས་

---

༡ ཞ་ ○ རྗེ། ༢,༣ སྣེ་ ○ ཨེ་མཧོ་ཧོ། ༤ ཀུ་དཔེར་ ○ ཚིག་ཟིན་དུ་ཞི་ལྟར་འདོད་པའི་ཞེས་པ་ལས་ཕྲར་ཞེས་མི་འདུག ༥ ཀུ་དཔེར་ ○ (ཨནྟཱཙཀྲེ) འཁྲུལ་འཁོར། ༦ ཀུ་དཔེར་ ○ འདིར་ (མཧཱཀྲོ་ཏ) འཇིགས་པ་ཆེན་པོ་ཞེས་ཀྱང་འདུག ༧ ཀུ་དཔེར་ ○ མ་མི་འདུག

ཨེ་མའོ་[1]མྱ་ངན་འདས་པའི་མཆོག །
ཨེ་མའོ་འཁོར་བ་ཞི་[2]བ་ཉིད། ༢༢ །

ཨེ་མའོ་འདི་ནི་རབ་ཏུ་མཚར། །
ཉེས་པ་གང་དེ་ཡོན་དན་འགྱུར་[3]། །

པ།། ཨེ་མའོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །མཆོག་ཏུ་[4]མྱ་ངན་ལས་འདས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཞི་བའོ། །ཨེ་མའོ་འཁོར་བ་ཞི་བ་[5]ཉིད། །ཅེས་བྱ་བ་ནི་འདི་ཡང་འཁོར་བ་[6]ལྟ་བུའམ། འཇིག་རྟེན་པ་ལྟ་བུ་[7]སྟེ། ལྷ་རྣམས་ཀྱི་རྣམ་པས་འཇུག་པས་དེ་ལྟ་བུ་[8]ལ་ཡང་རྒྱུན་གྱིས་འཇུག་པར་བྱེད་པའོ། །ཨེ་མའོ་འདི་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ཉེས་པ་གང་དོ་ཤ་[9]ཞེས་པ་ནི་ཁྲིམས་དང་ཁྲིམས་ཐབ་དང་། སྐྱེ་བ་དང་། འཆི་བ་ལ་སོགས་པའོ། །དེ་དག་ནི་འཁོར་བའི་སྐྱོན་ཏེ། འདོར་ཡང་དེ་ལྟ་བུ་སྟེ། ཐམས་ཅད་མཆོག་གི་ཡོན་དན་དུ་འགྱུར་པ་ཡིན་ནོ། །གང་གི་ཕྱིར་འདི་ནི་གཞལ་ཡས་ཁང་[10]དུ་གནས་པ་ལ་སོགས་པ་ཡིན་ཡང་འཆིང་བའི་རྒྱུ་མ་ཡིན་ཏེ[11]། འོན་ཀྱང་གྲོལ་བ་ཉིད་དུ་བྱེད་པའོ།། །།ཡང་སྐྱོན་རྣམས་ཡོན་དན་དུ་ཇི་ལྟར་བྱེད་ཅེ་ན་གསུངས་པ། བྱང་ཆུབ་མེད་ཅིང་ཞེས་པ་སྟེ། འདི་ཡང་བྱང་ཆུབ་འདི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ལ། བྱང་

---

༡ སྡེ་ ཨེ་མཧོ། ༢ རྒྱ་དཔེར་ (སཾསཱ་རསཾབྷཱཿ) འཁོར་བའི་རྒྱུ། ༣ སྣར་ ཀྱུར།
༤ སྡེ་ འཁོར་བ། འདིར་རྒྱ་དཔེ་དང་མཐུན་པར་བཞག་ཡོད། ༥ རྒྱ་དཔེར་ (སཾསཱ་རསཾབྷཱ) འཁོར་བའི་རྒྱུ། ༦ རྒྱ་དཔེར་ (སཾསཱ་རཱབྡྷི) འཁོར་བ་རྒྱ་མཚོ། ༧ རྒྱ་དཔེར་ ཚིག་རྐང་འདི་མི་འདུག ༨ སྡེ་ འཇིག་པ་ལྟ་བུ། ༩ སྡེ་ དེ་ཀ སྣར་ པེ་ དེ་ཉིས། ༡༠ རྒྱ་དཔེར་ (ཀཱུ་ཊཱ་གཱ་ར) རིམ་རྩེགས། ༡༡ སྣར་ པེ་ ནོ།

བྱང་ཆུབ་མེད་ཅིང་མངོན་རྟོགས་མེད། །
དངོས་པོ་མ་ཡིན་བསྒོམ་བྱ་མིན། ༢༣ །
ཁམས་མ་ཡིན་ཞིང་རྣམ་ཤེས་མིན། །
ནམ་མཁའི་ཁམས་དང་མཚུངས་པ་ཉིད། །

ཆུབ་སེམས་དཔའ་ན་སྐྲུབ་པར་བྱེད་པའོ་ཞེས་ལོགས་སུ་མངོན་པར་ཞེན་པ······མེད་པའོ། །མངོན་རྟོགས་མེད་ཅེས་པ་ནི་མངོན་པར་རྟོགས་པ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་དོན་དུ་ལམ་སྟེ་དེར་ལོགས་སུ་མངོན་པར་ཞེན་པར་མི་བྱའོ། །དངོས་པོ་མིན་ཞིང་བསྒོམ་པ་མིན། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་བདག་ཉིད་བསྒོམ་པར་བྱ་བ་དང་། སྒོམ་པ་པོ་དང་། བསྒོམ་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཐ་དད་ཀྱི་མངོན་པར་ཞེན་པ་དང་བྲལ་ཞིང་སེམས་ཉིད་ཡང་དང་ཡང་དུ་གོམས་པར་བྱེད་པའི་བདག་ཉིད་ཙམ་མོ། ༢༢–༢༣།

ཅིའི་ཕྱིར་ཡང་མངོན་པར་ཞེན་པ་མེད་[1]ཅེ་ན་གསུངས་པ། ཁམས་ཀུང་མིན་ཞེ་ན་[2]ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ཕྱི་རོལ་གྱི་གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་[3]རྟེན་མེད་པའོ། །གཟུང་བ་མེད་པས་འཛིན་པ་ཡང་མེད་དམ་ཞེ་ན། ཀུང་མེད་ཅེས་པ་སྟེ། འཛིན་པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་མེད་ཅེས་པའི་དོན་ཏོ། །འོ་ན་སོ་སོར་སྣང་བ་[4]འདི་ཇི་ལྟ་བུ་ཞེ་ན། ནམ་མཁའི་དཀྱིལ་དང་མཚུངས་པ་ཉིད། །ཅེས་པ་སྟེ། གང་གི་ཕྱིར་ནམ་མཁའ་ནི་ནམ་མཁའི་རང་བཞིན་ནོ། །སྔོན་པོ་དང་། དཀར་པོ་ལ་སོགས་པའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་བ་སྣང་བ་ཙམ་སྟེ། དེ་ལྟ་བུ་ཡང་ཤུན་པ་དང་། སྤྲིན་ལ་སོགས་པའི་གཞི་ཡིན་པ་དེ་རྣམས་བསྡུས་

---

༡ ཅོ་དཔེར་། ((ཀ) ཕྲི་ཐག་སྟྲུ་བདུ) ཐ་དད་བསྒོམ་པ་མེད། ༢ སྣ་། པེ་། མིན་ཞིང་། ༣ ཅོ་དཔེར་། (ཁྲུ་ཏུ) གསུང་པའི། ༤ སྣ་། སྣང་བ་ན།

ནམ་མཁའ་ལྟ་བུར་བདག་མེད་པ། །
ཆོས་འདི་བདེ་བ་ཆེན་པོ་སྟེ། ༢༨ །
ས་ཡང་མ་ཡིན་ཆུ་མིན་ཏེ། །
མེ་མིན་རླུང་མིན་ནམ་མཁའ་མིན། །

ནས་ནམ་མཁའ་ཉིད་ནི། འདིར་འདི་ལྟ་བུ་ཞེས་སྨོངས་པའི་ཡིད་ཅན་རྣམས་མངོན་པར་ཞེན་པའོ[1]། །དེ་བཞིན་དུ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་རོ་གཅིག་པར་རྟོགས་པ་རྣམ་པ་དང་བྲལ་བའི་ཤེས་པ་དང་འདི་ཉིད་ལ་སྟེ། དེ་ལྟ་བུ[2] རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པའི་གཞི་ཡིན་པས་དེ་ཉིད་རང་བཞིན་ནོ་ཞེས་སྨོངས་པ་རྣམས་མངོན་པར་ཞེན་པའོ། །འདི་ཉིད་གསུངས་པ། ནམ་མཁའ་ལྟ་བུ་ཞེས་པ་སྟེ། བདག་མེད་ཆོས་འདི་བདེ་ཆེན་པོ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་སེམས་ཉིད་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་དེ་ཉིད་བདག་མེད་པའི་ཆོས་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་སྣང་བར་འདོད་ཅིང་རྣམ་པའི་རང་བཞིན་མེད་པར་གྱུར་པ་སྟེ། རང་བཞིན་མེད་པ་རྣམ་པ་བྲལ་བ་ཞེས་པའོ། ༢༨།

གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི[3] དངོས་པོ་མེད་པ་དེའི་ཕྱིར་ན་འབྱུང་བ་ལྔ་མ་གྲུབ་པར་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། ས་ཡང་མ་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ས་ལ་སོགས་པ་ནི་རྡུལ་ཕྲ་རབ་ཀྱི་ཚོགས་ཉིད་དུ་འདོད་ཅིང་རྡུལ་ཕྲ་རབ་ཀྱི་ཆ་ཤས་མེད་པའི་དངོས་པོ་ཞེས་བརྗོད་དེ། འདི་ནི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆའི་དབྱེ་བས་རྟོགས་པ་གང་ལ་ཆ་ཤས་མེད་པ་ཡིན། དེ་ལྟ་བས་ན་རྡུལ་ཕྲ་རབ་མ་གྲུབ་པས་ས་ལ་སོགས་པའི་བྱ་བ་ནི་སློམ་པ་ཆུ་སྟེར[4] བ་ཉིད་དོ། །ཁལ་ཏེ་འདི་དག་ཐམས་ཅད་ལ་གཟུང་བ་དང་། འཛིན་པ་སྣ་ཚོགས་རང་བཞིན་གྱིས་

---

[1] སྣ་ ● པེ་ ◦ པས་སོ། [2] ཁུ་དཔེར་ ◦ (ཨཱཏྨ) ཡང་ན། [3] ཁུ་དཔེར་ ● འཛིན་པའི་འཁོར་ལོ།
[4] སྟེ་ ◦ གཏེར།

རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་སྦྱོར་བ་ཡིས། |
བསྐྱེད་པ་ཡང་ནི་རབ་གནས་ནས། ༢༤ |
དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་དངོས་མེད་བཤད། |
དངོས་པོ་མེད་ཅེས་མ་བསྒྲགས་པ། |

མེད་ན་གང་ལས་སྐྱེ་བར་འགྱུར་ཞེ་ན། གསུངས་པ། རྡོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། རྡོ་རྗེ་ནི་མི་ཕྱེད་པའི་ཡེ་ཤེས་སོ། །དེའི་བདེན་པ་ནི་སེམས་པའོ།། །།དེའི་རབ་ཏུ་སྦྱོར་བས་ཞེས་པ་ནི་གཏི་མུག་རབ་ཏུ་འབྱེད་པའི་སྦྱོར་བའོ།། །།བསྐྱེད་པ་ནི་དེ་ལས་ཏེ། འདིར་[1]རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་དང་སྦྱོར་[2]འདི་ནི་བལྟ་བར་བྱ། བདག་ནི་ལྷ་བྱེད་དོ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། ༢༤།

དེ་ཡང་ཅི་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པ་དེ་ཞེས་པ་ཡེ་ཤེས་[3]ལ་བརྟེན་པ་མ་ཡིན་ནམ་ཞེ་ན། གསུངས་པ། ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་གསལ་ཞིང་སྣང་བ་[4]བརྟེན་པའི་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་རྣམ་པའོ། །དངོས་[5]མེད་བཤད་ཅེས་པ་ནི་བདེན་པའི་ངོ་བོ་མ་ཡིན་པའོ།། །།དེའི་[6]དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། ཤེས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་རང་བཞིན་དུ་རྟོག་[7]པ་ཡང་ཅི་ཕ་རོལ་པོའི་ཤེས་པ་ནི་གཟུང་བ་[8]དང་འཛིན་པའི་[9]རང་བཞིན་མ་ཡིན་ཏེ། ཕ་རོལ་གྱི་རང་རིག་པ་མངོན་སུམ་དུ་མ་གྱུར་པའི་ཕྱིར་རོ། །རང་གི་[10]ཡང་དག་པར་རིག་པ་ལ་[11]བརྟེན་པ་ཡང་མ་ཡིན་

༡ སྣ་ ◦ འདིར་ཡང་། ༢ ཀྱི་དཔེར་ ◦ དང་སྦྱོར་ཞེས་པ་མི་འདུག ༣ ཡེ་ཤེས་ཞེས་པ་བོད་དཔེར་མི་སྣང་ཡང་ཀྱི་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད། ༤ ཀྱི་དཔེར་ • (སྣཏེ་སྒྲུས) སོ་སོར་སྣང་བ། ༥ པེ་ ◦ དེ་དངོས། ༦ སྣ་ ◦ པེ་ ◦ ཡང་ན་དེའི། ༧ སྡེ་ ◦ རྟག ༨ སྣ་ • པའི། ༩ ཀྱི་དཔེར་ ◦ འཛིན་པའི་ཞེས་པ་མི་འདུག ༡༠ སྣ་ • པེ་ ◦ གང་གི ༡༡ སྣ་ ◦ པེ་ ◦ ལས།

རྣལ་འབྱོར་སྤྱོར་བ་དང་འབྲེལ་ཕྱིར། །
ཚད་པ་མ་ཡིན་རྟག་པ་མིན།[1] ༢༦ །

ཏེ། གཟུང་བ་དང་འཛིན་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདས་པ་དང་མ་འོངས་པ་ཡང་མངོན་དུ་གྱུར་པ་མ་ཡིན་པས་ན་གཟུང་བར་མ་གྲུབ་པ་ཉིད་དོ། །དཔེར་བྱུང་བའི་རང་རིག་[2] པ་ཡང་གཅིག་པ་ཉིད་ཀྱིས་ན་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པ་ཇི······ལྟར་ཡིན་ཏེ་བདག་ཉིད་ལ་བདག་ཉིད་བྱེད་པ་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་བུ་ཉིད་ཀྱིས་ན་དངོས་པོ་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས། ཅིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གང་དེ་ལྟ་བུ་དེའི་དོན་གྱིས་ན་དངོས་པོ་མེད་པ་སྟེ། ཤེས་པ་ལ་བརྟེན་པའི་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པར་ཡང་དངོས་པོར་མ་གྲུབ་པའོ། །འོ་ན་འདི་ལྟ་བུ་ཡང་སྟེ་བརྟེན་པར་གྱུར་པའི་[3] གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་རྣམ་པ་སྣང་བའི་དོན་དུ་ངེས་པ་ཉིད་དུ་ཐབས་གོམས་པར་བྱས་ན་དེ་ནི་གཉེན་པོ་ལ་སྟེ་བརྟེན་པའོ། །དེ་ལྟ་བུའི་སྦྱོར་བ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞེས་འོས་[4] པའོ། །རྣམ་པ་གཞན་གྱིས་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པ་[5] ཉིད་དོ་ཞེ་ན། གསུངས་པ། རྣལ་འབྱོར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་པའི་[6] འབྲེལ་པ་ནི་ཡོད་པ་སྟེ། གཞན་ཡང་འདི་ནི་ཚད་པ་མ་ཡིན་ཏེ་སྣང་བ་ཙམ་དུ་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཇི་སྐད་གསུངས་པའི་དཔྱད་པ་མི་བཟོད་པས་ན་རྟག་པ་མ་ཡིན་པ་དང་། དོན་དམ་པ་ཡང་མ་གྲུབ་ན་རྣམ་པ་གཞན་གྱིས་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་ངོར་རྟག་[7] པ་དེ་ཇི་ལྟར་གྲུབ། ༢༦།

---

[1] ཞ་ ཅོ་ ཞེན། [2] ཅོ་དཔེར་ (སྣོན) ཡང་དག་པར་རིག་པ། [3] ཅོ་དཔེར་ བརྟེན་པར་མ་གྱུར་པའི། [4] ཅོ་དཔེར་ (ཡུཀྟམ) འོངས་པའོ། ། [5] སྣ་ པེ་ པའི་ངོ་ཞེས་གསུངས་སོ། [6] ཅོ་དཔེར་ (ཡོགཡོགིཏྭ་སམྦནྡྷཿ) རྣལ་འབྱོར་སྦྱོར་བའི་འབྲེལ་བ། [7] སྣ་ བརྟགས།

ཡན་ལག་མེད་ཅིང་ཁ་དོག་མེད། །
ཐོག་མ་བར་དང་མཐའ་སྤངས་པ། །
དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་མེད་པར་འགྱུར། །
མཆོག་ཏུ་དགའ་བའི་མཚན་ཉིད་དོ། ༢༥ །

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཙཀྲ་ཆེན་པོ་ལ་སོགས་པས་ཆེད་དུ་བརྗོད་པས་[1]ཆེད་དུ་བརྗོད་དོ།༢༨།

ད་[2]ནི་ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཡང་[3]དོན་འདི་གསལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ ཡན་ལག་མེད་ཅིང་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ་གསལ་ཞིང་སྣང་བ་ལས་ཡན་ལག་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དེས་ན་ཆད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཞིང་ཇི་སྐད་གསུངས་པའི་དཔྱད་[4]པ་མི་བཟོད་པས་ན་རྟག་པ་མ་ཡིན་པས་སོ། །ཅི་དེ་ལྟ་མོད་ཀྱི་འོ་ན་ནི་དོན་དམ་པ་གང་ཡིན་ཞེ་ན། གང་མཆོག་ཏུ་དགའ་བའི་མཚན་ཉིད་ཅན་ནོ་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་རྣམ་པ་ཡོངས་སུ་སྤངས་པ་གང་བདེ་བ་ཆེན་པོར་རོ་གཅིག་པའི་ཡེ་ཤེས་དེ་ནི་བདེན་པ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ[5]། །གང་ལས་ཤེ་ན། གསུངས་པ། དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་ཕྱི་དང་ནང་གི་ཞེས་ཏྲའོ། །དེའི་རྟེན་ནི་ཤེས་པའི་རྣམ་པ་སྟེ། ཆོས་ཅན་དེ་ལས་ཆོས་རྣམས་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་རྣམས་ཀྱང་དོན་དམ་པར་མ་གྲུབ་པའོ་ཞེས་པའི་དགོངས་པ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། ཐོག་མ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ།༢༥།

བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཇི་སྐད་གསུངས་པ་དེ་དག་[6]བདག་གིས······ རྟོགས་པར་བྱས་ནས་གོ་བར་བྱ་བའི་དོན་དུ་གསུངས་པ། དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་རྣམས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ།༢༨།

---

༡ སྣར་ པ། ༢ སྡེ་ དེ། ༣ ཅོ་དཔེར་ ད་དེ་གཞན་དུ་ཡང་། ༤ སྣར་ བྱུང་། ༥ ཅོ་དཔེར་ (ཨཀྵ་ར་ཤ་ཏཱཿ) གཉིས་ཆེ་གཉེར་ཞེས་པའི་དོན་དོ། ༦ སྣར་ པེ་ དེ་དག་ཐམས་ཅད།

བསོད་ནམས་སྡིག་པ་དག་དང་མ་འབྲེལ་བས། །
མཆོག་ཏུ་དགའ་བ་དྲི་མེད་དག་པའི་[1]མགོན[2]། ༢༩ །
དེ་བཞིན་[3]ཉིད་ཀྱི་གཉེར་ཆེན་གཅིག་པུ་དང་། །
ཀུན་ཀྱང་སྙིང་རྗེའི་སེམས་ཀྱིས་མགོན་འདི་ཡོད། ༣༠ །

དེ་དག་གིས་[4]ཅི་ཞིག་བརྗོད་ཅེ་ན། དྲི་མེད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་[5]དྲི་མེད་ནི་དྲི་མ་མེད་པས་ཏེ་ཕྱི་རོལ་གྱི་གཟུང་བ་དང་[6]དེ་ལ་ལྟོས་པ······ རྣམས་སོ། །དག་པ་ནི་རྣམ་པར་དག་པ་སྟེ། ཡེ་ཤེས་ནི་གཟུགས་སུ་གཟུང་བ་དང་དེ་ལ་ལྟོས་པའི་གཟུང་བ་དང་[7]འཛིན་པར་མ་[8]གྱུར་པའོ། །ཧོ་ཞེས་པ་ནི་མཉེས་པའོ[9]། ༢༩–༣༠།

གང་ཡིན་ཞེ་ན། གསུངས་པ། མཆོག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། མཆོག་ནི་མ་བཅས་[10]པར་འདོད་པ་ཡིན་ལ། དགའ་བ་[11]ནི་བདེ་བ་ཆེན་པོ་ཡིན་པས་སོ། །[12]འདི་ལྟ་བུ་ཡང་ཐབས་ཀྱི་བསྒྲུབ་བྱ་བསོད་ནམས་བདེན་པའི་བདག་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། གསུངས་པ། བསོད་ནམས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། བསོད་ནམས་ནི་བསོད་ནམས་ཀྱིས་སོ། །ཐོབ་པ་ཞེས་པ་ནི་རབ་ཏུ་ཐོབ་པའོ། །མ་ཞེས་པ་ནི་མ་ཡིན་པའོ། །འབྲེལ་བ་ནི་འབྲེལ་བར་བྱེད་པའོ། །དེ་ཡང་ཐབས་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱིས་ཕྱི་རོལ་གྱི་བསོད་ནམས་བདེན་

---

༡ ལྷ་༌ སྣ་༌ དག་པ་ཡི། ༢ རྒྱ་དཔེར་༌ (ནེཀ) ཀུན། ༣ ལྷ་༌ སྣ་༌ མགོན་པོ་དེ་བཞིན།
༤ སྡེ་༌ གི ༥ སྣ་༌ སོགས་པའོ། ༦ རྒྱ་དཔེར་༌ ཕྱི་རོལ་གྱི་གཟུང་བ་ལ་ལྟོས་པ་ལས་འཛིན་པའི་རྣམ་པར་ལྟོས་པས་སོ། ༧ རྒྱ་དཔེར་༌ གཟུང་བ་དང་ཞེས་མི་འདུག ༨ རྒྱ་དཔེར་༌ མ་མི་འདུག
༩ རྒྱ་དཔེར་༌ (ནཱཐ) འགོད་སྐྱའི་དོན་དུ་སྣང་། ༡༠ རྒྱ་དཔེར་༌ (ཝྲཏྟི) རྣམ་པ།
༡༡ རྒྱ་དཔེར་༌ (སཏམ) གཞན་གྱི་འདོད་པར། ༡༢ འདི་ནས་ལེའུ་རྫོགས་མཚམས་བར་རྒྱ་དཔེ་དང་མི་མཐུན་པ་འདུག

པའི་བདག་ཉིད་དེ་དེར་བྱེད་དོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཐབས་ཀྱི་ངོ་བོ་ནི་ལུས་སུ་སྣང་བ་ཙམ་དང་། བསོད་ནམས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡིན་པས་ན་ཡོད་པ་ཉིད་དོ། །འོ་ན་དེ་ལྟ་བུ་ནི་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པ་སྤངས་པ་ན་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཙམ་འབའ་ཞིག་གིས་གནས་པ་ཡང་མ་ཡིན་པ་དེ་ནི་སྟོང་པ་ཉིད་ཙམ་[1]དུ་བརྗོད་ཅིང་སྙིང་རྗེ་མེད་པར་འགྱུར་བས་ན། དེ་ལྟར་འདི་ཡང་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་དབྱེར་མེད་དུ་གསུངས་པའི་དོན་དུ་སྙིང་རྗེའི་སེམས་ཀྱིས་ཞེས་པ་སྟེ[2]། སྙིང་རྗེའི་སེམས་ནི་རྨི་ལམ་དང་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་རང་བཞིན་གྱི་ངོ་བོ་འོ། །ཡོད་ཅེས་པ་ནི་ཇི་སྲིད་ནམ་མཁར་གནས་པའི་བར་དུ་སེམས་ཅན་མ་ལུས་པའི་དོན་མཛད་པའི་ནུས་པ་ཡོད་པའོ། །དང་བ་ཞེས་པ་ནི་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པ་ཡོངས་སུ་སྤངས་པ་སྟེ་དྲི་མ་མེད་པའོ། །དེའི་ཕྱིར་འདི་ཉིད་[3]གསུངས་པ། གཉེར་ཆེན་གཅིག་པུས་ཞེས་པ་ལ་གཉེར་ཆེན་ནི་གཉེར་ཆེན་པོ་དང་འདྲ་བ་སྟེ། འགྲོ་བ་མ་ལུས་པའི་ཚོར་བ་སྟེར་བས་ནའོ། །དེ་བཞིན་ཉིད་ཅེས་པ་ནི་དབྱེར་མི་ཕྱེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བདག་ཉིད་བཅོམ་ལྡན་འདས་སོ། །སྟོང་པ་ཞེས་པ་ནི་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་སྐྱོན་དང་བྲལ་བའོ། །འོ་ན་དེ་ལྟ་བུ་དོན་དམ་པ་བྱས་པས་འགྲོ་བ་འདི་དག་རྣམས་ལ་ནི་སྐྱེ་ཞིང་འགྲོ་བ་ཡིན་པས་དེ་དག་གི་རང་བཞིན་····ལ་མ་ཁྱབ་བོ་ཞེ་ན། གསུངས་པ། མཆོག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། མཆོག་ནི་འགྲོ་བ་ལ་ཁྱབ་པའོ། །དགའ་བ་ནི་ཉོན་མོངས་པ་དང་བྲལ་བའོ། ། དེའི་ཕྱིར་འདི་ཉིད་དང་པོ་ཞེས་པ་སྟེ་དང་པོ་ཉིད་དངོས་པོ་རྙེད་པ་སྟེ། གཅིག་གི་རང་བཞིན་དུ་འོས་པ་མེད་པས་ཁྱབ་ཅེས་པའི་དོན་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་གཅིག་གི་རང་བཞིན་དུ་ངེས་པ་ལ་ནི་མཆོག་ཏུ་དགའ་བ་མེད་དོ་ཞེས་པའོ། །དགའ་

༡ སྣ་° ཙམ་ཞེས་པ་མི་འདུག ༢ སྣ་° ཤེས་བས་ཏེ། པེ་° ཤེས་པས་སོ། །༣ སྣ་° བདག་ཉིད།

ཆོས་རྣམས་ངོ་བོ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་དངོས། །
མཆོག་ཏུ་དགའ་བ་འདི་ཡི་ངོ་བོ་ཉིད། ༢༡ །
དེ་ལ་གཟུགས་མེད་བསོད་ནམས་མེད་ཅིང་སྡིག་པ་མེད། །
སྐྱེ་བ་དང་ནི་འགག་པ་དག་ནི་ཡོད་མ་ཡིན[1]། ༢༢ །

བ་ནི་ཉོན་མོངས་པ་དང་བྲལ་བ་ཡིན་ན། དེ་ཡང་ཇི་ལྟར་ཞེས་ཞེ་ན། གསུངས་པ། བདེ་བ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས། བདེ་བ་ཆེན་པོ་ནི་རང་ངཞིན་གྱིས་ཉོན་མོངས་པ་དང་བྲལ་བ་ཡིན་ལ་དེས་ན་དགའ་བ་ཆེན་པོའི་དོན་ཏོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་འདི་ནི་ཆོས་རྣམས་ངོ་བོས་ཞེས་པ་སྨོས། ཆོས་ནི་རང་བཞིན་གྱི་མཚན་ཉིད་འཛིན་པ་བརྟན་པ་དང་གཡོ་བའི་དངོས་པོ་མ་ལུས་པའོ། །དེ་རྣམས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནི་གཉུག་མའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དེ་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ཀྱང་དེ་རང་····· བཞིན་གྱིས་རྣམ་པར་དག་པ་ལས་སོ། །འོ་ན་འདི་ལྟར་འགྲོ་བ་ནི་རྒྱུན་ལ་སྐྱེ་བ་དང་ལྡན་པའི་འགྲོ་བའི་རང་བཞིན་ཏེ་དེ་དག་ཀྱང་དེར་འགྱུར་རོ་ཞེ་ན། གསུངས་པ། མེད་ཅིང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས། མེད་པ་ནི་མེད་པ་ཉིད་དོ། །དེ་ནི་དེ་རྣམས་ཀྱིའོ། །དེ་བཞིན་ཉིད་ཅེས་པ་ནི་དེ་བཞིན་ཉིད་ལའོ། །བསོད་ནམས་མེད་ཅིང་སྡིག་པ་མེད། །ཅེས་པ་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་རོ་མཉམ་པ་དེའི་རང་བཞིན་ནོ་ཞེས་པའོ། །ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། གསུངས་པ། འཇིག་དང་[2] ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས། འཇིག་[3]པ་དང་སྐྱེ་བ་ནི་སྡིག་པ་དང་བསོད་ནམས་ཀྱི་སྒྲོར་བ་ཡིན་ན་དེ་དག་དངོས་པོ་མེད་པ་ལས། ཅིའི་ཕྱིར་དེ་དག་གི་རང་བཞིན་འབྱུང་ཞེས་པའོ། །བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཞེས་པ་ནི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་རང་བཞིན་

[1] ལྷ་. ཡོད་པ་མིན། [2] སྣ་. འཇིགས་ན་དང་། [3] སྣ་. འཇིགས།

དེ་བཞིན་[1] གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེའི་[2] གཤེད་ནག་པོའི་རྒྱུད་ལས་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་[3] རིམ་པར་ཕྱེ་བ་[4] སྟེ་བཅུ་··· བདུན་པའོ།། །།

ནོ༑ ༑དེ་གསལ་བ་ནི་གདན་ལ་འབེབས་པའོ། །དེ་སྟོན་པར་བྱེད་པ་དག་གི་ཚོགས་དེ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་གསལ་བར་བྱེད་པའི་ལེའུའོ། །ལེའུ་བཅུ་བདུན་པའི་བཤད་པ་རྫོགས་སོ།། །།

---

༡ ཅོ་དཔེར་། ཞེས་དེ་བཞིན། ༢ ཐ་། རྗེ། ༣ ཅོ་དཔེར་། (དེགདན) བཀོད་པ་ཞེས་ཀྱང་འདུག
༤ ཅོ་དཔེར་། རིམ་པར་ཕྱེ་བ་མི་འདུག

ལེའུ་བཅོ་བརྒྱད་པ།

དེ་ནས་གདམས་རྒྱུད་བཤད་བྱ་སྟེ[1]། བཅོམ་ལྡན་འདས་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པའི་དུས་སུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ལ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་བར་དུ་གཅོད་པའི་ཕྱིར་ཤིན་ཏུ་འཇིགས་སུ་རུང་བའི་འཇིགས་པ་ཆེན་པོ་སྟོན་ཅིང་། བདུད་ཀྱི་དཔུང་ཆེན་པོ་ལྷགས་ཏེ། དེའི་དུས་ན་བདུད་ཆེན་པོ་[2]ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་ཞེས་བྱ་བའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་ཏེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཉིད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་རྡོ་རྗེ་རྣམས་ལས་གཤིན་རྗེའི་གཤེད་ཀྱི་[3]ཁྲོ་བོ་ངེས་པར་ཕྱུང་ངོ་[4]།༡།

རྒྱུད་འབྱུང་བའི་སྐབས་ལ་བབས་པའི་དོན་གསུངས་པ། དེ་ནས་གདམས་རྒྱུད་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །ལྷགས་ཏེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མངོན་པར་ཕྱོགས་པར་གྱུར་པའོ། །བདུད་ཆེན་པོ་ལས་རྒྱལ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་བདུད་ཆེན་པོ་ནི་ཉོན་མོངས་པ་ལ་སོགས་པའི་མཚན་ཉིད་རྣམས་སོ། །ཕ་རོལ་ལས་རྒྱལ་བས་རྒྱལ་བ་སྟེ་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པ་རྣམ་པ་ལྔ་ལས་ཡང་དག་པར་བྱུང་བའི་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་གཟུགས་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ། ཉིད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་རྡོ་རྗེའི་གཙོ་བོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་ཁྲོ་བོའོ[5]། །ངེས་པར་ཕྱུང་བར་གྱུར་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་རྣམས་ཀྱིས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་དུ་འགྱུར་བའོ། །དགོས་པ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་ངེས་པར་ཕྱུང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའོ[6]།༢།

---

༡ སྣ་。པེ་。བཤད་པར་བྱ་སྟེ། ༢ རྒྱ་དཔེར་。ཆེན་པོ་མི་འདུག ༣ རྒྱ་དཔེར་。(མཧཱཡསཱརིསྦོཧྂ) གཤིན་རྗེ་ཆེན་པོ་ཁྲོ་བོ། ༤ སྡེ་。སྟེ། ༥ སྣ་。པེ་。གཙོ་བོ་ན། ༦ སྡེ་。སྟེ།

ངེས་[1]པར་བྱུང་ནས་ཀྱང་ལག་ན་རྡོ་རྗེ་ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་འི་[2]བཀའ… བཞིན་བྱེད་པ་ལ་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་ཁྲོད་འདི་ལྟ་བུའི་གཤིན་རྗེའི་གཤེད་ཀྱི་ཁྲོ་བོའི་གཟུགས་སུ་[3]བསྒྱུར་ཏེ། བདུད་དང་། ཀླུ་དང་། གནོད་སྦྱིན་དང་། ལྷ་མ་ཡིན་[4]དང་། ལྷ་རྣམས་ཀྱང་ཚོམས་ཤིག ཚིངས་ཤིག རྡུངས་ཤིག་[5]ཅེས་གསུངས་སོ། །དེའི་དུས་ན་ཇི་ལྟར་བདག་གིས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་གསུངས་པ་ཐོས་ཏེ། སྐད་ཅིག་ལ་བཟུང་ཞིང་དོན་བཟུང་སྟེ་བསྡུས་ནས་[6]རབ་ཏུ་ཡིད་…ལ་བྱས་སོ། ༢ །

དེ་རྣམས་ཀྱང་དེའི་དུས་སུ་གནས་པའི་ལྷ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ལ་[7]དེ་བཞིན་དུ་སྣང་བ་ཡིན་པས་འདི་ལྟར་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་རང་ཉིད་ཀྱིས་བདག་ཉིད་ཀྱི་[8]བདག་ཉིད་ལ་བཀའ་བསྒོ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །སྐད་ཅིག་ལ་ཞེས་པ་ནི་དུས་སུ་ཉུང་ངུ་ཉེ་བར་མཚོན་པའོ། །ལེགས་པར་རབ་ཏུ་ཡིད་ལ་བྱས་སོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བདུད་རྣམས་སོ་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །ལེགས་སོ་སྦྱིན་པ་དང་ལྡན་པ་གང་ཡིན་ཞེ་ན། ལེགས་པར་བྱེད་པ་ནི་གང་རབ་ཏུ་བྱེད་པ་ནི་གང་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། ༢ །

---

༡ པེ༌ སྣར༌ བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ངེས་པར། ༢ རྒྱ་དཔེར༌ (ཝཱགཱུནམཧཱམུནེར) བཅོམ་ལྡན་འདས་ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་འི། ༣ རྒྱ་དཔེར༌ (མཧཱབཛྲཀྲོདྷ) རྡོ་རྗེ་འཇིགས་བྱེད་ཆེན་པོ་ཞེས་ཀྱང་འདུག ༤ རྒྱ་དཔེར༌ (རཱཀྵསཱན) སྲིན་པོ་དང་ཞེས་ཀྱང་འདུག ༥ སྡེ༌ ཧོགས་ཤིག འདིར་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད། ༦ རྒྱ་དཔེར༌ (སུཙིཏ) ལེགས་པར་ཡང་འདུག ༧ སྣར༌ ལ་མི་འདུག ༨ སྣར༌ ཀྱིས། རྒྱ་དཔེར་བདག་ཉིད་ཀྱི་ཞེས་པ་མི་འདུག

[1]ཞེས་གསང་བ་ཆེན་པོ་འི་བདག་པོ་ཆེན་པོ་རྡོ་རྗེ་རིགས་ཀྱི་གཙོ་···བོ་ནལཀཱུབར[2]འི་ཡབ་ཀྱིས་དེ་སྐད་ཅེས་གསུངས་སོ། །ཨོ་རྒྱན་གྱི་ཡུལ་ནས་ཡང་དག་པར་བྱུང་བ་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ···

གསང་བ་ཆེན་པོའི་བདག་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་གསང་བ་ཆེན་པོ་ནི་གནོད་སྦྱིན་ནོ། །དེ་རྣམས་ཀྱི་བདག་པོ་ནི་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེའོ། །རྡོ་རྗེའི་རིགས་ཀྱི་གཙོ་བོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མི་བསྐྱོད་པའི་རིགས་ཏེ་འདིར་དེའི་རིགས་མཆོག་ཏུ་གྱུར་པས་ན་དེའི་དབང་དུ་བྱས་པའི་ཤེས་པའོ[3]། །ཅི་རྒྱུད་འདི་གཙོ་བོ་ཡིན་པའམ[4]། དགྱེས་པའི་རྡོ་རྗེའི་རྒྱུད་བཞིན་དུ་ཡང་དག་པར་བྱུང་བ་ཡིན་ཞེ་ན། གསུངས་པ། ནཌཀཱུབེར་[5]ཡི་ཡབ། ཅེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ནཌཀཱུབེར་[6]ཞེས་པའི་རྒྱུད་ཁང་པ་གཅིག་དང་བཅས་པའི་འབུམ་ཕྲག་གཅིག་པ་ལས་བྱུང་ཞེས་པའི···དོན་ཏོ[7]། །ནན་ཏན་དུ་བྱས་ཞེས་པ་ནི་ཡང་དག་པའི་ནན་ཏན་གྱིས་དེ་ངེས་འདུལ་བའི་བློ་དང་ལྡན་པ་རྣམས་ཀྱི་དོན་དུའོ། །དེ་བཞིན་དུ་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་

---

༡ འདི་མན་རྒྱ་དཔེའི་ཚིག་གཞམ་གསལ་ལྟར་འདུག

གསང་བ་ཆེན་པོ་འི་བདག་པོ་རྡོ་རྗེ་རིགས་ཀྱི་གཙོ་བོ་ནལཀཱུབེརའི་ཡབ་ཀྱིས་དེ་སྐད་ཅེས······གསུངས་སོ། །ཨོ་རྒྱན་གྱི་ཡུལ་ནས་ཡང་དག་པར་བྱུང་བ་སྟོན་གསུམ་ཚོགས་པ་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ཆིག་འབུམ་ཉི་ཁྲི་ལྔ་སྟོང་ལས་ཕྱུང་བ་རྫོགས་སོ། །

ཞེས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོ་འི་རྒྱུད་ལས་སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་གཏམ་རྒྱུད་ཀྱི་ལེའུ་བཅོ་བརྒྱད་པའོ། །དཔལ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོ་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་རྫོགས་སོ།། །།དགེའོ། །

༢ ཅོ་。 ནཌཀཱུབེར། འདིར་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།
༣ ཅོ་。 པེ་。 བྱས་ཞེས་པའོ། །༤ ཅོ་。པེ་。 པའོ། །༥,༦ རྒྱ་དཔེར་。 ནལཀཱུབར།

འབུམ་ཕྲག་བདུན་[1] པ་ལས་ཕྱུང་བ་གཤིན་རྗེའི་[2] གཤེད་ནག་པོ་འི་རྒྱུད་ལས···· ལེའུ་བཅོ་བརྒྱད་པའོ། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གཤིན་རྗེའི་[3] གཤེད་ནག་པོ་འི་རྒྱུད་རྫོགས་སོ།། ༢ ||

རྒྱ་གར་གྱི་མཁན་པོ་ཆེན་པོ་མཁས་པ་དཱི་པཾ་ཀར་ཤྲཱི་ཛྙཱ་ན་[4] དང་། བོད་ཀྱི་ལོ་ཙཱ་བ་དགེ་སློང་ཚུལ་ཁྲིམས་རྒྱལ་བས་བསྒྱུར་ཅིང་ཞུས་ཏེ་གཏན་ལ་ཕབ་པ་[5]། སླད་ཀྱིས་ལོ་ཙཱ་བ་དགེ་སློང་དར་མ་གྲགས་ཀྱིས་བཅོས་ལ། དེ་ལས་ཀྱང་དགེ་སློང་རྡོ་རྗེ་གྲགས་ཀྱིས་བཅོས་སོ།། ||

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་[6] ནི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ལས་སོ། །ཡོཛྙན་ནས་བྱུང་ཞེས་པ་ནི་ཡོཛྙན་ནས་ཡང་དག་པར་བྱུང་བའོ། ༢ །

ལེའུ་བཅོ་བརྒྱད་པའི་བཤད་པ་རྫོགས་སོ།། ||

གང་གིས་རྒྱ་མཚོའི་ཆུ་ཡང་སྨིག་པས་འགེངས་ཤིང་རི་བོའང་རབ···
ཏུ་གཡོ་བ་ཡི། །
མ་ཧེའི་རྒྱབ་ཏུ་ཉི་མ་དམར་པོའི་གནས་སུ་གང་ཞིག་ཞོན་ཞིང་རོལ···
པ་ནི། །
བསྐལ་པའི་མཐར་བྱུང་སྤྲིན་དང་འདྲ་བའི་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་རྣམ···
པས་ཡུན་རིངས་སྲུ། །
འགྲོ་བ་རྣམས་ཀྱི་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་རབ་ཏུ་འཕྲོར་པའི་རྒྱུར་གྱུར···
ཅིག །

---

༡ ཅོ་དམེར་. (སན༢དཔཀ༠) ཚིག་འདུམ་ཉི་ཁྲི་སྐྲ་ཕྲེང་། ༢,༣ སྣ་. ཆེ། ༤ སྣ་. ཤྲཱི་ཛྙཱ།
༥ སྡེ་. པེ་. སབ་མདོ། ༦ སྡེ་. པེ་. ལ་སོགས་པ་ཞེས་མི་འདུག

བདེ་གཤེགས་དགོངས་པ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པའི་སྟོབས་ནི་རིན་ཆེན་ཏེ། |
སྲིད་གསུམ་མུན་པ་འཛོམས་ཤིང་དགའ་བས་འདི་ནི་ཕྲེང་བའང་ཡིན། |
རིན་ཆེན་འོད་ཟེར་ལྡན་པས་སྙིང་ལ་གནས་པའི་ཡོན་ཏན་བྱེད། |
མདོག་བཟང་ཕྲེང་བར་བརྒྱུས་པའི་ཡོན་ཏན་ལྡན་པ་འདི་ཡིས་ནི། |
སྣོད་ཀྱི་སེམས་ཅན་རྟག་ཏུ་སེམས་ཉིད་དགའ་ཞིང་རྒྱས་པ་དང་། |
ཤིན་ཏུ་དགའ་བའི་ཡིད་ཀྱིས་མུན་པ་སེལ་བས་ཉི་མ་བཞིན། |
རིན་ཆེན་དང་’ནི་འདྲ་བས་རིན་ཆེན་ཕྲེང་བ་སྟེ། |
ཡང་དག་བསྡུས་པས་འགྲོ་བ་ལས་ནི་རྒྱལ་བའོ། |
དེ་ཡི་གཉིས་མེད་རྟོགས་པའི་ལས་ནི་མཚུངས་མེད་པའི། |
སྙིང་རྗེ་དང་ནི་སྟོང་པའི་བརྩེ་བས་སྣོད་དུ་གྱུར། |
སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་སྣོད་རྣམས་ལས་ནི་བདེ་གཤེགས་ཀྱི། |
དགོངས་པའི་བདུད་རྩིའི་ཆུ་ཡིས་བྲན་པའི་བརྩེ་ཆེན་པོ། |
ཀུན་མཁྱེན་ཡང་དག་སེམས་ནི་རྒྱ་མཚོའི་ཆུ་རླབས་བཞིན། |
རྒྱལ་བ་ག་ཤིན་ཛེ་གཤེད་དཔལ་རྣམ་སྨྲས་ནན་ཏན་ལས། |
ཡོན་ཏན་དཔལ་དུ་གྱུར་པའི་དཀའ་འགྲེལ་འདི་ཡིན་ཏེ། |
རིན་ཆེན་ཕྲེང་བ་ཞེས་ནི་མིང་དུ་བརྗོད་པའོ། |

མགདྷ་ཡི་ཤར་གྱི་ཕྱོགས། |
བྃགལ་ཞེས་བྱ་བའི་ཡུལ། |
བིཀྲམཔུརའི་གཙུག་ལག་ཁང་། |
སྐུ་འཁྲུངས་མཁས་པ་ཆེན་པོ་ལས། |

---
༡ སྣ་ ༠ པེ་ ༠ ཕྲེང་བ་དང་།

ཨཱཙཱརྻ་པར་གྱུར་པའི།
གཞོན་ནུ་ཟླ་བས་མཛད་པ་ཡིན།
རྒྱ་གར་མཁན་པོ་ལིལབཛྲ་ལ།
བོད་ཀྱི་ལོ་ཙཱ་བསོད་ནམས་རྒྱལ་མཚན་ནི།
རུས་[1]པ་དབྱུལ་[2]ལ་མཆན་[3]ནི་སེར་ཙ་[4]ཡིས།
རྙེད་དང་གྲགས་པའི་དོན་དུ་འདི་མ་བསྒྱུར།
རང་གི་སློབ་མ་རྣམས་ཀྱིས་གསོལ་བཏབ་ནས།
ཕན་པའི་བསམ་པས་འདི་དོན་ལེགས་པར་བསྒྱུར།
གལ་ཏེ་ལྷག་ཆད་འགའ་ཞིག་ཡོད་སྲིད་ན།
རྒྱ་དཔེ་གཞན་དང་མཁས་པ་གཞན་དག་ལ།
ད་དུང་བདག་ཉིད་ཞུས་དག་ལེགས་པར་བགྱིད།
སྒྲ་ཡི་མིང་དང་རྣམ་རྟོག་སྣ་ཚོགས་པས།
ལོ་ཙཱ་གཞན་གྱིས་བཅོས་པ་མ་མཛད་ཅིག
མཉན་ཞིང་ཤེས་ན་འདི་ལ་བཤད་པ་མཛོད།

དཔལ་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོའི་དཀའ་འགྲེལ་རིན་པོ་ཆེའི་ཕྲེང་བ་ཞེས་བྱ་བ། སློབ་དཔོན་གཞོན་ནུ་ཟླ་བས་མཛད་པ་རྫོགས་སོ།།

●

༡ སྣ་ ཅམ། ༢ སྣ་ རྩེག། ༣ སྣ་ པེ་ མཁན། ༤ སྣ་ པེ་ ཚ།

RARE BUDDHIST TEXTS SERIES
9

KṚṢṆAYAMĀRITANTRAM
WITH
RATNĀVALĪPAÑJIKĀ

भोटविद्या संस्थानम्
CIHTS
SARNATH
1992